मगही लोकगीत के वृहद संग्रह



डॉ0 राम प्रसाद सिंह

10

मगही लोकगीत के वृहद संग्रह

(हिन्दी प्रस्तावना और अर्थ के साथ)

लेखक-सम्पादक

डॉ० राम प्रसाद सिंह

एम० ए०, साहित्याचार्य, पी-एच०डी०

पूर्व विश्वविद्यालय प्रोफेसर

(मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार के अन्तर्गत)

सहायिका-संग्राहिका

लालमणि कुमारी

बी० ए०, साहित्याचार्य



प्रकाशक

मगही अकादमी बिहार, पटना

प्रकाशक :
मगही अकादमी
कंकड़बाग, पटना-20

प्रथम संस्करण :
दिसम्बर 1999 ई०

मूल्य : 200 रुपये
राज संस्करण : 250 रुपये

आवरण : संजीव चित्रकार

मुद्रक : *न्यू साहनी प्रिंटिंग प्रेस*
4/56, गोल मार्केट, राजेन्द्र नगर, पटना-16

प्राप्ति-स्थान :

१. मगही अकादमी बिहार
कंकड़बाग, पटना
२. मगही लोक, बेलागंज, गया
३. मगही अकादमी, मगही लोक
तूतबाड़ी, गया

समर्पण



करोड़न मगही भाषा-भाषी के
जिनकर कंठ में हजार-हजार साल से
लोकगीत आउ आचार-व्यवहार-अनुष्ठान में
लोकसंस्कृति आउ मानवमूल्य मुखरित होइत रहऽ हे ।

राम प्रसाद सिंह

ई पुस्तक-प्रकासन के मतलब आउ हम्मर करतब

मंगह के कुछ नेता, देसी अंगरेज, हिन्दी के कुछ जनवइया आउ कभी-कभार हिन्दी लेखक भी भरमावे ओंली बात कह दे हथ कि क्षेत्रीय भाषा-साहित्य के प्रचार-प्रसार से हिन्दी ला बाधा उठऽ हे, स्थानीयता के बढ़ावा मिलऽ हे आउ आखिर में देस में टूट पैदा होवे के खतरा बनऽ हे । बाकि ई सब बात सुनके हमरा बड़ा तज्जुब हो हे कि आखिर हिन्दी का हे ? एकर विकास के परम्परा का हे ? एकर सब्द भंडार कहाँ से आयल ? अमीर खुसरो कउन भाषा के प्रयोग कैलन हल ? चंदवरदाई के एतना जादे सब्द व्यवहार करे के ताकत कहाँ से आउ कइसे आयल हल ? सूर-तुलसी के भाषा के का कहल जायत ? सरहपा, गोरखनाथ, कबीर (सिद्धनाथ आउ संत परम्परा) आउ विद्यापति के भाषा का हल ? कहाँ से आयल हल ? का उनकर भाषा आउ इनकर साहित्य से हिन्दी के वृद्धि न भेल हे ? का एहनी अपन अमर रचना में स्थानीय भाषा के व्यवहार करके भारत के अखंडता के तोड़े के कोरसिस कैलन हल ? जदि उनकर भाषा आउ साहित्य के हटा देल जाय (अवधी, ब्रजी, डिंगल आदि) तो हिन्दी कहाँ रहत ? एकर साहित्य में फिनो का बच जायत ?

से मगही, मैथिली, भोजपुरी आदि भाषा के सुरक्षा आउ विकास इया एकरा में साहित्य लेखन इया पढ़ाई-लिखाई से देस-परदेस इया स्थान विशेष के नुकसान होवे के सवाले कहाँ से हे ? आउ होयत भी तो कइसे ? एहनी (क्षेत्रीय भाषा) के वृद्धि में ही तो राष्ट्रभाषा हिन्दी के वृद्धि हे । स्थान-स्थान के भाषा ही तो हिन्दी के सब्द-सम्पत्ति बढ़ावऽ हे, हिन्दी के साहित्य ला मुहावरा गढ़ऽ हे आउ ओकरा बाँटऽ हे । लोक में प्रचलित कहउतिया के हिन्दी ला जुगाड़ करऽ हे । मतलब कि क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी भाषा-संस्कृति के ताकतवर बना के देस के पहचान बनवले रहऽ हे ।

सब से बड़ बात तो ई हे कि ई सब क्षेत्रीय भाषा में भारत के लोकसंस्कृति जीअइत हे आउ इहे लोकसंस्कृति भारत के असली पहचान हे । आज हमर लोकसंस्कृति के टूटन आउ विदेसी संस्कृति के प्रचार-प्रसार से देस में खतरनाक अपसंस्कृति के प्रसार हो रहल हे जे हमर पहचान आउ नैतिक मूल्य के खतम कर देल चाहइत हे ।

आजो लार्ड मेकाले जीअइत हथ बलुक आउ जादे ताकतवर आउ रोज-रोज नया कपड़ा पेन्ह के ऊपर हो रहलन हे आउ राष्ट्रभाषा हिन्दी के अपन जगह से धसोर रहलन हे । नतीजा हे कि विदेसी संस्कृति भारत में जड़ी जमौले जा रहल हे । अंगरेजी भाषा के जोर-सोर से बढ़ावा मिल रहल हे । एकरा से विदेसी संस्कृति तेजी से बढ़ रहल हे । हिन्दी आउ क्षेत्रीय भाषा के हीन आउ असमर्थ समझ के नकारल जा रहल हे । भारत के प्रगतिसील आउ समन्वय करे ओंली संस्कृति के बेरहमी के साथ कुचलल जा रहल हे । ई चढ़ाई जमीन आउ आसमान (Electronic & Print Medea) दूनो दने से हो रहल हे । एकरा में नया धनवान आउ सासक-प्रसासक के मिलल-जुलल प्रयास के नकारल न जा सके । काहेसंकि राजसत्ता जीवन के सब क्षेत्र पर प्रभाव डालऽ हे । इहाँ तक कि हमर अरमान आउ सपना भी प्रभावित हो हे । अब सवाल हे कि अपन भाषा, संस्कृति के सुरक्षा समृद्धि ला का कैल जाय ?

आज हमरा सामने सबसे बढ़का समस्या हे उलझल अपसंस्कृति के जाल से कइसे निकलल जाय ? भारत के पहचान दाव पर लगल हे । एकरा से हमरा कउन उबारत ? फिनो जहाज के चिरई नियन हमर ध्यान अपन साहित्य-संस्कृति दने घुर जाहे । हमर साहित्य एतना मजगुत आउ विसाल हे कि एकर (अपसंस्कृति आउ जीवन के नैतिक मूल्य) हल ओकरे से निकल सकऽ हे ।

हमर लिखल साहित्य समय आउ सीमा में बँधल हे बाकि हमर मौखिक साहित्य (लोक साहित्य-संस्कृति) एतना विसाल आउ ताकतवर हे कि जेकरा समझे-बूझे ला विदेसी विद्वान माथा पच्ची करइत रहलन हे तइयो ओहनी के ऊपरीये जानकारी मिलल हे । विदेसी विद्वान में मैक्स मूलर, कीथ, सोफियावर्न, स्टिथ थामसन, सर विलियम जोंस (एशियाटिक सोसाइटी के जन्मदाता) फ्रांसिस बुकानन, जेनरल बीम्स, एच० एस० केलाग, फेलन, जेनरल कनिंघम आउ ग्रियर्सन जइसन विद्वान भारतीय भाषा-संस्कृति के समझे ला बड़ा परिश्रम के साथ प्रयास कैलन हे जेकरा से भारत के क्षेत्रीय भाषा आउ संस्कृति के अध्ययन करे के प्रेरणा मिलल हे ।

जदि हम भारत के पहचान बचावल चाहइत ही तब हमरा लोकसंस्कृति दने मुड़े परत । संस्कृति लोकजीवन के ऊपज होहे आउ लोक साहित्य एकरा वहन करऽ हे । लोक साहित्य में लोकगीत सबसे जादे महत रखऽ हे । एकरा साथे लोक के अस्था जुड़ल रहऽ हे । से एकर रागतत्व, समरसता के तत्व दूढ़ेला भारत के क्षेत्रीय भाषा में लोकगीत के मरम पहचाने पड़त । आज जीवन में जे कविता (राग तत्व-समता तत्व) बचल हे ऊ संस्कृति इया लोकसंस्कृति में विराजमान हे । ई ठीक हे कि सब्द से बनल कविता आउ जीवन के कविता में तनी अंतर होवऽ हे–परब, त्योहार, संस्कार जाति आउ कर्मगीत जइसे–कुटनी-पिसनी, रोपनी, कटनी, चरखा, जँतसार में जीवन के असली संस्कृति बचल रहऽ हे । ई बातावरण में विचित्र मिठास घोर दे हे । सब्द में बन्हल कविता जहाँ पाठक के प्रेरणा दे हे उहाँ मौखिक कविता (लोकगीत) समूचे वातावरण में प्रेमतत्व के उढेल दे हे । एही प्रेमतत्व के ग्रहण करे से हमर संस्कृति के पहचान बचल रहत आउ अपसंस्कृति के फैलाव रूकत । एकरा ला भारत के सब क्षेत्रीय भाषा आउ ओकर लोक साहित्य के सुन्दरता आउ मरम क जाने-समझे परत । से मौखिक साहित्य (लोक साहित्य) के संग्रह करके आउ ओकरा में छिपल अमूल्य रतन के पहचान के युग के माला में गाथे परत तबहिए विदेसी संस्कृति के हमला रोकल जा सकऽ हे । ई लेल भारत के लाखन गाँव में फैलल लोकसंस्कृति के बाहक लोकगीतन के संग्रह करे पड़त । ई खाली मनोरंजन आउ साहित्य के काम न हे बलुक भारत के पहचान के रक्षा ला पवित्र करतब हे । ई दिसा में हमर ई ग्रंथ एगो छोटगर प्रयास हे । पहिले भी "मगध की लोक कथाएँ : अनुशीलन एवं संचयन" के रूप में थोड़ा प्रयास कैली हे आउ आगे भी ई प्रयास हरमेसे चलइत रहत । ई उदेस के पुरा करेला हम अपने के सहयोग आउ आसीर्वाद के आसा रखऽ ही ।

राम प्रसाद सिंह
अध्यक्ष
मगही अकादमी बिहार, पटना

मगही से हिन्दी अनुवाद

प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन का उद्देश्य और हमारा कर्त्तव्य

मगध के कुछ राजनेता, अंगरेजीदाँ, कभी-कभी हिन्दी मर्मज्ञ या लेखक भी भ्रमांक्ति कर देते हैं कि क्षेत्रीय भाषा-साहित्य के प्रचार-प्रसार से हिन्दी को बाधित किया जाता है, क्षेत्रीयता को बढ़ावा मिलता है और अंततः देश की अखंडता पर प्रहार होता है । परंतु यह सुनकर हमें घोर आश्चर्य होता है कि आखिर हिन्दी क्या है ? इसकी विकास परम्परा क्या है ? इसकी शब्द सम्पदा कहाँ से आई ? अमीर खुशरो ने किस भाषा का प्रयोग किया ? चंदबरदाई को विशाल शब्द-समूह के प्रयोग करने की क्षमता कहाँ से आई ? सूर-तुलसी की भाषा को क्या कहेंगे ? सरहपा, गोरखनाथ, कबीर (सिद्धनाथ और संत परम्परा) और विद्यापति की भाषा क्या थी ? कहाँ से आई थी ? क्या इनकी भाषा और इनके साहित्य से हिन्दी की समृद्धि नहीं हुई ? क्या उनलोगों ने अपनी अमर कृति में क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग कर भारतीय अखंडता को वाधित करने का प्रयास किया ? अथवा उनकी भाषा और उस भाषा के साहित्य को निकाल दिया जाय (ब्रजी, अवधी, सधुक्कड़ी, डिंगल आदि) तो हिन्दी कहाँ रहेगी ? इसके साहित्य में क्या बचेगा ?

अतः मगही, मैथिली, भोजपुरी आदि क्षेत्रीय भाषाओं की समृद्धि और इसमें साहित्य लेखन, इसका अध्ययन-अध्यापन से देश-परदेश या क्षेत्र-विशेष को कोई नुकसान होने का प्रश्न कहाँ है और नुकसान होगा कैसे ? इनकी समृद्धि में ही तो राष्ट्रभाषा हिन्दी की समृद्धि है । क्षेत्रीय भाषाएँ ही हिन्दी की शब्द-सम्पदा बढ़ाती है । हिन्दी साहित्य के लिए मुहाबरे गढ़ती और वितरित करती है, लोकोक्तियों की आपूर्ति करती है और हिन्दी भाषा-संस्कृति को समृद्ध कर भारतीय अस्मिता को अक्षुण्ण रखती है ।

सर्वोपरि तथ्य तो यह है कि इन क्षेत्रीय भाषाओं में भारत की लोकसंस्कृति जीवित है और यही लोकसंस्कृति भारतीय अस्मिता की सच्ची पहचान है । आज हमारी लोक संस्कृति के विघटन और पाश्चात्य संस्कृति के आरोपण से देश में भयंकर अपसंस्कृति का प्रसार हो रहा है जो हमारी पहचान और हमारे नैतिक मूल्यों को समाप्त कर देना चाहता है ।

आज भी लार्ड मेकाले जीवित हैं बल्कि और अधिक सशक्त और नित्य नए परिधान में उपस्थित हो रहे हैं और राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनी जगह से अपदस्थ करने पर तुले हैं, परिणामस्वरुप औपनिवेशिक संस्कृति भारत में जड़ जमाने लगी है । अंगरेजी भाषा को जोरे-सोर से प्रोत्साहित किया जा रहा है । इसके द्वारा अमरीकी और यूरोपीय संस्कृति को स्थापित किया जा रहा है और हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं को हीन समझकर हतोत्साहित किया जा रहा है । यह प्रहार जमीन और आसमान (Electronic Midia & Print Midea) दोनो तरफ से हो रहा है । इसमें नव धनाड्य सामंतो के साथ शासक-प्रशासक की मिली भगत को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि राजसत्ता जवीन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है । यहाँ तक कि हमारे अरमान और सपने भी इससे प्रभावित होते हैं ? अब प्रश्न उठता है कि अपनी भाषा-संस्कृति की सुरक्षा-समृद्धि के लिए क्या किया जाय ?

आज हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या है—उलझते अपसंस्कृति जाल से देश को कैसे छुटकारा मिले ? भारतीय अस्मिता दाव पर लगी है । इससे हमें कौन उबारेगा ? पुन: जहाज के पक्षी की तरह हमारा ध्यान अपने साहित्य और संस्कृति पर जाता है । हमारा साहित्य इतना विशाल है कि इसका (अपसंस्कृति और जीवन के नैतिक मूल्य) हल उसी से निकल सकता है ।

हमारा लिखित साहित्य कालवद्ध और सीमावद्ध है परंतु हमारा मौखिक साहित्य (लोक साहित्य-संस्कृति) इतना विशाल है, समृद्ध और शक्तिशाली है जिसे समझने-बुझने के लिए युरोपीय और अमरीकी विद्वान माथा पच्ची करते रहे हैं फिर भी इसका उन्हें सतही ज्ञान ही उपलब्ध हुआ है । मैक्स मूलर, कीथ, सोफिया बर्न, स्टिथ थामसन, सर विलियम जोन्स (एशियाटिक शोसायटी के जन्मदाता) फ्रांसिस बुकानन, जेनरल बीम्स, एच० एस० केलाग, फैलन, जेनरल कनिंघम और सर ग्रियर्सन प्रभृति विद्वानों ने क्षेत्रीय भाषा-संस्कृति को समझने का सश्रम प्रयास किया और क्षेत्रीय भाषाओं और उसके लोक-साहित्य के अध्ययन की प्रेरण दी है ।

यहि हम भारतीय अस्मिता को बचाना चाहते हैं तो हमें लोकसंस्कृति की ओर मुड़ना पड़ेगा । संस्कृति लोकजीवन की ऊपज होती है और इसका प्रमुख उपादन लोकसाहित्य होता है । लोकसाहित्य में लोकगीत सर्वाधिक महत्वपूर्ण और लोकास्था के प्रतीक होते हैं । अत: इनमें निहित रागतत्व-समरसता के तत्त्व को ढूढ़ने के लिए भारत की क्षेत्रीय भाषा के लोक साहित्य-लोकगीतों के मर्म को पहचानना पड़ेगा । आज जो जीवन की कविता (रागतत्त्व-समतातत्त्व) बची है, वह संस्कृति, लोकसंस्कृति में विराजमान है । यह ठीक है कि शब्दाश्रित कविता और जीवन की कविता में थोड़ी भिन्नता है—पर्व, त्योहार, श्रम एवं जाति गीतों यथा—कुटनी, पिसनी, रोपनी, कटनी, चर्खा, जतसार में जीवन की सच्ची संस्कृति मुखरित होती है और वातावरण में अनिर्वचनीय मधुरिमा घोल देती है । शब्दाश्रित्र कविता जहाँ पाठक को उत्प्रेरित करती है वहाँ मौखिक कविता (लोकगीत) ससस्त परिवेश में राग तत्त्व को उढ़ेल देती है । इसी रागतत्त्व को ग्रहण करने से हमारी संस्कृति की अस्मिता बची रहेगी और अपसंस्कृति का फैलाव रूकेगा । इसके लिए भारत की समस्त क्षेत्रीय भाषाओं एवं उनके लोकसाहित्य के भावसान्दर्य और मर्म को जानना-समझना पड़ेगा । अत: मौखिक साहित्य (लोकसाहित्य) को संग्रहीत कर उसके अमूल्य रत्नों को पहचानकर युग-संदर्भ की माला में पिरोना पड़ेगा तभी औपनिवेशिक संस्कृति के हमले को रोका जा सकेगा । इसके लिए भारत के लाखों गाँवों में विखरे लोकसंस्कृति के बाहक लोकगीतों को संग्रह करना पड़ेगा । यह केवल मनोरंजन और साहित्य का काम नहीं बल्कि भारत की अस्मितारक्षा का पावन कर्त्तव्य है । इसी दिशा में मेरा यह ग्रंथ एक लघु प्रयास है । पहले भी 'मंगध की लोककथाएँ : अनुशीलन एवं संचयन' के रूप में थोड़ा प्रयास किया है और आगे भी यह प्रयास सतत चलता रहेगा । इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हम आपके सौहाद्र और आशीर्वचनों के आकांक्षी है ।

अनुवादक

—डा० रामचन्द्र चौधरी

निदेशक

मगही अकादमी बिहार, पटना

आभार

ई मगही लोकगीत संग्रह के पहिले हमरा सामने अइसन दूगो किताब हल (१) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद के 'मगही संस्कार गीत आउ (२) डॉ० सम्पत्ति अर्याणी के 'मगही भाषा और साहित्य' में संग्रहीत मगही लोकगीत । प्रस्तुत ग्रंथ में ओहनी पूर्ववर्त्ती साहित्यकार के ग्रंथ से जाने-अनजाने प्रेरणा, उपयोग, प्रयोग आउ परोक्ष रूप से दिशा-निर्देशन भी मिलल हे जेकरा ला हम ओहनी के प्रति हृदय से आभारी ही ।

फिनो हमर प्रेरणा के स्रोत स्व० कृष्णदेव उपाध्याय आउ डॉ० सत्येन्द्र हथ जे प्राच्य आउ पाश्चात्य लोक साहित्य के अध्ययन-मनन ला हमरा उसकावइत रहलन हल आउ अपन लोक साहित्य के काम के आगे बढ़ावे ला आदेश देइत रहलन हल । हम ओहनी महान लोकवार्त्ता विद् के प्रति हृदय से कृतज्ञ ही ।

हम अपन शोधकर्त्ता विद्यार्थी के भी साधुवाद देइत ही जे हमरा साथे लोक साहित्य के अनेक विधा पर दर्जन भर काम करके लुप्त होइत लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा, लोकोक्ति, पहेली, दसकूटक आदि के संग्रह-संयोजन कैलन हे । एकरा अलावे ढेर सा साहित्यकार बंधु अपन लोक साहित्य आउ लोक संस्कृति के बचावे ला काम में लगल हथ । हम सब के प्रति साधुवाद प्रकट करइत ही ।

हमर पूरा परिवार तन, मन, आउ धन से ई काम में लगल रहऽ हे । ओहनी के नाम लेना आउ आशीर्वाद देना अपने पीठ थपथपाना हे । इहे शब्दन के साथे परिवार नियन मगही अकादमी के सब सहकर्मी के प्रति भी आभार प्रकट करइत ही । अकादमी के निदेशक रामचन्द्र चौधरी, श्री केशव प्रसाद वर्मा आउ न्यू साहनी प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री राम बालक प्रसाद साहनी अपन तेज सहयोग ला साधुवाद आउ धन्यवाद के पात्र हथ ।

25-12-99

राम प्रसाद सिंह

प्रकासक के ओर से

मगही अकादमी विहार द्वारा छपल कितावन में ई सब से बढ़का गो ग्रंथ हे, लगभग ८०० पन्ना के, हम्मर पुरान धरोहर के अनमोल रतन–**मगही लोकगीत के वृहद संग्रह हिन्दी प्रस्तावना आउ अर्थ के साथ** ।

भारत के लोक वार्त्ता विदन में डॉ० राम प्रसाद सिंह के स्थान आवऽ हे जिनकर अइसने मोटा ग्रंथ "**मगध की लोक कथाएँ : "अनुशीलन एवं संचयन**" राष्ट्रीय ख्याति पा चुलल हे । भारत सरकार ऊ किताव के खरीद के देस में वितरित कर चुकल है । **मगही अकादमी बिहार** के अध्यक्ष पर वइठते इनका से मगही के धरोहर पर दूसर पुस्तक लिखे आउ प्रकासित करावे के निहोरा कैल गेल जेकर परिणाम अपने के हाथ में हे ।

किताव तो तनी मोटगर लिखा-छपा गेल वाकि एकरा छपावे में **मगही अकादमी बिहार** के हाल खस्ता हो गेल । सरकारी अनुदान तो कर्मचारी के वेतन भर भी न होवे हे । से सुधी पाठक समझ सकऽ हथ कि किताव कइसे छपल होयत ? एकरा साथ ही दूगो आउ किताव छपल हे । '**निरंजना के संत**' आउ '**मगही साहित्य का इतिहास**' (पुनर्मुद्रण) ।

लोकगीत संग्रह करे में जेतना भार पड़ऽ हे आउ बाधा हो हे ओतने छपावे में भी, काहेसेकि कला-संस्कृति के पढ़वइया आउ खरीदताहर लोग तो कमे-बेसी हथ । तइयो अपन अनमोल धरोहर के संजोगे ला अकादमी के कई तरह के खरचा काट-कपट के एकरा प्रकासित करावे में लगावल गेल हे । धन्य कहीं अकादमी के सब कर्मचारी लोग के, जे अभाव में भी तन, मन आउ धन लगा के किताब छपावे में सहयोग कैलन हे, अध्यक्ष के रोज-रोज के गाड़ी भत्ता भी काट के प्रकासन में लगावल गेल हे । उमंग, उत्साह आउ भाषा संस्कृति प्रेम सब कुछ करा देहे । से अकादमी के कर्मचारी-अधिकारी सब धन्यवाद आउ साधुवाद के पात्र हथ । साथ ही आउ लोग (श्री केशव प्रसाद वर्मा आदि) जे एकरा में जरिको साथ देलन हे, ओहनी के प्रति अभार प्रकट करइत ही ।

–डा० रामचन्द्र चौधरी
निदेशक
मगही अकादमी बिहार, पटना

मगही लोकगीत संग्रह के सहयोगी

१. **श्रीमती राम प्यारी सिन्हा**—ग्राम-तवकला, सकरी, जहानाबाद
२. **श्रीमती मनोरमा देवी आउ राजकलि**—ग्राम+पो०—खुटहन, औरंगाबाद
३. **डॉ० दशई सिंह आउ दलकुँवरी देवी**—बिहार शरीफ, नालंदा
४. **डॉ० शिवराम पंडित**—चन्द्रदेव वर्मा कालेज, बिहटा, पटना
५. **डॉ० देवनंदन सिंह**—जनकपुर, गया
६. **श्री भोला सिंह**—बस स्टैंड, चतरा
७. **प्रो० कामेश्वर सिंह**—डालटेनगंज, पलामू
८. **डॉ० ब्रजनंदन सिंह**—ग्राम-बारा, बुनियादगंज, गया
९. **श्रीमती शांति कुमारी**—कचहरी के पास, नवादा
१०. **लूसी आउ सरोज**—ग्राम+पो०-बम्बर, मुंगेर
११ **श्री रणजीत वर्मा**—सयाल 'डी' कोलियरी, हजारीबाग
१२. **डॉ० विश्वकर्मा**—सिकंदरा, जमुई
१३. **डॉ० चन्द्रशेखर सिंह की पत्नी**—लखीसराय, लखीसराय
१४. **डॉ० आनंदी प्रसाद आउ आंगनबाड़ी सेविका**—आरोग्याश्रम, राजगीर
१५. **कविता रानी आउ संजु कुमारी**—बेलागंज, गया
१६. **धर्मेन्द्र नाथ आउ दीपेन्द्र नाथ**—मगही लोक, तूतबाड़ी, गया
१७. **चशमाही आउ गंगाजली**—बेलखरा, औरंगाबाद
१८. **कामता प्रसाद सिंह, प्र० अ०**—नीरसा, धनबाद

विषय सूची

पहिला खंड–प्रस्तावना

लेखक

डॉ० राम प्रसाद सिंह

क्रम०	विषय		पृष्ठ
1.	संस्कृति	–	1-6
2.	लोक-संस्कृति	–	6-10
3.	लोकगीतों की उत्पति, मौखिकता एवं परम्पराएँ	–	11-13
4.	लोकगीतो की मौखिकता एवं शिष्ट साहित्य पर इनका प्रभाव	–	14-18
5.	मगही लोकगीतों का वर्गीकरण	–	19-29
6.	मगही लोकगीतों के निर्माण तंतु (उनके वाहक तत्त्व)	–	30-36
7.	लोकगीतां का लोकतात्विक एवं नृतात्विक विश्लेषण	–	37-58
8.	आनुष्ठानिक क्रियाएँ एवं लोकजीवन में नृतात्विक संबंध	–	59-83
9.	लोकगीतों में प्रकृति के स्वरूप एवं संबंध	–	84-88
10.	लोकास्था के प्रतीक लोकगीत	–	89-96
11.	लोककाव्य में निहित सौन्दर्य तत्त्व	–	97-98
	(1) मगही लोकगीतों में लोकतात्विक सौन्दर्य	–	98-106
	(2) मगही लोकगीतों में भाव सौन्दर्य	–	106-121
	(3) मगही लोकगीतों में कला सौन्दर्य	–	121-129

दूसरा खंड–लोकगीत संग्रह आउ अर्थ

संग्राहिका

लालमणि कुमारी

क्रम०	विषय		पृष्ठ
1.	मगही संस्कार गीत	–	1-21
2.	मुंडन या चूड़ाकरण	–	22-25
3.	जनेऊ या यज्ञोपवित्र	–	26-31
4.	विवाह के गीत	–	32-47
5.	वर या बधू चुमावन	–	47-53
6.	कलसा और नहछू	–	53-56
	इमली घोंटाई	–	56-58
8.	वर-वधू के गीत	–	58-92

क्रम०	विषय		पृष्ठ
9.	बेटी या वधू के वैवाहिक गीत	–	92-134
10.	परिछन	–	135-139
11.	गुरहथी या वरनंत	–	139-144
12.	खरई चुनाई	–	144-147
13.	कन्यादान एवं सिन्दुरदान के गीत	–	147-155
14.	कोहबर	–	156-172
15.	जेवनार और गाली लोकगीत	–	173-208
16.	विविध प्रकार के संस्कार लोकगीत	–	209-213
17.	देवी-देवता संबंधी मगही लोकगीत	–	214-235
18.	देवगीत	–	236-253
19.	राम के गीत	–	254-273
20.	देवीगीत	–	274-286
21.	कुलदेवता के गीत	–	287-293
22.	विविध पर्व त्योहार संबंधी देवगीत	–	294
23.	नागपंचमी के गीत	–	295
24.	गंगा माई के गीत	–	296-298
25.	जाति एवं कर्म संबंधी लोकगीत	–	299-330
26.	मौसमी लोकगीत	–	331-361
27.	कजरी या पूर्वी	–	362-395
28.	मौसमी लोकगीतां फागू और चैता	–	396-420
29.	जागिरा या कबिरा	–	421-424
30.	मगही का चैता लोकगीत	–	425-447
31.	झूमर–देव विषयक झूमर	–	448-466
32.	श्रृंगार प्रधान झूमर	–	467-531
33.	पेशा और नौकरी संबंधी झूमर	–	532-541
34.	विविध प्रकार के झूमर	–	542-559
35.	मगध प्रदेश के विविध गीत	–	560-568
36.	बाल खेलगीत	–	569-579
37.	चकचंदा	–	580-584
38.	बिरहा	–	585-588
39.	प्रातकाली	–	589-596
40.	आधुनिक लोकगीत	–	597-600

पहिला-खंड

प्रस्तावना

डॉ0 राम प्रसाद सिंह

संस्कृति

संस्कृति शब्द ' सम्+कृ+क्तिन्' के योग से बना है। इसका अर्थ (सं) संयोग, समीप या साहचर्य और (कृ) क्रियाओं अथवा व्यापारों से परिष्कृत स्थिति अर्थात् साहचर्य की क्रियाओं से परिष्कृत स्थित को संस्कृति कहते हैं। मानव आदिम काल से आजतक मानव और मानवेतर जड़- चेतनों के सम्पर्क में रहता आया है। उनके सम्पर्क से मानव ने जो स्थिति पैदा कर ली है, उनसे अपने जीवन को अलंकृत और विकसित कर लिया है, वे सब संस्कृति के उपादान हैं । डॉ रामखेलावन पाण्डेय ने "जिन कृतियों अथवा चेष्टओं के द्वारा मनुष्य अपने जीवन के समस्त क्षेत्रों में उन्नति करता हुआ सुख-शांति की व्यवस्था करता है"[१] उनकी संज्ञा संस्कृति दी है। संस्कृति में जहाँ एक ओर भौगोलिक सहयोग को स्थिति रहती है वहाँ दूसरी ओर ऐतिहासिक संस्कार का प्रभाव । सारांशतः संस्कृति देश और काल (भूगोल और इतिहास) के अंतराल की उपज है जिसका माध्यम या बाहक मनुष्य है। अतः संस्कृति में भूगोल और इतिहास के साथ मनोविज्ञान का समावेश हो जाता है। यही कारण है कि संस्कृति के दो स्वरूप दीखते है (१) संस्कृति का वाह्यस्वरूप जो अपनी भौगोलिक (भारत, चीन,यूरोप आदि) और ऐतिहासिक (वैदिक, सैन्धव) सीमा में परिवर्तित होता रहता है। अतः भिन्न दिखलाई पड़ता है और (२) उसका आभ्यंतरिक तत्व अपने मनोवैज्ञानिक कारणों (मानवीय मूल प्रवृतियाँ समान हैं) से एक रूप रहता है। अतः विभिन्न संस्कृतियों में समानता पाई जाती है। इसीलिए यह कहा जा सकता है कि संस्कृति के मूलतत्व सभी देशों में समान रहते हैं, अंतर सिर्फ वाह्य रहता है, भौगोलिक और ऐतिहासिक-देश और काल का ।

संस्कृति के इस व्यापक और विस्तृत चित्रफलक के अंतर्गत समस्त मानवीय प्रवृतियों एवं कर्मों के संस्कार समाहित हो जाते हैं । मनुष्य की चिंतन प्रणाली-यथार्थ, कल्पना और आदर्श, मनुष्य की कर्म प्रणाली- लौकिक और पारलौकिक, भैतिक या आध्यात्मिक, मनुष्य की व्यावहार प्रणाली- आचार, व्यवहार, व्यष्टिगत, या समष्टिगत- सभी संस्कृति के अंग हैं। उक्त सारी ईकाइयों का समष्टिगत रूप संस्कृति है। अतः संस्कृति व्यष्टि और समष्टि के सर्वांगीनपक्षों को लेकर चलती है। जिस संस्कृति में मानवीय विकास के जितने उदात्त रूप मिलेंगे, वह

१. भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना-डॉ. राम खेलावन पाण्डेय

उतनी उच्च संस्कृति कहलाने की अधिकारिणी होगी ।

संस्कृति के केन्द्र स्थल में मनुष्य है। मनुष्य वाह्य और आभ्यंतर (स्थूल और सूक्ष्म) शरीर में स्थिर है। वाह्य शरीर में उसकी ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय हैं। आभ्यंतर शरीर में मन, बुद्धि अहंकारादि हैं। इन सवों से परे प्राणतत्व है- आत्मा। अतः मनुष्य मूलतः शरीर, मन और आत्मा की त्रिकोणात्मक शक्ति से संचालित है। किसी भी संस्कृति का लक्ष्य मानव की इन शक्तियों का विकास करना होता हैं। जहाँ विकास संतुलित नहीं होता, वह संस्कृति कालक्रम में मर जाती है और जहाँ मानव की उक्त तीनों शक्तियों का संतुलित विकास होता है, वह संस्कृति दीर्घजीवी रहती है। सिर्फ शारीरिक विकास पर जोर देने के कारण स्पार्टा की संस्कृति मर गई और सिर्फ मानसिक विकास पर बल देने के कारण एथेंस की संस्कृति काल कवलित हो गई परंतु भारत की संस्कृति में शरीर, मन और आत्मा, तीनों के विकास पर समुचित और संतुलित ध्यान दिया गया, परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति ने हजारों वर्प तक जगतगुरूत्व ही हासिल नही किया, आज तक जीवित भी है ।

यहाँ भारतीय संस्कृति की कतिपय विशेषताओं का संकेत अप्रासंगिक न होगा। किसी संस्कृति का उत्कर्ष और अपकर्ष किसी काल विशेष में सम्भव है परंतु उसका उद्भव नहीं । भारतीय संस्कृति के साथ भी यही बात है। हम आज जिसे भारतीय संस्कृति कहते हैं उसने लगभग पाँच हजार वर्षों से विभिन्न संस्कृतियों का घात-प्रतिघात सहा है। इस लिए इसमें विभिन्न संस्कृतियों के अवयव समाहित हो गए तो कोई आश्चर्य नही परंतु आधारभूत तत्व में भारतीयता का लोप नहीं हुआ। यह भारतीयता भारत में आर्यो के आगमन के पूर्व से चली आ रही है। इसका प्रमाण है मुर्दो का टीला। भारतीय मानस ने सिन्धु संस्कृति से जो ग्रहण किया उसे सरस्वती की संस्कृति (आर्य संस्कृति) ने अपना लिया "सिन्धु निवासियों से पशुओं द्वारा घिरे तीन चेहरे वाले देवता- शिव पशुपति अथवा शिव योगेश्वर की पूजा करना सीख लिया।[1] "और शिवने भारतीय संस्कृति के प्रधान अंग-धर्म को सर्वाधिक प्रभावित किया। बह्मा-विष्णु-महेश के त्रिदेवों में शिव ही महाईश हुए -सर्वशक्तिशाली, सर्वव्यापक, सर्वमान्य शिव, कल्याणकारी । शिव में निहित प्राणिमात्र के प्रति कल्याणकारी भाव भारतीय संस्कृति का मूलभूत तत्व हुआ । भारतीय संस्कृति धर्म के इसी कल्याणकारी एवं उदात्त भाव को लेकर चली । इसने सर्वात्मवाद के वैदिक भावों को कालक्रम में उद्घोषित किया ।

भारत की संस्कृति और कला-पृष्ठ ४५ ले. राधा कमल मुखर्जी

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

भारतीय आर्य संस्कृति ने पशुपति योगेश्वर शिव के साथ योग, तंत्रविद्या और सामान्य लोकधर्मी परम्परा को भी ग्रहण किया । "सिन्धु घाटी संस्कृति में पेड़ों पर बैठी सींगोवाली स्त्री-आकृतियाँ हैं जो अथर्वेद की वृक्षात्माओं और मौर्य तथा शुंग कालीन यक्षियों के मूल रूप हैं"[1] इस प्रकार हम देखते हैं कि सिन्धुघाटी संस्कृति की मूलधारा आर्य संस्कृति में आकर मिल जाती है और ऐसी घुलमिल जाती है कि उसका स्वतंत्र स्वरूप का कोई पता नहीं लगता। भारतीय संस्कृति की यह सर्वोपरि विशेषता है कि इसने अन्य अनेक संस्कृतियों को पूर्णतः आत्मसात कर अपने स्वरूप में मिला लिया है । यही कारण है कि आज शक, हूण, कुशान एवं यवनादि संस्कृतियों के अनेक तत्व हमारी संस्कृति में समाहित हैं परंतु उन्हें पहचानकर निकाल सकना सहज सम्भव नहीं।

भारतीय संस्कृति की दूसरी विशेषता है उसका प्राणवंत समाज संगठन । वैदिक समाज वर्ग चतुष्टय पर विभाजित था । वर्ग कर्म पर आधृत था । कर्म की सुविधा दक्षता के आधार पर थी । ब्राह्मण आध्यात्मिक अनुष्ठान कराने वाले, क्षत्रिए सुरक्षा और युद्ध में दक्ष, वैश्य कृषि और व्यापार में कुशल तथा शूद्र सेवाकार्य में पारंगत थे। इस सामाजिक वर्ग की सीमा वैदिक काल में कठोर नही थी । किसी वर्ग का व्यक्ति वर्गांतर होकर कार्य या विवाह कर सकता था । आर्यवर्ण और दस्युवर्ण में अंतर था "परंतु सभी वेदों का अध्ययन करते थे किन्तु श्यामवर्णवाले अर्थात् शूद्र सर्वाधिक बुद्धिमान और तीनों वेदों में पारंगत थे । सत्यकाम, जाबाल और जानश्रुति की कथाएँ प्रमाण हैं । शतपथ ब्रह्मण में शूद्रों के सोमयज्ञ में भाग लेने का जिक्र हैं ।[2]" सारांश कि वर्ण व्यवस्था कर्म मूलक थी, जन्म मूलक नहीं, चारो वर्णो का विभाजन का आधार धर्म था, जन्म नहीं । उस समय तक जातिप्रथा (प्रजातिक व्यवस्था, जन्मना जाति) का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था । चारो वर्णो के लिए चातुराश्रम की व्यवस्था की गई। वर्ण समाज परक है, आश्रम व्यक्ति परका वर्णो के आधार पर समाज का संगठन हुआ, आश्रम के आधार पर वैयक्तिक आचार आधृत हुए । वर्णाश्रम पर आधारित व्यक्ति के जीवन में चतुर्मुखी उद्देश्य है (१) धर्म–धारण करने योग्य कर्तव्य (२) अर्थ - आजीविका (३) काम - इच्छा पूर्ति और (४) मोक्ष - दुख निवृति, बंधन मुक्ति । धर्म, अर्थ , काम और

---

१. भारत की संस्कृति और कला-पृष्ठ पठ ले. राधा कमल मुखजी।
२. भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना-डॉ. राम खेलावन पाण्डेय।

मोक्ष भारतीय जीवन के ये चार पुरूषार्थ हैं । प्रत्येक व्यक्ति वर्ग चतुष्टय (ब्राह्मण, क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र) पर आधारित समाज में रहकर चतुराश्रम (ब्रह्मचर्य-गृहस्थ वाणप्रस्थ-सन्यास) के अनुसार जीवन व्यतीत करता हुआ चारो लक्ष्य (अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष) की पूर्ति करता है। इस व्यवस्था में मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा की त्रिकोणात्मक शक्ति के पूर्ण विकास की उपर्युक्त भूमिका वर्तमान मिलती है । प्रथम पच्चीस वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्य रहकर विद्या अध्ययन करना और शारीरिक विकास करना जीवन की आधारशिला है । व्यायाम, यम, नियम, आसन ब्रह्मचर्य, ये शरीर शक्ति के विकास के नियम है । इन सब के पालन से शरीर बलिष्ट होता है और सौ वर्ष जीने की बुनियाद खड़ी होती है। भारतीय पहले सामान्यतः सौ वर्ष जीते थे। जिस प्रकार शारीरिक शक्ति-विकास के लिए नियम थे उसी प्रकार मानसिक शक्ति-विकास के लिए भी सिद्धांत और नियम थे । पतंजलिने योग के माध्यम से मानसिक शक्तियों को विकसित करने का विधान निर्धारित किया है । चित्तवृत्तियों के निरोध से एकाग्रता और अद्वितीय मानसिक क्षमता उत्पन्न होती है । प्राणायाम से अंतःकरण शुद्ध होकर रक्त स्वच्छ होता है और मनः शक्ति बढ़ती है । सांख्य-दर्शन में मन, बुद्धि, अंहकारादि का तात्विक विश्लेपण हुआ है जिससे मानसिक शक्तियों का परिचय और नियमन करने की प्रेरणा मिलती है ।

भारतीय संस्कृति में शारीरिक और मानसिक विकास के साथ ही आध्यत्मिक विकास की अनिवार्यता पर विशेष जोर दिया गया है । यहाँ जीवन -जगत, आत्मा - परमात्मा की समस्या सुलझाने का अथक और दीर्घकालीन प्रयास हुआ है । हमारा सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय इसी आत्मशक्ति के विकास के आचार -व्यवहार से भरा-पूरा है । आत्मविकास ही जीवन का मूलमंत्र है । आत्म-दर्शन, अपने आपको समझना, अपनी आभ्यंतरिक शक्ति से परिचय पाना भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है । इसी लिए आत्मबल को सभी बलों से श्रेष्ठ माना गया है । आत्मबल ही चरित्र बल है । अपने चरित्र के विकास में बुद्ध, महावीर, गाँधी, कबीर, तुलसी, सूर आदि संतों ने अपने सारे ऐहिक सुखोपयोग को तृणवत् त्याग दिया था । इस त्यागमय जीवन की मूल प्रेरणा आत्मविकास के कारण मिलती है और आत्मविकास की प्रेरणा भारतीय संस्कृति का सामान्य धर्म है । इस त्यागमयी संस्कृति में स्वात्मविकास की ही कामना नहीं बल्कि परमात्म-विकास की भी कामना निहित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इसी भावना की देन है।

वैदिक समाज में व्यक्ति, समाज और धर्म का अन्तर्लयन तीन ऋणों के माध्यम से होता था । व्यक्ति जन्म से ही त्रिमुख सामाजिक कर्तव्यों का दायित्व ग्रहण

करता है । उसे ज्ञानार्जन कर योग्य वनना और अपने पुत्रों को योग्य बनाना पितृऋण से उऋण होना है । पितृऋण के अतिरिक्त उसे ऋषिऋण और देवऋण से भी उऋण होना पड़ता है । यह व्यक्ति का सामाजिक दायित्व है । नृयज्ञ और भूतयज्ञ द्वारा व्यक्ति इससे उऋण होता है। इस प्रकार इन दायित्वों के माध्यम से व्यक्ति समाज और परिवार के साथ जुड़ा रहता है । (भारतीय संस्कृति में) सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के साथ सामंजस्य स्थापित करने का इससे सुन्दर दूसरा आदर्श क्या हो सकता है । यह आदर्श व्यावहारिक और आचरणीय है । इसमें किसी प्रकार के विरोधाभास की जगह नही क्योकि यह सर्व साधारण मानव मात्र के लिए आदर्श है । "वैदिक समाज में किसी व्यक्ति की स्थिति, शक्ति और सम्मान का निर्धारण उसकी वंशावली अथवा पारिवारिक परम्परा के बल पर नहीं वरण उसकी संस्कृति, सामाजिकता और नैतिक दायित्व के बल पर होता था"।[1] इसीलिए व्यक्ति सांस्कृतिक दाय को जीवन में ढालने का सतत प्रयास करते रहता था और परम्परा से सांस्कृतिक संस्कार जनमानस को अनुप्राणित करते रहा ।

भारतीय संस्कृति मूलतः आध्यात्मिक है और आध्यात्मिकता का स्वर मानवता वादी है। जिस मानववाद का जन्म (वेदों में सर्वात्मवाद) वैदिक संस्कृति में हुआ उसका चरम विकास वुद्धवाद (बौध-दर्शन) में हुआ और यही कारण है कि बौधधर्म विश्वधर्म में रूपांतरित हो गया। एशिया का पश्चिम तथा सुदूर दक्षिणी पूर्वी भाग का भारतीयकरण हो गया । अकेली बौध-संस्कृति ने जितने अर्से तक विश्व के अपार मनुष्यों को प्रभावित किया उतना आज तक कोई दूसरी संस्कृति ने नहीं किया ।

वैदिक संस्कृति का पुनरूत्थान गुप्तकाल में हुआ और हिन्दू धर्म का मानववाद चरमोत्कर्ष पर पहुँचा । परिणाम स्वरूप धर्म, साहित्य और कला का पूर्ण विकास हुआ जिससे यह काल स्वर्णयुग के नाम से विख्यात है । इस काल में हिन्दुओं की जीवनीधारा पुराणों के माध्यम से प्रवावित हुई । साहित्य में संस्कृत का प्राधान्य हुआ और कालिदास जैसे भारतीय साहित्य-संस्कृति की प्रतिमूर्ति आविर्भूत हुए। अजंता की चित्रमूर्तिया उकेरी गई जिसमें कला मूर्तिमती हुई । इस काल की कला में अभिप्राय अभिव्यंजन की प्रधानता रही । गुप्तकाल के बाद भारतीय अध्यात्म चिंतनधारा शंकर के सहारे व्यक्त हुई । शंकर में भारतीय औपनिषदिक दर्शन की चरम परिणति हुई। आत्मा और परमात्मा के पूर्णतः और सर्वरूपेण अद्वैत की जितनी उच्च और बौद्धिक व्याख्या शंकर ने की वह विश्व के किसी भी दर्शनशास्त्र में दुर्लभ है । शंकर के बाद

१. भारत की संस्कृति और कला, पृष्ठ ५४ - राधा कमल मुखर्जी ।

बौध-धर्म का तांत्रिक समन्वयवाद विकसित हुआ । इसी काल में नालंदा और विक्रमशिला जैसे बौध विश्वविद्यालयों का विकास हुआ । नालंदा विश्व बौधधर्म का सांस्कृतिक और शैक्षणिक केन्द्रस्थल सैकड़ों वर्ष तक रहा ।

हर्षवर्द्धन हिन्दुओं का अंतिम चक्रवर्ती सम्राट हुआ और उसके बाद हिन्दू चिंतनधारा की सशक्त विकासात्मक प्रक्रिया की गति मंद पड़ने लगी । भारतीय चिंतन की अनेक धाराएँ अनेक रूपों में प्रवाहित होने लगी । इसी समय राजपूत शौर्य का उदय हुआ, साथ ही मुस्लिम संस्कृति का आविर्भाव । हिन्दू-मुसलमानों के बीच सद्भावकारिणी शक्ति के रूप में भक्ति का जन्म हुआ और मुगल कालीन उदारता का प्रश्रय पाकर भाषा के माध्यम से सूर, तुलसी तथा कबीर- जायसी के मानवीय समन्वयवाद का पुनारांकन। उसके बाद भारत में आंग्ल संस्कृति की वैचारिकतापूर्ण उदारता आई । परिणाम स्वरूप राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती तथा महात्मा गाँधी प्रभृति धर्म चिंतको ने भारतीय धर्म एवं संस्कृति के पुनरूत्थान का सक्रिय प्रयास किया । गाँधीजी भारतीय धर्म, संस्कृति एवं भारतीयता के प्रतीक बनकर आए जिन्होंने भारत की प्राचीन मानवतावादी संस्कृति की उद्घोषणा वाणी से नहीं बल्कि कर्मो से की । सारांश कि भारतीय संस्कृति लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व से प्रारम्भ होकर किसी न किसी रूप में आजतक कायम ही नहीं हैं बल्कि आज की युद्ध जर्जरित मानवता के कल्याण का आदर्श भी रखती है। गाँधी जी ने कहा था कि इस भूखी दुनिया को बाहर निकालने का रास्ता शायद हमारा पुरातन देश ही बता सकें ।

लोकसंस्कृति

उपर्युक्त पक्ष भारत की संस्कृति का सैद्धांतिक और परिनिष्ठित स्वरूप है। इसका एक दूसरा पक्ष भी है और वह है लोकपक्ष। वस्तुतः किसी भी संस्कृति में लोकपक्ष को अवहेलित नहीं किया जा सकता। सच्चाई तो यह है कि लोकसंस्कृति का जन्म पहले होता है तब उससे शिष्ट संस्कृति पनपती है। अतः लोकसंस्कृति की प्राचीनता असंदिग्ध है । मानव ने जब से जन्म लिया और उसका जीवन-विकास प्रारंभ हुआ, रहन-सहन और विचारों की प्रणाली प्रारम्भ हुई न कि लोकसंस्कृति आविर्भूत हो गई । लोकसंस्कृति में जादू ,टोने-टोटके, यंत्र-मंत्र, अंध विश्वास तथा सभी पदार्थो में आत्मवाद आदि अदिम मानस के दाय वर्तमान रहते हैं । अतः लोकसंस्कृति की जड़े आदिम संस्कृति में व्याप्त रहती है । लोकसंस्कृति का लिपिबद्ध रूप न मिलने से उसका विकास क्रम का यथार्थ

अध्ययन संभव नहीं परंतु उसके स्वरूप की झाँकी शिष्ट संस्कृति में निहित लोकतत्वों के माध्यम से मिलती है । विश्व के पुरातन साहित्य में वेदों का महत्वपूर्ण स्थान है । हमारी संस्कृति का लिखित रूप वहीं से मिलता है । वेदों में शिष्ट संस्कृति के साथ ही लोकसंस्कृति के भी तत्व मिलते हैं। ऋग्वेद मुनिमानस का प्रतिनिधित्व करता है तो अथर्ववेद लोकमानस का । लोकजीवन की मान्यताएँ, आस्थाएँ, रूढ़ि परम्पराएँ, यंत्र-मंत्र आदि अथर्ववेद का वर्ण्य है। सभी चेतन और जड़ पदार्थों को प्राणी की तरह आत्मशील एवं समवेदनशील समझना लोकजीवन और लोकसंस्कृति की प्रमुख विशेषता है । अथर्ववेद में सर्वत्र यही भाव भरा है । सर्प, व्याघ्र, हरिण ही नहीं बल्कि वन, पर्वत, नदी, समुद्र एवं वनस्पति जगत् आत्मतत्व से युक्त संवेदनशील, ग्रहणशील रूपों में अवाहूनीय है । वज्र, दण्ड, भेषज, कुहू, राका, योनि सभी को सचेतन मानकर सिद्ध करना अथर्ववेद का लक्ष्य है । अथर्ववेद के सम्बंध में डॉ. रामखेलावन पाण्डेय का विचार द्रष्टव्य है - "उसके अनेकानेक मंत्र ऐसे हैं जिनका सम्बंध अभिचार से है । मारण, मोहन, उच्चाटन की क्रियाओं के व्याख्यान करने वाले मंत्र हैं तो तंत्र, मंत्र और यंत्र का विशद वर्णन भी । जादू-टोना और भूत-प्रेत बाधा सम्बंधी क्रियाएँ भी आई है । लोक धारणाओं की सामान्य चिंताओं ने धार्मिक स्वरूप ग्रहण किया हैं। लोक विश्वास इसमें अभिव्यक्त है ।"१

अतः लोकसंस्कृति और शिष्टसंस्कृति की धाराएँ जो वैदिक काल से प्रारम्भ हुई वह आजतक सामानांतर रूप से प्रवाहित होती रही है । वैदिक काल के उतरार्द्ध वेदांत की मरूभूमि में लोकसंस्कृति की धारा सूखती तो नहीं परंतु क्षीण अवश्य हो जाती है। पुनः बौद्धकाल की उर्वर भूमि में तंत्र-मंत्र एवं जातक कथाओं के माध्यम से लोकसंस्कृति की धारा गुरू गम्भीर होकर प्रवहमान होने लगती है और पुराणों के लोक समुद्र में जा मिलती है । प्रथमतः शलिवाहन काल में गाथा सप्तशती के रूप में लोकगीतोंका संग्रह उपलब्ध है जो लोकसंस्कृति के जीवंत तत्व से परिपूर्ण है । गुणाढ्य के विशाल कथासंग्रह में भी लोकसंस्कृति और लोककथाओं का अलबम मिलता है परंतु उक्त संकेत तो लोकसंस्कृति के लिए इंगित मात्र है । वस्तुतः लोकसंस्कृति के विराट् और व्यापक तत्व लोकमानस में संस्कार स्वरूप वर्तमान रहते हैं । मौखिक परम्परा तथा व्यष्टिगत और समष्टिगत आचार-व्यवहार के द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी में व्यक्त होते रहते हैं । अतः लोकसंस्कृति का यथार्थ अध्ययन शिष्टसंस्कृति के लिखित स्वरूप के अध्ययन से नहीं

१. भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना- ले. राम खेलावन पाण्डेय

हो सकता बल्कि लोकमानस और लोकजीवन की प्रवृतियों एवं उनके सारे कर्मो तथा रीति-रिवाजों के अध्ययन से हो सकता है ।

आधुनिक युग में लोकसंस्कृति का अध्ययन पर्याप्त रूप से पाश्चात्य देशों में हुआ हैं । इस क्षेत्र में अमेरीका के इन्डियाना युनिवर्सिटी का नाम सर्वप्रथम लिया जा सकता है । जर्मन और आयरलैंड युर्निवसिटी में भी इस क्षेत्र में काम हो रहे हैं । व्लूम फील्ड, अंटीआर्ने, सोफियाबर्न, स्टिथ थामसन, ई. वी. टेलर, रेड फील्ड, ए. ए. गोल्डेन वाइजर, एम० फास्टर, मैक्क्मि मैरिट आदि पाश्चात्य लोकवार्ता विदों में परिगणित हैं। भारत में डॉ. सत्येन्द्र, डॉ. इन्द्रदेव, डॉ. रघुवंश, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, श्री देवेन्द्र सत्यार्थी, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, कन्हैया लाल सहल, देवी लाल सामर, झवेरचंद मेघाणी, दिनेश चन्द्रसेन प्रभृति भारतीय लोकसंस्कृति के अध्ययेता हैं । उपर्युक्त विद्वानों ने लोकसंस्कृति के अध्ययन की नई और वैज्ञानिक दिशाएँ दी । इनके पूर्व लोकसंस्कृति का अध्ययन उद्‌विकास के सिद्धांतों (Theory of Evolution) के अवशेष रूप में किया जाता था । समाजशास्त्री और नृतत्वशास्त्री लोक संस्कृति को मानवीय-विकास-परम्परा की एक कड़ी के रूप में अध्ययन करते रहे हैं। परिणाम स्वरूप आदिम जनजातीय संस्कृति (Tribal Culture) का अध्ययन किसी क्षेत्र विशेष या किसी ग्राम विशेष को एक इकाई मान कर हुआ । रूस आदि देशों में लोक संस्कृति का अध्ययन ग्राम को एक यूनिट मानकर किया गया । इस प्रकार का अध्ययन पाश्चात्य देशों के लिए चाहे यथार्थ हो परंतु भारत के लिए सत्य प्रतीत नहीं होता । चूँकि यहाँ की संस्कृति में स्थानीय विशेषताओं (Local colouring) के वाबजूद एक समान तत्व सम्पूर्ण लोकसंस्कृति में पाया जाता है । साथ ही आदिम जनजाति संस्कृति (Tribal culture) और लोकसंस्कृति (Folk culture) में समानता नहीं । जनजाति संस्कृति आदिम संस्कृति की प्रतिरूप है और शिष्टसंस्कृति मुनिमानस की । लोकसंस्कृति उक्त दोनो संस्कृतियों के बीच का स्थान ग्रहण कर सकती है । आदिम जनजाति संस्कृति किसी समुदाय विशेष की संस्कृति होती है और अलग-अलग समुदाय की अलग-अलग सांस्कृतिक विशेषताएँ हो सकती है । उसी प्रकार शिष्टसंस्कृति की अपनी विशेषताएँ होती हैं । उसका स्वरूप लिखित होता है । उसके लोगों में अहं-चैतन्य की प्रधानता रहती है । अपनी विशिष्टताओं से वे लोग परिचित रहते है । इसके विपरीत लोक संस्कृति समुदायगत संस्कृति और शिष्टसंस्कृति के बीच कृषक संस्कृति की प्रतिरूप

---

१. लोकजीवन, लोकमानस, लोकप्रवृतियों के लिए मेरी 'मगध की लोक कथाएँ : अनुशीलन खंड देखें।

रहती है । इसकी एक सीमा समुदायगत संस्कृति (Tribal Culture) से और दूसरी सीमा शिष्ट या नागर संस्कृति से स्पर्श करती है । यह विभिन्न समुदायों से स्पर्श करती हुई नागर संस्कृति को भी स्पर्श करती है। अतः लोकसंस्कृति के अध्ययन के लिए सिर्फ किसी समुदाय विशेष का अध्ययन अपेक्षित नहीं बल्कि सम्पूर्ण लोकजीवन और लोकप्रवृतियों का अध्ययन आवश्यक है । उदाहरणार्थ- किसी ग्राम का सम्बंध (वैवाहिक, सामाजिक, आर्थिक आदि) सिर्फ उसी गाँव तक सीमित नहीं रहता बल्कि दूसरे गाँव में भी रहता है, नगरों में भी रहता है । नगर में रहने वाले अपढ़ और अहं-चैतन्य से शून्य अनेक लोग रहते हैं जिनकी संस्कृति लोकसंस्कृति रहती है । गाँवों मे भी नागर संस्कृति के लोग रहते हैं । अतः लोकसंस्कृति को किसी विशेष स्थान और किसी विशेष जातियों के साथ नहीं जोड़ा जा सकता बल्कि यह तत्व न्यूनाधिक अंश में सर्वत्र और सभी लोगों में पाया जाता है। इसीलिए डॉ. सत्येन्द्र ने लोकवार्ता के लिए विस्तारव्यापी अथवा क्षितिजीय (Horizental) अनुसंधान ही नहीं करने का बल्कि गहरा अर्थात् (Perpendicular) तलगामी अध्ययन भी करने का परामर्श दिया है[१]। अतः लोकसंस्कृति का अपना स्वरूप है, अपनी विशेषताएँ है जिसका संबंध लोकमानस और लोकजीवन से है जिसमें लोक प्रवृत्तियों की प्रधानता रहती है । निष्कर्षतः लोकसंस्कृति के निम्न स्वरूप एवं उपादान हो सकते हैं -

१. लोकसंस्कृति समुदायगत संस्कृति नहीं है बल्कि विस्तृत एवं व्यापक संस्कृति है । अतः यह न तो आदिम जनजाति की जंगली सभ्यता में पायी जाती है न नागरी औद्योगिक सभ्यता में बल्कि यह कृषक सभ्यता में पायी जाती है जिसका विस्तार दूर-दूर तक ग्राम्य या नगर जीवन के लोगों में रह सकता है ।

२. लोकसंस्कृति के वाहक व्यक्ति प्रायः अपढ़ और झूठे अहंभाव प्रदर्शन से शून्य रहते हैं परंतु कृषक सभ्यता के अंग होने से इनका इतिहास के साथ सम्बंध अवश्य हो जाता है । और यही कारण (कृषि) है कि क्षेत्रीय भिन्नताओं के बावजूद लोकसंस्कृति में अद्भुत समता रहती है ।

३. लोकसंस्कृति और शिष्टसंस्कृति में आदान-प्रदान होने से लोकसंस्कृति में शिष्टसंस्कृति के तत्व आ जाता हैं ।

४. लोकसंस्कृति को ग्राम संस्कृति कहना समीचीन नहीं क्योंकि नगर के निम्न वर्ग के निरक्षर लोग तथा स्त्रियाँ लोकसंस्कृति की वाहिका रहती हैं ।

१. लोक साहित्य विज्ञान, पृष्ठ-११ ले. डॉ. सत्येन्द्र।

५. लोकसंस्कृति के वाहक लोगों का साहित्य प्रायः अलिखित लोकसाहित्य होता है । ये लोक साहित्यकार अनाम और अज्ञात होते हैं तथा उनका साहित्य काल-प्रवाह के अनुकूल परिवर्तनशील ।

६. लोकसंस्कृति में लोकमानस और लोकजीवन के सारे तत्व वर्तमान रहते हैं, जैसे -अभिचार, यंत्र-मंत्र की प्रधानता, जादू टोने-टोटके, सर्वात्मवाद, अतिदेववाद, रूढ़ि-परम्परा में विश्वास, अंश-अंशी में अभेद, नाम-नामी में सामंजस्य, स्वप्न-यथार्थ में अभेद, नजर-टोना में विश्वास, परम्परागत रीति रिवाज में आस्था, अति धर्मभीरूता, झूठा व्यामोह, मारण-मोहन-उच्चाटन की प्रक्रिया में आस्था, अधिकांश अवसरों पर आनुष्ठानिक क्रियाएँ एवं परम्परा से अतिमोह की प्रधानता लोकसंस्कृति की कतिपय प्रमुख विशेषताएँ हैं ।

संस्कृति और लोकसंस्कृति के उपर्युक्त विश्लेषण ग्रंथ के वर्ण्य में विस्तार-दोष सा लगता है परंतु लोकगीतों में मुख्यतः लोकसंस्कृति का ही प्रकाशन मिलता है । वस्तुतः लोकगीतों के माध्यम से किसी देश या स्थान की सही संस्कृति व्यक्त होती है। मगध के लोकगीतों में भारत की लोकसंस्कृति तो अभिव्यक्त हुई ही है साथ ही अभिजात एवं वैदिक संस्कृति भी व्यक्त हुई है । कालांतर में भारतीयेत्तर संस्कृतियों के तत्व भी लोकगीतों में मिलते और घुलते गए है । ग्रंथ में यथास्थान संस्कृति के सभी तत्वों का अन्वेषण-विश्लेषण किया गया है । इसीलिए संस्कृति के इस प्रकरणा की आवश्यकता पड़ी ।

लोकगीतों की उत्पति, मौखिकता एवं परम्पराएँ

उपोद्घात

प्राणिमात्र मूलतः आवेग (Emotions) से क्रियाशील होते हैं। अतः आदिम मानव में आवेग की प्रधानता रही होगी। शनैः शनैः काल के अंतराल से आवेग विचारों से नियंत्रित हुआ होगा। आज भी यह मानवीय प्रवृत्तियों की नियंत्रण की प्रक्रिया वर्द्धमान है। आदिम वनजातियों में अभी भी आवेग की प्रधानता रहती है और अभिजात वर्ग अपने आवेगों को विचारों के आवरण से ढँके रहता है। आवेग मनुष्य की आदिम मूल प्रवृति है जिसकी अभिव्यक्ति प्रथमतः स्वरों के माध्यम से हुई होगी। वन-गिरी कन्दराओं में रहने वाला आदिम मनुष्य की प्रथम और चिर सहचरी प्रकृति उसके आवेगों में तीव्रता (उद्दीपन) प्रदान करती होगी। वह प्रकृति की क्रूरतओं एवं कठोरताओं से बचने का प्रयास (प्रार्थना एवं आनुष्ठानिक कार्य =Taboo) करता होगा तो उसकी कोमलताओं एवं अनुकूलताओं में सहभागिता एवं सहचारिता का अनुभव करता होगा। इस प्रकार संवेगों के मूलतत्व भय और समानतत्व आह्लादन की अभिव्यक्ति आदिम मानव प्रकृति के कार्यव्यापारों के साथ करता होगा लेकिन शब्दाभाव में उसकी अभिव्यक्ति अवश्य ही स्वरों के माध्यम से हुई होगी। आज भी शिशु स्वरों के माध्यम से शब्दों को ग्रहण करता है। अतः जिस भाषा-भाषी में शिशुजन्म लेता है उसके स्वरों या ध्वनियों को वह ग्रहण कर लेता है। वह ध्वनियों के कोई विशेष मौलिक रूप को लेकर यहाँ पैदा नहीं लेता। उसी प्रकार आदिम मानव भी प्रकृति की ध्वनियों को सुनकर उसकी अनुकृति में स्वर संधान करता होगा। पिक की कुहू-कुहू सुन कर आदिम मानव का मन भी उसके साथ स्वर मिलाने के लिए उद्वेलित हो उठा होगा। नित्य सुबह -शाम पंछियों की चहचहट सुनकर वह भी चहचहाने लगा होगा। उसके हृदय का आवेग स्वरों के सहारे फूट पड़ा होगा। कर्णप्रिय लगने के कारण वह उसे दुहराता भी होगा। अतः मेरी समझ में आदिमगीतों का मूलतत्व स्वर समझना चाहिए। प्रबल आवेगों की अभिव्यक्ति स्वरों के माध्यम से हुई होगी। काल क्रम से स्वरों में लय का संयोग हुआ होगा, आरोह-अवरोह। लयों को आवेग से ताल मिलता होगा। अतः आवेग + स्वर + लय + ताल के योग से आदिमगीत→गीत→लोकगीत अस्तित्व में आया होगा। लोकगीत का मूलतत्व संवेग है। (ऐतिहासिक क्रम में अन्य तन्तु जुड़े) संवेग में लोकमानसीय दाय वर्तमान रहता है। अतः संवेग के कारण जहाँ स्वरोत्पति होती है, वहीं लोकमानसीय अवधारणओं के कारण उसमें लोकतत्व की प्रचुरता रहती है। ऐतिहासिक परम्परा में लोकतत्व के साथ अन्यान्य

शिष्ट तत्व भी जुड़ते जाते हैं । अतः लोकगीत लोकमानसीय तत्वों से युक्त या लोक मानसाश्रित आवेगों (आदिम प्रवृतियों) से उत्प्रेरित स्वर प्रधान लोकरचना है जिसमें शब्द और अर्थ वैज्ञानिक विधि या शास्त्रीय पद्धति से संयोजित नहीं होते । यहाँ स्मरणीय है, लोकगीतों में संश्लिष्ट शब्दावली वैचारिक अर्थोत्पति के लिए पर्याप्त नहीं होती बल्कि किसी विशिष्ट संवेगों की सहायिका होती है । यही कारण है कि सभी देशों और सभी कालों की लोकभाषाओं मे लोकगीतों की अवस्थिति रहती है । यह सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक गीति प्रक्रिया है क्योंकि इसका सम्बंध मानव की स्वभावज प्रवृति से है । अतः लोकगीत क्रमागत वैज्ञानिक और वैचारिक प्रभावों के बावजूद अजर अमर है । इसीलिए सभी देशों और कालों में इसकी अविछिन्न परम्परा मिलती है । इसी के क्रोड़ से अभिजात संगीत की धारा फूटती हैं, कलागीत आदि जन्म लेते हैं । ये शास्त्रीय और कलागीत अपने सुदीर्घीकरण और सर्वग्राह्यता के लिए लोकगीतों के स्वरों, लयों और तालों को ग्रहण करते रहते हैं । अतः लोकगीत ही वह मूल उत्स है जहाँ से सभी प्रकार के गीत, संगीत एवं नाट्यकृतियों का उद्भव-विकास होता है ।

लोकगीतों के रचयिता एवं इसकी रचना प्रक्रिया का कोई निश्चित माप-दण्ड नहीं रहता । किसी लोकगीत की एक कड़ी एक व्यक्ति के द्वारा तो दूसरी कड़ी दूसरे के द्वारा रची गई हो सकती है । रचना प्रक्रिया में भी कोई निश्चित शास्त्रीयता और वैज्ञानिकता का समंजस्य नहीं मिलता परन्तु इन सारे ऊहापोहों से यह कतई नहीं समझना चाहिए कि लोकगीत पूर्णतः अनियमित, अमर्यादित एवं अनियंत्रित मूर्खों की अनगढ़ रचना है । मैं इतना कहना चाहता हूँ कि लोकगीतों में किसी प्रकार का सायास प्रयोग (कष्ट कल्पना या कष्ट प्रक्रिया) नहीं होता । जो कुछ भी रहता है, सहज, स्वभाविक और संवेगाश्रित । आज लोकगीतों में जो आधुनिकता का समावेश दीखता है वह लोकगीत का सहज स्वभाव नहीं बल्कि कृत्रिम आवरण है । ऐसी विकृति पहले लोकगीतों में नहीं आई थी । इसी को देखकर कुछ लोग चिंतित हैं कि लोकगीत आध ुनिकता और कृत्रिमता का प्रहार सहते-सहते एक दिन मर जाएगा । लेकिन मेरा विचार है कि लोकगीत कभी मरेगा नहीं, स्वरूप परिवर्तित भले ही करले । परंतु स्वरूप परिवर्तन भी तो लोकगीतों की ऐतिहासिक परम्परा है जो काल प्रवाह में होते रहता है।

लोकगीत लोक साहित्य का सर्वाधिक सशक्त अंग (विधा) है । लोकवार्त्ता के अंतर्गत इसका महत्वपूर्ण स्थान है । कोई भी आनुष्ठानिक कार्य के लिए लोकगीत अनिवार्य है, भले ही यह परिवर्तित रूप से गेय क्यों न हो । लोकगीतों का स्वरूप

परिवर्तन भी ऐतिहासिक प्रक्रिया है । आदिम मानव के आदिमगीत संवेग प्रधान लघुगीत होगें फिर वैचारिकता और शिष्टता के संयोग से कथागीत का विकास हुआ होगा और अंत में प्रबंधगीतों की रचना हुई होगी । अतः परम्परा और रूप विधान की दृष्टि से तीन प्रकार के गीतों का विकास होना सहज प्रतीत होता है । (१) संवेगप्रधान लधुगीत (२) कथात्मकगीत (३) वृहद् प्रबंधात्मकगीत जो किसी भी संस्कृति और सभ्यता के मध्यकाल में वनता बिगड़ता और विकसित होता है ।

---

(१) इस प्रासंगिक भूमिका को मनोवैज्ञानिक और नृतात्विक विकास परम्परा की पृष्ठभूमि में रखकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

(२) इस प्रसंग में लोक मानस, लोकतत्व, संवेग, आदिम प्रवृतियाँ आदि शव्द आए हैं जिनका विस्तृत विवरण-विश्लेशण मैने अपने "मगध की लोक कथाएँ : अनुशीलन एवं संचयन में कर दिया हैं । यहाँ उसकी पुनर्स्थापना उचित नहीं।

(३) जिज्ञासु और सुधी पाठक उक्त ग्रंथ का अवलोकन करें।

लोकगीतों की मौखिकता और शिष्ट साहित्य पर इनका प्रभाव

आदिम काल से लोकजीवन में लोकगीत बनते बिगड़ते और विकसित होते रहते हैं । लोककंठ इसे अभिव्यक्त करते रहा है । आनुष्ठानिक कार्यो में लोकगीतों के गायन की प्रचुरता रही है । इस प्रकार ये लोकगीत काल के विकराल अंतराल को बेधते हुए आज भी अपने विशिष्ट रूप में वर्तमान हैं । इनका मौलिक तत्व और मौखिक परम्परा हजारों -हजार वर्ष से कायम है परंतु लेखबद्ध नहीं होने के कारण इसका प्रामाणिक इतिहास -भूगोल नहीं मिलता है । इसके अतीत अस्तित्व की जानकारी के लिए किसी देश के परिनिष्ठित साहित्य का अध्ययन-विश्लेषण अपेक्षित होता है । अन्य देशों की तरह भारतीय लोकगीतों की परम्परा भी मौखिक रही है । अतः इसके अतीत अस्तित्व की जानकारी के लिए प्राचीनतम वैदिक संहिताओं का अवलोकन करना पड़ता है ।

वेदों की ऋचाएँ मंत्रबद्ध हैं । मंत्र विशिष्ट प्रकार की ध्वनियों और अर्थो के सामंजस्य से निर्मित है । इसका प्रभाव न केवल परिवेश पर पड़ता है बल्कि मनुष्य के तंत्रिकातंत्र भी सीधे प्रभावित होते हैं । यही कारण है कि वैदिक यज्ञों से परिवेश की परिशुद्धि तो होती ही है, मानवीय तंत्रिकातंत्र भी उद्वेलित होकर परिष्कृत होते हैं जिससे मनुष्य रोगमुक्त होकर सुसंस्कारित हो जाता है और भौतिकता के बीच आध्यात्मिकता जाग जाती है । अतः अपौरूषेय वैदिक मंत्र, ध्वनियों और स्वरों के माध्यम से मनुष्य के मन को परिष्कृत कर एक विशेष भावभूमि में प्रवेश कराते हैं । यही कार्य संगीत भी करता है, गीत और लोकगीत भी । लोकगीतों से भाव संवेगों का उद्वेलन होता हैं। उद्वेलित भाव साधारणीकृत हो जाता है और अंततः पूर्ण अह्लादन। यही लोकगीतों का अभिमंत्रित प्रभाव है ।

वैदिक ऋषियों ने प्रकृति के लोकगीतात्मक तत्वों का अनुशरण किया और लोकजीवन में प्रत्यक्षतः लोकगीतों का श्रवण किया । यही कारण है कि मंत्रों में प्रकृति तत्वों और लोकगीति तत्वों का अपूर्व संगम मिलता है । ऋग्वेद में प्रकृतितत्व, अथर्ववेद में लोकतत्व और सामवेद में गीतितत्व का प्राचुर्य है । वैदिक ऋषियों को मंत्रों में स्वरों और ध्वनियों के सामंजस्य करने की प्रेरणा प्रकृति के साथ लोकगीतों से मिली होगी । प्राचीन लोकगीत अर्थात् गाथा का प्रयोग अनेक वैदिक संहिताओं में मिलता है। इन गाथाओं के गाने का प्रचलन राजसूय यज्ञ, विवाह, सीमंतोंनयन या आनुष्ठानिक कार्यो

के समय था । इनका प्रयोग वैदिकमंत्रों की तरह नहीं बल्कि आज के लोकगीतों की तरह होता था । आज भी किसी संस्कार (विवाह आदि) सम्पन्न होने के अवसर पर शास्त्रोक्त विधि का पालन होता है तो लोकविधि का भी । पुरोहित शास्त्रोक्त विधि से मंत्रों का उच्चारण करते है तो स्त्रियाँ लोकविधि सम्पन्न करती लोकगीतों को गाकर कर्म विधान करती हैं ।

अतः वैदिक काल में यज्ञादि कर्मकाण्ड सम्पन्न करते या विवाहादि संस्कार सम्पन्न करते गाथाओं के गाने का प्रचलन था । ये गाथाएँ परम्परा से लोकजीवन में गाई जाती होंगी जिसे अभिजात वर्ग ने ग्रहण कर लिया, अपने परिनिष्ठित साहित्य में जिक्र किया जिससे तत्कालीन लोकगीतों के स्वरूप और विषय का पता चलता है । डॉ. कृष्णदेव उपाध्यय ने मैत्रायणी संहिता में वर्णित दो गाथाओं का उदाहरण दिया है जो तत्कालीन समाज में विवाह के समय गाई जाती थी

"अथ गाथां गायतिः -

सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति ।
यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायाम स्याग्रवः ।।
यस्यां भूतं समभवद् यस्यां विश्वमिदं जगत् ।
तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः ।।"

वैदिक कालीन यह अनुष्ठान लौकिक अनुष्ठान है जो परम्परा से आज भी वर्तमान है । महाभारत और रामायण काल में भी यह परम्परा वर्तमान रही । बाल्मीकि ने अपनी रामायण में राम के प्रशस्तिगान करने वाले गायकों का वर्णन किया है । दुष्यंत-पुत्र भरत के विषय में ये गाथात्मक पँक्तियाँ द्रष्टव्य है ।

महाकर्म भारतस्य न पूर्वेन परे जनाः ।
दिव्यं मर्त्यइव हस्ताभ्यां नो दापुः पंच मानवाः ।

विक्रम की पहली से तीसरी शताब्दि तक लोकगीतों के बनने-गाने का अत्यधिक प्रचलन था । उससे प्रभावित होकर राजा शालिवाहन ने सात सौ लोकगीतों का एक संकलन तैयार करवाया । यह गाथाकोश तत्कालीन सरस गीतों का श्रेष्ठ उदाहरण है। काश, इस गाथा 'शप्तशती' की तरह तत्कालीन प्रचलित लाखों गाथाओं का कोश तैयार होता तो लोकगीतों का एक अक्षय रत्नाकर हमारे सम्मुख वर्तमान रहता । शप्तशती के एक लघुरत्न के सौन्दर्य का दर्शन करें तो पता चले कि लोकगीतों में कितना माधुर्य एवं

भावातिरेक का चित्रण होता है -

अज्जं गयोति अज्जं गयोति अज्जं गयोन्ति गणिरीए ।
पढ़मच्चिअ दिअहद्धे कुड्डो रेहाहि चितलियों ३/८ ।।

पति वियोग के पहले दिन के आधे भाग में ही विरहिनी ने दीवाल पर रेखा खीच खीचकर चित्रित कर दिया - वह आज ही गया, आज गया, आज गया कहती रही । इस विरहातिरेक की मर्मस्पर्शी भावना लोकगीत की अपनी विशेषता है जिसके कारण आज भी लोकगीत चिंतको एवं वैचारिकों को भी आकृष्ट कर लेते हैं ।

लोकगीत केवल आनुष्ठानिक कार्यो में ही नहीं गाए जाते रहे हैं बल्कि उनका गायन विविध मौसमों में काम करते समय भी होता रहा है । रोपनी, कटनी, कुटनी, पीसनी करती स्त्रियाँ लोकगीत को गाकर थकान मिटाती है और वातावरण को अपनी सरस स्वर लहरियों से आप्लावित करती रही हैं । बारहवीं शदी की लोक कवयित्री बज्जिका धान कूटनेवाली स्त्रियों के गीत का वर्णन निम्न पँक्तियों में द्रष्टव्य है -

विलास मसृणोल्लसन्मुसल लोलदोः कदली परस्पर
परिस्खलद्वलयनिः स्वनोद्वन्धुराः ।
लसंति कलहुङ् कृति प्रसभकम्पितोरः स्थल -
त्रुटद्गमक संकुलाः कलभगण्डनी गीतयः ।।

लोकगीत गाती स्त्रियाँ धान कूट रही है । मूसल के साथ उसकी चूड़ियाँ खनक रही हैं । उनके उरोज हिल रहे हैं । उनकी आवाज के साथ चूड़ियों की खनक मिलकर अद्भुत आनंद दे रहे हैं ।

अपभ्रंश और सिद्धकाल में भी इसका समाहार मिलता है । भक्ति काल के लोकजीवन में लोकगीतों का पर्याप्त प्रचलन मिलता है। उसके प्रतिनिधि कवियों ने लोकगीतों का प्रयोग् अपनी शिष्ट रचनाओं मे भी कर दिया है। लोकनायक तुलसीदास ने 'रामलला नहछू' लिखकर लोकगीत की मौखिक परम्परा को लिखित स्वरूप प्रदान किया । जायसी ने लोकजीवन से बारहमासे को ग्रहण किया । कबीर ने रमैनी को लोकधुन में व्यंजित किया । हिन्दी साहित्य का इतिहास भारतेन्दु काल तक लोकभाषा का इतिहास रहा है जिसमें लोकतत्वों एवं लोकधुनों का समावेश सहज स्वभाविक रूप से मिलता है । मेरे कहने का तात्पर्य है कि लोकजीवन में प्रचलित लोकगीतों का प्रभाव शिष्ट साहित्य पर पड़ता रहा है जिसकी अभिव्यक्ति वैदिक काल से आज तक

परिनिष्ठित साहित्य में होती रही है । शिष्ट साहित्य मे मुनिमानस ने अपनी रचनाओं की प्रभावोत्पादकता के लिए लोक में प्रचलित गीतों का सहारा लिया होगा । वैदिक गान के अतिरिक्त ब्राह्मण और आरण्यक ग्रंथों में इसकी परम्परा मिलती है । उस काल में ये गीत गाथा के रूप में प्रचलित थे । गाथाएँ किसी मानुषी सम्बंध में प्रचलित होगी क्योकि ऋक् दैवी होती है और और गाथाएँ मानुषी । इसे डॉ. सम्पति अर्याणी ने भी स्वीकारा है ।

महाभारत और रामायण काल में तो अनेकानेक गाथाएँ प्रचलित मिलती हैं । पारस्कर गृहसूत्र, आश्वलायन गृहसूत्र और मैत्राणी संहिता में विवाह के अवसर पर गाए जानेवाले गीतों का संकेत मिलता है। वे अवश्य ही लोकगीत होंगे जो परम्परा के प्रवाह में चले आते रहे होंगे । पौराणिक युगों में तो गीतों की परम्परा प्रचुर मात्रा में मिलती है । बाल्मीकि ने रामायण में नाँचने-गाने वाले बंदीजन का वर्णन किया है, यहाँ उदाहरण ध्यातव्य है -

ईक्षुच्छाया निषदिन्यस्तस्य गोक्षुर्गणोदयम् ।
आकुर कथोद्‌घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः ।।

इसमें राजा रघु की उदारता, शूरता और स्त्रियों द्वारा गान की चर्चा की गई है । संस्कृत साहित्य में लोकलय और लोकधुनों पर आधारित लोकगीतों का वर्णन सर्वत्र आया है । वाणभट्टकवि ने तो नाँच-गान की एक मंडली तैयार करली थी जिसमें अभिनय एवं संगीत का वाहुल्य था । संस्कृत में जयदेव का गीतगोविदं लोकलय पर आधारित संस्कृत का उत्कृष्ट गीतिकाव्य है । संस्कृत साहित्य ने लोकलयों का प्रयोग यत्र-तत्र हमेशा किया है । आधुनिक युग में महाकवि कमलेश जी ने लोकधुनो पर आधारित 'कमलेश विलास' नामक ग्रंथ की रचना की है। इसमें सोहर, होली, चैता, खेलड़िन आदि लोकधुनों का संस्कृत में बड़ी सफलता के साथ प्रयोग किया गया है ।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में विद्यापति के सारे पद लोकलयों और धुनों पर आधारित हैं, सूर के पद भी राग पर ही आधारित हैं । तुलसी दास ने तो यहाँ तक कहा है कि "चलीसंग लई सखि सयानी । गावत गीत मनोहर बानी ।" मनोहर वाणी में गाये हुए सारे गीत वही होंगे जो तत्कालीन समाज में प्रचलित होंगे । वस्तुतः ये लोकगीत आदिम युग से आधुनिक युग तक लोककंठ में प्रवाहित होता आया है । आधुनिक युग में श्री राम नरेश त्रिपाठी और श्री देवेन्द्र 'सत्यार्थी' ने लोकगीतों की

ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। परिणाम स्वरूप सभी क्षेत्रीय बोलियों में लोकगीतों के संग्रह एवं विवेचन-समीक्षा होने लगी।

भारत की विविध जनपदीय बोलियों में लोकगीतों का संग्रह सम्पादन हो रहा है। अवधी में डॉ. सरोजनी रोहतगी, ब्रजभाषा में डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थानी में सूर्य किरण पारीक, बुंदेल में कृष्णानंद गुप्त, बंगला में दिनेशचद्र सेन, गुजराती में झबेरचंद मेघाणी, भोजपुरी में डॉ. कृष्णादेव उपाध्याय, मैथिली में राम इकबाल सिंह 'राकेश' आदि ने अपने क्षेत्रों के लोकगीतों का संग्रह -सम्पादन किया है।

मगही में अभी तक विश्वनाथ प्रसाद ने केवल संस्कार गीतों का संग्रह -सम्पादन किया है। डॉ. सम्पति अर्याणी ने अपने मगही भाषा-साहित्य में कुछ गीतों का संग्रह एवं विवेचना किया है।

भारतीय लोकगीतों की परम्परा की तरह ही मगही लोकगीतों की परम्परा रही है। सुरम्य भौगोलिक परिवेश और अति महत्वपूर्ण ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परम्परा के कारण मगही लोकगीतों में यत्र-तत्र कुछ अपनी विशेषताएँ भी दीख पड़ती है। ये विशेषताएँ प्रायः आनुष्ठानिक और रूपगत होती है जो इसकी अपनी संस्कृति के कारण दीखती है। मगही संस्कृति- धर्म, शिक्षा, इतिहास, पुराण में अपनी सानी नहीं रखती। अतः इसका प्रभाव लोकजीवन पर भी तो पड़ता ही है। जिस तरह लोकगीत शिष्ट साहित्य को प्रभावित करता है उसी तरह शिष्ट वर्ग भी लोकजीवन को प्रभावित करता है। परिणाम स्वरूप शिष्ट वर्ग और शिष्ट संस्कृति का भी प्रभाव लोकगीतों पर पड़ता है। इस पारस्परिक घोल-मेल से सभ्यता के नये-नये आयाम खुलते जाते हैं जो लोकगीत के उपजीव्य में सहायक बनते हैं। मगध में ऐसा घोल-मेल लम्बे अरसे से होता रहा है। अतः यहाँ के लोकगीतों में प्रवृतिजन्य साम्य के साथ सभ्यता जन्य वैविध्य का भी दर्शन होगा। अतः काल परम्परा के प्रवाह में गीतों का क्षेत्र-विस्तार भी होता गया है। जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं जो गीत के विषय न हो सके। सारे सुख-दुख, हर्ष-विषाद, जीवन मरण, पृथ्वी -आकाश, अर्थात् सारा ब्रह्माण्ड गीतों के कथ्य हो सकते हैं। गीतों में मनुष्य की सारी आभ्यंतरिक और वाह्य परिस्थितियों का वर्णन होता है।

मगही लोकगीतों का वर्गीकरण

लोकगीतों का वर्गीकरण अनेक विद्वानों ने अपने -अपने अलग ढंग से किया है। डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार वह गीत जो लोकमानस की अभिव्यक्ति हो, अथवा जिसमें लोक मानसाभास भी हो, लोकगीत के अंदर आता है। लोकमानस एवं लोकप्रवृति के वाहक लोकगीतों का वर्गीकरण लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. सत्येन्द्र ने ब्रज लोकगीतों के आधार पर उन्हे सैकड़ो रूपो-उपरूपों में विभाजित किया है परंतु उनके मुख्य आधार दो ही है (१) अनुष्ठान सम्बंधी (२) मनोरंजन सम्बंधी। रामनरेश त्रिपाठी ने लोकगीतों को, जिसे वे ग्राम-गीत कहते हैं, ग्यारह भागों में विभाजित किया है -(१) संस्कार सम्बंधी (२) धर्म गीत (३) ऋतु सम्बंधी (४) खेती सम्बंधी (५) भीख मंगों के गीत (६) मेघगीत (७) चक्की- चरखे के गीत (८) वीरगाथा (९) जातिगीत (१०) गीत कथा (११) अनुभव के वचन। त्रिपाठी जी का वर्गीकरण प्रारम्भिक और मोटे तौर पर है क्योंकि एक ही शीर्षक में उनके कई गीत आ सकते हैं तथा कुछ और गीत छूट गये हैं। अनुभव गीत तथा गीतकथा का कुछ तात्पर्य नहीं बुझाता। श्याम पवार ने अपने भारतीय लोक साहित्य में लोकगीतों को चार भागों में विभाजित किया है (१) सामाजिक ऐतिहासिक गीत (२) संस्कार विषयक गीत (३) माहवारी गीत (४) विविध। इनका वर्गीकरण अति संक्षिप्त है जो विस्तार की अपेक्षा रखता है।

डॉ. कृष्णादेव उपाध्याय ने अपने 'भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन' में भोजपुरी गीतों को छह भागों में बाँटा है (१) संस्कार गीत (२) रसानुभूति की दृष्टि से (३) ऋतु-व्रत सम्बंधी (४) जाति सम्बंधी (५) क्रिया गीत (६) प्रकीर्ण। इनका वर्गीकरण वैज्ञानिक होता हुआ भी सर्वांगपूर्ण दृष्टिगोचर नहीं होता। अपने 'अवधी का लोक साहित्य' में डॉ. सरोजनी रोहतगी ने अवधी लोकगीतों को छह भागों में विभाजित किया है (१) संस्कारों की दृष्टि से (२) धार्मिक अनुष्ठान, पूजा-पाठ आदि (३) ऋतुओं के क्रम से (४) उद्योग तथा श्रम के आधार पर (५) जातियो के अनुसार (६) विविध। इनके वर्गीकरण के शीर्षक व्यापक आधार को स्पर्श करता है परंतु विविध गीतों का आशय स्पष्ट नहीं है।

मगही लोकगीतों का वर्गीकरण दो महानुभावों ने किया है, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद ने अपने 'मगही संस्कारगीत' में विषय के आधार पर लोकगीतों को १४ प्रकारों में विभाजित किया है[1] जो अधिक विस्तृत हो गया है जिन्हे अधिक वैज्ञानिक और संश्लिष्ट रूप में भी किया जा सकता है। डॉ. सम्पति अर्याणी ने भी मगही लोकगीतों का

---

१. मगही संस्कार गीत-निवेदन पृष्ठ (ख) ले. विश्वनाथ प्रसाद

विषयगत वर्गीकरण किया है -(१) संस्कार गीत (२) क्रियागीत (३) ऋतुगीत (४) देवगीत (५) बालगीत (६) विविध गीता[2] यह विषयगत विभाजन कुछ अंश तक ठीक प्रतीत होता है परंतु विविध दृष्टियों से वर्गीकरण नहीं किया गया है ।

मेरे दृष्टिकोण से मगही लोकगीतो का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है -

(१) क्षेत्र की दृष्टि से (क) ग्रामीण (ख) शहरी (ग) वनवासी

(२) जातीय दृष्टि से (क) जाति विशेष पर (ख) कर्म विशेष पर (चूंकि कर्म भी यहाँ जाति पर आधृत है)

(३) अवस्था भेद से (क) बालगीत (ख) युवागीत (ग) वृद्धों के गीत

(४) योनि भेद से (क) पुरूषों के गीत (ख) स्त्रियों के गीत

(५) विषय वस्तु एवं उपयोगिता की दृष्टि से (क) आनुष्ठानिक - विविध संस्कारों, पर्व त्योहारों एवं पूजा- पाठ से सम्वंधित (ख) उद्योग सम्पर्कित - जँतसार, रोपनी, चर्खा आदि के गीत (ग) मौसमी- फागु, चैता, कजरी, चौहट, मेघगीत आदि।

(६) प्रकृति परक (क) शुद्धगीत (ख) नाट्यगीत (ग) नृत्यगीत

(७) शैली परक (क) प्रबंधात्मक (ख) स्फुट गीत

(८) झूमर और विविधगीत - लोरी, प्रातकाली भजन, लटका, लतीफा आदि ।

उपर्युक्त सम्पूर्ण मगही लोकगीतों का समन्वित प्रमुख रूप निम्न प्रकार होगा - (१) संस्कार गीत (२) देवविषयक गीत (३) जाति-क्रियागीत (४) मौसमी गीत और (५) झूमर तथा (६) विविधगीत-लोरी, प्रातकाली, भजन, लटका-लतीफा आदि ।

यहाँ उपर्युक्त आठों प्रकार के लोकगीतों का सोदाहरण परिचय द्रष्टव्य है

(१) क्षेत्र की दृष्टि से - लोकगीतों पर विभिन्न क्षेत्रों का स्पष्ट प्रभाव दीखता है। अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग किस्म के गीत गाए जाते हैं । साथ ही एक ही प्रकार के गीतों पर क्षेत्रीय प्रभाव के कारण भिन्नता दीखती है । एक ही गीत गाँव में एक तरह से तो शहर में दूसरी तरह से गाया जाता है । गाँव में ग्राम्यता का प्रभाव रहता है तो शहर में नागरिकता का । वनवासियों में वही गीत दूसरी तरह से गाया जाता है । शहर में - कहाँ से आवे श्री यमुना हे, कहाँ से आवे भगवान, मुरलिया मधुर बाजे ।

---

२. मगही लोक भाषा और साहित्य, पृष्ठ-१४६-ले. डॉ. सम्पति आर्याणी

जहाँ होती है मीटिंग रामायण वहाँ प्रभु आते हैं ।
पछिम से आवे श्री यमुना हे,
पूरब से आवे भगवान, मुरलिया मधुर बाजे ।
जहाँ होती है मीटिंग रामायण वहाँ प्रभु आते है ।

यही गीत गाँवों में निम्न प्रकार से गाया जाता है ।

कहवाँ से आवे सीरी जमुना हे, कहवाँ से आवे भगवान, मुरलिया मधुर बाजे ।
जहाँ होवऽ हे मीटिंग रमायन उहाँ प्रभु आवे हे ।
पूरबा से आवे सीरी जमुना हे पछिमा से आवे भगवान, मुरलिया मधुर बाजे ।
जहाँ होवऽ हे मीटिंग रमायन, वहाँ प्रभु आवे हे ।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट पता चलता कि शहर में शिक्षा की वजह से शब्द भेद में अंतर आ जाता है । लय और ताल में कोई भिन्नता नहीं रहती। केवल उसे परिमार्जित करने का प्रयास रहता है। कुछ गीत ऐसे हैं जो केवल शहर में ही प्रचलित रहते हैं जिनपर आधुनिकता का प्रभाव रहता है । ग्रामगीतों पर उतनी आधुनिकता हावी नहीं होती । वनवासियों में गाए जानेवाले गीत, ग्रामगीत और नगरगीत दोनो से भिन्न रहते हैं । वहाँ वन्य परिवेश और मान्यताओं की झलक उसमें मिलती है - वनवासी के गीत, सूअर चराने के गीत जिसे मैने हजारीबाग के गाँव से प्राप्त किया हैं-

संझिआ के सुतल गे रहुदी उगलो भल किरिंगिया गे,
भूखलो सुअरिया गे रहुदी खरोटउ भल देवलिया गे ।
पोखरी के पीढ़िया गे रहुदी सुअरिया ढेंघउलकई भल गे,
पूरबे पछिमवाँ गे रहुदी सुअरिया ढेंघउलकई भल गे ।

इस बड़े गीत की सिर्फ चार पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं । पूरे गीत में वन में सूअर चराने एवं रसिया से नायिका की भेंट और शादी का उपक्रम दिखाया गया है । इस गीत में जंगली परिवेश में प्रेमलीला का चित्र है । प्रेम शाश्वत व्यापार है परंतु उसकी अभिव्यक्ति देश, काल और परिस्थितियों के कारण भिन्न प्रतीत होती है जैसा कि उपर्युक्त गीत से विदित होता है। लोकगीतों पर क्षेत्रीयता का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है । अतः क्षेत्र विशेष के आधार पर लोकगीतों का विभाजन किया जा सकता है ।

(२) जातीय दृष्टि से - भारत का समाज जातियों एवं वर्णो में विभक्त है। अलग-अलग जातियों के अलग-अलग पेशे होते हैं और उनके परम्परागत संस्कार भी

भिन्न होते हैं। यही कारण है कि लोकगीतों में जातिगत वैशिष्ट्य और तज्जन पेशा की अभिव्यक्ति होती है। इनगीतों में जातिगत संस्कृति एवं रूढ़ि परम्परा के भाव बड़े ही स्पष्ट दीखते है, साथ ही वैसे गीतों में जातिगत पेशा की विशिष्ठता भी अभिव्यक्त होती है। ऐसे गीतों में धोबियों के गीत, मछुवों के गीत, मालियों के गीत, ग्वालों-कोइरियों के गीत सुनारों एवं हरिजनों के गीत तथा रोपनी के गीत, जँतसार, चरखा आदि के गीत आते हैं। जाति ओर पेशागीत क्रियागीत हैं जो एक-दूसरे से मिले-जुले होते हैं क्योंकि भारत में जातीय आधार पर पेशा एवं कर्म भी आधृत हैं। अतः एक ही गीत में जातिगत विशेषताएँ एवं उनके पेशों का भी वर्णन मिल जाता है। ऐसे गीत दो प्रकार के होते हैं।

१. जातिगीत (२) पेशागीत। दोनों में क्रियागीत के तत्व वर्तमान रहते हैं।

जातिगीत - *मोटे-मोटे लिटिया पकइहें गे धोविनियाँ से विहने जयबउ धोबीघाट,*
तार के खोचड़िया में टिकिया तमकुआ गे, से रखिहें साज के सम्हार।
हथवा में लिहें धोबिन नरियर नरबोचवा से मथवापर लिहें धोबी मोट।

उपर्युक्त गीत धोबी जाति में प्रचलित है जिसमें उसके पेशे का भी वर्णन हो गया है। इसी तरह साग बेचनी, 'जीराबुन' आदि लोकगीतों में कोइरियों के पेशा एवं उनके कर्म का बड़ा सुन्दर विवेचन हुआ है, देखा जाय एक पेशागीत -

स्त्रीका एकदल -

कइसे में जिरवा बुनबऽ हे सखी, कइसे बिजइसे ?
बाबा किसु कइसे, भइया किसु कइसे
गोड़ा लागूँ कइसे, पइयाँ पडूँ कइसे
हाथा जोडूँ कइसे, कइसे हे सखी कइसे ?

स्त्री का दूसरा दल -

अइसे में जीरवा बुनबई हे सखी अइसे-बिजइसे।
बाबा किसु अइसे, भइया किसु अइसे,
गोड़ा लागूँ अइसे, पइयाँ पडूँ अइसे,
हाथा जोडू अइसे, अइसे हे सखी अइसे।

इस नाट्यगीत में जीरा बुनने की क्रिया और माता-पिता को गोड़ लागने की

क्रिया सम्बंधी प्रश्न पूछा जाता है तो स्त्री का दूसरा दल अभिनय के साथ प्रत्युत्तर देता है । जीरा बुनने से लेकर काटने, पीटने और ओसाकर घर लाने की प्रक्रिया सम्बंधी प्रश्न और गीत गाते अभिनय के साथ उसका उत्तर दिया जाता है। इसमें जाति-पेशा के कार्य व्यापार वर्णित हैं ।

(३) अवस्था भेद से - गीतों को तीन प्रकार से विभाजित किया जा सकता है- बाल, युवा और वृद्धों के गीत । बच्चों के खेल आदि में जो गीत गाए जाते हैं वे बाल गीत के अंतर्गत आते हैं । कबड्डी के खेल में, चकचंदा में, जो गीत बालक गाते हैं वे सब इसी वर्ग के गीत है - जैसे "सेल कबड्डी आवे दे, तबला बजावे दे, तबला में पइसा, लाल बगइचा-लाल बगइचा ।" यह कबड्डी गीत है । इसी तरह एक दूसरा खेल गीत "तुतरूम तुम भाई तुतरूम तुम । कौन तुम ? राजा छोड़ बिसम्भर तुम । का करे अयलूं ? खेल खेलावे, कउन छवड़ा मनुआ ? गनौरी छौड़ा मनुआ ।" यह सुनकर गनौरी नाम का लड़का बोलने वाले के पक्ष में चला जायगा । ऐसे सैकड़ों गीत बच्चों में प्रचलित मिलते हैं। सैकड़ो तरह के चकचंदा के गीत होते हैं । चकचंदा की प्रथा बंद हो जाने से अब ये बालगीत बंद होते जा रहे हैं।

युवक- युवतियों में प्रचलित कुछ विशेष प्रकार के गीत होते हैं जिन्हे वही लोग गाते हैं । ऐसे गीतों में यौन सम्बंधी श्रृंगार पूर्ण एवं फैसन आदि का वर्णन मिलता है। एसे गीतों में मौसमी गीत - चौहट, पूर्वी, कजरी भी आ सकते हैं । युवतियों में प्रचलित कुछ गीत देखा जाए -

१. *डिल्ली जाना सजनवाँ, साड़ी लाना बसंती,*
साड़ी भी लाना जम्फर भी लाना, एक चीज लाना सुरूमवाँ ।

२. *लाली अचरवा जमीदानी तकेया, करवा फेरऽन, बलमुआ हमारी ओरे ।*
कइसे में फेरूँ धानी तोरी ओरी, तोरा हँसुली के गुंजवा गड़ेला छतिया ।

कुछ ऐसे भी गीत हैं जिन्हें केवल वृद्ध ही गाते हैं। ऐसे गीतों में भजन, निर्गुण, पराती आदि आते है- एक निर्गुण

बरसजाय पनिया बिना बिजुरी के बिना, बिजुरी के .....।
कोठा भी भींजे, कोठारिया भी भींजे, भीजेला सारी दुनियाँ, बिना....।
अंगना भी भींजे, ओसरवा भी भींजे, भीजेला कुंडली स्थानवाँ, बिना ...।

४. योनि भेद से – लिंग भेद से भी लोकगीतों के प्रकार मिलते हैं, जैसे- केवल स्त्रियों में प्रचलित डोमकच, चौहट आदि ऐसे लोकगीत हैं जो केवल स्त्रियों में गाए जाते हैं। यहाँ मगही में प्रचलित एक चौहट का उदाहरण दिया जाता है –

"मिलहुँ का सखिया हे, मिलहुँ सलेहर, अहे मिल-जुली सैरो नेहैबई हे नऽ,"
खोइछवा में लेले चपिया जिरहुल मटिया, अहे हथवा में लेले सोने कंगहिया हे नऽ,

इस कथात्मक लोकगीत में एक नारी की सतीत्व-रक्षा की मार्मिक कथा है ।

पुरूषों में प्रचलित गीतों में आल्हा, लोरकाइन , गोपीचंद आदि लोकगाथाएँ आती हैं । बिरहा भी पुरूष-वर्ग में प्रचलित मिलते हैं ।

बिरहा – पिया- पिया रटिके पिअर भेलई देहिया
लोगवा कहे पाण्डु रोग ।
गउँवाँ के लोगवा मरमियों न जाने
गवना न भेलई मोर ।

आल्हा पुरूष और पौरूष का ही गीत है ।

(५) विषय वस्तु एवं उपयोगिता की दृष्टि से मगही लोकगीतो को मुख्यतः तीन श्रेणियों मे विभाजित किया जा सकता है (१) आनुष्ठानिक (२) उद्योग सम्पर्कित (३) मौसमी ।

(१) इस श्रेणी के गीतों का विशाल भाण्डार मिलता है । सभी तरह के पूजा-पाठ, देवगीत, संस्कारगीत आदि आनुष्ठानिक गीतों के अंतर्गत आते हैं ।

देवगीत – *चार पहर राति जलथल सेविला, सेविला चरन तोहार,*
छठी मइया, दरसन देहूँ अपान, जगतारन मइया ।
नइहरा में मांगिला भाई रे भतिजवाँ ,ससुरा में सहन भंडार,
छठी मइया, दरसन देहूँ अपान, जगतारन मइया ।।

देवगीतों मे छठ गीतों के अलावा रामगीत, महादेव गीत, कुलदेवता के, ग्राम देवता के गीत लोकजीवन में अटे पड़े है । आनुष्ठानिक गीतों में संस्कार गीतों का विशाल समुद्र मिलता है – सोहर, विवाह गीत से लेकर मृत्यु पर्यंत सारे संस्कारों पर गीत गाए जाते हैं ।

संस्कारगीत, *सोहर -कहवाँ से अवतन पंडित अउरो नारद मुनि हे,*
ललना कहवाँ से अवतन भगवान जनकपुर, जय-जय बोले हे ।

रामगीत - *बँसवा काटावे चलले राजा दसरथ अंगुरी गड़ले खोपचाल हे,*
अंगुरी के दरदे मरले राज दसरथ, केकई के पड़े हंकार हे ।

विवाहगीत - *राम चन्दर चललन बिआहन झिल-मिल कापड़े,*
अहे रीखियन खबर जनाव, कहाँ रे दल उतरे, आदि

उद्योग सम्पर्कित गीतों में जँतसार, रोपनी, चरखा आदि के गीत आते हैं जिन्हे जाँता पीसते, धान रोपते, चरखा काटते गाया जाता है ।

रोपनी गीत - *अहे पिया- पिया कही रटेला कामिनी, पिया बिनु कुछो न सोहायजी,*
कथी के करब हम कोरा कगजवा, कथी करब मसिहान हे ।
केकरा के बदब रामा पढ़ल -पंडितवा, भेजब पिया के संदेस जी ।
आचर फारी-फारी कोरा कगजवा, नैना कजरवा मसीहान हे,
देवरा के बदब रामा पढ़ल पंडितवा, पियाके भेजब संदेसजी ।

उद्योग सम्पर्कित गीतों में पारिवारिक सम्बंधों की झाँकी मिलती है और प्रायः श्रृंगार और करूण रसों की प्रधानता मिलती है ।

मगध प्रदेश में मौसमी लोकगीतों का अपार भाण्डार मिलता है। इनगीतों में फागु, चैता, चौहट, पूर्वी, कजरी, बारहमासा आदि आते हैं । इनगीतों में हास-परिहास, वियोग और प्रकृति चित्रण की त्रिवेणी वहती है। यहाँ एक दो बानगी के रूप में देखाजाय-

(१) फागु - *सुमिरहूँ सीरी भगवान, अरे लाला, सुमिरहूँ सीरी भगवान हो,*
जेही सुमिरत सब काम बनतु हैं -सुमिरहूँ सीरी भगवान हो,
पूरूब में सुमिरहूँ उगत सुरूजवाँ, उगत सूरूजवा होऽऽऽ
पछिम में चिर सुलतान, अरे लाल सुमिरहूँ सीरी भगवान ।

(२) चैता - *सेजिया सुतल बलमा जागल हो रामा, कोइली मीठी बोलिया*
रोज़- रोज बोले कोइली भोर-भिनसरवा
आज काहे बोले अधिरतिया हो रामा, कोइली मीठी बोलिया ।
होवे दें बिहान कोइली खोतवा उजारबउ,
बगिया कटयबो घनी बगिया हो रामा, कोइली मीठी बोलिया ।

(३) कजरी - *हरि-हरि बाबा के सगरवा मोरवा बोले ये हरी।*
हरि-हरि कउने मासे करब मोर गवनवाँ ये हरी
हरि-हरि खेलिये में लेहूँ बेटी भादो के चउहटिया रामा,
हरि-हरि अगहन मासे करबो गवनवाँ ये हरी ।

(६) प्रकृति परक लोकगीत - इन गीतों में शुद्ध गीत, नाट्यगीत एवं नृत्य गीत आते हैं । शुद्ध गीत स्वाभाविक रूप से सुर और ताल-लयबद्ध होकर लोक कंठ से फूटते रहते हैं । ऐसे गीतों के साथ नाँचने-गाने या वाद्ययंत्रों की कोई आवश्यकता नहीं । ऐसे लोकगीतों की सर्वाधिक संख्या रहती है

पटना सहरिया दुपट्टी बजरिया से लगे लगल हो राम दोहरे बजरिया ।
एक और बिकले अंगूठी मुनरिका से दोसर ओर हे राम बीके चुनरिया ।
अपनी महलिया से निकले सँवरिया से करे लगल हे राम अंगूठी के मोलवा ।
तोहरो से साँवरो हे मोल नहीं होतवऽ, से भेज देहू हे राम अपनी बलमुआँ ।

नाट्यगीत प्रश्नोत्तर के रूप में होते हैं । इसे अभिनयात्मक ढंग से गाया जाता है । अभिनय एवं प्रश्नोत्तर के रूप में रहने के कारण इन्हें लोकनाट्य गीत भी कहते हैं । यथा -

एक पात्र, *रोहू - अंगूठा से बिख चढ़ गेलो दाई कोई नहीं बिखिया उतारे दाई।*
दूसरा पात्र - *चान तोरा भाई सूरज बहनोई, ओही तोरा बिखिया उतारे दाई ।*

जाट-जटिन, बगुला-बगुली, जीराबुन, गेढ़ुरी आदि मगध के प्रसिद्ध लोकनाट्य गीत हैं।

नृत्यगीत में पात्र नाँचता और गाता है। ऐसे गीतों में कोई निश्चित गीत नहीं आते। किसी भी गीत को नृत्य के ताल के साथ बैठाकर गा लिया जाता है। लोक मंडली गीतों को नृत्य के साथ आवद्धकर गाती-बजाती है। इनमें पारिवारिक सम्बंधों और मुख्यतः श्रृंगार का चित्रण होता है ।

गवना कराय पिया देहरी बइठवलऽ, अपने चलले परदेस गोरिया,
रस चुवेला भँवरवा अन्हार गोरिया । आदि

(७) शैली परक लोकगीत - इसमें प्रबंधगीत और स्फुट गीत आते हैं। प्रबंधगीत में कथातत्व की प्रधानता रहती है । ऐसे गीत मगही लोक साहित्य में दो तरह के पाये

जाते हैं । सभी लोकगाथाएँ प्रबंधगीत के अंतर्गत आती हैं। इनके अतिरिक्त छोटे-छोटे अनेक कथात्मक गीत भी मिलते हैं । डॉ. सम्पति अर्याणी ने इसे कथागीत कहा है - चम्पिया, मैना, रैमल और दौलत बेटी आदि कथागीत हैं । ऐसे गीतों का गायन प्रायः सावन-भादों में चौहट के अंतर्गत किया जाता हैं । उद्योग सम्पर्कित गीतों में भी कथात्मक गीत मिलते हैं। जिस लोकगीत में तारतम्यरूप से घटना की योजना हो और कथानक का समुचित समावेश हो, वे सभी प्रबंधगीत के अंदर आते हैं । इसके विपरीत जिन गीतों में कथा का बंध नहीं हो, जिसमें केवल जीवन, घटना, दृश्य या कोई भाव विचार की झाँकी मात्र हो वे सब स्फुट गीत के अंदर आते हैं । इसमें कथा विस्तार नहीं रहता, मात्र कथात्मक संस्पर्श रह सकता है लेकिन घटना का विस्तार एवं उनमें पूर्वापर सम्बध नहीं । ऐसे सारे गीत स्फुट गीत के अंदर आते है । जैसे -

इलाइची-गुलाइची के लम्बी -लम्बी पोर हे,
ओइसही नेवयबों पिया तोहरा के, जरा होवे दऽ जवान पिया हमरा के ।
जलवा में जइसे बलवा झलके, ओइसही झलकयबों पिया तोहरा के, जरा होवेदऽ....।

(८) झूमर तथा विविधगीत - इस संवर्ग में मुख्यतः झूमर और लोरी, लतीफा, लटका आदि आते हैं । मगही लोकगीतों में झूमर का स्थान बड़ा व्यापक है। यह प्रायः सभी अनुष्ठानों के अवसर पर गाया जाता है। झूमर का विषय बड़ा व्यापक है। हमने इसे चार भागों में विभक्त किया है - (१) देव विषयक झूमर (२) श्रृंगार प्रधान झूमर (३) नौकरी पेशा सम्बंधी और (४) विविध संस्कार तथा रूढ़ि परम्परा सम्बंधी । यों तो झूमर में प्रायः श्रृंगार और दाम्पत्य की प्रधानता रहती है परंतु विविध अवसरों पर विविध प्रकार के झूमर गाए जाते हैं। देव पूजन के समय गाए जाने वाले देवविषयक झूमर देखें -

सोने खड़ाऊँ रूपे केरो खूँटी, गोड़वा धोवऽ न रामजी देखबभर नजरी,
आजु अजोध्या रहब कइसे रामजी ?
सोने के परात में जेवना लगवलूँ हे,
जेवऽ न रामजी, देखब भर नजरी ।

श्रृंगार प्रधान झूमर में संयोग- वियोग का वर्णन तो रहता ही है, पर कीया प्रेम, खंडिता और अभिसारिका आदि का भी वर्णन खूब मिलता है ।

टिकवा गढ़ादऽ पिया मंगिया के बीच, पिया मनरखना देवर दलगीर,
ले चलऽ हो देवर जमुना के तीर, उहईं खेलब देवर रंग-अबीर ।

नौकरी-पेशा सम्वंधी झूमर आज सैकड़ों तरह के नये-नये फैसन के अनुकूल गढ़ाते जाते हैं । झूमर लोकगीतों में जितनी मिलावट हुई है उतनी मिलावट और किसी भी प्रकार के गीतों में नहीं हुई है। संस्कारगीत अपने मूलरूपों में, गाँव में अभी भी वर्त्तमान मिलते हैं। नौकरी-पेशा सम्बंधी आधुनिक झूमर -

जहाँ लगे छतर के मेला उहाँ टिकवा बिकाला
हॉजी, टिकवा खरीदी हँऽ होसियारी से, बचके पाकिटमारी से नऽ।
जहाँ चले छकू-छकू गाड़ी उहाँ गुंडा बड़ा भारी,
हॉजी, गाड़िया चलइहँऽ होसियारी से, बचके पाकिटमारी से नऽ ।।

विविध संस्कार एवं रूढ़ि-परम्पराश्रित झूमर भी काफी मिलते हैं -

बरजोरी करत बनवारी, फोरत गगरी । बनवारी, घेरी रहिया फोरत गगरी ।
दही बेचे जाले से मथुरा नगरी, फोरी-फोरी गगरी भिंजावे चुनरी।
नंदबाबा के हइन लमहर पगरी। अब न बसब जी रउवा नगरी ।

अन्य विविध गीतों में लोरी, प्रातकाली, लतीफा,लटका आदि को रखा जा सकता है। एक दो उदाहरण द्रष्टव्य है- बच्चों को सुलाने या बहलाने के लिए माताएँ या खेलौनियाँ लोरी गाती हैं -

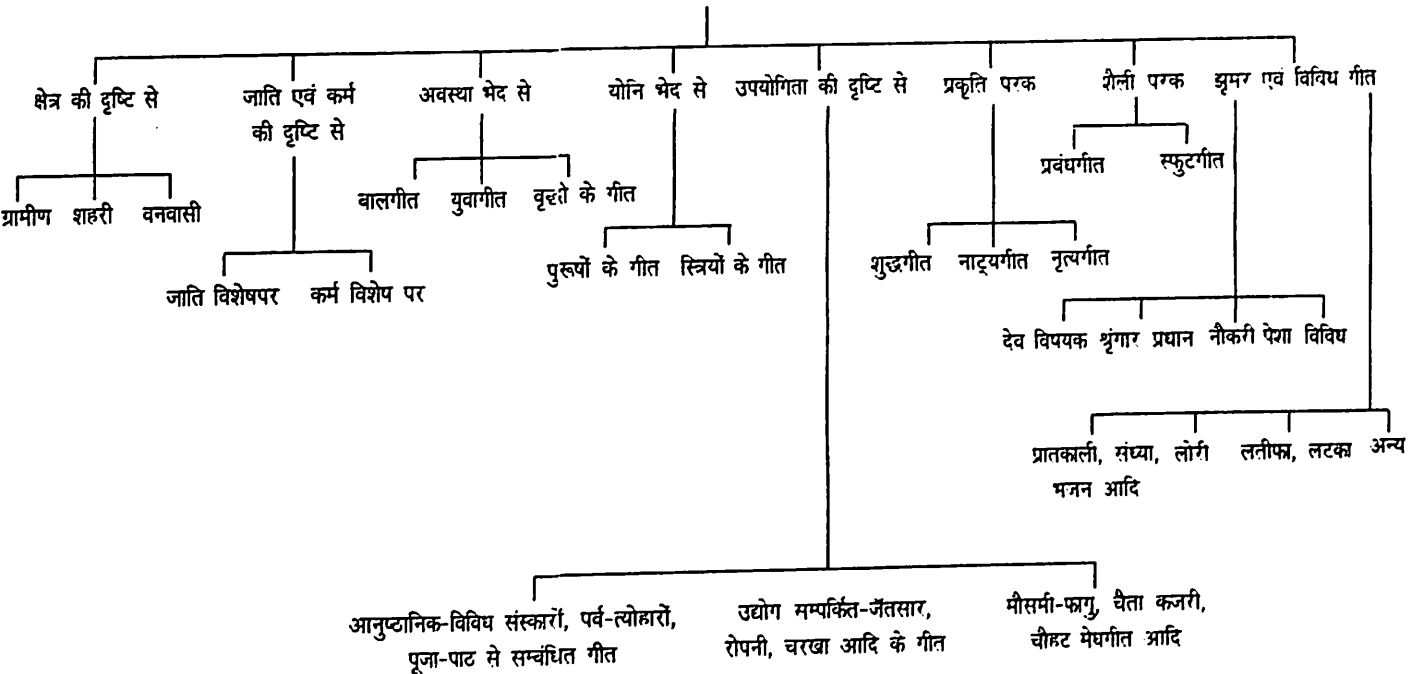
आव रे खुदबुदी चिरहयाँ, अन्डा परले जो,
तोरे अन्डे आग लागो, बावू खेलौले जो ।

प्रातकाली - *चरन गहो सियाराम के प्रभु हो चरन गहो सिया राम के*
जेहि चरनन से अहिला तरगयों, तरगयों सदन कसाई चरन गहो सिया के।

लटका - *मेरा चना बना है अर्र, खाते बड़े-बड़े अपसर्र,*
कलम चलाते सरासर्र, चनाचूर गरम, मैने लाया मजेदार,चना....।

प्रातकाली, भजन और सन्ध्या तथा निर्गुण में यदि ईष्ट देव और भक्ति भावना का उद्रेक हो तो इसे देवगीतों के अंदर भी रख सकते हैं ।

अंततः मैने उपर्युक्त सभी प्रकार के लोकगीतों को निम्न पाँच वर्गो में रखकर उसकी भूमिका और भाष्य किया है (१) संस्कार गीत (२) देव विषयक गीत (३) जाति-क्रियागीत (४) मौसमी गीत (५) झूमर और विविध गीत -प्रातकाली, निर्गुण, भजन, लोरी, लटका, लतीफा आदि ।



समस्त लोकगीतों के समन्वित प्रमुख रूप

(१) संस्कार गीत (२) देव विषयक गीत (३) जाति क्रियागीत (४) मौसमीगीत (५) झूमर और विविध गीत - प्रातकाली, निर्गुणा, भजन, लोरी, लतीफा-लटका आदि ।

मगही लोकगीतों के निर्माणतंतु या उनके वाहकतत्व

मगही लोकगीतों के प्रमुख वाहकतत्व तीन प्रकार के होते हैं ।

(१) गायक (२) श्रोता और (३) अभिव्यक्ति की शैली या प्रकार । गीतों का प्रमुख तत्व गायक होता है क्योकि गायक के अभाव में गीतों की अभिव्यक्ति कैसे होगी? ये गायक पुस्तक की तरह हैं जिससे लोकगीत पढ़ा या सुना जाता हैं। पंरतु गायक पुस्तक की तरह सहज प्राप्य नहीं । ऐसे गायक प्रायः दो वर्गो में पाये जाते हैं (१) स्त्रीवर्ग (२) पुरूष वर्ग । मैने जितने लोकगीतों का संकलन किया है उनमें स्त्रीवर्ग की प्रधानता रही है। (१) ये स्त्रियाँ अपने घर की हो सकती है या (२) प्रत्येक गाँव में एक-दो चर्चित गायक स्त्रियाँ रहती हैं जिनके पास गीतों का भाण्डार रहता है। ऐसी ही स्त्री गायकों में हमारे गाँव में एक बूढ़ी औरत है जिसे चश्माही कहते हैं । उसने मुझे सैकड़ों गीत दिए। चश्माही के बाद मेरी पत्नी ने भी सैकड़ो गीत लिखवाये। इन लोगो के अलावा जाति, पेशा तथा मौसमी आदि गीतों के लिए मुझे विभिन्न जातियों के पास जाना पड़ा जहाँ कुछ कठिनाइयों का अनुभव हुआ। इसके लिए गया जिला के अतिरिक्त जहानाबाद, औरंगाबाद, पटना, नालंदा, मुंगेर, नवादा, हजारीबाग, चतरा, पलामू आदि जिलों के गाँवों में भटकना पड़ा । गीतों के संग्रह में जहाँ घोर कठिनायों का सामना करना पड़ता है वहाँ कभी-कभी आनंद भी आता है । गायिका या गायक जब मस्त होकर भाव भंगिमाओं के साथ गाने लगते हैं तो श्रोता के साथ संग्रहकर्ता भी झूमने लगता है ।

स्मरणीय है कि स्त्रीवर्ग से जहाँ अत्यधिक लोकगीत प्राप्त हुए हैं वहाँ पुरूपवर्ग से भी कम गीत नहीं मिले हैं। फागु, चैता, कीर्तन, भजन, लटका-लतीफा तो प्रायः पुरूप वर्ग से ही मिले हैं। पुरूष वर्ग में दो तरह के गायक होते हैं (१) व्यवसायी (२) सौखिया। व्यवसायी गायकों की मंडली होती है जो वाद्ययंत्रों पर गीतों को गाते हैं। उनके गीतों को संग्रह करने में कुछ व्यय करने की जरूरत होती है परंतु सौखिया गवैये समय मिलने पर अपना गायन शुरू कर देते हैं, टेप से उनका ध्वन्यांकन कर लिया जाता है और पुनः लिपिबद्ध करना पड़ता हैं।

गाँव में प्रायः गायकों की मण्डली रहती है। ये मंडलियाँ तीन तरह की होती हैं -(१) कीर्तनियाँ (२) नचनियाँ और (३) खेलड़िन, नटिन, बाखो-बखइन, हिजड़े आदि आते हैं। नवादा जिले के एक गाँव में खेलड़िन एक जाति विशेष भी है जो गीत गाकर ही अपनी जीविका चलाती हैं । नटिनें जहाँ तहाँ जमायत बनाकर नाचती गाती हैं, बाखो-बखाइन पुत्रजन्म होने पर बधाई देने आती है और पत्नी-पति मिलकर

नॉचते-गाते हैं। कीर्तनियाँ विविध प्रकार के कीर्तन गाते हैं जिनमें मूलतः देव विषयक कीर्तन होते हैं। कीर्तन मण्डली ही मौसमी गीत (फागु, चैता आदि) गाती है। चैता गीत गाने वाली मण्डली में कभी-कभी स्त्री-भेषधारी पुरूष नाचता है जिसे 'जोगिन' कहते है। जोगिन की भाव- भंगिमा प्रदर्शन से चैता-गीतों मे जान आ जाती हैं । कीर्त्तन या मौसमी गीत गाने वाली मंडली सौखिया होती है । इनमें गायकों की संख्या निश्चित नही रहती । ढोल, झाल, करताल इनके वाद्य यंत्र होते हैं। मंडलाकार गोल बाँध कर ये लोग गाते हैं । इसीलिए उन्हे मंडली कहते हैं। ऐसी मंडलियों में कोई-कोई मंडली बड़ी अच्छी होती है जिसकी सोहरत दूर-दूर तक फैली रहती है। कभी-कभी एंसी मंडलियों में स्पर्द्धा के मेले लगते हैं । ये मंडलियाँ रामायण को भी बड़े लय और ताल के साथ गाती हैं। तात्पर्य कि मगह जनपद में कीर्तन की मंडली गायकों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

नचनियाँ गायकों की दूसरी प्रकार की टोली है। ये प्रायः पेशेवर होते हैं जिनमें तीन, चार या पॉच की संख्या होती है। एक नॉच करता है और शेष दो या चार- पाँच जन ढोलक, मंजीरा या हारमोनियम बजाते हैं। इन्हें किसी अनुष्ठान विशेष पर या सौख से लोग भाड़े पर ले जाते हैं । आजकल ये लोग लोकगीतों के साथ सिनेमा या कलागीतों का भी गायन करते हैं। मगध में पूजा या त्योहार के अवसर पर -दुर्गापूजा, दीपावली आदि में इनकी माँग बढ़ जाती है। कुछ नचनियों का गिरोह नाँच गान के साथ अभिनय भी करता है। अभिनय में सामाजिक और धार्मिक तत्वों का प्रकाशन होता है। मगध में अब रासलीला तथा रासलीला की मण्डली समाप्त होती जा रही है। इसकी जगह पर आर्केस्ट्रा-पार्टी की संख्या बढ़ रही है।

नचनियों से गीत प्राप्त करना कठिन है। ये पैसा लेकर ही गीत गा सकते हैं। खेलड़िनगीत भी अब मृतप्राय है। इनकी जगह पर हिजड़े उग आए हैं। ये भी जमायत बनाकर घूमते और गाते- मांगते हैं। ये पेशेवर तो नहीं होते परंतु इनके गाने पर कुछ देना अवश्य पड़ता है। इनके गीत प्रायः बधाइयों के गीत होते हैं। गॉव के बूढ़े -पुराने लोग संझा और प्रातकाली गाते सुने जाते हैं। ये धार्मिक भावना से प्रेरित होकर गाते हैं। इन गीतों में पौराणिक कथाओं के रूप मिलते हैं जो धर्म से सम्बंध रखते हैं। मगध में लतीफा या लटका भी गाया सुना-जाता है। इसके गायक गाड़ियों पर मूंगफली या चना बेचने बाले होते हैं। ये अपने लच्छेदार तुकांत बातों से यात्रियों को आकृष्ट करते हैं और अपनी चीजे बेचते हैं। कुछ भीखमंगे भी भरथरी, गोपीचंद और सती बिहुला के गीत गाकर अपना रोजगार चलाते है। अतः मगध में गायकों के अनेक रूप होते हैं और अनेक तरह के लोकगीत गाकर मनोरंजन और अपना कार्य सिद्ध करते हैं ।

स्त्री-वर्ग के गीत प्रायः आनुष्ठानिक होते हैं। देवी-देवता, चौहट, कजरी या जाँता- चक्की के गीतों के वाहक प्रायः स्त्रियाँ ही होती हैं। वाद्य यंत्रों के साथ मगध में स्त्रियाँ लोक गीतों को प्रायः नही गाती हैं। वर्षा मे स्त्री द्वारा गाये जाने वाले गीत समूह-गीत होता हैं। नाट्यगीत भी प्रायः स्त्रियाँ ही गाती हैं और अभिनय भी वही करती हैं। इन गीतों के वाहक स्त्रियाँ रहती है तो श्रोता भी स्त्रियाँ ही रहती हैं। इसमें वयस्क पुरूप की सहभागिता वर्जित है । अतः अधिकांश लोकगीतों के वाहक तत्व स्त्रियाँ ही होती है।

लोकगीतों के निर्माण तंतुओं का दूसरा तत्व श्रोता है। सभी प्रकार के गायकों के लिए श्रोता की आवश्यकता होती है। कोई भी अरण्य-रोदन पसंद नहीं करता । श्रोता भी कई तरह के होते हैं, परंतु मुख्यतः इनके दो प्रकार होते हैं (१) सौखिया श्रोता (२) विवश श्रोता । सौखिया श्रोता विविध प्रकार के गीत सुनते हैं और बदलें में गायक को शब्द से या धन से संतुष्ट करते हैं। परंतु विवश श्रोता को गायक के गीत सुनने के लिए विवश होना पड़ता हैं। अनुष्ठान के अवसर पर चाहे -अनचाहे गीतों को सुनना ही पड़ता है। जब अखण्ड कीर्तन होता है तो उसे विवश होकर रात-दिन सुनना पड़ता हैं। विवाह के गीत घर वालों को सुनना पड़ता है। पूजा के अवसर पर गाये जाने वाले गीत-सूर्यषष्ठी के गीत, शीतला के गीत श्रोता को अनिवार्यतः सुनना पड़ता है- चाहे किसी की मनोवृति गीत में रमती हो या नहीं । आजकल टिकट लगाकर विविध संगीत का आयोजन किया जाता है उसमें भी टिकट धारियों को गीत-संगीत और अभिनय अरूचि के वाद भी सुनना पड़ता है। सारांश कि बिना श्रोता के गायक का कोई महत्व नहीं । श्रोता मन से या बेमन से सूने, गायक के गीत को सुनना ही है। यह बात दूसरी है कि श्रोता प्रतिकूल अवस्था में गायक के नजदीक से उठकर अन्यत्र चला जाय लेकिन श्रोता गीत का एक अनिवार्य तत्व है।

लोकगीत का तीसरा तत्व है अभिव्यक्ति की शैली या प्रकार। गीतों की अभिव्यक्रि या गायन का ढंग अपना अलग होता है। गीत को गायक से सुनने में ही सही आनंद आता है, पढ़ने पर वैसा आनंद नहीं आता क्योकि इनके अपने सुर और लय होते हैं। पहले ही कहा जा चुका है कि लोकगीतों में काव्य की तरह मात्राओं और वर्णन का ससुचित ध्यान नहीं रखजाता न शास्त्रीय संगीत की तरह मात्राओं का आकार प्रकार निर्धारित रहता है। लोकगीतों में मुख्यतः ध्वनि की प्रधानता रहती है। ध्वनियों के चढ़ाव -उतराव से लयकी सृष्टि होती है और अलग-अलग लोकगीतों में अलग -अलग लय

या रेघ उत्पन्न होता है। इसके लिए कभी-कभी ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ शब्द का ह्रस्व की तरह उच्चारण होता है । कभी एक शब्द में ही एक अक्षर को अधिक खीच कर देर तक उच्चरित रखना पड़ता है तो कभी दीर्घाक्षर को प्लुप्तकर दिया जाता है। विरहा लोकगीत का एक उदाहरण देखा जाय ।

गोरे-गोरे बहियाँ पर गोदना गोदवले,
सुइया साले सुगइ करेज ।
अइसन गोदना गोंदूँ गोदहारिन,
जइसन चुनरी रंगऽहे रंगरेज ।

उपर्युक्त बिरहा लोकगीत में 'गोरे-गोरे' में 'रे' की ध्वनि ह्स्व की तरह उच्चरित होगी और 'करेज' में 'रे' को काफी तीरकर कई मात्राओं की ध्वनि निकाली जाती हैं । रंगरेज में 'रे' को भी काफी खीचना पड़ेगा तभी पदोच्चारण और विरहा का लालित्य प्रकट होगा अन्यथा मात्र पढ़ देने से विरहा का आनंद नहीं आयगा । स्मरणीय है कि लोकगीत काव्य नहीं जिसे पढ़कर आनंद उठाया जाय । यह तो गीत है जिसे गायक से सुनकर ही आनंद उठाया जा सकता है । गायक गीत के लय को बनाये रखने के लिए शब्दों को काफी तोड़ते मड़ोरते हैं । जैसे दुलहा को 'दुलहवा' माली को 'मलिअवा' बेटी को विटिअवा - "बारह बच्छर के बिटिअवा कतेक बुध छेरलई हो रामा" यहाँ बेटी→ बेटिया → बिटिअवा । इसी प्रकार दुल्हा- दुलहा- दुलहवा, माली - मलिया - मलिअवा । कभी-कभी शब्दों के तोड़ने से द्वैयार्थक बन जाता है। यथा माली =जाति विशेष, मलिया = तेल रखने का वर्तन, मलिअवा = माली के लिए अपमान बोधक या छोटा तेल का पात्र । अतः ऐसे शब्दों का अर्थ प्रसंगानुसार ग्रहण करना पड़ता है ।

लोकगीतों में प्रायः टेक या आवृत्ति - पुरानावृत्ति सुनने को मिलता है। मौसमी लोकगीतों (चौटह, गीतिनाट्य, फागु, चैता आदि) और झूमर गीतों में आवृत्ति मूलकता अधिक दीखती है, यथा- चैता-

अहो रामा राजा भगीरथ बड़ तप कैलन हो रामा,
ले अयलन ले अयलन गंगा जी के धरवा हो रामा,
अहो रामा, जने-जने राजा भगीरथ -
ओने-ओने गंगा जी के धरवा हो रामा, ओने-ओने ।

चैता गीतों में "अहोरामा, हो रामा, रामा" शब्दों की बारबार आवृति होती रहती है।

प्रायः सभी चैतागीतो में 'रामा' की आवृति मिलती हैं। चौहट लोकगीतो में हे, हेनऽ, राम, हो राम, हो रयमल, मैना आदि शब्दों की प्रायः आवृति मिलती है -

"बारह बरिसपर लौटल बनिजरवा हो रयमल,
से हो पिअवा उतरे बहिनिया घर हो रयमल ।

पूरे गीत में अंतिम दो शब्दों की आवृति मिलती है । चम्पिया लोकगीत में 'हेन' की आवृति होती है । कजरी पूर्वी में भी न, हेन की आवृति मिलती है । कजरी में 'हरी-हरी' शब्द की भी आवृति होती रहती है। सारांश कि आवृति मूलकता लोकगीत-गायन की एक प्रभावपूर्ण शैली है। झूमर गीत के अंत में 'हे, जी, नऽ, लाल, हो लाल आदि शब्द दुहराये जाते रहते हैं ।

ऊचही घरवा के नीचे हई दुअरिया से चारो ओर लगले ओसरवा हो लाल ।
निहुरी-निहुरी हम अगना बहरली, से टप्-टप् चुवऽ हे पसेनवाँ हो लाल ।।

लोकगीत-गायकों की भाव भंगिमाएँ एवं हस्तादि अंग संचालन भी अभिव्यक्ति शैली के अंतर्गत आता है। चौहट गीत गाते समय स्त्रियों के दो दल हो जाते हैं। दोनो समूह की स्त्रियाँ परस्पर एक -दूसरे के कंधा पर अपने हाथ रखे रहती है और चौहट गाती विपरीत दिशा से आकर सम्पर्क स्थल पर अपने सर नवा कर पुनः पीछे की ओर लौट जाती है। इसमें सुर, गति और लय मिलकर समवेत त्रिधात्मक अभिव्यक्ति होती है। वायुमण्डल में एक नया ध्वनिविम्ब विखरने लगता है। इसी प्रकार गीतिनाटयों में भी गाती स्त्रियाँ अपने हस्त, पाद और मुख मुद्राओं से विशिष्ट भावभूमि सृजित करती है जिसमें श्रोता साधारणीकृत हो उठता है। इसकी अनुभूति यथार्थ अनुभावक ही कर सकते है, पाठक नहीं ।

कजरी और पूर्वी के दंगल लगते हैं । किशोर- किशोरियाँ अमराइयों में झूला के पेंग के साथ "आयल बरखा के बहार,कहना मानो गोपीनार, मनवाँ राखी देहूँ आज के कजरिया में" जब रिमझिम फुहार में मिठास घोलती है तो बरबस बटोही का मन खीचकर ध्वनि संधान करने वाली पर प्रत्यारोपित हो जाता है। यही है लोकगीत का जादू, अभिव्यक्ति और गायन कला का कमाल । इस जादू से अभिभूत होकर बटोही घर नहीं पहुँच पाता और दूसरे दिन घर जाता है तो उसे मिरजापुर की कजरी देखने का बहाना करना पड़ता है ।

मोही अन्हकर देलऽ बलमुआ, रतिया कहाँ गववलऽ नऽ
मिरजापुर में होला कजरिया, रतिया उहें गववली नऽ
लौका- लौके बिजुरी चमके, ठनका ठनके नऽ,
मिरजापुर में होला कजरिया, रतिया उहें गववली नऽ ।

किशोर-किशोरियाँ ही नहीं बल्कि युवक वर्ग भी सावन में विशाल बट-वृक्ष की छाया तले प्रश्नोत्तर और भावभंगिमा के साथ कजरी गाते हैं तो झर-झर बरसते बादल के स्वर में दादुर, मोर, पपीहा भी स्वर मिलाते हैं -

झर-झर बरसे रे बदरवाँ अयले मास सवनवाँ नऽ
दादुर-मोर-पपीहा बोले,विरहिन छतिया माहुर घोले, कलपे जीयरा नऽ
सुतल मन के घाव उठौलक, झर-झर बूँद चुवौलक, चमचम चमके कंगनवाँ नऽ
सुतल रहली तो सपना में देखली. आँख खुलल तो देख हूँ न पवली, कलपे जीयरा नऽ ।

इस कजरी लोकगीत में भाव-सौन्दर्य की सहज स्वभाविक अभिव्यकि क्या किसी उच्च कोटि के कलात्मक काव्य से न्यून है ? सारांश कि लोकगीतों के वाहक तत्वों में अभिव्यक्ति की सहजता, सरलता और स्वभाविकता कितनी मर्मस्पर्शी होती है । उक्त गीतों में देखा जा सकता हैं । वस्तुतः लोकगीत की ध्वनियाँ गिरि-वन की उन्मुक्त निर्झरनी की तरह अपनी उपस्थिति स्वयं दर्ज करा देती है । अभिव्यक्ति में कोई शास्त्रीय पांडित्य नहीं बल्कि सहजता ही इसका पांडित्य है जहाँ स्वतः अलंकरण जुटते जाते हैं जैसे वन प्रांत में निर्झरनी आगे बढ़ती है तो उसके कुल- कछारों के लता-गुल्मों और पादप पुंजों पर पक्षियों के कलरव सुनाई पड़ने लगते हैं ।

लोकगीत - गायन के ढंग (अभिव्यक्ति) रामायण मेला, फागु के बहार और चैता के श्रृंगार में देखा जा सकता है । रामायण मेला में विविध मंडलियों के अलग-अलग सुर और ताल देखे जाते हैं । बसंत बहार में फागु का गायन विविध विध होता है। इसी अवसर पर 'कबीरा', जोगिड़ा और लतीफों के सुर भी सुने जाते है। इनके सुरों में आवृतिमूलकता की प्रधानता रहती है । "वाह जोगिड़ा सररररऽ" प्रायः दुहराया जाता है और हवे में हाथ को उछाल कर भाव और उमंग की सृजना की जाती है। लतीफे और लटकों में तुकांतता की प्रधानता दीखती है. यथा -

मेरा चना बना है सर-खाते बड़े-बड़े अफसर.
बैठे कुरसी के ऊपर- कलम चलाते सरासर. चनाचूर गरम (लटका या लतीफा)

जोगिड़ा सरऽ सर, अजी वाह जोगीजी सरऽ सर
कउन देस से राजा अयलन,कउन देस से रानी,
कउन देस से गोरख बाबा, बोले उलटी वानी । जोगिड़ा सरऽसरऽ ।

चैता के श्रृगांर में जोगिन का समावेश और रामा शव्द की आवृति इसके गाने के विशिष्ट ढंग है। इससे अभिनेयता और भाव प्रदर्शन का अवसर मिल जाता है - जोगिन वस्तुतः नचनियाँ है जो चैता में सुर भरने का काम करता है।

लोकगीतों के गायन- अभिव्यक्ति में कुछ वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग मिलता है जिससे गेयता में सहयोग मिलता हैं। इनमें ढोलक और झाल प्रमुख होता है । कभी-कभी जोड़ी, करताल, डफ और हारमोनियम का भी उपयोग किया जाता है। परंतु ये सारे वाद्य यंत्र पुरूष-वर्ग के लोकगीतों में ही प्रयुक्त होते हैं। स्त्रियाँ प्रायः विना वाद्य यंत्र के ही गाती हैं। कभी कभार ढोलक बजा लिया गया तो काफी है अन्यथा सारे संस्कार और अनुष्ठानगीत बिना वाद्ययंत्र के ही गाए जाते हैं। पेशा या जाति गीत तो काम करते समय गाये जाने के कारण किसी प्रकार के वाद्य यंत्रों के प्रयोग का प्रश्न ही नहीं उठता। कभी- कभी ग्रामगीतों के साथ वाँसुरी -वादन भी सुन पड़ता है लेकिन ताली तो सर्व सुलभ और स्वतः स्फूर्त सुनाई पड़ जाती है । उपर्युक्त वर्णित सारे तथ्य लोकगीतों की अभिव्यक्ति में सहायक होते हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लोकगीत - गायन की शैली किसी निश्चित और निर्धारित सीमा- रेखा में बँधी नहीं रहती । बल्कि गायक की अपनी अभिव्यक्ति होती है। वह सीमावद्ध राग को भी अपने मनोनुकूल ढाल लेता हैं। यही लोकगीत की शैली बन जाती हैं। फिर भी अलग -अलग लोकगीतों की अपनी परम्परित अभिव्यक्ति-शैली भी रहती ही है ।

लोक गीतों का लोकतात्विक एवं नृतात्विक विश्लेषण

अभी तक भारतीय लोकगीतों का अध्ययन उसकी समाज शास्त्रीयता और सांस्कृतिक विशेषताओं को लेकर प्रायः किया जाता रहा है और उनके निर्माण तंतुओं की झाँकी दिखाई जाती है। कुछ विद्वानों ने लोकगीतों के कलात्मक और उसके रसात्मक पक्षों पर भी दृष्टि डालने की कोशिश की है । यहाँ मैने मगही लोकगीतों में निहित लोकतत्वों का समग्रता में अनुशीलन-विवेचन करने का प्रयास किया है और तत्पश्चात् अपनी मान्यताएँ स्थापित की है । यों तो पूर्ववर्ती लोकवार्त्ता विदों में डॉ. सत्येन्द्र, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, रामनरेश त्रिपाठी, देवेन्द्र सत्यार्थी, झबेरचंद मेघाणी, दिनेश चन्द्र सेन आदि हमारे प्रेरणा के श्रोत रहे हैं जिनके वर्गीकरण और विश्लेषण को मैने बड़ी विनम्रता पूर्वक खण्डन- मण्डन किया है फिर भी अपने पूर्ववर्ती लोकवार्त्ता विदों से अलग मगही लोकगीतों का अध्ययन मनन करना चाहा है जिस पर पाश्चात्य प्रभाव होता हुआ भी परिदेश और दृष्टि पूर्णतः भारतीय है, हमारी अपनी है ।

सर्वविदित है कि लोक साहित्य में लोकतत्व की प्रधानता रहती है, इसीलिए वह शिष्ट साहित्य से थोड़ा भिन्न रहता है। यह लोकतत्व क्या है और अपने किन -किन रूपों में लोक साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति पाते रहता है, का वर्णन- विश्लेषण मैने अपनी पुस्तक 'मगध की लोक कथाएँ : अनुशीलन एवं संचयन' में किया है। अतः यहाँ उसके बारे में विस्तार में न जाकर, संकेत मात्र कर देना आवश्यक है ।

लोकतत्व लोकजीवन के माध्यम से अपने चार रूपों में सदा अभिव्यक्ति पाते रहता है -(१) लोकप्रवृत्ति (२) लोकमानस (३) लोकाभिव्यक्ति और (४) लोक संस्कृति। इसके साथ लोकजीवन को भी समाहित कर लिया जाय तो लोकतत्व के उपर्युक्त पाँच उपादान हुए । ये पाँचों उपादान समस्त लोकगीतों में वर्त्तमान रहते हैं । यहाँ संक्षेप में लोकगीतों के इन उपादानों का अन्वेषण-विश्लेषण हमारा अभीष्ट है ।

लोकमानस और लोकप्रवृत्तियाँ

लोकमानस आधुनिक नृतात्विक मनोविज्ञान की अभिनव खोज है: लोकमानस ही उपर्युक्त लोकतत्वों का अधिष्ठान माना जाता है। अभी तक मनोवैज्ञानिकों ने अवचेतन मानस की सामान्य परिकल्पना की थी परंतु लोकवार्त्ता विदों ने नृतात्विक विकास परम्परा के आधार पर 'लोकमानस' की प्रतिष्ठापना की । अवचेतन मानस में जीवन की दमित वासनाएँ एवं आकाँक्षाएँ दबी पड़ी रहती है जो कभी-कभी रोग या स्वप्न-दर्शन के रूप

में अभिव्यक्त होती रहती है। परंतु लोकवार्त्ताविदों की मान्यता है कि ये दमित वासनाएँ - आकाँक्षाएँ केवल इसी जन्म की नहीं रहती बल्कि परम्परा के प्रवाह में आनुवंशिक भी रहती है। आधुनिक भौतिक वैज्ञानिकों ने भी आनुवंशिकता की मान्यता दे दी है परंतु लोकवार्त्ताविद और आगे बढ़ता है। उसकी मान्यता है कि परम्परित आनुवंशिकदाय आदिमकाल से मानव मस्तिष्क में दबा रहता है। मस्तिष्क में यही दबा स्थल 'लोकमानस' हे जहाँ परम्परित लोकप्रवृतियों की जड़े वर्त्तमान रहती है। ये लोकप्रवृत्तियाँ प्राक् कल्पना, आत्मशीलता, टोना विचारणा ओर आनुष्ठानिक विचारणा के रूप में लोक वार्त्ताओं के माध्यम से अभिव्यक्ति पाते रहती है । आदिम मानव कल्पना और यथार्थ में कम अंतर मानता था और सभी पदार्थो में आत्मशीलात का अनुभव करता था, जैसे मरने के बाद मनुष्य वर्त्तमान रहता है और विविध रूपों में वह उपस्थित होते रहता है। सभी जड़ चेतन में आत्मा का निवास है । सूर्य- चन्द्र, ग्रह-नक्षत्र के भी माँ -बाप हैं जिनकी उत्पति होती है । गिरि- वन, वृक्षादि में भी आत्मा का निवास है। इसी लिए वे मान्य और पूज्य हैं । आदिम मानव टोना को यथार्थ समझता था । अतः नाम से नामी को, अंश से अंशी को, अंग से अंगी को और तुल्य से तुल्य को प्रभावित किया जा सकता है। इसी से मंत्रों और यंत्रों का आविर्भाव हुआ । ये सब प्रवृत्तियाँ आज भी लोकजीवन में किसी न किसी रूप में वर्त्तमान हैं। इसका कारण मानव मस्तिष्क में 'लोकमानस' की अवस्थिति है । लोकमानस ही आदिम लोकप्रवृत्तियों का अधिष्ठान है । इसीलिए इस घोर यथार्थवादी और तार्किक युग में भी लोकगीत जीवित हैं, उसकी मनोरंजनात्मक और आनुष्ठानिक अभिव्यक्ति मिलती है । प्रस्तुत प्रसंगान्तर्गत मगध के लोकगीतों में इन प्रवृतियों की अभिव्यक्ति के स्वरूप और अनुष्ठानों का वर्णन करना हमारा लक्ष्य है । यहाँ स्मरणीय है कि इन लोकप्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति का कार्यक्षेत्र लोकजीवन है । लोकजीवन में ही विविध अनुष्ठान सम्पन्न होते है। खाली क्षणों में मनोंरजन के लिए लोकवार्त्ता या लोकगीत गाए जाते हैं । लोकगीतों के अतिरिक्त लोक साहित्य की अन्यान्य विधाओं में मैने लोकप्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति के विविध रूपों का वर्णन किया है। परंतु यहाँ केवल मगही लोकगीतों में ही इनका अनुशीलन किया है ।

मगध प्रदेश के लोकजीवन में सैकड़ों-सहस्त्रों लोकगीत गाए-सुने जाते हैं । जिन में लोकमानसीय प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति होती रहती है। ये लोकगीत (१) मनोरंजन के लिए (क) सौखिया मनोरंजन और (ख) व्यावसायिक मनोरंजन (२) अनुष्ठानों पर (क) देवी- देवता के पूजने के समय (ख) विविध संस्कार सम्पन्न होते समय (ग) इष्ट की

प्राप्ति और अनिष्ट के निवारण के लिए गाए जाते है जिनमें मूलतः लोकप्रवृत्तियाँ ही अभिव्यक्त होती रहती हैं। हाँ, इतिहास-भूगोल के आवरण से आच्छादित लोकप्रवृत्तियों पर आधुनिकता की परत पड़ी दीखे तो कोई अस्वभाविकता नहीं क्योंकि काल के अंतराल से पुराने गीत मरते और नये लोकगीत जनमते रहते हैं।

हमारे देश की संस्कृति का मूलतत्व है धर्म और धर्म का मूलाधार है साधना तथा साधना में पूजा पाठ एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। इसमें भजन- कीर्तन के साथ ही स्त्रियाँ लोकगीत गाती हैं। भारत में सूर्योपासना एक बड़ा ही पवित्र धार्मिक अनुष्ठान है। यह अनुष्ठान लोकजीवन में लोकगीतों के बिना सम्पन्न होता ही नहीं। इस अनुष्ठान के लोकगीतों को इतना महत्व है कि इसका अपना अलग सुर, लय और ताल है। लोग सुनकर ही अनुमान लगा लेते है कि यह लोकगीत सूर्य षष्ठी का गीत है। इसके ध्वनि ग्राम और लय एक विशेष प्रकार की भावभूमि की सृष्टि करता है जिसमें पवित्रता और मनोवाँछा का अपूर्व संगम रहता है। सूर्योपासना के परम्परित गीतों के अतिरिक्त उसी धुन पर अनेक गीतों का सृजन होने लगा है। चुनाव, चलचित्र, दूरदर्शन पर आधुनिक भावबोधक गीत 'छठी माता' के गीत के धुनपर बनाये जाने लगे हैं। मगध में गीता का अनुवाद इस लोकगीत के धुन पर राम प्रसाद 'पुण्डरीक' ने किया हैं। इससे पता चलता हैं कि आदिम लोकप्रवृत्तियों की जड़े कितनी गहराई तक लोकमानस में प्रविष्ट है। यहाँ देवी-देवता की पूजा के समय गेय गीतों में निहित लोकप्रवृत्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

सूर्योपासना के गीत - *अउँटल दुधवा ये दिनानाथ गेलवऽ सेराय,*
कहवाँ गववलऽ ये दिनानाथ ये हो सारी रात ?
आवत में हलिअई ये अम्मा नदिया किछार,
बाँझी तिरिअवा ये अम्मा बटिया लेले रोक।
कोखिया पलटवते गे अम्मा बीतले सारी रात ।।

अउँटल दुधवा ये दिनानाथ गेलवऽ सेराय,
कहवाँ गँववलऽ ये दिनानाथ ये हो सारी रात ?
आवइत में हलिअई ये चाची नदिया किछार,
निर्धन सेवकिया ये चाची बटिया लेले रोक।
धनवा दीअइते ये चाची बीतले सारी रात ।।

सूर्योपासना के इस लोकगीत में लोकमानसीय लोकप्रवृत्तियों का पूर्ण प्रकाशन

मिलता है । लोकमानस में प्राक्कल्पना, पदार्थो में आत्मशीलता, टोना विचारणा और आनुष्ठानिक विचारणा की प्रधानता रहती है। इस लोकगीत में ये सारे तत्व वर्त्तमान हैं। सूर्य मानव शरीरधारी दिन के राजा हैं। वे अपनी माँ के सम्मुख बालक के रूप में चित्रित है। उनकी माँ ने दूध को गरम कर उनके पीने के लिए रख दिया है। उन्हे बाहर से आने में देर हो गई और गरम दूध ठंढा हो गया । माँ पूछती है कि तुमने सारी रात्रि कहाँ बीता दी ? सूर्य उत्तर देता है कि हे माता, मैं नदी किनारे से गुजर रहा था तो एक बाँझ औरत ने मुझे रास्ते में रोक लिया । उसकी गोद भरने में सारी रात्रि बीत गई । फिर उसकी चाची ठंढे दूध के बारे में याद दिलाती है तो सूर्य कहता है कि चाची, नदी किनारे से आ रहा था तो मेरा एक निर्धन सेवक ने रास्ता रोक लिया तो उसे धन प्रदान करने में सारी रात बीत गई ।

इसमें लोकमानस की चारों विशेषताएँ वर्त्तमान हैं । यहाँ यथार्थ और कल्पना में कोई अंतर नहीं दीखता, सूर्य मानव शरीर धारी व्यक्ति है जो मानव सुलभ सारे व्यापार सम्पादित करता हैं। उसमें पूर्ण आत्मशीलता का आरोप है। टोना का तत्व भी वर्त्तमान है। सूर्य टोने का प्रयोग कर पुत्र दान करता है। पुनः उसकी चाची द्वारा पूछे जाने पर सूर्य कहता है कि एक निर्धन को धन देते रहने के कारण सारी रात बीत गई । तात्पर्य कि इस आनुष्ठानिक गीत में गायिका- ब्रती, पुत्र और सम्पति की कामना करती है।

विवाह में अनेक प्रकार के गीत विध्न से बचने और निर्विध्न रूप से सम्पन्न होने के लिए गाए जाते हैं। ऐसे समय में कूप, नदी, वृक्षादि की पूजा की जाती है और उनको प्रसन्न करने के लिए गीत गाए जाते हैं। दुल्हे को नजर-गुजर से बचाने और अपशकुन से निस्तार के लिए मगध जनपद में सैकड़ो गीत गाए जाते हैं जिनमें लोक प्रवृत्तियाँ अभिव्यक्त होती है "हाथे सेनुरवा खोइछा पाकल पान, चललन बहुआरो देई अम्मा मनावन" लोक गीत में आम्रवृक्ष को मान-मनौवल करने दुल्हे की माता जाती है क्योंकि उसके पुत्र ने आमकी डाली तोड़ दी है । आम उसके पुत्र की करतूत को बताता है और माँ उसको अनुनय विनय कर मनाने का प्रयास करती है, यही लोकप्रवृति है । आम्रवृक्ष में आत्मशीलता और मानव सुलभ व्यवहार का परिचय इस गीत में मिलता है । वृक्ष ही क्यों बल्कि कूप, आँधी, पानी, मिट्टी, सभी को मान-मनौवल कर आमंत्रित किया जाता है। मृत्तिका खनन के समय मिट्टी के विवाह के गीत गाए जाते हैं ।

कहवाँ में मटिया लिहले जलमिया, कहवाँ में मटिया तोहरो विवाह,
कुरखेत मटिया लिहले जलमिया, मड़वा में मटिया तोहरो विवाह ।

बाराती जाने के पूर्व माता और चाची राई, मिरचाई, जवाइन आदि को आग में डालकर वर को निहुछती है ताकि ससुराल में किसी की नजर नहीं लगे "देखिहँऽ रे कोई नजरी न लावे, सम्हरिहँऽ रे कोई नजरी न लावे ।" वर के सम्मुख ढकनी में रखी अग्नि में ये सब पदार्थ डाल कर वर को अनिष्ट से बचने के लिए टोना किया जाता है। इतना ही क्यों दाम्पत्य सदा स्थिर रहे और कभी वर - दुल्हन में विच्छेद नहीं हो, इसके लिए माँ सीरीष→वृक्ष के नजदीक टोना करने जाती है, जोग खरीदने जाती है -

जोगवा बेसाहन चलली मोरी अम्मा ओही रे सीरीसिया के गाछ,
अइसन जोग बेसइहँऽ मोरी अम्मा दुलहा न छोड़े दुलहिनिया के साथ ।

दुलहन कहती है कि हे मेरी माता सीरीषवृक्ष के नीचे जोग टोने का बाजार लगा है, वहाँ से ऐसा जोग (टोना) खरीद लाना जिसे ग्रहण कर लेने पर दुल्हा कभी दुलहन का साथ नहीं छोड़े । एक दूसरा टोनागीत देखा जाए- "चलिये में जाहूँ बाबा पटना सहरिया, बेसाहहूँ में लावऽ बाबा जोग केरा हो जरिया।" इस गीत में पटना -बाजार से जोग-जड़ी खरीद लाने का अनुरोध किया गया है ।

जादू-टोना, यंत्र-मंत्र आदिम मानव के प्रारम्भिक दाय है जो लोकमानस में जन्म-जन्मांतर से दबे पड़े आ रहे हैं। यही दाय अनुष्ठानों के समय लोकगीतों के माध्यम से प्रकाशित होते रहते हैं। बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त के लोकगीतों में इन प्रवृत्तियों की प्रचुर अभिव्यक्ति मिलती है। इन गीतों के वर्णन-विश्लेषण से आदिम मानवीय प्रवृत्तियाँ और उनके कार्य-कलापों का परिचय मिलता है। इससे सभ्यता-विकास की परम्परा की गुत्थी खुलने में सहायता मिलती है।

देवी-देवता की पूजा या संस्कार सम्पन्नता के अवसर पर ही नहीं बल्कि कृषिकर्म, वर्षागमन एवं यात्रादि के समय अनिष्ट का निवारण और इष्ट की प्राप्ति के लिए लोकगीत गाने की प्रथा मगध क्षेत्र में प्रचलित मिलती है। अवर्षण या सूखा पड़ जाने पर स्त्रियाँ टोना युक्त अभिचार करती है और वर्षादेव इन्द्र के गीत गाती हैं। कुछ बूढ़ी स्त्रियाँ रात्रि के अंधकार में गाँव के बाहर नग्नावस्था में हल जोतती है और इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए गीत गाती है। गाँव में लौटकर गली-कूचे और चौराहे पर समवेत स्वर में मेघगीत गाकर मेघ को रिझाया जाता हैं। प्रथमतः अपनी करूण व्यथा सुनाई जाती है । वर्षा नहीं होने के कारण -

"आहर सूख गेलई, पोखर सूख गेलई, सूखि गेलई भइयाजी के खेत,
भइया जी के खेतवा में पपरी परीये गेलई, अब इन्दर होवऽ न सहाय ।

लोकजीवन में विश्वास है कि इन्द्र वर्षा के अधिष्ठाता हैं, उनके प्रशस्ति गान से वे प्रसन्न होकर वर्षा करेंगे । परोक्ष→सत्ता में आत्मशीलता की अनुभूति एवं तदनुकूल आनुष्ठानिक क्रियाएँ लोकजीवन की आस्था है।[१]

वर्षा नहीं होने से - *"बेंगवा जे रोबऽ हे बेंगुचिया के कोरवा हे नऽ,*
दइया पानी बिनु परे हाहाकरवा हे नऽ ।
अनजनो बाबू रोवथी अपन मउगी के कोरवा हे नऽ,
दइया पानी बिनु मरऽ हे गजिनवा हे नऽ ।।

इन लोकगीतों से शायद इन्द्र को दया आगई और मदमस्त हाथी की तरह बादल गरजने लगे और वर्षा प्रारम्भ हो गई -

कहवाँ में गरजले मयगर हथिया, कहवाँ में बरसे इनरदेवा हे नऽ,
गया में गरजले मयगर हथिया, बेलखरा में बरसे इनरदेवा हे नऽ ,

इसके लिए गाँव के राजा की बेटी को बादल पूजना पड़ा तब मूसलाधार वृष्टि हुई और कृषक अपने कृषि कर्म में तल्लीन हो गए - "गाँवा के मलिकवा अनजानो बाबा नऽ, से धाई-धाई मोरहूँ मोररनियाँ हे नऽ।" इन लोकगीतों में अभीष्ट की प्राप्ति के लिए अदृश्य आत्मशील प्राणी के सामने गुहार किया गया है और उस गुहार को सुनकर अभीष्ट की प्राप्ति भी होती है। इन लोकप्रवृतियों में अटूट लोकास्था वर्त्तमान रहती है।

विविध प्रकार की बीमारियों से मुक्ति के लिए यंत्रों-मंत्रों का प्रयोग इसी लोकास्था का परिणाम है । चेचक से छुटकारा के लिए देवीमाता का गीत लोकास्था-सूचक लोकप्रवृति है। देखें -

"निमिया के डढ़िया मइया लगले हिंडोलवा कि ढूलि- ढूलि मइया गावे हे गीत" इस सम्पूर्ण लोकगीत में देवीमाता और उनका प्रिय नीमवृक्ष के साथ अन्योनाश्रित सम्बंध आदिम संस्कार के परिचायक है । हमारे यहाँ विभिन्न वृक्षों से सम्बंधित लोक जीवन में अनेकानेक धारणाएँ प्रचलित हैं और तदनुकूल लोकगीतों में उनकी अभिव्यक्ति मिलती है। पीपलवृक्ष के पत्ते-पत्ते पर देवों का निवास है। अतः उसे काटना या जलाना वर्जित है। उसे वासदेव (देवों का निवास) कहा जाता है नीम देवी की सहचरी है। आम्र

पल्लव पवित्रता का प्रतीक है। बड़-पाकड़ पक्षियों के निवास स्थल के रूप में चर्चित है। पंचतंत्रीय कथात्मक प्रणाली में इन वृक्षों के पशु-पक्षी और जीव-जन्तु के निवास के रूप में चर्चा आई है। हमारे यहाँ आम, पीपल, पाकड़ बरगद और गूलर को पंचमहावृक्ष माना गया है जिन्हें काटना और अपवित्र करना वर्जित है। लोकगीतों में इन वृक्षों की पूजा और अनुष्ठान का वर्णन मिलता है । शमीवृक्ष की लकड़ी के बिना तो यज्ञादि कर्म सम्पन्न होता ही नही। अतः इसे यज्ञ अरणी कहा जाता है। लोकगीतों में अभिव्यक्त ये लोकप्रवृत्तियाँ आदिम संस्कार होते हुए भी आज के पर्यावरण प्रदूषण-अवरोध में कितनी सहायक है, सहज ही अनुमान्य है । ऐसी सांस्कृतिक-लोकप्रवृत्तियाँ लोकमानस के अतल तल में जमी पड़ी रहती हैं। अतः किसी देश की संस्कृति से वहाँ के निवासियों को विमुख करना आसान नहीं क्योंकि उसकी जड़े ऐतिहासिक परम्परा से उसके चेतन-अचेतन मस्तिष्क में गड़ी रहती है और लोकगीतों तथा लोकास्थाओं के रूप में अभिव्यक्ति पाती रहती है ।

अभी हमने विविध अनुष्ठानों के समय गाए जानेवाले लोकगीतों में लोकप्रवृत्तियों की थोड़ी झाँकी प्राप्त की है । लेकिन लोकगीत केवल अनुष्ठान (Retual Performance) के समय ही तो नहीं गाए जाते है, मनोरंजन के लिए भी इनका गायन होता है तो क्या ऐसे मनोरंजनात्मक लोकगीतों में भी लोकमानसीय लोकप्रवृतियों का समावेश रहता है ? इसका उत्तर सकारात्क होगा क्योंकि गीतों में लोक शब्द के जुड़ते ही लोकप्रवृत्तियाँ जुड़ जाती है। जिस लोकगीत में लोकप्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति न हो, उसे लोकगीत नहीं कहा जा सकता । वह गीत, संगीत, कलागीत या शास्त्रीय संगीत हो सकता है। आज सिने जगत में निरर्थक पॉप संगीत का प्रयोग बहुत तेजी से हो रहा है फिर भी लोकगीतों का लालित्य समाप्त नहीं हो पाया है। यहाँ मनोरंजन के लिए गाए जानेवाले लोकगीतों में लोकतत्व एवं लोकप्रवृत्तियों का थोड़ा अन्वेषण अनपेक्षित नहीं होगा ।

मनोरंजन के लिए लोकगीत दो तरह से गाए जाते हैं (१) खाली समय में अह्लादन के लिए और समय काटने के लिए (२) व्यावसायिक गायकों के द्वारा रूचि परिवर्त्तन के लिए । कोई व्यावसायिक गायक कलागीत या शास्त्रीय संगीत गा रहा है और श्रोताओं में उदासीनता व्याप्त है तो रूचि परिवर्त्तन के लिए लोकगीतों की मांग होती है । ऐसा क्यों ? पुनः वही बात स्मरण होती है कि श्रोताओं में अवस्थित लोकमानस अपने आदिम प्रवृतियों से उद्वेलित हो उठता है जहाँ उसे संस्कार जन्य अह्लादन होता है। वस्तुतः लोकगीत मानवीय संस्कार को उद्वेलित कर देता है । अतः

इसकी मांग होने लगती है। सामान्य व्यावसयिक गायक (नचनियाँ आदि) विविध प्रकार के गीतों - संगीतों को गाकर श्रोताओं को आकृष्ट एवं अह्लादित करता है जिसमें लोकगीत अत्यधिक मर्मस्पर्शी होती है, यथा -

कउनी रंग डोलिया, कवनी रंग ओहरवा, कउनी रंग हो ननदो तोरी भइया ?
लाली रंग डोलिया, सबुज रंग ओहरवा, साँवरे रंग हो ननदो तोरा भइया,
टूटी गेलई मुंगवा, विखरी गेलई मोतिया, रूसीये गेलन हो ननदो तोरा भइया।
चुनी लेबई मुँगवा, बटोरी लेबई मोतिया, मनाई लेवई हो ननदो तोरा भइया।।

इस लोकगीत में ननद-भाभी के हास-परिहास के द्वारा शाश्वत दाम्पत्य भाव की अभिव्यक्ति हुई है जो श्रोताओं को सहज रूप से ग्राह्य है । अभिजात वर्ग अपने झूठे अहं- चैतन्य से प्रेरित होकर इसे गवारूँ गीत भले ही कहे परंतु संस्कारवश उनका भी सहज स्वभाविक रूझान इन गीतों में रहेगा ही ।

खाली समय में अह्लादन के लिए गानेवाले लोकगीत मुख्यतः मगध के स्त्री समाज में प्रचलित मिलते हैं, यों तो पुरूषों में इसका आत्यंतिक अभाव नहीं है। मार्ग में थका-माँदा बटोही लोकगीत को गाता है। रात्रि के चौपाल में बैठे लोग ढोल-झाल पर लोकगायन प्रायः करते हैं । ऐसे गायनों में लोकभजन, कीर्तन के अतिरिक्त मुख्य रूप से मौसमी गीत होते है जिनमें फागु और चैता अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। पुरूष वर्ग के इन लोकगीतों में भी प्रचुर मात्रा में लोकप्रवृति पाई जाती है। चैता और फागु का एक-एक उदाहरण देखें -

चैता - *सेजिया सुतल बलमा जागई हो रामा- कोइली मीठी बोलिया।*
रोज-रोज बोले कोइली भोर भिनसरवा, आज काहे बोले आधि रतिया हो रामा,
होवे दे बिहान कोइली खोंतवा उजारबउ, बगिया कटैबो घनी बगिया हो रामा,
कोइली मीठी बोलिया ।

फागु - *ऊँचे गढ़ रोहदासवा ताके नीचे पटवा केरा हाट,*
हाट बेसाहन मैं निकली, बाँके छैला ये ममोरले बाह,
काला पानी मैं न पीऊँ, काला बैगन खाय,
काला मरद सांगे मैं न सोऊँ, करिया होय जायब ।

उपर्युक्त चैता लोकगीत में मुग्धा नायिका का आक्रोश उसकी आदिम सहचरी

प्रकृति, पक्षी पर व्यक्त हुआ है। सुबह बोलने बाली कोयल आज आधी रात को क्यों वोलगई ? सुवह जानकर उसका प्रिय उसे छोड़ चला तो नायिका कोयल के घोसले उजाड़ कर घने बाग को ही कटवा देना चाहती है। रहे बाँस न बाजे बाँसुरी, बगीचा ही नही तो कोयल कहाँ और उसकी बोली कैसी ? मानव आदिम काल से प्रकृति के साथ संघर्ष करता रहा है और उसे अनुकूल बनाने की प्रवृति रही है, यही भाव उक्त गीत में वर्त्तमान है । फागु लोकगीत में गढ़ रोहताश्व के नीचे वस्त्र का बाजार लगा हुआ है। एक नायिका बाजार में खरीददारी के लिए चली तो बाँके छैला ने उसकी बाह पकड़ ली, वह काला था । अतः नायिका को सारे काले पदार्थ से दिखावटी घृणा हो गई । उसने अपने बाँके छैला को कहा- मैं काला पानी नहीं पीती हूँ न काले बैगन की तरकारी खाती हूँ और काले मर्द के साथ शयन भी नहीं करती हूँ क्योकि साहचर्य दोष से काला हो जाने की सम्भावना है । लोकजीवन का कितना सहज, सरल और स्वभाविक प्रेमालाप है। इसी प्रव र आदिम मानव का प्रेम वन के झाड़ -झुरमुट मे सहज रूप से प्रस्फुटित हुआ होगा । लोकजीवन की ऐसी सहज स्वभाविक प्रवृत्तियों से सम्पूर्ण फागु-चैता लोकगीत भरा पूरा मिलता हैं। इन गीतो को गाकर मार्ग के थके-माँदे बटोही थकान भूल कर अह्लादन भाव से विभोर हो जाते हैं । आदिवासियों का अभावग्रस्त जीवन लोकगीतों एवं लोकनृत्यों के कारण भावपूर्ण बना रहता है ।

अब मगध में स्त्रियों के द्वारा गाये जाने वाले लोकगीतों में निहित लोकप्रवृत्तियों का अनुभावन करें । महिलाएँ और किशोरियाँ मनोरंजन के लिए भादों की रात्रि में चौहट लोकगीत गाती हैं। बालिकाएँ खेल में बालगीत गाकर मनोरंजन करती हैं। अषाढ़-सावन में झूला के पेग के साथ अमराइयों में किशोरियाँ कजरी और पूर्वी गाती हैं। इन सभी प्रकार के मनोरंजन गीतों में लोकप्रवृत्तियाँ अपने विविध रूपों में अभिव्यक्ति पाते रहती हैं ।

भादों की वर्षा विहीन शून्य रात्रि में ग्राम्य स्त्रियों का समूह गली के चौराहे पर एकत्रित होकर दो समुदायों में बँटकर अभिनयात्मक गीत गाती है। मगध के मगही चौहट गीतों में लोकप्रवृत्तियों और लोकजीवन के सम्बंधों की अभिव्यंजना होती है। दौलत बेटी, रैमल, सती परीक्षा, चम्पिया आदि चौहटों में वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक सम्बंधों तथा रीति-रिवाजों का लोकतात्विक वर्णन मिलता है । तालाब या कुएँ मे पानी नहीं उखड़ने पर नरबलि दी जाती थी जिसका वर्णन 'दौलत बेटी' में हुआ है । यह लोक प्रवृत्ति आदिम मानस का दाय है जो लोकगीत परम्परा में वर्त्तमान है। सतीत्व की रक्षा

भारतीय आचार-निष्ठा का बड़ा पवित्र कर्त्तव्य माना जाता रहा है। (आज नही, परम्परा के प्रवाह में) यह तत्व चम्पिया लोकगीत में वर्त्तमान हैं। इसमें सामंतों की काम लोलुपता का भी चित्रण है। 'रैमल समूह' के लोकगीतों में परिवारिक सम्बधों एवं तदनुकूल लोकप्रवृत्तियों का प्रकाशन सर्वत्र मिलता है ।

किशोर-किशोरियों के झूलागीत, कजरी या पूर्वी लोकतत्वों से सराबोर रहती है, पारिवारिक सम्बंधों की झाँकी उपस्थित करती है ।

कजरी हम खेलके लवटली रे मैना, मैना तइसे देखूँ ससुर जी लिआवन रे मैना ।
ससुर के संग हम न जयबो रे मैना, राहे- बाटे घुघवा तनवतई रे मैना ।
कजरी हम खेल के लवटली रे मैना, मैना तइसे देखूँ भैसुर जी लिआवन रे मैना।
भैंसुर के संग हम न जयबो रे मैना, मैना राहे-बाटे छुआछूत करवतई रे मैना
कजरी हम खेल के लवटली रे मैना, मैना तइसे देखूँ स्वामीजी लिआवन रे मैना
स्वामी के संग हम न जयबो रे मैना, मैना सावन के कजरी छूट जयतई रे मैना।

इस कजरी लोकगीत में लोकजीवन के परम्परागत पारिवारिक सम्बंध और लोकरीति का अच्छा निर्वाह मिलता है, साथ ही कजरीमोह सर्वोपरि दीखता है। किशोरी कजरी खेलकर घर लौटती है तो उसका श्वसुर द्विरागमन के लिए आए हुए हैं । वह श्वसुर के साथ जाने के लिए तैयार नहीं है और भैंसुर के साथ भी नहीं क्योंकि मार्ग में छुआछूत होने का डर है। वह पति के साथ भी ससुराल नहीं जाना चाहती क्योकि इस वर्ष सावन की कजरी छूट जायगी । लोकजीवन में पारिवारिक सम्बंधों एवं परम्परगत आचारों का वर्णन इस कजरी में पर्याप्त रूप से मिलता है। श्वसुर के सामने घूँघट निकाल कर रहना, भैंसुर से स्पर्श तक न होना भारतीय लोकजीवन का परम्परागत आचार है। सावन की कजरी भी परम्परागत वन्यजीवन की देन है। ये प्रवृत्तियाँ और आचार परम्परागत दाय हैं जो लोकगीतों में सुरक्षित हैं । ऐसे सैकड़ों -सहस्त्रों लोकजीवन के वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक सम्बंध तथा तज्जन लोक प्रवृत्तियाँ मगध प्रदेश के लोकगीतों में आज भी वर्त्तमान हैं जिसके वर्णन विस्तार की आवश्यकता नहीं। सुधी पाठक इस ग्रंथ के संचयन खण्ड में इसका अवलोकन करें।

लोकजीवन और लोकसंस्कृति

लोकतत्व का आधार-उपादान 'लोकजीवन' होता है। लोकजीवन के माध्यम से ही लोकाभिव्यक्ति होती है। लोकजीवन ही वह केन्द्र स्थल है जिसके चारो ओर लोक तत्व

की सीमाएँ घिरी रहती हैं। लोकमानस और लोकप्रवृत्ति जितनी मात्रा में जहाँ -जहाँ मिलती है, वहाँ उतनी ही मात्रा में लोकजीवन की प्रधानता रहती है। लोकजीवन के आचार, विचार, व्यवहार, संस्कार, अनुष्ठान, धर्म, रीति-रिवाज, विश्वास, रूढ़ -परम्पराएँ और वार्त्ताएँ आदि लोकसंस्कृति के अंतर्गत आते हैं। लोकसंस्कृति के उपर्युक्त तत्व शिष्ट संस्कृति से थोड़ा भिन्न होते हैं। शिष्ट संस्कृति एवं उसके अनुष्ठान अहं- चैतन्य भाव से पूर्ण रहते हैं जबकि लोकसंस्कृति की अभिव्यक्ति सहज स्वभाविक रूप से वनप्रांत की निर्झरनी की तरह निःसृत होती रहती है। प्रस्तुत प्रसंग में मागधी लोकगीतों में जीवन के बहुआयमी एवं बहुरंगी सांस्कृतिक तत्वों का अन्वेषण हमारा लक्ष्य है।

लोकजीवन की प्रथम इकाई व्यक्ति है, पुनः वह व्यक्ति परिवार में आवद्ध रहता है और परिवार समाज से सम्बंध रखता है। समाज किसी भौगोलिक सीमा में बंधकर राष्ट्र का स्वरूप ग्रहण करता है। अत : व्यक्ति का इन सम्पूर्ण तत्वों के साथ विविध रूपों में संबंध रहता है। लोकजीवन इन सम्पूर्ण विविधता एवं विशालता को अपने गर्भ में धारण किए रहता है और इनकी अभिव्यक्ति लोक साहित्य, लोकगीत और लोक संस्कृति के माध्यम से करते रहता है। यहाँ मगध में प्रचलित विविध लोकगीतों में लोकजीवन के पारस्परिक सम्बंधों का उद्घाटन संकेत-सूत्रों के द्वारा किया गया है क्योकि सारे सम्बंधों का चित्र प्रस्तुत करना महापुराण लेखन करना होगा। अतः अपनी सीमाओं में ही लोकजीवन के सम्बंधों का अनुशीलन किया गया है।

लोक में लोकजीवन का व्यक्ति अपने अनेक सम्बंधों में जीवित रहता है। एक व्यक्ति किसी का पुत्र है तो किसी का भाई है, किसी का पति है तो किसी का पिता है, न जाने उसका सम्बंध परिवार और समाज तथा राष्ट्र में कितने प्रकार का है, कहा नहीं जा सकता।

प्रथमतः व्यक्ति जब माता के गर्भ से इस धरा धाम पर उतरने के लिए प्रस्तुत होता है तभी से उसका सम्बंध परिवार और समाज के साथ जुड़ जाता है। संतान जन्म के पूर्व ही लोक कंठ फूट पड़ता है -

महलवा में जच्चारानी दरदे बेयाकुल, होरिलवा के बाबू हम न कोई के बोलयबो।
सासु जे अइहें देबता मनइहें, देवता मनाई नेग मांगी हें, होरिलवा के बाबू...।
न नेग मिलिहें, रिसाय चली जइहें, मनावे न जयबों तो लोग सब हँसिहें,
ननदी जे अइहें काजर पारन को, कजरा पराई नेग मांगिहें, होरिलवा के बाबू..।
कजरा पराई न नेग मिलिहें, रिसाय चली जइहें, मनावे न जयबों तो लोग सब हँसी हें।

इस लोकगीत में प्रसूति में प्रसव पीड़ा से व्याकुल है फिर भी सास, ननद, जेठानी आदि को बुलाना नहीं चाहती। सास आवेगी तो अपने पौत्र के लिए मनौतियाँ मानेगी और नेग- दस्तूर मांगेगी। नेग नहीं मिलने पर क्रोधित होकर चली जायगी, लोग देखकर हँसी उड़ावेंगे। यदि ननद आती है तो नवजात शिशु के लिए काजल पारेंगीं और उसे भी नेग नहीं मिलेगा तो वह भी क्रोधित होकर चली जाएगी और उसे मान-मनौवल कर नहीं रोका जायगा तो लोग-बाग हँसेंगे। जन्म पूर्व के इस संस्कार लोकगीत में बच्चा के साथ पारिवारिक सम्बंधों एवं उसके क्रिया कलापों तथा सांस्कृतिक अनुष्ठानों का एक लघु संस्करण दीखने लगता हैं।

जैसे ही बच्चा का जन्म होता है वैसे ही उसकी माँ अपनी ननद को नेग में कुछ नहीं देने का बहाना बड़ी चतुराई के साथ ढूँढ़ निकालती है। बच्चा के जन्म पर ननद बधाई देती है, काजल पारती है और नेग-दस्तूर पाती है। बच्चे की माँ ननद से कहती है कि मेरे 'ललना' की बधाई में क्या लोगी ? यदि हमारी मांगटीका लेती है तो तुम्हारे भाई की रानी का मांग खाली हो जायगा (ध्वनि है कि यह तुम्हे भी अच्छा नहीं लगेगा) हे ननद, यदि तुम सिकड़ी लेती है तो मेरा गला खाली हो जायगा और तुम्हारे बड़े भाई की रानी (पत्नी, तुम्हारी प्रिय भाभी) उघार पड़ जायगी। यदि पायल लोगी तो पैर खाली पड़ जायगा, अर्थात् जच्चा कुछ देना नहीं चाहती। इस सोहर में ननद भावज का चातुरीपूर्ण परिहास वार्त्ता वर्णित है।

मगध में प्रचलित सोहर लोकगीत में लोकजीवन के परस्पर बहुआयामी और बहुरंगी सम्बंधों का वर्णन मिलता है जिनमें नेगदारिनों का परिहास और रूठना तथा सम्बंधियों द्वारा प्रदत्त पालने, खिलौने तथा अंगवस्त्र का वर्णन पर्याप्त रूपों में मिलता है। कहीं ननद नेग मांगती है और जच्चा देना नहीं चाहती है तो शिशु का पिता बहन को संतुष्ट करने के लिए दूसरा विवाह रचाने की घोषणा करता है तो उसकी पत्नी अपने हाथ का कंगन निकालकर आंगन में फेंक देती है और ननद को व्यंग्य पूर्ण गाली देती है-

ललना झटसिन फेंकले कंगनवाँ अंगनवाँ बीचे हे,
ललना लऽ न छिनरियों कंगनवाँ सवतिया बन के रहूँ न हे।

जच्चा कहती है कि हे छिनाल ननद, मेरा कंगन लेलो और मेरी सौतिन बन कर तूहीं रह जाओ (तुम्हारे भाई दूसरा विवाह क्यो करेंगें ?) इसमें हास्य, गाली और अपनापन

का कितना अनूठा चित्र है। यह लोकगीत की अर्थ व्यापकता और भाव सवलता का अच्छा उदाहरण है। कही गोतनी और सास को नहीं पूछने पर वें रूठती हुई चित्रित है कहीं जच्चे के नखरे के अद्भुत रूप मिलते हैं तो कहीं बच्चे के लिए अनेक बालोप योगी उपहार का चित्रण मिलता है।

"कमल फूलन से निकलल गुलाब ललना,
बाबूजी भेजे हैं सोने के पालना।
तोर अम्मा ढुआवे, तू दूल ललना।
कमल फुलन से निकलल गुलाब ललना,
दादाजी भेजे है सोने के पालना, तोर चाची ढुलावे तू दूल ललना।

गीत सम्बंधियों के नाम के साथ आगे बढ़ता है यह सम्बंध निर्वाह संयुक्त परिवार का सुन्दर नमूना है जिसमें लोकप्रवृति और लोकसंस्कृति मुखरित हुई है। बर्गेस और लॉक ने ठीक ही कहा है –

Family is a group of persons united by the ties of marriage blood and adoptions constituting a single household interacting and communicating with each other in respective social rules of husband and wife, mother and daughter, brother and sister and creating and maintaing a common culture.

उपर्युक्त लोकगीत में संयुक्त परिवार की समान-संस्कृति का वर्णन बर्गेस और लॉक के उक्त सिद्धांत में भी दीखता है जिससे विदित होता है कि संयुक्त परिवार की प्रवृति और संस्कृति सार्वभौमिक है। लोकजीवन के मूल तत्व सार्वकालिक और सार्वभौमिक होते हैं – इतिहास भूगोल की सीमा से परे, समान मानवीय प्रवृतियों का सूचक। यही लोकमानस के अस्तित्व का सशक्त प्रमाण है।

पश्चिमी विचारक मेकाइवर और पेज ने भी परिवार की सशक्तता को उजागर किया – "The family is a group defined by sex relationship sufficiently precise and enduring to provide for the procreation and upbringing of children." इस परिभाषा में परिवार की सशक्तता और गुनवत्ता के मूल में समान प्रवृत्ति और समान संस्कृति ही है।

मगध के लोकगीतों में व्यक्ति, परिवार और समाज के संबंधों को अति सम्वेदनशील और अतिव्यापक रूपों में दर्शाया गया है। संस्कार गीतों में तो संयुक्त

परिवार के अभेद, अटूट और अनिवार्य सम्बंधों के बहुरंगी चित्र सर्वत्र दृष्टिगत होते है। बच्चा जैसे-जैसे बढ़ने लगता है, वैसे-वैसे उसे विविध संस्कारों से गुजरना पड़ता है और उन संस्कारों के सम्पन्न होने के अवसर पर परिवार और पड़ोस (समाज) की सहभागिता अनिवार्यतः होती है। जात संस्कार में, सौरी, छठी बरही, बीसी के समय सारे परिवार में समारोह और उत्सव का दृश्य बना रहता है और यह उत्सव बिना लोकगीत के सम्पन्न ही नहीं होता । इतना ही नहीं, शिशु के नामकरण, अन्नप्रासन, चूड़ाकरण आदि सभी अवसरों पर स्त्री कंठ से तत्सम्बंधी लोकगीत फूटते रहते हैं जिनमें पारिवारिक और सामाजिक सम्बधों तथा क्रिया-कलापों का चित्रण मिलता है। यज्ञोपवित तो विवाह संस्कार का एक पूर्व संस्करण है, अध्ययन का प्रवेश द्वार भी । इस अवसर पर शास्त्रोक्त विधि-विधान के साथ लोक प्रचलित अनुष्टानों का पालन अनिवार्यतः होता है तब गीतों की स्वर लहरियो से सारा-घर-परिवार और पड़ोस मुखरित होते रहता है। इन गीतों में लोकप्रवृत्तियाँ ही व्यंजित होती हैं और संस्कृति सर्वत्र दीखती है ।

यज्ञोपवित या उपनयन-संस्कार को लोकजीवन में 'जनेऊ' के नाम से अभिहित किया जाता है। जनेऊ ग्रहण करने की अपनी संस्कृति होती है । इसका अपना अनुष्टान होता है और लोककंठ में बसे गीत मुखरित होते रहते हैं। जनेऊ ग्रहण करनेवाला बालक ब्रह्मचारी का रूप धारण करता है । पूरा सर घूटा रहता है, पलाश दण्ड ग्रहण करता है, बाघाम्बर या मृगाछाला धारण करना पड़ता है, मुंज और साहिल के काँटों की जरूरत पड़ती है । इन सब का वर्णन जनेऊ लोकगीत में मिलता है -

पहिले जे मारबो साहिल, साहिल काँटा चाहिला है,
ललना तबे हम मारबो मिरिगवा ,मिरिग छाला चाहिला है,
ललना तबे हम काटबों परसवा, परास डंटा चाहिला है
ललना तबे हम काटबों मुंजिअवा मुंजिये डोरी चाहिला है,
ललना आज मोरा बाबू के जनेउआ जनेउआ पीयर चाहिला है ।

इस प्रकार साहिल काँटा, पलाश, मृगछाला, मुंज और पीले धागे का जनेऊ चाहिए जिसे बालक ग्रहण करता है। इस गीत में प्रयुक्त होने वाले सारे सामानो का वर्णन है तो निम्न लोकगीत में जनेऊधारी के पारिवारिक सम्बंधों का चित्रण है ।

वेदिय बोले बरूअवा, जनेऊ -जनेऊ करे है,

बाबा, के मोरा बेदिया भरावत जनेउआ दिआवत हे ।
हँसि-हँसि बोलथिन बाबा, बोली भितरायल,
बबुआ हम तोरा बेदिया भरायब, जनेउआ दिआयब हे ।

इस प्रकार बालक का चाचा, भाई, फूफा आदि संबंधियों का जिक्र किया जाता है। इतना ही क्यों गीतों में ब्राह्मण, कुम्हार, हजाम आदि जातियों को उनकी पत्नियों के साथ निमंत्रित कर उन्हें सम्मानित किया जाता है और अनुष्ठान में उन्हें सहयोगी बनाया जाता हैं । यह भारतीय संस्कृति का पारिवारिक और जातीय समन्वयवाद है। द्रव्टव्य-

ब्राह्मन नेवतब, ब्राह्मनी नेवतब, नेवतब पोथिया सहिते चलिआवऽ, माई हे ।
कुम्हार नेवतब, कुम्हिनियाँ नेवतब, नेवतब कलसा सहित चलिआवऽ माई हे ।

इसमें विभिन्न वर्णों के बीच कर्माश्रित सौहार्द्र चित्रित है। काश, कर्मो की प्रतिष्ठा हमारे परम्परागत शिष्ट समाज में होती रहती तो जाति एवं ऊँच-नीच के वात्याचक्र में समाज और देश का अकल्याण न होता । लोकगीत यही सौहार्द्र का संदेश देते हैं। पारिवारिक और सामाजिक सम्बंधों को भावनात्मक पृष्ठ भूमिपर प्रस्तुत करते हैं। लोकप्रवृति और लोकसंस्कृति की यही लोकाभिव्यक्ति है ।

भारतीय समाज में विवाह एक सर्वाधिक सशक्त, महत्वपूर्ण और अनिवार्य लोकानुष्ठान है। हमारी संस्कृति में यह एक पवित्र धार्मिक बंधन भी माना जाता है। प्रजोत्पति और समाज के अस्तित्व के लिए विवाह एक अनिवार्य शर्त है। भारत में यह एक महानुष्ठान के रूप में सम्पन्न होता है। इसकी तैयारी, उत्कर्ष और अवसान बड़ा ही आह्लादपूर्ण, पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूति पर होता है। विवाह सम्बंधी मागधी लोकगीतों में व्यक्ति, परिवार और ओर समाज के बहुआयामी स्वरूप एवं तज्जन क्रिया-कलापों का ही वर्णन नहीं होता बल्कि मानवेत्तर प्राणियों एवं वृक्षादि तथा गिरिवन, सर- सरिता की विशालता को भी इस अनुष्ठान में समेट लिया जाता हैं इसी से इस अनुष्ठान की इयत्ता और महत्ता विदित है ।

लोकजीवन में वर-कन्या अन्वेषण और निर्धारण से लेकर विवाह अवसान के बाद तक सप्ताहों वैवाहिक अनुष्ठान चलते रहते हैं। सगुन, या छेका, मृतिका खनन, तत्पश्चात् पांच या आठ दिनों के बाद मंडपाच्छादन, घृतढारी, वंशरोपण, कलशस्थापन, हल्दी, नहछू मौर लेना, कलशा या वर्तन लेना, तेल लेना, पीढ़ा-चौकी लेना, बड़ का पत काटना, आम्र मनाना, इमली घोटाना, योग आदि क्रियाएँ सम्पन्न होती रहती है और सभी अवसरों पर

लोकगीतों की मधुर लहरियों से वातावरण झंकृत रहता है। विवाह के समय कन्यादान, शंखदान, सिन्दूरदान, सुमंगली , लावाछिटाई, शिलारोहण आदि क्रियाएँ बिना लोकगीत के सम्पन्न हो ही नहीं सकती है । इस समय परिवार के सारे सम्बंधियों एवं समाज के प्रमुख सभी जातियों की सहभागिता अनिवार्य होती है ।

विवाह में प्रथमतः सगुन विचार किया जाता है और तत्पश्चात् बारात आने या जाने सम्बंधी कार्यो की तैयारी और क्रियाएँ करनी पड़ती है। इस क्रम में वृक्ष, नदी, देवी-देवता की पूजा और धार्मिक-सांस्कृतिक अनुष्टान सम्पन्न होते हैं। निम्न मगही गीत विवाह के पूर्व प्रारम्भिक भूमिका के समय गाया जाता है जो लोक मानसीय तत्वों से युक्त है । सगुन में तिल, चावल, डंटी लगा पान आदि लोकजीवन के पदार्थों का प्रयोग होता है-

पहिला सगुनवाँ तिल-चाउर हे तब लिए डटहर पान हे,
देहूँगल दुलरइतो बाबा के हाथ सगुनवाँ भल हम पड़ली हे,
लगनियाँ भेलइ उताहुल सगुनवाँ भल हम पड़ली हे,
कानी -कानी चिठिया लिखथी दुलरइतो बाबू नदिया अलइ तूफान हे,
सुपली खेलइते तुहूँ दुलरइती बहिनी, देही नदिया अलह मनाई हे,
लगनियाँ मोर उताहुल, सगुनवाँ भल हम पड़ली हे ।

विवाह लग्न नजदीक है। अतः उतावलापन स्वभाविक है, उसपर नदी में वाढ़ आ गई है। बाराती कैसे जायगी ? अतः पिता रो-रो कर पत्र लिखते हैं और भाई सुपली-मौनी खेलती अपनी छोटी बहन को नदी पूजने के लिए कहता है ताकि नदी अपनी बाढ़ समेट ले। स्मरणीय है कि विवाह में आँधी से बचने के लिए 'बंडोवा' की पूजा होती है,नदी से बचने के लिए योग किया जाता है, मंत्र से वर को निहुछा जाता है। ये सारी क्रियाएँ आदिम लोक प्रवृति सूचक है जो परम्परा के प्रवाह में काल की सीमा को लाँघती आज भी लोकगीतों में जीवित है ।

सगुन, छेका या फलदान विवाह की प्रथम निश्चयात्मक भूमिका है तो टीकारण विवाह में सुदृढ़िकरण का प्रतीक है (आज टीकाकरण दहेज-तिलक के रूप में विकृत हो गया है) इस समय स्त्री कण्ठ से फूटने वाले गीत शुभ-शकुन के द्योतक होते हैं और नव सम्बंध की नई भूमिका के संकेत करने वाले भी । यहीं से दूसरे परिवार के साथ नये सम्बंध के विविध आयाम खुलने लगते हैं, इन गीतों में यह संकेत मिलने लगता है।

नगर अजोधेया में बाजई बधावा घरे-घरे मंगल चार हे ,
रोरी अछत लेले ब्राह्मन -पंडित, जल्दी से लगन सोचाव हे,
लालही पट केरा जाजिम झारी विछावल हे,
एक दिसि बइठल राजा दसरथ, दोसर दिसि राम-लछुमन हे,
तिलक देथिन जनक रीखा लगन भल पायल हे,
अछत छिटथी लोग सभे होयत मंगल हे ।

यहाँ राजा दशरथ और जनक त्रृषि पौराणिक पात्र नहीं बल्कि सामान्य जन के प्रतीक है, तिलक की क्रियाएँ भी सामान्य हैं और प्रयुक्त सामान भी लोकानुरूप हैं। उस अवसर पर स्त्रियाँ परिहास के लिए लोकगाली का गायान करती है जो पूर्णतः लोकप्रवृत्ति का द्योतक हैं ।

लाख रूपइया के दुलहा ब्राहान भडुवा ठग ले ले ।
लाख रूपइया के दुलहा ससुर भडुवा ठग लेले ।

इस गीत में नये सम्बंध के नये आयाम खुल गए, तिलक के बाद लड़का का श्वसुर निश्चित हो गया। अतः उससे अपनापन प्रदर्शित करने के लिए लोकगाली का प्रयोग अपेक्षित हो गया। श्वसुर पक्ष के ब्राह्मण आदि लोग भी परिहास-गाली के अधिकारी हो गए। इस प्रकार शादी होने तक सम्बंधों के नये -नये आयाम खुलते जाते हैं और उनके क्रिया-कलापों से लोकप्रवृतियाँ प्रस्फुटित होती हैं होबेल ने अपनी पुस्तक Man in the primitive world page 105 पर लिखा है- "Marriage is the complex of social norms that difine and control the relations of mated pair to each other thier kin men, their offspring and sociely." विवाह सामाजिक आदर्श-नियमों की जटिलता है जो दम्पति के पारस्परिक सम्बंधों को उनके रक्त सम्बंधियों तथा समाज के प्रति परिभाषित और नियंत्रित करता है। इस तथ्य की प्रथम सूचना सगुन और टीकाकरण के समय से ही लोकगीतों में मिलने लगती है और विवाह होने समय तक यह विस्तार पाते जाता है । यह सम्बंध विस्तार केवल मानव समाज तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि प्रकृति जगत से भी सम्बंध स्थापित होता है। तिलक के बाद मृतिका खनन की लोकरीति है । वर की माता अपनी जेठानी के साथ स्त्री-समूह में लोकगीत गाती रात्रि में घर से बाहर खेत में जाती है और वहाँ से पवित्र मिट्टी खोदकर लाती है और घर में कुल देवता के नजदीक लाकर रखती है। इसक्रम में गाँव के बाहर कूप की पूजा कर वहाँ दाल धोने

की रीति है। इन सारे लोकानुष्ठान में मनुष्य का सम्बंध-विस्तार मानवेत्तर जड़-पदार्थो से भी होते जाता है । लोकप्रवृत्ति का क्षेत्र-विस्तार मानव, पशु-पक्षी से फैलकर सारे प्रकृति-जगत के साथ जुड़ जाता है ।

मृतिका-खनन के समय गाए जाने वाले गीतों में उक्त भाव-सौदर्य द्रष्टव्य है। सम्पूर्ण मगध प्रदेश में मटकोरा के समय प्रथमतः निम्न गीत गाने की परम्परा रूढ़ हो गई है -

साकरी गलिया तोहरो अनजानो रहया-
अहे हाथी- घोड़ा पैरो न लेहऽ, कइसे गढ़ पइसब हे,
दुअरे मढ़यबो दुअर मनियाँ,
अहे खिड़की कटैबो कोटवाल, बेइलियागढ़ पइसब हे ।

अमुक राय की गली संकीर्ण है, हाथी-घोड़े जा नहीं सकते, गढ़ में कैसे प्रवेश किया जाय। दरवाजा मणि जटित है। अतः परकोटे की खिड़की से गढ़ में प्रवेश किया जायगा। लोकजीवन के पात्र प्रायः साधन सम्पन्न सामंत (कुछ अपवाद को छोड़कर) होते हैं फिर भी उनमें शिष्ट प्रवृत्ति और शिष्ट संस्कृति की प्रधानता न होकर उनके सारे क्रिया-कलाप प्रायः लोकतात्विक होते हैं । उनकी स्त्रियाँ मिट्टी कोड़ने उसी खेत में जाती है और वहीं लोकप्रवृति-सम्पृक्त गीत गाती है-

कहवाँ में मटिया जिहले जलमियाँ, कहवाँ में मटिया तोहरो बिआह ?
कुरुखेत मटिया जिहले जलमियाँ, मड़वा में मटिया तोहरो बिआह ।
उहूँ -उहूँ मटिया लाल-सिआरिया, से तोरो बिना मटिया कइसे बिआह ?

भावार्थ कि मिट्टी का जन्म कहाँ हुआ और उसका विवाह कहाँ हुआ ? कुरुक्षेत्र में जन्म और मण्डप में उसका विवाह हुआ है । वर या कन्या की माता द्वारा मिट्टी कोड़ने के पूर्व गायिका समूह मिट्टी जाग्रत होने के लिए प्रार्थना करती है और शर्त सुनाती है कि तुम्हारे बिना हमारे यहाँ शादी कैसे होगी ? इस लोकगीत में मनुष्य का मिट्टी के साथ अभेद सम्बंध स्थापित है । आखिर मनुष्य धरती पर जन्म लेता है और मरणोपरांत उसी में विलीन हो जाता है तो वह संतान परम्परा में (विवाह के समय) जीवित रहने की आनुष्ठानिक प्रक्रिया में उसे क्यों नहीं अभिमंत्रित और आमंत्रित करता ? मिट्टी के बाद उसे वन और पक्षी की स्मृति आती है। उसे भी यह पुकारता है -

कउन बन रहले रे कोइलर कउन बन जाय ?
वृन्दावन रहले रे कोइलर, कुंज वन जाय ।
अनजानो रइया दुअरिया रे कोइलर उछहल जाय ।

हे कोयल, तुम किस वन में निवास करती हो और किस वन मे जा रही हो ? किसके दरवाजे पर अह्लादित होगी । वह कहती है कि उसका निवास वृन्दावन है और वह कुंजवन में जाकर (कुंजगली में) अमुक राय के द्वार पर अह्लादित होगी। (यह कोयल कन्या का प्रतीक हो सकती है और मयके से अह्लादित होकर श्वसुराल जा रही है) यह गीत भी मृत्तिका खनन के समय ही गाया जाता है जिसमें मानवेत्तर जगत से सम्बंध स्थापित है ।

विवाह संस्कार में मण्डपाच्छादन और कलश स्थापन का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें भी प्रकृतिजगत और कृषिजगत के उपादानों का व्यवहार तथा उसका महत्व मगही लोकगीतों में अभिव्यक्त हुआ है । यह वन्य संस्कृति और कृषि संस्कृति के संस्कार जन्य दाय है जो सभ्यता-विकास के आवरण से आच्छादित दीखते हैं। सभ्यता संस्कृति की वाहिका होती है (Civilization is a vehicle of culture) अतः सभ्यता विकास के क्रम में आदिम संस्कृति अपने मूल रूप की प्रछन्न अभिव्यक्ति करती रहती है ।

विवाह के लिए आंगन में मण्डप की रचना होती है । चार या छह हरे कच्चे बाँसों को गाड़ कर ऊपर से सरकंडे या पुआल से आच्छादित कर दिया जाता है और मण्डप के नीचे मध्य में हल हरीश को उलट कर गाड़ दिया जाता है जिसके नजदीक कलश स्थापना की जाती है। इसी के नजदीक वर या कन्या पक्ष के सारे शास्त्रीय वा लोकपक्षीय वैवाहिक अनुष्ठान सम्पादित होते हैं और मंगलगीत (शास्त्रीय मंत्रों की तरह ही आस्था पूर्ण ढंग से) स्त्री कंठ की कोमल रागिनियों में प्रस्फुटित होती रहती है -

बँसवा जे डोले अकसवा, पवनवाँ बिना,
अनजानो रइया डोलथी मड़उवा पइसी अपना गोतिअवा बिना ।
बहुआरो देई डोलथी सवासिन बिना, न सोभे मड़वा बहिनियाँ बिना ।

मण्डपाच्छादन तो हो गया और लम्बे-लम्बे बाँस बिना वायु के आकाश में डोलने लगे। अमुकराय मड़वा में प्रवेशकर कहते है कि बिना गोत्र के मंडप सुशोभित नहीं होता । उनकी पत्नी कहती है कि सवासिन (नेगचारिन, सम्बंधी) और बहन के बिना मंडप नहीं शोभता । पुनः स्त्री -समूह गा उठता है -

केरे जइहें ऊरूब देसवा, केरे जइहें पूरूब देसवा,
केरे जइहें बहिनी लियावन, बहिनियाँ बिना न सोभे मड़वा ।

भाई शीघ्र बहन को लाने उसके घर जाता है जहाँ बहन अनेक बच्चों और गर्भवती रहने के कारण चलने से असमर्थता प्रकट करती है तो भाई उसके बच्चे को गोद और कंधे पर बैठाकर तथा बहन को पालकी पर बैठाकर अपने घर लाता है तब यहाँ मंडप में खुशी और उत्साह फैल जाता है । इसका वर्णन पक्षी के मुखसे निम्न लोकगीत में हो पाया है -

हरियर सुगवा रतन तोरा ठोर, किया-किया देखलें रे सुगवा अंजानो रइया मंड़वा।
चउका बइठल अनजानों रइया देखली,
अचरा पसरले बहुआरो देई के देखली,
अंगुरी धरवले अनजानों दुलहा देखली,
होमिमा करवते वराहमन देखली,
थुम्हिया गाड़ावइत ठकुराइन देखली,
आवइत जाइत सवासिन देखली,
हलचल करइत पड़ोसिन देखली ।

उपर्युक्त लोकगीतों में व्यापक परिवेश का लोकतात्विक चित्रण हुआ है। परिवार और परिवेश-पड़ोस (समाज) के क्रिया-कलापों के सम्बंधों के बहुविध चित्र उभरते दीखते हैं। इसमें दोनों प्रकार की लोकाभिव्यक्ति दीखती है (१) वास्तुपरक (२) लालित्य। लालित्य अभिव्यक्ति तो मंगल और हास परिहास पूर्ण गीत हैं और वास्तु परक अभिव्यक्ति अनुष्ठानों में प्रयुक्त भौतिक पदार्थ हैं । बढ़ई से पीढ़ा-चौकी लेना, तेली से तेल लेना, कुम्हार से कलश आदि वर्त्तन लेना, विवाह में ये सारे पदार्थ आनुष्ठानिक विधि से लिए जाते हैं और सभी अवसरों पर लोकगीत गाए जाते हैं । साथ ही ये पदार्थ निर्माणकर्त्ता को भौतिकता की पूर्ति करते हैं, उन्हें नेग- दस्तूर में वस्त्र, अन्न और पैसे भी मिलते हैं । इन सारे अनुष्ठानों के सम्पन्न करने में टुनहाई मानस (Magic Psyche) की अभिव्यक्ति होती है । साथ ही प्रहेलिका के रूप भी यत्र-तत्र दीखते हैं। ये सब आदिम लोकमानस (Primitive folk mind -pre concious psyche) के परम्परित दाय हैं ।

'हरियर सुगवा रतन तोरा ढोर' में हरे सुग्गे के लाल होट को स्मरण दिलाकर

मड़वा में देखे पदर्थों और उत्सवों का वर्णन करने के लिए कहा जाता है तो वह सब यथावत् वर्णन कर देता हैं। चौके पर बैठे पति-पत्नी और बगल में वर रूप में उनका पुत्र तथा होम-यज्ञ करते ब्राहाण को देखा, नाइन थम्भ गड़ा रही थी, नेगदारिन आ जा रही थी। टोला-पड़ोस के लोग भी उस अनुष्ठान में हलचल पैदा कर रहे थे । इसमें परिवार, पड़ोस, नेगदारिन और इत्तर वर्ण के लोगों की सहभागिता रहती है। बहुत सारे लोकगीतों में उपस्थित-अनुपस्थित विभिन्न रिश्तेदारों के नाम लेकर गीत गाए और अनुष्ठान किए जाते हैं। जिसमें नाम से नामी की उपस्थिति की कामना रहती है। गीतों में देवों या पदार्थो के नाम लेकर इन्हे स्मरण या निमंत्रण दिया जाता है और आस्था रहती है कि उनकी उपस्थिति और सुरक्षा में सारे कार्य निर्विघ्न् सम्पन्न हो जायेंगें । यह नाम से नामी को प्रभावित करने की आदिम लोकतात्विक प्रकिया है, यथा -

सुमिरहूँ सीरी भगवान हरे लाल, सुमिरहूँ सीरी भगवान हो,
पूरब में सुमिरहूँ उगत सूठरूजवा, पचिछम में चिर सुलतान हो,
उत्तर में सुमिरहूँ उतपति गंगा, दखिन सुमिरहूँ हनुमान हों,
गया में सुमिरहूँ गया गजाधर, कासी बिसेसर नाथ हो ।

फागु गीत गाने के पहले इस सुमिरनी से देवताओं का आवाहन किया जाता है। उसी प्रकार दूर दराज के देवताओं एवं तीर्थो को वैवाहिक अनुष्ठान में भाग लेने और सुरक्षा करने के लिए गीतों के माध्यम से आमंत्रित किया जाता है -

गया में नेवतब गया गजाधर, कासी के सीरी बिसुनाथ रे ललनवाँ
प्रयाग में नेवतब ओहू बेनी माधव, उड़िया में नेवतब जगरनाथ रे ललनवाँ
अजोध्या मे नेवतब राजा दसरथजी के, राम लखन दूनों भाई रे ललनवाँ
इन्द्र लोक में नेवतब ओहू इनरजी, धरती नेवतब सेसनाग रे ललनवाँ,
गया से अयलन गया गजाधर, अरे कासी से अयलन विसुनाथ रे ललनवाँ,
अजोध्या से अयलन राजा दसरथ जी , धरती से अयलन सेस नाग रे ललनवाँ।

इस गीत में विभिन्न नामधारी देवताओं को उनके निवास स्थान का नाम लेते हुए आमंत्रित किया जाता है । नाम से नामी को अभिमंत्रित करना टुनहाई मानस की अभिव्यक्ति है । इससे नाम-नामी की अभिन्नता का पोषण लेता है। मंत्रों में भी शब्दों चारणमात्र से उसके अर्थों की उपस्थिति अनुभूत की जाती हैं । विवाह में जीवित व्यक्ति के ही नहीं बल्कि पूर्वजों के नाम लेकर गीत गाए जाते हैं । इसमें यही भाव वर्त्तमान

रहता है कि नाम लेने मात्र से उस व्यक्ति का सहयोग मिल जायगा। प्रायः लोकगीतों में अंगांगीभाव की अभिव्यक्ति मिलती है ।

वैवाहिक लोकगीतों में प्रहेलिका तत्व के भी दर्शन यत्र-तत्र होते है। मड़वा में बहन अपने भाई से नेग मांगती है -

हमरा के दिहँऽ चुनरिया, बालक गले हँसुली,
प्रभुजी के चढ़ने को घोड़वा, लहसी घरवा जायब,
कहाँ हम पायब चुनरिया, बालक गले हँसुली
कहाँ हम पायब चढ़ने को घोड़वा, लहसी घरवा जायब ।

चुनरी, हँसुली और घोड़ नहीं मिलने पर बहन-भानजा उदास लौट रहा है तो उसका पति नौकरी कर द्रव्य कमाने और सारे सामान खरीद लाने की प्रतिज्ञा के साथ पत्नी को नैहर त्याग देने की बात कहता है तो बहन का नैहर प्रेम जाग उठता है- "बजर पड़े चढ़ने को घोड़वा नइहरवा न बिसारब" यहाँ पहेली का समाधान हो जाता है। ऐसे अनेक अवसर पर नेगचारिन वर के पिता से नेग के लिए झगड़ती है और उसकी न्यूनाधिक प्राप्ति के बाद वातावरण हर्षोत्फुल्ल हो जाता है। मंगल और सुखांतता लोक प्रवृत्ति की प्रमुख कामना है। सारे अनुष्ठान मांगलिक वातावरण में किए जाते हैं ताकि सम्पूर्ण जीवन नव दम्पति के लिए मंगलमय हो, मंगलमय वातावरण में किए गए कार्य का परिणाम भी मंगलमय होता है। इसीलिए यात्रा करने के पूर्व शकुन -अपशकुन पर विचार किया जाता है । लोकप्रवृत्ति में यही लोकास्था वर्तमान रहती है जिसका अधिष्ठान लोकमानस है।

अब विवाह की अन्य क्रियाओं में आनुष्ठानिक विचारणा (Ritual thinking) की अभिव्यक्ति और लोकजीवन के विविध सम्बंधों की परतों पर विचार करेंगें ।

आनुष्ठानिक क्रियाएँ एवं लोकजीवन में नृतात्विक सम्बंध

भारतीय लोकजीवन विविध अनुष्ठानों का आकर है। जीवनपर्यंत दर्जनों संस्कार सम्पन्न होते समय विविध प्रकार की आनुष्ठानिक क्रियाएँ तो होती ही है, पर्व -त्योहार व्यापार, गृहनिर्माण या किसी प्रकार के संस्कार में तो एक लम्बे अंतराल तक आनुष्ठानिक क्रियाएँ चलती रहती हैं। विवाह के सगुन से लेकर बारात समाप्ति तक ही नहीं बल्कि उसके बाद चार दिनों (चौठारी तक) तक दर्जनों तरह के अनुष्ठान सम्पन्न होते रहते हैं। इसमें एक पक्ष से लेकर एक माह तक का समय लगता है। विवाह में शास्त्रोक्त और लौकिक-दोनो प्रकार के अनुष्ठान होते हैं जिनमें पुरूष और स्त्रियों का सहयोग रहता है। लोकरीति सम्मत क्रियाएँ प्रायः स्त्रियों के द्वारा सम्पन्न होती हैं लेकिन पुरूष वर्जित नहीं हैं। हाँ, आनुष्ठानिक लोकगीतों का गायन स्त्रियाँ ही करती हैं, लोकगीत के बिना परम्परागत विवाह सम्पन्न ही नहीं हो सकता। लोकगीत गायिका प्रायः नेगवारिन, सवासिन या पड़ोसिन होती हैं। इन गीतों ओर आनुशंगिक क्रियाओं में लोकजीवन का वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक सम्बंधों की परतें खुलती और एकमय होती जाती हैं (Retual performances get together with individual and social relations lair for lair) यथा, मंडपाच्छादन के समय बाँस गाड़ते पुरूष की पीठ को स्त्रियाँ अमपन और सिन्दुर लगाकर पूजती है। पुनः उसमें कलश स्थापनार्थ कुम्हइन से कलश लेते समय उसका नाम लेकर हास परिहासपूर्ण गाली गायी जाती है। कलश पर चौमक (चतुर्मुखी दीपक) जलाने के लिए तेल लेते समय घर की सवासिने तेलिन के साथ अपनत्व स्थापित कर गालीगाती हैं। उसी प्रकार बढ़ई से चौकी पीढ़ा लेते समय भी स्त्री कंठ से गाली गीत निकलते रहते हैं। इतना ही क्यों ढोल बजाना शुरू करने के पूर्व चमार के ढोल की पूजा करनी पड़ती है और उसी तन्मयता के साथ उससे सम्बंध स्थापित कर गाली गीत गाया जाता है। स्मरणीय है कि सम्बंधित व्यक्ति को परिवार के भाई -भाभी, चाचा-चाची, दादा-दादी की तरह मानकर उन्हे गाली दिया जाता है और अपनत्व स्थापित किया जाता है। ये सब वास्तु परक कर्मजीवी वर्ग के साथ अपने परिवार की तरह ही बर्ताव किया जाता है। चौठारी के बाद पैरपूजी के समय अपने परिवार के सदस्य ब्राह्मण या वर के पिता, दादा को पैर पूजाते हैं तब जिस भाव विह्वलता पूर्ण ढंग से गीत गाया जाता है उसी भाव विह्वलता पूर्ण ढंग से तथाकथित विजातीय व्यक्ति से सम्बंधित अनुष्ठानों के समय भी गाया जाता हैं, जैसे वर के नख टूंगाते समय नाइन के प्रति निम्न गीत के भावों को अनुभूत किया जा सकता है =

नहटुगूँ-नहटुगूँ नाउन, अंगुरी जनु भांगहूँ,
देववऽ में बरवा के बाबूजी, अंगुरी जनु भांगहूँ,
देववऽ में बरवा के चाचा, अंगुरी जनु भांगहूँ,
नहटुगूँ-नहटुगूँ नाउन, अंगुरी जनु भांगहूँ ।

इसी भाव संदर्भित गालीगीत दरवाजा लगते समय दुलहा को भी दिया जाता है।

मइया लेले अइहें दुलहा, बाबुजी लेले जइहें रे,
दूनों हाथे फूल गेंदा लोकइत जइहें रे,
बहिनी लेले अइहें दुलहा, बहनोइया लेले जइहें रे, दूनों ...।
चाची लेले अइहे दुलहा चाचा लेले जइहे रे, दूनो हाथे फूल गेंदा.....।

उपर्युक्त दोनो लोकगीतों का भाव-सौन्दर्य समान है अर्थात् विवाहानुष्ठान में नाइन और वर का समान समाज-स्तर और भावभूमि है । दोनो को एक ही प्रकार के गाली गीतों से स्वागत और सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में सामाजिक -पारिवारिक सम्बंधों की परतें खुलती हैं और एक दूसरे में समाहित होती जाती हैं । लोकजीवन का इस भावभूमि पर साधारणीकरण हो जाता है । सारे वैवाहिक अनुष्ठानों में मनुष्य और प्राणियों के साथ ही नहीं बल्कि समस्त जड़-चेतन के साथ साधारणीकरण होता है । सभी एक ही भावभूमि पर प्रतिष्ठित हो जाते हैं । भारतीय संस्कृति का यही मूलतत्व सर्वव्याप्त है जिसके स्पंदित होते ही सारा भारतीय जन जीवन झंकृत हो उठता हैं ।[1]

मगध प्रदेश में पैरपूजी (मण्डप में बैठकर माता-पिता द्वारा) के समय निम्न गीत विचरणीय है-

रुनूँ, झुनूँ रुनूँ-झुनूँ बाजन बाजे अंगना,
बाजन के आवाज सुनके दादा अयलन अंगना,
दादा के पैर पूजा देहूँ ललना ।
चाचा के पैर पूजा देहँ ललना । फूफा के पैर पूजा देहूँ ललना ।

इस आनुष्ठानिक क्रिया के समय मैने मगध के कई गाँवों मे देखा कि पैर पूजाने बाला व्यक्ति चाहे किसी वर्ग या वर्ण का हो, उसे रिश्ते के रूप में ही गीत में सम्बोधित किया जाता है। वह मंडप में रखे पीढ़ा पर बैठ जाता है जहाँ वर के साथ बैठे उसके माता-पिता उसको धोती-साड़ी और पैसे अर्पित करते हैं। यदि वह व्यक्ति वर के पिता से उम्र में छोटा है तो वस्त्रादि उसके हाथ मे दिया जाता है, यदि वह उम्र और रिश्ता

१. दे. मगध की लोककथाएँ : अनुशीलन खण्ड की अंतिम पँक्तियाँ, पृष्ठ-१३७।

में वड़ा है तो वर का पिता विधिवत उसके पैर पर वस्त्रादि रखकर उसकी पूजा करते हैं। उस वक्त केवल उम्र और रिश्ता के अतिरिक्त वर्ग, वर्ण या जाति का ख्याल नहीं किया जाता । यही लोकगीतों की साधारणीकृत भावभूमि है। यहाँ मनुष्य केवल मानवीय रिश्तों से ही पुकारा जाता है। आज भी भारत के गाँवों में सभी जाति के लोग एक दूसरे को रिश्ते से ही सम्बोधित करते हैं , भले ही आज संस्कृति के विषदंत से हमारी संस्कृति घायल होने लगी है। इसका निदान भारत के लोकगीतों लोकवार्त्ताओं और लोक साहित्य में मिल सकता है।

मंडप में वर या कन्या को हल्दी चढ़ाते समय के लोकगीतों में तो यह साधारणीकरण तथा सामाजिक सम्बंधों की परतों में और तादात्म्य स्थापित हो जाता है।

हरदी जे पीसे जनकदुलारी, नेगो में मांगे हजार, हरदी मंगल कें।
पहिला हरदिया ब्राहमन चढ़ावे, तब सकल परिवार, हरदी मंगल के।
पहिला हरदिया दादा चढ़ावे, नेगों में देलन हजार, हरदी मंगल के।

इसी प्रकार सभी वर्णो के लोगों को रिश्ते से ही सम्बोधित कर यह आनुष्टानिक गीत गाया जाता है। हल्दी चढ़ानेवाली सभी वर्ण या वय के लोग होते हैं जिन्हे रिश्ते से ही सम्बोधित किया जाता है। नृतात्विक विकास क्रम में जो रिश्ते निर्धारित होते गए, आज भी वह लोकगीत में परम्परा से चले आ रहे हैं। इससे यह प्रमाणित होता है कि एक ही प्रजाति से विकसित मानवमात्र कृत्रिम रूप से विभाजित होते गया। अतः लोकगीतों का नृतात्विक अध्ययन मानव विकास प्रक्रिया की परतें खोलने में एक उपादान के रूप में कार्य कर सकता है, ऐसी मेरी धारणा है। बहुत सारे लोकगीत ऐसे तथ्यों से भरे-पूरे मिलते हैं ।

सभ्यता -विकास क्रम में लोकगीत अपने काल के कार्य संस्कृति, लोकरीति व्यवहार आदि कैसे ग्रहण कर सामाजिक सम्बंधों के साथ संश्लिशट हो जाते है, निम्न लोकगीत में देखा जा सकता है-

आठ ही काठ केरा मलवा रे मलवा, ओही मलवे में नरायन तेल, ओही मलवे।
रचियक हथवा पसारऽ अनजानो दुलहा लाई देबो ये सुहाग के तेल, लाई देबों।
कइसे में हथवा पसारूँ ये सुगई मोरो हाथे ये कलम मसीहान, मोरो हाथे।
कलम दोअतिया प्रभु धरूँ सिरहनवाँ, हमें तोही ये खेलब जुगवासार, हमे तोही।
सुनी-जानी पइहन बाबूजी अनजानों बाबू जी, ओही बाबूजी घरवा दीहे बनवास, ओही बाबूजी।
सुने देहूँ सुने देहूँ बाबूजी अनजानो बाबूजी, ओही बाबूजी घरवा दीहे मोरावास, ओही बाबूजी।

आठपहला काष्ठ के पात्र में नारायण तैल है जिसे लगाने के लिए नवागत पत्नी पति को हाथ फैलाने कहती है। पति कहता है कि मेरे हाथ में कलम-दावात है। पत्नी कहती है कि कलम-दावत सिरहाने रखदें और हम-तुम जुआ खेलें। पति कहता है कि बात पिताजी सुनेगें तो हमलोगों को वनवास दे देंगे। पत्नी कहती है कि वही पिताजी हमलोगों को पुनः गृहवास भी देंगें।

काठ का मलवा प्रारम्भिक सभ्यता विकास की देन, नारायण तैल आयुर्वेद रचना के बाद का मिश्रित तेल है। कलम-दावात लिपि-विकास काल के बाद की कार्य पद्धति है। जुआ महाभारत काल से थोड़े पूर्व का व्यसन है जो बाद में दुर्व्यसन का रूप धारणकर पतन का कारण समझा जाने लगा। जुआ खेलने वालों को सजा दी जाने लगी। घर का अभिभावक जुआड़ी को वनवास देने लगा परंतु पुत्र-मोहवश दिया गया वनवास वधू के आगमन पर निरस्त कर दिया जाने लगा। गीत के ये सारे कार्य-व्यापार सभ्यता -विकास के क्रमिक स्वरूप उपस्थि करते हैं और दाम्पत्य जीवन में पारिवारिक सौहार्द्र के लिए घर के अभिभावक के आदेश मानने को विवश करते हैं ।

प्रायः सभी प्रकार के लोकगीतों में पारिवारिक और सामाजिक सम्बंध अतिव्यापक रूप में चित्रित होते हैं जिनमें लोकसंस्कृति के तत्व भी उभरते रहते हैं, प्रकृति के उपादान भी आते रहते हैं, घटनाएँ भी घटित होती रहती है। न जाने लोकगीत अपने अंतराल में कितने सम्बंधों को कितने प्रकार से संजोय रहते हैं । यहाँ एक उदाहरण देकर इस प्रकरण को विराम दिया जाता है-

कउन वन उपजे हे नरियर, कउन बन उपजे अनार हे ?
ललना कउन वन उपजे गुलाब, तऽ चुनरी रंगायब हे ।
बाबा वन उपजऽ हे नरियर, भइया वन उपजे अनार हे,
सामी वन उपजऽ हे गुलाब, तऽ चुनरी रंगायब हे ।
सेई चुनरी पेन्हथिन सुगई, दुलरइतिन सुगई हे,
ललना पेन्हिए चलले पानी भरे ,चुकवन पानी भरे हैं ।
बाट जे पूछऽ हे बटोहिया, तऽ कुआँ पनिहारिन है,
ललना केकर हहूँ तु हूँ वारी विटिया, कउन भइया के दुलारी हे ।
ललना कउन पुरूसवा के नारी , तऽ चुकवन भरे पानी है,
बाबा के हम हीआ वारी, तऽ अपन भाई के दुलारी हे ।
ललना सामी जी के सुगई सुमारी, चुकवन पानी भरे हे ।

मचिया बइठल तुहूँ सासु बढ़ैतिन, सुनहूँ बचन मोरा है ।
ललना पानी भरत मिलल एक रजवा, तऽ मुहवाँ निरेखई है ।
ललना बोले लगल बोलिया कुबोल, तऽ करे लगल हाँसी है,
कइसन हई उजे रजवा, कउन रंग हाथी है ?
ललना कइसन हई महाउत, हमें समझावहूँ है,
ललना सुनर बदन हई रजवा, जे बदन निरेखई है ।
हँसी समझावथी सासुजी कि तुहूँ बहू बेदिल है,
ललना ओही राजा हई मोर पुतवा लवटले परदेसनि है ।
ललना दुअरे लगल हई हथिया तोहर प्रभु आयल है ।
साज हूँ मंगलचार सखिन मिलिजुली सोहर गावहूँ है ।

प्रस्तुत लोकगीत में नारियल पिता के वन में और अनार भाई के बाग में है तथा गुलाब-पुष्प उसके पति के बाग में है जिससे नायिका चुनरी रंगाती है। उसी चुनरी को पहन कर सुकी (गर्भिणी नायिका) चुक्के से पानी भरने पनघट पर जाती है जहाँ उसका विदेशी पति आ जाता हैं । दोनो अज्ञात हैं। अतः बटोही रूपी पति पनिहारिन (सुकी) से उसका परिचय पूछता है तो वह अपने पिता और भाई के दुलार का हवाला देती है और घर आकर अपनी सास से बटोही का कथन कहती है। इसी बीच वह बटोही के हाथी और महावत के बारे में भी पूछती हैं इस पर सास बहू को हृदयहीन बताकर सारा रहस्य को उद्घाटन करती है ।

इस एक गीत में प्रकृति के नारियल, अनार और गुलाब का चित्र है, पशु में हाथी और उसके महावत का वर्णन है। परिवार में मायके पक्ष के पिता और भाई का तथा श्वसुर के सास और पति का जिक्र हुआ हैं । पनघट का चित्र भी है, पनिहारिन और बटोही भी हैं। चुक्के जैसा छोटा पात्र से पानी भरना गर्भिणी की कमजोरी का परिचायक है। कहने का तत्पर्य कि गीत पारिवारिक, सामाजिक और प्राकृतिक तत्वों का अलबम है। इन सारे सम्बंधों को लोकगीत अपने लघु कलेवर में समेटे रहता है। इनमें लोक जीवन, लोकप्रवृत्ति और लोकसंस्कृति के तत्व तो प्रधान हैं ही साथ ही शिष्ट संस्कृति के तत्व भी दृष्टिगोचर होते हैं । हाथी, महावत, राजा तथा गुलाब के फूल-रस से रंगी गामंती सभ्यता और शिष्ट संस्कृति के उपादान हैं । गीत में सम्बंधों के कितना व्यापक चित्र फलक प्रस्तुत है । ऐसे सम्बंधों का पूर्ण या खण्डित चित्र प्रायः मगध के सभी प्रकार के लोकगीतों में मिल जायगा ।

लोकगीतों के अभिप्राय या रूढ़तंतु

अभीतक लोक साहित्य के अध्ययन में अभिप्राय या रूढ़ तंतु का विवेचन केवल लोककथाओं के अंतर्गत ही हो पाया है। विश्व लोककथा साहित्य में स्टिथ थाम्सन (अमरीका के इडियाना वि.वि.ने -छह भागों में Motif Index प्रकाशित करवाया हैं) ने अभिप्रायों का बड़ा विस्तृत अध्ययन किया है। भारत में भी लोककथाओं के अभिप्रायों का विश्लेषण-विवेचन हुआ हैं। मैंने भी अपनी पुस्तक -"मगध की लोक कथाएँ : अनुशीलन एवं संचयन" में अभिप्राय का विवेचन किया है परंतु लोकगीतों में अभिप्राय अध्ययन प्रायः नही हो पाया है। यहाँ मैंने मगही लोकगीतों में निहित सूक्ष्म अभिप्रायों का अन्वेषण-विश्लेषण करने का प्रयास किया है । लोक साहित्य में अभिप्राय एक ऐसा तत्व है, रूढ़तंतु है जिसकी अवस्थिति के कारण ही कोई साहित्यिक विधा लोक साहित्य बन पाती हैं। लोकवार्त्ता के सभी अंगों में यह तत्व (अभिप्राय) अवश्य ही किसी न किसी रूप में वर्त्तमान रहता है। यहाँ तक कि पहेली, दस कूटक और लोकनाट्य में भी यह तत्व सूक्ष्म रूप से वर्त्तमान रहता है। लोकगाथा में तो अभिप्राय सर्वत्र दीखता है। उस प्रसंग में उसकी विवेचना यहाँ अनपेक्षित है। अतः मैं यहाँ केवल लोकगीतों में निहित अभिप्राय की ओर संकेत करना चाहता हूँ।

लोक साहित्य में अभिप्राय वह तत्व है जो कथानक निर्माण का लघुतम रूप हो और उसमें परम्पराजन्यभाव वर्त्तमान हो। उसमें असाधारणता और आवृति मूलकता की क्षमता हो । उसका सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक स्वरूप भी हो।[1] इसे रूढ़तंतु और कलातंतु भी कहा गया है। उदाहरणार्थ लोकगीतों में आनेवाला 'लामीकेश' सुनहलाकेश, सोव्रन कीवाड़, जोग-टोना, जोगवेसाहना, नोक झोंक, विशिष्ट स्त्रीचरित्र, वृक्षपूजा के विविध रूप आदि गीत निर्माण के अति लघुरूप हैं जिसे अभिप्राय कहा जा सकता है। नायिका के अति लम्बे केश या सुनहेल केश देखकर या सुनकर गीत नायक मोहित हो जाता है और उसे प्राप्त करना चाहता है। फिर गीत का विस्तार होने लगता है । केश एक साधारण तत्व होता हुआ भी असाधारण भाव गर्भित है। इसी लम्बी केश को देखकर राजा नायिका पर विमोहित होता है और परस्त्री को प्राप्त करने का कुचक्र रचता है। लोकगीतों में लोकप्रवृति की प्रधानता रहती है जिसका अधिष्ठान लोकमानस रहता हैं। अभिप्राय में लोकमानसीय लोकप्रवृति अवश्य वर्त्तमान रहती है। लामीकेश, सुनहले केश, चमकते केश का वर्णन लोकगीतों में मिलता है। अतः लोकगीत का यह एक सामान्य

१. दे. मगध की लोककथाएँ : अनुशीलन खण्ड, पृष्ठ-५६

नारी को जब प्रिय मिलन होता है तो वह गा उठती है -

जेठ मे सखि भेट भेलन पूजी गेलो मन केरा आस हे
बारह मास सखि बीतल पिया बिनु, सबके पूजे अइसन आस हे ।

लोकगीत की यही मंगल कामना- 'सबके पूजे अइसन आस हे' उसका शाश्वत स्वर है- भारतीय संस्कृति के प्राण । गीतों के ऐसे सामान्य भाव संवलित दृष्टांतों की अधिक प्रस्तुति अनपेक्षित है । ऐसी भावाभिव्यक्ति से हमारा सम्पूर्ण लोक साहित्य-समुद्र लबालब भरा है । इन में विशिष्ट अभिप्रायों को सर्वत्र देखा जा सकता है ।

अभिप्राय -सोना

अतिप्राचीन काल से मानव जीवन में सोना समृद्धि का प्रतीक माना गया है। यही कारण है कि मानवीय आकाँक्षा के केन्द्रविन्दु में कामिनी और कंचन सदा वर्त्तमान रही है और विश्व के सारे युद्ध में इन में से किसी एक या दोनों की अवस्थिति रही हैं । इनकी प्राप्ति के लिए ही प्रायः सारे कार्य कलाप सम्पादित होते देखे जाते रहे हैं। अतः लोकजीवन में भी इनके प्रति व्यापक आकर्षण दीखता है । यहीं कारण है कि लोकगीतों में कामनी कांचन का सर्वाधिक वर्णन मिलता है। प्रस्तुत प्रसंग में लोकगीतों में सोना के चित्रण के विविधि रूपों का वर्णन देखेंगे जो अभिप्राय के रूप में चित्रित हुए हैं।

मगध के लोकगीतों में सोने के गेडुवा गंगाजल पानी, सोने के थारी मे जेवना परोसल, सोने केरा एहर रूपे केरा देहर, सोने मढ़ैबो दूनो चोंच, सोने खड़उवाँ चढ़ि आयों सोखा देवा, हाथे सुबरन केरा साटी हे, सोने के उजे मंठ महादे रूपे छाने लगल हे केबाड़, हीरा रतन जड़ी है, मोतियन के लरिया लगल हे, सोने के चिरइयाँ सोन बोली बोले, सोने के कंघी रूपा लगल हे साल आदि; स्वर्ण, चाँदी ,रूपा, हीरा, मोती, जवाहरात आदि समृद्धि -लिप्सा और भौतिकता के प्रतीकार्थ में वर्णित हुआ है । लोकगीतों के अतिदीन परिवार में भी स्वर्णवाचक शब्दों का सर्वत्र व्यवहार दीखता है । यह आदिम मानव की संग्रही प्रवृति का द्योतक प्रतीत होता है । लोकजीवन में दैन्य भाव की अभिव्यक्ति प्रायः गीतों में नगन्य रूप में मिलती हैं। वहाँ दूध की नदियाँ बहती है, घी के दीपक जलते हैं, अन्न के भण्डार भरे रहते हैं। गाँव की बाँसवाड़ी में गौरैये चहकते हैं, कौवे को दूध-भात ही नहीं मिलता, उसकी चोंच को सोना से मढ़ा जाता है, अमराई में किशोरियों के साथ कोयल गाती है। चंदन के वृक्ष के नीचे दुल्हे खड़े होते है, चंदन के पीढ़े पर अनुष्ठान होते हैं, नीम की शीतलता में देवी गाती है, पीपल वास-देव

कहलाता है, खेत-खलिहान अन्न भण्डार से भरे रहते है, कोठी भरी-पूरी रहती है। सारांश कि लोकजीवन मे प्रचलित लोककगीत अभाव को वहुत कम अभिव्यक्त करता है। हाँ, पारिवारिक नोक-झोंक एवं आनुष्ठानिक क्रियाओं में यदा-कदा अभाव एवं भौतिक समृद्धि की कमी अभिव्यक्त होती है। यत्र-तत्र कथागीतों एवं पेशगीतों में यह अपवाद मिलता है । वस्तुतः लोकगीत मंगलकामना एवं मंगल की अभिव्यक्ति लेकर संवेग के धरातल पर अवतीर्ण होते हैं ।

लोकगीत यथार्थ से अधिक आदर्श को लेकर चलते हैं। इसीलिए स्वर्ण वाचक शब्दों का व्यवहार सदा दृष्टिगोचर होता है। लोकजीवन में बारात को खाने-पीने के लिए जिन प्रसाधनों एवं भोज्य-पदार्थो का उपयोग होता है वह द्रष्टव्य है -

सोने के गेड़ुवा गंगाजल पानी, सब साजन पैर पखारूँ जी,
पैर पखारूँ तिरलोक कन्हैया, सब साजन बैठूँ जाँघ जोरी जी,
पतल परीय गेलई, भात परय गेलई, मूंग रहर के दाल जी,
पान कतरी उजे भाजी परये गेलई, सोरही गाय के घीव जी,

सोने के पात्र में गंगाजल रखा है। सभी सज्जन पैर धोकर जेवनार के लिए बैठ गए हैं, वे त्रिलोकी नाथ श्री कृष्ण की तरह पूज्य हैं। सभी लोग जाँघ जोड़कर, साथ सटकर (सहभुक्तं, सहनौभुनक्तं) भोजन ग्रहणकर रहे हैं । लोकजीवन के लोकगीत में समृद्धि और सौहार्द्र का अनूठा उदाहरण मिलता है, परम्परा से एक सूत्रात्मक संस्कृति में आवद्ध लोकजीवन के ये अभिप्राय आज भी हमें कुछ संदेश देते हैं, आवश्यकता है इसकी अन्तर्ध्वनि सुनने की ।

कुछ और लोकगीतों को देखाजाय। कुंजगली, गाँव की संकीर्णगली में भी सोने के महल में रूपे का दरवाजा लगा है जिसमें जीरे की तरह महीन छंद (कलायुक्त) कीवाड़ लगी हैं। महादेव का मठ तो सोने का बना ही है, उसमें चाँदी की कीवाड़ लगी है, सुना जाय

(१) *कथी केरा एहर कथी केरा देहर, कथी छंदे लगल हे केवाड, कुंज गलिन में।*
सोने केरा एहर रूपे केरा देहर, जीरवे छंदे लगल हे केबाड़, कुंज गलिन में।।

(२) *कथी नीके उजे मंठ महादे, कथी छाने लगले केवाड़,कुंज भवन में ।*
सोने के उजे मंठ महादे, रूपे छाने लगले केवाड़, कुंज भवन में ।

महादेव सोने के मठ में रहते हैं तो भवानी माता सोने की कंघी से केश झारती है। जिसका साल चाँदी की तरह चमकता है

सोने के कंगही भवानी मइया, रूपे लागल हो साल,
मचिया बइठल सातो बहिनी झारे लामी हो केस ।

लोकगीतों में सप्तमातृकाएँ ही स्वर्ण कंघी से लम्वे केश नहीं झारती बल्कि ग्राम-महिलाएँ भी सोने की कंघी से केश झारती है -

खोइछवा में लेले चम्पिया जीरहुल मटिया हथवा में सोने के कंगहिया हे नऽ ।
सब सखिया मिली घर चली अयली, असगर चंपिया केसिया झारे हे नऽ ।।

लोकगीतों में देव-दनुज, जड़-चेतन, ऊचँ-नीच के बीच समृद्धि का विभाजन नहीं । यहाँ सभी वर्ग के यहाँ गाये जाने वाले गीत समान भाव की अभिव्यक्ति प्रायः करते हैं । लोकगीत के खड़ाऊँ और उसकी खूँटी भी सोने-चाँदी की बनी होती है- "सोने खड़ाऊँ रूपे केरा खूँटी हे, गोड़वा धोवऽ न रामजी देखब भर नजरी हे।" इसी प्रकार वस्त्राभूषण में "हीरा रतन जड़ल हे, मोतियन के कलिया लगल हे।" के साथ ही "सोने के चिरइयाँ सोन बोली बोले" भी ऐसे ही अभिप्राय के अंतर्गत आता है। लोकजीवन के मनुष्य-पात्र ही नहीं बल्कि मानवेत्तर पात्र भी स्वर्ण से परिपूर्ण वर्णित मिलते हैं । समृद्धि का प्रतीक सोना अभावग्रस्त लोकजीवन में काल्पनिक संतोष की पूर्ति करता हुआ भी दृष्टिगोचर होता है फिर भी सोना लोकगीतों का अतिव्यापक अभिप्राय है, आदिम संग्रही मनोवृत्ति का परिचायक ।

लोकगीतों में प्रकृति के स्वरूप एवं सम्बंध

इस धराधाम पर मानव ने जब से अपनी प्रथम आँखें खोली, उसे सर्वत्र प्रकृति के दर्शन हुए। प्रकृति के बीच जीवन यापना, प्रकृति के प्रभाव के अंदर उसका जीवन मरण होता। वह कभी प्रकृति की कोमलता से आह्लादित होता तो उसकी प्रशंसा में गा उठता और उसकी क्रूरता से भयभीत होता तो उससे बचने का अनुष्ठान करता। इस प्रकार आदिमकाल से ही प्रकृति उसके दुख-सुख की सहचरी बनकर आई। यही आदिम सहचरी प्रकृति लोकगीतों, गाथाओं में परम्परा से अभिव्यक्ति पाती रही है। शिष्ट साहित्य भी लोकाभिव्यक्ति को ग्रहण करते रहा है। वैदिक संहिताओं में प्रकृति के विविध रूपों का आत्मपरक वर्णन मिलता है। उनका वर्णन प्राकृतिक तत्वों में देवत्व के आरोप के साथ मिलता हैं । उसकी अराधना और अनुष्टान में वेदों की सहस्त्रों ऋचाएँ लिखी गई। अथर्ववेद तो प्रकृति के लोकतात्विक वर्णन से स्मपृक्त है। जड़ी-बूटी, वन-पर्वत ही नहीं बल्कि दिवा-रात्रि, नक्षत्र, चन्द, वायु, सूर्य-समुद्र आदि को आत्मचेतना से पूर्ण, विशिष्ट शक्ति एवं आकृति प्रधान मानवों की तरह सारे कार्य सम्पादन करने वालों के रूप में वर्णन किया गया है। इसी प्रकार लोकगीतों में भी प्रकृति के उक्त तत्वों का विशेष स्वरूप मान्य है।

मूसलाधार वृष्टि और वज्रपात देखकर आदिम मानव और लोकमानस समझता है कि वर्षा देव (इन्द्र) के कोप के कारण यह उत्पात हो रहा है। आँधी-तूफान का कारण पवनदेव का प्रकोप है। इसी प्रकार अकाल महामारी आदि सारे उत्पात प्रकृति देव के अप्रसन्न होने से ही होते हैं । अतः प्रकृति देव को प्रसन्न करने के लिए आदिमकाल से लोकजीवन अनुष्ठान एवं गायन करते आया है। नदी-समुद्र की पूजा करना, पीपल तले शनिवार को दीप जलाना, बटवृक्ष की पूजा एवं पीपल में मृतात्मा की घंटिका टांगना आदि प्रकृति के साहचर्य एवं उसमें आत्मारोपन का ही प्रभाव है। आज भी मगही लोकगीतों में प्रकृति पूजा एवं उसके विविध स्वरूपों एवं उसके साथ मानवीय सम्बंधों का वर्णन मिलता है । वर्षा नहीं होने पर इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए मगध में स्त्रियों द्वारा रात्रि में गीत गाकर अनुष्ठान किया जाता है।

आहर सूखि गेलई, पोखर सूखि गेलई, सूखि गेलई भइयाजी के खेत,
भइयाजी के खेतवा में पपरी परीये गेलई, अब इन्दर होबऽ न सहाय ?

वर्षा नहीं होने के कारण ताल-तलैया, आहर -पोखर सभी सूख गए। खेत मे पानी नहीं रहने से उसकी मिट्टी के ऊपर पपड़ी पड़ गई। फसल कैसे होगी ? अब तो वर्षा देव-इन्द्र की अराधना-उपासना के अतिरिक्त कोई उपाय रह नहीं गया। अतः

लोकजीवन की महिलाएँ रात्रि के अंधकार में घर से निकलकर गाँव से बाहर खेत मे जाकर इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए अनुष्टान और गायन करती हैं। धरती की पूजा कर स्त्रियाँ हल जोतने का अभिनय करती हैं और वर्षागीत गाती हैं। कहीं-कहीं नग्न होकर स्त्रियाँ रात्रि के अंधकार में हल जोतती हैं जिसमें बैल के रूप मे कंधें पर जुए रखे स्त्रियाँ ही हल को खीचती हैं। शेष खड़ी औरतें लोकगीत गाती हैं। उस समय के गाए जाने वाले मगही गीतों के एक उदाहरण द्रष्टव्य है जिससे पता चलता है कि मनुष्य को प्रकृति और प्रकृति-देव पर कितनी आस्था और विश्वास है । निम्नगीत में अपनी स्थिति का परिचय दिया गया है

बेंगवा जे रोवऽ हे बेंगुचिया के कोरवा हे नऽ, दइया पानी बिनु परे हाहाकरवा हे नऽ,
अंजानो बाबू रोबथी अपन मउगी के कोरवा हे नऽ, दइया पानी बिनु मरऽहे गजिनवाँ हे नऽ ।

मुस्लिम संस्कृति में भी स्त्रियाँ खुदा से जल की जाँचना करती है -

अच्छा-अच्छा टीकवा बीबी मन भावे हे, बइठी जंगल में खोदा से पनियाँ मांगे हे ।
अच्छा-अच्छा चुड़िया बीबी मन भावे हे, बइठी जंगल में खोदा से पनिया मांगे हे ।

अथर्ववेद में जल को अमृत और औषधि कहा गया है - "अपस्वंतरऽमृतं अप्सुभेषजम्" । इस अमृत जल के अभाव में वनस्पति और फसल कैसे सम्भव है ? अतः लोक गायिका जलामृत के लिए सभी देवों का आवाहन करती है ।

नन्हे-नन्हे धनवा के चुरवा कुटवली, ऊपरे सोरहिया गाय के दुधवा हे नऽ,
हाली-हाली जेवहूँ देवा सूरज देवा, बादल लगल हे गम्भीर से हेनऽ ।

इसी प्रकार सभी प्रकृति देवों के नाम लेकर उन्हें आवाहन किया जाता है और स्त्रियाँ आशान्वित रहती हैं कि घनघोर बादल उमड़े चले आ रहें हैं, वर्षा होने ही वाली है। उन्हे पूर्ण विश्वास है कि मदमस्त हाथी की तरह बादल गरज रहे हैं और शीघ्र ही हमारे गाँव में वर्षा होगी -

"कहवाँ में गरजले मयगर हथिया, कहवाँ बरसे इनर देवा हे नऽ,
गया में गरजले मयगर हथिया, बेलखरा में बरसे इनर देवा हे नऽ।

आशा और आस्था से पूर्ण स्त्रियाँ गा उठती हैं कि बूँदा-बाँदी प्रारम्भ हो गई है, देवी माँ और छतीस प्रकार के देवों के वस्त्राभूषण भींगने लगे।

नन्हे-नन्हे बूँदवा वरीस हई गे माई, देवी माई के चुनरी भिंजतु है गे माई।
नन्हे-नन्हे बूँदवा वरीस हई गे माई, छतीसों देवा के चुनरी भिंजतु है गे माई।

और यहीं नन्ही--नन्ही बूँदे, मूसलाधार में बदल गई। देवी माँ अपने स्थान छोड़कर सुरक्षा के लिए अन्यत्र जाने लगी । अमुक गृहस्थ अपनी पत्नी को घर पर छोड़कर खेती की ओर चला। क्यो न जाये ? सूखा के बाद मूसलाधार वृष्टि जो होने लगी है -

साँप छोड़ले साँप के चुल गंगा मइया छोड़ले अरार,
देवी मइया छोड़थी अपन चौरिया, बरसे मूसरा के धार,
अंजानों बाबू छोड़थी अपन जोरूआ, बर से मूसरा के धार।

प्रकृति और मानव का सम्वंध कितना अन्योन्याश्रित है । महाभारत में वृक्ष और पुत्र में समानता दिखलाई गई है। पुत्र की तरह वृक्ष भी परलोक भेजने में सहायक होते हैं। साथ ही इस लोक में भी वे फूल-फल से मनुष्य को तृप्त करते रहते हैं।

पुष्पिता फलवंतश्च, तर्पयंतीह मानवान् ।
वृक्षदं पुभवद् वृक्षासतारयंति परत्रतृ ।।

इसीलिए तो स्कंद पुराणकार वनस्पति से प्रार्थना कर आयु, बल, यश, तेज, संतति, पशुधन और प्रजा तथा धारणाशक्ति की याचना करता है -

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रज्ञा पशुंव सूनि च,
बह्य प्रज्ञा च मेधा च त्वंनोदि हि वनस्पते।

लोकजीवन में माता अपने पुत्र के विवाह संस्कार सम्पन्न होते समय आम्रवृक्ष को मान-सम्मान देने के लिए उसके नजदीक जाकर प्रार्थना करती है तो वह वृक्ष उलहना देता है कि तुम्हारे पुत्र ने हमारी डाली मड़ोर दी है। माता अपने पुत्र की गलती के लिए क्षमा मांगती है और उसके समुचित सम्मान देने का वादा करती है-

हाथे सिन्होरवा खोइछा पाकल पान, चललन बहुआरो देई अम्मा मनावन,
उठूँ-उठूँ अम्मा अरे हमरो बचनियाँ, हमहूँ जे अइली ललना जी के चेरिया,
कइसे में उठूँ-उठूँ तोहरो बचनियाँ, तोहरो ललनवाँ ममोरले डढ़िया,
अम्मा तोरो पल्लव थुम्हियाँ गड़ैबो, अम्मा तोरो पल्लव कलसा चढ़ैबो।

उपर्युक्त शिष्ट साहित्य के श्लोकों और मगही लोकगीतों में कितना भाव साम्य है। प्रकृति के साथ मनुष्य का आदिम सम्बंन्ध की, कितनी सजीव झाँकी है। मनुष्य ही प्रकृति, पशुपक्षी की पूजा और खोज -खबर नहीं लेता बल्कि पशु पक्षी भी मानवीय अह्लाद में सहभागी बनता है। वैवाहिक अनुष्ठान के समय कोयल भी प्रसन्न चित

होकर विवाह संस्कार देखने दरवाजे पहुँच जाती है -

कउन वन रहले रे कोइलर, कउन वन जाय ?
केकरी दुअरिया रे कोइलर, उछहल जाय।
बुंदावन रहले रे कोइलर, कुंजवन जाय,
अनजानो रइया दुअरिया रे कोइलर, उछहल जाय ।

कोयल अमुक व्यक्ति के दरवाजे पर पहुँचता है तो वहाँ 'मिट्टी' का विवाह संस्कार सम्पन्न होता है। मानव-प्रकृति का कितना तादात्म्य है -

कहवाँ में मटिया लिहले जलमिया, कहवाँ में मटिया तोहरो विआह ?
कुर खेत मटिया लिहले जलमिया, मड़वा में मटिया तोहरो विआह ।
उठूँ-उठूँ मटिया लाल पिअरिया, से तोरो बिनु मटिया कइसे विआह ?

मगध में यह गीत विवाह के समय होने वाले 'मृतिकाखनन' अनुष्ठान के समय गाया जाता है। मड़वा में मिट्टी को स्थापित करने के लिए विधिवत निमंत्रित कर मांगलिक गानों के साथ आँचल में रखकर घर लाया जाता है। प्रकृति के प्रति मनुष्य के हृदय में पूज्य भाव की अभिव्यक्ति सदा से होती रही है। लोकजीवन की अभिव्यक्ति की तरह ही शास्त्रों में भी ऐसी ही अभिव्यक्ति मिलती है। विष्णुपुराण की यह उक्ति आज के संदर्भ में (पर्यावरण संरक्षणार्थ) कितनी सटीक है -

छिनन्ति वीरूधों पस्तु वीरूत्संस्थे निशाकरे ।
पत्रं वापातयत्येक ब्रह्महत्यां सविंदति।।

रात्रि में वृक्ष को छेड़नेवाला ब्रह्महत्या का दोषी होता है। अतः लोकजीवन पीपल, बरगद, नीम आदि वृक्षों पर देव का निवास मानकर उसे काटने से सर्वथा वर्जित करता है विष्णुपुराण इन वनस्पतियों को बार-बार नमस्कार करता है -

यज्ञाड् भूतं यद्रूपं जगतः स्थिति साधनम् ।
वृक्षादि भेदैष षड्येति तस्मै मुख्यात्मनेः नमः।

जो संसार की अवस्थिति का साधन और यज्ञ का अंग है और वृक्ष, लता, गुल्म, बीरूध, तृण और पर्वत, छह भेदों से युक्त है, उन रूपों (उद्भिज) में आपको नमस्कार है। प्रकृति में देवत्व का दर्शन हमारी संस्कृति की एक प्रधान प्रक्रिया है जों लोकगीतों के माध्यम से सदा-सर्वत्र अभिव्यक्ति पाते रहा है। हमारे मगध के लोगीतों में प्रकृति के शत-सहस्त्र

रूपों का वर्णन विविध प्रकार से मिलता है साथ ही सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अनुष्ठानों में प्रकृति की पूजा तथा वनस्पतियों का ससम्मान-प्रयोग अनिवार्यतः हुआ करता है। लोकगीतों में इसकी सहज अभिव्यक्ति मिलती है जो अलग शोध का विषय हो सकता है। यहाँ एक मगही लोकगीत के बाद इस प्रसंग का समापन किया जाता है जिसमें प्रकृति और मानव-सम्बंध मूर्तिमान हो उठा है -

जेहि वन सिकियो न डोलय, बाघसिंह गरजई हे ।
ओही देस गेलन दादा अंगुरी धरी ललन बरूआ हे ।
पहिले जे काटब मुंजवा, मुंज के डोरी चाहिला हे ।
तब फिन काटब परसवा, परास डंडा चाहिला हे ।
तब फिन मारब सहिलवा, साहिल काँटा चाहिला हे ।
तब फिन मारब मिरगवा, मिरगछाला चाहिला हे ।
जेहि वन सिकियो न डोलय, साँप पपसरि गेलय हे ।
ओहि वन गेलन चाचा, अंगुरी धरि, ललन बरूआ हे ।

इस जनेऊ मगही लोकगीत में प्रकृति के विविध उपादानो (जड़-चेतन, वृक्ष, पशु आदि) का प्रयोग-उपयोग मिलता है। प्रथमतः जनेऊ धारी को मुंज का जनेऊ धारण करना पड़ता है। पालाश का दण्ड ग्रहण करना पड़ता है, साहिल का काँटा और मृगछाला की आवश्यकता पड़ती है जिसके लिए ब्रह्मचारी बालक अपने दादा-चाचा के साथ गहन वन में प्रवेश करता है जहाँ बाध-सिंह दहाड़ मारते हैं, साँप रेंगते चलते हैं। सारांश कि जीवन में प्रवेश करते ही प्रकृति की कोमलता और कठोरता को साक्षात्कार करना पड़ता है, उसका उपयोग और उसके साथ तारतम्य स्थापित करना पड़ता है। मानव प्रकृति के साहचर्य का आदिम संस्कार है जो लोकगीतों में युग युग से अभिव्यक्ति पाते रहा हैं।

लोकास्था के प्रतीक लोकगीत

लोकगीत केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं गाए जाते हैं बल्कि इनमें लोकजीवन की गहरी आस्था टीकी रहती है। यहाँ तक कि विशुद्ध मनोरंजन के लिए गाए जानेवाले लोकगीत भी किसी अनुष्ठान के समय ही गाए जाते हैं जिनमें समाजशास्त्रीय तत्व और तत् सम्बंधी आस्थाएँ निहित रहती हैं। मगध में झूमर ऐसा ही लोकगीत है जो मनोरंजन के लिए गाया जाता है परंतु ऐसे गीत भी विवाह, जनेऊ या अन्य धार्मिक अनुष्ठान के समय पर गाए जाते है। अतः इन झूमरों में देवी-देवता के झूमर, वैयक्तिक और सामाजिक सम्बंधों के झूमर और और हास-परिहास के झूमर में गायिका और अनुष्ठान करने वाले परिवार की आस्था बनी रहती है, यथा-

सोने खड़ाऊँ रूपे केरा खूँटी हे, गोड़वा धोवऽ न रामजी, देखब भर नजरी हे।
आज अजोध्या रहब कइसे रामजी हे।।
सोने के प्रात में जेवना लगवलूँ हे, जेवऽ न रामजी, देखब भर नजरी हे।

पुनश्च,

सिवजी गयले झंडी खनवाँ गिरले रतिया,
सिवजी भंगिया पीस के जोहवले बटिया,
सिवजी लाली-लाली अँखिया गिरले रतिया।

इस मनोरंजनात्मक झूमर गीत में राम और शिव के प्रति आस्था की अभिव्यक्ति है। झूमर के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के मगही लोकगीतों में लोकजीवन की गहरी आस्था वर्त्तमान रहती है। प्रथमतः हम संस्कार लोकगीतों में लोकास्था के विविध रूपों का अवलोकन करें। बच्चा के जन्म लेते ही नारद जी और ब्रह्मणादि तथा भगवान का आवाहन किया जाता है ताकि नवजात शिशु की रक्षा हो सके ।

कहवाँ से अवतन पंडित अउरो नारद मुनि हे,
कहवाँ से अवतन भगवान, जनकपुर गहगह बोले हे,
गोखुला से अवतन पंडित अउरो नारद मुनि हे,
ललना अयोध्या से अवतन भगवान, जनकपुर जय जय बोले हे।

गीत की आगे की कड़ियों में पंडित और नारद मुनि के उतारने, बैठाने, खिलाने-पिलाने की व्यवस्था का वर्णन है तथा भगवान राम को अलग से रहने-खाने-पीने की विशेष व्यवस्था का वर्णन मिलता है, तथा -

आंगन उतारब पाँचों पंडित अउरो नारद मुनि हे,
ललना कोहबर उतारब भगवान जनकपुर गहगह करे हे।

इस गीत में नाम से नामी के उपस्थित होने की परिकल्पना है। लोकजीवन में अंश से अंशी को प्रभावित करने या उसे बुलाने का विश्वास रहता है। भक्ति में नाम रटने की क्रिया इसी आस्था का सूचक है।

विवाह संस्कार में तो सारे अनुष्ठानों (Retual performance) के समय गाए जाने वाले गीतों में ऐसी ही लोकास्था दीखती है। विवाह का लग्न उढते ही देवी-देवताओं के गीत से घर-आंगन झंकृत हो उठता है-

पहिला लगनियाँ तिलचाउर तब लियों डटहर पान हे,
लगनियाँ भेल उताहुल, लगनियाँ भल हम पयलूँ हे।
पूजबो में भाँवर नदिया, सेनूरे पिठार लागि हे,
लगनियाँ भेल उताहुल, जयबो पार नदियों हे।।

विवाह का लग्न जल्द आ गया, तिल, चावल, डंटीदार पान आदि शुभ वस्तुओं की आवश्यकता पड़ गई। नदी में वाढ़ है, भँवर उठ रहे हैं। अतः नदी को भँवर समेटने के लिए सिन्दुर और पीठा से पूजने की मनौती मानी जा रही है। तभी तो उसपार जाया जा सकता है। लोक में नदी-लाने, गिरि-वन, वृक्ष, आँधी, वर्षा सभी से बचने के लिए अनुष्ठान किए जाते हैं। लोक की आस्था है कि उन्हे अनुष्ठान एवं प्रार्थना से (लोकगीत गाकर) वश में कर मनोवाँछित की प्राप्ति की जा सकती है ।

लोकजीवन में लग्न भी मूर्त रूप में उपस्थित होता है। अमूर्त का मूर्तिकरण और मूर्ति का अमूर्तिकरण लोकास्था की सशक्त मान्यता है। इसमें पशु-पक्षी का भी साहचर्य मिलता है या किया जाता है।

"अमवा के डाढ़ चढ़ि बोलले कोइलिया, लगन लगल डिड़ियाय हे।"

लग्न कड़ा होकर खड़ा हो गया है, इसकी सूचना आम की डाली पर बैठी कोयल देने लगी है (अर्थात् बसंत ऋतु का लग्न श्रेष्ठ होता है) लोकास्था का कैसा मूर्तिमान रूप समुपस्थित है। गीत की उक्त कड़ी में 'डिड़ियाना' मगही का एक ऐसा सशक्त और अनेक भाव-बोधक शब्द है जिसका अर्थ होता है- खड़ा होना, कड़ा होना, कोई कार्य करने के लिए तैयार होना, छोटे बच्चे का खड़ा होना, मन में सुगबुगाहट पैदा हो जाना आदि

अर्थ एक ही साथ अभिव्यक्त होता है। ये सारी क्रियाएँ कोई मूर्त और सजीव प्राणी ही कर सकती हैं अतः लग्न को इसी रूप में अनुभव किया जा रहा है।

विवाह के पूर्व मिट्टी खोदना, उसकी पूजा करना, आम के पल्लव तोड़ना, वटवृक्ष का पत्त काटना आदि आनुष्ठानिक क्रियाओं के समय उक्त पदार्थों में सप्राणता की अनुभूति की जाती है और उसके साथ जीवधारी की तरह व्यवहार किया जाता है। गीतों में ऐसे ही भाव अभिव्यक्त होते रहते हैं ।

"उठूँ-उठूँ मटिया लाल पियरिया, तोरे बिना मटिया कइसे बिआह" ?

"चललन बहुआरो देई अम्मा मनावन" आदि गीतों में मिट्टी, वृक्ष आदि का मानवीय करण तथा तज्जन आस्था प्रतिबिम्बित होती हैं। वृक्ष तरह देवी-देवता के गीतों में वर्णित देवता के प्रति आस्था रहती है उसी प्रकार मानव-विरोधी तत्वों से बचाव के लिए उसका भी अनुष्टान किया जाता है। आँधी -वर्षा की पूजा के साथ ही जोग-टोना, कृत्या को भी मूर्त रूप मानकर उसकी भी अराधना की जाती है। विवाह में जोग-टोना को वशीभूत करने के लिए वर की माँ ढँकनी की आग में राई, मिरचाई, जवाइन डालकर वर को निहुछती है और सवासिन गीत गाती है ।

"राई जवाइन मइया निहुछे देखिहँऽ हे कोई नजरी न लावे,
सम्हरिहँऽ हे कोई नजरी न लावे ।

कृत्या (डायन) से बचने के लिए यह क्रिया और गीत गाया जाता है। कोई जोग-टोना करके वर को प्रभावित न कर दे, इसके लिए बारात गमन के पूर्व निम्न प्रकार के अनेक गीत गाए जाते हैं।

"जोगवा बेसाहे अम्मा चललन, ओहे रे सीरीसिया के गाछ,
ई जोगवा मँइयाँ ला, जोगवा हे महराज।"

महाराज की तरह शक्तिशाली जोग-टोना को दादी खरीद कर रख लेना चाहती है ताकि वह वर के साथ कोई उतपात नहीं करे। कन्या भी माँ से कहती है कि ऐसा *जोग-टोना करो कि वर कभी दुल्हन का साथ नहीं छोड़े ।*

"अइसा जोग करो मेरो अम्मा, दुलहा न छोड़े संग साथ ।"

पुनः कन्या वर से कहती है कि हमारी दादी ऐसी नैना जोगिन है कि वह जोग-टोना नहीं जानती है फिर भी असम्भव को सम्भव कर दिखाती है -

हमारे जो है दादी प्रभु ओ भी नैना जोगिन है, जोग-टोना किछुयो न जाने.
चानी दूब जलमाती है, तरहथी ऊपर दही जमाती है,
सुखले नदिया नाव चलाती है, कासी मोर नचाती है ।

बारात गमन के समय ऐसे सारे बहुत गीत गाए जाते हैं जिनमें गहरी लोकास्था की अभिव्यक्ति मिलती है। ऐसा विश्वास है कि इनगीतों को गाने से जादू टोना जन्य प्रभाव से वर-बधू की रक्षा होती रहेगी। इतना ही नहीं बल्कि कन्या दादी-अम्मा से ऐसा जोग-टोना करवाती है कि उसका वर (पति) सदा उसके वशीभूत रहे -

"बुलाऊँगी उजे दादी दुलरइतिन देई, जोग भला गुन गाओ जी,
मंगाऊँगी चकमक के माटी आउ गुजराती पानी जी,
पइयाँ परत वर आवय जी, हाथा जोड़ी वर आवे जी।"

दादी ऐसा जोग-टोना कर दे कि वर सदा हाथ जोड़े रहे, पैर पकड़े रहें। ऐसा लोकपरक आस्थाओं का वर्णन सैकड़ो लोकगीतों में मिलता है।

विवाह संस्कार के अतिरिक्त अन्य प्रकार के सांस्कृतिक और धार्मिक अनुष्ठानों के समय गाए जानेवाले मगही लोकगीतों में लोकास्था के विविध रूप मिलते हैं। जैसे किसी को चेचक हो जाय तो दवा नहीं दी जाती बल्कि देवी माँ की पूजा की जाती है। मगध के प्रत्येक गाँव के बाहर नीमवृक्ष के नजदीक सप्त मातृकाओं की चौरी रहती है जहाँ गीत गाकर उनकी अराधना की जाती है। ऐसा विश्वास हैं कि गीत-प्रार्थना सुनकर माता-प्रसन्न हो जायगी और चेचक से छुटकारा मिल जायगा। ऐसे गीत शीतला गीत या देवी माता के गीत कहें जाते है। ये गीत सैकड़ों की मात्रा में मगध प्रदेश में देवी स्थान गाए-सुने जाते हैं। देवी-आस्था के ये प्रतीक-गीत देवी माँ के गुनगान एवं लोक कृत्यों से पूर्ण रहते है।

निम्न देवी माँ के गीत सम्पूर्ण मगध प्रदेश में गाए जाते हैं।

(१) *कथी केरा कंगही भवानी मइया, कथी लागल हो साल ?*
कथीये बइठले भवानी मइया, झारे लामी हो केस।
सोने के कंगही भवानी मइया, रूपे लागल हो साल।
मचिया बइठल सातो बहिनी, झारे लामी हो केस......आदि

(२) *छोटी-मुटी नीमियाँ गछिया भूइयाँ लोटे डाढ़ गे माई,*
ताहीतर शीतली मइया, खेले जुगवा सार गे माई।

होवे दे बिहान नीमिया जरी से कटयबो गे माई
तोहरे डहुँगिया नीमिया घोरबो घोरान गे माई।

ऐसा विश्वास है कि इन गीतों के गाने से देवी माँ प्रसन्न होकर रोगी को चेचक मुक्त कर देगी, दवा की क्या आवश्यकता ? इससे माँ कुपित होकर रोगी को कभी बकस नहीं सकती। इसी प्रकार सूर्य षष्ठी व्रत के अवसर पर छठी माता के गीत अनिवार्यतः गाए जाते हैं। अत्यंत गहरी लोकास्था के प्रतीक छठी माता के गीत के बिना तो व्रत का कोई भी अनुष्ठान मगध में पूर्ण ही नहीं हो सकता । व्रत के लिए आटा पीसते समय, जल भरते समय, ठेकुआँ बनाते समय या किसी तरह की क्रिया करते समय छठी माता के गीत से घर आंगन ही नहीं, टोले-पड़ोस एवं अर्घ्यस्थल तक का वातावरण झंकृत होते रहता है। सूर्य षष्ठी के गीतों का विशेष तर्ज होने के कारण लोककवि अन्यान्य गीतों को भी इसी तर्ज में रचने का प्रयास करते रहे हैं। निम्न सूर्य षष्ठी गीत में ब्रती की कामना और उसकी पूर्ति की अभिव्यंजना मिलती है ।

चार पहर राती जल-थल सेविला, सेविला चरन तोहर,
छठी मइया, दरसन देहूँ अपान, जगतारन मइया।
नइहरा में मांगिला अनधन लछमी, ससुरा में सहन भंडार,
छठी मइया, दरसन देहूँ अपान जगतारन मइया...........।

इस प्रकार गीत में सास-ससुर, पति, बेटा-बेटी की मांग ब्रती करती है। अन्य गीतों में सूर्य के क्रिया-कलापों एवं उनके पूजन की सामग्री आदि के नाम एवं प्रयोग का वर्णन मिलता है -

चार कोना के पोखरवा जल उमड़ल जाय, दूध उमड़ल जाय।
सूरूज चललन नेहाय, ऊपर धजा फहराय।
छठी मइया चललन नेहाय, ऊपर धजा फहराय।

लोकगीतों में लोकजीवन की आस्था इतनी गहरी होती है, इतना प्रवल होती है कि कुल देवता, ग्राम देवता के गीतो के अतिरिक्त कोई कर्यारम्भ (कृषि आदि) करते समय गीतों का गाया जाना स्वभाविक देखा जाता है। राम,महादेव, शीतला ओर सूर्य षष्ठी के गीतों के साथ ही कुल देवता में सोखा, परमेसरी के गीत, ग्राम देवता में डिहवार, गोरेया, डाक बाबा, बकरौर बाबा आदि के गीतों में लोकजीवन का विश्वास और आस्था टीकी रहती है। इन सारे गीतों को मैने देवगीतों के कोटि क्रम में संग्रहीत

किया है। इनके अतिरिक्त विविध जातियों के आनुष्ठानिक क्रियाओं में भी अनेक प्रकार के गीत गाए जाते हैं। दुसाध राह-पूजा के समय राह के गीत गाते हैं, अहीर खूँटा पूजते समय ढोर और बकरौर बाबा के गीत गाते हैं, गाय-डाठ़ के समय सूअर और भैंस के गीत गाए जाते हैं, कोयरी कृषि आरम्भ करते खेती के गीत गाते है। सामान्य स्त्रियाँ वर्षा के लिए मेघगीत और चौहट गाती है। भादों की सूखी रात्रि में मनोरंजन के लिए गाए जाने वाले चौहट और गीतिनाट्यों में भी लोकास्था वर्त्तमान रहती है ऐसे लोकगीतों के बाद स्त्रियाँ गाती है -

चूटी सुत गेल, पिपरी सुतगेल, सुतल नगरिया के लोग,
सबके पीछे हमनी सुतली, धरती के लागऽ ही गोड़,

गीत समाप्ति के बाद गायिकाएँ धरती माता के गोड़ लागकर सोने जाती है। अंततः सभी माता-धरती की गोद में ही तो समाहित हो जाते हैं। सारांश कि लोकजीवन के सारे अनुष्ठानो में लोकगीत गाने की प्रथा रही है। आस्था के आयाम जाति और कर्म गीत के कुछ उदाहरण पर्याप्त होंगे। दुसाध जाति में राह देव की पूजा की जाती है। गाँव के बाहर किसी खेत-खलिहान में अग्नि कुंड का आयोजन होता है और पूजन विधान के बाद जमीन पर गाड़े हुए कच्चे बाँस पर चढ़कर सेवक कुंड में उतरता है और धधकती अग्नि को पार कर जाता है। इसमें देवसिया योगी या साधु का प्रतिनिधित्व करता है। उस समय स्त्रियों के द्वारा गाये जानेवाले गीतों में योगी सम्बंधी भाव अभिव्यक्त होता है, जैसा निम्नगीत में द्रष्टव्य है-

गाँजा पीअइते हो जोगी रहिया चले अनाधुन हो,
मचिया बइठले तूहीं मइया गे बढ़इतिन गे,
अगे हमरो के लिखल गे मइया, जोगिया फफीरवा गे,
अगें हमहूँ में जैबउ गे मइया झीकरीपुर सहरवा गे,
झीकरीपुर सहरवा गे मइया डेरवा हम गिरैबो गे.
अगे राम-राम जपबो गे मइया सूरूज हाथा जोड़ि गे,
जहाँ साँफ बीततो बाबू डेरवा तू गिरइहँऽ हो,
गोइठवे जराइये हो बाबू भभूती लगइहँऽ हो,
राम-राम पपिहँऽ हो जोगी सूयज तूँ सेविहँऽ हो ।

भारतीय संस्कृति में न केवल मानव-सहयोगी पशु-पक्षी में आस्था व्यक्त की गई

है वल्कि कठोर और विषधर जीवों के प्रति भी वैसी ही आस्था रहती है। वह भी पूज्य है। साँप की पूजा और उसे दूध-लावा पिलाना प्रणियों के प्रति हमारी आस्था की चरम परिणति है। सर्प भी हमारे लिए पूज्य हैं। सर्प पत्नी, सर्पनी हमारी मनोभावना की तरह ही संयोग और वियोग दुख भोक्ता है। उसके साथ हमारी गहरी सम्वेदना रहती है। लोकगीतों मे ऐसी अभिव्यक्ति मिलती हैं। देखें

पनिया के ओरवे में चरऽ हई हो नऽ,
ताहिरे बीचे बसऽ हई नगिनियाँ हो नऽ, ताहि रे बीचे,
नगवा से पूछऽ हई नगिनियाँ हो नऽ,
से हमें जयबों बीजू बन चरनवाँ हो नऽ, से हमें जयबों,
पनिया के ओरे-ओरे चरऽ हई नगिनियाँ हो नऽ,
हमतो पूछली बन, बनसपति हो नऽ,
से हमरो नगिनियाँ कहाँ गेलई हो नऽ, रामा हमारो..........।
सावन भदउवा के अलई बूठी बढ़वा हो नऽ, राम ओही में..........।
ओही में दहलई नगिनियाँ हो नऽ, रामा ओही में।

नाग पत्नी नागिन बीजू वन में नदी किनारे भोजन खोजती भ्रमण कर रही थी कि बूढ़ी बाढ़ आ गई और वह उसी में वह गई। नाग पत्नी-वियोग में व्याकुल जंगल-जंगल घूम रहा है। वह वन और वनस्पतियों से अपनी पत्नी के बारे में पूछ रहा है (विचारणीय - हे खग,हे मृग मधुकर श्रेणी-तुम देखी सीता मृग नैनी।) तुलसी दास ने केवल प्राणिमात्र को सम्बोधित किया है परंतु लोककवि ने तो उनसे आगे वढ़कर वनस्पति को भी अपने दायरे में समेट लिया है और यहाँ वियोगी भी मानवेत्तर प्राणी, विषधर सर्प है। लोकजीवन में मानवीय सम्वेदना और उसकी आस्था का कितना व्यापक विस्तार हुआ है ।

गंगा की बाढ़ प्रकृति प्रदत्त नहीं बल्कि माता की लहरियों का उद्वेलन है। अतः लोक गायिका माता की लहरियों को समेट लेने के लिए प्रार्थना करती है, यही लोकास्था है।

तनिकी संजोहूँ लहरिया ये गंगा माता, तनिकी संजोहूँ लहरिया।
डूबल हे खेतवा डगरिया ये गंगा माता, तनिकी संजोहूँ लहरिया।
गावाँ में आयल लहरिया ये गंगा माता, तनिकी संजोहूँ लहरिया।
मड़ई गिरल हे, मचान छितरायल, उखड़लहे चउकठ केवड़िया ये गंगा माता,
तनिकी संजोहूँ लहरिया ये गंगा माता, तनिकी संजोहूँ लहरिया।

लता, गुल्म, तुलसी आदि के प्रति लोकास्था का मानवीकरण दर्शनीय है -

कुम्हिला गई तुलसी रामऽ बिना, कुम्हिला गई तुलसी....।
सोने के थारी में जेवना लगवली, जेवना न जेवे सीरी राम बिना कुम्हिला...।
सोने के झारी गंगाजल पानी, पनिया न पिये सीरीराम बिना.........।
पाँच-पाँच पनवाँ के बिरवा लगौली, विरवो न चाभे सीरीराम बिना........।

अपने प्रिय के वियोग में तुलसी की पत्तियाँ झुलस रही है। सोने की थानी में भोजन और सोने की झारी में गंगाजल दिया जा रहा है परंतु वह न खाती है न पीती है तो पाँच पान का बीड़ा क्या चाभेगी? वियोगाग्नि में तो वह जली जा रही है। इस प्रकार लोकजीवन में गाए जानेवाले लोकगीतों में आस्था के विविध विध अनेक रूपों का दर्शन मिलता है, लोकगीत केवल लय,ताल और राग तथा मनोरंजन के लिए ही नहीं गाए जाते बल्कि उनमें हमारी संस्कृति में निहित सम्पूर्ण जड़-चेतन के प्रति गहरी आस्था प्रतिबिम्बित होती है, यही लोकगीतों की मूलभूत विशेषताएँ हैं। इन्ही विशेषताओं के कारण में गीत कभी मरेंगे नहीं बल्कि युगानुरूप परिवर्तित होकर अपने नवीन कलेवर में अमर रहेंगे ।

अभिप्राय है जो गीत में मूलतत्व के रूप में वर्त्तमान रहकर लोक गीत को स्थायित्व प्रदान करता है ।

इसी प्रकार लोकगीतों में स्त्रीचरित्र की विशिष्टता (स्वकीया, परकीया और सामान्या रूप में भी) भी एक सामान्य अभिप्राय हैं जो विविध लोकगीतों में आता है। लोकगीतों में प्रकृति पूजा (यथा-वृक्ष,आम, शीरीष, पीपल, बटवृक्ष आदि, नदी -कूप, आधी पूजन तथा जोग बेसाहना (Taboo) आदि अभिप्राय के रूप में आते हैं। इसी प्रकार 'सोने के थारी गंगाजल पानी' सोने के थारी में जेवना परोसल, अतरस लहंगा सबुज रंग सारी, जड़िया पइसी जातलेती, आदि मगही लोकगीतों के प्रचलित अभिप्राय हैं । यहाँ मगही लोकगीतों के कतिपय अभिप्रायों का वर्णन विश्लेषण किया जाता है ।

अभिप्राय - स्त्री चरित्र

स्त्री चरित्र की विविधता और जटिलता से मगही लोकगीत भरे-पड़े हैं । गीत में परम्परागत स्वकीया, परकीया और सामान्या के वर्णन तो सामान्यतः मिलते ही हैं, साथ ही इन रूपों में जटिलता, विचित्रता और असाधारणता भी मिलती है, यही अभिप्राय की विशेषता है। यहाँ वैसे ही जटिल और विचित्र स्त्री चरित्र का वर्णन अभिप्राय रूप में द्रव्टव्य है ।

मगध में प्रचलित 'चम्पिया' एक चौहट लोकगीत है। इसमें चम्पिया सरोवर स्नान करने जाती है जहाँ से उसकी सखियाँ स्नानकर लौट आती है। वह अकेले लम्बे केश को सोने की कंघा से झाड़ती रह जाती है। उसके लम्बे केश और सौन्दर्य पर राजा नारायण सिंह मोहित हो जाता है और उसके भाई के पास विवाह प्रस्ताव भेजता है। वह पुत्रयुक्त विवाहिता पत्नी थी फिर भी सामंतसाही ने उसे पकड़ बुलवाया। वह आई तो परंतु अपनी चातुरी से सामंत को धत्ता बताकर उसी सरोवर में डूब कर अपना प्रोणोत्सर्ग कर देती है। इस प्रकार वह पितृ और श्वसुर, दोनो कुलों की पवित्रता को रक्षित कर अपने पतिव्रत धर्म का निर्वाह करती है। देखें -

"एक चीरू पीले चम्पिया दूई चीरू पीले, तीसरे मे खिलले पताल हे नऽ ।
हम तो जनइती चम्पिया एताबुध छेरबें, डड़िया पइसी जतिया लेती हे नऽ ।।

ऐसे उदात्त स्त्री चरित्र गाथा से मगही लोकगीत भरे-पड़े हैं । ऐसा ही एक दूसरा चौहट लोकगीत है - 'दौलत बेटी' । इस गीत में पिता के तालाब में पानी उखड़ने के

लिए पुत्री के प्राणोत्सर्ग की गाथा आई है। ऐसे अनेक लोकगीत हैं जिनमें स्त्री प्राणोत्सर्ग कर अपनी पवित्रता की रक्षा करती है या लोकमंगल की कामना करती हैं। स्त्री द्वारा त्याग और परोपकार की गाथा से मगही लोकगीत ओत-प्रोत है। नारी द्वारा प्राणोत्सर्ग मगही लोकगीतों का एक विशिष्ट अभिप्राय है। ऐसे अभिप्राय प्रायः भारत के अन्यान्य जनपदीय लोकगीतों में आते हैं। चम्पिया लोकगीत में तो एक ही साथ अनेक परम्पराजन्य अभिप्राय दीखते हैं जैसे- (१) लामी केश (२) जीरहुल माटी (३) सोने की कंघी, (४) डड़िया पइसी जातलेना और (५) चरित्र और कुल मर्यादा के लिए प्राणोत्सर्ग आदि ।

स्त्री चरित्र के दूसरे रूपों का बहुविध वर्णन मगही लोकगीतों में अभिप्राय स्वरूप आया है। धर्मनिष्ठ और चरित्रनिष्ठ स्वकीया की अग्नि परीक्षा का उल्लेख कई लोकगीतों में मिलता है। उसे गंगा की शपथ, तुलसी की शपथ खाने पर भी विश्वसनीय नहीं माना जाता तो अग्नि में प्रवेश कर सकुशल निकलने का आदेश दिया जाता है। सती-साध्वी इस कार्य में भी सफल होती है तब कहीं उसे विश्वसनीय माना जाता है-

नौ मन घीव सासु तइअरिया करिहँऽ नौ मन चइलिया फरइहँऽ हे।
तुहूँ नेवतिहँऽ सासु ससुर-भैसुरबा, हमहूँ नेबतब नइहर लोगवा हे।
एक ओर बइठले नइहर के लोगवा, दोसर ओर ससुरारी के लोगवा हे।
सात खेवा मैना के डड़िया फनौलन तइयो न छूटे गोड़ महावर हे नऽ ।

नैहर-श्वसुर के लोगों के सामने अग्नि कुंड में मैना सात बार पैर देकर पार हो जाती है तौभी जलना तो दूर की बात है, पैर का महावर भी धूमिल नहीं होता है। युग-युग से भारतीय ललनाओं को ऐसी ही कठिन परीक्षा का सामना करना पड़ा है। सीता जैसी पवित्र नारी भी इस अग्नि -परीक्षा से वंचित नहीं रही और अंततः उसे वनवास भी दिया गया। लोकगीतों में भी गृह निष्कासन की अनेकानेक घटनाएँ आती है या स्वयं पति ही पत्नी को छोड़कर बाहर चला जाता है और वहीं दूसरी पत्नी के साथ निवास करने लगता है फिर भी भारतीय आदर्श पत्नी घर पर ही रहकर सारे वियोग दुख सहती अपने आदर्श पतिव्रत का पालन करती हैं ।

मगही लोकगीतों में स्त्री चरित्र के अंतर्गत भाभी द्वारा ननद को प्रताड़ित करनेवाला अभिप्राय प्रायः आता है। भाई विदेश से घर लौटता है तो बहन को घर में न पाकर अपनी पत्नी से उसके बारे में पूछता है। वह संतोषप्रद उत्तर नहीं देती तो वह

बहन को खोजने घर से निकल जाता है और अनेक मुसीबतों और शर्त्तो को पूरा करता बहन को प्राप्त करता है। किसी-किसी गीत में बहन गाँव के शोहदे से तंग आकर स्वतः श्वसुरार चली जाती है; इसपर भाभी उसे छिनाल बताती हैं। कहीं -कहीं माँ भी बेटी को छिनाल कहने में नहीं हिचकती । यह विशिष्ट अभिप्राय है जो प्रायः नहीं मिलता। यहाँ ऐसा ही एक अभिप्राय द्रष्टव्य है -

सुगिया बहिनिया बाबू जंगली छिनरियों हे नऽ,
अहे अपने से जाहई ससुररिया हे नऽ।
खेलते में रहली भइया सुपली- मउनिया हे नऽ,
अहे जदुवंसी मारले मटकिया हे नऽ।

सामंत द्वारा नजर मारने के कारण बालविवाहिता द्विरागमन के बिना ही श्वसुराल चली जानेवाली के रूप में लोकगीतों में आती है । पहले बालविवाह के कारण देर से द्विरागमन होता था और सामंती व्यवस्था में इज्ज्त बचा पाना मुश्किल होता था। परिणाम स्वरूप किशोरियाँ स्वतः श्वसुराल जाकर अपनी प्रतिष्ठा बचाती थी । यह लोकजीवन की पवित्रता का उदाहरण है। उपर्युक्त लोकगीत में यही अभिप्राय आया है ।

दूसरी ओर पुंश्चली नारी का चित्रण भी मगही लोकगीतों में बहुत जगह आया है। जब कुल्टा-विवाहिता सजधज कर अपनी श्वसुराल जाने लगी तो उसके नैहर का प्रेमी देखकर रोने लगा। वह कुल्टा उसे चुप कराते हुए कहती है कि हे रघुवर मित्र, तुम चुप रहो, योगी का भेष बनाकर मेरी श्वसुराल में पहुँच जाना, वहीं हमलोग मिलेंगे। रघुबर अपनी प्रेमिका के यहाँ योगी- भिक्षुक बनकर जाता है और वहाँ भिक्षा देने के बहाने उसकी प्रेमिका अपनी बालप्रेमी! से मिलती है।

"दू दिन बीतले, चार दिन बीतले आई गयले रघुवर इयार, भीख लगि दुअरे पर खाड़।"

वह सास से अनेक प्रकार के बहाने कर अपने प्रेमी से मिलती है -

"मोर नइहरा सासु गायरे भइसिया, अरे गायरे भइसिया, से हमें रघुबर गइया रे चराय।"

ऐसी परकीया नारी का चित्रण प्रायः सभी जनपदीय लोकगीतों में मिलता है। लोकगीत का यह चर्चित अभिप्राय है ।

स्त्री चरित्र में स्वकीया और उसके पातिब्रत-परीक्षा के बहुविध रूप गीतों के प्रमुख अभिप्राय हैं जो सैकड़ो -सहस्त्रों लोकगीतों में अभिव्यक्ति पाता है। लोकजीवन

में पातिब्रत-परीक्षा के अनेक रूप और विधान मिलते है। अग्नि-प्रवेश तो एक परम्परित पौराणिक अभिप्राय है। इसके अतिरिक्त सूर्य की रश्मि का धूमिल करना, गंगा की धारा को रोक देना, मुर्झाये तुलसी-पौधे का हरा कर देना, थोड़े अन्न से सैकड़ों --सहस्त्रों को भोजन कराना आदि अभिप्राय स्त्री-परीक्षा में आते रहते हैं ।

प्रेम प्रसंग की व्यापकता एवं अतिशयता से सम्बंधित अनेकानेक अभिप्राय लोकगीतों के रूढ़तंतु के रूप में आते हैं। ऐसे ही प्रसंगों के अभिप्राय में लामी केश, सुनहले केश, अतरसलहंगा आदि आते हैं। 'लामी केश' को सुवर्ण कंघी से झारने के कारण चम्पिया को सामंत का कोपभाजन बनना और प्राणोत्सर्ग करना पड़ा -

"झर ये झरोखा चढ़ि राजा निरेखें, केकरी बहिनियाँ केसिया झारे हे न,"

यही केश का आकर्षण उसके प्राणलेवा सिद्ध होता है ।

इस प्रकार एक दूसरे गीत में पत्नी जब चौहट खेलने जाती है तो उसका पति अपने रखैल के साथ शयन करने लगता है। पत्नी लौटकर आती है तो वर्षा में खड़ी बंद दरवाजे को खुलवाने के लिए अपने लम्बे केश की याद दिलाती है । *"खोलूँ खोलूँ प्राभु हो सोबरन केबड़िया हो राम, दुअरे भिंजले लामी केसिया हो राम।"* वह अपने यौवन, कीमती वस्त्राभूषण या अन्य किसी चीज का हवाला नहीं देती बल्कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण लम्बे केश का स्मरण दिलाती है जो भींगकर उरझ जायगा। लम्बे और सुनहले केशों का अभिप्राय मगही लोककथाओं में बहुत आया है। मैने अपने मगध की लोक कथाओं में इसका पर्याप्त उदाहरण दिया है।[1]

इसी क्रम में 'अतरस लहंगा सबुज रंग साड़ी, चोलिया जरद किनारी' यद्यपि कि एक प्रकार का स्त्री -वस्त्राभूषण है फिर भी अनेक लोकगीतों में आने के कारण एक संस्कृतिक अभिप्राय बन गया है। अंदर से साया और बाहर से सब्ज रंगी साड़ी पहले नायिका है और चोली का किनारा जर्द (पीला) है । ऐसे रंग के वस्त्र पहनकर वह घर से निकलती है तो लोगबाग उसकी ओर आकृष्ट होने लगते हैं -

अतरस लहंगा सबुज रंग सारी चोलिया जरद किनारी, हाय अलबेला नऽ
से चोलिया पेन्हथी छिनरो अनजानों बहू, बटिया चलली अकेली, हाय अलबेला नऽ।

इस अलबेली नारी के पीछे आकर्षण का कारण बस्त्राभूषण ही है। लहंगा का

१. मगध की लोककथाएँ : अनुशीलन खण्ड की, पृष्ठ-६३ प्र. मगही अकादमी, गया।

महत्व तो गीत अभिप्राय में इतना है कि रतिलिप्ता नायिका उस अवस्था में भी लहंगा को सुरक्षित रखना चाहती है -

अंदर-अदंर बालम जाने न देंगे, जाने न देंगे, जनाने न देंगे।
लहंगा में दाग लगने न देगें, लगाने न देंगे, सेजरिया पर बालम चढ़ने न देंगे।

लहंगा की रक्षा के लिए नायिका अपने प्रियतम को शय्या पर चढ़ने नहीं देती। प्रेम प्रसंग और स्त्री चरित्र के अंतर्गत "डड़िया पइस जात लेती " भी एक अभिप्राय है। नायिका सामंतों के प्रेम प्रस्ताव को ठुकरा देती है या अपनी चातुरी से बच निकलती है या अपने प्राणोत्सर्ग कर देती है तो प्रेमासक्त व्यक्ति कहता है कि यदि मैं ऐसा जानता तो डाड़ी (डोली) में प्रवेश कर मार्ग में ही सतीत्व अपहरण कर लेता -

"हमतो जनइती चम्पिया एताबुध छेरबऽ, डड़िया पइसी जतिया लेती हे नऽ।।

स्त्री-पुरूष के परम्परागत सामान्य चरित्र में जहाँ कहीं विशिष्टता या परम्परांतर चरित्र आता है वहाँ कोई अभिप्राय का ही समावेश रहता है, यथा -

कटोरनि पियली कोसिलारानी अउरो सुमित्रा रानी हे ।
ये ललना सिलि धोई पियलन केकईरानी, तीनों रानी गरभ से हे ।

इसमें पौराणिक कथा का लोक रूपांतर अभिप्राय आया है। इस में जड़ी पिसकर पीने से गर्भाधान की स्थिति बनी है ।

लोकगीतों में कथातत्व का क्रमानुसार प्रयोग नहीं होता है न उसमें चरित्र का क्रमिक विकास ही होता है बल्कि आनुष्ठानिक क्रियाएँ एवं भाव संवेदनाओं की प्रमुखता रहती है। अतः गीतों में अभिप्राय परम्परित संस्कृति में निहित असाधारणता के कारण आते हैं क्योकि "अभिप्राय द्वारा संस्कृति का विशिष्ठ स्वरूप सुरक्षित मिलता है। विभिन्न जनपदीय लोकगीतों में रूपांतरों के वावजूद आंतरिक एकता अभिप्रायों के कारण ही परिलक्षित होती हैं। लोककथाओं (कथागीतों) का परम्परागत रूप, सांस्कृतिक रूप, मनोवैज्ञानिक रूप, नैतिक रूप और परिवर्तित रूपों में अभिप्राय ही सूत्रवत गूथे रहते है।"[1] लोकगीतों की एकता और समरूपता उसमें निहित अभिप्रायों के कारण ही दीखती है, जैसे विविध अनुष्ठानों के समय गाए जानेवाले गीतों में टोना विचारणा, योग बेसाहना, उपद्रवी तत्वों से बचने का अनुष्ठान एवं मनोवाँछित फल-प्राप्ति की कामना आदि लोकगीतों के सार्वभौतिक अभिप्राय हैं । किसी भी प्रदेश के लोकगीत में उपर्युक्त तत्व

अवश्य मिलते हैं। इन अभिप्रायों के अतिरिक्त प्रकृति-पूजा, विविध वृक्षों का आमंत्रण देना, कूप-सरोवर, नदी-नालों की पूजा, जंगल -पहाड़ की पूजा और मंत्राभिसिक्त करना। ये सब लोकगीतों के प्राचीनतम अभिप्राय हैं जो आदिम संस्कृति और अनुष्ठान से सम्बंध रखते हैं। आदिम वन्य संस्कृति के दाय अभिप्राय रूप में लोकगीतों का आज भी वर्ण्य हैं।

अभिप्राय - जोग बेसाहना, जंत्र-मंत्र या जादू-टोना

टोना लोकगीत का प्रमुख अभिप्राय है जो विविध संस्कार सम्पन्न करते समय एक अनुष्ठान के रूप में सम्पादित किया जाता है। जनेऊ, कलश स्थापन, विवाह में हल्दी, मड़वा, बारात-प्रस्थान, वहू आगमन आदि आनुष्ठानिक क्रियाओं में (जोग - वेसाहना) टोना की क्रिया सम्पन्न होती है जिसका वर्णन लोकगीतों में आता है। यह विशिष्ट अभिप्राय अनिष्ट से बचने और इष्ट की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

जोंगवा बेसाहन चलल मोरे भइया रे टोनमा,
पाछे -पाछे भउजी चली आवे रे टोनमा,
भउजी के हाथे सोने के सिन्होरवा रे टोनमा,
भइया के हाथे चमके तरूआर रे टोनमा।

किसी अनुष्ठान (जनेऊ, विवाह आदि के निर्विध्न पार लगने के लिए) को सम्पन्न करने के लिए उसके भाई और भाभी जोग (जड़ी, मंत्र-यंत्र) खरीदने चली। भाभी के हाथ में सोने का सिन्दुरदान है और भाई के हाथ में चमकती तलवार है। एक (सिन्दुर) सौभाग्य का प्रतीक है तो दूसरा (तलवार) युद्ध का। जोग (टोना-Taboo) आदिम कालीन संस्कार जन्य दाय है जो लोकगीतों में आज भी अभिप्राय के रूप में प्रचलित है। मगध जनपद में ऐसे अनेक लोकगीत हैं जिनमें जोग-जड़ी खरीदने और वर-वधू को पहनाने का वर्णन आया है -

कामरू के जोगिनिया ददिया सासुनऽ,
अगेमाय पलंग बैठल जोग बेचे हे नऽ
अगे माय लपकी- झपकी जोग लेहे नऽ।

हमें मगही में दर्जनों जोग के गोत मिले हैं जिनका सम्बन्ध जादू-टोना से है। यह जोग किसी वृक्ष के नीचे मिलता है तो कहीं उसका हाट ही लगा रहता है जहाँ से वर

मगध की लोककथाएँ : अनुशीलन खण्ड की, पृष्ठ-५६।

या वधू के परिवार उसे खरीद कर लाते हैं, गीतों में ऐसा वर्णन प्रायः आता है। द्रष्टव्य -

जोगवा बेसाहन दादी चलतन ओही रे सीरीसिया के गाछ,
ई जोग मइयाँ ला, जोगवा हे महराज।
जोगवा बेसाहन अम्मा चलतन ओही रे सीरीसिया के गाछ,
ई जोग मइयाँ ला, जोगवा हे महराज।
अइसा जोग करो मोरी अम्मा, दुलहा न छोड़े संग-साथ ।।

वर-वधू के अटूट सम्बंध स्थायी रहने के लिए यह जोग क्रिया की जाती है। किसी किसी गीत में वर या वधू की दादी, माँ, फूआ आदि जोगिन रहती है जो मंत्रों के सहारे असम्भव कार्य करती है, ऐसा वर्णन टोना गीत में मिलता है -

हमारे जो है दादी प्राभु ओ भी नैना जोगिन है,
जोग-टोना किछुओं न जाने -चानी दूभ जमाती है,
तरहथी पर दही जमाती है, सुखले नदी नाव चलाती है, कासी मोर नचाती है।

इस गीत में अनेक रिश्तेदारों के नाम लेकर जोग की क्रिया को सम्पन्न करने का विधान हैं। वर को (बारात के लिए) बिदा करते समय दादी, माता, फूआ आदि राई, मिरचाई और जवाइन को ढँकनी की आग में डाल कर टोना करती है, वर को निहुछती है और निम्न टोनागीत गाया जाता है। यह गीत प्रायः सम्पूर्ण मगध में प्रचलित है -

राई-जवाइन देखिहँऽ हे कोई नजरी न लावे,
सम्हरिहँऽ हे कोई नजरी न लावे ।
राई जवाइन दादी निहुछे, देखिहँ हे कोई नजरी न. लावे,
राई जवाइन चाची निहुछे, सम्हरहँऽ हे कोई नजरी न लावे ।

अभिप्राय-वृक्षपूजा

जोग की तरह आम, बटवृक्ष, पीपल आदि वृक्षों तथा लतागुल्मों की पूजा भी मंत्रों एवं टोने-टोटके से सम्बंध रखता है। यह पूजा आदिम मानव का प्रकृति साहचर्य से उत्पन्न एक परम्परित सांस्कृतिक दाय है जो लोकगीतों के माध्यम से इतिहास क्रम में अपने परिवर्तित स्वरूप में अभिव्यक्ति पाते रहता है। विविध संस्कारजन्य अनुष्ठानों में यह पूजा देखने को मिलती है परंतु जनेऊ और विवाह संस्कार में तो यह अनुष्ठान

अवश्य होता है । जनेऊ में पहले मूंज और पलाश डंटे का आवाहन किया जाता है और उसे पवित्र मानकर मूंज का जनेऊ ही पहले ग्रहण किया जाता है । पलाश वृक्ष के डंटे को लेकर ब्रह्मचारी रूप में भिक्षाटन की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है और तत्पश्चात् सूत्र का जनेऊ धारण किया जाता है । निम्न गीत में यह भाव द्रष्टव्य है -

पहिले जे काटब मूंजवा, मूंज के डोरी चाहिला हे,
तब काटब परसवा, परास डंडा चाहिला है।

पुनश्च, *हरिअर लेमुआ हे, हरिअर जौ केरा खेत,*
एक अचरज हम सुनली, दुलरैतो बाबू के मड़वां जनेऊ ।

यहाँ नीबू और जौ (यव) युक्त खेत में ही जनेऊ का विधान सम्पादित है। यह आदिम प्राकृतिक-साहचर्य और तज्जन भावाभिव्यक्ति है ।

विवाह संस्कार सम्पन्न होते समय वर या वधू को लेकर आम्र वृक्षो को निमंत्रण देने और मनुहार करने उसकी माता सहेलियों के साथ जाती है ।

"हाथे सिन्होरवा खोइछा पाकल पान चललन बहुआरों देई आम्मा मनावन....
अम्मा तोरा पल्लव थुम्हियों गड़यबों, अम्मा तोरो पल्लव कलसा चढ़ैबो ।

बहुत मान-मनौवल कर आम को मनाया जाता है। इसी प्रकार विवाह में बँसरोपन एक विधि है। बँस से ही मण्डप गाड़ा जाता है । हरे बांस की पूजा होती है। वृक्ष की ही पूजा क्यों, मिट्टी की भी पूजा, उसमें भी आत्म निरूपण एवं तज्जन व्यवहार किया जाता है। उसे भी सजीव प्राणी की तरह मान-प्रतिष्ठा एवं विवाहादि क्रियाएँ सम्पन्न की जाती है, यथा -

कहवाँ में मटिया लिहले जलमियाँ, कहवा में मटिया तोहरो विआह ,
उठूँ-उठूँ मटिया लाल-पियर से, तोरो बिनु मटिया कइसे विआह।

मृतिका खनन के समय गाया जानेवाला उपर्युक्त लोकगीत में मिट्टी का मानवीय करण मिलता हैं । माटी कोड़ने के बाद कुएँ पर दाल धोने की प्रथा है जहँ पहले कुएँ की पूजा की जाती है तब सवासिन को गाली देने की रीति है जिसमें कुएँ से पानी भरने का विधान है -

कथी के काठ-कठनइया, कथीय लागल डोरी हो लाल
काठ के काठ-कठनइया, रेसम लागल डोरी हो लाल

पानी भरने के लिए बाल्टी भी काठ की होनी चाहिए। सर्वत्र वृक्ष एवं तत्सम्बंधी वस्तुओं का आनुष्ठानीक प्रयोग मिलता हैं। ऐसे अभिप्राय समस्त जनपदीय लोकगीतों में प्राप्त है। अभिप्राय का यह संस्कार जन्य सांस्कृतिक स्वरूप सर्वत्र लोकगीतों में व्याप्त मिलता है। कृषि पूजा भी ऐसे ही अभिप्राय के अंतर्गत आता है। विस्तार अनापेक्षित है।

अभिप्राय -नोक झोंक

लोकगीतों में सास-पुतोह का नोंक-झोंक, पति-पत्नी का नोक, झोंक, भवज-ननद का नोंक-झोंक, अनुष्ठान करते समय सवासिन का नोंक झोंक, नेग करते समय पवनियों का नोंक-झोंक और यहाँ तक कि अभिसार के समय प्रेमी -प्रेमिका के नोक झोंक वाला अभिप्राय लोकगीत का अतिव्यापक रूढ़तंतु है जो सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक है। इस अभिप्राय का सम्बंध सीधे हास-परिहास और अर्थ प्राप्ति से रहता है परंतु मूल में मनोरंजन का भाव प्रधान रहता है। ऐसे में कभी-कभी सास-पुतोह और ननद-भाभी का नोक झोंक असाधारण परिणाम का कारण भी बन जाता है। यहाँ इस अभिप्राय के रूपों का दर्शन किया जा सकता है।

सास-पुतोह का मधुर सम्बंध एक सामान्य प्रक्रिया है परंतु उसमें जब कटुता और वैशिप्ट्य प्रकट होने लगता है तो यह सम्बंध अभिप्राय बन जाता है। लोकगीतों में ऐसे विशिष्ट सम्बंधों का भरमार देखने को मिलता है। मछली, साँप का बहाना, चरित्रहनन का बहाना आदि दिखाकर पुतोह को तंग करने का एक उदाहरण द्रष्टव्य है यदा-कदा सामान्य जीवन क्रम में सास का अतिकटु व्यवहार पुतोह की मृत्यु का भी कारण बन जाता है । सास की इर्ष्या से पुतोह परेशान है। वह जब घर लिपने जाती है तो कोने में साँप देखती हैं । सास कहती है कि यह साँप नहीं, बामी मछली है । (साँपाकृति की एक मछली विशेष) इसे घर में ही सींझा कर खाओ और घर में ही सो जाओ । वह पुत्रवधू सास के धोखे में आ जाती है और उसकी जान चली जाती है। जब उसका पति घर आता है तो पत्नी के बारे में पूछता है, सास पुत्र से कहती है -

पतरी तिरिअवा बाबू बड़ा रे गुमनिया से सुतल होइहें अपनी महलिया रे दइयो ।
एक छेकुनी मारले दोसर छेकुनी मारले से तेसरो में करवो न फेरई रे दइयो ।
मइया जे हहूँ तुहूँ काई हम करीवऽ से मारलो तिरिअवा पिटअवलऽ रे दइयो ।

यहाँ सास की ईर्ष्या चरम पराकाष्ठा पर है जब वह मृत्य पुतोह को भी पुत्र से पिटवाती है। गीतों के ऐसे विरल अभिप्राय 'सास -पुतोह' की परम्परागत विद्वेप का वड़ा प्रवल

दृष्टांत उपस्थित करता है ।

सास-पुतोह का नोक-झोंक बच्चा होने के बाद यदा-कदा देखा जाता है। बच्चा जन्म लेने के बाद अनुष्टान के लिए सास नहीं आ रही है, जच्चा उसे बुलाने में असमर्थ हैं। ननद तो और भी नखरेवाज है। अतः उसे बुलाने के लिए प्रसूति में साहस ही नहीं है -

"सास आती नहीं, गोतनी आती नहीं मुझे ननद बोलाने के हिम्मत नहीं ।"

अतः जच्चा अपने पति से कहती है कि मैं अकेली हूँ । बच्चा जन्म लेते ही नेग देकर मैं अपने घर तो लुटा नहीं दूँगी । श्वसुर पक्ष के लोग आते नहीं तो अपनी माँ को ही बुला लूँगीं, वही देवी -देवता पूज लेगी -

मैं तो अकेली राजा घर न लूटाऊँगी ,
घर न लूटाऊँगी, नेग भी चलाऊँगी, मै तो अकेली...।
सासु न अइहें, किया मोरा होइहें ?
देवता मनाने अपनी मइया को बोलाऊँगी ।
ननदी न अइहें किया मोरा होइ हें ?
काजर पारन को बहिनी बोलाऊँगी ।

पुनश्च,

सासुजी के हम न बोलयबो हो लाल, से उनकर बोलिया न सहैतो हे लाल ।

यदि सास आकर देवता की पूजा करती है और देवपूजी में उन्हे पीली साड़ी दूँगी । वह देवपूजी में आना -कानी करेगी तो उनकी साड़ी भी उतरवा लूँगी ।

सासु जे ऐतन देवता मनौतन, उनका के पीरी पेन्हायम हे, अंगना में ।
देवतो मनावे में कसर-मसर करतन धीरे से पीयरी उतारम हे, अंगना में ।

ननद-भावज का नोक-झोंक शास्त्रीय (classical) है जिसमें हास-परिहास, मनोरंजन के सथ ही कभी-कभी ईर्ष्या-द्वेष का भाव भी वर्तमान रहता है। नेग न मिलने पर भी नोक-झोंक दीखता है । ऐसे गीत विविध अनुष्ठानों के समय प्रायः गाए जाते है परंतु झूमर लोकगीत में भी ऐसा नोक झोंक काफी मिलता है।

प्रसव के समय ननद के नखरे जगत प्रसिद्ध हैं । जच्चा अपने पति को अपने पास बुलाने के लिए ननद से कहती है तो वह साफ कहती है कि -

अजी भउजी नाउन कि अजी भउजी भाटिन ।
कि अजी भउजी तोरा बाप के चेरिया ।

परंतु मान मनौवल के वाद वह मान जाती है-

"अजी ननद, मोरा प्रभुजी के बहिनी, ननद बलु लगबऽजी ।"

यह नोक- झोंक हास परिहास का अंग हैं । दूसरे सोहर में ननद नेग के लिए काजल पारने और बच्चों को आंजने के लिए भाभी से नोंक-झोंक करती है । अतः भाभी ननद को बुलाना नहीं चाहती -

"ननदीं के हम न बोलयबों हे लाल से अँखिया अंजइया नेग मंगिहें हो लाल।"

यदि ननद नेग के बिना अनुष्ठान नहीं करेगी तो वह अपनी आभूषणहीनता का स्मरण दिलाती हैं -

"टिकवा जे लेबऽ ननद मांग होइहें खाली, उघार होइहें हो बड़े भइया के रानी।"

इसी तरह वह आगे कहती है-

सिकड़ी जे लेबऽ ननद गला होइहें खाली, उघार होइहें हो बड़े भइया के रानी ।

भाभी आभूषणों का नाम लेकर ननद को निरूत्तर करती है और कुछ देना नहीं चाहती। देना ही क्या यदि ननद नेग करने में आना -कानी करेगी तो प्रदत्त आभूषण भी भाभी ननद के शरीर से उतरवा लेगी ।

ननद जे अवतन आँख अंजौतन, उनको के कंगना पेन्हायम हे, अंगना में ।
आँख अंजौनी में कसर-मसर करतन, धीरे से कंगना उतार लेम हे, अंगना में।।

ननद भाभी के बच्चा होने के अवसर पर आती है तो वह साफ कह देती है कि यदि मैं जानती कि दीदी (ननद) आ जायगी तो वह मायके में जाकर बच्चे का जन्म देती-

हमजो जनती ननद, दीदी अइहें नइहर जाके पझैती गे माई ।
जब तोहे भउजी नइहर जयतऽ, नइहर जाके नचइती गे माई ।।

भाभी देना नहीं चाहती और ननद चुनचुन कर वस्त्राभूषण और पैसे लेना चाहती है।

कंगना न लेबो, पहूँची न लेबों, बाला तो लेबो चमकदार सुनूं भउजी हे।
चानी न लेबो सोना न लेबों, हम लेबो गिनि-गिनि लाल सुनूं भउजी हे।

ननद भाभी का नोक-झोंक तो पूर्णतः वैयक्तिक जीवन में भी प्रवेश कर जाता है । देखें - भाभी कहती है -

बरजहूँ अजी ननद अपनी बलमुआ, सारी राती न ये ठुनके ननदोसिया ।

ननद उत्तर देती है -

कइसे बरजू भाभी अपनी बलमुआ, काहे रे लगी तुहूँ बनलऽ सरहजिया। ।

भाभी ननद के नोक-झोंक, हास-परिहास के साथ ही कभी-कभी ननद पर भाभी द्वारा चरित्रहीनता का भी आरोप लगाया जाता है। परिणाम स्वरूप ननद को देश निकाला की सजा मिलती है या भाई के द्वारा भाभी को ही दण्डित किया जाता है।

ननद भाभी के यहाँ किसी कार्य में विना बुलाये आग लाने के बहाने जाती है तो वहाँ उसे काफी तिरस्कार सहना पड़ता है और ननद भाभी को गाली देती लौट जाती है -

भउजी जे उठलन धरप से..... चुल्हवे खखोरी अगिया देलन ये मइया ।
मइया के जिओ जेठ पुतवा.....भउजी के मरो जेठ भइया ये मइया ।।
मइया,लगलो असरवा... तोड़ी देलन ये मइया ।।

ऐसे ही तिरस्कार-भावना तब देखने को मिलती है जब ननद द्विरागमन में श्वसुराल जाती हैं खोइछे में सभी लोग अच्छे पदार्थ देते हैं परंतु भाभी सूखा धान देती है -

भइया मोरा दिहले गइया रे भइसिया,
भउजी मोरा दिहले खोइछा धनवाँ रे दइयो ।

इतना ही क्यों भाभी गोदना गोदाने मे नटिन के पति नट को अपनी ननद तक दे डालती है। ननद के प्रति ऐसी भावना भी लोकाभिप्राय में आती है -

पूरबे-पछिमवाँ से अयले नटिनियाँ ये निरवाने जोगे,
कवन साँवर गोदना रे गोदाय ये निरवाने जोगे ।

भाभी गोदना गोदवा लेती है और गोदाई मजदूरी देने लगती है तो नटिन का पति छोटी ननद के लिए जिद करता है जिसे भाभी दे देती है। जब ननद का भाई घर आकर अपनी बहन को खोजता है तो उसकी पत्नी कहती है -

"छोटकी बहिनियाँ प्रभु बिरह के मातल ये निरवाने जोगे,
चल गेलो नटवा के संग ये निरवाने जोगे।

भाई बहन को खोजने जाता है तो वहाँ नटने उसके साथ विवाह कर अपनी पत्नी बना लिया था । भाभी ननद का ऐसा कलुष भाव भी लोकगीतों में मिलता है परंतु यह अपवाद स्वरूप ही है फिर भी इससे भाभी ननद की परम्परागत कटुता का भावाभास मिलता है ।

इसी प्रकार नेग-दस्तूर करते समय अन्य सवासिनों और पवनियों का नोक-झोंक अर्थ और वस्त्र प्राप्ति के लिए प्रायः होता है । यह सर्वविदित सामान्य लोकगीताभिप्राय है। डगरिन तक राजा दशरथ से डोली-कहार की मांग करती है तभी वह जच्चा की सेवा करने जायगी।

एतना बचन जब सुनलन, सुनहुँ न पयलन हे,
राजा ले आहूँ डोलिया कहार बुलत नही जायम हे ।
हम लेबो हथिया से घोड़वा अउरो गजमोती माल हे ।
तमकि के बोलई डगरिनियाँ तबे नहवायब हे ।

ऐसा नोक झोंक विवाह संस्कार में तेल देते समय तेलीन, वर्त्तन देते समय कुम्हइन, चौकी पींढ़ा देते समय बढ़ई और पान-सुपारी देते समय तम्बोली भी करते हैं। ऐसे नोक-झोंक में हास-परिहास के साथ द्रव्य या अन्न प्राप्ति की कामना भी रहती है । साथ ही सभी जातियों का समभाव, समरसता और समन्वय का भी लक्ष्य रहता है। भारतीय संस्कृति के अनुष्ठानों में सभी वर्णो और जातियों के सद्भावपूर्ण साहचर्य इसकी अमरता और शाश्वतता का द्योतक है, आज इसकी प्रासंगिकता और बढ़ गई है ।

अभिप्राय -परकीया

लोकगीतों में जहाँ स्वकीया का आदर्श प्रेम और लोकमंगल की कामना सर्वत्र अभिव्यक्त होती है वहीं परकीया का विधि विध वर्णन लोकगीतों में मिलता है। परकीया के अनेक रूप और अभिसार के लोकतात्विक स्वरूप जितने मिलते हैं उतने शिष्ट साहित्य में भी नहीं मिलते ।

हाँ, लोकगीतों में सामान्या का चरित्र कम चित्रित है। केवल विदेश में रहनेवाला पति वेश्या के नांच एवं लावन्यादि से प्रभावित होकर उसको अपने पास रख लेता है या गाढ़ी कमाई का पैसा उस पर व्यय करता है। ऐसे चरित्रों का विशिष्ट अभिप्राय प्रायः नगन्य है ।

लोकजीवन में परकीया प्रेम और उसकी चातुरी का बड़ा मनोहारी रूप दीखता है। शायद लोकजीवन से ही अधिग्रहीत होकर शिष्ट साहित्य में इसका वर्णन आया हो।

एक परकीया नायिका सजधज कर श्वसुराल जाने लगी तो उसका यार, प्रेमी विकल हो उठा। स्त्री ने कहा कि योगी का भेष वनाकर मेरे यहाँ आना तो वहाँ भेंट होगी । वह गया तो योगी को देखकर उसकी सास पूछती है -

किया तोरा अहे पुतहू भाई रे भतिजवा, किया तोरा नान्हे के इयार
मोरा नइहरवा सासु गाई रे भइसिया, से रघुवर गइया हो चराय ।

इस प्रकार वह स्त्री अपने यार से गाय-भैंस के चरवाहे रूप में घोषित कर मिलती -जुलती रही। उसका अभिसार चलता रहा ।

एक परकीया नायिका का अपना पति दरवाजे पर पहुँच जाता है और उसका प्रेमी घर में ही पड़ा था। परिस्थिति विकट जानकर नायिका एक युक्ति निकालती है और उसका योगीधारी मित्र घर से बाहर निकल जाता है, साथ ही नायिका उसे सलाह देती है कि गाँव से बाहर वटवृक्ष के नीचे बंशी बजाना, मैं उसकी आवाज सुनकर वहाँ चली आऊँगी ।

हथवा में लेहूँ जोगी गोइठा रे चिपरिया हो राम,
अगिया बहनवे जोगिया निकलई हो राम।
जोगिया बरतर बंसिया बजइहँऽ, सबद सुनि अयबो हो राम,
बारह बरस के बेटिअवा कतेक बुध छेरलऽ हो राम ।।

यही किशोरी नायिका अपने प्रेमी को गोइठे पर आग देकर घरसे बाहर निकाल देती है और योगी गाँव से बाहर बटवृक्ष के नीचे धुनी रमा देता है और बासुरी बजाकर अपनी प्रियतमा को बुला लिया करता है ।

एक परकीया का पति बचपन से ही विदेश रहता है तो उसका वस्त्राभूषण उसके मित्र बना देते हैं जिसे पहनकर वह इठलाती है और उसकी ननद उससे इर्ष्या करती है तो वह धृष्टता पूर्वक कहती है कि उसका पति बचपन से विदेश है तो वह क्या कर? तुम्हारा कलेजा क्यों जला करता है -

"चुनरी पहिरी हम सुतली ओसरवा, ननदी के जरले हो करेज ।
का तुहूँ ननदी हे जरले करेजवा, मोरो पिया नन्हे से हो विदेश ।

मगही लोकगीत झूमर में तो परकीया नायिका के अपने परदेसी पति पर विश्वास नहीं है, साथ ही वह बासीपन से भी ऊब गई है। अतः वह अपने प्रेमी की मदद से मनोनुकूल वस्त्राभूषण धारण करती है -

बासी भात में सवाद नइखे हो सवाद रइखे, परदेसी बलमुआ के आस नइखें।
फैसन के साड़ी बदन झलके हो बदन झलके, परदेशी बलमुआ के जीवललचे।
सलारपुर से हो सलारपुर से हम बाला गढ़वली अपन दिल से।
अपन दिल से हो अपन दिल से, हम खिलवा लगवली अपन दिल से।।

कभी-कभी परकीया केवल ऊपरी मन से पति को मान्यता देती है लेकिन उसका देवर ही सब कुछ रहता है। वह पति से वस्त्राभूषण खरीदवाती है और देवर के साथ रंगरेलियाँ करती है -

टिकवा गढ़ादऽ पिया मंगिया के बीच,पिया मन रखना देवरवा दलगीर ।
ले चलऽ हो देवर जमुना के तीर, उहईं खेलब हो देवर रंग अबीर ।।

देवर भाभी का प्रेम लोकगीतों में प्रायः अभिप्राय के रूप में आता है जहाँ विचित्र प्रेमोद्भव एवं क्रियान्वयन का दृष्टांत मिलता है। भाभी-देवर नदी में जल विहार कर रहे हैं तभी देवर नदी में डूब जाता है। भाभी उसे निकालने के लिए अपना सर्वस्व न्यवछावर करने को प्रस्तुत है। यहाँ परकीया की प्रेम-पराकष्ठा है । देवर को नदी से निकालने में नाविक सोना -चाँदी नहीं लेना चाहता बल्कि भाभी का यौवन-रस प्राप्त करना चाहता है । नाविक के इस प्रस्ताव को वह थोड़ा आना-कानी के बाद मूक समर्थन दे देती है -

पहिले जे खाले साँवर चिरई-चिरगुनियाँ, कोइलर जमुना तीरे हो लाल,
तब खाले खेत रखवार कोइलर जमुना तीरे हो लाल ।

प्रथमतः भाभी काम प्रस्ताव को ठुकराती है परंतु नाविक द्वारा तर्क दिए जाने पर कि पहले फसल को चिड़िया खाती है, बाद में खेत का मालिक खाता है । यह सुनकर भाभी चुप हो जाती है। सारांश कि देवर-प्रेम भाभी अपनी समस्त अस्मिता को भी दाव पर लगा देती है । परकीया स्त्री का यह देवर-प्रेम विचित्र है। ऐसा ही भाव एक दूसरे गीत में द्रष्टव्य है -

"आधी रात जब चंदा छिपतु है, करदो मिलन की तइयारी देवर से ।"

लोकगीतों में जहाँ परकीया के विचित्र और बहुविध प्रेम-प्रसंगों का वर्णन मिलता है वहीं खण्डिता नायिका की मनः स्थिति का वर्णन भी मगही लोकगीतों में भरा -पड़ा मिलता है। नायक प्रायः नौकरी के लिए विदेश जाता है तो वह वहीं किसी के प्रेम-पाश

में आवद्ध हो कर उससे विवाह कर लेता है या सामान्या के पास गमन करने लगता हैं। घर में उसकी पत्नी वियोग-दुख सहती अपनी सौत को कोसती रहती है या प्रतिक्रिया में उससे बदला लेने की योजना वनाती है। ऐसी खण्डिताओं के चित्रण से मगही झूमर भरे पड़े मिलते हैं । एक खण्डिता की पत्नी पति के घर आने पर पूछती है -

पिया हो तीन दिना से जोहत हली बटिया, कहवाँ गववलऽ रतिया नऽ ?
धनियाँ तोहरो लागि सुन्नर माली बेटिया, उइहें गववली रतिया नऽ ।

मालिनों का सौन्दर्य और बाग में प्रसून-प्रेम उसकी ओर नायकों का आकर्षण का कारण बन जाता है । अतः खण्डिता नायिका की उपपत्नी के रूप में मुख्यतः मालिन, बंगालिन या नटिनी अथवा सामान्या का वर्णन मगही लोकगीतों में मिलता है, देखें -

तोरो ला सुन्नर मालिन बेटिया,उइहे गवली सरी राती, सच्ची बोंली बोलो जी,
तोरो अंगनवाँ में तुलसी के गछिया, तुलसी के किरिया खाना, सच्ची बोली बोलो जी।

वंगालिन से तो पत्नी इतनी भयभीत रहती है कि वह अपने पति को बंगला में नौकरी करने जाने नहीं देना चाहती, वह कहती है "पूरूब के रंडी असली बंगालिन, खराब कर देगी राजा चढ़ती जवानी।" पत्नी पति को रंडी के साथ देखती है तो भी वेशर्म पति कसम खाकर उसे प्रतीति दिलाना चाहता है -

"हाथ में देखा पिया तोसक आउ तकेया, रंडिया के साथ पिया जाते हैं ।
सोते भी देखा सोलाते भी देखा, झूठा कसम पिया खाते हैं ।"

खण्डिता नायिका जब क्रोधित हो जाती है तो अपने पति को प्रिय नहीं कहकर गुण्डा कहने को प्रस्तुत है -

"बार-बार पिअवा न कहबो राजा, एकबार गुंडवा कह देबो राजा।"

अतः लोकगीतों में खण्डिता नायिका का व्यवहार और उसकी उक्ति में विविधता और विचित्रता मिलती है। यह मगही लोकगीतों के अभिप्राय में एक बड़ा सशक्त रूढ़तंतु है जो प्रायः सभी जनपदीय लोकगीतों में किसी न किसी प्रकार मिलता है। शिष्ट साहित्य में परकीया का वर्णन लोक साहित्य से अधिग्रहीत होकर अपने अभिजात रूपों में प्रकट होते रहे हैं । परंतु स्मरणीय है कि लोकगीतों में अनेक प्रकार से नारी उत्पीड़न के वावजूद स्वकीया का वर्णन और उसकी लोकमंगल कामना की अभिव्यक्ति सर्वोपरि दीखती है । बारहो महीना दैहिक और प्राकृतिक आपदायों से जूझती

लोककाव्य में निहित सौंदर्य तत्व

सौन्दर्य एक ऐसा भावबोध है जिसे किसी निश्चित शब्द सीमा में बाँधकर परिभाषित नहीं किया जा सकता। सुधी विचार कों ने इसे अनेक प्रकार से चित्रित और विश्लेषित करने का प्रयास किया है क्योंकि ऐतिहासिक परम्परा और भौगोलिक परिवेश में सौन्दर्य के वस्तुनिष्ठ आयाम में परिवर्तन होते रहता है। फिर भी मानवीय प्रवृतियों को संस्कारगत समता के कारण सौन्दर्य की संवेगनिष्ठ अनुभूति में विशेष अंतर नहीं आता। सौन्दर्य चेतना समस्त मानवमात्र में वर्तमान रहती है जिसकी अनुभूति अह्लादन के रूप मे होती है। हाँ, इस अनुभति की अभिव्यक्ति के प्रकारों में भिन्नता अवश्य हो सकती है। एक अभिजात्य वर्ग अपनी विकसित और संस्कारित मानसिकता के कारण सौन्दर्यानुभूति की अभिव्यक्ति शिष्ट और सुसंस्कृत तरीके से कर सकता है तो लोकजीवन (Folk life) में सौन्दर्यानुभूति को व्यक्त करने का अनगढ़ तरीका हो सकता है परंतु इससे सौन्दर्य चेतना में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता । उदाहरणार्थ लोकजीवन में रूपात्मक सौन्दर्य को ध्यान में रखकर कन्या का विवाह सम्बंध स्थापित नहीं किया जाता बल्कि उसके स्वास्थ्य और शीलगत सौन्दर्य पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित रखा जाता है। मगही लोकगीतकार ने इसकी बड़ी सुन्दर व्याख्या की और काले वर में भी महानता, कर्मनिष्ठा और रूपात्मक सौन्दर्य का भी संयोजन कर दिया गया है, यथा-

कारहि कार जनि घोसहुँ जे बेटी, कार अजोध्या सीरी राम हे।
कार के छतिया चननवाँ सोभई गे बेटी, तिलक सोभई लिलार हे।
मथवा में सोभई चकमक पगड़िया, गलवा सोभाई मोती हार हे।

शिष्ट मानसिकता वताती है कि 'कन्या वरयते रूपम्' परंतु लोकमानस कहता है कि काले वर सौन्दर्य विहीन नहीं होते। उनका सौन्दर्य तो गौरवर्ण वर से भी अधिक आकर्षक होता है। श्यामवर्ण राम का शील सौन्दर्य अद्वितीय है साथ ही कालेवर के वक्ष स्थल पर चंदन का लेप कितना शोभायमान होता है, ललाटपर तिलक कितना सुन्दर लगता है, माथे पर चमकती हुई पगड़ी और गले में मोती की हार कितना मनमोहक होती है। आज अभिजात्य वर्ग विविध रंगी कृत्रिम परिधान में सौन्दर्य देखता है परंतु लोक कवि की सूक्ष्म भेदिनी दृष्टि काले-कलूटे व्यक्ति में भी सौन्दर्य -दर्शन कर लेती है, यही लोकजीवन और लोकदृष्टि है जो व्यावहारिकता और उयोगिता पर आधारित रहती है, कृत्रिमता और वाह्म सौन्दर्य पर नहीं ।

लोक भाषा मगही के काव्य (लोक गीत,नाट्य गीत आदि) में सामान्तः सौन्दर्य की अभिव्यक्ति तीन तरह से मिलती है

(१) लोकतात्विक सौन्दर्य (२) भाव सौन्दर्य तथा (३) कला सौन्दर्य

(1) मगही लोक गीतों में लोकतात्विक सौन्दर्य

मगही काव्य में अद्वितीय लोकतात्विक सौन्दर्य का समावेश मिलता है (१) जिसमें अद्वितीय रूप सौन्दर्य (२) अदभुत् एवं असम्भव का समावेश तथा (३) वर्सत्र लोक मंगल की कामना

मगही लोकगीतों, लोकगाथाओं एवं नाट्यगीतों में मानव एवं मानवेत्तर सौन्दर्य का बहुविध चित्रण मिलता है। इनमें कुछ परम्परागत उपमानों का प्रयोग हुआ है और यत्र-तत्र कुछ नए उपमान भी दृष्टिगोचर होते हैं। निम्न लोकगीत में गीतकार ने नारी के रूप-सौन्दर्य का चित्रण इस प्रकार किया है -

अँखिया दुलहिन के आमि के फुँकवा, नकवा सुगवा के ठोर हे।
का हथी सीता सूरूज के जोतिया, का हथी चान के जोत हे।

पुनश्च,

पान अइसन पातर गे बेटी, फुलवा अइसन सुकुवार,
कइसे सहबऽ गे बेटी, ससुररिया में तरूवार के धार

फाग - *गोरिया पातरी,जइसे लपऽ हई लवंगिया के डार, गोरिया पातरी ।*
पनवाँ अइसन गोरी आतर-पातर, अहो फुलवा अइसन सुकुवार हो,
अहो फुलवा अइसन सुकुवार, गोरिया पातरी,जइसे लपऽ हई लवंगिया के डाढ़।

प्रथम गीत में दुलहन की आँख आम के फाँक की तरह, नाक सुग्गे के टोर की तरह और उसकी ज्योति चाँद-सूर्य की तरह देदीप्यमान है। दूसरे गीत में पान की तरह तन्वंगी पुत्री और फूल की तरह कोमल-सुकुमार, श्वसुराल में तलवार की तरह रूक्ष व्यवहार को कैसे झेलेगी, यही पिता की चिंता है । तीसरे गीत में तन्वगी नायिका, पान की पत्ती की तरह पतली और सुकोमल है, लवंग की कोमल डाली की तरह लोचदार है, फूल की तरह सुकुमार है। ऐसी अद्वितीय नारी-सौन्दर्य का चित्रण मगही लोकगीतों की अपनी विशेषताएँ हैं ।

एक दूसरे मगही लोकगीत में नव विवाहिता दुल्हन अपने पति की कोमलता और सौन्दर्य से इतनी अधिक अभिभूत है कि वह अपने पति से क्षण मात्र के लिए अलग नहीं होना चाहती। ग्रीष्म में पंखा हाथ से नीचे गिर गया है जिसे वह उठाने मात्र के विलगाव को भी सहन नहीं कर सकती, अतः वह अपनी ननद से पंखा उठाकर देने का आग्रह करती है। सौन्दर्य, कोमलता और प्रेमाधिक्य का यह अपूर्व दृष्टांत है।

सुतल रहली अटारी बेनिया गिरल भुइयाँ, ननद हे, बेनिया दे दऽ हमारी।
जइसन आम के फरुआ ओइसन पिया मोर दुलरुआ, ननद हे......।
जइसन पान के बीरा, ओइसन पिया मोर हीरा, ननद हे.......॥

नायिका का पति अतिशय प्रिय है, पान की बीड़ा की तरह मुख पर धारण करने योग्य, हीरे की तरह कीमती है, उस अद्वितीय लावण्यमय पति को वह क्षण मात्र के लिए कैसे अकेले छोड़ सकती है ? अतः वह अपनी ननद से गिरे हुए पंखे को उठा कर देने को कहती है ताकि वह शीत पंखा झलती रहे और पलभर भी वियोग दुख न सह सके। सदा व्यंजन डुलाकर शीतलता प्रदान करती रहे। यह सौन्दर्य और अतिशय प्रेम का अन्यतम उदाहरण है।

नारी सौन्दर्य का चित्रण मगही लोकगाथाओं की नायिका के संदर्भ में सर्वत्र मिलता है। लघु लोकगीतों तथा वृहद् लोकगाथाओं में नायिका, राजकुमारी और अपसराओं के अद्वितीय सौन्दर्य का लोकतात्विक वर्णन मगही लोककाव्य की अपनी विशेषताएँ हैं। मगही लोकगाथाओं के नायक लोरिक, चुहड़मल, सदावृज, कुँअर विजयी, नेटुआ दयाल सिंह, गोपीचंद आदि अपनी नायिकाओं के शील-सौन्दर्य से अभिभूत होकर प्राणपन से प्रयास कर उसे पत्नी या बहन के रूप में ग्रहण करते हैं। सौन्दर्य केवल चाक्षुष ही नहीं होता बल्कि सांवेगिक भी होता है। सौन्दर्याभिभूत व्यक्ति सारे सामाजिक बंधनों को तोड़कर इष्ट की प्राप्ति के लिए आकाश-पाताल एक कर देते हैं। राजा का पुत्र डोम या नट की कन्या के सौन्दर्य से प्रभावित होकर राज-पाट त्याग देता है और डोम या नट होकर उसे प्राप्त कर लेता है। मगही लोक साहित्य का यही लोकतात्विक सौन्दर्य है।

लोकगाथाओं में ऐसे सौन्दर्य चित्रण भरे पड़े मिलते हैं। मगध में प्रचलित 'लोर काइन' में निहित अलौकिक सौन्दर्य और चमत्कार का एक-दो प्रसंग अनपेक्षित न होगा। लोकाइन का नायक लोरिक अलौकिक वीर और गोरक्षक है जिसका पहला विवाह मंजरी

से होता है। लोरिक मंजरी को लेकर अपने घर गौरा-गुजरात आता है जहाँ के राजा सहदेव की पुत्री चंदवा अद्वितीय सुन्दरी है। वह लोरिक की वीरता से प्रभावित होकर उसका वरण करना चाहती है । अतः वह परकीया नायिका (जिसका विवाह नपुंसक मलसौंधरा से हो गया था) सोलहो सिंगार कर, सोना-चाँदी से खोइछा भर कर लोरिक को चुमावन करने उसके घर चली । वह इतनी सुन्दरी थी कि लोरिक के चुमावन के समय पहुँचे गाँव के सभी लोग उसे एकटक निहारते रह गए -

घुमिए मकनवाँ लोरिक के अंगनवाँ गेलई हो राम,
सब कोई देखे लगलई चंदवा के सुरतिया हो राम,

"मोह न नारी नारी के रूपा । पनगारि यह रीति अनूपा" भी विपरीतार्थक बनगाया। चंदवा जितनी सुन्दरी थी उससे अधिक बलशाली थी। गाथाकार ने उसकी वीरता का अद्भुत वर्णन किया है ।

सब कोई लोरिक के चुमावऽ हई, अब चंदवा चुमावई हो राम,
लोरिक से जादे चंदवा के बलवा, ताकत हलई हो राम,
लोरिक के चुमावइत चंदवा पुटपुरिया दबाय देकई हो राम,
एतना जोर दबलकई गे चंदवा, लोरिक गेलय घबराई हो राम।

चुमावन के समय चंदवा ने लोरिक के ललाट को जोर से दबा दिया तो वह घबरा कर उसका परिचय पूछने लगा -

केकर ई तो घरवा के बेटी हई, केकर घर के पुतोह हो रमा
जेतना गे सुरतिया जे पलकई ओतने पलकई बल हो राम

परंतु प्रकट रूप में लोरिक क्रोधित होकर बोलता है और चंदवा हँस कर जबाब देती है। इस प्रकार क्षणिक सम्पर्क ने दोनो को प्रेमपाश में आवद्ध कर दिया। इसका प्रमुख कारण रूप-सौन्दर्य और शील-सौन्दर्य है जिसका सम्यक् चित्रण गाथाकार ने किया है। यही नारी के रूप सौन्दर्य और शील सौन्दर्य का जादू है जिससे कठोर हृदय योद्धा और वितरागी योगी भी पराजित होते रहे हैं। लोककाव्य में वर्णित ऐसे ही चमत्कार पूर्ण सौन्दर्य बरवस श्रोताओं को आकृष्ट करते हैं। कहीं रूप का सौन्दर्य, कही शील का सौन्दर्य तो कही कार्य व्यापार का सौन्दर्य मगही लोककाव्य की विशेषताएँ हैं जो इसके अस्तित्वका शाश्वत कारण है। इसी के अंतर्गत प्रकृति-सौन्दर्य को भी रखा जा सकता है ।

मगही काव्य में प्रकृति का लोकतात्विक वर्णन और परम्परागत चित्रण, दोनो प्रकार से मिलता है। लोककवि प्रकृति के लोकतात्विक वर्णन में इसके सारे उपादानों को आत्मवत देखते हैं। जड़ चेतन सारे कार्य सम्पादित करते देखे-सुने जाते हैं। वृक्ष चलते और बोलते हैं, पशु-पक्षी मैत्री कर बड़े-बड़े कार्य सम्पादन करते हैं। नदी, वृक्ष, गिरि, वन, समुद्र आदि मानव सहचर और विरोधी होकर कार्य करते हैं। पहाड़ और वृक्षात्माएँ प्रकट होकर पूजा ग्रहण करती हैं। ऐसी लोकप्रवृतियाँ और लोक आस्थाएँ लोकमानस[1] का परिणाम है जो आज भी इस घोर भौतिकवादी और वैज्ञानिक युग में वर्त्तमान हैं। विल्व फल से वेलवंती रानी निकलती है, वृक्ष के घोसले में प्राण रहते हैं। पशु और सर्प मनुष्य से मैत्री करते हैं। गंगा माई डूबे व्यक्ति को पुनः लौटा देती है। मगही लोकगीत प्रकृति के इस लोकतात्विक चित्रण और सौन्दर्य से भरा पड़ा है। एक दृष्टांत और -

एक घोड़े और भैंस की अटूट मैत्री टूट गई तो भैंस ने घोड़े को मार कर अधमरा कर दिया तो घोड़े ने अपनी बात मनुष्य को बताई और उसे अपनी पीठ पर बैठाकर भैंस के पास लाया। आदमी ने भैंस को पीटते-पीटते घर लाया और उसे बंदी बनाकर दूध का लाभ लेने लगा और घोड़े को भी सवारी के लिए अपने पास रख लिया। घोड़े ने आदमी से पूछा तो उसने जबाब दिया -

भइँसा के तो दूध पीयब आउ तोहरा ऊपर
सान से सवारी करब, सैर करब जीउ भर
घोड़ा ई सुन के बड़ा घबरायल -
आयह् बाप! ई का ? बहूते पछतायल ।

भारतीय लोकजीवन ऐसी ही उक्तियों से व्यवहार, नीति और उपदेश ग्रहणकर अपने जीवन को सफल और सुन्दर बनाते रहा है। ऐसे ही लोककाव्यों के कारण लोक जीवन सफल और अनुप्राणित होते रहता है। मगही काव्य का यही लोकतात्विक सौन्दर्य है।

मगही का एक चौहट गीत है चम्पिया। चम्पिया के अद्वितीय सौन्दर्य और लम्बी केशराशि को देखकर लोलुप राजकुमार इतना आकृष्ट होता है कि वह उससे जबर्दस्ती शादी करने के लिए विवश करता है परंतु वह अपनी चातुरी से प्राण देकर अपने सतीत्व की रक्षा करती हैं। इसमें उसके रूप-सौन्दर्य एवं शील-सौन्दर्य का चमत्कार पूर्ण वर्णन मिलता है ।

---

१. लोक मानस और लोक प्रवृतियों के लिए हमारी 'मगध की लोक कथाएँ 'अनुशीलन खण्ड का अवलोकन करें - प्र. मगही अकादमी (गया) विहार।

लोक गीत का अंतिम अंश द्रष्टव्य है -

जब तूहूँ राजा हमसे लोभयलऽ, हमें जोगे लाली-लाली डड़िया हे न.
हँसी -हँसी राज डड़िया वैसइले, रोई-रोई चढ़े बेटी चम्पिया हे न.
लाली-लाली डड़िया के सबुजी ओहरवा. लागि गेले वतीसों कहरवा हे न,
गोड़ तोरा लागिला अगिला कहरवा, बाबा के पोखरवा डड़ी बिरमावऽ हे न.
जब तोरा चम्पिया लगले पआसिआ. हमरे गेडुवा पनिया पीअ हे न,
तोरो गेडुवा राजा जनमो सिनेहिया, बाबा के पोखरवा सपना होतई हे न.
एक चीरू जीले चम्पिया, दूई चीरु पीले, तीसरे में खिलले पताल हे न.
हमतो जनइती चम्पिया एता बुध छेरवऽ. डड़िया पइसी जतिया लेती हे न।

इस लोकगीत में नारी का अद्वितीय सौन्दर्य जहाँ वाधा का कारक है वहीं उसका शीलगत सौन्दर्य भारतीय नारी के सतीत्व-आदर्श का अन्यतम उदाहरण है। मगही लोकगीत नारी के ऐसे शीलगत सौन्दर्य चित्रण से सराबोर मिलता है जिसमें अद्भूत चमत्कार और लोकतत्व गाँगा-यमुनी समन्वय मिलता है। गीतों में वर्णित सौन्दर्य के अंतर्गत लोकमंगल की कामना भी वर्त्तमान रहती है। गीत नायक या नायिका अनेक प्रकार की बाधाओं को पार करती हुई सुखमय जीवन व्यतीत करती है या उसकी कामना करती है। अप्सराओं एवं नागिन सदृश्य रूपसी की प्राप्ति करनेवाला नायक स्त्रोता में भी वही सौन्दर्य भाव को उदीप्त करता है। यही सौन्दर्य चेतना का साधारणी करण है जो लोकमंगल से युक्त रहता है। कभी-कभी यह सौन्दर्य-चेतना नायिका की विराट कल्पना में अभिव्यक्त होती है -

चान-सुरूज राजा टिकवा गढ़ादऽ, तरेगना के राजा बचवा लगादऽ ।
पेड़ा आउ लड्डू के कोठा उठादऽ, जलेबिया के राजा खिड़की कटादऽ ।
आहर-पोखर के सेजिया डसादऽ, मछरिया के राजा तकेया लगादऽ ।

इस मगही लोकगीत में प्रकृति का विराट सौन्दर्य चित्रण मानवीय पृष्ठभूमि में हुआ है। नायिका की कल्पना प्राकृतिक तत्वों के साथ एकीभूत हो जाना चाहती है। नायिका और उसके सौन्दर्य- चित्रण के कुछ और वानगी द्रष्टव्य है -

परिनिष्ठत साहित्य में वियोगिनी नायिका प्रकृति के आक्रामक सौन्दर्य को प्रायः सहनकर लेती है; परंतु मगही लोककाव्य की नायिका प्रकृति के सौन्दर्य को नष्टकर देना चाहती है जिसकी वजह से उसका प्रिय उससे विछुड़ने वाला होता है। मुग्धानायिका

कोयल की बोली सुनकर उसके वासस्थान, घने बाग को ही उजाड़ देने का संकल्प करती है। रहे बाँस न बाजे बाँसुरी, बगीचा ही नहीं रहेगा तो कोयल कहाँ रहेगी और वह बोलकर सुबह होने की सूचना कैसे देगी जिसके कारण उसका प्रिय जागकर बाहर चला जायगा ।

नायिका कहती है -

सेजिया सुतल बलमा जागई हो रामा- कोयली मीठी बोलिया,
रोज -रोज बोले कोइली भोर-भिनसरवा. आज काहे बोले आधि रतिया हो रामा,
होयदे बिहान कोइली खोतवा उजारबउ, बगिया कटैबो घनी बगिया हो रामा-कोइली मीठी. बोलिया ।

वस्तुतः मुग्धा को पता ही नहीं चला कि सुबह हो गई है। उसे लगा कि अभी आधी रात है और वैरी कोयल ने बोलना शुरू कर दिया । अतः आक्रोश में उसने उसके मूलोच्छेद की कल्पना कर ली। यह लोककवि की मर्म भेदिनी दृष्टि है। सूर के "मधुबन तुम कत रहता हरे, विरह वियोग स्याम सुन्दर के ठाढ़े क्यों न जरें।" से भी प्रतिशोध का ऐसा आक्रोशपूर्ण चित्र नहीं उभर पाया है जैसा मगही के उपर्युक्त लोकगीत में ।

चौहट या नाट्यगीतों में सौन्दर्य का अद्वितीय चित्रण अत्यंत मन मोहक एवं चक्षु तथा कर्णप्रिय होता है। भादों की भयावनी रात्रि में मगध प्रदेश की रमणियाँ चौहट अभिनय कर गायन प्रारम्भ करती है तो प्रिय के साथ नवोढ़ा और प्रौढ़ा के साथ वृद्धाएँ भी बरबस दर्शक के रूप में खीचकर गली-कूचे में पहुँच जाती है जहाँ सुनती है -.

गोरी के केसिया रूआ के फाहा, गोरी चोटिया के गुहाना छोड़ दे,
गोरी के दँवता खीरा के बीया, गोरी मिसिया के लगाना छोड़ दे।

इन पँक्तियों का साहित्य सौन्दर्य किसी भी शिष्ट साहित्य से न्यून नही है। गोरी की केश राशि का उपमान रूई का फाहा है जिसके लिए दूरारूढ़ कल्पना की आवश्यकता नही पड़ी न सायास प्रयोग करना पड़ा बल्कि यह सहज स्वभाविक अभिव्यक्ति है । यहाँ प्रस्तुत और अप्रस्तुत में रूपाकृति की समानता भी नहीं, हैं लेकिन गुण की समानता पर ध्यान रखा गया है। यहाँ रूई के फाहे और केश रूप में साम्य नहीं, विरोध है फिर भी यह कितना सटीक और भाव सवल है। उसका केश कितना हल्का, मुलायम, लुभावना और बिखरे (रूई के सारे गुण) हैं कि सम्वेदनशील कवि उसमें किसी तरह का व्यवधान या साज-सज्जा नहीं देखना चाहता । चोटी गूंथने से केश का स्वभाविक

सौन्दर्य नष्ट हो जायगा। इसीलिए लोककवि वर्जित करता है कि गोरी चोटी गूंथना छोड़ दे । केश राशि के साथ रूई के गुणकर्म साम्य दिखाकर कवि ने अपनी अदभुत् भाव सवलता का परिचय दिया है। इसी संदर्भ में दाँत के उपमान रूप में खीरा के वीज का प्रयोग सौन्दर्य के गुण कर्म का ही द्योतक है। गौरवर्णी तन्वंगी नायिका के दाँत खीरे के बीज की तरह लम्बे, पतले और चमकीले हैं। उसपर किसी तरह के प्रसाधन की आवश्यकता नहीं । यदि दाँतों को मीसी आदि से सँवारने का प्रयास किया गया तो उसका अद्वितीय प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट हो जायगा। अतः भावुक कवि उसे सौन्दर्य -प्रसाधान की वर्जना करता है। प्रायः शिष्ट कवि उपमेय के साथ उपमान को प्रस्तुत कर छोड़ देता है। परंतु यहाँ लोककवि ने केवल सम्वेदना को उकेर कर छोड़ा नहीं है बल्कि सांकेतिक मंत्रणा भी देता है। जिस प्रस्तुत के प्रति कवि के मन में सम्वेदना जगी और उसका सादृश्य अन्वेषण किया, वह वहीं रूक नहीं गया वल्कि सम्वेदना से स्फूर्त दया के अनुकूल व्यापाररत भी हो गया, परिणाम स्वरूप उसे नेक मंत्ररण देनी पड़ी । ऐसे ही रचनाकार कवि मनीषी और स्वयंभू होते हैं। यह कार्य कबीर जैसे लोककवि कर सकते हैं। स्वतः स्फूर्त लोकगीतों में ऐसे सौन्दर्य-बोध सर्वत्र मिलते हैं, कितना कहा जाय "मन मति रंक मनोरथ राउ।"

आलोचकों में कभी-कभी भ्रम हो जाता है कि काव्य में प्रतीक और बिम्ब विधान आधुनिक शिष्ट साहित्य की देन है परंतु परम्परित मगही लोकगीत में इसका प्रचुर प्रयोग मिलता है। मगही नाट्यगीतों में ध्वनिबिम्ब और रूपबिम्ब के अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनमें लोकतत्व की प्रचुरता रहती है, यथा -

"सुखल नदिया फफा हई हे बगुली, कि हुन-हुन गे बगुली, कि ठुन गे बगुली ।"
यहाँ 'फफाना' और हुन-हुन, ठुन-ठुन की ध्वनि से अचानक बाढ़ आजाना और बगुली की रूलाई की ध्वनि कान में प्रतिष्ठापित होने लगती है। ऐसे ध्सनिबिम्ब अनेक लोकगीतों में प्रतिबिम्बित होते है।

"मोटे-मोटे लिटिया बनइहें गे धोविनियाँ,
से हाय धोबिन बिहने जैबउ धोबी घाट ।"
और- "नदी के बात पर छमकल बाटी, चार चौहट नौ गागरी,"

प्रथम पँक्ति में ध्वनिबिम्ब से रूपविम्ब उभरने लगता है और दूसरे उदाहरण में 'छमकल बाटी' से रूठी हुई औरत की चाल की ध्वनि बिम्बित होती है। इस प्रकार मगही

गीतों में रूपबिम्ब के सैकड़ो उदाहरण मिलते हैं। यहाँ रूप और दृश्य विम्ब का एक दृष्टात-

बरहमनवा छौड़ा पुत्ता भोरवले होतई नऽ,
अगे माई पोथिया पढ़ौते होतई नऽ,
अगे माई सेनूरा भुड़कौले होतई नऽ,
अगे माई कजरा कजरौटे होतई नऽ,
चलनीभर सुता काट लऽ लाखों,
ठकनी भर माड़ पी लऽ लाखों,
तलवा न खुले तलैया गे माई,
कने भुलैले ननदिया गे माई,
देहरी बइठले ननदोसिया गे माई,
कउनी जबबिया लगैबई गे माई।"

इन गीतों में बिम्ब विधान के साथ ही लोकतात्विक सौन्दर्य भी जुड़ा है जो परम्परित लोक सांस्कृतिक तत्वों से सम्पुटित है। "ननद के बात पर छमकल बाटी चार चौहट नौ गागरी" दिहुली नाट्यगीत की इस पँक्ति में चार चौहटं अर्थात् साढ़े चार (४½) और नौ गगरी का अर्थ ६ घड़े । यह विलक्षण और सांकेतिक माप विधि है (४½+६ = १३½) इसका रहस्य एक लोक गायिका से पता चला। उसने बलया कि गीत गाते समय गायिकाओं के दो दल होते हैं - एक श्वसुर पक्ष का और दूसरा नैहर पक्ष का। श्ससुर पक्ष की स्त्रियों के द्वारा बुलाये जाने पर नायिका (दिहुली) छमककर (रूठकर) तेजी से १३½ साढ़े तेरह हाथ दूर भाग जाती है और नैहर पक्ष की स्त्रियों के द्वारा बुलाये जाने पर वह दौड़कर १३½ साढ़े तेरह हाथ जल्दी पार कर वहाँ (नैहर पक्ष के पास) पहुँच जाती है। ऐसा ही विशिष्ट सौन्दर्य प्रतिपादित करनेवाला लोक तत्व 'केवटी' नाट्य गीत में संगुम्फित है। इसमें "लाल खड़ाऊ, पीयर धोती-मार गजाधर मछरी" का प्रयोग आया है ।

मगध के लोकजीवन में 'लाल खड़ाऊ' और 'पीली धोती' सौन्दर्य सूचक के साथ ही शुभ सूचक भी है। शुभ के साथ ही उसे अहिंसक कार्य व्यापारों में भी ग्राह्म माना जाता है। विवाह गीतों में तो इस प्रसादन का सर्वत्र प्रयोग मिलता है, यथा- "लाली खड़ऊवाँ चढ़ि आवथी सोखादेवा, हाथे सोबरन केरा साटी।" अतः इस परम्परित मान्यतानुसार गजाधर ने लाल खड़ाऊँ और पीनी धोती पहन कर मछली बझाई है। अतः मछली बेचने वाली उसकी पत्नी (केवटी) ग्राहक को आकृष्ट करने के लिए बार-बार

उक्त परम्परित लोकतत्व को दुहराती हैं। इससे पता चलता है कि हमारी संस्कार जन्य पारम्परिक मान्यताएँ और सांस्कृतिक धार्मिक तत्व लोकगीतों की गरिमा और सौन्दर्य को विवर्द्धित करते हैं। यहाँ सदा स्मरणीय है कि लोकगीतों में नारी या नर के रूप सौन्दर्य से अधिक उसका शील-सौन्दर्य चित्रांकित हुआ है। लोकगीतों की तरह मगध के दृष्टिकूटों, पहेलियों और नाट्यों में भी लोकतात्विक सौन्दर्य के अनूठे विधान मिलते हैं जो हमारे अन्यग्रंथों के उपजीव्य हैं ।[1]

(2) मगही लोकगीतों में भाव-सौन्दर्य

मगही लोकगीतों में लोकतात्विक सौन्दर्य गीतों के भावपक्ष और कलापक्ष-दोनो मे चिपके (संशिलिष्ट) रहते हैं जिसकी स्थापनाएँ उपरिवत की गई । यह हमारी व्यक्तिगत विचारणाएँ हैं। इससे सहमति या असहमति सुधी लोकवार्त्ता विदों की हो सकती है।

प्रस्तुत प्रसंग में परम्परागत काव्य के भावपक्ष के अंतर्गत चरित्र, रस और वस्तु (यहाँ आस्था या उद्देश्य से पूरित प्रसंग) ही विवेच्य है। प्रथमतः लोकगीतों के भावपक्ष में चरित्र का स्थान आता है । मगही लोकगीतों मे मुख्यरूप से दो तरह के चरित्र आते हैं (१) मनुष्य वर्ग और (२) मनुष्यत्तेर वर्ग। पुनः मनुष्य वर्ग में स्त्रीवर्ग और पुरूप वर्ग आते हैं। मनुष्येत्तर वर्ग में देववर्ग एवं प्रकृति संबंधी पात्र होते हैं, देववर्ग में देवी और देवता दो विभाजन किए जा सकते हैं। प्रकृति में गिरिवन, पशु और सारे प्राकृतिक तत्व सम्मिलित रहते हैं। उपर्युक्त सारे चरित्र लोकगीतों में सजीव की तरह समाहित होते हैं ।

मगध के लोकगीतों में स्त्रीवर्ग के चरित्रों में प्रायः दो रूप मिलते हैं - स्वकीया और परकीया । सामान्या का बड़ा कम प्रयोग मिलता है इसमें कसबिन और रंडी-पतुरिया के नाम आते हैं जो नृत्यकर अपना भरण-पोषण करती हैं जो सामान्या की तरह चित्रित मिलती है। मगही गीतों में सामान्या का काम-व्यापार नहीं दीखता। ऐसी नायिकाएँ विदेशी नायक को फँसा कर उसकी कमाई से अपना लक्ष्य सिद्ध करती हैं। ऐसी स्त्रियाँ परकीया के अंदर ही आ जा सकती है। अतः लोकगीतों में प्रायः सामान्या वा वर्णन विरल मिलता हैं, अधिकांश चित्रण स्वकीया का मिलता है। स्वकीया में मुग्धा

नोटः- लोक मानस और लोक प्रवृत्तियों के आधार पर ही लोकतात्विक सौन्दर्य वर्णन किया गया है। अतः "लोक मानस और लोक प्रवृतियों" की व्याख्या के लिए हमारी पुस्तक "मगध की लोक कथाएँ : अनुशीलन" खण्ड द्रष्टव्य है। वहाँ उसकी विशिष्ट व्याख्या है। अतः पुनरूक्तियों से वचन के लिए इस प्रसंग मे उसकी विवेचना नहीं की गई हैं।

१. दे. हमारा लोक नाट्य एवं 'लोकोक्ति साहित्य के ग्रंथ।

और प्रगल्भा का चित्र बड़ा अनूठा मिलता है --

रोज-रोज बोले कोइली भोर भिनसरवा,
आज काहे बोले अधिरतिया हो रामा-कोइली मीठी बोलिया

इस गीत में मुग्धा का चरित्र प्रतिशोधात्मक हो गया है (इसका पूर्व में वर्णन हो गया है) यहाँ प्रगल्भा मुग्धा नायिका की दूरारूढ़ कल्पना चित्रित है जो कोयल को ही नहीं बल्कि उसके निवास, सघन बाग को ही उजाड़ देने पर उतारू है चूंकि इसी की बोली सुनकर उसका प्रिय सवेरा जानकर उसको त्याग कर बाहर चला जाता है। स्वकीया के आदर्श चरित्र का दर्शन झूमरगीतों में प्रायः होता है । चम्पिया चौहट लोकगीत में उसके आदर्श शील का बड़ा यर्थाथ चित्रण हुआ है जिसको उपरिवत वर्णन किया जा चुका है। ऐसी शील सम्पन्न नारियों के चित्रण से मगही लोकगीत भरा पड़ा है ।

इसी प्रकार पर कीया के भी बड़े अनूठे और विस्तृत चित्र गीतों में मिलते हैं। परकीया प्रायः प्रगल्भा और अभिसारिका होती है जिसे किसी बगीचा, नदीतट या ग्रामीण खेतों की आल पर नायक के साथ प्रेमालाप के लिए जाना पड़ता है। वह प्रायः पनघट या नदी तटपर नोंक -झोंक करते पाई जाती है ।

जमुना किनारे कन्हइया घटवरवा हो रामा,
एक हाथे घइला अलगावे हो रामा,
दोसर हाथे अँचरा धर विलमावे हो रामा,

निम्नगीत में पर कीया की चातुरी का वर्णन है । नवोढ़ा वधू के यहाँ उसका पूर्व मित्र मिलने के लिए पहुँचा तो उसकी सास ने उसके बारे में पूछा दिया। इस पर परकीया सास को कहती है -

"नाही मोरा सासुजी भाई रे भतिजवा, नाहीं मोरा नन्हे के इयार,
मोरा नइहरवा सासु गाय रे भइसिया, से हमे रघुवर गइया रे चराय।

रघुवर मेरा भाई, भतीजा या मित्र नहीं बल्कि यह गोरखिया है। इस प्रकार उसका यार गोरखिये के रूप में वहाँ रहकर अपनी प्रेमिका से सम्पर्क करने लगा।

इसी प्रकार एक लोकगीत में योगी वेश धारी व्यक्ति नायिका के सम्पर्क में आता हैं तभी उसका पति विदेश से आ पहुँचता है। उस नायिका ने योगी को आग लेने वाले के रूप में घर से बाहर कर दिया और सचेत कर दिया कि जब वह गाँव से बाहर

वटवृक्ष के नीचे धुनी रमाते समय बासुरी बजावेगा तो वह वहाँ पहुँच जायगी -

हथवा में लेहूँ जोगी गोइठा रे चिपरिया हो राम,
अगिया बहनवे जोगिया निकलई हो राम,
जोगिया बरतर बंसिया बजइहँऽ सबद सुनी अयबो हो राम,
बारह बरस के बेटिअवा कतेक बुध छेरलऽ हो राम।

परकीया की ऐसी चातुरी भरी गाथा से लोकगीत का सौन्दर्य परिपूर्ण मिलता है। इसी क्रम में प्रोपितपतिका और खण्डिताओं के चरित्र भी द्रष्टव्य हैं। इनके चित्रण में जहाँ वियोग का दारूण चित्रण मिलता है वहाँ कटी-कटी करूण चित्र भी उभरने लगता है। बारहमासा, छमासा और चतुर्मासा तो प्रोषितपतिका के विरहजन्य दुखातिरेक का मानो अलबम है जो प्रायः सभी जनपदीय बोलियों के गीत में मिलता है। निम्न मगही लोकगीत में प्रोषितभर्तिका की विरहाग्नि सहन से परे हो जाती है तो वह प्रगल्भा हो जाती है -

लगे चुनरी में दाग बुझाऊ कैसे, लगे चुनरी में दाग बुझाऊ कैसे?
पिया परदेस देवर घर लरिका, सुतल भैंसुर जगाऊँ कैसे? लगे चुनरी ....

बारहमासा में प्रोषितपतिका का विरह करूण रस को स्पर्श करता चलता है।

भादों हे सखि रैनी भेयावन, न कोई आवे न जाय हे,
लौका जे लौके रामा, बिजुरी जे चमके, बिना पुरूख के नारी हे,

....

आयल बसंत रामा फुलल टेसुबन, तापर भँवरा लोभाय हे,
कारी कोइलिया रामा जोर पुकारे, ई दुख सहलो न जाय हे।

वियोगिनी बारहों महीने प्राकृति दृश्यों के साथ अपने को समायोजित कर असह्य दुख का अनुभव करती है पर विदेशी पति जल्द आता नहीं ।

मगही लोकगीतों में खण्डिता का भी यत्र-तत्र चित्रण मिल जाया करता है, ऐसे चित्रण प्रायः 'कजरी' में मिलता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है

हमरे पियाजी के कुर्त्ता कसाना, कुर्त्ता के कालर उलटाना,
कहवाँ गँवलऽ सारी रात, सच्ची बोली बोलऽ जी,

कसे हुए कुर्त्ता और उसका कालर उलटजाना पति के अन्यत्र रात्रि गँवाने का भेद खोल देता है। पत्नी सच्चाई के साथ उत्तर चाहती है । यह खण्डिता नायक में सम्भोग चिन्ह

को देखकर मर्म को समझ जाती है। इन कतिपय नारी-चित्रों के बावजूद मगही लोक गीतों में स्वकीया और पतिव्रता स्त्री का शीलाचरण ही सर्वत्र दीखता हैं। अतः उसके वर्णन-विस्तार की आवश्यकता नहीं ।

मगही लोकगीतों में पुरूष चरित्र मुख्यतः दो प्रकार के मिलते हैं। उदात्त और धीरललित। लोकगाथाओं के नायक प्रायः उदात्त प्रकृति के होते हैं परंतु सामान्य पुरूष धीरललित के अन्तर्गत आते हैं। ऐसे जीव वड़े सौखीन, श्रृंगार पंसद करने वाले, नौकरी पेशा करनेवाले और कृषि कर्म करनेवाले होते हैं। आधुनिक लोकगीतों में स्कूल-कॉलेज में पढ़ने वाले छात्र भी लोक गीतों के पात्र बनने लगे हैं। कुछ लम्पट चरित्रों का भी दर्शन हो जाता है परंतु ऐसे चरित्र विरल ही दीखते हैं।

स्कूल से पढ़कर भूखे-प्यासे आनेवाले छात्र के लिए नवोढ़ा की उक्ति प्रेमाधिक्य का परिचायक है -

हाली-हाली जेवना लगइहँऽ हे ननदी, इस्कुलिया से पिअवा भुखासल आवेला।
हाली-हाली सेजिया लगइहँऽ हे ननदी, इसकुलिया से पिअवा निनसल आवेला।

नायिका मुग्धा और प्रगल्भा है और कर्मनिष्ठ छात्र है परंतु निम्नगीत में पत्नी अपने प्रिय के लिए खाने-पीने और सोने की तैयारी करती है उधर उसका पति दक्षिण देश की यात्रा कर रहा है। यहाँ निष्ठुर नायक का चित्र मिलता है ।

नऽ सुने जी मोरा राजा नगीनवाँ,
सोने के थारी में जेवना परोसली, जेवनो न जेवे राजा जाहे दखिनवाँ,
चुनी-चुनी कलिया सेजिया लगवली, सेजियो न सोवे राजा जाहे दखिनवाँ,

इस गीत में न जाने किस कारण से नायक प्रिय पत्नी द्वारा परोसा खाना छोड़कर दक्षिण देश के लिए प्रयाण करता है परंतु निम्न लोकगीत में घर छोड़ने का कारण स्पष्ट है। नायक देश प्रेम से पूर्ण होकर काँग्रेस में भर्ती होने जाता है ।

पटना सहर में पिया पलटन भेले, खाखी रंग के टोपी पेन्हावे कंगरेसिया।
माई रोवे एहरी, बहिन रोवे देहरी, सेजिया सुतल धानी रोवे कंगरेसिया ,
माई-बहिन ला टीका भेजे, धानी ला भेजे पतिया कंगरे सिया।

कहीं बेमेल विाह में पति छोटा रहता है तो स्त्री गहने बेचकर गाय खरीदती है, उसे दूध पिलाकर जोड़ी दार लेती हैं ।

सुतली में चुनों घरवा देखली सपनवाँ हो,
सपना में देखली बलमुआ बड़ा छोट हो.
बेचबो में मांग के टीका किनबो धेनु गइया हो,
दूधवा पिया-पिया के करबो जोड़ी दरवा हो ।

छोटे बालक को तो दूध पिलाकर जोड़ी दार बना लिया जा सकता है परन्तु 'हर जोतवा' बालम को नौकरी करने वालों की बराबरी कैसे करवाई जा सकती है ? इसलिए नायिका बाबा-मइया और अगुआ (Mediator) को गाली देती है -

"सतीजी, ससुर-भैंसुर साहब के नोकरिया, पिया हरजोतवा नऽ,
सतीजी बढ़का गारी देबइन बाबा-भइया के, पुतवा चिबौना अगुइया के नऽ।

एक चतुर नायिका अपने प्रिय के रूप-रंग को बड़ी चालाकी से पूछ लेती है -

कउने रंग डोलिया कउने रंग ओहरवा, कउने रंग हो ननदों तोहर भइया?
लाली रंग डोलिया सबुज रंग ओहरवा, साँवरे रंग हो भउजी मोरे भइया।

यहाँ स्मरणीय है कि मगही लोकगीतों में जितना स्त्री स्वभाव और चरित्र का व्यापक वर्णन मिलता है उतना पुरूषों का नहीं मिलता है। स्त्री ही पुरूष के बारे में अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त करती है, उसी के आधार पर उनके चरित्र का थोड़ा परिचय मिल जाता है। यह ठीक है कि लोकगाथाओं में पुरूष चरित्र का पूर्ण विकास मिलता है। स्फूट लोक गीत तो भाव-प्रवणता में सराबोर रहता है, उसे चरित्रांकन की फुर्सत कहाँ. लोकगीतों के मानवेत्तर वर्ग में देवी-देवता और प्राकृतिक उपादानों का चित्रण मिलता है । देवी-देवता में देवीमाई और महादेव के गीत अत्यधिक मिलते है, फिर सूर्य षष्ठी के गीत मिलते हैं। राम और कृष्ण के गीत कुल देवता और ग्राम देवता के गीत भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। प्राकृतिक देवों में सूय, चन्द्र, वायु, गंगामाई, गिरिवन और वृक्षादि के गीत प्रायः मिलते हैं।

प्रस्तुत देवीगीत में सप्तमातृकाओं का मानवीय रूप में चित्रण किया गया है -

" मिलहुँ सातो बहिनियाँ ये भइया, ये बहिनियाँ ये मइया ।
मइया मिली-जुली बगिया देखन जायब ये मइया

नीमवृक्ष के नीचे देवी माँ की चौरी उनकी बाग-वटिका-प्रियता का ही चिन्ह है। जब मातृकाएँ नैहर से श्वसुराल जाती हैं तो रोती कलपती हैं तब उनके साथ भैरो भाई को

सान्त्वना के लिए जा पड़ता है - यह रीति आज भी प्रचलित है ।

मत तुहूँ रोवऽ मइया मत तुहूँ कानऽ हे,
संगवा में जयुन तोरा, भैरो छोटा भाई हे ।

सातो मातृकाओं के साथ भैरो भाई का जैसा वर्णन आया है वैसा ही पार्वती के साथ उनके पति शिव का भी चित्रण मिलता है। पार्वती-शिव का दाम्पत्य और उनका अटूट साहचर्य सौभाग्यवती नारियों का आदर्श है, उनकी कामना पूर्ति के लिए सैकड़ों लोकगीत मगध में प्रचलित मिलते हैं, एक उदाहरण -

गौरा के मांग में टीका सोभे, सिव के सोभे बगल झोरी, सिकसिक पर सोभे लाल धजा।
गौरा के गला में सिकरी सोभें, सिव के सोभे कंठ तुलसी सिकसिक पर सोभे लाल धजा।

देवाधिदेव शिव का चरित्र लोकगीतों में प्रायः अक्षय सौभाग्य प्रदाता के रूप में चित्रित मिलता है। ऐसे गीत विवाह, शिवरात्रि, करमा,तीज आदि अवसरों पर स्त्रियाँ गाकर अपने अमर सौभाग्य की कामना करती है।

राम गीतों में राम का वैवाहिक चित्र प्रायः मगही लोकगीतों में उभरता देखा जाता है तथा सीता के साहचर्य एवं कलंक की बात भी आती है। अतः लोकजीवन का राम दाशरथी राम से कुछ भिन्न अपने लोकतत्व के साथ जुड़कर आते हैं ।

"राम जाले वन सीता जाने को तइयार हे" शीर्षक गीत में माता सीताको समझाती है तो वह उत्तर देती है -

खबई में बनफल पीबइ ठंठा पानी हे,
सोबई में कुस चटइया जनक दुलारी हे ।

माता के ममझाने पर भी अंततः जंगल पयान कर जाती है। लेकिन एक और गीत में राम वन गमन में सीता एक अपरिचिता की तरह मिलती है और बालविवाह के कारण अपने पति राम को पहचानती नहीं। लेकिन जब रहस्य खुलता है तव डोली-कहार भेज कर सीता को अयोध्या पहुँचाने का उपक्रम किया जाता है।

सीता जव राम को बटोही रूप में पीने के लिए जल देती है तो राम उससे परिचय पूछते है तब सीता बतलाती है -

राजा जनकजी के बेटी हिवऽ, दसरथ कुलवा विआह जी,
अपन सामीजी के नउवो न जानी लछुमन देवरा हमारजी,

एतना बचनियाँ जब सुनलन राजा रामचन्द्र, धाई-धाई खोजले कहारजी.
देबवऽ कहरवा भइया डाली भर सोनवा, सीता अयोध्या पहुँचाव जी.

रामकथा में अनेकानेक लोकतत्व जुड़ते गए हैं और गीतों में मुख्य रूप से लोकतात्विक अभिव्यक्ति ही प्रधान हो जाती है ।

मगध सूर्य क्षेत्र माना जाता है। यहाँ सूर्य षष्ठीव्रत पवित्रता और विधि-विधान से मनाया जाता है जिसमें सूर्योपासना के सैकड़ो गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में सूर्य का लोकतात्विक रूप हमारे सामने अभरता हैं। सूर्य केवल पुरूष रूप में स्वास्थ्य और समृद्धि प्रदायक नहीं बल्कि छठी माता के रूप में भी वर्ण्य है, यथा -

छोटी-मुटी छठी मइया भूइया लोटे केस हे,
देखते सोहावन लागे बचन अपार हे।

लम्बी केशराशि से युक्त किशोरी छठी माता देखते सुहावन लगती है ।

पुनश्च- *"चारों पहर राती जलथल सेविला, सेविला चरण तोहार*
छठी मइया इरसन देहुँ अपान, जगतारन मइया"

सेविका छठी माता के दर्शनार्थ चारों पहर उनके चरण की सेवा करता है और जगत के उद्धारक (सूर्य) से मनोकामना की पूर्ति चाहता है। इस सम्पूर्ण गीत में अन्न-धन और पारिवारिक सौख्य की कामना की गई है ।

लेकिन उपर्युक्त एक-दो उदाहरण के अतिरिक्त सूर्य का पुरूष रूप ही चित्रित मिलता है जिसमें सूरजमल, जगतारण, आदित्य दिनानाथ या दीनानाथ नाम की सार्थकता दीखती है, तथा

सजलो दउरवा सूरूज के, बलका देले जुठीआय,
बलका के मइया हथवा जोड़ले, सूरूज होवऽ न सहाय,
पुनश्च- *चढ़ते कतिकवा जी दीनानाथ धड़की समाय,*
कउची से पुरइबो जी दीनानाथ तोहरो के आस,

लोकगीतों में सूर्य के स्वभाविक गुण-कर्म का भी वर्णन यत्र-तत्र मिल जाता है परंतु उसमें उनका मानवीय कारण वर्त्तमान रहता है। लोकगीतों का यह तत्व सार्वकालिक और सार्वदेशिक है ।

कहवाँ में उगलन सूरूज देवा, कहवाँ भेले इंजोर,
सरग में उगले सूरूज देवा, धरती भेले इंजोर,
तड़के बोलथी सूरूज देवा, के करिहें छठ हमार,
बिनती से बोलथी दुलरइतों बाबू, हम करबो छठ तोहार ।

सूर्य गीतों में सूर्य का चरित्र बड़ा तेजस्वी और उदात्त रहता है जिससे संसार और अर्तार्थी जनों का कल्याण होता है।

देव गीतों में कुलदेवता और ग्राम देवता का वर्णन बड़े विस्तार के साथ होता है। ये देवता प्रायः अपने सेवकों को कष्ट से उबारते हैं और सौख्य प्रदान करते है, जैसे -

बधवा रे छोट बधवा, बधवा घनेहर हे,
ताही बाधे घुरथी सोखा देवा, जन लोग नीन सोवे हे ।

बाध (गाँव से दूर खेत) छोटा है लेकिन फसल से (घनेहर)पूर्ण उस बाध की रखाली 'सोखादेव' करते हैं और उनका सेवक सुसख नींद मे सोता है।

'सोखादेव' कुलदेवता हैं जो मगध निवासी के घर में रहते हैं। इसी प्रकार 'परमेसरी' भी देवता हैं जिनकी पीढ़ी लिपकर पूजा की जाती है -

अगे माई पार गंगा केरा चिकनी मटिया
अगे माई ओही मटिये लिपली परमेसरी देव चउरिया ।

लोकगीतों में कुलदेवता की कोमलता और उनके पुष्पप्रियता का भी वर्णन मिलता है। सेवक कुश की चटाई देता है सिजपर उनकी नींद नहीं आती तो भक्त कहता है कि जहाँ फूल है वहाँ बाघ रहता है। इसपर सोखा देव कहते हैं कि बाघ को मारूँगा और डमरू बजाकर फूल तोड़ लाऊँगा (डमरू शिव का वाद्य यंत्र है और वाघम्बर उनकी पोशाक है, गीत में अन्तर्गर्भित भाव यह भी विदित होता है)

कुस के चटइया चढ़ी बोलथी सोखादेवा, फूल बिनु निंदियो न आय।
जउन देसे अहोवा फूलवा फुलायल ओही देसे बघवा बहुत ।
बघवा के मारब बधिनियाँ राँड़ होयत, डमरू बजाई फुलवा तोड़ब।

इन देव विषयक चरित्रों के अतिरिक्त यक्ष, किन्नर नाग के चरित्र भी लोकगीतों के विषय रहते हैं। नागपचमी में तो नाग के गीत गाकर उसकी पूजा की जाती है और

एतना बचनियाँ जब सुनलन राजा रामचन्द्र, धाई-धाई खोजले कहारजी,
देबवऽ कहरवा भइया डाली भर सोनवा, सीता अयोध्या पहुँचाव जी.

रामकथा में अनेकानेक लोकतत्व जुड़ते गए हैं और गीतों में मुख्य रूप से लोकतात्विक अभिव्यक्ति ही प्रधान हो जाती है ।

मगध सूर्य क्षेत्र माना जाता है। यहाँ सूर्य षष्ठीव्रत पवित्रता और विधि-विधान से मनाया जाता है जिसमें सूर्योपासना के सैकड़ो गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में सूर्य का लोकतात्विक रूप हमारे सामने अभरता हैं। सूर्य केवल पुरूष रूप में स्वास्थ्य और समृद्धि प्रदायक नहीं बल्कि छठी माता के रूप में भी वर्ण्य है, यथा -

छोटी-मुटी छठी मइया भूइया लोटे केस हे,
देखते सोहावन लागे बचन अपार हे।

लम्बी केशराशि से युक्त किशोरी छठी माता देखते सुहावन लगती है ।

पुनश्च- *"चारों पहर राती जलथल सेविला, सेविला चरण तोहार*
छठी मइया इरसन देहुँ अपान, जगतारन मइया"

सेविका छठी माता के दर्शनार्थ चारों पहर उनके चरण की सेवा करता है और जगत के उद्धारक (सूर्य) से मनोकामना की पूर्ति चाहता है। इस सम्पूर्ण गीत में अन्न-धन और पारिवारिक सौख्य की कामना की गई है ।

लेकिन उपर्युक्त एक-दो उदाहरण के अतिरिक्त सूर्य का पुरूष रूप ही चित्रित मिलता है जिसमें सूरजमल, जगतारण, आदित्य दिनानाथ या दीनानाथ नाम की सार्थकता दीखती है, तथा

सजलो दउरवा सूरूज के, बलका देते जुठीआय,
बलका के मइया हथवा जोड़ले, सूरूज होवऽ न सहाय,

पुनश्च- *चढ़ते कतिकवा जी दीनानाथ धड़की समाय,*
कउची से पुरइबो जी दीनानाथ तोहरो के आस,

लोकगीतों में सूर्य के स्वभाविक गुण-कर्म का भी वर्णन यत्र-तत्र मिल जाता है परंतु उसमें उनका मानवीय कारण वर्त्तमान रहता है। लोकगीतों का यह तत्व सार्वकालिक और सार्वदेशिक है ।

कहवाँ में उगलन सूरूज देवा, कहवाँ भेले इंजोर,
सरग में उगले सूरूज देवा, धरती भेले इंजोर,
तड़के बोलथी सूरूज देवा, के करिहें छठ हमार,
बिनती से बोलथी दुलरइतों बाबू, हम करबो छठ तोहार ।

सूर्य गीतों में सूर्य का चरित्र बड़ा तेजस्वी और उदात्त रहता है जिससे संसार और अर्तार्थी जनों का कल्याण होता है।

देव गीतों में कुलदेवता और ग्राम देवता का वर्णन बड़े विस्तार के साथ होता है। ये देवता प्रायः अपने सेवकों को कष्ट से उबारते हैं और सौख्य प्रदान करते है, जैसे -

बधवा रे छोट बधवा, बधवा घनेहर हे,
ताही बाधे घुरथी सोखा देवा, जन लोग नीन सोवे हे ।

बाध (गाँव से दूर खेत) छोटा है लेकिन फसल से (घनेहर)पूर्ण उस बाध की रखाली 'सोखादेव' करते हैं और उनका सेवक सुसख नींद मे सोता है।

'सोखादेव' कुलदेवता हैं जो मगध निवासी के घर में रहते हैं। इसी प्रकार 'परमेसरी' भी देवता हैं जिनकी पीढ़ी लिपकर पूजा की जाती है -

अगे माई पार गंगा केरा चिकनी मटिया
अगे माई ओही मटिये लिपली परमेसरी देव चउरिया ।

लोकगीतों में कुलदेवता की कोमलता और उनके पुष्पप्रियता का भी वर्णन मिलता है। सेवक कुश की चटाई देता है सिजपर उनकी नींद नहीं आती तो भक्त कहता है कि जहाँ फूल है वहाँ बाघ रहता है। इसपर सोखा देव कहते हैं कि बाघ को मारूँगा और डमरू बजाकर फूल तोड़ लाऊँगा (डमरू शिव का वाद्य यंत्र है और वाघम्बर उनकी पोशाक है, गीत में अन्तर्गर्भित भाव यह भी विदित होता है)

कुस के चटइया चढ़ी बोलथी सोखादेवा, फूल बिनु निंदियो न आय।
जउन देसे अहोवा फूलवा फुलायल ओही देसे बघवा बहुत ।
बघवा के मारब बधिनियाँ राँड़ होयत, डमरू बजाई फुलवा लोड़ब।

इन देव विषयक चरित्रों के अतिरिक्त यक्ष, किन्नर नाग के चरित्र भी लोकगीतो के विषय रहते हैं। नागपचमी में तो नाग के गीत गाकर उसकी पूजा की जाती है और

उसे दूध-लावा पिलाया जाता है ।

पनिया के ओरे-ओरे चरऽ हई हो नऽ,
ताही रे बीचे बसऽ हई नगिनिया हो नऽ, ताही रे बीचें ।
नगवा से पूछऽ हई नगिनियाँ हो नऽ,
से हमे जयबो बीजूबन चरनियाँ हो नऽ, से हमे जयबो, आदि ।

लोककथाओं में नाग का वड़ा ऐश्वर्य पूर्ण वर्णन मिलता है और नागकन्या अद्वितीय सुन्दरी रहती है जिससे विवाह के लिए मानवपुत्र लालायित रहता है। इसी प्रकार गंगा माई के गीतों में गंगा की चारित्रिक विशेपताएँ उल्लिखित हैं -

भोरे-भोरे होवत उमड़ल लहरिया, दिही नऽ दरसन अपान गंगा मइया,
मांगू-मागू तिरिया कवन फल मांगू जे तोरा हिरदा में समाय, गंगा मइया,

गंगा माई प्रत्यक्ष होकर भक्तों को मनोवाँछित पूर्ण करती है ।

इन देवों के अतिरिक्त गीतों में मानवेत्तर पात्रों में तुलसी, आम्रवृक्ष, वटवृक्ष, गिरिवन, नदी में सप्राणता वर्त्तमान रहती है और मनुष्योचित कार्य व्यापार करते पाये जाते हैं। लोकगीतों का यह लोकतात्विक विवेचन अद्वैतवाद का पोपक है जिसमें भारतीय संस्कृति की समन्वयवादिता वर्त्तमान रहती है। लोकगीतों के ये तत्व सम्पूर्ण भारत की जनपदीय बोलियों में समान रूप से वर्त्तमान मिलते हैं केवल भौगोलिक परिवेश के कारण थोड़ी भिन्नता अवश्य प्रतीत होती है। संस्कृति के इसी समान तत्व के कारण हमारे देश की भावात्मक एकता सदा अक्षुण्ण बनी रहती है। यहाँ विस्तार दोष से बचने के लिए अन्यान्य बोलियों के लोकगीतों की तुलनात्मक विवेचना अनपेक्षित है ।

मगही लोकगीतों में रसोद्रेक

लोककाव्य में भाव-सौन्दर्य के अंतर्गत रसोद्रेक या रसाभास का अवलोकन न करना च्युत-संस्कृति दोष माना जा सकता है। वस्तुतः लोकगीतों की भावभूमि पर ही लोकसंस्कृति के उपादान वर्त्तमान रहते है और यही भावभूमि साधारणीकृत होती रहती है और रसोद्रेक में सहायक बनती है। यह ठीक है कि लोकगीतों में शास्त्रीय रस निष्पति के सारे अवयव वर्त्तमान न हो परंतु उसकी अनुभूति में कोई व्यवधान नहीं होता है। यहाँ रस अंतःसलिला की तरह गीतों की आत्मा में रसा-बसा रहता है। किसी रसशास्त्री को इनगीतों में "भावनुभाव व्यभिचारी संयोगात् रस निष्पतिः" के अनुसार रस निष्पन्न होता न दीखे तो यह अलग बात है। परंतु उन्हे भी लोककाव्य में रसाभास अवश्य मिलेगा। यहाँ कुछ मगही लोकगीतों में रसानुभूति की जाय।

मगही लोककाव्य में प्रायः सभी रसो का उद्रेक मिलता है परंतु श्रृंगार, करूण, शांत और वीररस की प्रधानता दीखती है। रसराज श्रृंगार तो मानो सर्वत्र पट में धागे की तरह वर्त्तमान रहता है क्योकि मानव जीवन प्रेम या रति से असम्पृक्त कैसे रह सकता है ? रति के बिना सृष्टि विकास की प्रदिया ही बंद हो जायगी और जीवन नीरस हो जायगा। विवाह, द्विरागमन के अतिरिक्त सोहर, जनेऊँ में भी श्रृंगार प्रधान गीत गाए जाते हैं। धार्मिक अनुष्ठान भी इससे अछूता नहीं रहता है। झूमर लोकगगीत और कजरी-पूर्वी तो मानो श्रृंगार के लिए ही रचित प्रतीत होते है। श्रृंगार में भी विप्रलम्भ श्रृंगार का आधिक्य दीखता है। यहाँ मगही लोकगीतों में दोनो प्रकार के श्रृंगार के उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

संयोग श्रृंगार

(१)

लोटा में पनिया लेले, मउनी में चबेनिया, पनिया पीलऽ बालमा,
तोहरों मारतो खरइया, पनिया पीलऽ बालमा।
जेठवा-बैसखिया के तलफी भूम्हिरिया, धूप गवाँ लऽ बालमा,
हमरी टीकवा के छहिया धूप गवाँ लऽ बालमा,
हमरी सिकरी के छहिया धूप गवाँ लऽ बालमा।

(२)

लागे सावन अधिक सुहावन वन में बोलन लागे मोर,
उमड़-घुमड़ के कारी बदरिया बरस रहल घन घोर,

अमवा पर काली कोइलिया बोले, करे पपीहा सोर,
जमुना के तट पर दादुर बोले, वन में नाचे मोर,
वृंदावन में केलि करत है, राधे साम किसोर,

उपर्युक्त दोनो गीतों में संयोग श्रृंगार का रूप मिलता हैं । प्रथम मगही लोकगीत में श्रमजन्य थकावट दूर करने के लिए नायिका लोकजीवन के पात्र मौनी-दौरी में जलखई देती है और अपने श्रृंगार प्रसाधन से प्रिये को अपनी ओर आकृष्ट करती है। हमारी मांगटीका और गले की सिकड़ी की शीतल छाया में आप विश्राम कर लें। सारांश स्पष्ट है। दूसरे गीत में राधा कृष्ण की केलि क्रीड़ा में सावन की प्राकृतिक छटा उद्दीपन का कार्य कर रही है। कोयल, पपीहा और दादुर की बोली नायक-नायिकाओं को काम क्रीड़ा के लिए उप्रेरित करती है। परम्परा जन्य ये उद्दीपन आलम्बन और आश्रय के लिए पृष्ठ भूमि के रूप में चित्रित है ।

वियोग श्रृंगार

यहाँ स्मरणीय है कि मगही लोकगीतों में संयोग से अधिक वियोग श्रृंगार का चित्रण मिलता है। वियोग श्रृंगार के बहुआयामी चित्र से मगही लोकगीत पटा पड़ा है। बारहमासा तो मानों वियोग श्रृंगार का मूर्तिमान स्वरूप है -

“मास असाढ़ गगनधन गरजे, सावन फूलत दवनवाँ हो राम,
भादों रैनी भेयावन लागे, अंगना लागे विदेसवा हो राम,
चइत मास बप टेसू फूले, बइसाख में गरम पवनवाँ हो राम,
जेठ मास तन सूखत घामा, बीत जाहे बारहो महीनवाँ हो राम ।

बारहो महीना नायिका को प्रिय वियोग की अग्नि में जलता रहना पड़ता है। निम्न कजरी में वियोगिनी नायिका की दशा सोचनीय हो रही है ।

आयल सावन के बहार, पिया आये न हमार,
रिमझिम-रिमझिम बरसे कारी रे बदरिया नऽ ।
घटा उठें धन घोर, बिजुरी चमके चहुओर,
बाट सूझे नाही डगर-डगरिया नऽ ।
पिया छाये परदेस, लिखी भेजे न संदेस,
मोहि के याद आवे पिया के सुरतिया नऽ ।

वहे सावन के बेयरिया. सखियन गावे हे कजरिया.
चुनरी सून हमरो नजरिया नऽ।

सावन अपने पूर्ण यौवन में उपस्थित है। काले-काले बादल रिमझिम बरस रहे हैं । घटाटोप घटाओं से विजली चमक रही है। पगडंडियों के साथ सारे राह अवरूद्ध हो गए हैं और ऐसी अवस्था में मेरा प्रिय विदेश में निवास कर रहा है, उस निर्मोही ने कोई पत्र भी नहीं लिख भेजा है। इस पर सर्वाधिक दुखद तो यह है कि सभी सखियाँ सावन के शीतल बयार में कजली गा रही है, इठला रही है और हमारी चुनरी उदास है, नजर शून्य में गड़ी है। वियोगिनी का यह असह्य दुख सहभागिता की अपेक्षा रखता है। लोकगीतों में विप्रलम्भ श्रृंगार का इतना दुखद चित्रण मिलता है कि उसमें कभी-कभी करूण रस का आभास मिलने लगता है। बारहमासा और सावनी लोक गीतों में विप्रलम्भ का ऐसा ही कारूणिक चित्र मिलता है! एक सावनी गीत का अंश -

सावन हे सखि बूँद पड़ेला, पिया गेलन परदेस हे,
अहे पिया-पिया कही रटेला का मिनी, पिया बिनु कुछो न सोहाय जी,
....

आँचर फारि-फारि कोरा कगजवा, नैना कजरवा मसीहान हे
अँउठी-पउठी लिखऽ कैथा खेम कुसलिया, बिचवा में बारलो विजोग जी,
बाट-बटोहिया रामा तुहूँ मोरो भइया, हमरो संदेसा लेले जाहूँ हे ।
येहूँ संदेसवा रामा हरिजी से कहिहँऽ, चुवेला बंगला हमार हे ।

'प्रिय-प्रिय' रटती वियोगिनी साधन के अभाव में और निरक्षरता के कारण पत्र नहीं लिख सकती तो वह अपने आँचल फाड़कर पत्र लिखने के लिए पड़ोस के कायस्थ भाई को कहती है और अविरल अश्रु प्रवाह के कारण उसकी आँचल का कागज स्याही की तरह बह रहा है जिससे नायिका का कुशल-क्षेम लिखा जा सकता है। परंतु पत्र के मध्य में १२ बारह प्रकार के वियोग लिखने की चर्चा है। शास्त्रों में वियोग की ग्यारह अवस्थओं का वर्णन तो मिलता है परंतु वारहवाँ अवस्था का कही वर्णन नहीं आया है। यह बारहवी अवस्था प्राणोत्सर्ग ही हो सकती है, क्योंकि संदेश वाहक बटोही भाई को नायिका अपने बारे में कुछ नहीं कहती बल्कि अपने बंगले के बारे में सूचित करने के लिए निवेदन करती है। बंगला वर्षा में चू रहा है, प्रिय आकर उसकी रक्षा करे क्योंकि उसके आने तक शायद उसकी प्रिया नहीं रहें। बारह वियोग से यही तात्पर्य प्रतीत होता

है । वियोग में करूण रस का समावेश मगही लोककाव्य की अपनी विशेषता है जो कई अन्य लोकगीतों में मिलता है।

करूण रस

ऐसे तो प्रिय के सर्वया वियोग या मृत्यु के कारण कारण रस की उत्पत्ति होती है और विधवा तथा वन्ध्या के विलाप में इसका चित्रण मिलता है परंतु कन्या की विदाई के समय भी माता-पिता और भाई-भावज के कारूणिक उद्‌गार भी करूण रस निष्पति में प्रवल हो उठते हैं ।

द्विरागमन काल का एक कारूणिक दृश्य द्रप्टव्य है -

गवना के दिन धरायल, गवना नगिचायल, सव सखि करथिन चतुरइया.
बाबू के फटलई करेजवा रे, जइसे भादो कॉकर,
मइया ढरे नैना लोर रे, जइसे भादों ओरी चुवे,

पिता का हृदय विदीर्ण हो रहा है और माता की आँखे भादों की ओरी की तरह चू रही है। माता-पिता के प्राण ही निकल रहे है - नीचे के गीत मे देखा जाय -

पूरब के चनवाँ पछिम कैले जाय मोरे प्राण हरी,
अनजानो गाँव के दुलहा गवन कयले जाय मोरे प्राण हरी.
सभवा बइठले बाबूजी रोवली वेजार मोरे प्राण हरी
दिन दस रहे देहूँ धिअवा हमार मोरे प्राण हरी

इसी प्रकार माता आदि सम्बंधियों के उद्‌गार इसगीत में अभिव्यक्त होते हैं जिसमें करूणा सम्बलित भाव का आधिक्य है। बंध्या और विधवा विलाप तो करूण रस का उद्‌गम स्रोत ही हैं। लोकगीतों में विधवा और वंध्या स्त्री की छाया से लोग छूना भी नहीं चाहता - यथा -

सुपवा लेवे गेली ये दीनानाथ डोमवा रे दूकान,
डोमवा के बेटवा ये दीनानाथ लेले लुलुआय,
ओते चल ओते गे बाँझी, तोर देहिआ हउ अछूत,
तोहरों परछहियें गे बाँझी, मोरा पुतोहिया होयत बाँझ ।

गीत में कितना मर्गांतक बोधक भाव है । समाज में तथाकथित अछूत कही जानेवाली जाति भी बाँझ से छुआना नहीं चाहती क्योंकि ऐसा होने पर उसकी पुत्रवधू

भी वंध्या हो जायगी। वह उसकी छाया मे भी अलग रहना चाहती है। लोकजीवन के मंगलमय समाज में यह कोढ़ प्रथा है जिसकी भी अभिव्यक्ति लोकगीतो मे हुई है। वस्तुतः साहित्य समाज के लोकरीति-रेवाज से कैसे मुँह मोड़ सकता है? लोकगीत जहाँ मंगल की भावना से पूर्ण रहता है वहाँ अमंगल से वचने का आयोजन भी तो करते रहता है। मानवीय चिंतन प्रक्रिया का यह शाश्वत विधान है - सार्वदेशिक और सार्वकालिक।

शांत रस

मगही लोकगीतों में शांत रस का भरमार मिलता है। देवविषयक लोकगीत तो शांत के आकर हैं। सूर्य के गीत, राम-महादेव के गीत, शीतला के गीत तथा ग्राम-देवता, कुलदेवता के गीतों में शांत रस सर्वत्र मिलता है।

सोने के गेडूवा गंगाजल पानी, पनियो न पिय भगवान, गिरजा से हथवा जोड़ के।
मांगू-मांगू तिरिया कवन फल मांगू तोरा हिरदा मे समाय, गिरजा से हथवा जोड़ के।
राजा दसरथ अइसन ससुर मांगिला, रानी कोसिला अइसन सास, गिरजा से हथवा जोड़ के।
लछुमन अइसन देवर मांगिला, पुरूष मांगिला भगवान, गिरजा से हथवा जोड़।

भक्त सेविका पार्वती से करवद्ध प्रार्थना करती है कि उसे राजा दशरथ की तरह परिवार मिले और राम की तरह पति की प्राप्ति हो। इसी प्रकार सूर्यपष्ठी गीत में भी शांत रस की अनुभूति होती है -

चढ़ते कतिकवा जी दीनानाथ धड़की समाय
कउची से पुरयबो जी दीनानाथ तोहरा के आस।
चलिये में जाही गे निरधन बनिया दूकान,
लेइयो में लाही गे सेबकी हुमदिया उधार,
हथवा जोड़िये गे निरधन होइये जइहे खाड़,
ओइसही पूजइहें गे बाँझी हमरो के आस।

निर्धन और असहाय से भगवान स्वयं दयाद्र होकर उसकी मनोकामना पूर्ण कर देते हैं । वह पूजा की सामग्री के अभाव में भी खाली हाथ उनकी शरण में पहुँच जाता है तो उसकी आशा पूर्ण हो जाती है। सूर्य बाँझ की भी आशा इसी प्रकार पूर्ण करते है "जन अवगुन प्रभु मान न काहु-दीनबंधु अति मृदुल सुभाउ ।"

वीर और भयानक रस भी मगही लोकगीतों में यत्र-तत्र मिल जाता है परंतु लोक

गाथाओं में तो वीर, श्रृंगार और शांत रस मूर्ति मान होते दीखते हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

एहिजे अखड़वा में मटिया से देहिया पोसल हो राम,
बाँधियों लंगोटवा बीरवा कूदई अखड़वा हो राम
दूनों जब भइया में होवे लगलइ कुस्ती आउ बहियाँ मिलाव हो राम
दूनों जब लड़ई कि भीम लगई जरासंध वलवान हो राम।

भीम और जरासंध की तरह अखाड़े में मल्लयुद्ध के लिए प्रस्तुत है। अखाड़े की मिट्टी देह पर त्यागी है, लगोट कसकर वीर युद्ध के लिए अखाड़े में कूद पड़े। लोरिक, चुहड़मल, आल्हा की वीरता से लोकगाथा पूर्ण है। वे अस्सी मन की तलवार से युद्ध करते हैं, अकेले सैकड़ो के छक्के छुड़ा देते हैं, उनकी वीरगाथा में वीररस से सराबोर वर्णन पटा पड़ा है। हाँ, स्फूट लोकगीतों में वीररस का वैसा उदाहरण नहीं मिलता है।

महादेव के गीतों में, मुख्यतः शिव-विवाह प्रसंग में भयानक रस का आभास मिलता है लेकिन गीतों में वीभत्स रस कहीं नहीं मिलता, किसी लोकबोली में अपवाद की गुंजाइश तो रहती है । यहाँ महादेव के एक भयानक दृश्य का अवलोकन किया जा सकता है।

मथवा जे अयलन महादे, बड़े-बड़े जट्टा
कन्हवा जे अयलऽ महादे,बाघिन के छाल,
सिवजी चलले विआहे सब अंग भभूति लगाय ।

परीछे बाहर भेलन सासु मदाइन,
गोहुमन साँप छोड़ले फुँफुकार,
अइसन सिव दइया हमन परीछब,
बलु गउरा रहिहें कुआर।

शिव के इस भयानक रूप के देखकर उनकी सास परीछन के लिए भी तैयार नहीं है परंतु गीत के उत्तरांश में पार्वती द्वारा समझाने पर और शिव के आश्वस्त करने पर विवाह सम्पन्न होता है और परम्परित लोकरीति, जुआ खेलने का रस्म होता है।

जरी गेला दियरा पूरन भेलो बाती,
दुलहा-दुलहिनियाँ जुगवा खेले सारी राती ।

मगही लोकगीतों में भावपक्ष के अंतर्गत जहाँ पात्रों के चरित्रों का वैशिष्ट्य प्रतिपादित मिलता है वहाँ उसमें उद्देश्य भी निहित रहता है। लोकगीतों के प्रमुख दो उद्देश्य होते हैं (१) लक्ष्य सिद्धि, जैसे-सभी प्रकार के आनुष्ठानिक गीत (२) मनोरंजनार्थ, जैसे-झूमर, चौहट, पूर्वी , कजरी आदि।

व्रत, त्योहार या शादी-विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले प्रायः सभी लोकगीतों का विशेष लक्ष्य होता है। गायक उसी लक्ष्य की सिद्धि के लिए गीत गाते हैं और अनुष्ठान करते हैं जिससे उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती है। विवाह में जितना महत्व शास्त्रीय अनुष्ठानों का है उससे कम लौकिक अनुष्ठानों का नहीं- शास्त्रीय रीति और लोकरीति साथ-साथ सम्पन्न होते हैं। विवाह में सारे कर्म-विधानों के समय स्त्रियों के द्वारा गीत गाए जाते हैं । उन्हे विश्वास है कि बिना गीत के वैवाहिक कार्य निर्विघ्न सम्पादित नहीं हो सकते। इनगीतों में एक प्रकार की प्रार्थना रहती है और टोना-टोटका (Taboo) भी रहता है। अतः सारे आनुष्ठानिक लोकगीत सोद्देश्य होते हैं। कर्म और जाति गीतों का भी उद्देश्य रहता है साथ ही उनमें कर्मगत और जातिगत विशेषताओं का भी उल्लेख रहता है । यथा -

"मोटे-मोटे लिटिया पकइहें गे धोबिनियाँ, कि हाय धोबिन विहने जयबो धोबी घाट"

झूमर, कजरी-पूर्वी आदि गीत मनोरंजन के लिए गाए जाते हैं, जैसे -

आयल बरखा के बहार कहना मानूँ गोपी नार, मनवाँ राखी लेहूँ आज के कजरिया में।

पुनश्च, *कजरी हम खेल के लवटली रे मैना, मैना तइसे देखूँ ससुरजी लिवावन रे मैना।*
ससुर के संग हम न जयबो रे मैना राहे-बाटे घुघवा तनवतई रे मैना ।

यद्यपि कि ऐसे गीत मनोरंजनार्थ गाए जाते हैं फिर भी इन में पारिवारिक सामाजिक एवं जातीय सम्बंधों की परत-दर-परत खुलते जाती है, जैसा कि उक्त कजरी में वर्णित है।

(3) मगही लोकगीतों में कला-सौन्दर्य

जिस प्रकार विविध वस्त्राभूषण और अलंकारों से मानव शरीर चमत्कृत होता है उसी प्रकार अलंकरण से साहित्य भी जगमगाता है ।

"जदपि सुजान सुलछनि, सुवरन सरस सुवृत ।
भूषन विनु न विराजई, कविता वनिता मित ।।

यद्यपि कि केशव की इस उक्ति में अतिशयता के दर्शन होते हैं फिर भी आंशिक सत्य तो प्रकट होता ही है। काव्य में भावप्रवणता एवं रसात्मकता जरूरी है वहीं रमणीय अर्थोत्पित्ति से साधारणीकरण में सहायता मिलती है। फिर भी कलात्मक सौन्दर्य (अलंकरण) अनिवार्य न होते हुए भी इसके महत्व को पूर्णतः नकारा नहीं जा सकता। यह ठीक है कि काव्य का उद्देश्य केवल अलंकारप्रियता ही नहीं परंतु रसात्मकता और भाव-सौन्दर्य के साथ स्वभावज अलंकरण का समावेश हो जाय तो मणि-कांचन संयाग हो उठता है। मगही लोकगीतों में भावपक्ष की ही प्रधानता रहती है क्योकि अनामवाची कवि अहं चैतन्य से शून्य रहता है । वह गहरी भवप्रवणता की अनुभूति को स्वभाविक रूप से अभिव्यक्त करता है। स्वभावज अभिव्यक्ति की तीव्रता में अलंकरण का स्वतः प्रयोग हो जाता है। यही स्वभावज अलंकार मगही लोकगीतों का कलासौन्दर्य है ।

पुनश्च, लोककाव्य में शास्त्रीय छंदों एवं अलंकारों का सायास प्रयोग नहीं किया जाता, इसमें लय और ताल की प्रधानता रहती है। प्रत्येक पद में शव्दों की संख्या में भी समानता नहीं रहती न तुकांतता की अनिवार्यता, फिर भी अत्यंत मोहक रंगो एवं सुरीली ध्वनियों के करण लोककाव्य हृदय को सीधे स्पर्श करता है। इसी लिए इस वैज्ञानिक तर्क वादी युग में भी लोक गीत मरते हुए भी संरक्षित है। शिष्ट मानसिकता को भी प्रभावित करने वाले लोककाव्य जिन मार्मिक सम्वेदनाओं को अपने आप में समेटे हुए है, उसका जोड़ परिनिष्ठित साहित्य में नहीं मिलता । यही भाव-संवेदना ही स्वभाविक अभिव्यक्ति लोककाव्य का कलात्मक सौन्दर्य है ।

नथिया हमारी अनार कलि, टीकवा सूरूजवा के जोत ।
हरि मोरा काहे न अयलन, बारह बजे के करार ।।

नायिका अनार कलि के समान नथिया धारण करती है और सूर्य ज्योति की तरह टीका पहनती है परंतु नायक निश्चित समय पर नहीं आता है । अतः उसका श्रृंगार प्रसाधन व्यर्थ हो जाता है। नायिका का अलंकरण उसके प्रिय के साहचर्य में ही सार्थक है। उसी प्रकार काव्य का अलंकरण उसकी भाव सवलता के साहचर्य में ही मन को रंजन करनेवाला और सम्वेदना को उर्दीप्त करनेवाला होता है ।

निम्न लोकगीत में पूर्णोपमा का उदाहरण देखा जा सकता है -

जइसन आम के फरूआ वइसन पिया मोर दुलरूआ,
जइसन पान के बीरा, वइसन पिरा मोर हीरा,

विना कारण के कार्य सम्पन्न होने के कारण निम्न लोकगीतों में विभावना अलंकार देखें-

बरस जाय पनिया बिना बदरी के.
कोठा भी भींजें, कोठरिया भी भींजे, भींजेला सारी दुनिया-बिना बदरी के।

लोक गीतों में अलंकारों के माध्यम से तथ्य प्रतिपादन की अनोखी विधि यत्र-तत्र दीख जाती है-

"उगी गेलो चानी रंग इंजारिया, पिया बिनु नीन्दों न आवें।"

लोककवि भावानुकूल शब्दों को गढ़ता है और उसका प्रयोग हार में हीरे के नाग की तरह अलग से ही चमकता है -

"हाली-हाली जेवना लगइहँऽ हे ननदों, इसकुलिया से पिअवा भुखासल आवऽ हे।
हाली-हाली सेजिया लगइहँऽ हे ननदो, इसकुलिया से पिअवा निनासल आवऽ हे।

उपर्यूक्त पदों मे 'भुखासल' और 'निनासल' विशुद्ध लोकमानस की ऊपज और प्रयोग है। इसकी भाव सम्पदा, अर्थ सवलता कितना सटीक और उपययुक्त है। भूख से अत्यंत व्याकुल के लिए 'भुखासल' और थकावट तथा श्रम के कारण उनिंदी अवस्था के लिए 'निनासल' शब्द का प्रयोग लोकमेधा की अपनी देन है। साथ ही इन शब्दों से ध्वन्यार्थकता की भी प्रतीति होती है। यद्यपि कि शास्त्र सम्मत प्रयोग उक्त पदों में नहीं है फिर भी उसमें किसी प्रकार के शास्त्रीय अलंकार से कम सौन्दर्य बोध नहीं होता।

वर्षा की रिमझिम फुहार में धान रोपती मगध की नारियाँ अपने कोमल कंठ की स्वर लहरियों से बारहमासे के विरहगीत को गाती है तो चलते बटोही रूक जाते हैं और भावुको की आँखों से निर्झरनी प्रवाहित होने लगती है । सम्पूर्ण जड़ -चेतन परिवेश झंकृत हो उटता है। खेतों की मेड़ पर खड़े पादप पंजो की डाली पर विहंगम अपने चितवन एवं समवेत स्वरों में उनका योगदान करते हैं। क्या यह सफल भावाभिव्यक्ति लोकगीत कला का जादू नहीं है ? जरा आप भी इस कला-सौन्दर्य के समुद्र में डुवकी लगाकर देखें भी तो भला ? वियोगिनी की असह्य पीड़ा को हृदयंगम करें तो लोकवेद की यथार्थता का परिचय मिले ।

मास अषाढ़ सखि कइसे बीतायब बलमा गेलन परदेस हे,
सावन अधिक सुहावन लागे, रिम झिम बरसे मेह हें,
हम धानी भींजली अपनी महलिया, बलमा भींजले परदेस हे ।

....

आयल बसंत रामा फूलल टेसूवन तापर भौरा लोभाय हे,
कारी कोइलिया रामा टेरी पुकारे, ई दुख सहलो न जाय हे ।

इन सारी मर्मांतक पीड़ा के बाद वियोगिनी का प्रिय-मिलन होता है तब उसकी लोकमंगल कामना जाग उठती है। लोककाव्य का यही शाश्वत स्वर है जिससे युग-युग की लोकसंस्कृति अनुप्राणित होती रहती है -

जेठ में सखि भेंट भेलन, पूजि गेलो मन केरा आस हे।
बारह मास सखि बीतल पिया बिनु, सबके पूजे अइसन आस हे।

उपर्युक्त लोकगीत में वर्णो एवं मात्राओं की गणना का कोई औचित्य नहीं फिर भी इससे जो राग और भाव निःसृत होते हैं वह संगीत शास्त्र संवलित गीतों से निकलना सहज सम्भव नहीं । इसमें शास्त्रीय अलंकारों का प्रयोग नहीं है फिर भी वसंत में टेसू का फूलना और उसपर लोभी भौरों का मड़राना और काली कोयल की पंचमतान किसी भी शिष्ट काव्य के विधिवत उपमान से कम प्रभावक नहीं है ।

बारहमासा के अतिरिक्त अन्य प्रकार के मगही लोकगीतो में प्राकृतिक दृश्यों एवं व्यापारों की पृष्ठ भूमि में रखकर नायिका की विरह जन्य अवस्था का चित्रण करते स्वतः स्फूर्त अलंकारों का प्रयोग हो जाता है। ऐसे अनाम अलंकार भावसवलता में सहायक होकर सम्वेदना को उदीप्त करते हैं। यथा -

आयल सावन के वहार पिया आवे न हमार, रिमझिम बरसे कारी रे वदरिया नऽ,
घटा उठे धनघोर, बिजुरी चमके चहुओर, बाट सूझे नहीं डगर डगरिया नऽ,
बहे सावन के बेअरिया, सखि गावे ले कजरिया, चुनरी सून हमरो नजरिया नऽ ।

इस पद में अंतर्गर्भित अनुप्रास और ध्वनिसाम्य गर्भित शब्द-योजना क्या किसी शास्त्रीय और कलित शिष्ट शब्दयोजना से कम सौन्दर्य मूलक है? वस्तु और प्रकृति के कोमल परंतु विराट रूप में अतिशयोक्ति का प्रयोग निम्न लोकगीत में देखा जा सकता है-

लड्डू आउ पेड़ा के कोठा उठाइऽ, जिलेबिया के पिया खिड़की लगाइऽ,
आहर-पोखर के सेजिया ऽँसादऽ, तरेगन क पिया बचवा लगादऽ,
चान-सूरूज पिया टिकवा गठादऽ, तरेगन के पिया बचवा लगादऽ।

यहाँ अतिशयोक्ति से नायिका सम्पूर्ण ब्राह्माण्ड को अपने अलंकारों एवं सौख्य के लिए

प्रयुक्त कर लेना चाहती हैं, अतिशयोक्ति का एक और उदाहरण द्रष्टव्य है -

हमरा बलमुजी के सिर सोभे टोपिया, देखत मन भवे रे सँवरिया।
अमरा बलमुजी के कारी रे नगिनियाँ, दिल मोहे रे सँवरिया।

यहाँ उपमेय को छिपाकर केवल उपमान को प्रस्तुत कर दिया गया हैं। काली रे नगिनियाँ काले और लम्बे केश के लिए प्रयुक्त हैं जो मनमोहक है। स्वतः स्फूर्त ऐसी अतिशयोक्तियाँ लोकगीतों में प्रचुर मात्रा में मिल जाती है। कुछ अतिशयोक्तियाँ प्रकृति-सौन्दर्य के साथ जुड़ी मिलती है, जैसा निम्नगीत में हैं -

बगिया में अयलन दुलरइतो सरवा हे,
इलाइची के डरवा भौरा बाँधी देलन हे,
सोबरन सटिया सरवा मारी देलन हे ।

यहाँ प्रस्तुत नायक का उल्लेख नहीं है बल्कि अप्रस्तुत (भौंरा) का कथन मात्र कर दिया गया है। बगीचे में आया सखा 'भौरे' को इलायची की डाली में बाँध दिया और स्वर्ण साटी से मारा । प्राकृति प्रतीकों के सहारे अन्योक्ति अलंकार की छटा निम्न गीत में द्रष्टव्य है -

लटकल देखली लेमुआ, तऽ पकल अनार देखली हे,
गोले-गोले देखली नौरंगिया, जच्चा रे दरद बेयाकुल हे ।

नींबू, अनार और नांरगी जच्चा के पूर्ण गर्भ के प्रतीक हैं। जच्चा दर्द से व्याकुल है। अप्रस्तुत की प्रस्तुति से प्रस्तुत का भान अन्योक्ति अलंकार का कारण है। मालोपमा का एक उदाहरण निम्न लोकगीतों में देखा जा सकता है -

(१) *जइसन चिक्कन पीपर के पतवा, ओइसन चिक्कन घीव ।*
ओइसने चिक्कन गोरी के जोबना, पिया के ललचत जीव ।।

प्रकृति-सौन्दर्य चित्रण में देहली दीपक अलंकार की एक छटा देखने योग्य है।

कवन बाबा के घानी हई फुलवरिया बेला फुलले गुलाब ।
कवन दुलरइतों बेटी अयलन फुलवरिया बेला चुनले गुलाब ।

यहाँ बेला और गुलाब संज्ञा के लिए 'फुलले' और चुनले एक ही क्रिया का प्रयोग है

का हथी दुल्हा हीरा के कलिया,
दुलहिन चनरमा के जोत

का हथी दुलहा सूरूज के जोतिया,
दुलहिन नागिन के स्रोत ।।

दुलहा में हीरा की कलि और सूर्य की ज्योति का आरोप है। उपमेय में उपमान की सम्भावना के कारण यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार की योजना हो गई है। दुलहन में भी 'चन्द्र ज्योति और नागिन, सौन्दर्य का स्त्रोत की सम्भावना है, एक ही साथ कई उत्प्रेक्षाएँ।

लोकगीतों में दृष्टांत और लोकोक्ति अलंकारों का प्रभूत-प्रयोग मिलता है, कारणा कि लोकजीवन में किसी कथन या प्रसंग विशेष पर 'परतूक' देने का प्रचलन है । ये परतूक गीतों में दृष्टांत अलंकर के रूप में प्रयुक्त हो जाते हैं ।

आगे बढ़नी पीछे सूप-दूनो पड़ोसिन के एके रूप ।
दिल फाट-फाट बन रहल फूट
फिन बात कहाँ, कइसे टिके कइसे ?
देह बेमारी सनसूखल
अँखियन भी झाँक रहल तब से ।

फूट (ककरी का पका रूप) का फटना एक परतूक दृष्टांत है, साथ ही फटे पदार्थ से भीतर की चीजे साफ दीखने लगती है। भला फटे दिल में बाते कैसे छिप सकती है? बीमारी से सूखी देह में आँखें झाँक रही है जिससे भी उसका भीतरी रहस्य प्रकट हो जा रहा है। गोपन का रहस्योद्घाटन दृष्टांत के सहारे हो जा रहा हैं 'आगे बढ़नी पीछे सूप' भी दृष्टांत अलंकार का उदाहरण है। पहेलियाँ और दसकूटक तो प्रायः दृष्टांत पर ही आधारित रहते हैं। मगही लोककाव्य में लोकोक्ति अलंकार का सर्वाधिक प्रयोग मिलत जाता है क्योंकि लोकोक्तियों का उद्भव स्थल लोकजीवन ही होता है। लोककवि लोक उक्तियों के संस्कार से सम्पृक्त रहता है। अतः लोककाव्य, लोकगीतों में इसकी प्रचुरता दीखती है ।

(१) *टिकवा भेलई अपना से सुखवा भेलई सपना से पिअवा भेलई डूमरी के हो फूल।*
(२) *अनकर माल झमकौवा, छीन लेलक तो मुँह भले कौवा ।*
(३) *अबके बाबू अयलन दूध-भात खैलन, कउन बपटिगनी नजर लगौलक।*

उक्त तीन गीतों की पँक्तियों में 'डूमरी (गूलर) के फूल होना, मुहभेल कौवा, दूध-भात खाना, बपटिगनी मगही की लोकोक्तियाँ हैं जिन्हे लोकजीवन में सदा व्यवहार

करते है। इन्हीं उक्तियों का प्रयोग उन गीतों में हैं। अतः यहाँ लोकोक्ति अलंकार का प्रयोग मानना चाहिए ।

लोककाव्य या लोकगीतों मे शास्त्रीय छंदोविधान का सौन्दर्य खोजना अरण्य-रोदन है क्योंकि ये गीत वर्णो और मात्राओं की गणना पर आधृत नहीं रहते बल्कि ताल और लय पर सृजित होते हैं । गायिकाएँ गीतों के वर्णो और मात्राओं में विषमता रहते हुए भी उन्हे अपने ध्सनिग्रामों के उतार चढ़ाव से ऐसा राग सृजित करती है कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। अतः गीतों में शास्त्रीय राग नहीं बल्कि लोकजीवन के 'रेघ' का अभिव्यंजन होता है। 'रेघ' ऐसा लययुक्त ध्वनिग्राम है जो श्रोताओं के हृदय के कोमल तंतुओं को झंकृत कर देता है, उसका हृदय अभिभूत हो जाता है। यह 'रेघ' स्वभाविक रूप से प्राणिमात्र को प्रभावित करता है जैसा कि शास्त्रीय संगीत स्वभाविक रूप से सभी को प्रभावित नहीं कर सकता। शास्त्रीय संगीत केवल कला पारखी या अभिजात्य वर्ग को प्रभावित करता है लेकिन लोकगीत सर्व सामान्य को । इसके वावजूद लोकगीत विशेप रेघ, विशेप लय और ताल में आवद्ध रहते हैं जिसे सुनकर श्रोता कह उठता है कि यह कजरी-पूर्वी है या सूर्यगीत अथवा शीतलगीत है, चौहट या वर्षा गीत है, फागु या चैता हैं। कुछ गीतों के वर्णो और मात्राएँ भी नपी-तुली दीखती है, जैसे- बिरहा, लोरकायन, झूमर और इनमें विरहा ही ऐसा लोकगीत है जिसमें वर्णो का साम्य अधिक दीखता है। लोरकायन में विषम वर्णमाला के वावजूद रेघ को खीच करें साम्य ध्वनि सृजित की जाती है। झूमर के पद छोटे या वहुत बड़े हो सकते हैं परंतु रेंघ में समता अवश्य रहती है। 'ललना' का प्रयोग प्रायः अधिकांश सोहरगीतों मिल जाया करता हैं। झूमर में द्रूत गति और क्षिप्रता का समावेश दीखता हे। इसी प्रकार विरहगीत, बारहमासा तथा जँतसार में विलम्वित राग का प्रयोग मिलता है। फागु में अल्हड़पन व्यक्त करनेवाला परूष राग सुनाई पड़ता है जबकि चैता में कोमल राग प्रस्फुटित होता है। इसमें प्रायः 'रामा' का प्रयोग पद के प्रारम्भ या अंत में होता है। संग्रह में प्रायः सभी प्रकार के लोकगीतों का उदाहरण वर्त्तमान है। यहाँ एक दो विरहा और अन्यगीतो के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है -

(१) *पिया-पिया रटिके पियर भेलई देहिया, लोगवा कहे कि पांडु रोग ।*
गउवाँ के लोगवा मरमियो न जाने, बलमा बलकवा वियोग ।

(२) *इहे का ऊ देसवाहे जहवाँ के लोग सभे, बनल हलन भगवान ?*
एक दिन दुअरा पर कोई लोग आजाय, ओकरा समझे मेहमान ।

कजरी और सोहर भी विशिष्ट 'रेघ' को प्रदर्शित करते हैं -

क़जरी (१) *हरि-हरि बाबा के पोखरवा मोरवा बोले ये हरी,*
हरि-हरि कउने मासे करबऽ मोर गवनवाँ ये हरी,

(२) *पानी लावे गेली हम जमुना किनरिया रामा,*
हरि-हरि बीचे रहिया रोकलन कन्हइया ये हरी ।

सोहर- *कहवाँ से अवतन पंडित अउरो नारद मुनि हे,*
ललना कहवा से अवतन भगवान जनकपुर गहगह बोले हे।

झूमर- *पियत मांग सुरस लागे हो, सुरस लागे, उजे मंगिया के जोर से गरम लागे।*
चढ़त गाड़ी टिकवा डोले, उतरत गाड़ी सरम लागे, उजे भंगिया के जोर से गरम लागे ।

(२) *राम जाले बनवाँ सीता जाने को तइयार हे,*
मत जाहूँ बनवाँ सीता जनक दुलारी हे,
खाय के न अन्न मिलतो पीये के न पानी हे,
सोवे के न सेज मिलतो जनक दुलारी हे।

फागु- *अँखिया लालेलाल, एक नींद सोवेदऽ बलमुआँ,*
भर फागुन धानी सोवहूँ न देबो, अहो चइत सुतिहँऽ भर रात हो,
एक नींद सोवे दऽ बलमुआँ, अँखिया लाले लोल ।

चैता- *अहो रामा, गोरे-गोरे बहियाँ में हरी-हरी चुरिया हो रामा,*
लिलरा में इंगुली के विंदिया हो रामा, लिलरा में ।

सूर्य षष्ठी गीत- *काँच ही बाँस के कहंगिया, बहंगी लचकत जाय,*
बन नऽ अंजानो बाबू कहरिया बहंगी दहूँ पहुँचाय,
बाट जे पूछले बटोहिया- बहंगी केकर जाय,

शीतला के गीत- *कथी केरा कंगही भवानी मइया, मथी लागल हो साल ।*
कथीये बइठले भवानी मइया, झारे लामी हो केस ।

कर्म और जातिगीत-*छियो राम छियो, छियो राम छियो, छियो राम छियों,*
अच्छा धोबिना बड़ नीक लागे, जब धोवे बगुलवा के पाँख

लेके रोटिया चली धोबिनियाँ पहुँचल गंगा घाट हो मालिक पहुँचल गंगा घाट
बजरा के रोटिया सरसो के सगिया धोबिया मगन मन खाय, हो मालिक....खाय।
पाछे सकारे आयो धोबिनियाँ रोटिया लियो चोराय हो मालिक रोटिया.....चोराय।

निष्कर्ष

साहित्य का कला-सौन्दर्य उसके शिल्पविधान में निहित रहता है और शिल्प उसकी रूपाकृति से सम्बंध रखता है। रूपाकृति की सजावट भाषा की शब्द योजना और अलंकरण से होती है। इन सबका सम्यक् विधान शिष्ट साहित्य में मुनिमानस के द्वारा किया जाता है। लोक साहित्य में ऐसे अहंचैतन्य से पूर्ण शिल्पी नहीं रहते। वे सहज स्वभाविक रूप से अपनी गहन अनुभूतियों को, गहरे संवेगों को लयात्मक ढंग से गा दिया करते हैं। वे ही लोकगीत बन जाते हैं। परंतु ऐसे लोकगीत हरित वनस्थली की पर्वत श्रृंखलाओं से स्वतः स्फूर्त निर्झरनी की तरह कलकल-छलछल करती सम्पूर्ण लोक जीवन को झंकृत करती है फिर भी उसके कूल कछारों पर लता-गुल्मों में विविध रंगी पक्षी के कलरव की तरह कुछ स्वभाज अलंकरण आज जुड़ते हैं । इससे गीतों में चार चाँद लग जाते हैं। लोकगीत का सौन्दर्य द्विगुनित हो जाता है। लोकगीतों का यही सौन्दर्य भाव अभिजाध्तय वर्ग को भी आकृष्ट करता हैं। वस्तुतः सौन्दर्य भाव जब साहित्यकार को उद्वेलित करता है तो सुन्दर रचना जन्म लेती है। किसी भी प्रकार की रचना में यह सौन्दर्य भाव वर्त्तमान रहता है। यही कारण है कि वीभत्स रस चित्रण और उसके अध्ययन में सौन्दर्य बोध होंता है। सौन्दर्य-बोध-चेतना मानवीय संस्कार जन्य भाव है जो अनुकूल पाकर उदीप्त हो जाता है और काव्य, नंद, ब्रह्मानंद का सहोदर बन जाता है, चाहे वह शिष्ट साहित्य हो या लोक साहित्य। लोक साहित्य में भाव सौन्दर्य और नाद सौन्दर्य की प्रधानता रहती है तो शिष्ट साहित्य में विचार और भाव सौन्दर्य प्रधान रहता है, नाद सौन्दर्य अनिवार्य नहीं है जैसा लोकगीतों में ।

दूसरा-खंड

लोकगीत संग्रह आउ अर्थ

सं0—लालमणि कुमारी

मगही संस्कार लोकगीत

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विजोच्यते

> **I do not want my house to be walled in on all sides and my windows to be stuffed. I want the cultures of lands to be blown about my house as freely as possible. But I refuse to be blown off my feet by any.**
>
> ***– By M.K. Gandhi.***

हमारे भारतवर्ष में संस्कृति का प्रमुख तत्व संस्कार है। शास्त्रीय और लोक (लोक-संस्कृति और लौकिक अनुष्ठान) संस्कार लोकजीवन की रीढ़ है। यहाँ हम संस्कारों की परम्परा एवं उनके वर्गों की गवेषणा नहीं करना चाहते परंतु ११, १३, १६, १८ आदि की संख्या में परिगणित संस्कार अब मुख्यतः ३-४ संस्कारों तक सीमित रह गये हैं। इनमें जात, विवाह एवं मृतसंस्कार अनिवार्यतः सम्पन्न होते हैं। लोकजीवन में इन संस्कारों से सम्बंधित अनुष्ठान एवं तत्सम्बन्धी लोकगीत गाए जाते हैं। यहाँ जन्म के समय गाए जानेवाले लोकगीत **'सोहर'**, विवाह के विविध क्रिया-कलापों एवं अवसरों पर गाए जाने वाले सैकड़ों-सहस्रों गीतों तथा मृत्यु के समय गाए जाने वाले विरल गीतों का संचयन किया गया है।

प्रथमतः हम जात-संस्कार सम्पन्न होते समय गाये जाने वाले मगही **सोहर** का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। मगध में शिशु-जन्म के पूर्व और पश्चात् स्त्रियों की कंठ-काकली से प्रसूता की प्रसव-पीड़ा अपहरणार्थ एवं आनंदातिरेक में जो मंगल स्वर-लहरियाँ निःसृत होती हैं उन्हें **'सोहर'** या **'शोकहर'** कहा जाता है। इसका संबंध **'सोहिलो'** से भी माना जाता है। ऐसे गीत प्रायः समस्त भारत की जन-बोलियों में मिलते हैं।

(१)

कहवाँ से अवतन पंडित अउरो नारद मुनि हे ,
ललना कहवाँ से अवतन भगवान जनकपुर गहगह बोले हे ।

गोखुला से अवतन पंडित अउरो नारद मुनि हे ,
ललना अयोध्या से अवतन भगवान जनकपुर जय- जय बोले हे ।

कहवाँ उतारब पाँचों पंडित अउरो नारद मुनि हे ,
ललना कहवाँ उतारब भगवान जनकपुर जय-जय बोले हे ।

मड़वा उतारब पाँचों पंडित अउरो नारद मुनि हे,
ललना कोहबर उतारब भगवान जनकपुर जय-जय बोले हे ।

अर्थ

शिशु-जन्म के समय गाया जाने वाला इस **सोहर** में कुछ पौराणिक स्थानों एवं पात्रों का नाम आया है । कहाँ से आनुष्ठानिक क्रिया कराने वाले पंडित आवेंगे और कहाँ से नारद मुनि का आगमन होगा ? हे ललना, कहाँ से भगवान आवेंगे जिससे जनकपुरी गहगहाने लगेगी । गोकुल से पंडित और नारद मुनि आवेंगे और अयोध्या से भगवान आवेंगे जिससे जनकपुर में सर्वत्र जय-जय की ध्वनि गूँजने लगेगी । कहाँ पाँचों पंडितों को ठहराया जायगा और नारद जी को ? हे ललना, भगवान को कहाँ ठहराया जायगा ? पाँचों पंडित और नारद मुनि को मंडप में ठहराया जायगा और भगवान को कोहबर में ठहराया जायगा । जनकपुर में सर्वत्र जय-जय है ।

(२)

घर पिछुअरवा कुम्हार भइया हितवा ,
ललना गढ़ी देहूँ सात गो घइलिया ,
सातो सखि पानी भरब हे ।

सातो मिलिये सातो भरलन ,
छवे अलगवलन हे ।
ललना देवकी जमुना-निरेखेले हे ।

एक तो अंग केरा पातर,
दूसर सुकवार हे ।
ललना गरभ के पूरल,
घइला कइसे अलगत हे ?

सातो दिहले, कंसवा मारी दिहले हे,
ललना अठवाँ पर कउन भरोसा,
केही लोर पोछत हे।

चुप रहूँ - चुप रहूँ ननद हे,
ललना हम देबो अप्पन ललनवाँ,
ओही लोर पोछत हे।

अर्थ

इस सोहर में देवकी-कंस की कथा का संकेत मिलता है। घर के पीछे कुम्हार भाई रहता है। देवकी कहती है कि सात गागर गढ़ दो, हम सातो सखियाँ पानी भरने जायेंगी। साते सखियाँ मिल कर गागर भरती हैं और सर पर रख लेती परंतु देवकी यमुना नदी को देखती रहती है। वह पतली और सुकमार है तथा गर्भ का दिन पूर्ण हो गया है। इस पर वह चिंतित है कि सात संतान ने जन्म लिया जिन्हें कंस ने मार दिया। अब आठवें का क्या भरोसा, दुख में कौन मेरा आसूँ पोछेगा ? पानी भरने आई (यशोदा) कहती है कि ननद जी चुप रहें, हम अपना पुत्र दे दूँगी, वही आसूँ पोछेगा।

(३)

अंगना बहारइत चोरिया सुनहूँ बचन मोरा हे,
ललना प्रभूजी के देहूँ न बोलाय, तऽ दरद बेआकुल हे।

तसवा खेलइते तुहूँ देबर तऽ सुनहूँ बचन मोरा हे,
ललना कौलेज करत भइया होइहें, तऽ उनका बोलाई देहूँ हे।

एक कोस गेलन, दूसर कोस अउरो तेसर कोस हे,
ललना पहुँची गेलन कौलेज जहाँ रे भइया सैर करे हे।

कौलेजिया करइते तुहूँ भइया तऽ सुनहूँ बचन मोरा हे,
ललना मोरे भाभी दर बेआकुल तऽ तोहरो बौलावत हे।

कलमिया जे फेंकलन बेलतर, गिरल बबूर तर हे,
ललना झपटी पहुँचले गजोबर कहऽ न धनिया कुसल हे।

कमर से उठल दरदिया तऽ ओटिया चिल्हक मारे हे,
ललना मुखवा से छूटल पसेनवाँ तऽ दरद बेआकुल हे।

काहे लागी प्रभुजी बिआह कयलऽ, चुटकी सेनुर देलऽ जी,
ललना निहुरी-निहुरी अंगूठा धयलऽ तऽ मन मुसकयलऽ जी।

काहे लागि प्रभुजी गवना कलयऽ गवनाकर लिआई अयल जी,
ललना सिर के पगड़िया सेजरिया धयलऽ, हिरदय लगवलऽ जी,
ललना दूनो मिली बान्हली मोटरिया खोलं के बेरा असगर जी ।।

अर्थ

जच्चा जब प्रसव-वेंदना से व्याकुल हुई तो आंगन बुहारते दासी से कहती है कि मेरे पति को बुला दो । पुनः ताश खेलते देवर से कहती है कि तुम्हारे भाई कालेज कर रहे होंगे, उन्हें बुला दो । देवर एक-दो कोस चलकर कालेज पहुँचा जहाँ उसके भाई सैर कर रहे थे । उसने भाई से कहा कि मेरी बात सुनें, मेरी भाभी प्रसव-वेंदना से व्याकुल है, वह आपको बुला रही है । भाई ने बेल पर कलम को फेंका तो दूर बबूल के नीचे गिरी और तेजी में चलकर प्रसूति-गृह पहुँचा और पत्नी से कुशल-क्षेम पूछा । पत्नी ने कहा कि कमर से दर्द उठ रहा है और पेट तक मड़ोर उठ रहा है । मुँह से पसीना छूट रहा है, दर्द से व्याकुल हो रही हूँ । हे प्रभु जी, विवाह ही क्यों किया था, चुटकी भर सिन्दुर क्यों दिया । झुक-झुक कर मेरे अँगूठे को पकड़ा था और मन-ही-मन मुसका रहे थे । हे प्रभु, आपने गवना क्यों कराया और अपने यहाँ लाकर रखा तथा आपने सिर की पगड़ी शय्या पर रखकर हृदय से लगाया । दोनों ने मिलकर गठरी बाँधी और मुझे अकेले खोलना पड़ रहा है । अकेले दर्द सहना पड़ रहा है ।

(४)

अंगना में भइले बिआह, कोहबर गवना भइले हे,
ललना घुघवा उघार प्रभुजी देखलन, कतेक धनिया सुन्नर हे ।

न करिहँऽ घर से अंगनवाँ नऽ बरतन करिहऽ हे,
ललना न करिहऽ राम के रसोइया, चुनरिया तोरा भिंज जइहें हे ।

सासु जइहें नइहरवा, ननद ससुरार जइहें हे,
ललना गोतनी जे खोजिहें बदलिया, बदलिया कइसे दिहब हे ।

अर्थ

आंगन में विवाह-संस्कार सम्पन्न हुआ और कोहबर में गवना हुआ । फिर पति ने मेरे घूँघट उठाकर देखा और कहा कि मेरी पत्नी कितनी सुन्दर है । उसने प्रेमाधिक्य में कहा कि तुम घर-आंगन का काम नहीं करना और न बर्त्तन-वासन

साफ करना । इतना ही नहीं, बल्कि राम-रसोई भी नहीं बनाना । ऐसा करने से तुम्हारी चुनरी भींग जायगी। व्यावहारिक पत्नी कहती है कि जब कभी सास नैहर चली जायगी और ननद श्वसुरार चली जायगी तब गोतनी बराबरी का काम खोजेगी तब बदले में काम कैसे नहीं करूंगी ? चतुर पत्नी का समुचित उत्तर पारिवारिक सौहार्द्र का द्योतक है ।

(५)

मचिया बइठल तू अम्मा तो सुनहूँ बचन मोरा हे ।
ललना हम लिपवई भाभी के सउरिया कंगनबाँ हमहूँ लेई लेबइन हे ।

सउरी पइसल तुहूँ वहुआ तऽ सुनहूँ बचन मोरा हे।
ललना दई देहूँ धिया के कंगनवा, धिया देस दूर बसे हे।

कंगनवे कारन पिया देश गेलन अउरो विदेस गेलन हे।
ललना न देबइन ननदी कंगनवाँ, ननदिया देस-दूर बसे हे।

चुप रहऽ चुप रहऽ बहिनी, तऽ सुनहूँ बचन मोरा हे।
हम करबो दूसर बिआह कंगनवाँ हम दिलाई देबो हे।

इतना बचनियाँ धनियाँ सुनलन, सुनहूँ न पौलन हे।
ललना झटसिन फेंकले कंगनवाँ अंगनवाँ बीच हे।

ललना लऽ नऽ छिनरियो कंगनवाँ सवतिया बनके रहहूँ न हे।

अर्थ

मचिया पर बैठी हुई माँ ने कहती है कि भाभी के प्रसूति-गृह को लिपने में मैं उनका कंगन ले लूँगी । माँ प्रसूति-गृह में प्रवेश कर बहू से कहती है कि मेरी पुत्री दूर देश में बसती है, उसे कंगन दे दो । बहू कहती है कि कंगन के कारण ही प्रिय देश-विदेश गए थे । अतः ननद को कंगन नहीं दूँगी और वह दूर देश भी बसती है । यह बात भाई सुनता है तो वह बहन से कहता है चुप रहो, मैं दूसरी शादी करूँगा और कंगन तुम्हें दिला दूँगा । इतनी बात पत्नी ने सुनी तो शीघ्र ही उसने कंगन को आंगन के बीच फेंक दिया और मजाक के लहजे में गाली दी कि हे छिनाल ननद कंगन लेलो और हमारी सौत बनकर रहो ।

(6)

कहवाँ से आवेला पिअरिया, पीयर लागल झालर हे,
ललना कहवाँ से आवेला सिन्होरवा सिन्होरवा भरल सेनूर हे।

नइहरा से आवेला पिअरिया, पीयर लागल झालर हे ,
ललना ससुरा से आवेला सिन्होरवा, सिन्होरवा भरल सेनूर हे ।

झाँपी-पोती रखबई पिअरिया, पीयर लागल झालर हे ,
ललना कोठी-कान्हा रखबई सिन्होरवा, सिन्होरवा भरल सेनूर हे ।

अर्थ

प्रसूति कहती है कि कहाँ से पीली साड़ी आ रही है जिसमें पीले रंग के झालर लगे हैं । कहाँ से सिन्दुरदानी आ रही है जिसमें भरा हुआ सिन्दुर है । पुनः वह आगे कहती है कि नैहर से पीला झालर लगी साड़ी आ रही है और श्वसुराल से सिन्दुरदानी आ रही है। झाँपी (घास-कुश का बना बक्सा) में साड़ी रखूँगी और कोठी के कान्हों पर सिन्दुरदानी रखूँगी ।

(७)

बड़ी महंगी में ललना जलम लिहले ,
सासु आती नहीं, गोतनी आती नहीं ।

मुझे ननद बोलाने की हिम्मत नहीं ,
बड़ी महंगी में ललना जलम लिहले ।

आटा मिलता नहीं, चावल मिलता नहीं ,
मुझे सूजी मंगाने की हिम्मत नहीं ।

अर्थ

प्रसूति कहती है कि महंगी के समय में पुत्र ने जन्म लिया है उस पर सास भी नहीं आ रही न गोतनी आती है और ननद को बुलाने की हिम्मत नहीं है (क्योंकि वह नखरेवाज होती है) बड़ी महंगी में ललना ने जन्म लिया है । आटा-चावल मिल नहीं रहा है और सूजी खरीदने की हिम्मत नहीं है । इस महंगी में बड़ी परेशानी है।

(८)

कमल फूलों से निकला गुलाब ललना ,
बाबूजी भेजे हैं सोने के पलना ।

तेरे अम्मा ढुलावे तू ढूल ललना ,
चाचाजी भेजे हैं सोने के पलना ।

तेरी चाची ढुलावे तू ढूल ललना ।

अर्थ

कमल और गुलाब के फूल की तरह सुन्दर ललना का जन्म हुआ है जिसके लिए पिताजी ने सोने का पालना भेजा है । माता झुला रही है और ललना झूल रहा है । चाचाजी ने भी सोने का पालना भेजा है जिसपर चाची ललना को झुला रही है ।

(९)

मैं तो अकेली राजा घर न लुटाऊँगी ,
घर न लुटाऊँगी, नेग भी चलाऊँगी ।

मैं तो अकेली राजा घर न लुटाऊँगी ,
सासु अइहें किया मोरा होइहें ।

देवता मनाने अपनी मइया को बुलाऊँगी ,
मैं तो अकेली राजा घर न लुटाऊँगी ।

गोतनी नहीं अइहें किया मोरा होइहें ,
हलुआ घाटन अपनी भाभी को बुलाऊँगी ।

मैं तो अकेली राजा घर न लुटाऊँगी ,
ननदी न अइहें किया मोरा होइहें ।

काजर पारन को बहिनी को बुलाऊँगी ,
मैं तो अकेली राजा घर न लुटाऊँगी ।

अर्थ

प्रसूति अपने पति से कहती है कि मैं अकेली हूँ, बच्चा के जन्म के अवसर पर अपना सारा घर नहीं लुटा दूँगी । घर को बचाते हुए नेग-दस्तूर भी करूँगी । सास भी नहीं आवेगी तो मेरा क्या होगा ? देव-पितर को पूजने के लिए अपनी माता को बुला लूँगी । यदि गोतनी नहीं आवेगी तौ भी मेरा कुछ नहीं होगा । हलवा आदि बनाने के लिए अपनी भाभी को बुलवा लूँगी । ननद नहीं आवेगी तो मेरा क्या बिगड़ जायगा । काजल पारने के लिए अपनी बहन को बुला लूँगी ।

(१०)

मचिया छोड़ सासु दउड़ल आवे, खिलाव बहु हलुवा बेटा हुआ है ।
हलुआ के हाल सासु हम से न पूछो, बिलइया खा गेल हलुआ हलुआ नहीं है ।।

सुपलिया छोड़ ननद दउड़ल आवे, खिलाव भाभी हलुआ, बेटा हुआ है ।
हलुआ के हाल ननद हमसे ने पूछो, बिलइया खा गेल हलुआ, हलुआ नहीं है ।।

अर्थ

पुत्र जन्म के बाद सास पुत्र वधू से हलवा मांगती है तो वह उत्तर देती है कि हलवा तो बिल्ली खा गई। खेल छोड़कर ननद भी दौड़कर आती है और पुत्र जन्म के कारण हलवा मांगती है। उसे भी सास ही की तरह उत्तर सुनना पड़ता है।

(११)

अनजानो देई के लीलरा टिकुलिया तो मानिक दीप जरे हो लाल।
रजवा के बेटवा अनजानो दुलहा, मुँहवा निरेखे, कतेक धनिया सुन्दर हो लाल।

ललना सेहो धानी पइसले सउरिया, कइसे धानी के देखव हो लाल।
मचिया बइठल तुहूँ मइया तो सुनहूँ बचन मोरा हो लाल।

मइया सउरी दुहरिया सेजिया डँसइहँऽ सोइते धानी के देखब हो लाल।

अर्थ

अमुक देवी के ललाट में टिकुली है जो माणिक के दीपक की तरह प्रज्ज्वलित है। अमुक राज-पुत्र वर है जो अपनी पत्नी का मुँह देखता है कि वह कितनी सुन्दर है ? उसकी पत्नी प्रसूति-गृह में प्रविष्ट है। अब उसका पति अपनी पत्नी को कैसे देखेगा ? वह अपनी माँ से कहता है कि मेरी शय्या प्रसूति-गृह के दरवाजे पर लगवा देना जिससे मैं सोती पत्नी को देख सकूँ।

(१२)

सासुजी के हम नऽ बोलयबो हो लाल,
से उनखर बोलिया न सहैतो हे लाल।

सासु अइहें देवता मनइहें हो लाल,
से देवता मनइया नेग मंगिहें हो लाल।

गोतनी के बोलिया न सहैतो हो लाल,
से उनको के हम न बोलयबो हे लाल।

गोतनी जे अइहें हलुआ घटिहें हो लाल,
से हलुआ घटइया नेग मंगिहें हो लाल।

ननद के हम न बोलयबो हो लाल,
से अखिया-अंजइया नेग मंगिहें हो लाल।

अर्थ

प्रसव के पूर्व पत्नी पति से कहती है कि मैं प्रसव-काल में सास को नहीं बुलाऊँगी क्योंकि उनका आदेश मुझे सहन नहीं होगा। वह देवी-देवता की मनौती मानेंगी और उसके लिए वह नेग-दस्तूर माँगेगी। गोतनी की बात तो और नहीं सहन होगी। अतः उन्हें भी नहीं बुलाऊँगी। वह हलवा घाटेंगी और नेग मांगेगी। इसी प्रकार वह ननद को भी नहीं बुलावेगी। वह बच्चे की आँख में काजल लगाने का नेग मांगेगी। इस प्रकार एक कंजूस जच्चा किसी भी परिवार को बुलाना नहीं चाहती।

(१३)

तू का लेबऽ हे, ललना के बधइया ?
टिकवा जे लेबऽ ननद, मांग होइहें खाली,
उघार होइहें हो बड़े भइया के रानी।

सिकड़ी जे लेबऽ ननद, गला होइहें, खाली।
उघार होइहें हो बड़े भइया के रानी।

पायल जे लेबऽ ननद, पैर होइहें खाली,
उघार होइहें हो, बड़े भइया के रानी।

सारे आभूषणों के नाम लेकर पुनरुक्तियाँ और टेक से गीत को संपुरित करना।

अर्थ

प्रसूति ननद से कहती है कि ललना की बधाई में तू क्या लेगी ? यदि माँग का टीका लेती है तो मांग शून्य हो जायगा ? और तुम्हारे बड़े भाई की रानी नग्न हो जायगी। गले की सिकरी लेती है तो गला खाली हो जायगा और पायल ले लेती है तो पैर खाली हो जायगा और तुम्हारे बड़े भाई की रानी आभूषण विहीन हो जायगी। अतः तुम क्या लोगी ?

(१४)

दइया मालिन लगावे फुलवाड़ी सरबगुन आगर हो।
मचिया बइठल हथिन सासु उहवे से पूछे —
बबुआ कहहूँ कवने कारन बबुआ बड़ा सुन्नर हो।

कातिक मासे नेहइली, कातिक छठ कयली।
मन से कयली एतवार ललनवाँ बड़ा सुन्नर हो।

चउका बइठल हथिन बहिन, उहवें से पूछे —
कउने फल खयलऽ ललनवाँ बड़ा सुन्नर हो।

खयली किसमिस-छुहेड़ा, अउरो वेदाम खयली ।
आउ फोरि-फोरि खयली नरियरवा, ललनवाँ बड़ा सुन्नर हो ।

ललनवाँ बड़ा सुन्नर हो ।
दइया मालिन लगावे फुलवाड़ी सरवगुन आगर हो ।

अर्थ

सर्वगुण सम्पन्न मालिन फुलवारी लगाती है (या फुलवारी सभी प्रकार के फूलों से परिपूर्ण हैं) सास मचिया पर वैठी है, वहीं से पूछती है कि हे बहू क्या कारण है कि बच्चा इतना सुन्दर है ? बहू कहती है कि कार्तिक महीने में स्नान किया, उस माह में छठ व्रत किया और पूरी श्रद्धा से एतवार व्रत किया । चौका पर बैठी बहन, वहीं से पूछती है कि कौन फल खाया था कि बच्चा सुन्दर हुआ । जच्चा कहती है कि किसमिस, छुहाड़ा और बादाम खाया और फोड़-फोड कर नारियल खाया । इसलिए बच्चा बड़ा सुन्दर हुआ । वस्तुतः मालिन ने सभी प्रकार के फूलों से परिपूर्ण फुलवारी लगायी है ।

(१५)

महलो में जच्चा रानी दरदे बेआकुल, होरिलवा के पापा हम न कोई के बोलयवो ।
सासु जे अइहें देवता मनइहें, देवता मनाई नेग मांगिहें, होरिलवा के पापा ....।

न नेग मिलिहें, रिसाय चली जइहें, मनावे न जयबो तो लोग सब हँसिहें ।
होरिलवा के पापा हम न कोई के बोलयबो ।

ननदी जे अइहें काजर पारन के, कजरा पराई नेग मांगिहें, होरिलवा के पापा .... ।
कजरा परइया न नेग मिलिहें, रिसाय चली जइहें, होरिलवा के पापा .... ।

मनावे न जयबो तो लोग सब हँसिहें, होरिलवा के पापा हम न कोई के बोलयबो ।

अर्थ

महल में जच्चा रानी दर्द से व्याकुल है फिर भी पति से कहती है कि मैं किसी को नहीं बुलाऊँगी । सास आती है तो देवी-देवता की मनौती मानेंगी और उसके लिए नेग-दस्तूर मांगगी । नेग नहीं मिलने पर क्रोधित होकर चली जायगी और उन्हें नहीं मनाऊँगी तो सारे लोग हँसेंगे । अतः हे होरिल के पिता मैं किसी को नहीं बुलाऊँगी । यदि ननद आती है और काजल पारती है तो उसका नेग मांगती है । काजल पारने का नेग नहीं मिलता है तो वह क्रोधित होकर चली जायगी और मैं उन्हें मनाने नहीं जाऊँगी तो सारे लोग हँसेंगे । अतः मैं किसी को बुलाऊँगी ही नहीं ।

(१६)

मचिया बइठले कोसिला रानी, मेघवा से अरज करे हो ?
ललना मत बरसऽ केदली के बनवाँ तो राम-लछुमन बन गेलन हो ।

कंई जे भींजले बेलतर, केई बबूर तर हो ।
ललना कंई जे भींजले सीरीस तर, ओहि केदली बनवाँ हो ।

रामजी भींजले बेलतर, लछुमन बबूर तर हो ।
ललना सीता-सुन्दर भींजले सीरीसतर, ओहि केदली बनवाँ हो ।

केकरा के भींजले पगड़िया तो कंकरा के जोड़वा भींजे हो ।
ललना कंकरा के भींजल चुनरिया तो राम-लछुमन बन गेलन हो ।

राम के भींजले पगड़िया तो लछुमन के जोड़वा भींजे हो ।
ललना सीता सुन्दर भींजले चुनरिया तो राम लछुमन बन गेलन हो ।

अर्थ

मचिया पर बैठी कौशिल्यारानी बादल से प्रार्थना करती है कि मेरे पुत्र राम-लक्ष्मण वन गए हैं, वहाँ केदली के वन में मत बरसना । वहाँ कौन बेल वृक्ष के नीचे भींग रहा होगा और कौन बबूल वृक्ष के नीचे तथा उस केदली वन में सीरीस वृक्ष के नीचे कौन भींग रहा होगा ? रामचन्द्र बेल वृक्ष के नीचे और लक्ष्मण बबूल तथा सुन्दरी सीता सीरीस वृक्ष के नीचे भींग रही होगी। किसकी पगड़ी भींग रही होगी और किसका जोड़ा-जामा तथा किसकी चुनरी भींग रही होगी ? राम-लक्ष्मण वन चले गए हैं, राम की पगड़ी और लक्ष्मण का जोड़ा जामा भींगता होगा तथा सुन्दरी सीता की चुनरी भींग रही होगी ।

(१७)

आज ललना जी के छठी तऽ छठी मनाना है ?
सासु जी अइहें, ननदी भी अइहें, गोतनी भी है मुझे वैरिन –

तभी भी बुलाना है। आज ललना जी के छठी, तऽ छठी मनाना है ।
सासुजी अइहें, नेग सुनइहें, उनको के रुपया भंजा के, अठन्नी नेग देना है ।

गोतनी जे अइहें हलुआ घाटन को, उनको अठन्नी भंजा के, बदलिया चुकाना है ।
ननदी जे अइहें काजर पारन के, उनको चवन्नी भंजा के दुअन्नी नेग देना है ।

अर्थ

जच्चा कहती है कि आज ललना की छठी मनानी है । सास आवेगी, ननद आवेगी, गोतनी वैरी है फिर भी उन्हें भी बुलाना है, आज ललना की छठी है । सास आकर नेग-दस्तूर की वात सुनावेगी । उन्हें एक रुपया भुना कर आठ आने मात्र नेग में देना है । हलवा घाटने गोतनी आवेगी उन्हें अठन्नी भंजाकर देना है तथा उनकी दी हुई बदली को चुका देना है । काजल पारने ननद आवेगी उन्हें चवन्नी भुनाकर दो आने मात्र नेग में दे देना है ।

(१८)

पलंगऽ बइठल हथ महादेव, मचिया गउरा देई हे ?
हमरा पुतरवा के साध, पुतर कइसे पायब हे ।

करबई में छठ एतवार, सूरज गोड़ लागब हे ।
मिलि जुलि पारथी बनायब, पुतर फल पायब हे ।

कुरखेत मटिया मंगायब, गंगाजल सानब हे ।
काँसे कटोरिया पारथी बनायब, फल-फूल लायब हे ।

देबइन हम अछत-चनन अउरो बेल पत्तर हे ।
देबइन धथुरवा के फूल, भांग घोटि लायब हे ।

करबइन में बरत परदोस पुतर फल पायब हे ।
एक पख पुजल दोसर पख, तेसरे चढ़ि आयल हे ।

पूरी गेल गउरा के मनकाम, पुतर फल मिलल हे ।

अर्थ

पलंग पर महादेव और मचिया पर गौरा देवी बैठी हैं । गौरी के पुत्र की कामना है, वह पुत्र कैसे प्राप्त करे ? वह आगे कहती है मैं छठ-व्रत और एतवार व्रत करूँगी, सूर्य से प्रार्थना करूँगी । हम दोनों व्यक्ति मिलकर विशिष्ट पात्र बनावेंगें । पवित्र खेत से मिट्टी मंगाऊँगी, उसे गंगाजल से सानूँगी । काँस की कटोरी में पारथी बनाकर, फल-फूल लाऊँगी । मैं अक्षत, चंदन और बेलपत्र चढ़ाऊँगी । धथूरे के फूल और भांग घोटकर लाऊँगी और प्रदोष व्रत करूँगी । इस प्रकार पुत्र-फल की प्राप्ति होगी । एक पक्ष पूरा हुआ, दूसरा और तीसरा पक्ष भी समाप्त हो गया । इस तरह गौरी की मनोकामना पूर्ण हो गई, उसे पुत्र-फल की प्राप्ति हो गई ।

(१९)

राजा बांया गरिया छोहरवा हे, बदमवाँ मोरा मन-भावे रे।
अंगना में लेमु बोया, दुअरे अनार बोया जी, राजा बोया है छुहरवा, बदमवाँ...

अंगने में लेमु फला, दुअरे अनार फला जी, राजा फला है छुहरवा,
बदमवाँ मोरा मन भावे रे ।

अंगने का लेमु पका, दुअरे अनार पका, पका है छुहरवा बदमवाँ मोरा ....

अंगने का लेमुआ तोड़ा, दुअरे अनार तोड़ा, राजा तोड़ा हे छुहरवा बदमवाँ मोरा....
गेलूँ में वृंदावन, हुए हैं नन्दलाल, होरिलवा मोरा मन भावे रे ।।

अर्थ

इस सोहर में दोहद का वर्णन है। पति ने गरी-छुहारा बोया है । आंगन में नीबू और दरवाजे पर अनार तथा छुहाड़ा बोया है । आंगन में नींबू फला, दवाजे पर अनार और छुहाड़ा फला परंतु गर्भवती को तो बादाम ही अच्छा लगता है । आंगन का नीबू पक गया, दरवाजे का अनार और छुहाड़ा पका । उसके पति ने आंगन का नीबू, दरवाजे का अनार और छुहाड़ा तोड़ा । परन्तु मुझे तो बादाम ही अच्छा लगता है । मैं वृन्दावन गई जहाँ नन्दलाल का जन्म हुआ है, वह बालक (होरिलवा) मेरे मन को प्रिय लगता है ।

(२०)

चलूँ-चलूँ डगरिन भवन मोर हम राजा दसरथ हे।
डगरिन मोरो घर अयलन भगवान, भेलन नंदलाल मोरा हे।
एतना बचन जब सुनलन, सुनहूँ न पयलन हे।

राजा लेई आवहूँ डोलिया कहार, बुलइते न जायम हे।
एतना सुनइते राजा दसरथ, डोलिया फनावल हे।
डगरिन चढ़ि चलूँ मोर महलिया, बालक नेहआवहूँ हे।

हम लेबो हथिया से घोड़वा अउरो गज-मोतीये हे।
तमकि के बोलऽ हकई डगरिन तबे नेहवायब हे।
एतना सुनत राजा दशरथ, डगरिन अरज करे हे।

डगरिन ले लेहूँ सहन भंडार, वालक नेहावहूँ हे।
धन-धन, धन राजा दसरथ, धन कोसिला माता हे।
ललना धन-धन डगरिन के भाग जे राम नेहावले हे।

अर्थ

डगरिन के दरवाजे पर जाकर राजा दसरथ कहते हैं कि मेरे घर पर नंदलाल हुआ है, तुम हमारे भवन में चलो। इतनी बात सुनते ही उसने कहा कि मैं पैदल नहीं जाऊँगी, हमारे लिए डोली-कहार ले आइये। यह सुनकर राजा दसरथ ने डोली-कहार मंगवा लिया और कहा कि हे डगरिन, इसपर चढ़कर मेरे महल में चलो और बालक को स्नान कराओ। डगरिन रूठती हुई एंटकर बोलती है कि मैं हाथी-घोड़े के साथ गजमोती लूँगी तभी बालक को स्नान कराऊँगी। यह सुनकर राजा दसरथ डगरिन से प्रार्थना करते हैं कि तुम सारा खजाना ले लो और बालक को स्नान करा दो। राजा दसरथ और कौशिल्या धन्य हैं जिनके यहाँ भगवान राम ने जन्म लिया है और वह डगरिन धन्य है जो राम को स्नान कराती है।

(२१)

भंगिया पिसयते महादेव, सुनह बचन मोरा हे।
देवो तोरा धनी दरद बेआकुल, तोरा के बोलावथु हे।
एतना बचन जब सुनलन, सुनहूँ न पवलन हे।

बुढ़उ बैल पीठी भेलन असवार कहाँ रे धनी बेआकुल हे।
सउरी में से बोलथी गउरा देई, सुनह बचन मोरा हे।
देवा आज सरम केरा बतिया, तोरा से कहियो केता हे।

मारऽहे पंजरवा में पीर से डगरिन बोलाई देहूँ हे।
एतना बचन जब सुनलन, बुढ़उ दिगम्बर हे।
बुढ़उ बैल पीठ भेलन असवार, कहाँ रे बसे डगरिन हे।

बाट जे पूछहथ बटोहिया तऽ कुइयाँ पनिहारिन हे।
इहाँ तऽ सहरवा के लोग, कहाँ रे बसे डगरिन हे।

अर्थ

यहाँ महादेव और पार्वती के माध्यम से लोकधर्मी संस्कृति की आनुष्ठानिक प्रक्रिया का वर्णन है। महादेव भांग पीस रहे थे। इसी समय किसी ने उनसे अपनी बातें कहीं – "हे महादेव, तुम्हारी पत्नी दर्द से व्याकुल है, तुम्हें बु[illegible] रही है। इतनी बात सुनते ही बूढ़े शिव बसहा-बैल की पीठ पर सवा[illegible] कि [illegible] पत्नी कहाँ दर्द

से व्याकुल है । गौरी प्रसूति-गृह से अपनी बात कहती है – "हे देव, शर्म की बात है, मैं आपसे कितनी बातें कहूँ । मेरे पंजरे में पीड़ा उठ रही है, डगरिन को बुला दें । वृद्ध दिगम्बर-महादेव जब इतनी बात सुनते हैं तो वे पुनः बैल की पीठ पर सवार हो जाते हैं और डगरिन का निवास खोजने निकल जाते हैं । वे राह में चलने वाले बटोही और कुएँ पर पानी भरने वाली पनिहारिन से डगरिन के बारे में पूछते हैं । लोग बताते हैं कि यहाँ तो सभी शहरी लोग हैं, कौन जाने, डगरिन कहाँ बसती है । यहाँ पौराणिक कथा और लोकधर्मी अनुष्ठान का कितना सटीक वर्णन हुआ है।

(२२)

मनवां में दुखित देवकी रानी चलले जमुना दह हे ।
ललना फेर नहीं करवई परसंग जलम मोर अकारथ हे ।
परबइ जमुन दह जाई धँसिए जयबई अहे दहे हे ।
ललना करबइ न बसुदेव संग जलम न सोआरथ हे ।।

दस सखि आगे भेल, दस सखि देवकी के पीछे भेल हे ।
देवकी, करुँ बसुदेवजी के संग जलम होतो सोआरथ हे ।
पहिला पहर राती सुतली सपना एक देखली हे ।
ललना हरिअर केरवा के खम्भ दुआरी केतो रोपिगेलई हे ।।

दूसर पहर जब बीतल सपन एक देखली हे ।
ललना हरिअर तुलसी के बिरवा, दुआरी केतो रोपि गेलई हे ।
तेसर पहर जब बीतल सपन एक देखली हे ।
ललना कोरे नदकोरवे दहिया दुआरी केतो रखि गेलई हे ।।

अर्थ

पुत्र हत्या के कारण देवकी रानी दुखी है और वही अवस्था में वह जमुना नदी चली । सोचती है कि मैं किसी के फेरने से नहीं फिरूँगी अर्थात् मैं पुनः पति का संग नहीं करूँगी क्योंकि मेरा जन्म व्यर्थ है । मैं जमुना में जाकर डूब मरुँगी । कभी *वासुदेव* का संग नहीं करूँगी, जीवन में कोई स्वार्थ नहीं रह गया है । लेकिन सखियाँ देवकी को जाने नहीं देती, दस-दस सखियाँ देवकी के आगे-पीछे हो गई और कहने लगी कि *वासुदेव* का संग करो, जन्म सार्थक हो जायगा । देवकी सोती है तो रात्रि के प्रथम प्रहर में स्वप्न देखती है कि उसके दरवाजे पर किसी ने हरे केला का स्तम्भ रोप दिया है । रात्रि के दूसरे प्रहर में स्वप्न देखती है कि किसी ने हरी तुलसी को दरवाजे पर रोप दिया है । रात्रि के तीसरे प्रहर में देवकी स्वप्न देखती है कि किसी ने कोरे हँड़िया को दरवाजे पर रख दिया है । ये शुभ स्वप्न पुत्र जन्म के द्योतक हैं ।

(२३)

कोठरिया जे लिपली ओसरवा से अउरो देहिरया से,
ललना, तइयो न चुनरिया मइल भेल, एक रे होरिलवा बिनु।

अंगना भी लिपली, दुहरिया जे लिपली हे,
ललना पूरल न मन केरा आस एक रे वलकवा बिनु।

देहिया में सौ-सौ गो सारी अउरो में चोली बंद हे,
ललना तइयो न देहिया सोहावन लगे, एक रे होरिलवा बिनु।

जइसे वन के कोइलिया, बने-वने कुँहकई हे,
तइसही जियरा मोरा कुँहकई एक रे बलकवा बिनु।

जइसे बोरसी के अगिया गते-गते सुलगई हे,
तइसही जीआ मोरा सुलगई एक रे होरिलया बिनु।

अर्थ

एक स्त्री अपना घर लिपती है, ओसारा और दरवाजा लिपती है परंतु उसकी चुनरी धूमैल नहीं होती क्योंकि उसकी गोदी में बालक नहीं है। वह पवित्रता के लिए आंगन और बाहर का दरवाजा भी लिपती है लेकिन उसके मन की आशा पूर्ण नहीं होती, पुत्ररत्न प्राप्त नहीं होता है। शरीर में पहनने के लिए सौ-सौ साड़ियाँ एवं चोलियां हैं परंतु बालक के बिना वह सुन्दर नहीं लगती। उसका मन सदा दुखी रहता है। जैसे वन की कोयल वन-वन रोती चलती है उसी प्रकार उसका जी भी बालक के बिना रोते रहता है। जिस प्रकार बोरसी की अग्नि धीरे-धीरे सुलगते रहती है उसी प्रकार मेरा जी भी बालक के बिना जलते रहता है।

(२४)

एक धानी अंगवा के पातर पिया के सोहागिन हे,
ललना, दोसरे दुहारी लागल ठाढ़ काहे भौजो आसूँ ढारे हे।

बउवा तोरो भइया देलन बनवास से एक रे पुतर बिनु हे,
भौजो, मनावहुँ सुरुज भगवान, पुतर एक पायब हे।

ललना पूजि जइहें मन केरा आस भइया गलबात करे हे,
नेहाई धोआई खाड़ भेलन, सुरुज गोड़ लागले हे।

ललना, मांगले पुतर, भगवान से अँचरा पसारी लेल हे ,
आधी राती गेल पहर राती होरिला जनम लेल हे ,
ललना बजे लागल आनंद बधावा भवन उठे सोहर हे ।

अर्थ

एक स्त्री शरीर से दुबली-पतली और सुहागिन है । परंतु उदास, दरवाजे पर खड़ी रो रही है । देवर ने पूछा कि हे भाभी, आँख से आँसू क्यों गिर रहे हैं ? वह कहती है कि हे बाबू, तुम्हारे भाई ने पुत्र विहीन होने के कारण वनवास दे दिया है । देवर ने कहा कि हे भाभी, सूर्य की उपासना करो, पुत्र की प्राप्ति होगी । तुम्हारी आशा पूर्ण हो जायगी और मेरे भैया तुम्हें गले से लगाकर प्यार भरी बातें करेंगे । स्त्री ने सूर्योपासना की । स्नानकर खड़ी हुई और सूर्य भगवान को गोड़ लागकर तथा आंचल पसार कर भगवान से एक पुत्र की कामना की । फिर क्या था आधी रात्रि के बाद पहर भर रात्रि रहते ही पुत्र का जन्म हो गया । शीघ्र आनंद की लहर फैल गई और भवन में सोहर गाया जाने लगा ।

नोट - इस सोहर गीत की अपनी विशिष्ठता है । इसमें बंध्या स्त्री का वनवास और देवर द्वारा पुत्र-प्राप्ति के लिए मार्ग-दर्शन तथा तदनुकूल क्रिया करने से पुत्र की प्राप्ति कई अवस्थाओं का एक ही साथ वर्णन मिलता है । प्रायः सोहर में एक ही अवस्था का वर्णन मिलता है लेकिन यहाँ स्त्री की कामना, प्रयास और फल प्राप्ति की त्रिवेणी बहती है ।

(२५)

रोपलूँ में लेमुआ अनार तो अउरो अमरूदवा रोपलूँ हे ।
ललना से हो फुलवरिया लगई अन्हार एक तो बलमुआ बिनु हे ।

ससुरा में एक हई देवरवा तो एक भैसुरवा हई हे ।
ललना से हो ससुरा लगऽ हई भेआवन एक तो बलमुआ बिनु हे ।

नइहरा में तीन गो भइया, तीन-चार भतिजवा हई हे ।
ललना से हो नइहर लगऽ हई भेआवन एक तो मइया बिनु हे ।

पेन्हलूँ में बाजू-बाँक-बिजइठिया तो मांग के टीकवा पेन्हलूँ हे ।
ललना से हो मंगिया लगऽ हे भेआवन एक तो सेनुरवा बिनु हे ।

अर्थ

सोहर गीत होते हुए भी इसमें जच्चा का पति और मातृ विहीन होना दुखी होने का कारण है । गर्भाधान के बाद पति की मृत्यु हो गई है तो पुत्रोत्सव के समय जच्चा को प्रसन्नता के साथ दुखानुभूति भी हो रही है । जच्चा ने अपनी फुलवारी में नीबू,

अनार और अमरूद का वृक्ष रोपा है लेकिन पति के बिना वह फुलवारी अंधकार पूर्ण लग रहा है । उसकी श्वसुराल में एक देवर और एक भैंसुर भी हैं लेकिन पति के बिना उसका घर भयंकर लग रहा है । मायके में तीन भाई और चार भतीजे हैं फिर भी माँ के बिना वहाँ भी भयंकर लगता है । पुत्रोत्सव में वह मांग में टीका पहनती है और हाथ में वाँका विजाइठ पहनती है लेकिन उसका मांग सिन्दुर के बिना भयंकर लगता है ।

(२६)

गंगा मइया के ऊँची रे अररिया, तिरिअवा एक रोवले हे ।
मइया, अपना लहर तुहूँ दीहँऽ ओही में समायब हे ।

चुप-चुप तिरिया अपन घरे जाहूँ लहर नहीं मांगहूँ हे ।
आजु के नौवा महीनवाँ होरिलिवा गोदी खेलई हे ।

गंगा माई खँसी-पाठी देबवऽ बलकवा जब ही पायब हे ।
मइया देहूँ तू भरत असपूत, जगत जस गावये हे ।

अर्थ

गंगा माँ के ऊँचे किनारे पर एक स्त्री रो रही है और कह रही है कि हे माता, आप अपनी लहर दें जिसमें मैं प्रवेश कर जाऊँ । यह सुनकर गंगा माई उसे चुप कराती है और अपने घर लौट जाने को कहती है । कहती है कि लहर मत मांगो, आज के नोवें महीने में तुम्हारी गोदी में एक बालक खेलेगा । स्त्री कहती है कि जब मैं बालक प्राप्त कर लूँगी तो आपको मनौती में खँसी-पाठी चढ़ाऊँगी । हे माता, मुझे भरत की तरह पुत्र दें जिसका यश सारा संसार गाता रहे ।

(२७)

सुरसत-गनपत मनाइब चरन पखारब हे,
अहे रूकमिनी भेले रानी जोग केसव वर पावल हे ।

कउन कारन भेल तोही के, कहि के मोही सुनावहूँ हे,
कउन चीज मन भावत, ओही के बतावहूँ हे ।

सब छोड़ अमरस चाटल मधुर रस तेजल हे ।
इयरी-पियरी सब फेंकल चित फरिआयल हे ।

सतवें मास चइत आयल, सत बाजन बाजे हे,
अहे रूकमिनी चिहुँकी के उठथी बदन पियरायल हे ।

अठवें महीने जब आयल बइसाख नियरालय हे,
अहे फेरी-फेरी देख मुँह दरपनियाँ कइसन मुँह पीयर हे।

नवें महीना जव आयल जेठ के दुपहर हे,
झरक चले हई धूरी उठे हई से रूकमिनी व्याकुल हे।

कवन विधि उतरब पार, चितय रानी रूकमिन हे,
मोती-मूँगा, सोना-चानी लुटावले जे कुछ मांगल हे।
सखी सब मंगल गावही, सुध-बुध विसरही हे।।

अर्थ

इस मगही सोहर में 'दोहद' का वर्णन आया है। सरस्वती और गणपति की प्रार्थना कर चरण-प्रक्षालण किया। रुक्मिणी रानी होने योग्य हो गई और कृष्ण-जैसा वर की प्राप्ति हुई। जब वह गर्भवती हुई तो श्रीकृष्ण पूछते हैं कि तुम्हें क्या हुआ और कौन चीज मन को भाता है ? वही चीज बताओ। वह कहती है कि सब कुछ छोड़कर अमावट खाने की इच्छा है। मीठा रस त्यागने की इच्छा है। मेरा चित्त फरिया रहा है (मिचली आ रही है) नये-पीले वस्त्र नहीं भाते। जब गर्भाधान का सातवाँ महीना चढ़ गया तो सतबजना (सात प्रकार के बाजे) बजने लगा, रुक्मिनी चेहाकर उठती है, उसका मुख पीला हो गया है। आठवें महीने में वैशाख आ गया, वह बार-बार दर्पण देखती है तो उसका मुँख अत्यंत पीला दीखता है। नवें महीने में जेठ की दुपहरी चिलचिलाने लगी, लू तेज चलने लगी, धूली उड़ने लगी तो रूक्मिनी व्याकुल हो गई। वह सोचने लगी कि किस प्रकार पार उतरती है। अंततः पुत्र-जन्म हुआ। मोती-मूँगा, चाँदी-सोना लुटाया जाने लगा। कोई भी व्यक्ति जो कुछ मांगता है, वह सब दे दिया जाता है। सभी सखियाँ मंगल गीत गाने लगती है, सुध-बुध बिसर जाता है अर्थात् सभी लोग आनंदातिरेक में विभोर हैं।

(२८)

सावन के सहनइया भदोइया के किचकिच हे,
सुगा-सुगइया के पेट, वेदन कोई न जानये हे।

सुगा-सुगइया के पेट, कोइली दुख जानये हे,
एतना बचन जब सुनलन, सुनहूँ न पयलन हे।

फेंकी दिहले हथवा कुदारी बबूर तर हे,
डाँड़ मोरा फाटहे करइली जाके, ओटिया चिल्हकि मारे हे।

राजा का कहूँ दिलवा के बात, धरती अन्हार लागे हे।

अर्थ

सावन में चारों ओर मेढ़क, मोर, पपीहे की सहनाई बज रही है और भादों में सर्वत्र कीचड़ ही कीचड़ है । सुग्गी के पेंट में बच्चा है और वह दर्द से व्याकुल है । उसका दु:ख कोई नहीं समझता । उसकी सखि कोयल जानती है । उसने उसके पति को खबर कर दी । उसका पति हाथ का कुदाल बबूर वृक्ष के नीचे फेंक दिया और दौड़ा-दौड़ा अपनी पत्नी के प्रसूति-गृह में पहुँचा तो पत्नी ने कहा कि मेरी कमर करैली की तरह फाट रही है और पेट के नीचले हिस्से में खोंचा मार रहा है । हे मेरे राजा, अपने हृदय की बात मैं क्या कहूँ, मेरे लिए सारी पृथ्वी अंधकारपूर्ण लगती है ।

(२९)

छठिया पूजेला ननदी ठाढ़ अंगनवाँ,
हमरा के भउजो का देबऽ ना।

छठी पूजइया ननदो साठ रुपइया,
हमरो से ननदो झट ले लेहूँ ना।

साठ रुपइया भउजी धर दऽ पउतिया,
लाख रुपइया तऽ पूजइया लेबो ना।

जब त ननदिया होरिला लेके चललन,
लाख रुपइया झट फेंकि देलन ना।

अर्थ

पुत्र-जन्म के ६ दिनों के बाद छठी होती है । उस अनुष्ठान में ननद भाभी से छठी पूजाई नेग मांगती है । भाभी कहती है कि छठी पुजाई साठ रु० होता है, हमसे जल्दी ले लो । ननदी कहती है कि साठ रुपया अपनी पौती में रख दो, मैं पूजाई में लाख रुपया लूँगी । इसके बाद जैसे ही ननद बालक को लेकर चली कि भाभी ने झट से लाख रुपया फेंक दिये ।

(३०)

घोड़वा चढ़ल, आवे भइया,
बहिनी धयलन लगाम गे माई।

छठी पूजन भइया साठ रुपइया,
आँख अंजन सोने थारी गे माई।

पान खबैया पनबट्टा मांगब ,
पिलकी बिगन उगलदान गे माई ।

आपु चढ़न भइया डोला मांगब ,
सामी चढ़न के घोड़ा गे माई ।

अर्थ

घोड़े पर चढ़ा भाई बाहर से घर आया तो बहन ने लगाम थाम ली और कहने लगी कि हे भाई, छठी की पूजाई साठ रुपया लूँगी, आँख में आंजन लगाने के लिए साने की थाली लूँगी । पान रखने के लिए पनबट्टा और पिलकी फेंकने के लिए उगलदान लूँगी । अपनी सवारी के लिए डोला और स्वामी के चढ़ने के लिए घोड़ा लूँगी ।



मुण्डन या चूड़ाकरण

(१)

ओखरी में चउरा, छटायब हे, चकरी मे दाल दरायब हे-
कन्हइया जी के मुण्डन हे ।
ब्रह्मण के नेवता पेठायब, पोथिया समेत चली आवऽ-
कन्हइया जी के मुण्डन हे ।

ब्रह्मण अझुरी पसारे, हम लेबो पोथिया के मोल-
कन्हइया जी के मुण्डन हे ।
हजमा के नेवता पेठायब, छुरवा समेते चली आवऽ-
कन्हइया जी के मुण्डन हे ।

कुम्हरा के नेवता पेठायब, कलसा समेत चली आवऽ-
कन्हइया जी के मुण्डन हे ।
फुआ के नेवता पेठायब, फुफा समेते चली आवऽ-
कन्हइया जी के मुण्डन हे ।

फुआ अझुरी पसारे, हम लेबो बबुआ के मोल-
कन्हइया जी के मुण्डन हे ।

अर्थ

बच्चे का प्रथम केश मुण्डन की तैयारी हो रही है । उसके अभिभावक कहते हैं कि ऊखल में चावल कुटावेंगे और चक्की में दाल दरावेंगे । मेरे पुत्र, कन्हइया जी का मुंडन संस्कार संपन्न होनेवाला है । इसके लिए ब्राह्मण को आमंत्रित करेंगे कि वे पोथी लेकर चले आवें । परंतु ब्राह्मण हठ कर रहे हैं कि हम पोथी का मोल ले लेंगे । पुनः वही बात कही जाती है और हजाम को छूरा सहित आने का निमंत्रण दिया जाता है । इसी प्रकार कुम्हार को नेवता दिया जाता है कि वह कलश के साथ उपस्थित हो जाय । पुनः फूआ को फूफा के साथ आने का आमंत्रण दिया जाता है तो फूआ भी हठ करती है कि हम बबुआ का मोल ले लेंगे तभी आवेंगे ।

(२)

ब्राह्मण अयलं वेद भनन हे, अहे गोतिया के पड़ल हंकार, बरूअवा के मुंडन हे ।
गोतिया आयो माड़ो छावन हे, अहे गोतनी के पड़ल हंकार, बरूअवा के मुंडन हे ।

गोतनी आयो मंगल गावन हे, अरे कुम्हारा के पड़ल हंकार, बरूअवा के मुंडन हे ।
कुम्हारा आयो कलसा लेले हे, अरे हजमा के पड़ल हंकार, बरूअवा के मुंडन हे ।
हजमा आयो छुरवा लेले हे, बरूअवा के मुंडन हे ।

अर्थ

वालक का मुण्डन है ब्राह्मण वेद पढ़ने आ गए हैं तब गोत्रों की पुकार हुई । गोत्र मंडप छाने आये तो गोतनी की पुकार हुई । गोतनी मंगल गाने आई तो कुम्भकार की पुकार हुई और कुम्भकार कलश लेकर आया । पुन: हजाम की पुकार की गई तो वह अस्तूरा लेकर पहुँच गया। आज बरूआ (बालक) का मुण्डन होने जा रहा है ।

(३)

आवहूँ नगर के ब्राह्मण, पोथिया विचारहूँ हे ,
आज कन्हइया जी के मुंडन, नेवता पेठायब हे ।

वीरा ले मनयबो गोतिया, सेनुर ले गोतनी लोग हे ।
अहे बुलकी ले मनायब ननदिया, मड़उवा मोर शोभत है ।

अर्थ

आज बालक का मुंडन है, निमंत्रण देना है । अत: नगर के ब्राह्मण को पोथी से शुभदिन बताने का अनुरोध किया जाता है । साथ ही माता कहती है कि पान का बीड़ा लेकर गोतिया और सेन्दुर लेकर गोतिनी को मना लूँगी । ननद को नाक की बुलाकी देकर मना लूँगी तभी मेरा मुण्डन सुशोभित होगा।

(४)

आहूँ बारहमन, बैठूँ सतरंगिया, आज कन्हइया जी के मुरन हे ।
ब्राह्मण अझुरी पसारे, हम लेबो पोथिया के मोल– आज कन्हइया जी के मूरन हे ।

हजमा अझुरी पसारे, हमे लेबो छुरवा के मोल– आज कन्हइया जी के मूरन हे ।
कुम्हरा अझुरी पसारे, हम लेबो कलसा के मोल– कन्हइया जी के मूरन हे ।

फूआ अझुरी पसारे, हम लेबो बबुआ के मोल– कन्हइया जी के मूरन हे ।

अर्थ

हे ब्राह्मण, आइए और सप्तरंगी विछावन पर बैठें । ब्राह्मण आकर हठ करते हैं कि मैं पोथी का मोल लूँगा । हजाम भी हठ कर रहा है कि मैं अस्तूरे का मोल लूँगा । फूआ तो बालक का ही मोल लेने के लिए हठ करती है ।

(५)

पहिला अस्तूरा नउवा फेरल, लाल गेले छिहुलाय, लालजी के मुंडन हे ।
हजमा के लुलुहा कटाए नइनियाँ के देहू बनवास, लालजी के मुडन हे ।

अंतिम अस्तूरा नउवा फेरल, लाल गेले लोछिआय, लालजी के मुंडन हे ।
हजमा के सोनवाँ गढ़ायब, नइनियाँ के लहंगा पटोर, लालजी के मुंडन हे ।

अर्थ

आज बालक का मुण्डन है । नाई केश छील रहा है । पहला अस्तूरा फेरते ही बालक चिहुँक उठा । इसे देखकर अभिभावक क्रोधित हो उठता है । हजाम को गट्टा (हाथ का अग्र भाग) कटा कर नाइन को बनवास दे दूँगा । इसी प्रकार नाई धीरे-धीरे बाल छीलता गया और अंत तक बालक रोता गया । परंतु बाद में अभिभावक प्रसन्न होकर हजाम को सोना और नाइन को लहंगा-पटोरी देने को प्रस्तुत हो जाता है ।

(६)

फूआ अयलन अँचरा पसरले हे, अहे बाबा के पड़ले हंकार ,
बरुअवा के मुंडन हे ।
बाबा अलथिन गेठी खोलले हे, अहे भइया के पड़ले हंकार ,
बरुअवा के मुंडन हे ।

अहे भइया गेलन रिसिआय, बहिनी घर-लूटन हे ,
अहे भउजी गेलन खखुआय, ननदी घर लूटन हे ।।

अर्थ

बालक के मुण्डन पर फूआ आंचल पसारे आ गई तो पिताजी की बुलाहट हुई । पिता गठरी खोले आए तो भाई को पुकारा गया । भाई सुनकर क्रोधित हो गया कि बहन घर लूटने आई है । ननद को 'घर-लूटन' कहती भाभी भी क्रोधाभिभूत हो गई ।

(७)

सभवा बइठल रउआ बाबा कवन बाबा हो ,
बाबा लाबर मोरा छेकले लिलार करहूँ जग मूड़न हो ।

झारि बान्हूँ, सम्हारि बान्हूँ कवन बरुआ हो,
आवे देहूँ जेठ बइसाख करब जग मूड़न हो।

करबो अलबेला जग मूड़न हो,
लाबार घटि जइहें जग मूड़न हो ।।

अर्थ

छोटे बच्चे का केश सर से ललाट तक बढ़कर फैल गया है। वह सभा में बैठे अपने बाबा से कहता है कि मेरा मुण्डन करवा दें। इस पर बाबा कहते हैं कि हे बरुआ, झार-सम्हालकर केश को बाँध लो। जेठ-वैशाख का महीना आने दो मैं अपने अलबेला का मुण्डन करा दूँगा, सर का सारा केस समाप्त हो जायगा।



जनेऊ या यज्ञोपवीत

(१)

गंगा रे अरार कवन बरुआ करे असनान ?
करे असननियाँ रे बरुआ, निरेखे आठो अंग ।

बिनु हो जनेउवा हो बाबा, ना सोभे कान ।
अप्पन जनेउवा हो बाबा हमरा के दे दऽ ।

हमरो जनेउवा हो बरुआ भे गेल पुरान ।
तोहरो जनेउवा हो बरुआ देबो बजना-बजाय ।

करे असननियाँ रे बरुआ निरेखे आठो अंग ।
बिनु जनेउवा हो चाचा, ना सोभे कान ।

अर्थ

कोई बालक गंगा किनारे स्नान कर रहा है । स्नान करते समय अपने सारे शरीर को देखता है । बिना जनेऊ का उसका शरीर और कान सुशोभित नहीं होता है । अतः वह अपने दादा से उनका जनेऊ मांगता है । दादा कहते हैं कि मेरा जनेऊ पुरान पड़ गया है । मैं तुम्हें गाजे-बाजे के साथ नया जनेऊ दूँगा । इसी प्रकार वह अपने अन्य परिवार को कहता है और सभी नया जनेऊ देने के लिए कहते हैं ।

(२)

जेहि देस सीकियो न डोले, साँप ससरी गेल हो,
ललना ओहि देस गेलन दादा रइया, अंगुरी धरी कवन बरुआ हे ।

पहिले जे मारबो साहिल, साहिल काँटा चाहीला हे,
ललना तबे हम मारबो मिरिगवा, मिरिग छाल चाहीला हे ।

ललना तबे हम काटबो परसवा, पारस डंटा चाहीला हे ।
ललना तबे हम काटबो मुंजियवा, मंजीयं-डांरी चाहीला हे ।

ललना आज मोरा बाबू के जनेउवा, जनेउवा पीयर चाहीला हे ।।

अर्थ

जिस देश में सीक नहीं डोलता (हवा नहीं चलती) साँप रेंगते चलता है । उसी देश में बालक को अंगुली पकड़कर उसका दादा ले गए हैं । दादा कहता है कि मैं पहले साहिल को मारूँगा क्योंकि मुझे साहिल का काँटा चाहिए । फिर मृग मारूँगा क्योंकि मुझे मृगछाला चाहिए । उसके बाद मैं पलाश काटकर उसका डंटा बनाऊँगा । फिर भुंज काटकर उसकी डांरी बनाऊँगा । प्रथम जनेऊ मुंज का ही दिया जाता है । अंत में दादा कहता है कि आज मुझे पीला जनेऊ चाहिए, मेरे बालक का आज यज्ञोपवीत संस्कार करना है ।

(३)

बाराहमन नेवतब, बराहमनी नेवतब, नेवतब पोथिया सहिते चली आवऽ गे माई ।
कुम्हार नेतवब, कुम्हइनिया नेवतब, नेवतब कलसा सहिते चलि आवऽ गे माई ।

नउआ नेवतब, नइनियाँ नेवतब, नेवतब छुरवा सहिते चलि आवऽ गे माई ।
बढ़ही नेवतब, बढ़हिनियाँ नेवतब, नेवतब पीढ़िया सहिते चलि आवऽ के माई ।

अर्थ

यज्ञोपवीत के समय सपत्नीक आमंत्रित किया जा रहा है । ब्राह्मण और ब्राह्मणी को निमंत्रण दूँगा कि वे पोथी लेकर चले आवें । कुम्हार और कुम्हइन को आमंत्रित करूँगा कि वे कलश लेकर चले आवें । नाई और नाइन को निमंत्रण दूँगा कि वे अस्तूरा लेकर आ जायें । बढ़ही और बढ़हिन को आमंत्रित करूँगा कि वे पीढ़ा लेकर चले आवें । सपत्नीक निमंत्रण मांगलिक माना जाता है ।

(४)

चइत में बरुआ बिदा भेल, बइसाख पहुँचल हे ।
जइबो में जइबो ओही देस जहाँ दादा अप्पन हे ।

उनकर चरन पखारी के हम पंडित होयबे हे, हम ब्राह्मन होयबे हे ।
जइबो में जइबो ओही देस जहाँ नाना अप्पन हे ।

उनकर चरण पखारी के हम पंडित होयबे हे, ब्राह्मण होयबे हे ।।

अर्थ

चैत मास में वरुआ (जनेऊधारी बालक) विदा हुआ और वैशाख मास आ गया। मैं वही देश में जाऊँगा जहाँ हमारे अपने दादा रहते हैं। उनका चरण प्रक्षालन करूँगा, विद्या अध्ययन कर पंडित बनूँगा, ब्राह्मणत्व को प्राप्त करूँगा। पुनः वह कहता है कि मैं अपने नाना का देश जाऊँगा और उनका चरण धोऊँगा। उनके चरण धोकर पंडित बनूँगा, ब्राह्मण बनूँगा।

(५)

अंजानो बाबू के मड़वा जनेऊ।
मड़वा ही बइठल अंजानो बाबू गेठ जोड़ी अनजानो सुगई हे।

बेदिअही घीव ढारिये गेल, सगरो भेल इंजोर हे।
सरग आनंद भे गेलन पितर लोग, अहे बंस बाढ़ल मोर हे।

अर्थ

अमुक बालक का मंडप में जनेऊ दिया जा रहा है। मंडप में उसके अमुक पिता और अमुक माता अपने वस्त्र में गाँठ जोड़कर बैठे हैं। वे मंडप की वेदी में घी डाल रहे हैं जिससे तेज प्रकाश फैलकर स्वर्ग में पहुँचता है जहाँ से उनके पितृगण आशीर्वाद दे रहे हैं कि मेरे वंश में वृद्धि हो रही है।

(६)

कहाँ के तू ब्राह्मण बरुआ कहवाँ बिनती तोहर, माई हे।
कउन सम्पत साही सुनि अयलऽ हो बरुआ, कउन देई दुहार धरि खाड़, माई हे।

गया के हम ब्राह्मण बरुआ, पटना में विनती हमार, माई हे।
दादा साही सम्पत सुनी अयली, दादी देई दुहार धरि खाड़, माई हे।

मांगिला हम धोती-पोथी मांगिला पीयर जनेऊ, माई हे।
मांगिला हो चढ़न के घोड़वा, मांगिला कनिया कुँमार, माई हे।

देबो में बरुआ धोती-पोथी, देबो में पीअर जनेऊ, माई हे।
देबो में बरुआ चढ़न के घोड़वा, एक नहि कन्या कुँआर माई हे॥

अर्थ

भिक्षाटन करते जनेऊधारी बालक से स्त्रियाँ पूछती है कि तुम्हारा निवास कहाँ है और कहाँ के लिए तुम प्रार्थना करते हो। कौन शाही की सम्पति की चर्चा सुनकर आये हो और किस देवी के दरवाजे पर खड़े हो ? गया का मैं ब्राह्मण हूँ और पटना

के लिए प्रार्थना करता हूँ। अपने दादा की सम्पति सुनकर आया हूँ और दादी के दरवाजे पर खड़ा हूँ । मैं धोती और पुस्तक मांगता हूँ और पीला जनेऊ मांगता हूँ तथा चढ़ने के लिए घोड़ा और एक कुँआरी कन्या मांगता हूँ । स्त्रियाँ उत्तर देती हैं कि हम सब धोती और पुस्तक देंगी, पीला जनेऊ और चढ़ने के लिए घोड़ा भी मिल जायगा परंतु कुँआरी कन्या नहीं मिलेगी (क्योंकि तुम अध्ययन करने जा रहे हो, ब्रह्मचर्य पालन करना होगा)

(७)

गंगा रे जमुनवाँ के रेतिया, सोनवाँ उपजावले हे ,
गंगा रे जमुनवाँ के रेतिया मोती-मूँगा उपजे हे ।

जे हम जनती बरुआ, तुहूँ पंडित-ब्राह्मन होत हे ,
सोने के थारी भराई, सोनवाँ भीख देइती हे ,
सोने के थारी भराई मोती-मूँगा देइती हे ।

अर्थ

गंगा और यमुना की रेती में सोना उपजता है, मोती-मूँगा उपजता है । भिक्षाटन करते जनेऊधारी बालक को माँ-बाप कहते हैं कि यदि हम लोग जानते कि हमारा बेटा पंडित ब्राह्मण हो जायगा तो सोने की थाली में मोती-मूँगा और सोना भर कर भीख में दे देती ।

(८)

बेलखरा से बरुआ विदा भेलन, अहे कासी पहुँचि गेलन हे ,
अहे पटना पहुँचि गेलन हे, कसमिरिया पहुँचि गेलन हे ।

अहे कासी जे गेलऽ बरूआ, पंडित होई गेलऽ हे ।
अहे पटना पहुँचि गेलऽ बरूआ पंडित होई गेलऽ हे ।

अहे कसमिरिया पहुँचि गेलऽ बरुआ, ब्राह्मन होई गेलऽ हे ।
अहे तोहर मइया खाड़ दुहरिया, घरे लौटि आवऽ हे ।।

अर्थ

बेलखरा का जनेऊधारी बालक काशी पहुँच गया, पटना और कश्मीर पहुँच गया । वहाँ जाकर पंडित हो गया, ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर गया । अब स्त्रियाँ कहती हैं कि तुम घर लौट जाओ, तुम्हारी माँ प्रतिक्षा कर रही है । जनेऊ गीत प्रायः प्रश्नोत्तर पद्धति में गाए जाते हैं क्योंकि यह विशुद्ध आनुष्ठानिक मगही लोकगीत है । प्रायः ये गीत सवर्णों में प्रचलित मिलते हैं ।

(९)

कुइयाँ असथान पर मुंजवा के थलवा,
मँज चीरे चललन वरुआ कवन बरूआ।

तहवाँ कउन बरुआ लोटि-पोटि रोवलन,
भूइयाँ लोटि रोवलन, देहूँ बावा हमरो जनेऊ हो।

झरलन-झुरलन जाँघि बइठवल,
देबो वावू तोहरो जनेऊ हो।

अर्थ

कुएँ के स्थान पर मूँज का थाला है। जनेऊ का आकांक्षी बालक (बरुआ) मूँज चीरने चला। वहाँ जाकर वह जमीन पर लोट-पोट कर रोने लगा और कहने लगा कि हे बाबा मुझे जनेऊ दें। बाबा ने बालक को झार-सम्हालकर अपनी जाँघ पर बैठा लिया और कहा कि हे बाबू तुम्हें जनेऊ देंगे।

(१०)

वेदियनी बोलले दुलरुआ जनेऊ-जनेऊ करे हे,
वाबा, के मोरा बेदिया भरावत जनेउवा दिलावत हे।

हँसि-हँसि बोलथी अनजानो बावा बोली भितरायल हे,
बाबू हम तोरा बेदिया भरायब जनेउवा दिलायब हे।

वेदियनी बोलले दुलरुआ जनेऊ-जनेऊ करे हे,
अम्मा के मोरा बेदिया भरावत, जनेउवा दिलावत हे।

हँसि-हँसि बोलथी सुहावे अम्मा, बोली भितरायल हे,
बाबू हम तोरा बेदिया भरायब जनेउवा दियायब हे।

(इसी प्रकार सभी रिश्तेदारों का नाम लेकर गीत की कड़ी बढ़ाई जाती है)

अर्थ

बेदी से बालक जनेऊ-जनेऊ की आवाज लगा रहा है और बाबा से पूछता है कि वेदी कौन भरावेंगे और जनेऊ दिलावेंगे। अमुक बाबा हँस कर बोलते हैं, उनकी बोली स्पष्ट नहीं निकलती है (भावातिरेक के कारण) मैं तुम्हारी वेदिका भराऊँगा और जनेऊ दिलाऊँगा। पुनः जनेऊ का आकांक्षी बालक माता से पूछता है तो वह भी हँस कर भरे गले से कहती है कि मैं वेदी भराऊँगी और जनेऊ दिलाऊँगी। इसी प्रकार बालक, चाचा, भाई, बहन आदि रिश्तिदारों से प्रश्न करता है और वही उत्तर सभी से मिलता है।

(११)

सभवा वइठल तुहूँ बावा कउन बाबा देहूँ बावा हमरो जनेऊ गे माई ?
वेदिया वइठल दुलरइतो बरुआ रतन के जोत गे माई।

कंई देवे मूँज जनेउवा, कंई देवे मिरिग छाला गे माई ?
केई देवे पियर जनेउवा, वेदिया के बीचे गे माई।

ब्राह्मन देलन मूँज जनेउवा, नउवा मिरिग छाला गे माई।
बाबा देलन पियर जनेउवा, वेदिया के बीचे गे माई।

(इस गीत में भी सभी संबंधियों के आलोक में गीत को आगे बढ़ाया जाता है)

अर्थ

रत्न की ज्योति की तरह तेजस्वी बालक जनेऊ वेदिका के नजदीक बैठा हुआ सभा में उपस्थित बाबा से अपने जनेऊ के बारे में पूछता है कि कौन मूंज का जनेऊ देंगे और कौन मृगछाला देंगे। वेदिका के बीच कौन पीला जनेऊ देगा ? ब्राह्मण ने मूंज का जनेऊ दिया, नाई ने मृगछाला दिया और पीले रंग का जनेऊ बाबा ने दिया। इन्हीं प्रक्रियाओं की पुनरूक्तियाँ चाचा, भाई आदि के साथ जोड़कर की जाती है।



विवाह के गीत

जात संस्कार के बाद विवाह संस्कार जीवन का सर्वाधिक सशक्त और हर्षोत्फुल्ल सामाजिक और सांस्कृतिक संस्कार है जिसे सम्पन्न होने में सप्ताहों से महीनों का समय लगता है । इसमें विविध पक्षों का बहुआयामी आनुष्ठानिक क्रियाओं का सम्पादन होता है । वर-वधू के चयन से लेकर चौठारी तक सैकड़ों क्रियाएँ निष्पादित होती हैं । लग्न निर्धारण, छेका, तिलक, मृतिका खनन, मंडपाच्छादन, घृतढारी, वंशरोपन, हल्दी, कलश, नहछू, मौर लेना, वर्त्तन लेना, तेल लेना, पीढ़ा-चौकी, बर पत्ता काटना, इमली घोटना, योग, सिन्दुर दान, सुमंगली, कन्यादान, शंखदान, लावा छिटाई, शिलारोहरण आदि अनेक आनुष्ठानिक क्रियाएँ विवाह के समय सम्पन्न होती है और सभी समय मांगलिक लोकगीतों से घर-आंगन ही नहीं गली-कूचे और खेत-बधार भी मुखरित हुआ करते हैं । तिलक या टीकाकरण के बाद नित्य नियमित रूप से संध्या और प्रभाति तथा वर-वधू के गीत विवाह समाप्ति के बाद चौठारी तक गाए जाते हैं । मगध प्रदेश में विवाह संबंधित लोकगीतों की संख्या सैकड़ों नहीं हजारों में पहुँच सकती है जो आज समाज शास्त्रीय और सांस्कृतिक अनुसंधान की मुखापेक्षी है । इन अवसरों पर गाए जाने वाले झुमरों एवं गालियों की संख्या भी शत-शहस्र तक हैं । यहाँ कुछ विवाह-संस्कार संबंधित मगही लोकगीत उदधृत हैं ।

विवाह की प्रथम आनुष्ठानिक प्रक्रिया टीकाकरण से प्रारंभ होती है जो आज तिलक के रूप में विकृत अवस्था में वर्त्तमान है । परंतु गीतों का प्रचलन पूर्ववत् अवशिष्ट रूप में वर्त्तमान मिलता है ।

छेका या तिलक में गाए जाने वाले मगही लोकगीत

(१)

नगर अयोध्या में बाजऽ हई बधावा, घरे-घरे मंगलचार हे ।
रोड़ी अच्छत लेले ब्राह्मन पंडित जल्दी से लगन सो चावऽ हे ।

लाल, पट केरा जाजिम झारी-झारी विछावल हे ।
एक दिसि बइठल राजा दसरथ दूसरे राम लछुमन हे ।

तिलक देथिन जनइया रीखी लगन उताहुल हे ।
अच्छत छिटथिन लोग सभे होवत मंगल गान हे ।

अर्थ

अयोध्या नगर में बाजा बज रहा है । घर-घर में मंगलगीत गाए जा रहे हैं क्योंकि आज जनकपुर से राजा दशरथ के यहाँ राम का तिलक आया है । रोली और अक्षत हाथ में लिए ब्रह्मण शुभ-लग्न पर विचार कर रहे हैं । लाल वस्त्र की सफेदी (जाजिम, दरी) झाड़-झाड़ कर बीछायी जा रही है । एक ओर राजा दशरथ और दूसरी ओर राम लक्ष्मसण विराजमान हैं । जनक ऋषि तिलक लगा रहे हैं, लग्न तेजी से बीत रहा है । तिलक के बाद सभी लोग राम-लक्ष्मण पर अक्षत छिटकर मंगलगान गा रहे हैं ।

(२)

सभवा बइठले रउवा बाबू हो कवन बाबू,
कहवाँ से अयले पंडितवा, चउका सभ घेरि लेले ।

दमड़ी-दोकड़ा के पान-कसइली, सुपारी लेले,
बाबू लाख रुपइया के दुलहा ब्राह्मन भड़ुआ ठगि लेले ।

बाबू लाख रुपइया के दुलहा ससुर भड़ुआ ठगि लेले ।।

अर्थ

तिलक चढ़ाते समय वर पक्ष की स्त्रियाँ कन्या पक्ष से आए तिलक चढ़ाने वाले व्यक्तियों को गाली-परिहास करती है । तिलक के समय सभा के बीच चौका पर बैठे दुलहे को ब्राह्मण ने घेर लिया । दमड़ी-दोकड़ा की पान-कसैली-सुपारी लायी है और मेरे लाख रुपया के दुलहे बाबू को ठग लिया है । ब्राह्मण और श्वसुर भड़ुवे ने मेरे बालक को ठग लिया है ।

(३)
मटकोरा (मृतिका खनन)

साकरी गलिया तोहरो अनजाने रइया–
अहे हाथी घोड़ा पयरो न लेह,
कइसे गढ़ पइसब हे ?

दुअरे मढ़इबो दुअरमनियाँ
अहे खिरकी कटइबो कोटवाल,
बेइलिया गढ़ पइसब हे ।।

अर्थ

अमुक राय की गली सकरी है (पतली) उसमें हाथी-घोड़े कैसे प्रवेश करेंगे ? हम गढ़ में कैसे प्रवेश करेंगे । फिर भी दरवाजे पर मणियों का बंदनवार बनावेंगे, महल में खिड़की कटा लेंगे और उसी रास्ते से बेइली गढ़ में प्रवेश करेंगे । गढ़ प्रवेश का उपक्रम-अध्यात्म साधना से भी संबंधित है ।

(४)

कउन बन रहले रे काइलर, बउन बन जाय ।
केकरी दुअरिया रे कोइलर, उछहल जाय ।

बृंदावन रहले रे कोइलर, कुंज बन जाय ।
अनजानो रइया दुअरिया रे कोइलर, उछहल जाय ।

अर्थ

हे कोयल, किस वन में रहती हो, किस वन में जाती हो और किसके दरवाजे पर उछल रही हो । बृंदावन में कोयल रहती है, कुंज वन में भी जाती है और अमुक राय के दरवाजे पर उछलती है ।

(५)

कहवाँ में मटिया लिहले जलमिया ,
कह्वाँ में मटिया तोहरो विवाह ।

कुरखेते मटिया लिहले जलमिया ,
उठुँ-उठुँ मटिया लाल पियरिया ।

मड़वा में मटिया तोहरो विआह ,
से तोरा बिन मटिया कइसे विवाह ।।

अर्थ

मिट्टी ने कहाँ जन्म लिया और उसका विवाह कहाँ सम्पन्न हुआ । बिना जुते खेत में मिट्टी का जन्म हुआ और मण्डप में उसका विवाह हुआ । स्त्रियाँ [illegible] है कि हे मिट्टी, उठो, लाल-पीले वस्त्र पहन लो । तुम्हारे बिना विवाह कार्य कैसे सम्पन्न होगा ?

(५ क)

माटी कोड़े गेली हम आज मटखनियाँ ,
इयार मोर पड़लन हाय जेहलखनवाँ ।

पिया के कमइया हम कुछो नहि जनली ,
इयार के कमइया गलेहार हई हे ननदो ।

ओही गलेहार बेची इयार के छोड़यबो ,
इयार मोरा पड़लन हाय जेहलखनवाँ ।

पिया के कमइया हम कुछो नहिं जनली ,
इयार के कमइया नकबुलकी हे ननदी ।

ओही नकबुलकी से इयार के छोड़यबो ,
इयार मोरा पड़लन हाय जेहलखनवाँ ।

अर्थ

मिट्टी कोड़ते समय स्त्रियाँ मिट्टी कोड़नवाली स्त्री को गाली देती है । गीत में कहा गया है कि मिट्टी कोड़ने हम मटखान में गई, इधर मेरा मनचला दोस्त जेल में चल गया । आज तक हमने अपने पति की कमाई कुछ नहीं जान सकी । हे ननद, दोस्त की कमाई से ही गले की हार बनवाई है । उसी गलेहार को बेचकर अपने दोस्त को छुड़ा लूँगी । दोस्त की कमाई से नाक का नथ बनाया है, उसी नथ को बेचकर अपने दोस्त को छुड़ाऊँगी, हाय, मेरा दोस्त जेलखाने में चला गया है ।

(५ ख)

माटी कोड़े गेलन छिनरो हाय, गंगा पार हे ,
गझनौटा में चोरवले आयल सोरह गो भतार हे ।

घर के भतार पूछे कउन-कउन जात हे ,
चार गो तो जोलहा-धुनिया, चार रजपूत हे ।

चार गो तो मूसहर बड़ मजगूत हे ,
भले छिनरियो भले, भले कोड़े गेलऽ हे ।

अर्थ

मिट्टी कोड़ने वाली स्त्री को गीत में गाली दी जाती है कि हे छिनाल, हाय-हाय, तुम गंगापार मिट्टी कोड़ने गई थी ? अपने वस्त्र में सोलह दोस्त (भर्त्तार) छिपाकर

लाई है । देखकर उसका अपना पति पूछता है कि ये किस-किस जाति के हैं ? पत्नी जवाव देती है कि चार-चार जुलाहे-धुनियें हैं, चार राजपूत हैं और चार मूसहर जाति के बड़े बहादूर हैं । स्त्रियाँ गाती हैं कि हे छिनाल, अच्छा हुआ कि तुम मिट्टी कोड़ने गई थी ।

(५ ग)

माटी कोड़े गेले छिनरो ओहीं मटखान हे ,
चमरा धरको ढोलवा बजाय हे ।

माटी कोड़े गेलो छिनरो ओही मटखान ,
धोबिया धरको झुलवा पेन्हाय हे । आदि

अर्थ

मिट्टी कोड़ने छिनाल उस मटखान में गई तो चमार ने ढोल बजाकर धर दवांचा । इसी प्रकार धोबी ने चोली पहना कर पकड़ लिया । आदि-आदि ।

(६)

मड़वा (मंडपाच्छादन) के गीत

आंगन लिपूँ गहागही माड़ो छवायब हे ,
ताही चढ़ि बैठथी अंजानो बाबू जबरो बहुआरो देई ।

चउका बइठले तुहूँ धनिया तऽ मोरो चधुराइन ,
आवइत हथिन बाबा दुलारी धिया गरभ मत बोलिहँऽ ।

आवहुँ गे बहिनी, पलंग चढ़ि बइठऽ ,
का लेबऽ हमरा से दान, लहसी घरवा जयबऽ ।

गावहुँ गे बहिनी, गाके सुनावऽ ,
का लेबऽ हमरा से दान, लहसी घरवा जयबऽ ।

हमरा के दीहँऽ चुनरिया, बालक गले हँसुली ,
प्रभुजी के चढ़न के घोड़वा, लहसी घरवा जायब ।

कहाँ हम पयबो चुनरिया, बालक गले हँसुली ,
कहाँ पयबो चढ़ने को घोड़वा, लहसी घरवा जयबऽ ।

रोअइत जाले ननदिया, बिलखइत बालक जाय ,
हँसइत जाय ननदोसियाँ, भले तप तोड़लऽ ।

चुप रहूँ-रहूँ धनिया तऽ मोर चधुराइ ,
हम जयबो राजा के नोकरिया, दरव हम लायब ।

तोहरा के लयबो चुनरिया, बालक गले हँसुली ,
अपने ला चढ़ने को घोड़वा, नइहरवा विसराव ।

आग लगे चुनरी, बालक गले हँसुली ,
बजर पड़े चढ़ने घोड़वा, नइहरवा न विसरायब ।

अर्थ

आंगन को अच्छी तरह लिपकर मंडप छाया गया । वहाँ चौके पर अमुक बाबू अपनी पत्नी के साथ बैठ गए । वहीं चौके पर बैठी अपनी पत्नी से पूछते हैं कि मेरी चतुर पत्नी, मेरे पिता की दुलारी बेटी आ रही है, धमंड से वातचीत मत करना । हे बहन, आकर पलंग पर बैठो । हम से नेग में क्या लोगी कि प्रसन्न हो[illegible] घर जाओगी । हे वहन मंगल गीत गाओ और गाकर सुनाओ तथा कहो [illegible] नसे दान में क्या लोगी ? बहन कहती है कि हमें चुनरी और बच्चें को गले की हँसुली दे देना । हमारे पति को चढ़ने के लिए घोड़ा देना तो मैं प्रसन्न चित्त घर चली जाऊँगी। गरीब भाई कहता है कि मैं चुनरी और हँसली कहाँ से लाऊँगा तथा चढ़ने के लिए घोड़ा कहाँ पाऊँगा। अत: कुछ नहीं मिलने पर ननद रोती और बालक विलखता हुआ लौटा जा रहा है परंतु उसका पति हँसता जा रहा है । कहता है कि अच्छा हुआ कि तप टूट गया। हे मेरी चतुर पत्नी मैं राजा के यहाँ नौकरी करने जाऊँगा और वहाँ से द्रव्य कमाकर लाऊँगा।

तुम्हारे लिए चुनरी और बच्चे के लिए गले में हँसली लाऊँगा। अपनी सवारी के लिए घोड़ा लाऊँगा, तुम नैहर को त्याग दो । इस पर पत्नी कहती है कि चुनरी और हँसली में आग लग जाय, सवारी करने वाला घोड़ा पर वज्र पड़े, मैं नैहर को नहीं त्यागूँगी ।

(७)

केरे जइहें ऊरूब देसवा, केरे जइहें पूरब देसवा,
केरे जइहें बहिनी लिआवन, बहिनियाँ बिना न सोभे मड़वा ।

बाबा जइहें ऊरूब देसवा, चाचा जइहें पूरब देसवा,
भइया जइहें बहिनी लिआवन, बहिनियाँ बिनु न सोभे मड़वा ।

एगो हई गोदिया जी भइया, एगो हई कखवा जी भइया,
एगो हम अंगवा के भारी जी भइया, कइसे चलूँ मड़वा जी भइया ।

एगो लेबई गोदिया गे बहिनी, एगो लेबई काखे गे बहिनी,
तोरो डढ़िया चढ़ाई गे बहिनी, बहिनियाँ बिनु न सोभे मड़वा ।।

अर्थ

मड़वा के पूर्व स्त्री कहती है कि उत्तर देश कौन जायेंगें ? पूर्व दिश में कौन जायेंगे ? बहन को लिवा लाने कौन जायेंगे क्योंकि बहन के बिना मंडप की शोभा नहीं होती । पिताजी उत्तर और चाचा जी पूरब देश को जायेंगे । भाई बहन को लिवाने जायेंगें। बहन के बिना मंडप शोभता नहीं है । बहन कहती है कि मेरा एक बालक गोद में है, एक बालक काँख में लेकर चलती हूँ और स्वयं मेरी देह भारी (गर्भवती) है । अत: मैं मंडप में कैसे चलूँ ? भाई सभी का समाधान करता है । एक बच्चे को मैं गोद ले लूगाँ, दूसरे को काँख में लूँगा तथा तुमको डोली पर चढ़ाकर ले चलूँगा क्योंकि बहन के बिना मंडप शोभता नहीं ।

(८)

हरिअर सुगवा रतन तोरा ठोर किया-किया देखले रे सुगवा अंजानो रइया मड़वा ।
चउका बइठले अनजानो रइया देखली, अचरा पसारले बहुआरो देई देखली ।

होमवाँ करवते बराहमन देखली थुम्हिया गड़ावइत ठकुराइन देखली ।
आवइत जाइत गोतनी देखली, घिवा ढरावइत सवासिन देखली ।
अंगुरी धरले अंजानो दुलहा देखली, हलचल करइत पड़ोसिन देखली ।।

अर्थ

इस गीत में मड़वा में होने वाले सारे अनुष्ठानों का वर्णन हो गया है। हरा सुग्गा रत्नयुक्त चोंच वाला है जो मड़वे के ऊपर बैठकर सारी क्रियाओं को देख रहा है । सुग्गे ने अमुक राय के मड़वे में क्या-क्या देखा है ? वह वर्णन करता है कि अमुकराय को चौके पर बैठा देखा । आंचल फैलाये बहू देवी को देखा, ब्रह्मण को होम कराते देखा, नाइन को केले का थम्भ गड़ाते देखा, गोतनी को आते जाते देखा। बहन आदि को घी ढारते देखा । दुल्हे को अंगुली पकड़े देखा और पड़ोसिनों को हलचल करते देखा । मड़वा का पूरा दृश्य वर्णन है ।

(९)

हाथे सिन्होंरवा खोइच्छा पाकल पान ,
चललन बहुआरो देई अम्मा मनावन ।

उठूँ-उठूँ अम्मा अरे हमरो बचनियाँ ,
हमहूँ जे अइली ललनजी के चेरिया ।

कइसे में उठूँ-उठूँ तोहरो बचनियाँ ,
तोहरो ललनवाँ ममोरले डढ़िया ।

अम्मा तोरो पल्लव थुम्हियाँ गड़यबो ,
अम्मा तोरो पल्लव कलसा चढ़ैबो ।

अर्थ

मंडपाच्छादन में आम की टहनी और पत्ते चाहिए जिसे मड़वा के बाँस में बाँधा और कलश पर रखा जाता है । अतः वर की माँ आम-वृक्ष की पूजा करने और उसे मनाने जा रही है । हाथ में सिन्दुरदानी और आँचल में पके पान लिए हुए है । वह आम्र वृक्ष के पास जाकर अपनी बात कहती है और यह भी कहती है कि मैं ललन जी की सेविका हूँ । आम कहता है कि तुम्हारी बात सुनकर मैं कैसे उठूँ ? तुम्हारा ललना ने तो मेरी डाली मड़ोर दी है । पुनः ललना की माँ प्रार्थना करती है कि तुम्हारी डाली का थुम्भी बनाऊँगी और तुम्हारे पल्लव को कलशे पर स्थापित करुँगी (यह वृक्ष पूजा की आदिम परम्परा दर्शाती है ।)

(१०)

बसवा जे डोलले अकसवा पवनवाँ विना,
अनजाने रइया डोलथी मड़उवा-पइसी अपना गोतिवा बिना ।
बहुआरो देई डोलथी अंगनवा सवासिन विना,
न सोभे मड़वा पड़ोसिन विना................................ ॥

अर्थ

मड़वा की सारी आनुष्ठानिक एवं सांस्कृतिक क्रियाएँ पारिवारिक एवं समाजिक जन समूह में सम्पन्न होती है । जव कभी किसी कारणवश सम्बंधित व्यक्तियों का आगमन नहीं होता तो मड़वा और विवाह की शोभा ही समाप्त हो जाती है । ऐसा ही एक भुक्तभोगी अपना विचार व्यक्त करता है । विना पवन के मंडप के बाँस आकाश में डोल रहें हैं। अमुक व्यक्ति अपने गोत्र के उपस्थित नहीं होने से विह्वल हैं। वहन आदि के नहीं आने से बहू देवी आंगन में डोलते चल रही है । टोला-पड़ोस की स्त्रियों के बिना मड़वा सुशोभित नहीं होता हैं।

(११)

ई अंगना बीचे, ई अंगना वीचे खम्भा रे गाड़ दो, गाड़ दो मेरे लाल,
ई खम्भा रे बीचे, मड़वा रे गाड़ दो गाड़ दो मेरे लाल ।
ई मड़वा रे बीचे कलसा रे धरा दो, धरा दो मेरे लाल ।
ई कलसा रे बीचे, ई कलसा बीचे, दियरा रे जरा दे, जरा दे मेरे लाल ।

अर्थ

इस आंगन के बीच में खम्भा गाड़ दो, हे मेरे लाल, खम्भा गाड़ दो, खम्भा के बीच में मड़वा गाड़ दो और मड़वा के बीच कलश स्थापन कर दो । हे मेरे लाल, कलश के ऊपर दीपक जला दो। इस प्रकार मंडप पूर्ण होगा।

(१२)

ऊँची ये मड़उवा छवइहँऽ अनजानो बाबा ।
ऊँचा हो तो नाम तोहार हे ।
झारी गलइचा बिछइहँऽ दुलरइतो भइया,
ऊँचा होतो नाम तोहार हे ।
धरती में नजर रखिइहँऽ दुलरइतो बर
देखतो नगरी के लोग हे ॥

अर्थ

हे अमुक बाबा, ऊँचा मड़वा छवावेंगे जिससे आपका नाम ऊँचा होगा । हे भाई, झारकर बिछावन लगावेंग, आपका नाम ऊँचा होगा। हे प्यारा-दुलारा वर अपनी नजर जमीन पर गड़ाये रखना, इसे नगर के लोग देखते रहेंगे।

(१३)

कहवाँ में बसवा जलमलई गे अम्मा ,
कहवाँ में पसरल डाढ़ हे ।

कुरखेत बसवा जलमलई गे बेटी ,
मड़वा में सोभई डाढ़ हे ।

मड़वा में सोभई लहुरी ननदिया ,
आंगन द्वार गोतिअव हे ।

अर्थ

हे माँ बाँस का जन्म कहाँ हुआ ? उसकी डाली (कनैल) कहाँ फैल गई ? कुरक्षेत्र में बाँस का जन्म हुआ और मण्डप में उसकी शोभा बढ़ी । मड़वे में छोटी ननद शोभ रही है और आंगन तथा दरवाजे पर गोत्र आदि सुशोभित हो रहे हैं।

(१४)

चेरिया अंगना बहारी तनी देखह भइया नहीं आयल हे ।
केकरा से सोभे मोरा माड़ो भइया नहीं आयल हे ।
सामी संगे बइठब चनन पीढ़वा, भइया नहीं आयल हे ।
कइसे पेन्हब इयरी-पियरी से कइसे रंगायब गोड़ हे ?
मोरे लेखे माड़ो बिजुवन, भइया बिनु सोभे न माड़ो हे ।
चमकि के बोलहई चेरिया कवन चेरिया हे ।
झमकते आवे तोरा भाई, रखूँ कोठी-कान्हे अजवार हे ।
दुअरे पर घोड़ा हिनिआयल डोली धमसायल हे ।
आगे-आगे दुलरइतो भइया संघ में दुलरइतो भउजी हे ।
डड़िया ही पहुँचल पोखर पर देखह भइया केरा सान हे ।
साथे में इयरी-पिअरिया, भउजी सिर चमके हे ।
इयरी-पियरी पेन्ह बइठब चउका चनन चढ़ि हे ।

अर्थ

वर की माता कहती है कि चेरी, जरा आंगन बुहार कर देखो तो अभी तक मेरे भाई नहीं आए हैं। भाई के नहीं आने से मेरा मड़वा किससे सुशोभित होगा ? स्वामी के साथ चंदन के पीढ़े पर बैठूँगी परंतु भाई नहीं आया है । मैं हरा-पीला वस्त्र कैसे पहनूँगी और अपना पैर कैसे रंगाऊँगी ? हमारे लिए तो मड़वा बृंदावन की तरह है, भाई के बिना मड़वा शोभता नहीं । इस समय कोई दासी तमक कर बोलती है कि तुम्हारा भाई झमकते आ रहा है, कोठी-कंधे को खाली कर रखो। दरवाजे पर घोड़ा हिनहिनाने लगा, अचानक पालकी पहुँच गई । आगे प्यारा भाई और साथ में दुलारी भाभी पहुँच गई । तालाब पर पालकी पहुँची । साथ में लाल-पीला वस्त्र है और भाभी का सिर सिन्दुर से चमक रहा है । अब मैं लाल-पीला वस्त्र पहनकर चंदन के चौके पर बैठूँगी ।

(१५)

मड़वा डोले खरई बिना कलसा पुरहथ बिना हे ।
मन मोरा डोले नइहर बिना अपन साहोदर बिना हे ।
मड़वा में बइठल गोतिया लोग घरुअरिया गोतिनिया लोग हे ।
तइयो नहि मन मोरा हुलसल अपन सहोदर बिनु हे ।
चउका चनन कइसे बइठब अपन सहोदर बिना हे ।
अरब-गरभ कइसे बोलब, अपन नइहर बिना हे ।।

अर्थ

जिस प्रकार खरई से छाये बिना मड़वा डोलते रहता है और पूर्ण पात्र के बिना कलशा नहीं शोभता उसी प्रकार मेरा मन नैहर के सहोदर भाई के बिना विचलित हो रहा है । मड़वा में सभी गोत्र और रसोई घर में गोतनी लोग कार्यरत हैं फिर भी अपने सहोदर भाई के बिना मेरा मन में हुलास पैदा नहीं होता । अपने भाई के बिना चंदन के चौके पर कैसे बैठूँगी और द्रव्य की बातें दर्पपूर्ण ढंग से कैसे बोलूँगी । (स्त्रियों में मायके प्रेम का भाव चित्रित है ।)

(१६)

माड़ो चढ़ी बइठलन गुरू दूज सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
पूजहूँ पंडीजी के पाँवऽ सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
पाँव पूजइते सिर नेवल सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
हमरो के देहूँ असीस, सुनहूँ सिवसंकर हरी ।

दुधवै नेहइहँऽ बाबू, पुतवे अघइहँऽ सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
माड़ो चढ़ि बइठलन बाबाजी सुनहूँ सिवसंकर हरी,
पूजहूँ बाबाऽ के पाँव सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
माड़ो चढ़ि बइठलन चाचाजी सुनहूँ सिवसंकर हरी,
पूजहूँ चाचाऽ जी के पाँव सुनहूँ सिवसंकर हरी।
पूजहूँ चाची जी के पाँव सुनहूँ सिवसंकर हरी।
पाँव पूजइते सिर नेबले, सुनहूँ सिवसंकर हरी
हमरो के देहूँ असीस, सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
दुधवे नेहइहँऽ बाबू, पुतवे अघइहँऽ, सुनहुँ सिवसंकर हरी ।।

(आदि-संबधियों के नाम)

अर्थ

इस गीत में मंडप के अंदर गुरूजनों एवं परिजनों के पैर पूजने की प्रक्रिया का वर्णन आया है । वर के माता-पिता अपने गुरू-पुरोहित और बड़े परिवार को वस्त्र और द्रव्य से पैर पूजते हैं और उनसे आर्शीवाद प्राप्त करते हैं ।

मड़वा में गुरू और पंडित बैठे हैं । हे शिव-शंकर हरि, अब पंडित जी का पैर पूजन किया जाता है । पैर पूजते समय सिर झुक जाता है और आशीर्वाद की कामना की जाती है । पैर पूजने वाला आशीर्वाद मांगता है तो पंडितजी कहते है कि दूध से स्नान करते रहो और संतान से संतुष्ट रहो । इसी प्रकार बारी-बारी से मड़वा में बाबा, चाचा, चाची आदि परिवार के बड़े लोग आते हैं और उनका पैर पूजा जाता है और अशीर्वाद लिया जाता है । सभी दूध-पूत से भरे-पूरे रहने का आशीर्वाद देते हैं ।

मंडप के बीच ही विवाह सम्बंधी सारे कार्य सम्पादित होते हैं, हल्दी लगाई जाती है, उबटन लगाया जाता है आदि अनेक क्रियाएं सम्पादित होती है

(हल्दी या उबटन लगाने का गीत)

(१७)

हल्दी जे पीसे जनक-दुलारी नेगो में मांगे हजार, हरदी मंगल के ।
पहिला हरदिया ब्रह्मन चढ़ावे, तब सकल परिवार, हरदी मंगल के ।
पहिला हरदिया बाबूजी चढ़ावे, नेगो में देलन हजार हरदी मंगल के ।
दूसर हरदिया अम्मा चढ़ावे, नेगो में देवे हजार हरदी मंगल के ।
दूसर हरदिया फूआ चढ़ावे, नेगो में देवे हजार हरदी मंगल के । आदि

अर्थ

बहन(जनकदुलारी) हल्दी पीस रही है और नेग में हजार की सम्पति मांग रही है । पहली बार ब्राह्मन हल्दी वर को चढ़ा रहे हैं उसके बाद सभी परिवार चढ़ा रहे

हैं । पुनः पिताजी वर को हल्दी चढ़ा रहे हैं और नेग में हजारों दे रहें हैं । फिर अम्मा और फुआ अदि परिवार के लोग हल्दी चढ़ा रहे हैं । यह मंगलपूर्ण हल्दी है - मंगल दायक ।

(१८)

हरदी-हरदी जीरवा-पातर गे माई, के मोरा हरदी चढ़ावे गे माई ।
के मोरा हरदी उपजावे गे माई के मोरा हरदी चढ़ावे गे माई ।
बाबा मोरा हरदी उपजावे गे माई, दादी मोरा हरदी चढ़ावे गे माई ।
भइया मोरा हरदी उपजावे गे माई, भौजी मोरा हरदी चढ़ावे गे माई । आदि

अर्थ

हल्दी को जीरे की तरह पीस दिया गया । इस हल्दी को वर के ऊपर कौन चढ़ावेगा? इस हल्दी को उपजाता कौन है ? बाबा हल्दी को उपजाते हैं और दादी हल्दी चढ़ाती है । इसी प्रकार मेरा भाई हल्दी उपजाता है और भाभी हल्दी चढ़ाती है । सारे सगे-सम्बंधियों के नाम लेकर गीत की कड़ी को आगे वढ़ाया जाता है ।

(१९)

जव-गोहुम केरा अबटन
लगावेल अम्मा सोहागिन, हाथे कंगना डोलाय, नैना घुमाय,
सो बेटा वइठल अबटन, दुलरइता वइठल अबटन ।
जव-गेहुम केरा अबटन, लगावे चाची सोहागिन, हाथे कंगना डोलाय,
नैना घुमाय, सो बेटा बइठल अबटन, दुलरइता बैठल अबटन ।

अर्थ

(लकड़ी का सुन्दर मलवा है उसी मलवे में) यव-गेहूँ आदि पदार्थ मिलाकर उबटन बनाया गया है । माता अपने वर-पुत्र को वही उबटन लगा रही हैं । हाथ का कंगन डोल रहा है । आँखें भ्रमणशील हैं । उसका दुलारा बेटा उबटन लगा रहा है । इसी प्रकार चाची आदि सम्बधी उबटन लगा रही हैं।

(२०)

आठही काठकेरा मलवा रे मलवा ओहीं मलवे में नरायण तेल, ओही मलवे....।
रचियक हथवा पसारऽ अनजानो दुल्हा, लाई देबो ये सुहाग के तेल ।
कइसे में हथवा पसारूँ ये सुगई मोरो हाथे ये कलम-मसीहान. मोरो हाथे ।
कलम-दोअतिया प्रभु धरूँ सिरहनवाँ, हमे -तोही ये खेलब जुगवा-सार; हमे-तोहीं

सुनि-जानी पइहें वाबूजी अनजानों वाबूजी, ओहीं बाबूजी घरवा दिहें-बनवास
सुने देहूँ-सुने देहूँ वाबूजी अनजानो वाबूजी, ओहीं बाबूजी घरवा दिहें मोरा बास ।

अर्थ

काठ का अठपहला सुन्दर मलवा बनाया गया है । उस मलवे में नारायाग तेल है । पति-पत्नी का प्रथम मिलन है । वह कहती है कि हे प्रभु, थोड़ा हाथ फैलावें, आपको सौभाग्य का तेल लगा दूँ । दूल्हा कहता है कि मैं कैसे हाथ पसारूँ ? मेरे हाथ में तो कलम दावात है । पत्नी कहती है कि कलम-दावात को सिरहाने रख दें और हमारे साथ जुआ खेलें । पति कहता है कि यदि मेरे पिताजी जुआ के बारे में सुन-जान पावेंगें तो मुझे घर में ही वनवास दे देंगें । पुनः पत्नी कहती है कि पिताजी को सुनने जानने दीजिए, वही बाबूजी पुनः हमलोगों को घर में निवास दे देंगें ।

(२१)

कथी कटोरी तेल अबटन अरे बंदे, कथी कटोरी करूआ-तेल, अरे बंदे ।
सोने कटोरी तेल अबटन अरे बंदे, रूपे कटोरी करूआ तेल अरे बंदे ।
मइया लगावे तेल अबटन अरे बंदे, चाची लगावे करूआ तेल, अरे बंदे ।
भाभी लगावे तेल अबटन अरे बंदे, दीदी लगावे करूआ तेल, अरे बंदे ।
मौसी लगावे तेल अबटन अरे बंदे, मामी लगावे करूआ तेल, अरे बंदे ।आदि

अर्थ

किस कटोरे में तेल मिला अबटन है और किस कटोरे में सरसों का तेल है ? सोने के कटोरे में अबटन है और चांदी के कटोरे में सरसो का तेल है । माँ अबटन लगा रही है और चाची सरसो का तेल लगा रही है । भाभी अबटन लगा रही है और दीदी सरसों का तेल लगा रही है । मौसी अबटन और मामी सरसों का तेल लगा रही है । (अबटन के बाद तेल लगाने में गंदगी छूटकर निखार आ जाता है)

(२२)

केरे लेल उबटन, केरे लेल तेल, केरे लेले थारी हरदी कस्तूर ।
अम्मा लेल उबटन चाची लेले तेल, दीदी लेले थारी भर हरदी कस्तूर ।
एते आवऽ एते आवऽ बइठऽ दुलरइतो, लगतो अहो दुल्हा, हरदी कस्तूर ।।

अर्थ

कौन उबटन और कौन तेल लिए हुए है तथा कौन थाली में हल्दी और कस्तूरी लिए है । अम्मा उबटन और चाची तेल तथा बहन थाल में हल्दी और कस्तूरी लिए हुए है । हे दुलारा दुल्हा इधर आकर बैठो, अब हल्दी, कस्तूरी मिला उबटन लगाया जायगा ।

(२३)

हरिअर-पट केरा जाजिम झारी बिछावहूँ हे,
अयलन कुल परिवार हरदी चढ़ावहूँ हे ।

हरदी चढ़ावथी दुलरइतो दादा, संगे सुहावें दादी हे,
ताहि-पाछे कुल परिवार, से हरदी चढ़ावहीं हे ।।

अर्थ

हरे वस्त्र की चादर झारकर बीछा दी गई है । सारे कुल-परिवार हल्दी चढ़ाने आ गए हैं । पहले प्रिय दादा हल्दी चढ़ा रहे हैं साथ में सुहागिन दादी भी चढ़ा रही है । इनके बाद कुल के सारे परिवार हल्दी चढ़ा रहे हैं ।

(२४)

सोना के थारी में हरदी परोसल,
ओकरा पर हरियर दूबहो, सिरवा हरदी चढ़ावे ।
पहिले चढ़ावे पंडित - ब्राह्मन,
पीछे सकले परिवार हो, सिरवा हरदी चढ़ावे
सोना के थारी में हरदी परोसल,
ओकरा पर हरियर दूब हो, सिरवा हरदी चढ़ावे ।
पहिले चढ़ावे दादी सोहागिन,
पिछे सकल परिवार, सिरवा हरदी चढ़ावे ।
पहिले चढ़ावे अम्मा सोहागिन ।
पिछे सकल परिवार, सिरवा हरदी चढ़ावे ।

अर्थ

सोने की थाली में हल्दी रखी हुई है । उसी में हरी दूब भी है जिससे दुल्हे या बेटी के सर पर हल्दी चढ़ाई जाती है । पहले पंडित और ब्राह्मण हल्दी चढ़ा रहे हैं फिर सारे परिवार के लोग चढ़ा रहे है । फिर उसी सोने की थाली से हरी दूब के द्वारा सुहागिन दादी हल्दी चढ़ा रही है और फिर सभी कुल- परिवार के लोग चढ़ा रहे है । इसी प्रकार माता आदि सभी सम्बंधियों का नाम लेकर गीत की कड़ी आगे बढ़ती जाती है ।

(२५)

कहवाँ में हरदी जनम लेले, कहवाँ में लेले बसेर, हरदिया मन भावे ।
कुरखेत हरदी जनम लेले, मड़वा में लेले बसेर, हरदिया मन भावे ।
पहिले चढ़ावे पंडित ब्राह्मण, पाछे चढ़ावे सब लोग, हरदिया मन भावे ।।

अर्थ

हल्दी का जन्म कहाँ हुआ और इसका बसेरा कहाँ मिला ? हल्दी मन को बड़ा अच्छा लगता है । कुरक्षेत्र में जन्म और मड़वा में इसको बसेरा मिला । इस हल्दी को पहले पंडित ब्राह्मण चढ़ाते हैं और फिर सभी लोग-चढ़ाते हैं।

(२६)

कउने रइया हरदी बेसाहले हे ,
कउने देई पिसतन, लगतउ गे बेटी उबटन ।
दादा रइया हरदी बेसाहले, दादी देई पिसलन ,
लगतउगे बेटी उबटन, लगतउगे बेटी तेल-फूलेल ।
कउने रइया हरदी बेसाहले ,
कउने देई पिसतन, लगतउगे बेटी उबटन ।
बाबू रइया हरदी बेसाहले, मइया देई पिसतन ,
लगतउगे बेटी उबटन, लगतउगे बेटी तेल-फूलेल ।।

अर्थ

किसने हल्दी खरीदी है और कौन देवी पीसेगी, बेटी को उबटन लगाना है । दादा ने हल्दी खरीदी है और दादी ने पीसा है - बेटी को हल्दी, तेल-फूलेल का उबटन लगाना है । इसी प्रकार पिता ने हल्दी खरीदी; माता ने पीसा और बेटी को उबटन लगाना है ।

वर या वधू चुमावन

(१)

चुमवन बइठलन कउन मइया सिवसंकर हे ,
कहवाँ में भेल अनंद कहहूँ सिवसंकर हे ।

चुमवन बइठलन कोसिला रानी, सिवसंकर हे,
अजोधेया ही भेलई अनंद, कहहूँ सिवसंकर हे।
मोतिया ही अंजुरी भरावल, सुनहूँ सिवसंकर हे,
अछत ही अंजुरी भरावल, सुनहूँ सिवसंकर हे।

अर्थ

वर चौकं पर विराजमान है । चुमावन के लिए कौन माता प्रस्तुत है और कहाँ पर आनंद फैल रहा है ? हे शिव-शंकर, रानी कौशिल्या चुमाने के लिए बैठी और आयोध्या में आनंद हो गया। वर की अंजली में अक्षत और मोती भरा है, उसी से माताएँ आदि चुमावन कर रही हैं ।

(२)

चुमवे बाहर भेलन अम्मा सोहागिन सिव-संकर-हरी,
चुमि-चुमि देहुँ असीस, जिअहूँ वरऽ लाख बरीस।
भुगतऽ अजोध्या के राज, जिअहूँ वरऽ लाख बरीस,
चुमवे जे बइठल चाची सोहागिन सिव-संकर हरी।
चुमी-चुमी देहूँ असीस, जिअहूँ वरऽ लाख बरीस,
भुगत अजोध्या के राज, जिअहूँ वरऽ लाख बरीस।।

अर्थ

सौभाग्यशालिनी माता वर को चुमावन करने घर से बाहर निकली । हे महादेव भगवान, माता चुमाकर आर्शीवाद देती है कि वर की उम्र लाख वर्ष की हो । लाख वर्ष जीवित रहकर अयोध्या के राज भोगने का आशीर्वाद देती है । इसी प्रकार चाची आदि चुमावन कर वर को आशीर्वाद देती है ।

(३)

हाथ में नरियर पत्र में पान, चुमवे बाहर भेलन दादी अपान,
हाथ से चुमइहँऽ दादी, हिरदा से असीस बरवा-कनइयाँ जीये लाख बरीस।
हाथ में नरियर पत्र में पान, चुमवे बाहर भेलन मइया अपान,
हाथ से चुमइहँऽ मइया, हिरदा से असीस, बरवा-कनइयाँ जीये लाख बरीस।।

अर्थ

हाथ में नारियल और पात्र में पान आदि चुमावन की वस्तुएँ लेकर अपनी दादी वर को चुमाने निकली । हाथ से चुमावनकर दादी हृदय से आशीर्वाद देती है कि वर-वधू लाख वर्ष तक जीवित रहें । इसी प्रकार माता, बहन आदि बारी बारी से वर को चुमाकर हृदय से आशीर्वाद देती है, वे लाख वर्ष तक जीवित रहें ।

(४)

घर से निकललन अम्मा सोहागिन, चुमा लिहें हो ललना धीरे-धीरे ।
घर से निकललन चाची सोहागिन चुमा लिहें हो ललना धीरे-धीरे ।

अर्थ

घर से निकल कर सुहागिन माता अपने वर-पुत्र को धीरे-धीरे चुमा रही है । इसी प्रकार चाची, बहने आदि को सम्बोधित कर गीत की कड़ी को आगे बढ़ाया जाता है ।

(५)

चनन काटिए काटी पीढ़वा बनबई सिवसंकर हे ,
से पीढ़वा रामजी बइठैबई, सुनहूँ सिवसंकर हे ,
सोने के पइलवा में सेनुरा भरबई सिवसंकर हे ,
सीता के मंगिया भरैबई, सुनहूँ सिवसंकर हे ।
सोना के थरिअवा में अक्षत भरबई सिवसंकर हे ,
रामजी के हरखी चुमैबई, सुनहूँ सिवसंकर हे ।।

अर्थ

चंदन की लकड़ी को काटकर पीढ़ा बनाऊँगी । हे शिव-संकर, उसी पीढ़ा पर रामजी बैठेगें, (बगल में सीता बैठी होगी) सोने के पात्र में सिन्दुर भराऊँगी और उसी सिन्दुर से सीता की मांग भरूँगी । सोने की थाली में अक्षत (अरवा चावल) भरूँगी और रामजी को हर्षित होकर चुमावन करूँगी । इस लोक गीत में चुमावन के पूर्व की परिकल्पना है ।

(६)

चुमवे बाहर भेलन दादी सुहागिन, से साज लेलन हे डलना धीरे-धीरे ।
चुमा लेलन हो ललना धीरे-धीरे, बजा लेलन हे बंसिया धीरे-धीरे ।।

चुमवे बाहर भेलन अम्मा सुहागिन, से साज लेलन हे डलना धीरे-धीरे ।
चुमा लेलन हे ललना धीरे-धीरे, बजा लेलन हे बंसिया धीरे-धीरे ।।

अर्थ

जब सौभाग्यशालिनी दादी वर को चुमाने बाहर निकली तो अपनी डाली को अच्छी तरह सजा लिया और अपने ललना वर को धीरे-धीरे चुमाने लगी और बंसी बजाने लगी। इसी प्रकार माँ भी सजी डाली से पुत्र-वर को धीरे-धीरे चुमाने लगी और बंसी बजाने लगी। बहने आदि भी यही करती हैं।

(७)

घर से बाहर भेलन बबुआ के माई, चुमावहूँ माई लोग रामजी के
पहिले चुमावहूँ माई लोग रामजी के, तबरे चूमाइहऽँ माई लोग जनक दुलारी ।

रामजी के सोभले रेसमी पीतम्बर सबुज रंग साड़ी सोभे जनक दुलारी ।
रामजी के सोभ माथे पगड़िया, मांग भर टीका सोभे जनक दुलारी ।।

अर्थ

पुत्र की माँ अपने वर को चुमाने घर से बाहर निकली तो स्त्रियाँ गाती है कि हे माताएँ, रामजी का चुमावन करें। माताएँ पहले राम को चुमावें फिर जनक पुत्री सीता को चुमावन करें । राम जी के शरीर पर रेशम का पीताम्बर है और सीता के शरीर पर नीले रंग की सारी शोभ रही है। रामजी के मस्तक पर पगड़ी और सीता के मांग पर टीका सुशोभित है ।

(८)

डाली लेले-डाली लेले , अपन मइया हे, डाल भर अच्छत लेले हे ।
पहिले चुमइहँऽ मइया अपन बेटवा हे, तब रे पराया धिअवा हे ।

डाली लेले-डाली लेले अपन चाची हे, डाली भर अच्छत लेले हे ।
पहिले चुमइहँऽ चाची अपन बेटवा हे, तब रे पराया धिअवा हे ।

अर्थ

अपनी माँ डाली लिए है उसमें अक्षत भरा है। स्त्रियाँ गा उठती है कि पहले अपने बेटे को चुमावें तब दूसरे की पुत्री को (अर्थात् बहू को) चुमावें । इसी पकार चाची डाली भर अक्षत लेकर चुमाने जाती हैं तो उनहें भी यही संकेत किया जाता है।

(९)

लाली-लाली छतवा से के मोरा लगावे लाल,
लाल-बूटी आँचरा से के मोरा चुमावे लाल।
लाली-लाली छतवा से बाबूजी लगाथी लाल,
लाल-बूटी आँचरा से मइया मोर चुमावे लाल।
लाली-लाली छतवा से चाचा जी लगावे लाल,
लाल-बूटी आँचरा से चाची मोर चुमावे लाल।

अर्थ

कौन लाल रंग का छाता लगाए हैं और लाल बूटीदार आंचल फैलाकर कौन चुमावन कर रही है। पिताजी लाला छते को धारणा किए हुए हैं और माता जी लाल बूटीदार आंचलयुक्त वस्त्र पहन कर चुमावन कर रही है। इसी प्रकार चाचा छाता लगाए हैं और चाची चुमावन कर रही है।

(१०)

कोई लुटावले अन-धन सोना लाल
कोई लुटावले हाथ के कंगन लाल
आज मोरा बबुआ के होवेला चुमान लाल।
बाबूजी लुटावथी अन-धन सोना लाल
मइया लुटावले हाथ के कंगन लाल
भइया लुटावथी अन-धन सोना लाल,
भाभी लुटावले हाथ के कंगन लाल ।
आज मोरा देवर जी के होवेला चुमावन लाल।।

अर्थ

आज वर-पुत्र का चुमावन होने वाला है । कौन अन्न-धन और सुवर्ण लुटा रहा है और कौन अपने हाथ का कंगन लुटा रही है । पिताजी अन्न धन और स्वर्ण लुटा रहे हैं और माताजी हाथ का कंगन लूटा रही है। इस प्रकार भाई अन्न-धन्न और सोना तथा भाभी हाथ का कंगन लुटा रही है क्योंकि आज उसके देवर का चुमावन हो रहा है।

(११)

मिली-जुली चलहूँ चुमावन, सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
मिली-जुली देहूँ आसीस, सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
आज मोरे ललन के बिआह, सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
चुमवले अम्मा सोहागिन, सुनहूँ सिवसंकर हरी ।
चुमि-चुमि देहू आसीस, सुनहूँ सिवसंकर हरी ।

अर्थ

हे कल्याणकारी शिव और विष्णु आज मेरे पुत्र का चुमावन है । सभी लोग मिलकर चुमावन करें और आशीर्वाद दें। सौभाग्यशालिनी माता चुमावन कर रही है और आशीर्वाद दे रही है। इसी तरह चाची आदि भी चुमाती है ।

(१२)

केकरा हाथे नरियर, केकरा हाथे पान ?
चुमवले सखी सब ललना अपान ।
वाबूजी के नरियर मइया हाथे पान ।
चुमवले मइया ललना अपान ।
चाचा जी के नरियर चाची हाथे पान
चुमवले चाची ललना अपान । ....पुनरुक्तियाँ

अर्थ

किसके हाथ में नारियल और किसके हाथ में पान है ? सभी सखियाँ अपने ललना का चुमावन कर रही हैं । पिताजी के हाथ में में नारयिल है, माताजी के हाथमें पान है जो अपने पुत्र का चुमावन कर रही है । इसी प्रकार चाचा, भाई आदि के हाथ में नारियल और पान है तथा चाची भाभी आदि चुमावन कर रही है।

(१३)

झीलगंज से खरई मंगौली, वृदांवन से डला हरी ,
चुमवे बाहर भेलन अम्मा सोहागिन, चुमि-चुमि देह असीस हरी ।
झीलगंज से खरई मंगौली, वृदांवन से डला हरी ,
चुमवे बाहर भेलन चाची सोहागिन, चुमि-चुमि देह असीस हरी ।

अर्थ

झीलगंज से खरई (तिनका) मंगाई और बृंदावन से डाली मंगवाई । डाली में समान लेकर माता चुमाने चली और चुमावन करते आशीर्वाद दे रही है । इसी प्रकार की डाली में समान लेकर चाची भी चुमा रही है।

कलसा और नहछू

मंडपाच्छादन के बाद सारी बैवाहिक प्रक्रिया मड़वा में ही होती है । वहीं कलश स्थान होता है, वही नहछू होता है । वहीं इमली घोटाई, हल्दी उबटन विवाह बरनेत सिन्दुरदान आदि सारे अनुष्ठान सम्पादित होते हैं। वरपक्ष और बधूपक्ष की क्रियाओं में थोड़ा अन्तर होता है । बधूपक्ष के यहाँ वरपक्ष (दुल्हा आदि बाराती) के पहुँच जाने पर कुछ विशेष क्रियएँ सम्पादित होती है जो वर पक्ष के घर नहीं होती है । यहाँ समग्रता में उन गीतों को दिया गया है, जिसका विशद विश्लेषण प्रस्तावना के अंतर्गत आ गया है।

कलसा एवं नहछू आदि के गीत

कहवाँ में रामजी जलम लेलन हे, कहवाँ मे बाजत बधावा सिव संकर हरी ।
अजोधेया में रामजी जलम लेललन हे, जनकपुर में बाजत बधावा सिव संकर हरी ।
केरवा के काटी-कुटी थूम्हियाँ गड़ावल, छोटे-मोटे मड़वा बनावा सिव संकर हरी ।
खरहीं काटी-कुटी मड़वा छवायल, मड़वा में कलसा धरायल सिव संकर हरी ।
ओही में भरायल गंगा-पानी , ओकरे में धरायल कसइलिया सिव संकर हरी ।
ओकरे में धरायल आम-पतिया अउरो पान-फूलवा सुनहूँ सिव संकर हरी ।
ओकरे पर चउमक दियरा जरेली सारी रात सिव संकर हरी ।

अर्थ

हे शिव-शंकर, राम का जन्म कहाँ हुआ और बधाई कहाँ बज रही है ? अयोध्या में राम का जन्म हुआ और जनकपुर में बधाई बज रही है । केला को काट -छीलकर थम्ह गाड़ा गया ओर मड़वा बनाया गया । खरई से मड़वा छाया गया और उसमें कलश की स्थापन की गई । कलशे में गंगाजल और पान-फूल भी रख दिया गया । उस पर चतुर्मुखी दीपक जला दिया गया जो सारी रात जलती रहती है ।

(२)

कै गुन कलसा , कै गुन भार बोलऽ हे कलसवा के लेत भार ।
तीन गुन कलसा, नौ गुन भार-बोलथी अनजानो रइया हम लेबो भार ।

गंगा के पानी देबो, नरियर धान-चउमक बार देबो सगरो इंजोर ।
धन-धन अम्मा हे धन तोरा भाग-कलसा धराई गेलो मड़वा के बीच ।।

अर्थ

कलसा में कितना गुण हैं और उसका भार क्या है । स्वयं कलसा कह रहा है कि मेरा भार कौन चलावेगा । कलसा में तीन गुण हैं और उसका भार नौ गुना है। अमुकराय कहते हैं कि मैं भार ग्रहण करूँगा । गंगाजल से भर दूँगा, उसमे नारियल रख दूँगा और ऊपर चतुर्मुखी दीपक जला दूँगा । स्त्रियाँ कहती हैं कि माता का भाग्य धन्य है जिसके मड़वा के बीच कलसा की स्थापना की गई है ।

(३)

कुरखेत मटिया खानि मंगायब, ऊँचे-ऊँचे मड़वा छवायब सिवसंकर हे ।
सोने कलस पर पुरहथ रखब, मानिक दियरा रखाय सिवसंकर हे ।
जय -जय बोले नउवा-बराहमण, जय बोले नगर के लोग सिवसंकर हे ।
धन-धन सुगई[२] के भाग, अमुक वर पायल सिवसंकर हे ।।

अर्थ

कुरूक्षेत्र से खोदकर मिट्टी मंगवाई और ऊँचा मड़वा छवाया गया । सोन के कलसे पर पूर्णपात्र रखकर माणिक्य का दीपक जलाया गया । नाई और ब्राह्मण जय-जय की ध्वनि कर रहे हैं, नगर के सभी लोग जय मना रहे हैं। उस सुन्दरी का भाग्य धन्य है जिसने अमुक व्यक्ति जैसा वर प्राप्त किया है ।

नहछू

(५)

नह टुँगू नह टुँगू नाउन अंगुरी जनु मांगहूँ ।
देबवऽ में बरवा के बाबूजी, अंगुरी जनु मांगहूँ ।
देबवऽ में बरवा के चाचा, अंगुरी जनु मांगहूँ ।
नह टुँगू नह टुँगम नाउन, अंगुरी जनु मांगहूँ ।

अर्थ

नहछू लोक प्रचलित प्रथा को देखकर शायद तुलसीदास ने 'राम लला नहछू की रचना की थी जिसमें हास्य की छटा दीखती है । यहाँ भी प्रस्तुत मगही गीत में नाइन को मधुर गाली दी गई है।

गीत-गायिका कहती है कि हे नाइन वर का नख टूंग दो परंतु अंगुली को मत काट देना । इसके बदले तुम्हें वर के पिताजी को अर्पित कर दूँगी । पुनः वर के चाचा, भाई आदि के नाम लेकर नाइन को परिहासपूर्ण गाली दी जाती है और गीत की कड़ी बढ़ती जाती है ।

(६)

जब गोड़ छूलक नउनियाँ सवासिन सब जय बोले हे।
एक नोह छोलले दूसर नोह छोलले सवासिन सब जय बोले हे।
टुकटुक सुगई निहारे मड़उवा में सवासिन सब जय जय बोले हे।
अम्मा देले हाथके कंगनवाँ सगुनवाँ बहिनी गलेहार देले हे।
हँसि-खेलि गेलई नउनियाँ सवासिन सब जय बोले हे।

अर्थ

नाइन ने कन्या का पैर ज्योहीं स्पर्श किया कि सवासिन(बहन आदि) जय-जय कहने लगी । वह एक एक नख को काटने लगी और कन्या एकटक देखती रही। माँ ने नाइन को हाथ का कंगन दिया और बहन ने गले की हार दी । वह हँसती खेलती घर चली गई ।

पोखरा खोनाई

(७)

राजा दसरथ पोखरा खनावले, घाट बन्हावले हे ,
ये कोसिला देई के परले हंकार तऽ राम नेहावले हे ।
केरे देले अंगूठी मुनरिका केरे देले रूप ,
केरे देले रतन-पदारथ कि भर गेले सूप ।
बाबा देले अंगूठी मुनरिका कि भइया देले रूप ,
बाबूजी देले रतन पदारथ कि भरी गेले सूप ।

अर्थ

राजा दशरथ ने तालाब खुदवाया और उसमें घाट बंधा दिया । फिर माता कौशिल्या को पुकारा गया कि राम को स्नान कराया जाय । यहाँ दशरथ-कौशिल्या वर के पिता-माता के सामान्य प्रतीक रूप में चित्रित हैं । विवाह पूर्व स्नान कराने को खार-खुर छोड़ाई (अर्थात उबटन आदि को साफ करना) कहते हैं। इस अवसर पर नेगदारिनों को वस्त्राभूषण दिया जाता है। इस समय कौन अंगूठी और मुंद्रिका दे रहा है और कौन सूप भर कर रत्न, पदार्थ आदि दे रहा है। दादाजी अंगूठी और, मुंद्रिका दे रहें हैं और भाई जी रूप दे रहे और बाबूजी रत्न पदार्थ दे रहे हैं जिससे याचक का सूप भर जा रहा है ।

(८)

अमुक रइया पोखरा खनावले घाट बेसाहले हे ,
सुगई परले हंकार कि ललना नेहावले हे ।
मड़वा में झगड़े धोबिनियाँ निछावर थोड़े हवऽ हे ,
दुलरैतो के नेहइया हमे गलेहार लेबवऽ हे ।
जनु तुहूँ झगड़ू धोबिनियाँ निछावर थोड़े हवऽ हे ,
लरिका बिआही घर घूरब तऽ तोरा गलेहार देबवऽ हे ।।

अर्थ

अमुक राय (वर के पिता का नाम लेकर) ने पोखरा खुदवाया और घाट पर खरीद विक्री का सामान प्रस्तुत करवा दिया (बाजार लगवा दिया) फिर वर की सुहागिन माता को बुलाया गया कि उसे स्नान कराया जाय । इसी समय नेग के लिए धोबिन मड़वा में ही झगड़ने लगी कि दुलारे वर के स्नान कराने में गलेहार लूँगी । वर का पिता कहता है कि हे धोबिन थोड़े न्यवछावर के लिए झगड़ा मत करो । लड़के को व्याह कर घर लौटूँगा तो तुम्हें गलेहार ही दूँगा ।

इमली घोटाई

(१)

पीपरा के पात पर कसइलिया रे बने-बने ,
कउन भइया इमली घोटावे रे बने-बने ।
भइया के जलमल भतिजवा रे बने-बने ,
ओही भइया इमली घोटावे रे बने-बने ।।

अर्थ

इमली घोंटाई की प्रक्रिया वर या कन्या की माता का भाई करवाता है। इस अवसर पर भाई की प्रशस्ति के साथ गीत में उसे परिहास पूर्ण गाली भी दी जाती है । वन से पीपल का पत्ता और कसैली लाई गई है। कौन भाई इन पदार्थों से इमली घोंटा रहा है । भाई का पुत्र भतीजा भी साथ में है । वही भाई भतीजे के साथ इमली घोटा रहा है ।

(२)

अरब से आवऽ भइया दरब से आवऽ, अपनी बहिनियाँ के इमली घोंटावऽ ।
का तुहूँ बहिनी चउका बिलमाय लाल पियर भइया इमली घोंटावऽ।।
अपनी बहिनिया के इमली घोंटावऽ ।।

अर्थ

हे भाई, अरब भर द्रव्य लेकर आओ और अपनी बहन को इमली घोंटाओ । हे बहन, क्या तुमने मेरे लिए चौके पर बैठकर प्रतीक्षा (विलम्ब) किया ? हे भाई, लाल-पीले वस्त्राभूषण से इमली घोंटने की प्रक्रिया सम्पन्न करो, अपनी बहन को इमली घोंटाओ । (भाई के विलम्ब से आने पर बहन चौके पर बैठी प्रतीक्षा कर रही थी)

(३)

अरे करिया भँवरवा तू नेवत आव हमरो नइहरवा हे ।
पान-सोपारी लेले हमरो नइहरवा से नेबत आवऽ हे ।
कहवाँ से आवले महरिया, कहवाँ से आवऽले बिरन भइया हे ।
पूरूब से आवले महरिया [illegible]म से आवऽले बिरन भइया हे ।
कहवाँ उतारब महरिया तऽ कहवाँ बिरन भइया हे ?
कहवाँ में रखब महरिया तऽ कहवाँ बिरन भइया हे ?
दुअरे उतारब महरिया तऽ मड़वा बिरन भइया हे ।
कोठी-काँन्हा रखब महरिया तऽ घरवा बिरन भइया हे ।
खोली देहू बहिनी पटोरिया तऽ पेन्हहूँ चुनरी मोरा हे
छोड़ी देहू मन के बेकार तऽ भइया से मिलन करूँ हो ।।

अर्थ

हे काले भँवरा, तू हमारे नैहर में निमंत्रण देकर आओ । पान-कसैली के साथ हमारे मायके को निर्मंत्रित करना । निमंत्रण पाकर उसका भाई चला । बहन कहती है-महर (घड़ा में भरा मिष्टान्न आदि) कहाँ से आ रहा है ? और काहँ से मेरा वीर (भाई) आ रहा है । पूर्व से महर और पच्छिम से मेरा वीर भाई आ रहा है । कहाँ महर को उतारूँगी और कहाँ वीर भाई को । महर को कहाँ रखूँगी और वीर भाई को कहाँ बैठाऊँगी । दरवाजे पर महर उतारूँगी और मंडप में वीर भाई को । कोठी के कंधे पर महर रखूँगी और घर में वीर भाई को बैठाऊँगी । भाई बैठकर कहता है कि हे बहन अब अपनी पटोरी खोलकर मेरी चूनरी पहन लो और अपने मनके सारे विकार त्याग दो । भाई के साथ मिलन कर लो (भाई बहन का निश्छल प्रेम वर्णित है)

वर बधू के गीत

विवाह में वर और कन्या सम्बंधी गीतों की बहुलता रहती है । वर-बधू की गीतों की संख्या सैकड़ों नहीं हजारों में कूती जा सकती है। परम्परित वर-वधू के लोकगीतों के अतिरिक्त आधुनिक लोकगीतों का भी समावेश होता जाता है। परंतु यहाँ मैंने परम्परित मगही वर-बधू के लोकगीतों का चयन किया है। हाँ, यत्र-तत्र उन गीतों में भी आधुनिकता दीख जाती है जो बदलती संस्कृति के प्रभाव का द्योतक है । यहाँ प्रथमतः वर (दुल्हा) से सम्बंधी गीतों का भाष्य दिया जाता है, पुनः वधू (दुल्हन) से सम्बंधी मगही लोकगीत दिए जायेंगें ।

वर सम्बंधी मगध में प्रचलित लोकगीत

(१)

कोठवा के ऊपर मलहोरिया पुकारे -
लेलऽ बाबू लेलऽ मउरी मजेदार हे ।
नौ लाख के गजरा आउ मोती हार हे ,
सोने अंगूठी मखमल के रूमाल हे ।
कोठवा के ऊपर दरजिया पुकारे -
लेलऽ बाबू लेलऽ जोड़ा मजेदार हे ।
नौ लाख के गजरा आउ मोतीहार हे ,
सोने के अंगूठी मखमल के रूमाल हे ।

अर्थ

लग्न के समय वर (दुल्हे) के लिए मौर आदि वस्त्राभूषण की दूकाने सजी हैं। माली अपने कोठे की दूकान से ग्राहक को पुकार रहा है कि मेरा मौर सुन्दर है, इसे वर के लिए खरीद लें। नौ-नौ लाख के मोती की हार और गजरे हैं सोने की अंगूठी और मखमल के रूमाल हैं। दरजी भी अपने कोठे की दूकान से जोड़ा-जामा खरीदने के लिए बुला रहा है। गीत के अंत में पूर्वोक्त तथ्य की पुनरूक्तियाँ की गई है।

(२)

बसु-बसुरे मलहोरिया पटना, मउरिया लेके आयो मोरो अगना।
पेन्ह-पेन्हऽ हो अनजानो दुलहा मउरियरा, मउरिया पेन्ह के चलले ससुररिया।
मोती, लाल से जड़ी है मउरिया, हीरा, मानिक से गाथल हे मउरिया।
बसु-बसु रे दरजिया पटना, जोड़ा लेके आयो मेरे अगना।
पेन्हऽ-पेन्हऽ हो अंजानो दुलहा जोड़वा, जोड़ा पेन्ह के चलले ससुररिया।
हीरा, लाल से जड़ल हे जोड़वा, मोती -माणिक से जड़ल हे जोड़वा ।।

अर्थ

पटना में निवास करने वाला माली मौर लेकर मेरे आंगन में आया है। अमुक दुल्हा मौर पहनकर श्वसुराल चला। यह मौर मोती-लाल से जड़ा है और इसमें हीरा-माणिक गूँथे हैं। इसी प्रकार पटना में बसने वाला दर्जी जोड़ा-जामा लेकर मेरे आंगन में आया है। उस जोड़े में भी हीरा,लाल, मोती, माणिक जड़े हैं जिसे पहनकर वर श्वसुराल को चल पड़ा।

(३)

बाबा ले आयो मउरी, दादी पहिरावै लाल,
मउरियो न पहिरे दुल्हा, मने-मने समझे लाल।
काहे न अयलन मोरे बहनोइया लाल ?
मलिया के जलमल अंजानो बहनोइया लाल,
लाजे न आयलन मोरे बहनोइया लाल।

बाबूजी ले आयो जोड़ा मइया पहिरावे लाल ,
जोड़वा न पहिरे दुल्हा, मने-मने समझे लाल ,
काहे ने अयलन मोरे बहनोइया लाल ?
दरजी के जलमल अंजानो बहनोइया लाल ,
लाजे न अयलन मोरे बहनोइया लाल ।

अर्थ

दुलहे को मौर पहनाते समय स्त्रियाँ वर के बहनोई को हास-परिहास और गाली देती है । गीत में कहा गया है कि बहनोई वर को मौर पहनाने नहीं आते हैं तो बाबा द्वारा खरीदा हुआ मौर दादी पहनाने लगती है परंतु दुलहा दादी से मौर नहीं पहनता है और मन ही मन विचार करता है कि मेरे बहनोई मौर पहनाने क्यों नहीं आते। स्त्रियाँ गाली देती है कि अमुक बहनोई माली से पैदा हुए हैं इसीलिए नहीं आ रहें हैं-लज्जावश । पिताजी ने जोड़ा जामा लाया है और माता पहना रही है। दुलहा जोड़ा नहीं पहन रहा है और मनमें विचार कर रहा है कि मेरे बहनोई क्यों नहीं आए। अमुक बहनोई दर्जी के जन्मे हैं । इसी लज्जावश वे यहाँ मौर पहनाने नहीं आते। (वस्तुतः वर का मौर बहनोई ही पहनाता है)

(४)

कोठवा ऊपर कोठरिया जी दुलहा ,
ऊपर मउरिया बिराजई जी दुलहा ।

बाबा तोर हजरिया जी दुलहा ,
मउरिया किन-किन पेन्हवथुनजी दुलहा ।

दादी तोर जोगिनियाँ जी दुलहा ,
सूइया खोंस के पन्हौवथुन जी दुलहा ।

कोठा ऊपर कोठरिया जी दुलहा ,
ऊपर जामा बिराजई जी दुलहा ।

बाबूजी तोर हजरिया जी दुलहा ,
जोड़वा किन-किन पेन्हवथुन जी दुलहा ।

मइया तोर जोगिनियाँ जी दुलहा ,
सूइया खोंस के पन्हवथुन जी दुलहा ।

इसी प्रकार अनेक वस्त्राभूषणों के साथ रिश्तेदारों के नाम लेकर गीत की कड़ी को आगे बढ़ाया जाता है ।

अर्थ

हे दुलहा, कोठा के ऊपर कोठरी है , उसी में मौर विराजमान है, सुरक्षित है तुम्हारे बाबा हजारों के मालिक हैं। मौर को खरीद कर पहनावेंगे । तुम्हारी दादी योगिनी है, वह सूई को अभिमंत्रित कर मौर में खोंसकर पहनावेंगी (जिससे किसी की नजर नहीं लगे) कोठा के ऊपर कोठरी में जोड़ा-जामा विराजमान है । तुम्हारे पिताजी हजारों के मालिक हैं । वे जोड़ा-जामा खरीद कर पहनावेंगे तुम्हारी माँ योगिन है । वह मौर में सूई खोंसकर पहनावेंगी। आदि-आदि

(५)

कोठवा के ऊपर दुलहा मउरिया सँवारे लाल ,
कोठवा के भीतर मइया सूरूज मनावे लाल ।
खाइयों में लेहूँ बाबू पाकल पनवा लाल ,
पीयो में लेहूँ बाबू अँउटल दूधवा लाल ।
कइसे में खइयों मइया पाकल पनवा लाल ,
कइसे में पीअई मइया अँउटल दूधवा लाल ।
तोरो से प्यारी मइया साली -सरहजिया लाल ,
दोहरे कोरसूपवाँ लेले जोहले बटिया लाल ।
कोठवा के ऊपर दुलहा जोड़वा सँवारे लाल ,
कोठवा के भीतर चाची सूरूज मनावे लाल ।
खाइयों में लेहूँ बाबू पाकल पनवा लाल ,
पीयो में लेहूँ बाबू अँउटल दूधवा लाल ।
कइसे में खइअई चाची पाकल पनवा लाल ,
कइसे में पीअई चाची अँउटल दूधवा लाल ।
तोहरो से प्यारी चाची साली सरहजिया लाल ,
दोहरे-वीरा-पान लेले जोहले बटिया लाल ॥

अर्थ

बारात जाने की तैयारी हो रही है । कोठा के ऊपर दुलहा मौर को सम्हाल कर पहन रहा है और कोठा के नीचे माँ सूर्य भगवान की मनौती मान रही है और वर को कह रही है कि गरम दूध पी लो और पका पान खा लो । वर-पुत्र कह रहा है कि हे माता, मैं पका पान कैसे खाऊँ और औटा दूध कैसे पीऊँ । तुमसे प्यारी साली-सलहज कोरा सूप में सामान लेकर मेरी राह देख रही होगी । इसी प्रकार चाची और अन्य सम्बंधी वर को दूध पीने और पान खाने का अनुरोध करते हैं और वह (वर) साली-सलहजी के बाट जोहने का तर्क देता है । वे लोग भी तो वहाँ दोहरे पके पान का बीड़ा लेकर बाट जोह रहे होंगें । यहाँ वर मातृपक्ष से अधिक श्वसुर पक्ष की प्रधानता देता दीखता है।

(६)

मलिया अंगनवा वरीसे बूँदा चार लाल ।
भिंजलन अंजानो दुलहा मउरिया के साथ लाल ।
मउरिया जे रखिहँऽ दुलहा बाबाजी के पास लाल ।
झुकि-झुकि करिहँऽ दुलहा ससुर के परनाम लाल ।
दरजी अंगनवाँ बरीसे बूँदा चार लाल ।
भिंजलन अंजानो दुलहा जोड़वा सहित लाल ।
जोड़वा जे रखिहँऽ दुलहा, चाचा के पास लाल ।
झुकि-झुकि करिहँऽ दुलहा सासु के परनाम लाल ।
मोचिया अंगनवाँ बरीसे बूँदा चार लाल ।
भिंजलन अनजानो दुलहा मोजवा के साथ लाल ।
मोजवा जे रखिहऽ बाबू जीजा के साथ लाल ।
झुकि-झुकि करिहँऽ बाबू सरहज के परनाम लाल ।

अर्थ

माली के आंगन में वर (दुलहा) मौर लेने गया जहाँ बूँदा-बाँदी होने लगी। वहाँ अमुक दुलहा मौर के साथ भींगने लगा । दादी कहती है कि मौर को दादा के पास रख देना । श्वसुराल में ससुर को विनम्रतापूर्वक प्रणाम करना । दर्जी के आंगन में वर जोड़ा-जामा के लिए गया तो वहाँ बूंदा-बादी होने लगी और वह जोड़ा के साथ

भींगने लगा । चाची कहती है कि जोड़ा को चाचा के पास रख देना । सास को झुककर प्रणाम करना । इसी प्रकार मोची के यहाँ मोजा खरीदने गया तो वहाँ भी दो चार बूँदें पड़ने लगी और दुलहा मोजा के साथ भींगने लगा । बहन कहती है कि मोजा जीजा के पास रख देना । सरहज को झुककर प्रणाम करना। सभी वस्त्र और सम्बंधों को लेकर गीत आगे बढ़ते जाता है ।

(७)

बाबू के मउरिया में लगल हे अनार-कलिया
अनार कलिया हे गुलाब झरिया, बाबू गते-गते चलिहऽ ससुर-गलिया।
बाबू सरहज से बोलिहऽ अमीर-बोलिया , बाबू गते-गते चलिहऽ ससुर-गलिया ।
बाबू के जोड़वा में लगल हे अनार कलिया, अनार कलिया हे गुलाब झरिया ।
बाबू गते-गते चलिहऽ ससुर-गलिया, बर गते-गते चलिहऽ ससुर-गलिया ।
बाबू के अंगूठी में लगल हे अनार कलिया, अनार कलिया हे गुलाब झरिया ।
बाबू गते-गते चलिहऽ ससुर गलिया, बर गते-गते चलिहऽ ससुर-गलिया ।

अर्थ

वर बाबू के मौर में अनार की कली जड़ी है, उसमें गुलाब की पंखुड़ियाँ लगा दी गई है । माँ-बहने समझाती है कि हे बाबू, ससुर की गली में धीरे-धीरे पैर धरना और अपनी सरहज से शिष्ट बोली बोलना । बाबू के जोड़े में अनार कली और गुलाब की पंखुड़ियाँ लगी है । इसी प्रकार उसकी अंगूठी में भी अनार कली और गुलाब की पंखुड़ियाँ की नक्कासी है। सजे-सँवरे वर को श्वसुसाल की गली में धीरे-धीरे चलने और लोगों के साथ शिष्ट तरीके से बातें करने की सीख दी जाती है ।

(८)

कोरे नदिअवा दहिया जमाय गे माई,
तलगूला अंजानो दुलहा, भोजन बनाय गे माई ।
भोजन बनैते दुलहा बड़ा भेलो देर गे माई ,
तलगूला अंजानो चाचा सजले बारात गे माई ।
कोरे नदिअवा में दहिया जमाय गे माई ,
तलगूला अंजानो दुलहा मउरिया सम्हारे गे माई ।

मउरिया सम्हारत दुलहा बड़ा भेलो देर गे माई ।
तलगूला अनजानो भइया सजले बरात गे माई । आदि

अर्थ

नये मटुकी में दही जमाया गया तवतक अमुक दुलहे ने स्वयं भोजन बनने लगा। हे दुलहा भोजन बनने में देर हुई तवतक अमुक चाचा ने बारात सज दी । कोरे नदिया में दही जमा और अमुक दुलहा मौर सम्हालने लगा तवतक उसके अमुक भाई ने बारात की सारी तैयारी कर दी । भीड़ भरे वैवाहिक आनुष्ठानिक क्रिया में शीघ्रता का उपक्रम ।

(९)

हरिअर-हरियर कसइलिया रे बने बने ,
हरिअर अनजानो दुलहा अँखिया रे बने ।

उनकर बाबा चतुरिया रे बने-बने ,
गाँवे-गाँवे मलिया बसौथी रे बने ।

मलिया के जलमल बहनोइया रे बने-बने ,
डेरे-डेरे मउरिया पहुँचावथी रे बने ।

उनकर बाबूजी चतुरिया रे बने-बने ,
गाँवे-गाँवे दरजी बसौथी रे बने ।

दरजी के जलमल बहनोइया रे बने-बने ,
डेरे-डेरे जोड़वा पहुँचावथी रे बने ।

अर्थ

वनों में हरी-हरी कसैलियाँ हैं और उसी की तरह अमुक दुलहा की सुन्दर आँखे हैं । दुलहा का दादा चतुर है जिन्होंने गाँव-गाँव में मालियों को बसा दिया है । (बहनोई को गाली) माली से ही बहनोई का जन्म हुआ है। वह सभी के घर जाकर मौर पहुँचा रहा है । वर के पिताजी भी चतुर हैं । उन्होने गाँव-गाँव में दर्जी को बसा दिया है । उसी दर्जी से बर के बहनोई का जन्म हुआ । अतः वह घर-घर जोड़ा-जामा बनाकर पहुँचा दे रहा है ।

(१०)

अँखिया तऽ हवऽ बाबू चान के जोतिया, ओठवा से चूअत सिनेह हे ।
एतना सुरतिया हलवऽ दुलरूआ कवन विध रहलऽ कुँआर हे ।

बाबा जे हमर हलन दर रे देवनिया चाचा जोतले कुर खेत हे ।
भइया जे हमर हलन जिरवा-लदनिया, ओही लागि रहली कुँआर हे ।

बाबा जब छोड़लन दर रे देवनिया, चाचा छोड़ देलन कुर खेत हे ।
भइया जब छोड़लन जिरवा लदनिया, तब मोरा सजल बिआह हे ।

अर्थ

वधू पक्ष के लोग वर से पूछते हैं कि तुम्हारी आँख चाँद की ज्योति की तरह है और बोली से स्नेह टपकता है। हे प्यारा, जब तुम्हें इतनी सुन्दरता थी तो अभी तक क्वारा क्यों रह गया? वर अपने परिवार की वयस्तता का वर्णन करता है-हमारे दादा दीवान थे, चाचा खेती करते थे, भाई जीरे का व्यापार करता था, इसी लिए विवाह नहीं हो पाया । बाबा ने दीवानगिरी छोड़ दी, चाचा ने खेत जोतना बंद कर दिया और भाई ने व्यापार बंद कर दिया तब बराती सजी है ।

(११)

पतरे अनजानो दुलहा हाथ में गुलेल गे माई ,
चिरई मारे चललन दुलहा बाबा के बाग गे माई ।

पतरी अनजानो सुगई हाथ में डलनवाँ गे माई ,
फुलवा लोड़े चललन सुगई ओहे फुलवाड़ गे माई ।

एगो गुलेल जब मारले दुलहवा गे माई ,
टूट गेलई डाली-डुली, ओही फुलवाड़ गे माई ।

अबकी कसुरवा माफ करूँ नऽ दुलहवा गे माई ,
अब नऽ अयबो हम येही फुलवाड़ गे माई ।

अर्थ

पतला अमुक दुलहा हाथ में गुलेल लेकर अपने बाबा के बगीचे में चिड़िया का शिकार करने गया। वहाँ पर पतली अमुक सुगई हाथ में डाली लेकर फूल चुनने

(तोड़ने) उसी फुलवाड़ी में गई। दूल्हे ने एक गुलेल चलाया कि भावी दुलहन की डाली टूट गई। यह देखकर वह क्षमा प्रार्थी है कि इसके बाद वह इस फुलवाड़ी में नहीं आवेगी। (पूर्व राग का संकेत है।)

(१२)

केकर नदिया में झिलमिल पनिया, केकर नदिया सेवार हे ?
केकर नदिया में पोठिया मछरिया, कउन दुलहा डाले महाजाल हे ?

ससुर के नदिया में झिलमिल पनिया, सास के नदिया सेवार हे।
सरवा के नदिया में पोठिया मछरिया, अनजानो दुलहा डाले महाजाल हे।

एक जाल डाले दुलहा, दूई जाल डाले, बझिगेले सितुहा-सेवार हे।
तेसर जलवा जे डालले दुलरतो, बझिगेले कनेया कुँआर हे।

कउन रिखी के नाती हहूँ तूँ कउन रिखी के पूत हे ?
कउन भरोसे तुहूँ जलवा डाललऽ कहवाँ में बेख तोहार हे।

अनजानो रइया के नाती हमहूँ अमुक रइया के पूत हे।
अपना भरोसे हम जलवा लगौली, अमुकपुर बेख हमार हे।

अर्थ

किसकी नदी में झलमलाता स्वच्छ जल है और किसकी नदी में शैवाल भरा है। किसकी नदी में पोठी मछलियाँ हैं और कौन वर नदी में महाजाल फेंक रहा है ? ससुर की नदी में स्वच्छ जल है और सास की नदी में शैवाल है। साले की नदी में पोठी मछली है। अमुक (अज्ञात) दुलहा महाजाल फेंक रहा है। एक-दो जाल फेंकने के बाद सितुहा और शैवाल फँस गया परंतु तीसरे जाल फेंकते ही कुँआरी कन्या फँस गई। इस पर कन्या का परिवार पूछता है कि तुम किस ऋषि के पौत्र और किसके पुत्र हो ? किसके बल पर जाल फेंका है और कहाँ तुम्हारा निवास है? दुलहे ने उत्तर दिया कि मैंने अपने बल पर जाल लगाया है और अमुक स्थान पर मेरा निवास है। (शांतनु और मत्स्यकन्या का स्मरण हो जाता है।)

(१३)

अगे माई बाबा के दुलरूआ अनजानो दुलहा नऽ ,
अगे माई चल भेलन मघवा मघेड़ घूमे नऽ।

अगे माई जहाँ देखलन हरियर बगिया नऽ ,
अगे माई डेरा -समेअनवाँ[3] गिरावे लगलन नऽ ।

अगे माई बाबू जी के दुलरूआ अनजानो दुलहा नऽ ,
अगे माई चल भेलन मघवा मघेड़ घूमे नऽ ।

अगे माई जहाँ देखलन हरियर बगिया नऽ ,
अगे माई डेरा -समेअनवाँ गिरावे लगलन नऽ ।
गहे-गहे बजवा बजावे लगलन नऽ ।।

अर्थ

बाबा का दुलारा अमुक दुलहा माघ की बासंती देखने निकला । उसने जहाँ भी हरा बाग देखा वहाँ डेरा शामियाना गिराने लगा । वह पिता और चाचा का दुलारा अपने डेरा-शामियाना से गाजा-बाजा बजाने लगा ।

(१४)

बारह बरीस के लहुरा कउन दुलहा खेले गेलन बड़ी दूर ।
उहवाँ से लवलन हारिल सुगवा लेलन हिरदा में लगाय ।

सब कोई पहिने अंगिया से टोपिया सुगना ही रोदना पसार ।
हमरा के चाहिला लाली रे चदरिया हमहूँ चलब बरियात ।

सब कोई चढ़ले हथिया से घोड़वा, हमारा के सोने के पिंजड़वा ।
सब कोई खाहे पर-पकवनवाँ हमरा ला बूट के झंगरिया ।

सब कोई निरखें बर-बरियतिया, सासु निरेखे हथ दमाद ।
अइसन लाढ़ो बर कतही न देखली, सुगवा के साथे बरियात ।

अइया जे माई परोसिन, सुगवा के नजर न लाओ ।
बनकेरा सुगवा बनहिं चली जयते, संग साथी अयले बरियात ।

अर्थ

बारह वर्ष का कोई दुलहा खेलते-खेलते बड़ी दूर चला गया । वहाँ से एक हारिल सुग्गा पकड़ लाया जिसे हृदय से लगाकर रखने लगा । बाराती जाते समय सभी लोग कुर्त्ता टोपी पहनते हैं तो सुग्गा रोने लगा कि मुझे लाल चादर चाहिए और

मैं भी बारात चलूँगा । सभी लोग हाथी घोड़े पर चढ़ने लगे तो सुग्गे ने कहा कि मुझे सोने का पिंजड़ा चाहिए। सभी लोग पुआ-पकवान खाते हैं तो सुग्गा बूँट की झंगरी चाहता है । गाँव के लोग बारात को देखते हैं । सास अपने दमाद को देखती है । ऐसा दुलारा वर कहीं नहीं देखा गया जो सुग्गे के साथ बारात आया हो । वह अपनी सास से कहता है कि हे माँ और पड़ोसन, सुग्गे को नजर नहीं लगाओ । वन का सुग्गा तो वन में चला जायगा, यह तो संग-साथ होकर बारात आ गया है ।

(१५)

वेर ही वेर तोरा बरजो अनजानो, बाबा जेठ विआह मत करूँ ।
जेठ बइसखवा के तलफी भूम्हरिया वर जइहें कुम्हिलाय ।।

बेर ही बेर तोरा बरजो अनजानो बाबूजी, जेठ विआह मत करूँ ।
जेठ बइसखवा के तलफी भूम्हरिया, वर जइहें कुम्लिहाय ।।

अर्थ

बार-वार अमुक बाबा को मना किया जा रहा है कि जेठ में विवाह का लग्न निश्चित नहीं करें क्योंकि जेठ-बैशाख में जमीन की धूल गर्म हो जाती है, लू चलती है जिसमे दुलहा मुरझा जायगा । इसी प्रकार पिताजी को भी जेठ में विवाह करने के लिए मना किया जा रहा है ।

(१६)

बइगन गाछ-बइगन गाछ, बइगन गाछ हे,
ताहितर अनजानो दुलहा नैना दूनो लोर ठारे हे ।
घर से बाहर भेलन अंजानो बाबा-काहे बाबू लोर ठारे हे ?
एक तो बिअहलऽ बाबा देसे -दूरवा, दूसरे गरीब घरवा हे ।
बाबूजी के जनमल अनजानो भइया सेहो न जओरे जाले है ।
चुप रहऽ चुप रहऽ अनजानो दुलहा बावें दहिने पाँचों भइया जइहें,
पाछे बहनोइया जइहें-पाछे बहनोइया जइहें हें ।।

अर्थ

बैगन के गाछ के नजदीक अमुक दुलहा की दोनो आंखों से आँसू झर रहे हैं । घर से निकल कर अमुक बाबा ने पूछा कि बाबू, क्यों रो रहें हैं ? दुलहा कहता है

कि एक तो आपने दूर-देश में मेरा विवाह कर दिया और निर्धन घर भी है, इस पर मेरे सहोदर भाई भी बारात नहीं जा रहे हैं । बाबा ने दुलहा को चुप कराते हुए कहा तुम्हारे पाँच भाई बायें-दायें लगे जायेंगें और उनके पीछे तुम्हारे बहनोई भी जायेंगें ।

(१७)

हमरो अनजानो पुत्ता चललन विआह हे ,
चिहुँकि चिरइया सब उड़लन धधाय हे ।

बइठल अनजानो रइया जाजिम बिछाय हे ,
जँघिया अनजानो पुत्ता कचरले पान हे ।

फेंकलन अनजानो दुलहा विरवा घुमायहे ,
विरवा न चुने सुगई, मुखओ न बोले हे ।

केकरा भरोसें सुगई बिरवो न चुने हे ,
केकरा भरोसे सुगई मुहवो न बोले हे ।

चले देहूँ चले देहूँ अपनी नगरिया हे ,
उहें तोरा देखब सुगई कइसन गुमान हे ।

भरले बरतिया सुगई, देलन जबाब हे ,
चलु-चलु बरतिया सबहे, अपनो दुआर हे ।

हमरा अनजानो बहिनी छेकलन दुआर हे ,
छोड़ूँ-छोड़ूँ अगे बहिनी हमरो दुआर हे ।

तोहरा के देबो बहिनी कंठा गढ़ाय हे ,
पाहुन के देबो बहिनी घोड़वा किनाय हे ।।

अर्थ

हमरा अमुक पुत्र विवाह करने चला तो बारात को देखकर चिड़िया घबड़ा कर उड़ने के लिए फड़फड़ाने लगी । बारात पहुँचने पर अमुकराय सफेदी बीछाकर बैठ गए । उनकी जाँघ पर उनका पुत्र-दुलहा पान चबा रहा है । दुलहे ने घुमाकर सुगई की ओर पान का बीड़ा फेंका । परंतु उनकी सुगई ने पान का बीड़ा नहीं उठाया न मुँह से कुछ बोल सकी । इस पर दुलहे ने कहा कि हे सुगई, किसके बलपर न बीड़ा

उठा रही है न मुँह से बोल रही है। अतः अपने नगर चलने दो वहीं तुम्हारा घमण्ड देख लूँगा। भरी बारात में सुगई ने (पत्नी) उत्तर दिया कि चलो-चलो सभी बारात के लोग अपने दरवाजे चलो। बारात के घर लौट जाने पर वर की बहन ने दरवाजा छेंक (रोकना) लिया। वर ने कहा कि हे बहन दरवाजा छोड़ दो, तुम्हें कंठा गढ़ा कर दूँगा और जीजा जी को खरीदकर घोड़ा दूँगा। इसमें बारात चलने से लौटने तक की प्रक्रियाओं का वर्णन मिलता है।

(१८)

मेंहदी के गाछ तर मउरिया सँवरे लाल।
हमरा अनजानो दुलहा घर ही सँवारे लाल।

आगे-आगे भइया जइहें पाछे बहनोइया लाल।
लोकदीन के लाल साड़ी तबे बरवा सोभे लाल।

मेंहदी के गाछतर जोड़वा सँवारे लाल।
घड़िया सँवारे लाल, मोजवा सँवारे लाल।

हमरा अनजानो दुलहा घरही सँवारे लाल।
आगे-आगे भइया जइहें, पाछे बहनोइया लाल।
लोकदीन के लाल साड़ी, तबे बरवा सोभे लाल॥

अर्थ

मेंहदी के गाछ के नीचे मौर पहनना है परंतु हमारा अमुक दुलहा घर पर ही मौर पहन रहा है। मौर पहने के बाद बारात जायगी। बारात में वर का भाई आगे चलेगा और पीछे से बहनोई चलेगें। साथ में लाल साड़ी पहने लोकदीन (दाई) चलेगी, तभी वर की शोभा है। इसी प्रकार दुलहा जोड़ा जामा, घड़ी, मोजा सम्हाल कर पहन रहा है और भाई बहनोई और दासी के साथ बारात में जाकर विवाह के लिए प्रस्तुत है।

(१९)

हमरा अनजानो दुलहा बड़ी हँसमुखिया लाल,
भोरे उठी करथी बाबू, सासु जबबिया लाल।

घड़ी आउ साइकिल सासु, करऽ समतुलवा लाल,
तब करबई अजी सासु, धिया से विआह लाल।

घड़ी आउ साइकिल बाबू न हई औक़ात लाल ,
धिअवा जे देबो बाबू सूरज के जोत लाल ।

न हम गोर सासु, न हम करिया लाल ,
समता वरन सासु, करबई विआह लाल ।

हमरा अनजानो दुलहा बड़ी हँसमुखियो लाल ,
भोरे उठी करथी बाबू, सरहज जबबिया करऽ समतुलवा लाल ।

घड़ी और साइकिल सरहज करऽ समतुलवा लाल ,
तब करबई अजी सरहज ननद से बिआह लाल ।

घड़ी आउ साइकिल बाबू, न हई औकात लाल ,
ननद जी देबो बाबू, चनवा के जोत लाल ।

न हम गोर सरहज, न हम करिया लाल ,
समता-बरन सरहज करबई बिआह लाल ।।

अर्थ

हमरा अमुक दुलहा बड़ा हँसमुख है, वाचाल है । सबेरे उठकर सरहज से प्रश्न करने लगा । घड़ी और सयकिल देकर बराबर बनें तभी मैं आपकी बेटी से विवाह करूँगा। सास कहती है कि घड़ी सायकिल देने की औक़ात मुझें नहीं है। मैं सूर्य की ज्योति की तरह अपनी बेटी दूँगी । दुलहा कहता है कि मैं न तो गोरा हूँ न काला बल्कि श्यामला हूँ और साँवली से विवाह करूँगा । इसी प्रकार दुलहा सरहज से प्रश्नोत्तर करता है और सरहज भी चन्द्रमा की ज्येति की तरह ननद देने के लिए कहती है। विभिन्न रिश्तेदारों के नाम के साथ गीत आगे बढ़ते जाता है ।

(२०)

हरियर जउवा के खेत रे बने-बने -
हरियर दुलहवा के बेच रे बने-बने ।

कहवाँ गँवलऽ सारी रात रे बने-बने -
मइया पूछेला एक बात रे बने-बने ।

मइया तोरो से प्यारी एक सास रे बने-बने -
उहँई गँववली सारी रात रे बने-बने ।

चाची पूछले एक बात रे बने-बने -
कहवाँ गँववलऽ सारी रात रे बने-बने ।

चाची तोरो से प्यारी सरहज रे बने-बने -
उहँई गँववली सारी रात रे बने-बने ।

अर्थ

हरे-हरे यव की खेती है और हरा-भरा दुलहा भी विका हुआ है । माँ पूछती है कि एक बात बताओ-तुमने सारी रात्रि कहाँ व्यतीत की । दुलहा कहता है कि माँ, तुमसे भी प्यारी एक सास है, वहीं मैंने सारी रात व्यतीत कर दी । इसी तरह चाची भी पूछती है तो दुलहा कहता है कि चाची जी, तुम से प्यारी एक सरहज है, वहीं पर मैंनें सारी रात्रि व्यतीत कर दी ।

(२१)

बाबू मउरिया जे पेन्हें दसरथ अंगना ,
बाबू लरिया लगइहँऽ जनक अंगना ।

चलऽ देखे सखि वनी आए ललना ,
बाबू जोड़ा पेन्हें दसरथ अंगना ।

बाबू जामा सजावे जनक अंगना ,
चलऽ देखे सखि बनी आए ललना ।।

अर्थ

दुलहा दशरथ (पिता के यहाँ) के आंगन में मौर पहन रहा है । माता कहती है कि मौर की लड़ी जनक (श्वसुरार में) के अंगना में लगाना। सखियाँ कहती हैं कि देखने चलो, दुलहा बड़ा सज-सँवर कर आया है । पुनश्च, वर जोड़ा दशरथ के आंगन में पहन रहा है और जामा को जनक आंगन में सजा रहा है । सखियाँ सजे-सँवरे दुलहे को देखने के लिए बातचीत करती है ।

(२२)

बाबू के सिर जोगे टोपिया न आयल सुनहूँ लोगे ,
बाबू के सेतिहें में ले गेले, सुनहूँ लोगे ।

बाबू के देह जोगे कुरता न आयल सुनहूँ लोगे ,
बाबू के ठगके ले गेले, सुनहूँ लोगे ।
बाबू के गोड़ जोगे धोती न आयल, सुनहूँ लोगे ,
बाबू के सेतिहे में ले गेले, सुनहूँ लोगे ।

अर्थ

हे भाइयों, मेरे बाबू (दुलहा) के सिर के लायक टोपी नहीं आई । अत: बाबू को मुफ्त में ठग लिया । बाबू के देह योग्य कुर्त्ता, और पैर के योग्य धोती नहीं आई । परंतु दुलहा को मुफ्त में ठग लिया ।

(२३)

मलिया अंगनवाँ कसइलिया के डरवा लचकि लचकि पसरायल हे ,
घर से बाहर भेलन दुलहा, दुलरइतो दुलहा, तोड़लन कसइलिया के डार हे ।
घर से वाहर भेलन बाबा दुलरइतो बाबा, दे हई मलिनियाँ ओरहन हे ,
बरजहूँ हे बाबा अपन दुलरूआ, तोड़ले कसइलिया के डार हे ।
मत कछु कहऽ मालिन हमरा दुलरूआ, हम देबो दाम कसइलिया हे ।

अर्थ

माली के आंगन में कसैली की डाली नीचे तक फैल गई है । घर से बाहर निकलकर अमुक दुलहे ने कसैली की डाली तोड ली । जब बाबा घर से बाहर निकले तो मालिन ने उलहाना दिया कि अपने दुलारे को मना करें । उसने कसैली की डाली तोड़दी है । बाबा ने कहा कि हमारे दुलारे को कुछ मत कहो,मैं कसैली की कीमत चुका दूँगा ।

(२४)

उगी गेलई चंदवा, छपीत भेलई हे सूरूज ,
अहो बइठऽ न अनजानो दुलहा फुलवा केरा हो सेजिया ।
कइसे में बैठूँ अम्मा फुलवा केरा हो सेजिया ,
अहो बाबूजी साहेब भिंजत होइहें चारो-पहर-रतिया ।

बाबूजी के देबो दुलहा सोने-मुठी हो छतवा ,
छतवे अलोते दुलहा सजले बरिअतिया ।

उगी गेलई चंदवा, छपीतऽ भेलई हे सुरूज ,
अहो बइठऽ नऽ अनजानो दुलहा फुलवा केरा हो सेजिया ।

कइसे में बइठूँ चाचा फुलवा केरा हो सेजिया ,
चचा साहेब भिंजत होइहें चारो पहर रतिया ।

चाचा के देबो दुलहा चढ़ने को घोड़वा ,
घोड़वे चढ़ले दुलहा सजले बरतिया ।।

अर्थ

चाँद उग गया और सूर्य छिप गया । हे अमुक दुलहा, फूल की शय्या पर बैठो। दुलहा कहता है कि हे माता, फूल की शय्या पर कैसे बैठूँ, मेरे पिताजी रात्रि भर भींगते रहे हैं । माँ कहती है कि पिताजी को सोने का मूठ लगा छाता दूँगी, छाते की छाया में बारात सजेंगे । पुनः चाची दुलहे को फूल की शय्या पर बैठने के लिए कहती है तो दुलहा चाचा के भींगने की बात कहता है । इस पर चाची कहती है कि चाचा को घोड़ा चढ़ने के लिए दूँगी । उसी पर चढ़कर बाराती को सजे-सँवारेंगे । इसमें बड़ी मधुर रागिनी की सर्जना होती है और अनेक रिश्तेदारों को साथ जोड़कर गीत की कड़ी को आगे बढ़ जाता है ।

(२५)

हम तोरा पूछिला दुलहा दुलरुआ, केरे सँवारे तोर रंगले मउरिया ।
मलिया के जनमल भेड़ुवा बहनोइया, ओही रे सँवारे बर रंगल मउरिया ।
दरजी के जनमल भेड़ुवा बहनोइया, ओही रे सँवारे बर रंगल जोड़उवा ।।
हम तोरा पूछिला दुलहा दुलरुआ, केरे सँवारे तोर रंगल जुतवा ।
चमरा के जनमल भेड़ुवा बहनोइया, ओही रे सँवारे बर रंगल जुतवा ।।

अर्थ

हे दुलारा दुलहा, मैं पूछती हूँ कि तुम्हारा रंगीन मौर कौन सँवार रहा है, पहना रहा है ? लगता है कि माली का जन्मा भड़ुवा बहनोई है, वही वर का रंगीन मौर पहना रहा है । दर्जी का जन्मा हुआ भड़ुआ बहनोई है, चमार का जन्मा बहनोई है, वही जोड़ा-जामा और जूता पहना रहा है।

(२६)

अपनी महलिया में मउरी माली गूथई, उहवाँ अनजानो दुलहा खाड़जी ,
हम तोरा पूछही मलिया हो भइया, केते दूर मोर ससुरार जी ।

तोरे ससुररिया बाबू मउरिया से संचल चुनवे चुनेटल दुआर जी ,
मोतिया-झालर बाबू तोर ससुररिया, चारो दने गड़ल निसान जी ।

अपनी महलिया में जोड़ा दरजी सिअई, उहवाँ अनजानो दुलहा खाड़जी ,
हम तोरा पूछही दरजी हो भइया, केते दूर मोर ससुरार जी ।

तोरे ससुररिया बाबू जोड़वा से संचल, चुनवे चुनेटल दुआर जी ,
मेतिया-झालर बाबू तोर ससुररिया, चारू दनें गड़ल निसान जी । आदि-आदि

अर्थ

माली अपने घर में मौर गूँथ रहा है, वहीं अमुक दुलहा खड़ा है और पूछता है कि मेरी श्वसुराल कितनी दूर है ? माली कहता है कि तुम्हारी श्वसुराल में मौर का संग्रह (संचय) है, दरवाजा चूना से पुता हुआ है, मोती का झालर लगा हुआ है और चारो दिशा में झंडे गड़े हैं । इसी प्रकार दर्जी अपने घर पर जोड़ा-जमा सी रहा है, वहीं दुलहा उपरिवत् प्रश्न करता है ओर वही उत्तर यहाँ भी उसे मिलता है । अन्य वस्त्राभूषणों के नाम लेकर गीत की कड़ी आगे बढ़ती है ।

(२७)

बड़ी जतन से पोसली, अंजानो दुलहा अगे माई,
सेहो दुलहा चललन ससुरार-तो गोदिया सूना भेले ।

पनिया भरइते, कुँआ पनिहारिन,
एही बटिये देखलऽ अंजानो दुलहा-तो गोदिया सूना भेले ।

देखली में देखली, ओही ससुररिया, अगे माई,
लाली पलंगिया चढ़ी-बइठल साली से बात करे ।

सेरे-जोखी-सोनवा, पसेरी जोखी रूपवा अगे माई,
धानी मिलल अनोखा अनमोल ओही ससुर घरवा ।

नौ महीना बाबू कोखिया में पोसली,
कतहूँ न कयलऽ वड़ाई-तो गोदिया सूना भेले ।

दुई चार-दिनवा बाबू गेलऽ ससुररिया,
सासु के कयलऽ वड़ाई तो गोदी मोरा सूना भेले ।।

अर्थ

माँ कहती है कि अमुक दुलहे को बड़े सुरक्षापूर्वक पालन किया और वह भी दुलहा (बेटा) मेरी गोद शून्य कर श्वसुराल चला । माँ पनघट पर पनिहारिन से पूछती है कि इस मार्ग से अमुक दुलहे को जाते देखा है ? पनिहारिन कहती है कि देखा है, अवश्य देखा है माँ जी—वह लाल पलंग पर बैठा साली से बात कर रहा था । पुत्र भी माँ से कहता है कि श्वसुराल में सेर से तौलकर सोना, पसेरी से तौलकर चाँदी और विचित्र अमूल्य पत्नी मिली है—उस श्वसुराल में । माँ पुत्र को कहती है कि मैंने तुम्हें नौ महीने तक अपने गर्भ में धारण-पालन किया तो भी कभी बड़ाई नहीं की और दो-चार दिनों के लिए श्वसुराल गया तो सास की बड़ाई करने लगे ।

(२८)

अपने सजावट से चललन अंजानो दुलहा, दुसमन गिरले मुरझाइ' गे माई ।
अपने महलिया से बोलथिन अपन बावा मोरा पोता जा हई ससुरार गे माई ।।

अपने सजावट से चललन अनजानो दुलहा, दुसमन गिरले मुरझाई गे माई ।
अपने महलिया से बोलथिन अंजानो चाचा मोरा भतीजा जा हई ससुरार गे माई ।।

अर्थ

स्वयं सज-धाजकर जब अमुक दुलहा बारात के लिए चला तो शत्रु देखकर मूर्च्छित होने लगे । अपने महल से अपने पिता, बाबा, चाचा आदि कहते हैं कि मेरा पुत्र, पोता, भतीजा श्वसुराल जा रहा है जिसकी सजावट देखकर शत्रु मूर्च्छित होकर गिर रहे हैं ।

(२९)

पटना से एगो-मउरी मंगवली, मउरी लाले-लाल जी ,
पेन्हऽ नऽ अंजानो दुलहा, जयबऽ ससुरार जी ।

बनऽ नऽ अनजानो दुलहा, जयबऽ ससुरार जी ,
जयबऽ ससुरार दुलहा, होतवऽ बिआह जी ।

पटना से एगो जोड़ा मंगवली, जोड़ा लाले-लाल जी ,
पेन्हऽ नऽ अंजानो दुलहा, जयबऽ ससुरार जी ।

अर्थ

पटना से एक मौर मंगाया जो अत्यंत लाल है। अमुक दुलहे को मौर पहनकर श्वसुराल जाना है । उसे श्वसुराल जाने से पूर्व बन-ठनकर तैयार हो जाने के लिए कहा जाता है । दुलहा श्वसुराल जायगा, वहाँ उसका विवाह होगा । पटना से लाल-लाल जोड़ा मंगाया गया जिसे पहनकर दुलहा श्वसुराल जायगा जहाँ उसका विवाह होगा ।

(३०)

नदिया ऊ पार मत होवऽ दुलहवा, नदिया ऊ पार हई ससुरजी के डेरा ,
मउरिया देखाई दिल मोह लेतो तेरा सीसा मकान में लगइहें दुआरी ।
साली-सरहज दिल मोह लेतो तेरा , नदिया ऊ पार मत होवऽ दुलहवा ,
नदिया ऊ पार हई सरवाा के डेरा, जोड़ा देखाई मन मोह लेतो तेरा ।
सीसा मकान में लगइहें दुआरी, साली-सरहज दिल मोह लेतो तेरा ।।

अर्थ

हे दुलहा, नदी के पार मत जाना । तुम्हारे श्वसुर ने नदी पार अपना डेरा दे रखा है जो मौर को दिखाकर तुम्हारा मन मोह लेंगे । वहाँ शीश महल में दरवाजा लगा देंगे और साली सरहज मोहित कर लेंगी । पुन: दुलहे को नदी पार जाने से वर्जित किया जा रहा है । वहाँ साले का डेरा पड़ा है जो जोड़ा-जामा पहनाकर मन को मोहित कर लेगा और शीश महल में ले जाकर साली-सरहज मोहित कर लेंगी ।

(३१)

दुलहा कहे बाबा मौरी का फैसन नहीं ,
मउरी से हैट फैसनदार है हमारे लिए ।

फैसन से दुलहा परेशान है लाड़ो के लिए ,
दुलहा कहे चाचा जोड़ा का फैसन नहीं ।
जोड़ा से सूट फैसनदार है हमारे लिए ।। आदि-आदि

अर्थ

इस विवाह लोक-गीत में आधुनिकता का प्रभाव है । दुलहा अपने बाबा से कहता है कि अब मौर का प्रचलन नहीं है । अब तो मौर से अधिक फैशनदार हमारे लिए हैट हो गया है । दुलहा अपनी भावी पत्नी (लाड़ो) के लिए फैशनपरस्त बन गया है । पुनः दुलहा अपने चाचा से कहता है कि अब विवाह में जोड़ा-जामा का प्रचलन नहीं है । उसकी जगह सूट प्रचलित हो गया है। अतः हमारे लिए वही सब चाहिए ।

(३२)

मउरिया जी दिया बाबू पेन्हन को ,
लरीया दियो जी लगाई हो देखन को ।
देखा करो बाबू देखा करो ,
महले-महले सीतारा बजाया करो –
अपने लाड़ो को लेकर घुमाया करो ।

अर्थ

दुलहा को पहनने के लिए मौर दिया गया । उसमें लड़ी लटका दी गई । वह इन लड़ियों को देखता महल में घूम कर सितार बजा रहा है, अपनी नई पत्नी को साथ ले कर भ्रमण कर रहा है ।

(३३)

मौरिया किन-किन बाबा लायो ,
लरिया लगे ससुरार, दुलहा जा पढ़ने को ।
हथवा में लेलऽ दुलहा कलम दोअतिया ,
बगलतर लेलऽ किताब, दुलहा जा पढ़ने को ।
इहाँ नहीं कुछ काम, दुलहा जा पढ़ने को ।।

अर्थ

बाबा ने मौर खरीद कर लाया है, इसमें लड़ी लगने के लिए श्वसुराल भेज दिया गया । अत: अभी दुलहे को पढ़ने जाना चाहिए । हाथ में कलम-दावात लेकर तथा बगल में किताब जाँतकर दुलहा पढ़ने जाय । अभी उसे यहाँ कोई काम नहीं है, वह पढ़ने जाय ।

(३४)

साला-ससुर मउरिया भेजेजी, अजब लरिया लागे ,
नदिया किनारे नइया लागे जी, झिमिकी बूँदा बरसे ।

दुलहा हई कौलेजिया, नजरिया न लागे ,
साला-ससुर जोड़ा भेजे जी, अजब रंग लागे ।

नदिया किनारे नइया लागे जी, झिमिकी बूँदा बरसे ,
दुलहा हई कौलेजिया, नजरियो न लागे ।।

अर्थ

श्वसुराल से साला ने मौर भेजा है उसमें विचित्र तरह की लड़ी लगी है । नदी के किनारे पर नाव लगी है ओर रिमझिम वर्षा हो रही है। दुलहा कालेज में पढ़नेवाला है, कहीं इसे नजर न लग जाय ? साला ने श्वसुराल से जोड़ा-जामा भेजा है जो अदभुत रंग का है । नदी किनार पर नौका खड़ी है, रिमझिम वर्षा हो रही है, दुलहा कालेज का विद्यार्थी है, कहीं उसे नजर न लग जाय ?

(३५)

सुन्नर वर मउरिया सम्हारे धीरे-धीरे ,
माथे मउरिया सोभे, लरिया लहराय हो ।

सुन्नर वर मउरिया सम्हारे धीरे-धीरे ,
कान्हे चादर सोभे चादर लहराय हो ।

सुन्नर वर चदरिया सम्हारे धीरे-धीरे ,
काने सोहाय सोना मोतिया लहराय हो ।

सुन्नर वर मोतिया सम्हारे धीरे-धीरे,
देहे सोहाय जोड़ा, जामा लहराय हो।
सुन्नर वर जामा सम्हारे धीरे-धीरे ।।

अर्थ

सुन्दर वर अपने मौर को धीरे-धीरे सम्हाल रहा है। उसके माथे पर मौर शोभ रहा है और लड़ियाँ हवा में लहरा रही हैं । वर के कंधे पर चादर सुशोभित हो रही है, चादर को भी वह धीरे-धीरे सम्हाल रहा है । कान में स्वर्णाभूषण है जिसमें मोती लटक रहे हैं । सुन्दर वर मोती को धीरे-धीरे सम्हाल रहा है उसकी देह में जोड़ा-जामा शोभ रहा है । इसे भी सुन्दर वर धीर-धीरे सम्हाल रहा है ।

(३६)

पटना सहरवा मलिया बसतु हैं,
मलिअवा तेरे डाली क्या-क्या विकतु हैं ?

मोरे डाली में बाबू मौरी बिकतु हैं,
मलिअवा मउरी के मोल करी देहूँ।

मउरिया के मोल बाबू लाख रुपइया,
मलिअवा मोरे बाबा नौ लाख दीहें ।।

अर्थ

पटना शहर में माली रहता है । वर माली से पूछता है कि तुम्हारी डाली में कौन-कौन चीज बिकती है ? माली कहता है कि मेरी डाली में मौर बिकता है दुलहा माली से कीमत पूछता है तो वह उसकी कीमत लाख रुपया बताता है । इस पर वर कहता है कि लाख क्या मेरे बाबा नौ लाख देंगे ।

(३७)

सिर सोभे सिरमन के टोपी,
मउरिया ऊपर हीरा रतन जड़ी है।

मने गोल-गोल मोती के लरिया लगी है,
अंगिया सोभे रेसम के जोड़ा चदरा।
ऊपर हीरा रतन जड़ी है,
मने गोल-गोल मोती के लरिया लगी है।

अर्थ

वर के सिर पर जरीदार टोपी की तरह मौर सुशोभित है जो हीरा और रतन से जटित है। उसमें गोल-गोल मोतियों की लड़ी लटक रही है। वर के अंग पर रेशम का जोड़ा शोभ रहा है, चादर में हीरा और रत्न लगे हैं, इसकी किनारी पर गोल-गोल मोतियों की फूदनी लगा दी गई है।

(३८)

घर से बाहर भेलन अंजानो दुल्हा हे,
सब मउरिया मउलाई गयले हे।
अहरी-पहरी रोवऽ हई मलिनियाँ छउरी,
सब मउरिया मउलाई गयले हे।
चुप रहूँ-चुप रहूँ मलिनियाँ छउरी,
रामऽ सब मउरिया के दाम देबई हे॥

अर्थ

अमुक दुलहा घर से बाहर हुआ तो देखता है कि सब मौर मुरझा गया है। मालिन-पुत्री घड़ी-प्रहर से रो रही है कि मेरा सब मौर मुरझा गया है। दुलहा मालिन-पुत्री को चुप करा रहा है और कहता है कि मैं सभी मौर का दाम दे दूँगा।

(३९)

बँसवा काटीय-काटि मड़वा छवायो लाल,
ताही चढ़ी अनजानो दुलहा मउरियो न पेन्हे लाल।
अनजानो बहनोई बाबू मउरिया पेन्हावे लाल,
ताही चढ़ी अनजानो दुलहा जोड़वो न पेन्हे लाल।

अनजानो वहनोई बाबू जोड़वा पेन्हावें लाल ,
ताही चढ़ी अनजानो दुलहा मोंजा न पेन्हें लाल। आदि

अर्थ

बाँस काटकर मण्डपाच्छादन किया गया । उसी मड़वें में दुलहे को मौर पहनाया जा रहा है । यह आनुष्ठानिक क्रिया उसका वहनोई कर रहा है परंतु दुलहा मौर पहन नहीं रहा है । उसी मड़वें में वर को वहनोई द्वारा जोंड़ा तथा मोंजा पहनाया जा रहा है परंतु हठी दुलहा विवाह का पोशाक नहीं पहन रहा है ।

(४०)

दुलहा नादान रे रंग डाले न जाने ।

डाले न जाने खेलावे न जाने, अप्पन मौरी सम्हारें न जाने ।
सोई-लाड़ो जगावे न जाने, रूठी-लाड़ो मनावें न जाने ।

दुलहा नादान रे रंग डाले न जाने, खेलावे न जाने ।
अप्पन कुंडल सम्हारें न जाने, अप्पन जोड़ा सम्हारें न जाने ।

सोंई लाड़ो जगावें न जाने रूठी लाड़ो मनावें न जाने ।
अपन मोंजा सम्हारे न जाने, दुलहा नादान रे रंग डालें न जाने ।।

अर्थ

दुलहा बालक है, नासमझ है । वह रंग डालना नहीं जानता कि कब किसका रंग पोरना है । वह किसी को खेला नहीं (मजाक नहीं करता) सकता और अपने मौर को सम्हालना भी नहीं जानता । वह सोई पत्नी को जगाने या रुठी पत्नी को मनाने का ढंग भी नहीं जानता। दुलहा नासमझ है, अपने कान के कुंडल और जोड़े-जामे को सम्हालना भी नहीं जानता । वह पैरों का मोजा भी नहीं सम्हाल सकता है । वह बालक और निपट नादान है (बाल-विवाह का परिणाम) ।

(४१)

सिर सोभे सिरमन के टोपी, टोपिया में लाल लटकती है,
हाँ, गिर नहीं सकती, सजनि घर जाना है ।

आगे रेसम के जोड़ा, बंदवा में लाल लटकती है,
हाँ गिर नहीं सकती, सजनि घर जाना है ।

हाथ सोभे सोने के घड़ी, चैनवाँ में लाल लटकती है,
हाँ, गिर नहीं सकती, सजनि घर जाना है ।

पैर में सोभे कुरूम के जूता, फितवा में लाल लटकती है,
हाँ, गिर नहीं सकती, सजनि घर जाना है ।

अर्थ

दुलहे के सिर में जड़ीदार टोपी है, टोपी में लरी लटक रही है, यह लाल गूँथी लरी गिर नहीं सकती क्योंकि सज्जनी (भावी पत्नी) के घर जाना है । अंग में रेशमी जोड़ा है जिसके बंद में लरियाँ लटक रही हैं । उसे पहनकर दुल्हन के घर जाना है । हाथ में सोने की घड़ी है उसमें लाल का चेन लगा है । पैर में कुरूम का (पक्के चमड़े का चमकदार) जूता है और उसके फीते में भी लड़ियाँ लगी हैं । यह सब विवाह का पोशाक पहन कर दुलहा को दुल्हन के घर जाना है ।

(४२)

सीसे महल से आया मेरा लाल बना, मोती महल से आया मेरा लाल बना ।
सिर सोभे जड़ी वाला सेहरा कलगी ऊपर रंग लाया, मेरा लाल बना ।।

कान सोभे सूरुज के मोती, चुनरी ऊपर रंग लाया, मेरा लाल बना ।
बदन सोभे लाल कें जोड़ा, पटुकी ऊपर रंग लाय, मेरा लाल बना ।।

पाँव तेरा मखमल का जूता, मोजे ऊपर रंग लाया, मेरा लाल बना ।
जाँघ तेरे दरिआई घोड़ी, जामा ऊपर रंग लाया, मेरा लाल बना ।।

अर्थ

शीश महल से मेरा सुन्दर दुलहा आया है, वह मोती महल से आया है । उसके सिर पर जरीदार सेहरा सुशोभित है उस पर रंगीन कलगी लगी है । कान में सूर्य की तरह चमकते मोती के भूषण हैं, चुनरी भी रंगदार है । उसके शरीर पर लाल-लाल जोड़ा सुशोभित है, उस वस्त्र पर भी रंगीनी है । उसके पैर में मखमल के जूते हैं जिसके मोजे रंगीन हैं । दुलहे की जाँघ दरिआई घोड़ी की तरह है । उसका जामा भी रंगीन ही है । यह गीत मुस्लिम संस्कृति से प्रभावित है ।

(४३)

सोने चिरइयाँ सोने बोली बोले, अंजानो दुल्हा बोले ससुरार ।
कलसा के ओटे-ओर्ट सासु निरेखे रहूँ बाबू आजु के रात ।।

कइसे में रहूँ सासु आझु के रतिया, अम्मा मोरं जोहत होइहें बाट ।
जोहत होइहें बटिया, फाटत होइहें छतिया, दूनो आँख लोरवा झरत होइहें ।।

अर्थ

संबेरे सोन-चिड़िया सुन्दर बोली बोलने लगी तो विवाह करने गया श्वसुराल में दुलहा भी अपने घर लौटने के लिए कहने लगा । मंडप मे कलश की आड़ में सास देखती है और वर को आज की रात्रि रहने के लिए कहती है । वर जबाव देता है कि हे सास, आज की रात यहाँ कैसे रहूँ ? मेरी माँ राह देख रही होगी । राह देखते-देखते उसका हृदय विदीर्ण हो रहा होगा और दोनों आँखों से आँसू की धारा प्रवाहित हो रही होगी ।

(४४)

केई सजले बरियात रे बने-बने, केई लुटावे बंगला पान रे बने-बने ।
बाबा सजले बरियात रे बने-बने, दादी लुटावे बंगला पान रे बने-बने ।।

राम लखन दूनो भाई रे बने-बने, सीता-उरमिला दूनो बहिन रे बने-बने ।
मउरिया के लर टूटी जाय रे बने-बने, वहिनी-बहनोइया लूटी लेई रे बने-बने ।।

अर्थ

दुलहे की बारात जाने की तैयारी हो रही है । कोई बारात सजा रहा है और कोई बंगला-पान लुटा रहा है— दे रहा है । बाबा बारात सज रहे हैं और दादी बंगला पान बाँट रही है । राम लखन भाई की तरह वर हैं और सीता-उर्मिला की तरह बधू हैं । वर के मौर की लड़ी टूट-टूट जा रही है और बहन-बहनोई उसे चुन ले रहे हैं ।

(४५)

खाये-पीये दुलहा बेइलिया तर हे,
अँचवे चललन सीरीसिया तर हे ।

सोबे चललन मलहोरिया अंगना हे,
जार से बेजार रोवे मलहोरीन बेटिया हे।

सब मउरिया चोराइये लेलन हे,
चुप रहूँ-चुप रहूँ मलहोरीन बेटिया हे।

सब दमवाँ चुकाइय देबवऽ हे,
खाये-पीये दुलहा बेइलिया तरे हे।

अँचवे चलहन सीरीसिया तर हे,
सोवे चललन दरजिया अंगना हे।

जार से बेजार रोवे दरजिया बेटिया हे,
सब जोड़वा चोराइये लेलन हे।

चुप रहूँ-चुप रहूँ दरजिया बेटिया हे,
सब दमवाँ दिलाइये देबवऽ हे॥

अर्थ

बेलवृक्ष के नीचे दुलहा खाता-पीता है, सीरीष वृक्ष के नीचे आचमन करता है और माली के घर(आंगन) सोने जाता है। मालिन की बेटी जोर-जोर से रोती है कि दुलहे ने सभी मौर को चुरा लिया है। दुलहा मालिन-बेटी को मौर का सब दाम चुका देने का आश्वासन देता है। इसी प्रकार दुलहा बेलवृक्ष के नीचे खाकर सीरीष वृक्षतर आचमन करता है और दरजी के आंगन सोने जाता है। दरजी की बेटी जोर-जोर से रोती है कि मेरा सब जोड़ा-जामा दुलहे ने चुरा लिया। दुलहा दरजी की बेटी को चुप करता है और कहता है कि मैं जोड़ा-जामा क सब दाम दिला दूँगा।

(४६)

हथवा में लेले दुलहा कलम-दोअतिया हे, कोहबर लिखले बहुत।

ओही कोहबर सुतथी अनजानो दुलहा जवरों बहुआरो देई साथ।
मचिया बइठले सासुजी बढ़ैतिन, दुलहा पूछले गलबात।

येही कोहबरवा सासु केहि उड़ेहले केरे बिनले पटिहाट ?
ईहे कोहबरवा बाबू सरहज उड़ेहले, सरवा बिनले पटिहाट।

ओते चलूँ-ओते चलूँ सासुजी के धिअवा, तोरो पीठ गरमी वहुत,
एतना बचन ज़व सुनलन अंनजानो वेटी, खाट छोड़ी भूइयाँ-लोटे।

कने-गेले किया भेलऽ सरवा अनजानो सरवा रूसल वहिनियाँ के मनाव,
चुप रहूँ--चुप रहूँ बहिनी अनजानो वहिनी, दुनिया के यही बेवहार।

अर्थ

हे दुलहा, हाथ में कलम-दावान लेकर वहुत तरह से (विभिन्न चित्रों से चित्रित) कोहबर लिखा गया है। उसी कोहबर में दुलहन के साथ दुलहे को सोना है। मचिया पर बैठी माननीया सास से दुलहा मन की वात पूछ रहा है। हे सास, इस कोहबर को किसने उकेरा है और खाट को किसने बीना है। हे वर बाबू, इस कोहबर को तुम्हारे सरहज ने उकेरा है और खाट को साले ने वीना है।

कोहबर की खाट पर सोया हुआ दुलहा अपनी पत्नी से कहता है कि थोड़ी दूर हटकर सोओ, तुम्हारी पीठ से गर्मी लगती है। इस वात को सुनकर अमुक बेटी खाट से उतर कर जमीन पर सो जाती है। इसे देखकर दुलहा साले को खोजता है और रूठी बहन को मनाने कहता है। साला अपनी वहन को चुप कराता है और कहता है कि जगत की यही रीति है। पत्नी-पति में ऐसा ही व्यवहार होते रहता है।

(४७)

सभवा बइठल तुहूँ दादा हे, साजहूँ उठि के बरात,
मचिया बइठल तुहूँ दादी हे, साजहूँ उठि के दवार।

ससुरा से आयल बहिनियाँ हे, साजहूँ भइया केरी आँख,
हथवा मे लिहले महावर हे, नाइन रंग देहूँ गोड़।

अंगना में खाड़ परोसिन हे, निहछू बरवा अपान,
गंगा जल खाड़ गोतनी सब हे, परीछऽ बरवा अपान॥

अर्थ

सभा में बैठे दादा से बारात सजाने का अनुरोध किया जाता है। मचिया पर बैठी दादी से बारात के लिए दौरा सजाने के लिए कहा जाता है ससुराल से आई बहन से भाई की आँख सजने (काजल करने) को कहा जाता है। हाथ में रंग (महावर) लिए नाइन से दुलहे का पैर रंगने के लिए कहा जाता है। आंगन में खड़े टोला

पड़ोसन को दुलहा निहुछने (टुनहाई करने) के लिए अनुरोध किया जाता है और गंगाजल की तरह गोतिनी को वर परीक्षण के लिए कहा जाता है । तात्पर्य कि सभी को अपनी-अपनी आनुष्ठानिक क्रियाएँ करनी है तभी बारात जायगी ।

(४८)

हमरो अनजानो बाबू ठाढ़े विरीछतर थर थर काँपई गे माई ।

हथिया पिआसल आवे सूढ़वा ओलारई गे माई ।
घोड़वा भुखासल आवे लगमियाँ चिबावई गे माई ।

लोगवा घमायल आवे, गोड़वो न धोवई गे माई ।
दुलहा नदान आवे, हाथों न उठावई गे माई ।

हथिया के पोखरा देबो, सूढ़वा-सम्हारई गे माई ।
घोड़वा के दाना देबो, हरिअर दुबिया गे माई ।

लोगवन पटम्बर देबो, गोड़वा जे धोवे गे माई ।
दुलहा के लाड़ो देबो, हथवा उठावे गे माई ।।

अर्थ

हमारे अमुक वर बाबू वृक्ष के नीचे खड़े थर-थर काँप रहे हैं । बारात में हाथी प्यासा आया है जिससे वह अपना सूढ़ पसार रहा है । घोड़े भूखे आए हैं । अतः वे अपनी लगाम चबा रहे हैं । बारात के लोग धूप से गरमाए हुए आए हैं । वे भी क्रोध में पैर नहीं धो रहे हैं । दुलहा अभी अज्ञानी है । वह किसी को हाथ नहीं उठा (प्रणाम नहीं करता) रहा है । बधू पक्ष कहता है कि हाथी को पानी पीने के लिए तलाब दूँगा, वह सूढ़ सम्हालने लगा । घोड़े को दाना और हरी-हरी दूब दूँगा । बारात के लोग को रेशमी वस्त्र दूँगा, वे पैर धो लें । दुलहे को अपनी प्यारी पुत्री दूँगा । वह सभी को प्रणाम करे ।

(४९)

दर रे दलान कयले चललन अंजानो दुलहा, छेकले अंजानो अइसन गाँव ।

सारे रे सहरिया छेकले सिपहिया, गलियन घोड़वा दौड़ाय ।
रचियक घोड़वा बिलमइहँऽ हो अनजानो दुलहा, धिअवा के करबऽ सोहाग ।

धिअवा-समधी बाबा घर चली अयले, देहरी वइठल मनमार ।
किया बाबूजी हारलऽ गाय रे भइसिया, किया बाबूजी हारलऽ गेयान ।

नहीं बेटी हारली गाय रे भइसिया, नहीं बेटी हारली गेयान ।
जीरवा अइसन बेटी तोहरा के हारली, जइसने कमलवा केरा फूल ।

अर्थ

इस मगही लोकगीत में प्राचीन छात्र विवाह-पद्धति का उल्लेख मिलता है । अमुक दुलहे ने अपने लाव-लश्कर के साथ अमुक स्थान को घेर लिया । सारे शहर को फौज ने घेर लिया । गली-गली में दुलहे का घोड़ा दौड़ने लगा । भावी श्वसुर कहता है कि हे अज्ञात वर थोड़ा घोड़े को रोको, मैं अपनी पुत्री को सौभाग्यवती बना देना चाहता हूँ । इस प्रकार पिता ने पुत्री की शादी कर दी । घर आया तो पुत्री ने पिता को दरवाजे पर उदास बैठा देखकर पूछा कि पिताजी, क्या आप गाय-भैंस हार गए हैं या आपका ज्ञान हार गया है । पिता कहते हैं कि बेटी, मैं न तो गाय-भैंस हार गया हूँ न ज्ञान । मैं तो जीरा और कमल के फूल की तरह अपनी बेटी हार गया हूँ ।

(५०)

हाथी साजूँ-घोड़ा साजूँ साजूँ बरिअतिया, बरसऽहे बाबूजी रिमझिम बूँदवा ।
साजि देहूँ बाबू जी डड़िया-सवरिया, हमे जयबे व्याहन राजा के बेटिया ।

सुनि लेहू मामा के अपनी अरजिया, फूआ तोहार धैले खाड़ मड़उवा ।
कइसे में सुनियो मामा तोहारो अरजिया, व्याहन जाहियो राजा के बेटिया ।

अर्थ

वर कहता है कि रिमझिम वर्षा हो रही है । हाथी-घोड़े और पालकी के साथ बारात सजा दें, वह राज-पुत्री से व्याह करने जा रहा है । वर का मामा अपनी बात कहते हैं कि तुम्हारी फूआ मड़वा पकड़कर खड़ी है (अर्थात नेग चाहती है) वह कहता है कि मामाजी, आपकी बात कैसे सुनूँ ? मुझे राज-पुत्री से व्याह करने जाने में देरी हो रही है ।

(५१)

चनन विरीछ तर ठाढ़ अनजानो दुलहा, सिलया देले ओंगठाय ।
ऊपरे से कोइलर बोलले गरभ से, रचि बाबू धुपवा लेहूँ गँवाय ।

कइसे में धुपवा गँवइअई गे कोइलर, बीतले लगनियाँ के बेर ।
जइते-जइते बाबू पतरा-सोचइहँऽ, सोने-मौरी होइहें विआह ।

ओने से घुरवो कोइलर, चिर पहिनयवो, सोनवे मढ़इबो तोरा ठोर ।
मइया अलारी पूछे, बहिनी दुलारी पूछे, किया-किया पयलऽ ससुरार ।

सेर जोखी सोनवाँ,पसेरी जोखी रूपवा, बारहो बरध धेनु-गाय ।
धानी लवली डड़िया चढ़ाय ।।

अर्थ

बारात जाते समय दुलहा चन्दन वृक्ष के नीचे शिला से ओठंगकर (सहारा लेकर) खड़ा हुआ तो ऊपर से कोयल गर्भ युक्त (आदेश) बोली बोली कि धूप से थोड़ी राहत पा लो । वर कहता है कि हे कोयल, कैसे धूप गँवाऊँ, लग्न का समय बीत रहा है । कोयल कहती है कि जाते-जाते पंचाग से विचार करवा लेना, तुम्हारा विवाह सुवर्ण का मौर पहनाकर होगा । इस पर दुलहा कहता है कि उधर से लौटकर आऊँगा तो तुम्हें वस्त्र पहनाऊँगा और तुम्हारे चोंच को सोने से मढ़वा दूँगा। बारात से लौटने पर माँ और बहन बड़े लाड़-प्यार पूछती है कि श्वसुराल में तुम्हें क्या-क्या मिला । इस पर दुल्हा कहता है कि सेर से तौलकर सोना और पसेरी से तौलकर चाँदी मिली । बारह प्रकार के बैल और लगहर गाय मिली । पालकी पर चढ़ाकर पत्नी को ले आया । (यहाँ बारात जाते कोयल की बोली को शुभ माना गया है ।)

(५२)

मोटर लगी दुआरी, सीसे जड़ी केबाड़ी ,
मोटर के चढ़ने वाले जायेंगे ससुरारी ।

मलिया से जाके कहना, मउरी सजा के रखना ,
मउरी के पेन्हनेवाले जायेंगे ससुरारी ।

मोटर लगी दुआरी, सीसे से जड़ी कंवाड़ी .
मोटर के चढ़ने वाले जायेंगे ससुरारी ।
दरजी से जाके कहना जोड़ा सजा के रखना ,
जोड़ा के पेन्हने वाले जायेंगे ससुरारी ।।

अर्थ

दरवाजे पर मोटर खड़ी है उसमें सीसे का दरवाजा है। ससुरार जाने वाले मोटर पर चढ़ेंगें । माली से जाकर कहो कि मौर बना-सजाकर रखेगा, जो मौर पहनेगा वही श्वसुराल जायगा । दर्जी से जाकर कहो कि जोड़ा-जामा तैयार कर रखे, जोड़ा पहनकर ही तो दुलहा श्वसुराल जायेगा ।

(५३)

आज लाड़ो केरा अजवी बहार रे बाना, बाना, सुरती अजबी सोहाय रे बाना ।
बाना, अपनी नयनवाँ सम्हार रे वाना, बाना लगिजतउ नजरी के बान रे बाना ।।
बाना, दुलहा-दुलहिन जोग रे वाना, राहे बाटे जइहँऽ सम्हार रे वाना ।।

अर्थ

आज दुलहे के विचित्र शोभा बन गई है, उसका सौन्दर्य सुहाना है । माँ कहती है कि वह अपनी आँखों को बचा कर रखे अन्यथा कुदृष्टि लग जायगी । दुलहा-दुलहन सुयोग्या है, उन्हें राह में सम्हल कर चलना चाहिए ।

(५४)

वन्ना दादी पूछे विहँसि के बात रे बन्ना ।
बन्ना कइसन हथुन तोहर ददियासास रे बन्ना ।
बन्ना हमर ददियासास जइसन जोत रे बन्ना ।
बन्ना सोरह-रंग खयली ससुरार रे बन्ना ।
बन्ना इतना बड़इया जानि करऽ रे बन्ना ।
बन्ना करिया कुचकुच तोहर सास रे बन्ना ।
बन्ना तीनो-भात खैलऽ ससुरार रे बन्ना ।

अर्थ

उक्त दोनो गीतों पर मुस्लिम संस्कृत का प्रभाव है । उनमें भी विवाह के अवसर पर 'वन्ना' गाने की प्रथा है । दादी दुलहे से पूछती है कि तुम्हारी सास कैसी है ? तो दुल्हा कहता है कि मेरी सास ज्योति की तरह गोर है । वहाँ मेंने सोलह प्रकार के भोजन किए । इस पर वह कहती है कि इतनी बड़ाई मत करो । तुम्हारी सास अत्यंत काली-कलूटी है, वहाँ पर तुम्हें केवल सब्जी भात खिलाया गया है ।

(५५)

मौरी तोरा छोटा है जी, सम्हाल के चलो अलबेला दुलहवा ।
बाबा तेरे रूसे हैं जी, मना के चलो अलबेला दुलहवा ।।

जोड़ा तेरा छोटा है जी, सम्हाल के पेन्हो अलबेला दुलहवा ।
चाचा तेरे रूसे हैं जी, मना के चलो अलबेला दुलहवा ।।

अर्थ

बारात जाने के पूर्व घर के लोग दुलहे को सजग कर रहे हैं कि तुम्हारा मौर छोटा है, सम्हालकर चलना अन्यथ गिर जायगा । हे अलबेला दुलहा, तुम्हारे बाबा रूठे हुए हैं उन्हें मनाकर बारात जाना । तुम्हारा जोड़ा भी छोटा है उसे सम्हालकर पहनना और तुम्हारे चाचा भी रूठ गए हैं उन्हें मना कर जाना ।

(५६)

बन्ना मांगे दुलहवा बहार, सम्हार देहूँ सरहज ।
बन्ना मांगे दुलहवा ननद जी, ननद देहूँ सरहज ।
माथे में दुलहा के सेहरा नहीं है, बन्ना मांगे सेहरा हजार ।
हजार देहूँ सरहज, रुसजइहें बन्ना हमार ।
बन्ना दुल्हा मांगे मोती के हार, हार देहूँ सरहज ।।

अर्थ

उपर्युक्त दोनों गीतों पर मुस्लिम संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव है जिससे भाषा भी खड़ी बोली मिश्रित मगही हो गई है । दुलहा विवाह के वातावरण में बहार चाहता

है । अतः सरहज को वातावरण सुसज्जित कर देना चाहिए । दुलहा सरहज की ननद को मांगता है । सरहज को अपनी ननद दे देना चाहिए । वर के माथे पर सेल्हा (मौर की तरह टोपी) नहीं है वह हजारी से सेल्हा मांग रहा है । हे सरहज, वर को सब कुछ देना है, अन्यथा वह रूठ जायगा । वह मोती की हार मांगता है, सरहज को हार भी देना चाहिए ।

बेटी या वधू के वैवाहिक गीत

(१)

कहवाँ से आवे हाथी-घोड़ा, कहवाँ से आवे बरियात गे माई ।
कहवाँ से अवतन रामचन्दर, सवरे-बरन रघुवीर गे माई ।

अजोध्या से आवे हाथी-घोड़ा, आउ बरीयात गे माई ।
उहई से अवतन रामचन्दर, सवरे-बरन रघुबीर गे माई ।

अर्थ

कहाँ से हाथी-घोड़े आ रहे हैं और कहाँ से बारात आ रही है ? कहाँ से रामचन्द्र आ रहे हैं जिनका वर्ण श्यामला है। हे भाई, अयोध्या से हाथी-घोड़े और बारात आ रही है, वहीं से श्यामले वरण रघुवीर रामचन्द्र भी आ रहे हैं ।

(२)

गढ़वा के तरे-तर आ गयले, लोगवा डेरा गयले ,
डेरयलन अंजानो अइसन बाबूजी, तऽ गढ़ में लुका गेलन ।
गढ़वा ऊपर, दुलहा हँसथिन, आवऽ धानी हम्मर ,
गढ़वा के भीतर बाबूजी रोबथिन, अब धिअवा पाहुन ।
धीरजा बाँधू जी प्रभु धीरजा बाधूँ, अबही दुलारी धिअवा ,
जब ब्राह्मन दीहें जल-कुस तब धानी तोहार ।
गढ़वा के तरे-तरे आ गयले, लोगवा डेरा गयले ,
डेरयलन अंजानो अइसन चाचा, तऽ गढ़ में लुकागेलन ।
गढ़वा के ऊपर दुलहवा हँसथिन, आवऽ धानी हम्मर ,
गढ़वा के भीतर चाचा रोबथिन, अब धिअवा पाहुन ।
धीरजा बाँधू जी प्रभु धीरजा बाधूँ, अबही दुलारी धिअवा ,
जब दीहेंऽ मांगे-सेनूर तब धानी तोहार ।।

अर्थ

किला के नीचे (सुंरग से) से राजकुमार प्रवेश कर गया जिसे देखकर लोग भयभीत हो गए । पुत्री के पिता भी भयाक्रांत हो गए ओर गढ़ में छिप गए । परंतु किला के ऊपर दुलहा हँस रहा है और कहता है कि अब तुम हमारी पत्नी हो गई, हमारे साथ आओ । गढ़ के भीतर पुत्री के पिता रो रहे हैं कि अब मेरी पुत्री पाहुन(अतिथि) हो जायगी । पुत्री पिता को और भावी पति को भी धैर्य धारण करने कहती है कि जब ब्राह्मण जल-कुश से वैवाहिक अनुष्ठान कर देंगे तभी मैं तुम्हारी पत्नी हूँगी ।

इसी प्रकार गढ़ के ऊपर से दुलहा विहँसता हुआ भावी पत्नी को बुलाता है तो गढ़ के नीचे चाचा रो रहे हैं कि अव पुत्री अतिथि हो गई । राजकुमारी अपने भावी पति से कहती है कि अभी मैं प्यारी पुत्री हूँ जब आप हमारी मांग में सिन्दूर देंगे तभी आपकी पत्नी बनूँगी ।

(३)

पूरब-पछिम से एक जोगिया अयले हे, बेचे लगे सेंट के सिन्दूर ।
घर से बाहर भेलन अनजाने बेटी हे, हमे लेबो सेंट के सिन्दूर ॥

निरधन घरवा बेटी जलमिया लेलऽ हे, कहाँ पयब सेंट के सिन्दूर ।
ऊँच ही-घरवा बेटी बिअहवा करबो हे, उहईं लिहँऽ सेंट के सिन्दूर ॥

अर्थ

पूर्व दिशा से एक जोगी सेंटदार सिन्दुर बेचने आया । घर से निकलकर बेटी ने सिन्दुर खरीदना चाहा । पिता ने कहा कि निर्धन घर में जन्म लिया है । सेंटदार सिन्दुर कैसे खरीदेगी ? तुम्हें उच्च घर में विवाह कर दूँगा । वहीं सेंटदार सिन्दुर खरीद लेना ।

(४)

जघिया बैठले अंजानो बेटी, भइया निरीखे मुँह ,
चाँद अइसन मुँहवा गे बहिनी, काहे भइले मलीन ।

किया तोरा कहिवऽ जी भइया, किया दिवऽ गेयान ,
चुटकी सेनुरवाजी भइया, करबऽ बीरान ।

चुप रहूँ-चुप रहूँ वहिनी, मत होवऽ मलीन,
आधा सम्पतिया गे बहिनी, करवो कन्यादान।

केतनो सम्पतिया जी भइया, करवऽ कन्यादान,
अपनी वहिनिया जी भइया, हो जइहें वीरान।

अर्थ

विवाह में कन्यादान के समय अपने पिता की जाँघ पर वैठी वेटी उदास होकर अपने भाई का मुख देख रही है। भाई पूछ रहा है कि चाँद की तरह मुखवाली वहन क्यों उदास हो रही है। वहन कहती है कि हे भाई, मैं क्या कहूँ और क्या ज्ञान दूँ। हे भाई एक चुटकी सिन्दुर मात्र से मैं परायी हो जाऊँगी। भाई वहन को चुप कराता है और उदास नहीं होने के लिए कहता है। वह कहता है कि मैं अपनी सम्पति का आधा हिस्सा तुम्हें दान कर दूँगा। वहन कहती हैकि आप कितनी भी सम्पति क्यों न दान कर दें फिर भी अपनी वहन परायी हो जायेगी।

(५)

कउन बने हई धानी, घनी वगिया हे, कवन बने जफरवा फरवा हे ?
वावा बने हई प्रभु घनी बगिया हे, भइया बने हई जफरवा फरवा हे।

वावा वने तोड़िहँऽ प्रभु लबंगिया फरवा हे, भइया बने जफरवा फरवा हे।
एक झवदा मारलन दुलहा दूसर झवदा हे, चली अयलन अनजाने सरवा हे।

एक थप्पड़ मारलन सरवा दूसर थप्पड़ हे, लेई अयलन दरवजवा अपन हे।
हँसलन अंजानो बेटी थपड़िया पारलन हे, अप्पन भइया से पिटवाई देलन हे।

अर्थ

वर दुलहन से पूछता है कि किस वन में घना वाग है और किस वन में जाफर फलता है। दुलहन कहती है कि पिताजी के वन में घना बाग है और भाई के वन में जाफर फलता है। पिता के वन से लवंग तोड़ेंगे और भाई के वन से जाफर तोड़ेंगे। वर वाग में जाकर लकड़ी के टोने से फल पर मारता है। एक दो झबदा (पैना) मारने पर उसका साला चला आता है। वह बहनोई को एक दो थप्पड़ मार कर अपने दरवाजे पर लाता है। यहाँ उसकी बहन अपने पति को पिटा हुआ देखकर हँसती है और थपड़ी बजा देती है। इस पर वर कहता है कि तूने अपने भाई से ही मुझे पीटवा दिया।

(६)

ऊँची तोरा घरवाजी बाबा, नीची हई दुआर,
हाथी-घोड़ा अइहें पिआसल जी बाबा, मांगिहें पोखरा खनाय।

ऊँची मोरा घरवा गे बेटी, नीची हई दुआर,
हाथी-घोड़ा अइहें पिआसल गे बेटी, देबई में पोखरा खनाय।

ऊँची तोरा घरवा जी चाचा, नीची हई दुआर,
साजन अइहें भुखायल जी चाचा, मांगिहें भोजन बनाय।

ऊँची मोरा घरवा गे बेटी, नीची हई दुआर,
साजन अइहें भुखायल गे बेटी, देबई में भोजन बनाय।

अर्थ

बारात आने के पूर्व पुत्री पिता से कहती है कि आपका घर तो ऊँचा है परंतु दरवाजा नीचा है (अर्थात नाम बड़ा और सम्पति कम है)। बारात में हाथी-घोड़े प्यासे आवेंगे और खुदा हुआ तालाब चाहेंगे। इस पर पिता कहता है कि बेटी, मैं हाथी-घोड़े के लिए तालाब खुदवा दूँगा। पुनः पुत्री कहती है कि मेरे प्रिय भूखे आवेंगे और बना हुआ भोजन मांगेंगे। पिता कहता है कि मैं भोजन बना कर उन्हें दूँगा। (पुत्री की शंका और पिता का समाधान)

(७)

हाथे सिन्होरवा गे बेटी खोइछे दूभी पान,
चली भेलन दुलारी गे बेटी, दादा-दरवार।

सूतल हलन जी दादा, उठलन चेहाय,
कउने करनवे गे बेटी, अयलऽ दादा दरवार।

अरबो न मांगिअइ जी दादा, खरबो दूई चार,
खाली हम मांगिअइ जी दादा, दादी केरा सोहाग।

मचिया बैठल जी दादी, दहिनवे लटा झार,
लेहूँ दुलरइतो गे बेटी, अँचरा पसार।

अँचरा के जोगवा जे दादी, झरीये-झुरी जाय ,
मांगे सेनुरवा जे दादी, जनमें अहिवात।।

अर्थ

हाथ में सिन्दुरदानी और खोइछा में दूब और पान लेकर दुलारी बेटी दादा के दरबार में चली । वहाँ सोये हुए दादा अकचकाकर उठ गए और पूछने लगे कि हे बेटी, किस कारण दादा के घर आई हो ? बेटी कहती है कि हे दादा, मैं दो-चार अरब-खरब की सम्पति नहीं मांगती बल्कि दादी से सौभाग्य का आशीर्वाद मांगने आई हूँ । मचिया पर बैठी दादी ने अपने केश के गुच्छे को झार दिया और कहा कि अपने आंचल पसार कर ग्रहण करो । बेटी कहती है कि आँचल का जोग (टोटका या मंगल की कामना) झड़ जा सकता है । परंतु मांग का सिन्दुर आजन्म सौभाग्य सूचक रहेगा (अर्थात् सिन्दूर लगा दो)।

(८)

कहवाँ में दुभिया जलमी गेलईजी बाबा, कहवाँ में पसरले डार ।
बेलखरा में दुभिया जलम गेलई गे बेटी तवका में पसरल डार ।

घर से बाहर भेलन अंजानो बेटी, झर-झर नयना झझाय ।
घर से बाहर भेलन अंजानो बाबा, काहे बेटी नयना झझाय ?

हमरो सुरतिया बाबा तोरो न सुहाय, खोजलऽ करयिा दमाद ।
करिया-करिया मत कहूँ गे बेटी, कार हथिन सीरी राम ।

कार के छतिया जयमाला सोभे, मुखवा सोभे बीरा-पान ।।

अर्थ

बेटी पूछती है कि हे बाबा दूब कहाँ जन्म लेती है और उसकी टहनियाँ कहाँ फैलती हैं । बेलखरा में वह जनमती है और तवकला में फैलती है । घर से बेटी बिदा हुई तो उसकी आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। घर से निकलकर बाबा ने पूछा कि बेटी, नयन से आसूँ क्यों झर रहे हैं ? बेटी कहती है कि हमारा सौन्दर्य आपको अच्छा नहीं लगता क्योंकि आपने काला दामाद खोज लाया है । पिता कहते हैं कि हे बेटी काला-काला मत कहो, काले तो श्री राम भी हैं । उन्हीं काले राम के हृदय पर जयमाला सुशोभित हुई थी और मुख में पान का बीड़ा सज गया था ।

(९)

चनन कटिये -काटी चौकिया बनौली से मड़वा में देहली बीछाय गे माई ।
सेही चौकी बैठथी दुलहा अंजानो दुलहा, धुइयाँ गइले कुम्हिलाई गे माई ।

कने-गेले किया भेलऽ सुगई दुलरइतो सुगई मोरो मुख बेनिया डोलवऽ गे माई ।
कइसे में बेनिया डोलइवऽ जी प्राभु बैठल हथी बाबा हमार गे माई ।

एतना बचन जब सुनलन अनजानो दुलहा, घोड़ा-पीठ भेलन सवार गे माई ।
ई धिया से सुख करतन अंजानो बाबा, हम करबो दूसर बिआह गे माई ।

एतना बचन जब सुनलन अनजानो बेटी, पकड़ लेलन घोड़ा के लगाम गे माई ।
तोरा संग जी प्रभु बनबो जोगिनयाँ का-करिहे बाबा हमार गे माई ।

अर्थ

चंदन की लकड़ी काटकर चौकी बनाई गई । उसे मंडप में बीछा दिया गया। उसी चौकी पर अमुक दुलहा बैठ गया । वहाँ वह धुआँ से मलीन पड़ गया । वह पुकारने लगा कि मेरी दुलारी सुग्गी (शुकी) कहाँ गई, मेरे मुख पर पंखा झलो । दुलहन कहती है कि हे प्रभु कैसे पंखा झलूँ, यहाँ पर मेरे बाबा बैठे हैं । जब दुलहा ने इतनी बातें सुनी तो उसने घोड़े की पीठ पर सवार होकर कहा कि इस पुत्री से अमुक बाबा ही सुख भोगेंगे । मैं दूसरा विवाह करूँगा । इस बात को सुनकर कन्या ने घोड़े की लगाम पकड़ ली और कहा कि मै भी आपके साथ योगिन बनकर विचरण करूँगी, मेरे बाबा क्या करेंगें ?

(१०)

जोग बेसाहन चलले मोरी मामा,
ओही रे सीरिसिया के गाछ,
जोगवा हई नौ लाख।

अइसन जोगवा बेसहीहँऽ मोरी मामा,
दुलहा न छोड़े दुलहिनियाँ के साथ।

अर्थ

जोग बेसाहना एक प्रकार का टोना-टोटका है जो विवाह में अमंगल के नाश और मंगल की कामना से किया जाता है। यह एक विवाह पूर्व आनुष्ठानिक क्रिया है जो स्थान भेद से भिन्नता रखती है। कहीं वर या कन्या के सामने ढकनी की आग में राई-अजवाइन देकर धुआँ किया जाता है तो कही कुँए या वृक्ष के नीचे गोपनीय क्रिया की जाती है। इस अवसर पर गाये जाने वाले गीत जोग के नाम से जाने जाते हैं। जोग बेसाहने का माने खरीदना भी होता है। वर या कन्या की माँ तेली से तेल लेते, कुम्हार से कलशा लेते, माली से मौर लेते तथा दर्जी से जोड़ा-जामा लेते समय जोग सम्बंधी आनुष्ठानिक क्रियाएँ करती है और मंगल की कामना करती है।

प्रस्तुत गीत में कन्या कहती है कि मेरी दादी जोग बेसाहने सीरिष वृक्ष के नीचे गई। यहाँ जोग की कीमत नौ लाख है अर्थात् यह क्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः कन्या कहती है कि हे मेरी दादी, ऐसा जोग खरीदना कि दुलहा कभी दुलहन को नहीं त्याग सके।

(पहले पत्नी को त्याग देने की संभावना बहुत अधिक रहती थी।)

(११)

चलियों में जाहूँ बाबा पटना सहरवा,
बेसाहहूँ में लावऽ बाबा जोग केरा हो जड़िया।
पीसे में बइठली बेटी, जोग केरा हो जड़िया
पीये बइठल दुलहा अंजानो दुलहा,
पीयते जड़िया जी दुलहा घुरूमी गेलई हे अखिया

अर्थ

बाबा पटना शहर चले जायें और जोग की जड़ी खरीद कर ले आवें। उस जोग की जड़ी को कन्या पीसती है और उसे अमुक दुलहा पीता है। जोग की जड़ी पीने के बाद दुलहा की आँखें घूमने लगीं अर्थात् चक्कर देना लगा।

(१२)

आजु के रतिया बाबा जागी-सोइहँऽ हो ,
मड़वा पइसी बाबा चोरी होयतो जी।

चारो पहर बेटी लड़ी-अयली गे ,
भोरउआ पहर हार गेलिओ गे।

हारलूँ में हारलूँ अंजानो बेटी गे ,
जीती गेलन अंजानो दुलहा गे।

अर्थ

कन्या बाबा, से कहती है कि हे बाबा आज की रात्रि जागते रहेंगे क्योंकि मड़वा में घूसकर चोरी कर ली जायगी। बाबा बेटी से कहता है कि मैं चार प्रहर रात्रि तक दुलहा से लड़ता रहा परंतु सबेरा होते ही हार गया। हे बेटी मैं हार गया और अमुक दुलहा जीत गया।

(१३)

सीक के बड़हनियाँ गे बेटी, सिरहनवाँ लाई गे रखिहँऽ ,
भोरे अनुमुनाहे गे बेटी अंगनवाँ बहारी के लइहँऽ।

सेई बढ़नवा गे बेटी, कुर खेतवा जाई के बिगिहँऽ ,
से पर जनमतई गे बेटी कदम जुड़ी गे छहिंआँ।

ओही तर उतरइं गे बेटी सतभत्तरा जनमल दमदा ,
लंगटवा जलमल दमदा, धुनिअवाँ जलमल दमदा। आदि

अर्थ

यह एक तरह की गाली के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने वाला गीत है। दरवाजा लगने के पूर्व कन्या पक्ष की स्त्रियाँ गाती हैं। पिता बेटी से कहता है कि रात्रि में सोते समय घर बहारने के लिए बढ़नी खाट के सिरहाने रख लेना और सबेरे अंधकार रहते ही आंगन को बहार देना। बहारे हुए कूड़े-करकट (बाढ़न) को खेत में जाकर फेंक देना। उसी बाढ़न पर कदमवृक्ष जनमेगा। उसी वृक्ष की शीतल छाया में सात मर्द से जनमा दामाद उतरेगा। लंगट व्यक्ति से जनमा दामाद उतरेगा, धुनियाँ का जनमा दामाद उतरेगा। (अनेक लोगों का नाम लेकर गाली दी जाती है)।

(१४)

कोठा ऊपर मामा रोवे, कोठरिया भीतरे मामी गे माई ।
डड़िया धयले भइया रोवे, अब बहिनी बीरान गे माई ।

चुप रहूँ चुप रहूँ, भइया दुलहरऽतो गे माई ।
फिनो लेई अइहँऽ भइया बाबा के नगरिया गे माई ।

अर्थ

विवाहोपरांत बेटी की विदाई हो रही है । उसके मामा कोठा के ऊपर बैठकर रो रहे हैं और भीतर कोठरी में मामी रो रही है । पालकी पकड़ कर भाई रो रहे हैं कि अब बहन परायी हो गई है । बहन अपने दुलारे भाई को चुप करा रही है और कहती है कि पुनः मुझे बाबा की नगरी ले आवेंगे ।

(१५)

बेटा के बाप बुरकबवा गे माई ।
पढ़लो पंडित बेटा बेचलन गे माई ।

बेटी के बाबूजी मोसाफिर गे माई ।
कुर्सी बइठल जोग किनलन गे माई ।

अंगना बइठल दुलहा रोवथिन गे माई ।
बाबा समेते दादी बेचलन गे माई ।

चउका बइठल बेटी हँसलन गे माई ।
आज बाबा नोकर खरीदलन गे माई ॥

अर्थ

बेटा का पिता बेबकूफ है जिसने पढ़ा-पंडित बेटे को बेच दिया और बेटी के पिता जो मुसाफिर थे, खरीद लिया । कन्या के पिता ने घर पर कुर्सी पर बैठे-बैठे जोग खरीद लिया और दुलहे को खिला दिया । अब तो विवाह के समय आंगन में बैठा दुलहा रो रहा है कि बाबा के साथ ही दादी को भी बेच दिया गया । इधर चौके पर बैठी बेटी हँस रही है कि आज मेरे बाबा ने नौकर खरीद लाया है ।

(१६)

टीकवा के लोभे जी बाबा विअहवा कयलन नौरंग देसवाँ ।
के बहुरयतन जी बाबा, नइहरवा-बटिया-बाबा अंधारी रतिया ।

युग - युग जीयतो गे बेटी तोरो दुलरूआ भइया ।
ओही बहुरयतो गे बेटी नइहरवा देसवा ।।

अर्थ

बेटी बाबा को उल्हना देती है कि आपने (माँग टीका) आभूषण के लोभ में सुदूर नौरंग देश में मेरा विवाह कर दिया । वह आगे कहती है कि पुनः मेरे मायके मार्ग पर कौन आवेगा ? बाबा कहते हैं कि तुम्हारा भाई युग-युग जीवित रहेगा । वही तुम्हें अपने नैहर ले जायगा ।

(१७)

दूर रे गवन कयले चललन दुलरइतो दुलहा, बटिया चलइते भइले साम ।
कने गेलऽ किया भेलऽ सुगई दुलरइतो सुगई, करी देहूँ कोहबर-इंतजाम ।

एक तो प्राभु जी, हम राजा जी के बेटिया, दूसरे में हियो सुकुमार ।
हमरा से ना हो तो सेजिया-डसावन, सुन लेहूँ, बचन हमार ।

एतना बचन जब सुनलन अंजानो दुलहा, घोड़ा-पीठ भेलन असवार ।
हम जयबो धानी देस-विदेसवा, तु हूँ रहिहँऽ ससुरार ।

नइहरा में हथू धानी भाई रे भतिजवा, ससुरा में हथू छोटा देवर ।
विदा कर दिहें प्राभु भाई रे भतिजवा, जुदा कर दिहें छोटा देवर ।

बिना माय-बाप नइहर कइसन, बिना रे प्राभु ससुरार ।।

अर्थ

दुलारा दुलहा अपनी पत्नी को बिदा कराकर दूर देश अपने गाँव चला। राह चलते-चलते शाम हो गई तो दुलहा कहने लगा कि हे सुगी (पत्नी), मेरे लिए शय्या (कोहबर-प्रथम समागमार्थ) की व्यवस्था कर दो । इस पर पत्नी कहती है कि मैं राजपुत्री हूँ और सुकुमार हूँ । अतः मुझसे शय्या बिछाने का काम नहीं होगा — यह

हमारी बात सुन ली जाय । जब अमुक दुलहे ने यह वात सुन ली तो वह शीघ्र घोड़े की पीठ पर बैठ गया और कहा कि हे धनी, मैं विदेश चला जाऊँगा और तुम श्वसुराल में रहना, वहाँ छोटे देवर हैं और मायके में भाई-भतीजा हैं । पत्नी कहती है कि नैहर से भाई-भतीजा विदा कर देंगे और श्वसुराल में देवर अलग कर देंगे । कहा भी गया है कि बिना माँ-बाप का नैहर और बिना पति का श्वसुराल कैसा ?

(१८)

माई पटना के गलिया में बेली रे चमेलिया ,
से ही तर दुलरइतो दुलहा डँसी-देलन सेजिया ।

सुपली खेलन गेलन राजा जी के बेटिया ,
लपकी-झपकी छैला धैलन दाहिन बहियाँ ।

फूटी जतई संखा-चुड़िया, मुरूकी जतई बहियाँ ,
फूटे देहूँ संखा चूड़िया मुरके दाहिना बहिया ।

आज हई धानी सुहाग केरा रतिया ।।

अर्थ

पटना की गली में बेली-चमेली के गाछ हैं । उसी के नजदीक प्यारा दुलहे ने शय्या बीछा दी । राजा की बेटी सुपली-मौनी का खेल खेलने वहाँ गई तो छैला दुलहे ने लपककर उसकी दाहिनी बाँह पकड़ ली । दुलहन ने कहा कि मेरी शंख की चूड़ी फूट जायगी और बाँह मुरक जायगी । दुलहा कहता है कि शंख-चूड़ी फूटने दो, बाँह मुरकने दो । आज तो सुहाग रात है, यह सब तो होता ही है ।

(१९)

लाड़ा जोगे टीकवा दुलरइतो दुलहा लावे जी ,
अपन गरज लागि गोड़ परइत आवेजी ।
लाड़ो जोगे हरवा दुलरइतो दुलहा लावे जी ,
अपन गरज लागि गोड़ परइत आवे जी ।
लाड़ो जोगे झंझवा, दुलरइतो दुलहा लावे जी ,
अपन गरज लागि गोड़ परइत आवेजी ।

अर्थ

अपने स्वार्थ में दुलारा दुलहा पत्नी के लिए टीका, हार, झाँझ आदि आभूषण विनम्रतापूर्वक ला रहा है ।

(२०)

कहवाँ तुहूँ पयलऽ जी बाबा, चनन केरा चउकिया,
कहवाँ तुहूँ पयलऽजी बाबा पढ़लो दमाद ।
वन पइसी पइली गे बेटी चनन केरा चउकिया,
गढ़ पइसी पइली गे बेटी पढ़ल दमाद ।
कइसन हथिन जी बाबा, ससुर-भैंइसुरवा,
कइसन हथिन जी बाबूजी पढ़ल दमाद ।
चंदा अइसन हथी गे बेटी, तोहरो ससुरवा,
अछत अइसन हथी भैंइसुरवाँ ।
मीना के अइसन गे बेटी, तोहरो देवरवा,
नगीना के अइसन पढ़ल दमाद ।।

अर्थ

कन्या अपने बाबा से पूछती है कि आपने चंदन की चौकी कहाँ पाई और कहाँ पर पढ़ा-लिखा दामाद मिल गया । बाबा कहते हैं कि जंगल में प्रवेश कर चंदन की चौकी पाई और गढ़ (किला) में प्रवेश कर पढ़ा लिखा दामाद प्राप्त किया । कन्या पुनः पूछती है कि मेरे श्वसुर, भैंसुर और आपके दामाद कैसे हैं ? बाबा कहते हैं कि तुम्हारे श्वसुर चंदा की तरह हैं और भैंसुर अक्षत (स्वच्छ चावल) की तरह हैं । तुम्हारे देवर मीना की तरह हैं और मेरे दामाद नगीना की तरह हैं । (कन्या की जिज्ञासा और तुष्टि)

(२१)

कोठवा के ऊपर कोठरिया गे माई,
कोठवा चढ़ले बाबा, पंलग डसावे गे माई ।
सेई चढ़ी दुलरइतिन मामा बेनिया डोलावे गे माई,
बेनिया डोलइते मामा करऽ हई पुछार गे माई ।

किया-किया धिया दान देबऽ, किया-किया दहेज गे माई,
हाथी देबो,घोड़ा देवो, सोने के सिंहासन गे माई ।
अउरो देबो धेनु गइया–धिया देबो दान गे माई ।।

अर्थ

छत के ऊपर कोठरी है, कोठे के ऊपर चढ़कर बाबा ने पलंग वीछाया। उसी पर प्यारी दादी पंखा झल रही है । पंखा झलते वह पूछती है कि बेटी के विवाह में क्या-क्या दान-दहेज देंगे ? बाबा कहते हैं कि हाथी-घोड़ा दूँगा और सोने का सिंहासन दूँगा उस पर धेनुगाय की तरह सरल सुन्दरी पुत्री का दान दूँगा ।

(२२)

बाबा के बगीचा, बगीचा रे बगीचा ,
मोती गिरले गुलेहार रे हजरिया ।

घर से बाहर भेलन बेटी दुलरइतो ,
सब मोती लेलन बहार रे हजरिया ।

सब मोती गेले छितराय रे हजरिया ,
मोती गूँथले हारे-हार रे हजरिया ।

हँसी-हँसी बोलथिन बेटा के बाबा ,
अपन पुतोह ले ले जाऊँ रे हजरिया ।

रोई-रोई बोलथी बेटी के बाबा ,
घर से सम्पत डढ़िया जाय रे हजरिया ।।

अर्थ

बाबा का बगीचा तो बगीचा ही है । उसमें मोती की तरह हजारों फूल झड़ते रहते हैं । घर से दुलारी बेटी बाहर हुई और हजारो तरह के मोती-पुष्प को बुहार कर जमा कर लिया । फिर मोती बिखर गया तो बेटी ने एक-एककर मोती को हार में गूँथ लिया । यह सब देखकर दुलहा के बाबा ने कहा कि मैं अपनी पुत्रवधू को लेते जाऊँगा । बेटी के बाबा रोते हुए कहते हैं कि घर की सम्पति रूपी डाल चली जा रही है ।

(२३)

नदिया के पार डेरा डालूँ लाड़ो तेरे लिए ,
सहर-बजार डेरा डालूँ गोरी तेरे लिए ।

सड़क पर धूम मचाया गोरी तेरे लिए ,
पटना सहर दलमल किया लाड़ो तेरे लिए ।

दादा का नाम हँसाया, लाड़ो तेरे लिए ,
दादी को मोफिल में नचाया, गोरी तेरे लिए ।

अर्थ

बधू पक्ष द्वारा गाया जाने वाला इस गीत में वर पक्ष के अतिक्रमण का संकेत है तथा गाली को भी स्वागत शैली में आरोपित किया गया है । वर कहता है कि हे लाड़ली तुम्हारे लिए नदी के पार में डेरा डाला । तुम्हारे लिए शहर-बाजार में भी डेरा डाला । सड़क पर धूम मचाया और सारे पटना शहर को डगडगा दिया । इतना ही नहीं बल्कि मैंने तुम्हारे लिए दादा के नाम की हँसी कराई और दादी को महफिल में नचवा दिया ।

(२४)

तुमतो किसके साथ व्याहन आयो रे बना ?
तुम किसके ऊपर घरवा छोड़ा रे बना ?

मैं तो दादा के साथ व्याहन आया गे लाड़ो ,
मैं तो दादी ऊपर घरवा छोड़ा गे लाड़ो ।

तुम्हारी दादी कब के भली रे भली ,
ऊ तो खायेगी, खिलावेगी, लुटावे रे बना ।

तुमतो ताला भर चाभी क्यों न लाया रे बना ?

अर्थ

बधू पक्ष की स्त्रियाँ वर को उलहना दे रही हैं कि तुम किसके साथ व्याह करने यहाँ आये हो और अपने घर की जवाबदेही किस पर छोड़ दी है? दुलहा कहता है कि मैं बाबा के साथ व्याह करने आया हूँ और दादी के ऊपर घर छोड़कर आया हूँ । इस पर स्त्रियाँ कहती हैं कि तुम्हारी दादी कब से भली बन गई है ? वह तो स्वयं खायगी, दूसरों को खिलावेगी और शेष लुटा देगी । तुम्हें घर में ताला लगा कर चाभी अपने साथ लेते आना चाहिए था, क्यों नहीं लाया ?

(२५)

बाबा तोहार गेलथू गे बेटी, कामरू केरा हे देसवा ,
रिझौना केरा हे देसवा, महौना केरा हे देसवा ।

लेले पैलथू के बेटी, जोग केरा हे जड़िया ,
रिझौना केरा हे जड़िया, महौनियाँ केरा हे जड़िया ।।

अर्थ

यह बेटी के लिए जोग का गीत है जिसमें जड़ी-बूटी के माध्यम से आनुष्ठानिक क्रियाएँ की जाती हैं, उसी का नामोल्लेख है । हे बेटी, तुम्हारे बाबा कामरू-कामक्ष्या के देश गए, वह देश रिझाने, सम्मोहित करने का देश है, मोहित करने वाला देश है । वहीं से वे जोग की जड़ी लेकर आए हैं, रिझाने और सम्मोहित करने की जड़ी लेकर आए हैं, रिझाने और सम्मोहित करने की जड़ी ले आए हैं ।

(२६)

हमरो बाबूजी के चारू खंड अंगना, चारू ओर लगल केवाड़ हे ।
ओही खम्भा ओठंगल बेटी दुलारी बेटी, बाबू से विनती हमार हे ।

कहाँ तुहूँ बाबू पवलऽ गजदँत हथिया, कहाँ पवलऽ गजमोती हार हे ।
कहाँ तुहूँ पवलऽ डटहर पनवाँ, कहाँ पवलऽ राजकुमार हे ।

राजा घर पवली बेटी गजदँत हथिया, पंसारी घर गजमोती हार हे ।
तमोलिया ही पवली डँटहर पनवाँ, गढ़ पइसी राजकुमार हे ।

कइसे में चिन्हब बाबू गजदँत हथिया, कइसे में गजमोती हार हे ।
कइसे में चिन्हब बाबू डँटहर पनवा, कइसे में राजकुमार हे ।

खरह से चिन्हब गजदँत हथिया, चमक से गजमोती हार हे ।
डँटिया से चिन्हब डँटहर पनवा, पोथी हाथे राजकुमार हे ।।

अर्थ

पिताजी के कित्ता में चार आंगन हैं और चारो ओर कीवाड़ लगे हैं । कीवाड़ के चौखट में ओठंग कर दुलारी बेटी प्रार्थना करती है— हे पिताजी, आपने दाँतवाला हाथी कहाँ पाया और गजमुक्ता की हार कहाँ पायी ? कहाँ डंटीवाला पान और

राजकुमार मिला है ? पिता कहते हैं कि राजा के घर दाँतवाला हाथी, पंसारी के घर गजमुक्ता पाया । तम्मोली के घर डंटीवाला पान और गढ़ में राजकुमार मिला है। बेटी कहती है कि गजदंत हाथी और गजमुक्ता की पहचान कैसी होगी ? डंटीदार पान और राजकुमार कैसे पहचान में आवेंगे । पिता कहते हैं कि गजदंत हाथी बड़ा होगा, गजमुक्ता चमकदार होगा, पान में डंटी होगी और राजकुमार के हाथ में पुस्तक होगी । इस प्रकार सभी की पहचान हो जायगी ।

(२७)

बर खोजे जब चलले बाबा हे, हाथे धनुख मुहँ पान हे ।
उरूब खोजले पूरूब खोजले खोजले पटना-मनेर हे ।

खोजते-खोजते गेले अजोधेया, मिलि गेले राजकुमार हे ।
राजा दसरथ के चारी गो बेटवा, हमे घर सीता कुमार हे ।।

अर्थ

हाथ में धनुष और मुहँ में पान चबाकर बाबा वर खोजने निकले । दूर देश, पूर्व दिशा की ओर खोजने गए । नजदीक पटना-मनेर में भी खोजा । वर खोजते अयोध्या पहुँच गए वहाँ राजकुमार मिले । राजा दशरथ के यहाँ चार पुत्र हैं और हमारे घर में सीता बेटी कुमारी है ।

(२८)

बेरही-बेरी कोइलर तोहीं बरूजो हे ,
कोइलर आज मत बनवाँ चरन जाहूँ हे ।

रजवा अहेर करे आई जयतन हे ,
आवे देहूँ-आवे देहूँ अहेरिया रजवा हे ।

अहे सोने के पिंजड़वा पइसी-बइठब हे ,
अहेरिया रजवा मोरा का करतन हे ?

बेरही बेरी बेटी तोही बरजो हे ,
बेटी दुअरे खेलन मति जाहूँ हे ।

दुलरइतो दुलहा चलि अवतन हे,
अवतन तो आवे देहूँ दुलरइतो दुलहा हे।

अहे सोने के डड़िया चढ़ि बइठब हे,
दुलरइतो दुलहा का करतन हे?

एक कोस गेले डाड़ी दूई कोस हे,
अहे अम्मा रोवथिन छतिया-फाड़ि हे।

आज बेटी गोदिया सुन्ना भेल हे,
अहे चाची रोवथिन छतिया फाड़ि हे।
आज बेटी सेजिया सुन्ना भेल हे।। आदि

अर्थ

बार-बार कोयल को मना किया जा रहा है कि आज तुम वन में चरने मत जाओ कयोंकि राजा शिकार करने जायेंगे। कोयल कहती है कि शिकारी राजा को आने दो, मैं सोने के पिंजडे में प्रवेश कर बैठ जाऊँगी और शिकारी राजा मुझे कुछ नहीं करेंगे। माँ अपनी बेटी को बार-बार मना करती है कि तुम दरवाजे पर खेलने मत जाओ। दुलारा दुलहा चला आवेगा। बेटी कहती है कि उन्हें आने दीजिए, मैं सोने की पालकी पर चढ़ जाऊँगी, दुलारा दुलहा क्या करेगा? पालकी एक कोस गई, दो कोस गई तो माता छाती फाड़कर रो रही है कि आज तो बेटी के बिना मेरी गोद शून्य हो गई है। इसी प्रकार चाची आदि अन्य सम्बंधी छाती फाड़कर रो रहे हैं कि बेटी के बिना आज घर-द्वार शून्य हो गया।

(२९)

ऊँच तोहर लिलरा गे बेटी मनि-बरे-जोत,
दँतवा के जोत के बेटी तरेगना में चान।

एक तो हम जनली गे बेटी मयभा हो सास,
दोसरे हम जनली गे बेटी करिया दामाद।

खयबो में माहुर बिखवा पड़बों में फाँसी,
धिया लागि छोड़ी देबो सकल परिवार।

मत खाहूँ माहुर बिखवा लगाहूँ मत फाँस ,
हमरो लिखल गे अम्मा जयबो दूर देसवा ।

जाहि दिना अहे अम्मा हमरो जलमवाँ ,
झिटकी कटयले मोरा नार हे ।

अर्थ

सुन्दर बेटी के लिए काला दामाद खोजने पर माँ को बहुत चिन्ता होती है । वह कहती है कि बेटी तुम्हारा ललाट ऊँचा है और मणि की ज्योति की तरह चमक रहा है। दाँत की ज्योति तारेगण के बीच चाँद की तरह है । मुझे जानकरी मिली है कि तुम्हारी सास सौतेली है और दामाद भी काला मिला है । अत: मैं विष खा लूँगी या फाँसी लगा लूँगी और बेटी के लिए सब परिवार को छोड़ दूँगी । बेटी कहती है कि विष मत खाओ और फाँसी भी मत लगाओ । मेरे भाग्य में दूर देश जाना बदा है । जिस दिन मेरा जन्म हुआ था उस दिन मेरा नाल झिटका से काटा गया था अर्थात् उसी दिन से मेरा भाग्य अलग हो गया था ।

(३०)

बेटी, कहाँ केरा लोढ़िया जी दादा, कहाँ केरा सिलौटिया ,
पटना केरा लोढ़िया गे बेटी, साहबगंज के सिलौटिया ।

पिसन बैठली दुलरैती बेटी, पिराय गेलो हे बहियाँ ,
पियन बैठले दुलरैतो बाबू, घुरूमी गेलो हे अखिया ।

अर्थ

बेटी दादा से पूछती है कि लोढ़ा कहाँ का है और सिलौट कहाँ का है । पटना का लोढ़ा है और साहबगंज का सिलौट है। दुलारी बेटी जोग की जड़ी लोढ़ा-शील से पीसने बैठी तो उसका हाथ दुखने लगा और जब दुलारा दुलहा पीने बैठा तो उसकी आँखें घूमने लगीं ।

(३१)

जोगवा बेसहन चलले मोर भइया ओही रे बीरिछवा ,
पाछे-पाछे भउजी चलेले, ओही रे बीरिछवा ।

भउजी के हाथ में सोने के सिन्होंरवा, ओही रे वीरिछवा ,
भइया के हाथे तलवार, ओही रे वीरिछवा ।

घूरी-फिरि देखथिन बेटी दुलरइतो बेटी, ओही रे वीरिछवा ,
आखिन से ढारे दुनो लोर, ओही रे वीरिछवा ।

अर्थ

मेरे भाई जोग खरीदने उस वृक्ष के नजदीक गए । उनके पीछे भाभी के हाथ में सोने की सिन्दुरदानी थी और भाई के हाथ में तलवार थी । दुलारी बेटी घूमकर देख रही थी। उसकी आँखों से आँसू आ गए अर्थात् बेटी विदाई समय रोने लगी ।

(३२)

कहवाँ से जोग अयले कहाँ में जोग घुरमें गे माई ,
दुलरइता दुलहा ही से जोग अयले, सुगई ही घुरमें गे माई ।

दुलरइतो देई के जोग जाके लागे गे माई ।
काँपऽ हई देहिया, आँख घुरमें गे माई ।।

अर्थ

जोग की जड़ी कहाँ से आई है और कहाँ घूम रही है । प्यारा दुलहा के यहाँ से जोग आया है और सुगई (कन्या) के यहाँ घूम रही है । गायिका कहती है कि प्यारी दुलहन को जोग लग जाय । जोग लगने का लक्षण है-शरीर काँपना और आँख घूमना जो कन्या को हो रहा है ।

(३३)

जोगवा करन को निकले दुलरइतो बेटी ,
अपने दादाजी के देस जोगवा रे ।

बहुत बार भेटिये गेला, दुलहा-हरमियाँ ,
कहाँ चलल यही देसवा जोगवा रे ।

बहुत हमसे जबाब मत करूँ रे हरमियाँ ,
जोगवा करन को निकली दुलरइतों बेटी ।

अर्थ

दुलारी बेटी जोग करने निकली अपने दादा के देश में, जहाँ जोग रहता है वहाँ हरामी दुलहा मिल गया जो पूछ रहा है कि इधर कहाँ और किस लिए चली है ? बेटी डाँटती है कि हरामी, हमसे बहुत प्रश्नोत्तर मत करो, मैं दुलारी बेटी जोग करने निकली हूँ ।

(३४)

लेलऽ दुलरइतो भइया कन्हवाँ-कुदरिया,
परबत से जोग-जाड़ी लाहूँ हे भइया।

काटिए-कुटिए भइया बान्हलन मोटरिया,
लऽन दुलारी बहिनी जोग केरा जड़िया।

पिसिए-उसिए बहिनी रखलन कटोरिया,
पीअन दुलारो दुलहा जोग केरा जड़िया ।

हमे न पीबो सुगई जोग केरा जड़िया,
हमें भागि-जयबो बाबा केरा देसवा।।

अर्थ

कन्या भाई से कहती है कि हे भाई कंधे पर कुदाल ले कर पहाड़ पर चले जाओ और वहाँ से जोग की जड़ी ला दो । भाई वहाँ गया और काट कर जोग-जड़ी को बाँध लिया और घर आकर दुलारी बहन को दिया । बहन ने जड़ी को पीसकर कटोरे में रख दिया और प्यारे दुलहे को पीने के लिए कहा । दुलहा कहता है कि हे सुगई, मैं जोग की जड़ी नहीं पीऊँगा और बाबा के देश चला जाऊँगा ।

(३५)

कामरू-कामरू घोसहू ना,
अगे माय कामरू कैसन देस हकै ना।

कामरू के जोगिनिया ददिया सासु ना,
अगे माय पलंग बैठल जोग बेच है ना।

सहर के बेटवा छिन्नारी पुत्ता ना,
अगे माय पटुका पसार जोग ले है ना ।

अगे माय लपकी झपकी जोग ले है ना,
खम्हवा ओंठगल दुलरइतो बेटी ना ।

चुप रहूँ, चुप रहूँ दुलरइतो बेटी ना,
आगे माय कइसन हजारी पुत्ता के बैला ना ।

बैला नहाय खुट्टा बाँधबऽ ना,
अगे माय खेते-खेत हर जोतायब ना ।

मेड़वा बनाय खुट्टा बांधव ना । अगे माय....।

अर्थ

इस जोग गीत में बधू पक्ष के द्वारा वर को मांगलिक गाली देने की ध्वनि भी व्यंजित होती है। कामरू (कामरूप-स्थान का नाम) कामरू की आवाज हो रही है । गायिका कहती है कि कामरू कैसा देश है और वहाँ की क्या विशेषता है ? वहाँ योगिनियाँ रहती हैं । बेटी की ददिया सास भी कामरू की योगिन है । वह खाट पर बैठी-बैठी योग की जड़ी बेचा करती है । उस शहर का बेटा (वर) छिनाल माँ का पुत्र है । उसकी माँ अपना वस्त्र (आंचल) पसार कर योग को खरीदती है, योग को लपककर झपट लेती है । यहाँ दुलारी बेटी खम्भे का सहारा लेकर उदास बैठी है । परिजन एवं सहेलियाँ समझा रही हैं कि लड़का (वर) हजरिया (धनी) है । उसके बैल धोकर खुट्टे पर बँधे रहते हैं जिनसे खेतों को जोता जाता है और मेड़ को बाँधकर खुट्टे पर बैल को बाँध दिया जाता है। इस गीत में जोग (टोटका) गाली और कृषि-कर्म का अद्भुत संगम मिलता है । परंपरागत तांत्रिक विधान, विवाह में गाली और कृषि पर आधारित भारतीय अर्थ एवं समाज-व्यवस्था का सम्वेत चित्र का संकेत मिलता है ।

(३६)

जोगवा बेसाहन दादी चललन ओहे रे सीरिसिया के गाछ,
ई जोग मँइयाँ ला, जोगवा है महराज ।

जोगवा बेसाहन अम्मा चललन ओही रे सीरिसिया के गाछ,

अइसन जोग करूँ मेरी अम्मा, दुलहन छोड़े संग -साथ
ई जोग मइयाँ ला, जोगवा है महराज, ई जोग मँइयाँ ला, जोगवा है सिरताल।
जोगवा बेसाहन चललन भाभी, ओही रे सीरिसिया के गाछ,
अइसन जोगवा करूँ मेरी भाभी, दुलहन न छोड़े संग साथ।
जोगवा है महराज, ई जोग मँइयाँ ला, जोगवा है सिरताल।

अर्थ

दादी सीरिष वृक्ष के नीचे योग खरीदने चली। यह योग माँई (बेटी) के लिए है, महाराज की तरह शक्ति-सम्पन्न है। उसी वृक्ष के नीचे माँ भी योग खरीदने गई तो पुत्री ने कहा कि ऐसा योग की क्रिया करो कि दुलहा कभी भी दुलहन का साथ नहीं छोड़े। भाभी भी उस सिरताज योग को खरीदने गई तो बेटी उससे भी वही बात कहती है कि दुलहा कभी भी दुलहन का साथ नहीं छोड़ने वाला योग करना। योग शक्ति-सम्पन्न और सिरमौर है।

(३७)

हमारे जो है दादी प्राभु, ओभी नैना-जोगिन है, जोग-टोना किछुओ न जाने,
चानी दूब जलमाती है, तरहथी ऊपर दही जमाती, सुखले नदिया नाव चलाती,
कासी मोर नचाती है।

हमारी जो है अम्मा प्राभु ओभी नैना जोगिन है, जोग-टोना किछुओ न जाने,
चानी दूब जलमाती है, तरहथी ऊपर.......सुखले नदिया....... मोर नचाती है,
हमारी जो है फूआ प्राभु ओभी नैना जोगिन है, जोग टोना किछुयो न जाने।

अर्थ

यह योगिन लोकगीत है। वधू वर से कहती है कि हमारी दादी नैना योगिन है परंतु वह योग-टोना कुछ नहीं जानती फिर भी वह चाँदी की दूब बना देती है, तलहत्थी के ऊपर दही जमा लेती है। सूखी हुई नदी में नाव चलाती हैं और काँस-कुश में मोर (पंछी) नचाती है। उसी प्रकार वधू अपनी माँ, अपनी फूआ के बारे में भी कहती है, वे सब भी नैना-योगिन हैं और असम्भव को सम्भव कर देती है, यद्यपि कि योग-टोना नहीं जानती।

(३८)

बुलाऊँगी उजे दादी दुलरड़तीन देई, जोगभला गुन गाओ जी ,
मंगाऊँगी चकमक के माटी आउ गुजराती पानी जी ।

पइयाँ परत वर आवय जी, हाथ जोड़इत लचकत आवय जी ,
बुलाऊँगी उजे अम्मा दुलरइतीन देई, जोग भला गुन गाओ जी ,

मंगाऊँगी चकमक के माटी आउ गुजराती पानी जी ,
पइयाँ परत वर आवय जी, हाथ जोड़इत-लचकत आवय जी ।।

अर्थ

दुलारी दादी को बुलाऊँगी जो भले के लिए योग का गीत गावेगी । आनुष्ठानिक क्रिया के लिए, चकमक (चौमुखी दीप) दीपक बनाने के लिए मिट्टी मंगाऊँगी और गुजरात से पानी मंगाऊँगी । परिणामस्वरूप वर पैर पड़ते आवेगा, हाथ जोड़े लचकते हुए आवेगा । इसी तथ्य को विभिन्न रिश्तेदारों (माँ, फूआ, चाची आदि) के नाम लेकर गीत को दुहराया जाता है और अनुष्ठान होते रहता है ।

(३९)

जोग मांगे चललन बेटी, बाबू दरवार, अम्मा के भंडार, दऽ अम्मा अपनी सोहाग ।
देबवऽ बेटी, देबवऽ बेटी अपनी सोहाग बजना-बजाय, सजना हंकार ।
लेह नऽ अंजानो बेटी अचरा पसार ।।

अँचरा के जोगवा झरीय-झुरी जाय मंगिया के सेनुरा जनमो रहि जाय ।
जोग मांगे चललन बेटी चचा दरवार, चाची के भंडार, दऽ चाची अपनी सोहाग ।।

देबवऽ बेटी, देबवऽ बेटी अपनी सोहाग, बजना बजाय, सजना हंकार ,
लेह नऽ अंजानो बेटी अचरा पसार ।।

अँचरा के जोगवा झरीय-झुरी जाय, मंगिया के सेनुरा जनमो रहिजाय ।

अर्थ

बेटी पिता के दरवार योग मांगने गई, अम्मा के भण्डार से अपना सौभाग्य मांगने गई । माँ अपना सोहाग देने के लिए कहती है कि बाजे-गाजे के साथ, संज्जनो के सम्मुख दूँगी । बेटी आंचल पसार कर ग्रहण करो ।

बेटी कहती है कि आंचल का योग तो झड़कर समाप्त हो जायगा लेकिन मांग का सिन्दुर आजन्म का स्नेह-सूचक है । इसी प्रकार बेटी चाचा के दरबार में चाची से योग मांगने गई और वहाँ भी योग के बदले सुहाग सिन्दुर मांगती है ।

(४०)

जब रे बन्ना दुआरे बीच आये,
दुअरा सुना अंधियार, अम्मा मैं तो डर गयी ।
काले से किया मोरो सादी अम्मा मैं तो डर गयी ,
जब रे बन्ना मड़वा बीचे आये,
मड़वा में देखा उजियारा, अम्मा मैं तो हँस गयी ,
गोरा से हुआ मेरो सादी, अम्मा मैं तो हँस गयी ।

अर्थ

इस मुस्लिम-संस्कृति प्रभावित गीत में दरवाजे पर बारात आने पर दुलहन को ज्ञात हुआ कि उसका दुलहा काला है जिससे दरवाजे पर अंधकार छा गया । वह माँ से कहती है उसे डर हो गया कि मेरा विवाह काले से हो रहा है परंतु जब बन्ना (दुलहा) मड़वे में आया तो प्रकाश फैल गया और मैं देखकर हँस गई कि मेरा विवाह गोरा दुलहा से हो रहा है ।

(४१)

कौने फूल उज्जर माई हे ,
कौने फूल लाल, कौने फूल जगदम्मा-गलेहार, उलटल जोग माई हे ।
धिया के सोहागन बेली-फूल उज्जर माई हे ,
चमेली फूल लाल, उड़हुल फूल जगदम्मा गलेहार, माई हे ।।

अर्थ

यह भी एक योग गीत है । उसका सम्बध जगदम्बा दुर्गा से है जो तांत्रिक साधना की इष्ट है, उन्हें लाल रंग प्रिय है । अत: उड़हुल (जपापुष्प) उनके गले की हार रहती है । गायिका कहती है कि कौन फूल उजला है और कौन लाल है जो जगदम्बा के गले की हार है । हे माँ, योग क्यों उलटा हो गया ? बेटी के सौभाग्य सूचक बेली का फूल उजला है, चमेली का फूल लाल है और जगदम्बा के गले की हार में उड़हुल का फूल है ।

(४२)

बाँधल बछेड़वा दुभियो न खाय हे,
खुटवा छोड़के चरहूँ न जाय हे।

हमरा दुलरैतो बाबू दूधो-भात न खाय हे,
दुलरैतो बेटी के छोड़के कौलेजियो न जाय हे।

अर्थ

नई-नवेली दुलहन में दुलहा इतना आसक्त है कि उसने खाना-पीना भी छोड़ दिया है। दूध-भात नहीं खाता न मेरी दुलारी बेटी को छोड़कर कालेज ही जाता है जिस प्रकार खुट्टे से बँधा बछेड़ा (घोड़ी का बच्चा) दूब नहीं खाता न खुट्टे को छोड़कर चरने ही जाता है, वही स्थिति दुलहे की हो गई है।

(४३)

सीकिया चिरइते दुलहा मोही लेलन हे, चलऽधनिया हम्मर देसवा हे।
कइसे में चलूँ प्राभू तोहर देसवा हे, सइया बिनु हम रहब कइसे ?
मचिया बइठल देखिहँऽ हमर मइया हे, अपन मइया विसराई देहूँ हे।

अर्थ

सीक चिरते दुलहन को दुलहे ने मोहित कर लिया और कहा कि धनी, अब हमारे देश में चलो। दुलहन कहती है कि मैं माँ के बिना वहाँ कैसे रहूँगी तो दुलहा कहता है कि अपने माँ को त्याग दो और मचिया पर बैठी मेरी माँ को देखना।

(४४)

बनवा पैसीय-पैसीय बसबा कटायब मानिक खम्भ गड़ायब हे,
से हो खम्भा ओठगथी बेटी दुलरैती बेटी मन ही मन पछताय हे।

केकर घर सखी बाजन बाजे केकर होवे विआह हे,
तोहर घर सखी बाजन बाजे तोहरे के होवऽ हई विआह हे।

काहे बिनु सखी चउरा न सींझे, काहे बिनु होमओ न होवे हे ?
काहे बिनु सखी जग अंधियरा, काहे बिनु धरमो न होवे हे ?

दूध बिना सखी चउरो न सींझे, घिया बिनु होमओ न होवे हे।
एक पुत्र बिनु जग अंधियारा, धिया बिनु धरमो न होवे हे।।

अर्थ

वन में प्रवेश कर बाँस काटा गया, मणिजड़ित खम्भ गाड़ा गया। उसी खम्भे का सहारा लेकर दुलारी बेटी खड़ी होकर मन में पश्चाताप कर रही है और सखी से पूछ रही है कि किसके घर बाजे-गाजे बज रहे हैं? किसका विवाह हो रहा है? किस चीज के बिना चावल नहीं सीझ रहा है? किसके बिना होम नहीं होता? हे सखी, किसके बिना संसार अंधकारमय दीखता है और किसके बिना धर्म नहीं होता। हे सखी, दूध के बिना चावल नहीं सीझता, घी के बिना होम नहीं होता। एक पुत्र के बिना संसार अंधकारमय दीखता है और पुत्री के बिना धर्म नहीं होता (कन्यादान)।

(४५)

इमली के गाछतर बाबूजी मोरा रोथीन लाल,
काहे ला अंजानो बेटी लिहले जलम लाल।
थाली देली, लोटा देली बहुत तिलक लाल,
धिअवा समेत देली तइयो रूसै दमाद लाल।
इमली के गाछतर चाचा मोरा रोथीन लाल,
काहे ला अंजानो बेटी लिहले जलम लाल। आदि

अर्थ

इमली वृक्ष के नीचे पिताजी विलाप कर रहे हैं कि बेटी ने क्यों जन्म लिया। उसके विवाह में थाली-लोटा सहित काफी दान-दहेज दिया, सुन्दरी पुत्री दी तौ भी दामाद रूठ गया। इसी प्रकार चाचा भी चिंतित हैं कि सब कुछ देने पर भी दामाद रूठ गया है।

(४६)

नदिया किनारे बाबा किसका बाजन बाजेगा?
आवेगा कहाँ के लोग गढ़ लूटी लेवेगा।
नदिया किनारे बेटी तुमका बाजन बाजेगा,
आवेगा अनजानो लोग गढ़ लूटी लेवेगा।।

अर्थ

हे बाबा, नदी-किनारे किसका बाजा बजेगा और कहाँ के लोग आकर गढ़ को लूट लेगा ? हे बेटी, नदी-किनारे तुम्हारा बाजा बजेगा और अज्ञात लोग आकर गढ़ (बेटी) लूट ले जायेंगे ।

(४७)

बाबा कउनी नगरिया जुगवा खेले चललन न ,
बाबा केकरा अइसन धिअवा हार गेलन न ।

बेटी, अनजानो नगरिया जुगवा खेले अयली न ,
बेटी, तोहरा अइसन बेटी हार अइली न ।

बाबा नैना जे बहले पवन ऐसन न ,
हिरदा जे फारले खीरा अइसन न ।

अर्थ

बेटी बाबा से पूछती है कि आप किस नगर में जुआ खेलने गए और कैसी पुत्री को हार गए । बाबा कहते हैं कि अमुक नगर में मैं जुआ खेलने गया और तुम्हारी जैसी पुत्री हार गया । हे बाबा, मेरी आँख पवन की तरह बह रही है-अर्थात् अविरल अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है और खीरे के फाँक की तरह हृदय विदीर्ण हो रहा है। यहाँ 'पवन की तरह अश्रुप्रवाह' नया और अछूता उपमान है, लोक मेधा की अनुभूत ऊपज ।

(४८)

कहवाँ से आवत हाथी मदोदर, कहवाँ से लोग बरियात गे माई ।
कहवाँ से आवत लाड़ला सीरी रामचन्दर, बीचे घड़ी घंट बजाय गे माई ।
मड़वे सीता देई बेअकुल गे माई ।।

पुरूब से आवत हाथी मदोदर, पछिम से लोग बरियात गे माई ।
अजोध्या से आवत लाड़ला सीरी रामचन्दर, बीचे घड़ी-घंट बजाय गे माई ।
कहवाँ ही उतरत हाथी मदोदर, कहवाँ ही लोग बरियात गे माई ।
कहवाँ ही उतरत लाड़ला सीरी रामचन्दर, बीचे घड़ी-घंट बजाय गे माई ।
मड़वे सीता देई बेआकुल गे माई ।।

कुरूखेत ही उतारब हाथी मदोदर, दुआर ही लोग बरियात गे माई ।
मड़वा ही उतरत लाड़ला सीरी रामचन्दर, बीचे घड़ी-घंट बजाय गे माई ।
किया-किया खायत हाथी मदोदर, किया-किया लोग बरियात गे माई ।
किया-किया खायत लाड़ला सीरी रामचन्दर, बीचे घड़ी-घंट बजाय गे माई ।
मड़वे सीता देई बेआकुल गे माई ।।

तिल-पोरा खायत हाथो मदोदर, दाल-भात लोग बरियात गे माई ।
अउटल खोआ खायत लाड़ला सीरी रामचन्दर, बीचे घड़ी-घंट बजाय गे माई ।
किया देई समधब हाथी मदोदर, किया देई लोग बरियात गे माई ।
दाना देई समधब हाथी मदोदर दहेज देई लोग बरियात गे माई ।
धिया देई समधब लाड़ला सीरी रामचन्दर, बीचे घड़ी-घंट बजाय गे माई ।
मड़वे सीता देई बेआकुल गे माई ।।

अर्थ

कहाँ से मदयुक्त हाथी आवेगा और कहाँ से बारात के लोग आवेंगे ? कहाँ से प्यारे श्री रामचन्द्र आवेंगे ? बीच रास्ते में घड़ी-घंट बजता रहेगा । यहाँ मण्डप में सीता देवी विलाप कर रही है। पूर्व से मदयुक्त हाथी आ रहा है और पच्छिम से बारात के लोग आ रहे हैं । अयोध्या से लाड़ले श्री रामचन्द्र आ रहे हैं । हाथी कहाँ ठहरेगा, बारात कहाँ ठहरेगी और श्री रामचन्द्र कहाँ ठहरेगे । कुरूक्षेत्र में हाथी ठहरेगा, दरवाजे पर बारात ठहरेगी और मड़वा में श्री रामचन्द्र ठहरेंगे । हाथी क्या खायगा, बारात के लोग क्या खायेंगे और श्री रामचन्द्र क्या खायेंगे ? घंटा बजता रहेगा । सीता देवी मड़वा में व्याकुल हो रही है । हाथी पुआल और तिल खायगा, बारात के लोग दाल-भात खायेंगे । गर्म खोआ श्री रामचन्द्र खायेंगे, घंटा बजता रहेगा। क्या देकर हाथी और क्या देकर बारात को बिदा किया जायेगा ? दाना देकर हाथी को, दहेज देकर बारात को और पुत्री देकर प्यारे श्री रामचन्द्र को विदा किया जायगा-घड़ी-घंट बजता रहेगा और मड़वे में सीताजी रो रही है ।

(४९)

मिथिला नगर सीता झारू बहारई, धनुस उठाके धरली धरती में ,
धनुस नहीं टूटल ।
सीता रह गेली कुँआर, कहथी पिताजी अपन सीताजी से ,

कवन हाथे धनुसा, कवन हाथे चउका-धनुस नहीं टूटल ।
कहथी सीताजी अपन पिताजी से- बाबे हाथ धनुसा, दहिने हाथ चउका ,
धनुस नही टूटल ।

देस-विदेस जनक नेवता पढ़यलन, छोटे से बड़े सब चल अयलन ,
धनुस नही टूटल ।

छोटे-बड़े भूप हारी-बैठल, कोई न जनक प्रताप धनुस नही टूटल ,
अजोध्या से गुरू विसवामित्र संगे में ही रामलखन दोउ भाई ,
धनुस नही टूटल ।

कहथी विसवामित्र सुनूँ राजा रामचन्द्र, उठी हर जनक प्रताप ,
धनुस नही टूटल ।

उठि-उठि राम चन्द्र गुरू, पैर लागल, धनुस उठाय कयले तीन खण्ड ,
धनुस अब टूटल ।

सीता भेगेले विआह, जनक गृह बाजन बजाय झझकाल, जनकघर होवे झंझकाल ।
गावे समुंद्र-फल-पावे, बिना पूछलै बैकुंठ चली जाय , धनुस अब टूटल ।
सीता जी के भे गेले विआह-धनुस जब टूटल ।।

अर्थ

इस लोकगीत में सीता-स्वयंवर एवं धनुष की पृष्ठभूमि में रामविवाह का वर्णन आया है । मिथिला नगर के अपने घर में झाडू-बुहारू करते समय सीता धनुष को उठाकर यथा स्थान रखा करती थी अर्थात् धनुष को खेल की तरह व्यवहार करती थी । वही धनुष को आज कोई उठा नहीं रहा है । अत: पिता जनकजी सीता जी से कहते हैं कि तुम किस हाथ से धनुष और किस हाथ से चौका वर्त्तन करती थी । सीता जी अपने पिताजी से कहती है कि वह बावें हाथ से धनुष और दाहिने हाथ से चौका-वर्त्तन करती थी । उसी धनुष को तोड़ने देश-विदेश के आमंत्रित राजे आए हैं । सभी छोटे-बड़े भूप हार कर बैठ गए । किसी ने जनक जी के प्रताप को खण्डित नहीं किया । अयोध्या से गुरु विश्वामित्र के साथ राम और लखन नाम के दो भाई आए हैं । विश्वामित्र ने रामचन्द्र से कहा कि राजा जनक का प्रताप हरण करो । राम ने खड़े होकर गुरु का चरण स्पर्श किया और धनुष को उठाकर तीन खण्डों में तोड़ दिया । इस प्रसंग को जो गाता है वह समुद्र-मंथन का फल पाता है और बिना प्रयास के वैकुण्ठधाम चला जाता है । राम के द्वारा धनुष के टूट जाने पर सीता का विवाह सम्पन्न हो गया ।

(५०)

काहे लागि सीताजी माघ नेहयली, काहे लागि कातिकमास गे माई ?
वर लागि सीताजी माघ नहयहली, धिया लागि कातिकमास गे माई ।

तोहरा के जोग बर सीता नहीं मिलली, सीता रहजइहें कुँआर गे माई ।
जाहूँ जी पिताजी अजोध्या नगरिया, जहाँ बसथी राजा दसरथ गे माई ।

उनको के पिताजी चार ललनवाँ, सांवरे वरन सीरी राम गे माई ।
उनको के पिताजी सगुन चुमइहँऽ, उनके से करिहँऽ विआह गे माई ।।

अर्थ

हे सीता, माघ-स्नान किसलिए किया और कार्तिक-स्नान क्यों किया ? वर के लिए सीता ने माघ-स्नान किया और पुत्र के लिए कार्तिक-स्नान । पिता कहते हैं कि तुम्हारे योग्य वर कहीं नहीं मिला, लगता है सीता क्वाँरी रह जायगी । सीता कहती है कि पिताजी, आप अयोध्या नगरी चले जायें जहाँ राजा, दशरथ रहते हैं, उनके चार पुत्र हैं जिनमें राम साँवले हैं । हे पिताजी, उन्हें ही लग्न चुमावेंगे, उन्हीं से विवाह निश्चित करेंगे ।

(५१)

धीरे-धीरे डालूँ जय माल, हे सुकुमारी सिया ।

गाई के गोबर अंगना लिपायब, गजमोती चउका पुरायब - हे सुकुमारी सिया ,
सोने कलस लाये पुरहथ धनवा, दीप जलायब प्रहलाद - हे सुकुमारी सिया ।

काँचही बाँस केरा मड़वा छवायब, ऊपर काँची अम्मा - हे सुकुमारी सिया ,
चंदन काटीके पीढ़िया बनायब, राम-सीता के बइठायब - हे सुकुमारी सिया ।

चुमवे चलेली मातु कोसिला, भरमुख दिहले असीस - हे सुकुमारी सिया ,
जुग-जुग जियथ येही दूनो जोड़िया, भोगही अजोध्या के राज - हे सुकुमारी सिया ।

अर्थ

इस गीत में राम-सीता विवाह के स्फुट चित्र अंकित हैं । कोमलांगी सीता राम के गले में जयमाला पहना चुकी है । यहाँ अयोध्या में कौशिल्या वर-बधू चुमावन

की तैयारी कर रही है । वह गाय के गोबर से आंगन लिपावेगी, गजमुक्ता से चौका पुरावेगी । सुवर्ण कलशे में धान भरावेगी और अह्लादित हो कर दीपक जलावेगी । कच्चे बाँस का मण्डप छवावेगी । उसके ऊपर कच्चे आम को टांगेगी । चंदन काटकर पीढ़ा बनावेगी । उस पर राम-सीता को बैठावेगी । माता कौशिल्या वर-वधूको चुमावन करेगी और वार-बार आशीर्वाद देगी कि दोनो जोड़ी युग-युग जीवित रेहें और अयोध्या का राज करते रहें ।

(५२)

किनका के येहूँ दूनो ललना, जनक पूछे मुनि जी से ।
गाय के गोबर अंगना लिपावल, गजमोती चउका पुरावल ।

धनुष देलन ओठगाइ, जनक पूछे मुनि जी से ।
जे इहे धनुस के तोड़त, सीता विआह घर ले जायत ।

ठाड़ा हो सीरी-राम चन्दर, धनुस उठावले ।
धनुस भे गेल तीन खंड, जनक पूछे मुनि जी से ।

भेलो विआह चलले राम कोहबर, मुनि सब जय-जय बोल ।
अब सिया भेलो विआह, जनक पूछे मुनिजी से ।।

अर्थ

राजा जनक मुनि विश्वामित्र से पूछते हैं कि ये दोनों ललना किनके पुत्र हैं ? गाय के गोबर से आंगन लिप दिया गया है और गजमुक्ता से चौका पुरा दिया गया है । धनुष को खड़ा कर दिया गया है । जो इस धनुष को तोड़ देगा उसका विवाह सीता जी से कर दिया जायगा । रामचन्द्र ने खड़े होकर धनुष को उठा लिया और धनुष टूटकर तीन खंडों में विभाजित हो गया । अब सीता से राम का विवाह हो गया और राम कोहबर में जाने लगे, मुनिगण जय-जय बोलने लगे ।

(५३)

बाबा बगिया में कइसन इंजोर ?
तुहूँ न जानलऽ बेटी, तुहूँ न सुनलऽ ,

राजवंशी छेकले दुआर ।
अपनी पलकिया चढ़ी बोलथी अनजानो दुलहा ,

सरवा छीन लेबो बहिनी तोहार ।
अपनी महलिया से बोलथी अंजानो सरवा,
छीन लेबो घड़िया तोहार ।।

अर्थ

बारात आ जाने पर बेटी पूछती है कि बगीचा में कैसा प्रकाश फैल रहा है ? पिता बेटी से कहता है कि तुम जान-सुन नहीं सकी क्या ? दरवाजे पर राजपुत्र ने घेरा डाल दिया है और अपनी पालकी से दुलहे के रूप में साला से कह रहा है कि मैं तुम्हारी बहन का हरण कर लूँगा । महल से साला कह रहा है कि मैं तुम्हारी घड़ी को छीन लूँगा । इस गीत में साले-बहनोई का हास-परिहास के साथ ही परम्परागत पुत्री हरण की ध्वनि भी व्यंजित होती है ।

(५४)

जुगवा खेलन बाबूजी कहाँ गयोजी ?
बेटी, जुगवा खेलन विदेस गेली जी ।
बाबा, धन-दौलतिया तुहूँ हार जाहू जी ,
लछमिनिया धियो कइसे हार जाहूँजी ?
बेटी, धन दौलतिया निसान हई न ,
लछमिनिया धिया बड़ी भारी हई न ।

अर्थ

पुत्री पिता से पूछती है कि आप जुआ खेलने कहाँ गये थे ? पिता कहता है कि बेटी, मैं जुआ खेलने विदेश गया था । पुनः बेटी कहती है कि धन-दौलत आप हार जायें परन्तु अपनी लक्ष्मी बेटी कैसे हारेंगे ? पिता कहता है कि धन-दौलत घर का प्रतीक है लेकिन लक्ष्मी बेटी घर का भार है ।

(५४)

बनारस में छोड़लन बाबा, लोढ़िया-सिलौटिया ,
हरवा बिगलन कुरु खेत ।

आज धिया परलय साजन-हाथ ,
थर-थर काँपथी बेटी के बाप ।

आज धिया भेलन बीरान ।।

(पिता, भाई आदि के नाम से पुनरुक्तियाँ)

अर्थ

बाबा ने शिला और लोढ़े को बनारस में छोड़ दिया, हल को कुरुक्षेत्र में फेंक दिया । आज विवाहोपरान्त बेटी का पिता थर-थर काँप रहा है कि उसकी पुत्री दुलहे के अधीन हो गई, मेरे लिए पराई हो गई ।

(५६)

काँच बास कटइहँऽ जी बाबूजी ,
काँच बास के मड़वा छवइहँऽ ।

एक ओर बइठलन बेटा के बाबा ,
दूसर ओर बेटी के बाबा ।

मुखवा पान खाथी बेटा के बाबा ,
मुख रुमाल लेथिन बेटी के बाबा ।

हँसइत उठथिन बेटा के बाबा ,
रोवइत उठथी बेटी के बाबा ।

आज धियअवा विरान भेलन ।।

अर्थ

पिता ने कच्चे बाँस को काटकर उससे मड़वा छवाया । मड़वे में एक ओर बेटा के बाबा बैठ गए और दूसरी ओर बेटी के बाबा बैठ गए । बेटा के बाबा मुख में पान खा रहे हैं और बेटी के बाबा मुख पर रुमाल लिए हुए हैं । विवाह के बाद बेटा के बाबा हँसते हुए खड़ा हुए और बेटी के बाबा रोते हुए खड़ा हुए क्योंकि आज उनकी बेटी परायी हो गई ।

(५७)

बाबा बगिया में उतरल बरात जी ,
बाबा समधी मिलन तुहूँ जाहूँ जी ।

बेटी नहीं कुछ हाथ में संख गे ,
बेटी समधी मिलन कइसे जाऊँ गे ।

बाबा लेई लेहूँ लोटे-जल पानी ,
पेन्हीं लेहूँ पीयर धोती जी ।

बाबा समधी मिलन तुहूँ जाहूँ जी ।।

अर्थ

बेटी बाबा से कहती है कि बाग में बारात आ गई है । अत: समधी मिलन करने जायें । पिता कहता है कि हाथ में शंख नहीं है, समधी से मिलने कैसे जाऊँ ? पुत्री पुन: कहती है कि लोटा में पानी और पीली धोती पहनकर समधी-मिलन करने जायें ।

(५८)

बाबा रोवथी भिंजलई पगड़िया गे माई ,
दादी रोवथी भिंजलई चुनरिया गे माई ।

आज धिया पराया भे गेलन गे माई ,
बाबा कहथिन मंगबई चार महिनवा गे माई ।

दादी कहथी मंगबई काज-परोजन गे माई ,
आज धिया भेलन पराया गे माई ।

अर्थ

बेटी की बिदाई के समय बाबा रो रहे हैं जिससे उनकी पगड़ी भींग रही है । दादी के रोने से उनकी चुनरी भींग रही है । आज बेटी परायी हो गई है । बाबा कहते हैं कि बेटी को चार महीने पर बुला लूँगा और दादी कहती है कि कार्य-प्रयोजन पर बुलाऊँगी । अब तो बेटी परायी हो गई है ।

(५९)

काहे लागि जी बाबा धिया जलमयलऽ, दल एतने के बेरिया।
काहे-सुख कयलऽ दुलार,-दल एतने के बेरिया।
आज धिया कयलऽ बिरान-दल एतने के बेरिया।
जाँघ-सुख अगे बेटी धिया जनमौली, मुँह-सुख कइली दुलार।
कुआँ खानिये बाबूजी, कुँआ डाली दिहतऽ, काहे सुख कयलऽ विरान ?

अर्थ

सदल-बल बारात आ गई है। पुत्री पिता से पूछती है कि आपने बेटी का जन्म क्यों दिया ? किस सुख के लिए दुलार-प्यार किया था कि आज पराया बना दिया। पिता कहता है कि जाँघ पर बेटी को बैठाकर कन्यादान करने के सुख के लिए बेटी का जन्म दिया और मुख की शोभा के लिए दुलार-प्यार किया। बेटी कहती है कि कुआँ खोदकर मुझे उसमें डाल देते, आज किस सुख-प्राप्ति के लिए पराया बना दिया है।

(६०)

जब हो अनजानो दुलहा सड़क पर आयो जी,
ओहीं पर मलिया विलमायो लगन मोरा आज है।

सोने डलनियाँ मलिया तोरा देबो,
ससुर गलिया बतावऽ, लगन मोरा आज है।

जबे अनजानो दुलहा गलिया में आयो,
वहीं बटोही विमलायो, लगन ...

अन्नी-दुअन्नी बटोही तोरो के देबो,
ससुर के गली बतावऽ, लगन ...

जबे अनजानो दुलहा कोहबर में आयो,
कोहबर में धानी विलमायो, लगन ...

देबो जी धनिया सारी कमइया,
अप्पन मुँह देखलावऽ, लगन मोरा आज है।

अर्थ

दुलहा विवाह करने जा रहा है । जब वह सड़क पर पहुँचता है तो वहीं पर मालियों ने रोका कि आज मेरा नेग होता है । दुलहा कहता है कि हे माली, मैं तुम्हें सोने की डाली दूँगा, मुझे ससुर की गली बता दो । फिर दुलहा ससुर की गली में आ जाता है तो वहाँ राह के बटोही रोक लेते हैं । दुलहा कहता है कि हम तुम्हें दो-चार आने पैसे दे देंगे, श्वसुर की गली बता दो । इस प्रकार दुलहा श्वसुर के घर आ जाता है जहाँ विवाहोपरांत वह कोहबर में जाता है । कोहबर में उसकी पत्नी विलम्ब करती है । यहाँ दुलहे को बहुत बड़ा वादा करना पड़ता है । वह कहता है कि हम अपनी सारी कमाई तुम्हें दे देंगे, अपना मुँह दिखलाओ ।

(६१)

एक छीपा आगर-चानन, एक छीपा पान,
अगे माई, लेहूँ न अनजानो दुलहा सास देलथुन पान ।

अगे माई, का करबई आगर-चानन, का करबई पान,
अगे माई हम आउ अनजानो सरवा खेलबई जुगवा सार ।

अगे माई हारलन अनजानो सरवा उठलन लजाए,
अगे माई जीतलन अनजानो दुलहा, हँसलन ठठाय ।

अगे माई सरवा के बदला सरहजिया लेबई दान,
अगे माई सरहज के बदला, ननदिया लेबई दान ।

अर्थ

एक थाल में अगर और चंदन लिए तथा एक थाल में पान लेकर सास दुलहे के सम्मुख उपस्थित हुई । सखियाँ गीत में कहती हैं कि हे अमुक दुलहे, सास पान दे रही है, ग्रहण करें । दुलहा कहता है कि अगर चंदन और पान लेकर क्या करेंगे । हम और अमुक साले जुआ खेलेंगे । जुआ खेलते साले हार गए और दुलहा जीत गया । इस पर साला लज्जित होकर खड़ा हो गया और दुलहा जोरो से हँस दिया तथा कहा कि हम साले के बदला सरहज को दान में लेंगे । पुनः वहीं संशोधित करता है कि सरहज के बदले ननद को ही ले लेंगे ।

(६२)

बेटी, दुअरे खेलन मत जाओ, राजा के लड़का ले भागेगा ।
बाबूजी बैठेंगे अम्मा-रानी गोद, मुझको कैसे ले भागेगा ?
बेटी लावेगा साड़ी-सवारी, उसी पर तुझको ले भागेगा ।

अर्थ

पिता कहते हैं कि बेटी, दरवाजे पर खेलने मत जाओ, वहाँ से लड़का (राजा का पुत्र) तुम्हें लेकर भाग जायगा । बेटी कहती है कि पिताजी, मैं अम्मा-रानी की गोद में बैठ जाऊँगी तो वह कैसे लेकर भागेगा ? पिता कहते हैं कि वह साड़ी और सवारी लेकर आवेगा और उसी पर चढ़ा कर ले जायगा ।

(६३)

आहर-पोखर बेटी, टीकवा गढ़ायो गे माई ,
चउकठ बइठल भइया, रसरी जो बाँटई गे माई ।
चउकठ के भीतर बहनी करले जबाब गे माई ।
फूल के रसरी बाँटई भइया, पातर बहनोइया गे माई ।।

अर्थ

हे बेटी, आहर-पोखर (चौड़ा) की तरह टीका बनवाया है । घर के भीतर भाई रस्सी बाँट रहा है और चौखट के भीतर से ही बहन प्रश्नोत्तर कर रही है । भाई से कहती है कि फूल की तरह कोमल रस्सी बाटना क्योंकि बहनोई तुम्हारे दुबले पतले हैं । अर्थात् फूल की रस्सी में बहनोई को आवद्ध करना है ।

(६४)

ईटा चूरी ईटा चूरी महलऽ बनायो गे माई ।
जाही महले सुतथी बाबूजी अनजानो बाबूजी ।
जवरे बहुआरो अम्मा, बेनिया डोलावे गे माई ।
बेनिया डोलावइत पूछे दिल बात गे माई ।

काई देवऽ अनजानो बेटी के दान से दहेज गे माई ?
हाथी देबो, घोड़ा देबो, ऊँट पर नगाड़ा गे माई ।
छोटकी हथिनियाँ देबो दल के सिंगार गे माई ।।

अर्थ

ईंट और गारे चूने से महल तैयार किया गया । उसी महल में अमुक पिता जी सो रहे हैं । साथ में माननीया माता जी पंखा झल रही है । पंखा झलते दिल की बात पूछती है कि अमुक पुत्री को दान-दहेज में क्या देंगे । पिता कहते हैं कि हाथी-घोड़ा दूँगा और पीठ पर नगाड़ा बजते ऊँट दूँगा साथ ही छोटकी हथिनी भी दूँगा जो बारात का श्रृंगार होगा, जमात की शोभा होगी ।

(६५)

हाथे सिन्होरवा गे बेटी, खोइछा तिलचाउर ,
चललन अनजानो गे बेटी, बाबा दरबार ।

सुतंल में रहलन हो बाबा उठलन चेहाय ,
कउनी संजोगवा के बेटी, अयलऽ दरवार ।

न हम माँगू जी बाबा, दान रे दहेज ,
न हम माँगू जी बाबा, दरबवा बहुत ।

एक हम माँगू जी बाबा, दादी से सोहाग ,
देहु दुलरइतो दादी दाहिने लटा झार ।

लेहु अनजानो बेटी, अचरा पसार ,
अचरा के जोगवा झरिये-झुरि जाय ।

दादी सोहगवा जलमो रहि जाय ।।

नोटः- यह लोकगीत योग के अन्तर्गत भी गाने की परम्परा है ।

अर्थ

हाथ में सिन्दुरदानी और खोइछा में तिल-चावल लेकर अमुक बेटी बाबा के घर गई । सोये हुए बाबा अकचका कर उठ गए और पूछने लगे कि किस संयोग से मेरे दरवार में आई । बेटी कहती है कि मैं दान-दहेज या अधिक द्रव्य माँगने नहीं आई

हूँ, मैं दादी से सुहाग माँगने आई हूँ । दादी कहती है कि बेटी आंचल पसार कर ग्रहण करो । बेटी कहती है आंचल का योग या धन-सम्पति नष्ट हो जायगा लेकिन दादी के द्वारा प्रदत्त सुहाग आजीवन रह जायगा । अतः मुझे तो केवल सुहाग चाहिए ।

(६६)

बेटी पतरी कमरिया लामी बाल गे बेटी ,
बेटी कउनी सौदागर लेले जाउ गे बेटी ।

बेटी मइया रोवउ जार बेजार गे बेटी ,
बेटी बाबू रोवउ हिरदा-फार गे बेटी ।

बाबा सोने के पिंजड़ा बनाहूँ जी बाबा ,
ओकरे में गउरी छिपाहूँ जी बाबा ।।

अर्थ

बेटी सुन्दरी है, कमर पतली है, लम्बे-लम्बे केश हैं जिसे कौन व्यापारी लिए जा रहा है । माँ जार-बेजार रो रही है । पिताजी का हृदय विदीर्ण हो रहा है । बेटी कहती है कि पिताजी, सोने का पिंजड़ा बनाकर उसी में अपनी गौरी को छिपा लीजिए ।

(६७)

आम पल्लव चढ़ी बेटी के बाबा बइठल ,
चंदन पीढ़ा बइठल तपसिया , जग मड़वा बइठल तपसिया ।

बाबा पहिले दान करिहँऽ दहिया,
बाबा तबही दान करिहँ बेटिया , जग मड़वा बइठल तपसिया ।

बाबूजी पहिले दान करिहँऽ सम्पतिया,
बाबूजी तबही दान करिहँऽ बेटिया ।

चाचा पहले दान करिहँऽ सोनवा,
चाचा तबही के दान करिहँऽ बेटिया ।।

अर्थ

आम के पल्लव पर बेटी के बाबा बैठे हैं और चंदन के पीढ़े पर तपस्वी-पुरोहित बैठे हैं और जग के लोग मड़वा में बैठे हैं । कन्यादान की प्रक्रिया चल रही है। कहा जा रहा है कि बावा पहले दधि-दान करें तब बेटी को दान करेंगे । मड़वे में सारे सभासद (बारात) बैठे हैं । पिताजी पहले सम्पत्ति दान करें फिर बाद में बेटी को दान करेंगे । इसी प्रकार प्रथमत: चाचा सोना दान करें तब फिर बेटी को दान करें । परम्परा से भारतीय संस्कृति में पुत्री-दान पवित्र और धार्मिक अनुष्ठान माना गया है, विवाह भी धार्मिक बंधन है ।

(६८)

लछुमन सहित सीरी राम जनकपुर आयल हे ।
राजा के राज मनहूँ न भावे, रानी के परले सोच हे ।

अहे अब सीता रहले कुँआर, धनुस के तोरती हे ?
एतना बचन सुनी रामचन्द्र हँसथी मुँह फेरी हे ।

अहे पृथिवी में हैं हमवीर, धनुस हम तोड़ब हे ।
अहे हुकुम दिहें महराज, धनुस हम तोड़ब हे ।

अहे टूटल धनुस दसो दिसा सोर हे ।
अहे सोर सुनले पसुराम कि कोटि-दल साजल हे ।

पृथिवी में हैं हम वीर धनुस हम बान्हब हे ।
पृथिवी में हैं हम वीर धनुस हम तोड़ब हे ।

पीताम्बर कसी बाँधव धनुस हम तोड़ब हे ।
भेल विआह राम कोहबर सीता लेले आउर हे ।

अर्थ

श्रीराम लक्ष्मण के साथ जनकपुर में पहुँच गए हैं । यहाँ राजा जनक को राज-पाट नहीं सुहा रहा है, रानी के मन में चिन्ता है । लगता है कि अब सीता कुँआरी रह जायगी, धनुष को कौन तोड़ेगा ? जनक की यह बात सुनकर रामचन्द्र को हँसी आ गई और कहने लगे–पृथ्वी पर हम वीर हैं, हम धनुष को तोड़ेंगे, महाराज आप आदेश तो दीजिए । फिर धनुष तोड़ दिया गया । उसकी आवाज दसो

दिशा में गूँज गई । परशुराम ने भी यह आवाज सुनी तो करोड़ तरह के दल साजने लगे । इस पर राम ने कहा कि हम पृथ्वी के वीर हैं जिसने धनुष को बाँधा और तोड़ा है । पीताम्बर कसकर बाँधा और धनुष को तोड़ा । फिर राम का सीता के साथ विवाह सम्पन्न हो गया । राम सीता के साथ कोहबर में गए ।

(६९)

मंगल आज अवधपुर घर-घर मंगल हे ।
अहे मंगल व्याह-उछाह, दसहूँ दिसी मंगल हे ।

मंगल नगर सुवासिनी, करथी मंगल हे ।
अहे मंगल घर बहुआरिन, गावथी मंगल हे ।

मंगल गगन निसान उमगई मंगल हे ।
अहे मंगल कलकल गान, विध भरी मंगल हे ।

मंगल हुनकर घर, मंगल जनमन मंगल हे ।
अहे मंगल पल्लव-फूल सकल थल मंगल हे ।

अर्थ

अयोध्या में आज घर-घर मंगल मनाया जा रहा है । व्याह का उछाह सर्वत्र व्याप्त है, दसो दिशा में मंगल ही मंगल है । नगर की सुवासिनें मंगल-गान कर रही हैं । घर की बहुएँ मंगल गीत गा रही हैं । आकाश में मंगल की पताकें उड़ रही हैं जैसे मंगल मूर्तिमान होकर उमंगित है । सर्वत्र कल-कंठियों से मंगल का गान उच्चारण हो रहा है । सारे विधान मांगलिक हैं । उनका घर मंगलमय हो गया है, जन-जन का मन मंगल से पूर्ण है, पल्लव, फूल सारी वनस्पतियाँ और स्थल मंगलमय हैं । मांगलिक अनुष्ठानों से पूर्ण है ।

(७०)

मलिया जे सुतल गिरधर बगिया, मलनियाँ सुतल फुलवारी ,
सुतल ही माली, मलिनियाँ जगावे, कवन दुलहा अंगना जुठावे ,

मड़वा निरेख माली लाली मउरिया, कोहबर कन्या कुँआरी ,
सुतल माली मलिनियाँ जगावे, सुन्दर दुलहा अंगना जुठाये ।

अर्थ

माली गिरिधर के बगीचा में सो रहा है, मालिन फुलवारी में सो रही है । सोये हुए माली को मालिन जगा रही है । किस दुलहे ने आंगन में जूठा गिरा दिया है । मड़वे में माली लाल-लाल मौर को देख रहा है और कुँआरी कन्या कोहबर क़ो देख रही है । सोये हुए माली को मालिन जगा रही है और सुन्दर दुलहे ने आंगन में जूठे गिरा दिए हैं ।

(७१)

ओरीतर ओरीतर चनन जलमी रे गेले ,
हाथी-घोड़ा बान्हे हो समधी चननवा केरा गाछ ।
अपनी दरवाजा से बाहर भेलन अनजानो समधी ,
काहे समधी रंउदी ला चननवा केरा गाछ ।
अपनी रसोइया से बाहर भेलन अनजानो गे बेटी,
काहे बाबूजी बोललऽ झराझर बात ।
सहूँ बाबूजी, सहूँ बाबूजी, आजु केरा रतिया हो ,
होत भिनसरवा हो बाबूजी जयबो बड़ी दूर ।।

अर्थ

घर से सटे ओरी के नजदीक चंदन जनम गया है । समधी ने उसी चंदन वृक्ष में हाथी-घोड़ा बाँध दिया है । अपने दरवाजा से अमुक समधी बाहर हुए और पूछने लगे कि समधी जी, चंदन के पौधे को किस लिए रौंद दिया ? अपने रसोई घर से अमुक बेटी निकली और कहने लगी कि पिताजी, खरी-खोटी बातें क्यों कहने लगे । हे पिताजी, आज की रात्रि कुछ सहन करें, सुबह होते ही मैं बहुत दूर चली जाऊँगी ।

(७२)

बाबा अइसा बरवा खोजीहँऽ, आए० ए० पास भी होवे ,
बी० ए० पास भी होइहें, जेंटुल मैन भी होवे ।
घड़ी के चैन भी होवे, गले के सिकड़ी भी होइहें ,
रुनकी-झुनकी बेटी खेलिहे गुड़िया ।।

अर्थ

हे बाबा, ऐसा वर खोजेंगे जो आई० ए० पास हो और बी० ए० पास कर जाएगा । वह जेंटल मैन हो और घड़ी में सुन्दर चैन लगाए हो, गले में सिकरी भी हो जिससे छोटी बेटी खेल सके ।

(७३)

सीता बहारे हे अंगना माता निरेखे हे,
अगे माई सीता भेलन व्याहन जोग, सीता जोग बर चाही हे ।

अहे हाथे में लेहूँ वराहमन ओथिया से पोथिया हे,
तुहूँ जाहूँ नगर अजोधेया, सीता जोग बर चाही हे ।

जनकपुर के वराहमन धायल, अजोध्या आयल हे,
जनक जी के कनेया कुँआरी, राम वर चाहीला हे ।

जनक बान्हले सिर पाग तो तिलक चढ़ावले हे,
अहे दसरथ सजल बरात भरत संग जायत हे ।

अर्थ

एक समय सीता जी आंगन बहार रही थी तो माता ने देखा कि सीता अब व्याह करने लायक हो गई है । इसके लिए योग्य वर चाहिए । अतः उसने कहा कि हे ब्राह्मण, हाथ में पोथी-पत्री लेकर अयोध्या नगर चले जायें और सीता के योग्य वर खोजें । जनकपुर का ब्राह्मण दौड़ा हुआ अयोध्या पहुँचा और कहा कि जनक जी को कुँवारी कन्या है, राम की तरह वर चाहिए । जनक जी तैयार हो गए और राम के सिर में पगड़ी बाँधकर तिलक चढ़ा दिया । दशरथ जी भी बारात सजाने लगे, भरत के साथ राम की बारात जायगी ।

परिछन

विवाह में परिछन एक महत्वपूर्ण आनुष्ठानिक क्रिया है । यह क्रिया विवाह के समय तीन बार की जाती है । बाराती जाते समय माताएँ वर को भात का लड्डू बनाकर या गोबर की मुठटी बनाकर वर को निहुछ कर पालकी के दूसरी ओर फेंकती है । पुनः जब बारात वधू पक्ष के दरवाजे पर पहुँचती है तो वहाँ सास-सालियाँ दरवाजे लगते समय वर को परिछती है । अंत में विवाह कर जब वधू के साथ वर अपने घर लौटता है तो माता और बहनें वर को परिछन करती हैं । इन सारे अवसरों पर जो गीत गाए जाते हैं वे '**परिछन**' कहलाते हैं । यहाँ ये गीत दिए जाते हैं । मुख्य रूप से बारात गमन या आगमन के समय के परिछन गीत द्रष्टव्य हैं ।

(१)

परिछहऽ मइया हे, अपन दुलारु रे बरऽ ,
नैना जुड़ाई रे गेलऽ, छतिया हुलसी रे गेलऽ ।

ऊपरे कदम रे फूलऽ, नीचे बेइलिया रे झूले ,
परिछहऽ चाची हे, अपना दुलारु रे बरऽ ।

नैना जुड़ाई रे गेलऽ, छतिया हुलसी रे गेलऽ ,
ऊपरे कदम रे फूलऽ, नीचे बेइलिया रे झूले ।

अर्थ

अपने प्यारे वर को माँ परिछन कर रही है । माँ की आँखे तृप्त हो गई, हृदय उमंगित हो रहा है । पालकी नक्कासीदार है । उसके ऊपर फूल झूल रहे हैं, नीचे बेल-बूटे लगे हैं । सुसज्जित पालकी पर दुलहा बैठा हुआ है । चाची प्यारे वर को परिछ रही है । उसका नैन जुड़ा गया है, छाती आनंद से फैल गई है । इसी गीत में परिछने वाली सभी महिलाओं के संबंध को रेखांकित किया जाता है ।

(२)

रामचन्दर चलले विआहन रिमझिम-बरसले हे ।
अहे रिखियन खबर जनावहूँ कहाँ दल उतरत हे ।

परिछे बाहर भेलन सासु सोहागिन, सोने डलिया लेले हे ।
अहे केकर आरती उतारब, कउन बर सुन्नर हे ?

साम-बरन सीरीराम, गोर ही बरन लछुमन हे ।
सीरी राम चन्दर आरती उतारब, से ओही बर सुन्नर हे ।

अर्थ

रामचन्द्र विवाह करने चले तो रिमझिम वर्षा हो रही थी । अत: जनक ऋषि को खबर दी जाय कि बारात कहाँ ठहरेगी । फिर दरवाजा लगते समय सौभाग्यशालिनी सास परिछन करने चली जो सोने की डाली लिए हुए थी । वह किसकी आरती उतारे, कौन वर सुन्दर है । राम साँवले हैं और गौर वर्ण लक्ष्मण हैं । वह रामचन्द्र की आरती उतारेगी, वही वर सुन्दर है ।

(३)

परिछे बाहर भेलन सासु अलबेलवा हे ,
परिछे न पवलन दमाद अलबेलवा हे ।

सासु के अँखिया लगले मधुमखिया हे ,
परिछे न पवलन दमाद अलबेलवा हे ।

परिछे बाहर भेलन सरहज अलबेलवा हे ,
परिछे न पवलन ननदोसी अलबेलवा हे ।

भाभी के अँखिया लगल मधुमखिया हे ,
परिछे न पवलन अपन ननदोसिया हे ।

अर्थ

अलबेली सास अपने दामाद को परिछन करने निकली तो वह परिछ नहीं सकी क्योंकि उसकी आँख पर मधुमखियाँ गुंजार करने लगीं (नयन को फूल समझ कर) अत: वह अपने अलबेला दामाद को परिछ नहीं सकी । इसी प्रकार अलबेली सरहज

ननदोसी को परिछने चली तो उसकी भी आँख की सुन्दरता (कमलनयनी) बाधक हो गई, मधुमखियों ने घेर लिया और वह अपने ननदोसी को परिछ नहीं सकी। [उपमान के उपस्थित किए बिना कार्य का सम्पादित कर देना-लोक मेधा द्वारा अतिशयोक्ति अलंकार चित्रण]

(४)

अवध नगरिया से अयले बरियतिया हे,
परिछनऽ चलूँ सखि साजि-साजि डलिया हे।

मकुनी हथिनियाँ के जरदी अमरिया हे,
ताहि चढ़ि आवले हमर दुलरुआ हे।

जामा जोड़ा देहे-सोभे गले सोभे हरवा,
हथवा रुमाल सोभे माथे मउरिया हे।

आरती करइते सासु सुध-बुध खोवे हे,
सखि सब ताहि सभे मंगल गावे हे।

अर्थ

अयोध्या नगर (वर के गाँव का नाम लेकर) से बारात आ गई है। हे सखि, डाली सजकर वर को परिछन करने चलो। सुन्दर छोटे हाथी पर पीले रंग का हौदा कसा हुआ है। उसी पर चढ़कर दुलारा वर आया है। उसके शरीर पर जोड़ा-जामा सुशोभित है, हाथ में रुमाल और सिर पर मौर शोभ रहा है। उसकी आरती उतारते सास सुध-बुध खो गई है और सखियाँ मंगल गीत गा रही हैं।

(५)

कोरा-कोलसुपवा लेले मइया बहरयलन हे,
खोलऽ बाबू पालकी, परीछम लिलार हे।

कइसे में खोलूँ मइया सोबरन केवाड़ हे,
सासु के धिअवा लगवले केवाड़ हे।

कोरा-कोलसुपवा लेले चाची बहरयलन हे,
खोलऽ बाबू पालकी परीछम लिलार हे।

कइसे में खोलूँ चाची सोबरन लगवे केवाड़ हे ,
सासु के धिअवा लगवले केवाड़ हे ।।

अर्थ

बिना रंगा हुआ सूप (अँखरा) लेकर माँ पुत्र को परिछने के लिए घर से बाहर निकली । पालकी का दरवाजा बंद था । वह अपने पुत्र से पालकी खोलने कहती हैं कि मैं तुम्हारी ललाट को परिछूँगी । लड़का भीतर से ही बोलता है कि माता सुवर्ण जटित कीवाड़ कैसे खोलूँ ? उसे तो सास की पुत्री ने लगा रखा है । इसी प्रकार सूप लेकर चाची बाहर हुई और पालकी का दरवाजा खोलने के लिए कहा तो पुनः उसे भी वही उत्तर मिला । बहन आदि को भी वही उत्तर मिला ।

(६)

हम तो मांगली आजन-बाजन ढोल काहे लवले रे ,
परिछन के बेरिया ढमढम बजवले रे ।

हम तो मांगली हाथी-घोड़ा, ऊँट काहे लवले रे ,
टेढ़ा-मेढ़ा टांग ओकर, जीव घबरवले रे ।

हम तो मांगली बसहा बैला, गदहा काहे लवले रे ,
दूर छिनरो-पुताऽ नबाब बन के अयले रे ।।

अर्थ

वर परिछन करते समय स्त्रियाँ गाती हैं कि हमने तो सुन्दर बाजे लाने के लिए कहा था परंतु तुमने ढोल क्यों लाया जो ढब-ढब बज रहा है । हमने हाथी-घोड़े माँगा था और तुमने ऊँट ले आया जिसकी टागें टेढी हैं और उसे देखने से जी घबराता है । हमने तो बसहा बैल माँगा था तो तुमने गदहा क्यों लाया ? छिनाल का पुत्र यहाँ से दूर हटो, नवाब बनकर आया है । यह परिछन का मांगलिक गाली है ।

(७)

अवध नगरिया से अयलई बरतिया हे ,
चलूँ सखि परिछन रघुबर दुलहवा हे ।

हथिया झुमइते आवे, घोड़वा नचइते हे ,
बजना बजइते आवे कसबिन नचइते हे ।

लेई लेहूँ डाली-डूली लेसी लेहूँ बतिया हे ,
परिछन चलूँ सखि रघुवर दुलहवा हे ।

ढोल-नगाड़ा बाजे, बाजे सहनइया हे ,
देखन चलूँ सखि रघुबर बरतिया हे ।

अर्थ

अयोध्या नगरी से बारात आ गई है । हे सखियाँ, रघुवर दुलहा को परिछन करने चलो । हाथी झूमते और घोड़ा नाचते आ रहे हैं । नर्तकियाँ नाचती आ रही हैं । हे सखि डाली ले लो, दीपक जला लो और रघुबर दुलहे को परिछने चलो । ढोल और नगाड़े तथा शहनाइयाँ बज रही हैं । हे सखियाँ रघुबर की बारात देखने चलो ।

(८)

हँसते-खेलते मोरा बाबू गेलन, मन वेदील काहे अयलन ?
सासु छिनरियो नियोग कयलन, चित वेदील काहे अयलन ?

सरहज छिनरियो नियोग कयलन, मन वेदील काहे अयलन ?
हँसते-खेलत मोरा बाबू गेलन, मन वेदील काहे अयलन ?

अर्थ

दुलहा जब विवाह कर घर लौटता है और माँ उसका परिछन करते देखती है तो उदास पाती है । वह सोचती है कि मेरा पुत्र यहाँ से हँसते-खेलते गया था और उदास मन से क्यों लौटा है ? लगता है कि छिनाल सास ने योगकर दिया है, उसी के प्रभाव से उसका चित्त उदास है । मेरा पुत्र तो यहाँ से प्रसन्न चित गया था । हो, न हो सरहज ने योग किया हो जिससे इसकी मति मारी गई हो और वह मनोमालिन्य से पीड़ित हो गया है ।

गुरहथी या बरनेत

विवाह के पूर्व वर का बड़ा भाई वधू को नया वस्त्राभूषण अर्पित करता है । इस विधि को गुरहथी या वरनेत कहते हैं । इस अवसर पर भैंसुर को गाली दी जाती है । वरनेत के गीत में मुख्य रूप से गाली और आभूषण का वर्णन मिलता है ।

(१)

येही भैंसुरवा के बड़े-बड़े टांग रे,
वही टांगे धांगलक मड़वा हमार रे।

यही भैंसुरवा के बड़े-बड़े हाथ रे,
वही हाथे छूवलक धियवा हमार रे।

यही भैंसुरवा के बड़े-बड़े आँख रे,
वही आँखे ताकलक मड़वा हमार रे।

यही भैंसुरवा के बड़े-बड़े दाँत रे,
वही दाँते हँसलक मड़वा हमार रे।

यही भैंसुरवा के बड़े-बड़े मोछ रे,
वही मोछे चाटलक दहिया हमार रे ।।

अर्थ

वधू के मंडप में वर का बड़ा भाई वधू को वस्त्राभूषण चढ़ाने आया तो स्त्रियाँ गा उठती है। इस भैंसुर के बड़े-बड़े पैर हैं, उन्हीं पैरों से हमारे मंडप को स्पर्श कर दिया है। उसके बड़े-बड़े हाथ भी हैं, उन्हीं हाथों से हमारी पुत्री को भी स्पर्श कर दिया है। उसकी आँखे भी बड़ी हैं जिनसे हमारे मड़वे को देख लिया है। उस भैंसुर के बड़े-बड़े दाँत भी हैं, उन्हीं दाँतों को दिखा कर हमारे मड़वे में हँस भी रहा है। उसे वधू के ललाट में लगाने के लिए दही दिया गया है जिसे अपनी बड़ी-बड़ी मूछों से चाटकर खा लिया है।

(२)

अच्छा-अच्छा गहना चढ़इहें रे जेठ भैंसुरा,
बड़ा जतने के धिअवा रे जेठ भैंसुरा ।।

अच्छा-अच्छा टीकवा चढ़इहें रे जेठ भैंसुरा,
अच्छा-अच्छा नथिया चढ़इहें रे जेठ भैंसुरा ।।

अच्छा-अच्छा हँसुली चढ़इहें रे जेठ भैंसुरा,
बड़ा जतन के धिअवा रे जेठ भैंसुरा ।।

अच्छा-अच्छा कंगना चढ़इहें रे जेठ भैंसुरा ,
अच्छा-अच्छा कपड़ा चढ़इहें रे जेठ भैंसुरा ।।

अच्छा-अच्छा साड़ी चढ़इहें रे जेठ भैंसुरा,
बड़ा जतन के धिअवा रे जेठ भैंसुरा ।।

अर्थ

गीत में कहा गया है कि रे जेठ भैंसुर, मेरी पुत्री बड़े प्रयत्न के बाद पली-पुसी है । उसके लिए अच्छा-अच्छा आभूषण चढ़ाना । अच्छा टीका, नथ, हँसुली, कंगन, सभी अच्छे होने चाहिए । साड़ी आदि वस्त्र भी अच्छे होने चाहिए । हमारी पुत्री बड़े प्रयास के बाद हुई है ।

(३)

पीतल का जो टीका हई, सादी में क्यों लायो रे ?
मार साले भैंसुर को, मड़वा से निकालो रे ।

लाजो न तोरा लागो भैंसुर, मड़वा पर क्यों आयो रे ?
थूक तोरा डाढ़ी में, नाम क्यों हँसाया रे ?

टलहा के जो हँसुल हई, सादी में क्यों लायो रे ?
मार साले ससुर को, मड़वा से निकालो रे ।

थूक तोरा डाढ़ी में नाम क्यों हँसाया रे ? आदि

अर्थ

बरनेत चढ़ाते गाया जाता है कि सादी में यह मांगटीका क्यों लाया ? यह तो पीतल का है । अतः साले भैंसुर को मारो और मड़वे से निकाल दो । इस भैंसुर को लज्जा भी नहीं आती, यह मड़वे में आया ही क्यों ? इसकी दाढ़ी में थूक दो । इसने नाम क्यों हँसाया ? हँसुली भी चाँदी का नहीं बल्कि टलहा है इसे क्यों लाया है ? साले ससुर को भी मारकर मड़वा से निकाल दो, दाढ़ी में थूक दो । इसने मेरे नाम की हँसी करा दी है ।

(३)

मड़वा में आके भैंसुर धरलन भरलो पेटारी हे ,
यही रे भैंसुरवा के बोली-बच्चन प्यारी हे ।

से ही पर रीझे जनकनपुर के नारी हे ,
यही रे भैंसुरवा के बड़ी-बड़ी आँखी रे ।

निरखते आवे जनकपुर के नारी रे ,
यही रे भैंसुरवा के लामी-लामी दाढ़ी रे ।

वही दाढ़ी में बांधल दही के हाड़ी रे ,
भैया जे पूछत क्या बंधा तेरे दाढ़ी में ?

जनकपुर में मिला है दहेज में दही के हाड़ी रे ।

अर्थ

भैंसुर ने मड़वे में आकर भरी पेटारी रख दी । इस भैंसुर की बोली बड़ी प्यारी लगती है जिसके कारण जनकपुर की नारियाँ मोहित हो गई हैं । इस भैंसुर की आँखे बड़ी-बड़ी हैं, जिनसे जनकपुर कि नारियों को देखता है । इसकी दाढ़ी भी लम्बी है । उस दाढ़ी में दही कि हाड़ी बाँधा दी गई है। घर जाने पर उसके भाई-बंधु पूछते हैं कि तुम्हारी दाढ़ी में क्या बंधा है तो वह कहता है कि जनकपुर में दहेज में यह दही की हाड़ी मिली है ।

(५)

टीकवा देख के भूलिहँऽ न दादा, टीकवा हई मंगनी के ,
दुलहा हइ सतभतरा के जनमल, दुलहिन हई जिमदार के ।
हँसुली देख के भूलिहँऽ न दादा, हँसुली हई मंगनी के ।
दुलहा हई सतभतरा के जनमल, दुलहिन हई जिमदार के ।
कगना देख के भूलिहँऽ न दादा, कगना हई मंगनी के ।
दुलहा हई सतभतरा के जनमल, दुलहिन हई जिमदार के ।
साड़ी देख के भूलिहँऽ न दादा, साड़ी हई मंगनी के ।
दुलहा हई सतभतरा के जनमल, दुलहिन हई जिमदार के ।
हैकल देख के भूलिहँऽ न दादा, बीछिया हई मंगनी के ।
दुलहा हई सतभतरा के जनमल, दुलहिन हई जिमदार के ।।

अर्थ

गीत में कहा गया है कि दादाजी, भैंसुर द्वारा चढ़ाया गया टीका को देख कर भूल मत जाना । यह टीका दूसरे से माँगकर लाया गया है। दुलहा सात पतियों से

जनमा हुआ है और दुलहन जमींदार-पुत्री है। इसी प्रकार हँसुली, कंगन, साड़ी, हैकल, बीछिया आदि भी मँगनी में माँगकर लाया गया है, इसे देखकर विभोर नहीं होना है । दुलहा सात भर्त्तारों का जनमा हुआ है और दुलहन जमींदार-पुत्री है । गीत को अनेक भूषणों के साथ जोड़कर बढ़ाया जाता है ।

(६)

टीकवा लायो चढ़ावन को पेन्ह लिया लड़भैंसुरा ,
अइसन साम सुन्दर के छूछुन्दर मिला भैंसुरा ।
सिकड़ी लायो चढ़ावन को पेन्ह लिया लड़भैंसुरा ,
अइसन सामसुन्दर के छूछुन्दर मिला भैंसुरा ।।

अर्थ

बेवकूफ भैंसुर ने वधू को चढ़ाने के लिए टीका लाया और स्वयं पहन लिया। ऐसी साँवली सुन्दरी को छूछुन्दर भैंसुर मिला । इसी तरह सिकड़ी पहन लिया, साड़ी आदि पहन लिया छूछुन्दर ने ।

(७)

टीकवा जे लायो भैंसुर डिब्बा में मुन के ,
लाड़ो तोरो गारी देगी, भइया के चुन के ।
हँसुली जे लायो भैंसुर, डिब्बा में मुन के ,
धिअवा तोरो गारी देगी, बहिनी के चुन के ।

अर्थ

भैंसुर ने डिब्बे में बंदकर वधू को चढ़ाने के लिए मांगटीका लाया है । स्त्रियाँ कहती हैं कि प्यारी दुलहन तेरे भैया को चुनचुन कर गाली देगी । इसी प्रकार हँसुली भी डब्बे में बंदकर लाया है । मेरी बेटी तुम्हारी बहन को चुन-चुनकर गाली देगी ।

(८)

किया दल उतरले बाग-बगइचा, बरनेती बने हो ।
किया कदमतर खाड़, बरनेती बने हो ।
नहीं दल उतरले बाग-बगइचा, बरनेती बने हो ।
नहीं कदमतर खाड़ बरनेती बने हो ।

एकदल उतरले बाबा के दुअरा, बरनेती बने हो ।
जाही घर कन्या कुँआर, बरनेती बने हो ।

अर्थ

बरनेती (भूषण-वस्त्र चढ़ाने वाला भैंसुर) बनकर आ गया । क्या दल (बारात) बाग में उतर गया है, पहुँच गया है या कदम्ब वृक्ष के नीचे अभी खड़ा है ? दल बाग-बगीचा में नहीं ठहरा हुआ है न कदम्ब वृक्ष के नीचे खडा है । एकदल बाबा के दरवाजे पर उतरा है जहाँ कुँआरी कन्या है ।

(९)

टीका जो लाया बन्ना अपना खुसी से, नहीं गे लाड़ो,
तेरा डर से रिझावन टोना, लगे दुलहे को सतावन टोना ।

हरवा चढ़ाऊँ खुसी से नहीं गे लाड़ो, तेरा डर से रिझावन टोना ।
लगे दुलहे को सतावन टोना, लगे दुलहे को हाथ जोडू टोना ।।

अर्थ

इस गुरहत्थी के गीत पर मुस्लिम-संस्कृति का प्रभाव है । दुलहन बन्ना से पूछती है कि टीका तुमने अपनी खुशी से लाया है ? वह कहता है कि नहीं प्यारी, तेरे डर से तुम्हें मोहित करने के लिए लाया है । इसी प्रकार हार भी खुशी से नहीं बल्कि तुम्हारे डर से लाया हूँ । दुलहे पर टोने (योग) का प्रभाव पड़ने लगा, टोना दुलहे को सताने लगा । वह सभी को हाथ जोड़ने लगा ।

खरई चुनाई

वर को, दरवाजे से मड़वे तक जाते समय सास या साली-सरहज तिनका फेंकते जाती है जिसे चुनना पड़ता है । इस समय के गीत में वर पक्ष को गाली देने का भी रिवाज है ।

(१)

दुअरे अवइते सासु खरई चुनवलऽ हे, हर लेलऽ हमरो गेयान, माई हे ।

सब जोग कयलऽ सासु अपनो धिया ला, हर लेलऽ हमरो गेयान, माई हे ।

दुअरे अवइते सरहज खरई चुनवलऽ हे, हर लेलऽ हमरो गेयान, माई हे ।

दुअरे अवइते साली खरई चुनवलऽ हे, हर लेलऽ हमरो गेयान, माई हे ।
सब जोग कयलऽ सरहज अपनो ननद ला, हर लेलऽ हमरो गेयान, माई हे ।

अर्थ

वर कहता है कि दरवाजे पर आते ही सास ने खरई (तिनका) चुनवाई, हमारे ज्ञान को हरण कर लिया (मैं मंत्र-मुग्ध तिनका चुनता गया) सारा योग, टोना-टोटका अपनी पुत्री के लिए किया और मेरा ज्ञान हर लिया । इस प्रकार सरहज और साली ने भी वर को तिनका चुनवाया मानो सभी ने उसका ज्ञान हरण कर लिया हो । ससुराल में वर मंत्र-विमुग्ध होकर लोकरीति करने लगता है ।

(२)

सखि चुनावऽ हे पान दुलर-वर से ,
जब-जब दुलहा के खरई चुनावे ।

गाली सुनावे सनमान दुलरवर के ,
खरई लेके दुलहा टटिया बिनौबो ।

तोर मइयो देतन दोकान ,
टोना के बीड़ा देलन सखिसब ।
हर लेलन वर के ज्ञान ।।

अर्थ

अपने दुलारे वर से सखियाँ पान चुनवा रही हैं । जैसें-जैसें दुलहा पान या खरई (तिनका) चुनता है वैसे-वैसे सखियाँ सम्मान-पूर्वक गाली देती हैं और कहती हैं कि हे दुलहा, तिनका लेकर टट्टी (झोपड़ी) बनाऊँगी और उस टट्टी में तेरी माँ दूकान लगावेगी । इस प्रकार सभी सखियाँ मिलकर वर को टोना का बीड़ा दे दिया और उसका सारा ज्ञान हर लिया ।

(३)

राजा जनकजी के ऊँची हईन अटारी जी ,
राम लखन दूनो लगले दुआरी जी ।
केरे लेले डाली-डुली केरे लेले पान जी ,
केरे लेले गेडुआ गंगा जल पानी जी ।

सासु लेले डाली-डुली, सरहज पाकल पान जी ,
चेरिया लेले गेडुआ गंगा जल पानी जी ।

पीयऽ न अनजानो दुलहा ये हो जुड़वा पानी जी ,
अपनी कुँआरी धिअवा हमें के देखावऽ जी ।

अर्थ

राजा जनक के ऊँचे महले में विवाह के लिए राम-लखन का दरवाजा लग रहा है। स्वागत एवं अनुष्ठान के लिए कौन डाली आदि लेकर प्रस्तुत है तथा कौन पका पान लेकर उपस्थित है । कौन पात्र में गंगाजल लिए हुए है ? सास डाली में सामान लेकर और सरहज पका पान लेकर खड़ी है तथा दासियाँ जलपात्र में गंगाजल लिए उपस्थित हैं । अमुक दुलहे से ठंढा पानी पीने के लिए आग्रह किया जाता है तो वह उनकी क्वाँरी पुत्री को दिखाने कहता है।

(४)

काँच ही बाँस केरा डलवा बिनायो, बहुआ के पैर धरायो ।
बहू आयो, बहुआ छुलछन आयो ।

धन-धन भाग तोहरो अनजानो रइया, बेटा-पुतोह घर आयो ।
कोरे-नदिया सासु दहिया जमायो, बहुआ के सिर धरायो ।

काँचे सुता केरा पोलवा बनायो, बहुआ के सिर धरायो ।
धन-धन भाग तोहरो अनजानो चाचा,.बेटा-पुतोह घर आयो ।।

अर्थ

यह गीत उस अवसर पर गाया जाता है जब वर वधू को लेकर अपने घर पहुँचता है । वधूके सर पर दही की मटुकी रखी रहती है जिसे वर थाम्हे रहता है। दोनों के पैर मार्ग में रखे दौरे पर चलते हैं । मार्ग में पुष्पादि मांगलिक पदार्थ छिट दिए जाते हैं । यह खर चुनाई की तरह दूसरी परिष्कृत और अभिजात्य परम्परा है। फर्क यही है कि यह अनुष्ठान वधू के मायके में नहीं बल्कि वर के घर स्वागत के रूप किया जाता है ।

कच्चे बाँस का दौरा (डाली) बनाया गया है जिसमें वधू का पैर पड़ रहा है। वधू आई है, सुलक्षणी वधू का प्रथमागमन हुआ है । अमुक राय का भाग्य धन्य है

जिनका बेटा और पुत्रवधू घर पर आ गई है । वधू की सास ने नये नाद में दही जमाया है जिसे वधू के सिर पर रख गया है । कच्चे धागे का पोला बना कर वधू के सिर पर रखा गया है । इन सब क्रियाओं के साथ वधू गृहागमन करती है । अमुक राय बड़े सौभाग्यशाली हैं जिनका बेटा और पुत्रवधू घर पर आ गये हैं ।

(५)

डोली से उतरि के अनजानो दुलहा खरई चुनेला आंगन खाड़ भेलन हे ।
अहे झट-सिना घर से निकली सासु लाड़ो के निहुछे लगलन हे ।
अहे झटसिना घर से निकली सरहज लाड़ो के निहुछे लगलन हे ।
डोली से उतरि के दुलहा खरई चुनेला आंगन खाड़ भेलन हे ।
अहे झटसिन घर से निकली साली लाड़ो के लुलुआर्य लेलन हे ।

अर्थ

इस गीत में परम्परा के साथ वर्णसंकरता भी दीखती है। दरवाजा लगने के बाद अमुक दुलहा खरई चुनने के लिए आंगन में खड़ा हुआ तो शीघ्र ही घर से सास भी निकली और अपने प्यारे वर को नजर उतारने लगी । पुनः सरहज भी नजर उतारने लगी । परंतु साली को तो मजाक सूझ रहा था । उसने वर को कुछ कह कर लज्जित कर दिया। इसमें साली का मजाक परम्परा से भिन्न नवोन्मेष है ।

कन्यादान एवं सिंदुरदान के गीत

विवाह संस्कार में कन्यादान एवं सिन्दुरदान ऐसी अनिवार्य पद्धति है जो देश के बहुलांश में किसी न किसी रूप में प्रचलित मिलती है । मगध में तो यह सभी जातियों एवं वर्गों में मान्य है। । इस अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में थोड़े स्थान भेद से भिन्नता भले ही दीख जाय परंतु मूलभावना समान रहती है । यहाँ मगही में कन्यादान एवं सिन्दुरदान के गीत देखें ।

(१)

मड़वे बइठल बाबा दुलरइतो बाबा चउमक मानिक दीप हे,
कनेया दान के अवसर आवेला, ब्राह्मन परले हँकार हे।

झाँपि-झाँपि लवलन मइया दुलारी मइया, रखलन बाबा केरा जाँघ हे ।
जबहि दुलरइता बाबा मुँहवाँ उघारलन, साजन रहले निरखि हे ।

का हथी सीताजी सूरूज के जोतिया, का हथी चान के जोत हे ।
अइसन सुन्नर कनिया कइसे में भेंटल, धन-धन हई मोर भाग हे ।

अछत-कुस लेले बेटी के बाबू, कइसे करब कनिया दान हे ?
बेद पढ़इते ब्राह्मन काँपले, काँपी गेले कुल परिवार हे ।

हम्मर धिअवा पराया घर जायत, अब भेला पर केरा आस हे ।।

अर्थ

मण्डप में विवाह-संस्कार सम्पन्न हो रहा है । वर-वधू के पिता तथा परिवार बैठे हैं । कन्यादान करने के लिए पुत्री के पिता प्रस्तुत हैं । कलशे पर चतुर्मुखी माणिक्य दीप प्रज्ज्वलित हो रहा है । कन्यादान का लग्न आ गया । पुरोहित-ब्राह्मण को बुलाया गया । कन्या की माँ पुत्री को वस्त्र से ढँक कर लाती है और पिता की जाँघ पर बैठा देती है । पिता ने कन्या के मुख से वस्त्र हटाया तो उसका दुलहा देखता ही रह गया । क्या सीता जी सूर्य या चाँद की ज्योति हैं ? राम कहते हैं कि मेरा भाग्य धन्य है कि सीता जैसी सुन्दरी कन्या मुझे मिली है । इधर बेटी के पिता हाथ में अक्षत (अरवा चावल) ओर कुश लेकर प्रतीक्षारत हैं कि अपनी बेटी का दान कैसे कर दूँ ? मंत्रोच्चार करते ब्राह्मण काँप रहे हैं, सारा कुल परिवार के लोग व्याकुल हैं कि हमारी पुत्री अब दूसरे घर में चली जायगी, अब किसकी आशा की जाय, दूसरों की ही तो आशा रह गई है । कन्यादान के अवसर पर कारुणिक दृश्य का वर्णन बड़ा हृदयद्रावक हो गया है ।

(२)

कहावाँ के छत्री-पत्री, मड़वा छवायो जी ,
कहवाँ के राम रइया व्याहन आयो जी ?

जनकपुर के छत्री-पत्री मड़वा छवायो जी ,
अजोध्या के राम रइया व्याहन आयो जी ।

उठलन दसरथ समधी जाजिम विछायो जी ,
बइठलन जनक समधी खरइ बीछायोजी ।

बिगलन रामचन्दर दुलहा, बिरवा लगाय जी ,
लोकऽ न सीता सुगई अचरा पसार जी ।

कउन गुमाने सीता मुखवो न बोले जी,
कउन गुमाने सीता बिरवो न लेबे जी?

बाबा के गुमाने सीता मुखवो न बोलेजी,
भइया के गुमाने सीता बिरवो न लेबे जी।

बाबा के गुमनवा सीता, दुइये -चार दिनवाजी,
हमरो गुमनवा सीता जनमो-सिनेह जी।

अर्थ

कहाँ के पुआल और पत्ते हैं जिससे मंडपाच्छादन किया गया है और कहाँ के राम राय हैं जो व्याह करने आए हैं? जनकपुर के पुआल-पत्ते से मड़वा छाया गया है और अयोध्या के राजा रामचन्द्र व्याह करने आए हैं। दशरथ समधी जाजिम बीछाने उठे तो जनक समधी खर-पुआल बीछा कर बैठ गए। रामचन्द्र दुलहे ने पान का बीड़ा उठाकर फेंका तो सीता ने आंचल पसार कर नहीं लिया इस पर राम ने कहा कि किस घमण्ड से नहीं बोल रही है और किस घमण्ड से पान का बीड़ा भी नहीं ग्रहण कर रही है? सीता ने जवाब दिया कि पिताजी के घमण्ड से नहीं बोल रही हूँ और भाई के घमण्ड से पान-बीड़ा नहीं ले रही हूँ। राम ने पुनः कहा कि पिता का अहंकार तो दो-चार दिनों के लिए है लेकिन हमारा घमण्ड तो आजीवन स्नेह का है।

(३)

जा दिन से तोरो बेटी अंगना जनम भेले, नयनवाँ न आयल सुखनीन हे।
नीदियों न आवे बेटी भूखओ न लागे, तरेगन गिनते बिहान हे।

ऊरूब खोजली, पूरूब खोजली, खोजली सहर मनेर हे।
दादा के हाथ में गंगाजल पानी, दादी के हाथे कुस-काँस हे।

काँपन लागे गंगाजल पानी, काँपन लागे कुस-काँस हे।
ताखा पऽ राखल गुड़िया रोवे, रोवे सब टोला परोस हे।

बाबा के रोने से घुठि-धोती भींजे कोइली हमर चलि जाय हे॥

अर्थ

पिता कहता है कि पुत्री, जिस दिन से तुम्हारा मेरे आंगन में जन्म हुआ है उस दिन से आँखों में नींद नहीं आई। नींद नहीं आती, भूख भी नहीं लगती और

तारेगन गिनते रात बीत जाती है । उत्तर और पूर्व दिशा की ओर खोजा तथा मनेर शहर खोजा । अंततः विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ, कन्यादान की बारी आई । दादा के हाथ में गंगा का जल है और दादी के हाथ में कुश है । पुत्री दान करते समय हाथ काँपने से गंगा जल काँप रहा है, कुश काँप रहा है । कन्यादान करते समय ऐसा दृश्य हो जाता हैं कि ताखा पर रखी गुड़िया भी रोने लगती है। सारा पड़ोस के लोग रोने लगते हैं । बाबा की आँखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होने के कारण एड़ी तक धोती भींग गई है । हाय, हमारे घर की कोयल चली जा रही है ।

(४)

चनन-चउका चढ़ि बइठलन अनज़ानो बाबू, जाँघ पर धिया बइठाई हे ।
अहेगम, मोरो पट चुनरी भींजल, रसे-रसे बेनिया डोलावऽ हे ।

कइसे में बेनिया डोलाई गे सुगई, देखत होइहें बाबू तोहार हे ।
चलूँ गे सुगई हमरो के देसवा, उहाँ देबो बेनिया डोलाय हे ।

अर्थ

चंदन से पूरित चौके पर अमुक पिता बैठ गए हैं उनकी जाँघ पर पुत्री बैठी है। कन्या अपने वर से कहती है कि मेरी रेशम की चुनरी भींग रही है, धीरे-धीरे पंखा झल दें । दुलहा कहता है कि हे सुकी, कैसे पंखा झलूँ, तुम्हारे पिताजी देख रहें हैं। हमारे देश चलो वहीं पंखा झल दूँगा ।

(५)

गाई के गोबर रामा आगना लिपाय ,
गजोमती अहो रामा चउका पुराय ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

झारी-झुरीय रामा जाजीम बीछाय ,
बैठी गेले अहो रामा पंडवा-पचास ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

चउका बइठल रामा कचरले पान ,
जँघिया बइठल सीता नैना ढारे लोर ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

कलसा अलोते भेलन राम पूछे बात ,
किया मन परल सीता मइया से बाप ,
किया मन परल सहोदर ज़ेठ भाई ।

नइहरा के दुख-सुख कहलो न जाय ,
निरधन माय-बाप तेजलो न जाय ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

भइले विआह राम कोहबर जाय ,
रामजी के बहिनी छेकलन दुआर ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

का तुहूँ बहिनी हे छेकलऽ दुआर ,
सीता के खोइछवा रतन होई जाय ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

अर्थ

गाय के गोबर से आंगन लिप दिया गया, उस पर गजमुक्ता से चौका पुर दिया गया है । जनक ऋषि के यहाँ राम उसपर आसीन हैं । झार कर सफेदी बीछा दी गई है । उस पर समाज के पचासों लोग बैठ गए हैं । चौका पर बैठे राम पान चबा रहे हैं और पिता की जाँघ पर बैठी सीता नयन से आसूँ बहा रही है । सीता को रोती देख राम कलशे की ओट से सीता से रोने का कारण पूछते हैं। सीता, क्या तुम्हें माँ-बाप के प्रति मन में कोई भाव है या तुम्हारे बड़े भाई के प्रति दुर्भाव है । सीता कहती है कि मायके का सुख-दुख कहा नहीं जा रहा है और निर्धन माँ-बाप को त्यागा नहीं जा सकता। राम विवाह कर सीता के साथ घर आते हैं तो कोहबर में प्रवेश के पूर्व उनकी बहन दरवाजा रोक रही है । राम बहन को कहते हैं कि किसलिए दरवाजा रोक रही है सीता के खोइछे में दिया हुआ पदार्थ रत्न में बदल जाय । वस्तुतः खोइछे का पदार्थ बहन को ही होता है ।

(६)

सेनूरा-सेनूरा मती करूँ सेनूरा ले आयब हे ।
धनिया ला जबई सेनूरा-हाट से सेनूरा ले आयब हे ।

एतना बचन कहि उठलन अनजानो दुलहा चलि भेलन मोरंग देस हे ।
लेहूँ धानी सेनूरा-टिकुलिया चलहूँ गजओबर हे ।

चुटकी भर देहूँ सेनुरवा तऽ धानी तोहार होयतन हे।
दुलहा भरलन धनि के मांग, धनी अप्पन हे।

बाबा जे रोवथी मड़उवा बीचे, भइया बँसवा धयले हे।
अम्मा रोवथी जार-बेजार अब धिया पराया हाथे हे।

छूटी गेल भाई रे भतीजवा, अउरो घर-परिवार हे।
अब हम भेली पर-हाथ सेनूरादान भे गेले हे।

अर्थ

कन्यादान के समय सिन्दुर-सिन्दुर की चर्चा होने लगी तो दुलहे ने कहा कि मैं हाट में जाकर धनी के लिए सिन्दुर ले आऊँगा। यह बात कह कर दुलहा सिन्दुर लाने मोरंग देश चला गया और सिन्दुर लाकर धनी को दे दिया और कोहबर चलने कहा। धनी ने कहा कि चुटकी भर सिन्दुर से मेरी मांग भर दें, तभी मैं तुम्हारी होऊँगी। दुलहे ने धानी की मांग को सिन्दुर से भर दिया तो वह उनकी अपनी हो गई। कन्या को पराई होते देख, बाबा मड़वे के बीच में रोने लगे। भाई मड़वा का खम्भा पकड़े रोने लगा। माँ जार-बेजार रोने लगी कि अब पुत्री दूसरे की हो गई। कन्या कहती है कि अब भाई-भतीजा छूट गया और सारा घर परिवार छूट गया। मैं अब दूसरे के अधिकार में हो गई, चूँकि सिन्दुरदान हो गया।

(७)

बगिया में खड़ा भेलन दुलरइतो बेटी, बगिया सोहावन हे।
हथवा पसारि मलिनियाँ से हमें फुलवा लोढ़ब हे।

धीर-धरूँ अहे मालिन धीर धरऽ अउरो गम्भीर बनु हे।
दुलहा होबे दऽ कचनार तबही फुलवा लोढ़ब हे।

मड़वा में खड़ा भेलन दुलरइतो बेटी मड़वा सोहावन हे।
हथवा पसारि दुलारा दुलरा, आजु धानी हम्मर हे।

धीर धरूँ अजी प्रभु धीर धरऽ अउरो गम्भीर बनु हे।
जबे बाबू करिहे कनियादान तबे तोहर होयब हे।

अर्थ

जब प्यारी बेटी बगीचा में खड़ी हुई तो बाग सुन्दर लगने लगा। मालिन ने हाथ फैलाकर फूल चुनना शुरू कर दिया। इस पर बेटी ने कहा कि अभी धैर्य धारण

करो, गम्भीर बने रहो । जब दुलहा कचनार (फूल या हरा भरा) हो जायगा, तभी फूल चुनकर देना । पुनश्च, जब बेटी मड़वा में खड़ी हुई तो मड़वा सुन्दर लगने लगा और हाथ फैलाकर दुलहा अपनी पत्नी को अपनाने लगा तो कन्या ने अपने पति से धैर्य धारण करने के लिए कहा कि जब पिताजी कन्यादान कर देंगे, तभी मैं तुम्हारी होऊँगी ।

(८)

नेटुआ, तरे डोला रखियो मोसाफिर आयो चलन के बेयार रे ।
केरे कहे बेटी नित-उठि अइहँऽ केरे कहे छव मास रे ।
केरे कहे बहिनी अवसर पर अइहँऽ केरे कहे क्या काम रे ?
अम्मा कहे बेटी नित-उठि अइहँऽ, बावा कहे छव मास रे ।
भइया कहे बहिनी अवसर पर अइहँऽ, भौजी कहे न कछु काम रे ।
केहूँ जे दिहले डाली भर सोनवाँ, केहूँ दिहले धेनु गाय रे ।
केहूँ जे दिहले हाथ के अंगुठिया, केहूँ दिहले गले हार रे ।
अम्मा जे दिहले डाली भर सोनवाँ, बाबुजी दिहले धेनु गाय रे ।
भइया जी दिहले हाथ के अंगुठिया, भौजी दिहले गले हार रे ।
मइया जे रोवे बहे गंगा-जमुनवाँ, बाबू रोवे बहे नीर रे ।
चाची जे रोवे भिंजे चुनरिया, भौजी के मन में अनंद रे ।।

अर्थ

हे नर्तक, पालकी को थोड़ा रोक रखना, मुसाफिर को चलने का समय आ गया है (बिदाई की हवा चल रही है— रोना-धोना, लेन-देन चल रहा है) । कौन कहता है कि बेटी नित्य उठकर आना, कौन कहता है कि छह महीने पर आना, कौन कहता है कि बहन, अवसर आने पर आना और कौन कहता है कि यहाँ अब क्या काम है ? माँ कहती है कि बेटी नित्य उठकर चले आना, पिता कहते हैं कि छह महीने पर आना, भाई कहता है कि कार्य पड़ने पर आना, और भाभी कहती है कि अब यहाँ क्या काम है ? कुछ नहीं । किसने डाली भरकर सोना दिया, किसने दुधारू गाय दी, किसने हाथ की अंगूठी दी और किसने गले की हार दी । माता ने डाली भर कर सोना दिया, पिताजी ने लगहर गाय दी, भाई जी ने हाथ की अंगूठी और भाभी ने गले की हार दी । माँ के रोने से गंगा-यमुना प्रवाहित होने लगी, पिताजी के रोने से जल प्रवाह होने लगा । चाची के रोने से उसकी चुनरी भींगने लगी और भाभी को तो आंनद हो रहा है ।

(९)

बाबू के दुअरा चनन करा गछिया,
ताही तर दुलारी बेटी खाड़ से बाबू न बोलई हे।

बाट जे पूछऽ हे, बटोहियो न बोलई,
पनघट न बोले पनिहारिन बाबू न बोलई हे।

अन-धन देलऽ बाबू, सोना-चानी देलऽ,
मोती-मूँगा देलऽ अनमोल हे।

एक नहीं देलऽ बाबू, चुल्हा उचकुनियाँ,
सासु दिहले ओरहाना, से बाबू न बोलई हे।।

अर्थ

पिता के दरवाजे पर चंदन का वृक्ष है, नवविवाहिता कन्या श्वसुराल से पहली बार लौटकर मायके में आई है। वह श्वसुराल के अनुभव को सुनाती है तो उसके पिता मूक हो जाते हैं (नहीं बोलते हैं) उसकी बात सुनकर मार्ग के बटोही और पनघट की पनिहारिने भी मूक हो जाती हैं। दुलारी बेटी कहती है कि पिताजी, आपने अन्न-धन, सोना-चाँदी, अमूल्य मूँगा-मोती, सब कुछ दिया, केवल चुल्हे का ठिकरा (जिससे बर्त्तन को ऊँचा किया जाता है) नहीं दिया जिससे सास उलहना दिया करती है। (भला यह बात सुनकर कौन नहीं मूक हो जायेगा ?)

(१०)

कहवाँ के सेनुरिया सेनूर बेचे आयल,
कहवाँ के बेटी सुन्नर, सेनूर बेसाहले हे।

अनजानो गाँव के सेनुरिया सेनूर बेचे आयल,
अनजानो गाँव के बेटी सुन्नर, सेनूर बेसहाले हे।

अर्थ

कहाँ से सिन्दुर बेचने वाला आया है और कहाँ की सुन्दरी बेटी सिन्दुर खरीद रही है। अमुक गाँव से सिन्दुर बेचने वाला आया है और अमुक गाँव की सुन्दरी बेटी सिन्दुर खरीद रही है। (इसमें वर-वधू के गाँव के नाम रहता है)

(११)

सम्हर के बइठ जा बेटी, वर सेनूर लगाता है।
इहे सेनूर के जरिये, तुझे अपना बनाता है,

तुम्हारे मांग के लाली, अचल अहिवात हो जावे,
अचल अहिवात हो जावे, येही हम सब मनाते हैं।

अर्थ

इस लोकगीत (खड़ी बोली मगही मिश्रित) में कन्या को सम्हलकर बैठने का आदेश दिया जाता है क्योंकि वर सिन्दुर लगा रहा है। इसी सिन्दुर के द्वारा वर कन्या को अपनी पत्नी कबूल करता है। लोग उसके अचल सुहाग की कामना करते हैं।

(१२)

दान कयलऽ जी बाबा दान कयलऽ,
कुस-पानी देके बिरान कयलऽ।

दान कयलऽ जी चाचा दान कयलऽ,
कुस-पानी देके बिरान कयलऽ।

अर्थ

कन्या दान के बाद पुत्री कहती है कि हे बाबा, आपने मुझे दान कर दिया। कुश-पानी देकर पराई बना दिया। वह चाचा से भी यही बात कहती है।



कोहबर

मगध प्रदेश में वर और वधू दोनों पक्ष में कोहबर लिखने की प्रथा है । परंतु वधू पक्ष में इसका विशेष महत्व है। विवाह के बाद वधू या कन्या के घर पर एक घर को बड़े ही कलित ढंग से सजाया जाता है । जमीन और दिवाल पर विविध प्रकार की अल्पनाएँ चित्रित की जाती हैं । विवाहोपरांत प्रथम बार वर-बधू उस सुसज्जित गृह में प्रवेश करती हैं जहाँ सरहज और सालियाँ उनसे हास-परिहास करती हैं फिर रात्रि में वहीं वर-वधू को सोना पड़ता है । वर-बधू का यह प्रथम समागम होता है । यदि वर-वधू का प्रथम समागम मायके में नहीं हुआ तो यह वर के घर आने पर यहाँ बने कोहबर में होता है । कोहबर की कला, वहाँ के हास-परिहास और प्रथम समागम की तैयारी आदि से सम्बंधित सैकड़ो गीत मगध की मगही भाषा में प्रचलित मिलते हैं । ये सारे गीत कोहबर के नाम से जाने जाते हैं, यहाँ कुछ चुने हुए ऐसे गीत दिए गए हैं ।

(१)

कहऽ-कहऽ न अनजानो दुलहा बाबूजी के नाम, कोहबर ,
कहऽ मइया के नाम कोहबर, कहऽ बहिनी के नाम कोहबर ।

बाबूजी हथी सिव-संकर, मइया गौरी हमार कोहबर ,
कहऽ कहऽ अनजानो दुलहा चाचा के नाम कोहबर ।

चाचा जे हथी सिव-संकर, चाची गौरी हमार कोहबर ,
बाबूजी हथी महरजवा, मइया रानी हमार कोहबर । आदि ।।

अर्थ

विवाहोपरांत जब गाँठ जुड़े दुलहन और दुलहा कोहबर में प्रवेश करने जाता है तो गीत में स्त्रियाँ पिता, चाचा, माता आदि के बारे में पूछती हैं, और उसका उत्तर दिया जाता है । हे अमुक दुलहा, अपने पिता, माता और बहन का नाम बताओ ।

दुलहा कहता है कि मेरे पिता शिव-शंकर की तरह हैं और माता गौरी की तरह है। इसी प्रकार चाचा के नाम पूछने पर दुलहा चाचा-चाची को भी महादेव-गौरी की तरह बताता है । उसके पिता महाराज हैं और माँ रानी की तरह है ।

(२)

हरियर बँसवा कटवलूँ, डढ़िया लपि-लपि जाय, से जीरा छावल कोहबर ,

से हो पइसि सुतलन, दुलहा दुलरइतो दुलहा ,
साथे सजनावा केरा धियवा, से जीरा छावल कोहबर ।

ओते चलूँ ओते चलूँ, दुलहिन दुलरइतिन दुलहिन ,
रेसमी चदरिया मइल होयत से जीरा छावल कोहबर ।

एतना बचनियाँ जब सुनलन दुलरइतिन सुगई ,
खटिया उतरि भूइयाँ-लोटे, से जीरा छावल कोहबर ।

उठूँ ननद - उठूँ ननद जाहूँ कोहबरवा ,
सम्हारी लेहू लामी-लामी केस, से जीरा छावल कोहबर ।

कइसे उठी-कइसी उठी भउजी सोहागिन ,
छौड़ा-पुता बोलले कुबोल, से जीरा छावल कोहबर ।

अर्थ

हरे बाँस को कटाया जिसकी डाली नव जाती है, उसके सहारे जीरा से कोहबर बनाया । उसी कोहबर में प्रवेश कर दुलारा दुलहा सोया । उसके साथ सज्जन की पुत्री (दुल्हन) भी सोई । दुलहा कहता है कि दुलहन उधर चलो, मेरी रेशम की चादर गंदी हो जायगी । दुलारी दुलहन इतनी बात सुनकर क्रोधित हो गई और खाट से उतर कर जमीन पर पड़ गई । उसकी भाभी उसे उठा रही है कि बिखरे लम्बे केश को सम्हाल लो और कोहबर में चली जाओ । ननद कहती है कि भाभी, कैसे उठूँ, छौड़े-पुत्ते ने खराब बात कह दी है ।

(३)

कहवाँ के कोहबर लाल-पीयर फूल हे, कहवाँ के कोहबर पान से छवाबल हे ?
आंगन के कोहबर लाल-पीयर फूल हे, घरवा के कोहबर पान से छवाबल हे ।
सेही पइसि सुतलन दुलारो दुलहा राजा हे, साथ में सुतलन पंडितवा के धिया हे ।

ओते चलूँ-ओते चलूँ समुरजी के बेटवा हे, नइहरा के चुनरी मइला होय जाय हे।
एतना बचनियाँ जब सुनलन दुलहा राजा हे, कोहवर के सेजिया बाहर कर लेलन हे।

गरजे लागल बदरी बरसे लागल बुंदा हे, खोलूँ धानि-खोलूँ सुबरन केवाड़ हे।
कइसे हम खोली सामी सुबरन केवाड़ हे, हमरा बाबू से दहेज मत लिहँऽ हे।
हमरा अम्मा से जबाब मति करिहँऽ हे, तोहरो अम्मा से जबाब नहिं करबो हे।
हमारा से सामी कभी लेखा मत लिहँऽ हे, सहना भंडार सामी सौंपि हमरा दिहँऽ हे।

अर्थ

कहाँ के कोहबर में लाल-पीले फूल लगे हैं और कहाँ के कोहबर को पान से छाया गया है ? आंगन के कोहबर को लाल-पीले फूल से सजाया गया है । घर के कोहबर को पान से छाया गया है । उसमें प्रवेश कर राजा दुलहा सोया, साथ में पंडित की पुत्री सोई । वह कहती है कि श्वसुर जी के पुत्र थोड़ा उधर चलो, नैहर की चुनरी गंदी हो जायगी । इतनी बात जब दुलहा राजा ने सुनी तो अपनी शय्या कोहबर से बाहर कर ली । बाहर में बादल गरजने लगे, वर्षा होने लगी तो दूलहे ने कहा कि हे धनी, सुवर्ण कीवाड़ खोलो । पत्नी कहती है कि स्वामी, कैसे मैं सुवर्ण कीबाड़ खोलूँ । वादा करो कि हमारे पिता से दहेज नहीं लोगे, हमारी माँ से प्रश्नोत्तर नहीं करना । दुलहे ने सभी शर्त को मान लिया तो पत्नी कहती है कि हे स्वामी हमसे कभी लेखा-जोखा (हिसाब) मत लेना और सारा भण्डार हमें सौंप देना ।

(४)

आंगन में चकचक कोहबर अन्हार गे माई ,
लेसि देहूँ दियरा होयते इंजोर गे माई ।

पान अइसन पतरी सुहाग बाढ़ो तोर गे माई ,
रेसम के अंगिया समाय नहीं कोर गे माई ।

चोलिया के चोरवा भइया देहूँ न बँधाय गे माई ,
घामा में बान्हल भइया रहतन घमायल गे माई ।

अँचरा में बाँधल भइया रहतन लोभायल गे माई ,
खूँट-बरधा अइसन रहतन सरिआयल गे माई ।।

अर्थ

आंगन प्रकाश से चमक रहा है परंतु कोहबर अंधकार में है ! अत: दीपक जला दो, प्रकाश फैल जायगा । पान जैसी तन्बंगी वधू का सुहाग बढ़े । रेशम की चोली में शरीर का अंश भी नहीं प्रवेश करता । बहन भाई से अपने पति की शिकायत भरे लहजे में कहती है कि चोली चोर को वाँध रखो । परंतु धूप में वँधे रहने से वे गर्म हो जायेंगे । अत: हे भाई उन्हें आँचल में ही बँधे रहने दो जिससे वह मोहित रहेंगे । साथ ही खुट्टे के बैल की तरह सीधा-सादा बने रहेंगे ।

(५)

मोरवा-मंजुरवा केरा कोहवर हे, गांगी-जमुनि बिछावन लागई ।
जाही पइसि सुतथी अंजानो दुलहा हे, जवरे में सुतथी अंजानो सुगई ।

ओते सुतऽ-ओते सुतऽ सासु के धिअवा, तोरे चदरिया घामे मइल हे ।
होवे देहूँ-होवे देहूँ चदरिया मइल हे, धोबी घर धोआइये देबो हे ।

धोबिया धोवले जमुनवा-दह हे, सुखवे चननवा गछिया हे ।
बाट जे पूछले बटोहिया भइया हे, केकर पुता के चदरिया सूखे हे ।

अंजानो गाँव में बसथी सुमानो बाबू हे, उनकर पुत्ता के चदरिया सूखे हे ।।

अर्थ

मोर कर्निका से कलित कोहबर है उसमें गांगी-जमुनी लगी शय्या बीछा दी गई है । उस कोहबर में प्रवेश कर अमुक दुलहा शयन कर रहे हैं और साथ में अमुक सुग्गी (वधू) सो रही है । वधू कहती है कि हे सास-पुत्र थोड़ा उधर सोवें क्योंकि आपकी चादर धूप से मैल हो गई है । दुलहा कहता है कि चादर को मैल रहने दो, इसे धोबी के घर धुला दूगाँ । धोबी ने यमुना नदी में चादर धो दी और चंदन-वृक्ष पर सुखाने लगा । बाट में चलने वाले बटोही पूछते हैं कि यह किसके पुत्र की चादर सूख रही है ? धोबी कहता है कि अमुक गाँव के सम्मानित बाबू हैं, उन्हीं के पुत्र की चादर सूख रही है ।

(६)

परबत ऊपर चनन केरा गाछ, लिखूँ कोहबर ,
जाही तर दुलारो दुलहा, खेले जुगवा-सार, लिखूँ कोहबर ।
किया तुहूँ अजी बाबू, खेलबऽ जुगवा-सार, लिखूँ कोहबर ,
तोरो दुलरइतिन सुगई नइहरवा भागल जाय, लिखूँ कोहबर ।

जाय देहूँ-जाय देहूँ अम्माजी के पास, लिखूँ कोहबर ,
उनकर पीठ पर पटुआ के साटी, लिखूँ कोहबर ।

ई मत समझऽ बाबू अम्मा निरमोहिया, लिखूँ कोहबर ,
उनखर धिया हइन परान से पियार, लिखूँ कोहबर ।।

अर्थ

पहाड़ के ऊपर चंदन का वृक्ष है, उसी के नीचे दुलहा जुआ की गोटी खेल रहा है । यहाँ कोहबर लिखा जा रहा है, उसमें से किसी ने दुलहे को कहा कि तुम यहाँ जुआ खेल रहे हैं और उधर तुम्हारी दुलारी सुकी नैहर चली जा रही है । वह कहता है कि उसे अपनी माँ के पास जाने दो, वहाँ उनकी पीठ पर पाट की साटी पड़ेगी-कड़ी पिटाई होगी । संवाददाता कहता है कि उसकी माँ को निर्मोही नहीं समझना । उसकी पुत्री उसके प्राण से भी अधिक प्यारी-दुलारी है ।

(७)

आँटा पिस-पिस कोहबर लिखली, लिखली मन-चित लाई रे ।
दिलजान लिखे कोहबर, मनमोहन लिखे कोहबर ।

जाही पइसि सुतलन अनजानो दुलहा, जवरे सजनवाँ के धिया रे ।
ओते सुतऽ-ओते सुतऽ सुगई, अनजानो सुगई, तोरे पीठ छुटय पसेन रे ।

एतना बचन जब सुनलन अनजानो सुगई रूसिके नइहर चलि जाय रे ।
रहिया में भेंटलन भइया अनजानो भइया, कहाँ बहिनी चललि अकेल रे ?

कहलो न जाय भइया लाज के बतिया, पर-पुत्ता बोलले कुबोल रे ।
हँसि-हँसि बोलथी दुलहा सरहजिया, देहूँ न पियारो-गले हाथ रे ।

मानूँ-मानूँ भाभी के बतिया ननदिया, आज सोहग केरा रात रे ।
कइसे में मानूँ भउजी तोहरो बचनियाँ, पर पुत्ता बोलले कुबोल रे ।

मसकाय देलन संखा चूरी, डाँसल सेजिया उदास रे ।
मानूँ ननद हे मोरी बचनियाँ, संखा-चूरी-देवो-पेहनाय रे ।

सेजिया डँसाय देवो, गांगी-जमुनी लगाय रे ।
मानले अनजानो सुगई, चलेलि बिहँसि रे ।

दिलजान लिखे कोहबर, मनमोहन लिखे कोहबर ।।

अर्थ

आटा पीस-पीसकर घोल बनाया और उससे मनोयोगपूर्वक कोहबर लिखा गया। दिलोजान से मन को मोहित करने वाला कोहबर लिखा गया जिसमें प्रवेश कर अमुक दुलहा शयन कर रहा है, साथ में सज्जन की पुत्री सो रही है। दुलहा कहता है कि हे अमुक सुकी थोड़ा हटकर सोओ, तुम्हारे शरीर से पसीना छूट रहा है। अमुक सुकी ने इतनी बातें सूनी तो रूठकर नैहर चल पड़ी। रास्ते में उसका भाई मिल गया तो पूछा कि बहन अकेली कहाँ जा रही हो ? हे भाई लज्जा, की बात कही नहीं जाती, दूसरे के पुत्र ने (उसका पति) दुर्बचन कह दिया है। उधर दुलहे ने हँसकर अपनी सरहज से कहा कि प्रिय को गले में हाथ देकर मना लावें। सरहज ने अपनी ननद से कहा कि भाभी की बात मान जाओ, आज सुहाग की रात है। हे भाभी, तुम्हारी बात कैसे मानूँ ? दूसरे के पुत्र ने दुर्बचन कह दिया है। मेरी शंख की चूड़ी फोड़ दी है, बिछावन को उदास बना दिया है। सरहज ने पुनः कहा- हे ननद, मेरी बात मान जाओ, तुम्हे शंख की चूड़ी पहना दूँगी, बिछावन लगा दूँगी जिसमें गाँगी-जमुनी लगी होगी। यह बात सुनकर वधू मान गई और विहँस कर कोहबर में चली गई जो कोहबर दिलोजान से मन को मोहित करने वाला लिखा गया था।

(९)

सोने केरा खटिया, रूपे केरा मचिया, लाल-पीयर चारो पाट जी।
एक हाथे मलवा दूसर हाथे अबटन, सीता सिरहनवाँ लेले ठाड़ जी।

गंगा लेई किरिया तू खाहूँजी सीता, तब धरूँ पंलग पर पाँव जी।
हाथे गंगाजल सीता देई लेले, गंगा हो गेलन जलबाय जी।

येहू किरिअवा सीता हम न पतिअयबो, सुरूज किरिअवा तुहू खाहू जी।
जबहि सीताजी सुरूज हाथ लिहले, सुरूज हो गेलन छपि-छाह जी।

येहू किरिअवा सीता हम न पतिअबो, अगिन किरिअवा तुहूँ खाहू जी।
जबहि सीताजी अगिन हाथ लिहले अगिन हो गेलन छरिछाय जी।

कहथिन रामचन्दर सुनूँ सीता देई, अब हम दास तोहार जी।
कइसन पुरूस के जात बनावल, झूठो लगावे अकलंक जी।

फाटत भूइयाँ ओही में समयती, मुहँवा न देखती तोहार जी॥

अर्थ

सोने का पंलग है और चाँदी का मचिया है । उसके चारो पावे लाल-पीले रंग के हैं। हाथ में मलवा और उबटन लेकर सीताजी कोहवर में प्रवेश करती है और पलंग के सिरहाने खड़ी है । राम कहते हैं कि गंगाजल लेकर कसम खाओ तब पलंग पर पैर धरना । सीता ने हाथ में ज्योंही गंगाजल लिया त्योंही वह विलीन हो गया । राम कहते हैं कि इस कसम पर मुझे विश्वास नहीं है, तुम सूर्य की कसम खाओ । सीता ने ज्योंही सूरज को हाथ में लिया, त्योंहीं वह छिपकर शीतल हो गया । इस कसम पर भी राम विश्वास नहीं करते और अग्नि की कसम खाने कहते हैं । सीता ने ज्योहीं अग्नि को हाथ में लिया वह जलकर राख हो गई । तब राम ने सीता से कहा कि अब मैं तुम्हारा दास हो गया । इसपर सीता ने कहा कि पुरुष जाति कैसी है जो झूठा दोष लगाती है । यदि जमीन फट जाती तो मैं उसी में प्रवेश कर जाती और पुरुषों का मुँह नहीं देखती । (भारतीय आदर्श नारी में भी विद्रोह-भावना)

(१०)

रचियक लिखलूँ हम कोहबर ये कोहबर,
लिखली हम मन चितलाय, दुलरी लिखे कोहबर ।

जाहि पइसि सुतलन दुलहा दुलरइतो दुलहा,
जवरे दुलारी बेटी साथ, लिखे कोहबर ।

गते-गते डोलई चुनरी लगल बेनियाँ,
होवे लगल दुलहिन से बात, दुलारी लिखे कोहबर ।

हम तो हियो धानि तोहरो परनवाँ,
तूँ हहूँ हमर प्राण, दुलारी लिखे कोहबर ।

अर्थ

सज-सँवार कर, रचकर हमने कोहबर लिखा । दुलारी सखियों ने मन लगा कर कोहबर लिखा । उसमें प्रवेशकर अमुक दुलहा सो गया । साथ में दुलारी बेटी सो रही है । धीरे-धीरे झालरदार पंखा डोलाया जा रहा है । दुलहा दुलहन से बातें करने लगा । दुलहा कहता है कि मैं तुम्हारे प्राण हूँ और तुम हमारे प्राण हो ।

(११)

तनियक अइपन चनन लिखलो हम कोहबर,
जाहि पइसि सुतलन दुलहा दुलरइतो दुलहा ।

जवरे दुलरइतिन दुलहिन साथ हे हरी ,
एक पहर बितले, दूसर पहर बितले ।
हो गेलो फरिछ-बिहान, किरिंग-छिटकायल हे हरी ,
कोहबर पइसि दादी दुलहा जगावे हे ,
हो गेलो फरिछ-बिहान, किरिंग-छिटकायल हे हरी ।
उठि केरा जगबथी राम के सीता सुगई हे ।
उठऽ प्राभु हो गेलो बिहान उठहूँ प्रभु कोहबर हे हरी ,
कइसे चिन्हलऽ भे गेलो विहान कहहूँ सीरी राम हे हरी ।
भेल फरिछ प्राभु कउवा डार बोलले हे ,
गइया दुहन घर-घर आवे सुन हूँ मोर सामी हे हरी ।
मोर मांग मोतिया सभे बदरंग भेल हे ,
ऐही से चिन्हलूँ भेल बिहान उठहूँ सीरी राम हे हरी ।।

अर्थ

थोड़ा चावल के घोल में चंदन मिलाकर हमने कोहबर लिखा । उसमें प्रवेश कर दुलारा दुलहा शयन कर रहा है, साथ में दुलारी दुलहन सो रही है । एक-दो प्रहर बीतने के बाद स्वच्छ भोर हो गई, सूर्य-रश्मियाँ छिटकने लगीं । कोहबर में जाकर दादी दुलहा को जगाने लगी कि भोर हो गई, सूर्य किरण छिटकने लगी । दुलहन सीता भी राम को जगाने लगी तो राम ने पूछा कि तुम कैसे जान गई कि भोर हो गई । सीता ने कहा कि कौवे डाली पर बोलने लगे और गोरखी घर-घर गाये दुहने आने लगे और मेरे मांग के सारे मोती उदास हो गए । इन सबके कारण मैं समझ गई कि भोर हो गई है ।

(१२)

लगल डूबे बेरिया, फुलायल झिंगनिया अब मोरा धनिया अइहे कोहबरिया हे ।
तोर कोहबरिया प्रभु कइसे में अइयो अंगना में ठाड़ मोरे सास-बैरिनिया ।
सासु खिअइहँऽ धानी दाल-भात कोरवा, चुपक से आ जइहँऽ हमर कोहबरिया ।
तोर कोहबरिया प्रभु कइसे में अइयो, ओसरा में ठाढ़ मोरे गोतनी बैरिनिया ।
गोतनी के दिहँऽ तुहूँ भरि नरिअरवा, चुपके से आजइहँऽ हमर कोहबरिया ।
तोर कोहबरिया प्रभु कइसे में अइयो, दुअरे खेलत हथी ननदी बैरिनिया ।
ननदी के दिहँऽ तुहूँ सुपली-मउनियाँ, चुपके से आ जइहँऽ हमर कोहबरिया ।।

अर्थ

संध्या समय झींगी के फूल फूलने लगे तो दुलहे को आशा जगी कि अब दुलहन मेरे कोहबर में आवेगी । परंतु दुलहन कहती है कि हे स्वामी मैं कोहबर में कैसे आऊँ ? आंगन में तो बैरी बनकर सास खड़ी हैं । दुलहा कहता है कि सास को दाल-भात का कौर खिला देना और चुपके से कोहबर में आ जाना । हे स्वामी कोहबर में कैसे आऊँ ? सायबान में बैरी गोतनी खड़ी है । गोतनी को तुम हुक्का भर कर दे देना और चुपके से कोहबर में प्रवेश कर जाना । इसी प्रकार ननद को खेलने के लिए सुपली-मौनी दे देना और तुम चुपके से कोहबर में चली आना ।

(१३)

अंगना में महकई चनन केरा गछिया, बिछाई गेलई हे धानी सुगई के सेजिया ।
से डोले लगल हे हुआँ हार लगल बेनिया, से डोले लगल हे, सुहाग लगल बेनियाँ ।

पूरबा के झोंका में महमह-बेयरिया से आ गेलो हे कोहबर सुख नीनिया ।
भुला गेलो हे मोरे हार लगल बेनिया, हेरा गेलो हे मोरे सुहाग लगल बेनियाँ ।

चिपरी पर आग लावे ननदी अंगनवाँ, उहई पर देख अइली हार लगल बेनियाँ ।
मइया-भइया-बाबा-खउकी तुहूँ मोर धानियाँ, लगाई देले हे मोरा बहिनि के चोरिया ।

आग लावे गेली हम ननदी के अंगना, उहई पऽ देखली हम हार लगल बेनियाँ ।
आवे देहूँ-आवे देहूँ सोनपुर के हटिया, बेसाह देबो हे धानी हार लगल बेनियाँ ।

अर्थ

आंगन में सुगंधित चंदन का वृक्ष है, उसी वृक्ष के नीचे दुलहिन की शय्या लग गई और वहाँ सुहाग और हार गूँथा पंखा डोलने लगा । पुरबाई में महमह गंध फैल रही थी । अतः उस कोहबर में दुलहे की नींद आ गई, दुलहन भी सोकर उठी तो सौभाग्य सूचक हार लगा बेनिया कहीं नहीं दीखा । वह पंखा भूल गया। एक दिन वधू अपनी ननद के घर आग लाने लगी तो बेनिया को वहीं देखा । यह सुनकर उसका पति क्रोधित हो उठा और पत्नी की माँ-बाप तथा भाई को गाली देने लगा कि तुमने, मेरी बहन को चोरी का दोष लगा दिया है । पत्नी ने कहा कि मैं ननद के आंगन में आग लाने गई थी तो वहीं हार लगे बेनिया को देखा । पति ने पत्नी को आश्वासन दिया कि सोनपुर का मेला आने दो, हार लगा बेनिया खरीद दूँगा ।

(१४)

मोरे पिछुअरवा बबुरी के गछिया, बबुरी फुलले कचनार हे।
सेई फूल लोढ़ले दुलहा अनजानो दुलहा,गूँथी देहूँ निरमल हार हे।

सेई हार पेन्हले दुलहा अनजानो दूलहा, पेन्ही चलले ससुरार हे।
बीचे रे अवधपुर में घोड़ा दउड़वले, टूटि गेल निरमल हार हे।

पनिया भरइते तोहि कुइयाँ पनिहारिन, चूनि देहूँ निरमल हार हे।
निरमल हार बाबू माई रे बहिन चुनथुन अउरो पातर तिरिअवा हे।

माई रे बहिनियाँ, चेरी घर घरूअरिया पातर तिरिअवा नइहरवा हे।
मचिया बइठले तोहि अजी सरहजिया, कउन रंग पातर तिरिअवा हे।

रोवऽ मत कानऽ मत अजी ननदोसिया, सामवरन मोर ननदिया हे।
ये हो सरहजिया माई जंगली-छिनार, दूसी देलन पातर तिरअवा हे ।।

अर्थ

मेरे घर के पीछे बवूल का पेड़ है जो फूल से भर-पूर गया है। उसी फूल को अमुक दुलहे ने चुना और एक स्वच्छ हार बनाई। उस हार को अमुक दुलहा पहनकर श्वसुराल चला। अवधपुर के बीच रास्ते में घोड़ा दौड़ाते समय उसकी हार टूट गई तो उसने कुएँ की पनिहारिन से हार चुन देने के लिए कहा। पनिहारिन ने कड़े शब्दों में कहा कि इस हार को तुम्हारी माँ-बहन चुनेगी या तुम्हारी पतली पत्नी चुनेगी। माँ-बहन घर में रसोई बना रही है और पतली पत्नी नैहर में है। पुनः दुलहे ने मचिया पर बैठी सरहज से पूछा कि मेरी तन्वगी पत्नी किस वर्ण की है ? इसपर सरहज ने कहा कि रोने की जरूरत नहीं, मेरी ननद साँवली है। इसपर दुलहे ने सरहज को गाली दी कि सरहज जंगली और कुलटा है , मेरी पत्नी की शिकायत कर दी।

(१५)

नदिया किनारे जीरवा बुनी देली हे, फरे-फुले घवदी गेले हे।
घोड़वा चढ़ले आवथी अनजानो दुलहा हे, सब जीरवा सिरोकी लेलन हे।
जीरवा सिरोकी दुलहा पगड़िया बंधलन हे, उनकर पगिया अमोघ करे हे।
डड़िया चढ़ले आवथी अनजानो सुगई हे, सब जीरवा सिरोकी लेलन हे।
जीरवा सिरोकी सुगई खोइछा लेलन हे, उनकर खोइछा अमोघ करे हे ।।

अर्थ

नदी किनारे जीरा बुन दिया गया, फल-फूल से लद गया । उसी रास्ते से अमुक दुलहा घोड़े पर सवार हो चला तो जीरा को सिरहोर लिया और अपनी पगड़ी में बाँध लिया । पगड़ी गंध से महकने लगी । डोली पर चढ़ी अमुक दुलहन भी वहाँ से गुजरी तो उसने भी जीरे को सिरहोर कर अपने खोइछे मे रख लिया । उसका खोइछा भी सुगंध से भर उठा ।

(१६)

हरिअर दुभिया सोहावन लागे, फरे-फूले दौना झुकी गेलई हे ।
घोड़वा दउड़वले आवे दुलहवा, जिनकर अभरन अमोघ करे हे ।

धाई-धुई पइसल सुगई सेजिया, कहूँ धनि खेम-कुसल हे ।
चलूँ धनि हम्मर देसवा जहाँ दुभिया सोहावन लागे हे ।

कइसे जयबो हम प्रभु तोहर देसवा, रोई-रोई मइया मरि जायत हे ।
कलपि-कलपि बाबू रोइहें, संघवा के सखि छुटि जइहें हे ।

एतना बचनियाँ सुनि के दुलरइता दुलहा बोललन सुनूँ धनि मोर हे ।
मोरे मइया होतो धनि तोहर मइया, बाबू मोरा होतो तोहर बाप हे ।

मोरे बहिनी होतो धानी तोरे सखिया, मोरा भइया लहुरा देवरवा हे ।
नइहरा के सुख प्रभुजी कइसे तेयागब, सुपली-मउनी कइसे खेलब हे ।

अर्थ

हरे-हरे दूब सुहाने लग रहे हैं । दौना फूल-फल से झुक गया है। उसी रास्ते से घोड़ा पर दुलहा गुजर रहा है तो उसका आभूषण सुगंध से महक रहा है । वह दौड़कर अपनी सुकी (पत्नी) के घर में प्रवेश किया और उसका कुशल-क्षेम पूछा । पति ने कहा कि धनी, हमारे देश में चलो जहाँ दुर्बाच्छादित धरती सुन्दर लगती है। इस पर पत्नी कहती है कि मैं आपके देश कैसे चलूँ ? रो-रोकर मेरी माँ मर जायगी । बाबूजी कलपते रहेंगे, संग की सखियाँ छूट जायेंगी। दुलारा दुलहा इतनी बात सुनकर पत्नी से कहता है कि मेरी माता, तुम्हारी माँ होगी, मेरे पिताजी तुम्हारे पिता होंगे मेरी बहन तुम्हारी सखि होगी और मेरा भाई तुम्हारा प्यारा छोटा देवर होगा। इस पर भी पत्नी कहती हे कि हे प्रभु, नैहर का सुख कैसे त्यागूँ, वहाँ सुपली-मौनी का खेल कैसे खेलूँगी ? मायके का अपूर्व सुख का चित्रण है ।

(१७)

कोठे ऊपर में दुलहा सुतल हे, दुलहा बोलावे लाड़ो कइसे आवे हे ?
पायल अवाज सुनि दादा जागे हे, नया दुलहिनिया लाजे कइसे आवे हे ।

अर्थ

कोठे के ऊपर, दुलहा सोया है, उसके बुलाने से दुलहन कैसे आवेगी ? पायल की आवाज सुनकर दादा जाग जायेंगे । नयी दुलहन लज्जावाश कैसे आवेगी ?

(१८)

मोरे पिछुअरवा लवंगिया के गछिया, लवंग चुवले सारी रात हे ।
लवंग चुनिये चुनि सेजिया डँसवलूँ, बीचे-बीचे रेसम के डोर हे ।

ताहि पइसि सुतले दुलहा अनजानो दुलहा, जउरे सजनवाँ के धिया हे ।
ओते-ओते सुतहूँ दुलरइतो सुगई, तोरा गरमी मोरा न सोहाय हे ।

एतना बचनियाँ जब सुनलन सुगई, रोअत नइहरवा चलि जाय हे ।
मोर पिछुअरवा मलहवा भइया हितवा, मोही के पार-उतारऽ हे ।

रात अमले बहिनी अतही गँवावऽ, भोरे उतारब-पार हे ।
भला जनि बोलई भइया मलहवा, तोरे बोली मोहे ने सोहाय हे ।

चान-सूरूज अइसन प्राभु तेजलो, तोहरो के संग कइसे जायब हे ।
एके नइया आवे लवंग-इलायची, दोसरे आवे पाकल पान हे ।

तेसर नइया आवे ओहे पनखउका, साथे-साथे उतरब पार हे ।।

अर्थ

मेरे घर के पीछे लवंग का गाछ है, वह सारी रात टपकता है । उसे चुनकर शय्या पर बीछा दिया गया और बीच-बीच में रेशम की डोरी डाल दी गई । उसी कोहबर में अमुक दुलहा सोया और साथ में सज्जन की पुत्री सोई दुलहे ने कहा कि थोड़ा हटकर सोओ, तुम्हारी गर्मी मुझे अच्छी नहीं लगती । इतनी बात सुनते ही दुलहन रोती हुई नैहर चली तो रास्ते में नदी पार करने के लिए अपने पीछे के मल्लाह को कहा । मल्लाह ने रात्रि का समय यहीं बीताने के लिए कहा तो उसने डाँट दिया । तुमने भली बात नहीं कही, तुम्हारी बोली हमें अच्छी नहीं लगी । चाँद-सूर्य की तरह अपने पति को त्याग आई है, तुम्हारे साथ मैं कैसे जाऊँगी ? उधर से लवंग इलायची भरी एक नाव आगई है , दूसरी नाव में पका पान आ गया और तीसरी नाव में पान को चबाने वाला ([illegible] का पति) आ गया, दुलहन उसी के साथ नदी पार करेगी ।

(१९)

पिया अयलन हमरी अंगनवाँ, अंगनवाँ धमसे लगल हे ,
पिया जब चढ़लन चउकठिया, चउकठिया मचके लगल हे ।

पिया अयलन हमरी सेजरिया, सेजरिया देह काँपल हे ,
पिया भरलन हमरा के गोदिया, पसेना देह टपकल हे ।

पिया छोड़ू हमरो अचरवा, नइहरवा हम भागी जयबो हे ,
पिया लाई देहूँ चम्पा कलिया, तऽ ससुरिया रहबो हे ।

अर्थ

इस लोक गीत में प्रथम समागम का बड़ा रोमांचक वर्णन मिलता है । नयिका (दुलहन) कहती है कि प्रिया जब आंगन में आए तो आंगन सुगंधि से भर गया । जैसे ही वे चौखट पर पैर रखते हैं तो चौखट मचकने लगता है । प्रिय जैसे ही शय्या पर पहुँचता है वैसे ही शय्या पर नायिका का वदन काँपने लगता है । जब वह नायिका को गोद में लेता है तो उसके शरीर से पसेना टपकने लगता है (सात्विकभाव-स्वेदन) नायिका कहती है कि प्रिय मेरा आंचल छोड़ दो नहीं तो नैहर भाग जाऊँगी । वह एक शर्त पर श्वसुरार रहने को प्रस्तुत है कि मुझे नैहर से चम्पा की कली ला दो ।

(२०)

अगे माई लेस देहूँ चेरिया बेटिया मानिक दियरा हे ,
अगे माई बसहर घर में दियरा बराय देहूँ, सुततन दुलरू वर हे ।

पहिली पहर बीतल राति, करथिन इनती-विनती हे ,
लेहूँ धानी सोने के सिन्होरवा, तऽ मुँह-फेरी सोवऽ हूँ हे ।

अपन सिन्होरवा प्रभु बहिनी दिहँऽ, उनके जवेर सुतिहँऽ हे ,
पुरूब दने उगले तऽ चान, नाहि मुँह फेरी सोवऽबो हे ।

दोसर पहर बीतल राति, करथिन इनती-विनती हे ,
लेहूँ धानी हाथ के कंगनवाँ, तऽ मुँह-फेरी सोवऽ हूँ हे ।

अपन कंगनवा प्रभु बहिनी दिहँऽ, उनके जवेर सुतिहँऽ हे ,
पुरूब दने उगले तऽ चान, नाहि मुँह फेरी सोवऽबो हे ।

तेसर पहर बीतल राति, करथिन इनती-विनती हे ,
लेहूँ धानी सबुजी चुनरिया, तऽ मुँह फेरी सोवऽ हूँ हे ।

अपन चुनरिया प्रभु बहिनी दिहँऽ, उनके जवेर सुतिहँऽ हे ,
पुरूब के सुरूज पछिम उगतो, नाहि मुँह फेरी सोयबो हे ।

चउठा पहर बीतल राति, करथिन इनती-विनती हे ,
पह-फाटल लागल सिनेह तऽ कागा बैरिन भेल हे ।।

अर्थ

बाँस के घर में दासी को मानिक-दीपक जलाने को कहा गया । उसी घर में दुलारा वर शयन करेगा । वर को सोते रात्रि का प्रथम प्रहर व्यतीत हो गया और वह अपनी नवेली को अपनी ओर घूमकर सोने के लिए प्रार्थना करता रहा । वह सोने की सिन्दुरदानी देने का वचन देता है । इस पर पत्नी बिगड़कर व्यंग्यात्मक लहजे में कहती है कि सोने का सिन्होरा अपनी बहन को देना और उन्हीं के साथ सो जाना । प्रथम पक्ष का चाँद पूरब की ओर भी उग जायगा तौ भी मुहँ फेर कर तुम्हारी ओर नहीं सोऊँगी । दूसरा प्रहर भी रात्रि बीत गई और दुलहा विनती करता रहा । वह सोने का कंगन देने लगा तो पत्नी ने पुनः पूर्व की तरह उत्तर दिया । इस प्रकार रात्रि का तीसरा प्रहर भी बीत गया । वह सब्ज रंग की चुनरी देने लगा तो पत्नी बिगड़कर कहने लगी कि यह चुनरी अपनी बहन को दे देना । पूर्व दिशा में उगने वाला सूर्य पश्चिम में उग जायगा तो भी तुम्हारी ओर मुँह कर नहीं सोऊँगी। इस प्रकार प्रार्थना करते रात्रि का चौथा प्रहर भी वीत गया । पौ फटने लगी, उषा की लालिमा के साथ स्नेह गहराया तो बैरी काग बोलना शुरू कर देता है और पति-पत्नी समागम से वँचित रह जाते हैं ।

(२१)

बाबा के दुलरूआ अनजानो दुलाहा, से राहे-बाटे महल उठाय मांगे हे ।
महल बीचे खिड़की कटाय मांगे हे, ओकरा में सेजिया डँसाय मांगे हे ।

सासुजी के दुलरी सोलाय मांगे हे, हाथी-घोड़ा पालकी दहेज मांगे हे ।
छोटका सरवा खवास मांगे हे, छोटकी सलिया लोकदिन मांगे हे ।

अर्थ

बाबा के दुलारा पुत्र राह में ही महल बनाने कहता है और उसमें खिड़की लगाकर शय्या बीछाने कहता है । साथ ही अपनी सास की दुलारी बेटी को सुलाने कहता है । ऊपर से हाथी-घोड़ा और पालकी के साथ दहेज मांगता है । छोटे साले को नौकर और छोटी साली को लोकदिन के रूप में मांगता है ।

(२२)

आधी ही रात हम किनका के जगवई हरि नागर हे ?
लाल रूसल पिअवा चलले विदेस गोविंद हरि नागर हे ।

आधी ही रात हम सासु के जगवली हरि नागर हे ।
लाल बेटा रूसल चललन विदेस, गोविंद हरि नागर हे ।

किया तोरा अहो बाबू भोजन-विगड़लई हरि नागर हे ?
लाल किया तोरा सेजिया अकेला, गोविंद हरि नागर हे ?

नाहीं मोरा अगे अम्मा भोजन विगड़लई हरि नागर हे ।
लाल नहीं मोरा सेजिया अकेला, गोविदं हरि नागर हे ।

एक ही बात केरा अवहई मलोलवा हरि नागर हे ।
लाला कोहवर धनियाँ वोलले कुवोल, गोविंद हरि नागर हे ।

बोले देहूँ-बोले देहूँ आजु के रतिया हरि नागर हे ।
लाल अब ही तो बुध लड़कइया गोविंद हरि नागर हे ।

अर्थ

कोहबर में दुलहन ने कुछ कटुवाणी कह दी । इस पर दुलहे को बुरा लगा और विदेश जाने को उद्धत हो गया । दुलहन घबरा गई और सोचने लगी कि इस अर्द्धरात्रि में मैं क्या करूँ ? रूठा हुआ प्रिय विदेश जा रहा है । अतः दुलहन ने अपनी सास को जगाया और कहा कि लाड़ला बेटा रूठकर विदेश जा रहे हैं । इसपर दुलहे की माँ ने पुत्र से पूछा कि क्या तुम्हारे खाने-पीने में त्रुटि हो गई या तुम्हरी शय्या अकेली पड़ गई ? पुत्र ने माँ से कहा कि हे माता, मेरे भोजन में कोई कमी नहीं है, न हमारी शय्या अकेली है । मुझे एक ही बात का दु:ख है कि कोहबर की रात्रि में ही पत्नी ने कटुवाणी बोल दी । इस पर माँ कहती है कि बोलने दो, वह अभी बचपन की बुद्धि से गुजर रही है । फिर सब ठीक हो जायगा ।

(२३)

लीली-घोड़िया चढ़ि आवे अनजानो दुलहा, हाथ सोबरन केरा साटी हे ।
सेई बर उतरल सुगई के अंगना, रसे-रसे कोहबर जाय हे ।

औठी-पौठी सुतल सारी-सरहजवा, पैथानी सुतल जेठ सास हे ।
ओते चलूँ ओते चलूँ सास मदाइन, लगि जयतो गोड़वा के धूर हे ।

किया तोहे हऊँ बाबू सतपचुआ के जलमल, किया मलहोरिया के पूत हे ।
नऽ हम हिलई सासु सतपचुआ के जलमल, न मलहोरिया के पूत हे ।

हम हियो सासु पंडितवा पुत्ता, मलहोरिया हे रउरे लगवार हे ।
अइसन दुलहा माई हम न देखली, बड़-बड़ के पारऽ हे गारी हे ।

अर्थ

अमुक दुलहा तेज व छोटी घोड़ी पर सवार होकर आया । हाथ में सुवर्ण का चावुक है । वह दुलहा सुगई (पत्नी) के आंगन में उतरकर धीरे-धीरे कोहवर गया जहाँ अगल-बगल में साली-सरहज को सोया देखा । पावतले बड़ी सास थी । दुलहा ने सास को अलग हटने कहा क्योंकि पैर की धूली उसे लग जाती । इस पर सास ने गाली दी-क्या तुम सात-पाँच आदमी या माली का पुत्र हो ? दुलहे ने कहा मैं सात-पाँच माली का नहीं बल्कि पंडित का पुत्र हूँ । माली तो आपका ही दोस्त है। इस पर सास ने कहा कि ऐसा दामाद नही देखा जो बढ़-बढ़कर गाली दे रहा है ।

(२४)

छोट-मुटे मालिन बिटिया भूइयां लोटे केस हे ,
अहे बटिया चलइते गे मालिन लचके कमरिया हे ।

मचिया बइठले अम्मा पूछे दिल-बतिया हे ,
अहे कहवाँ गँववलऽ हो बाबू येहो सारी रतिया हो ।

दिनवाँ गँववली गे अम्मा खेलवे-कुदनवाँ गे ,
अगे रतिया गँववली गे, अम्मा अप्पन ससुररिया गे ।

कोहबर सोबइते धनियाँ पूछे दिलबतिया हे ,
अजी कहवाँ गँववल जी प्राभु ऐहो सारी रतिया जी ।

दिनवाँ गँववली गे प्यारी यारन के संघवा गे ,
अगे रतिया गँववली ये प्यारी मालिन के संघवा गे ।

येहो बचनियाँ जी प्राभु मैं न पतिअयबो जी ,
अजी, तुलसी चउरवा जी प्राभु किरिया खिलयबो जी ।

किरिया खिलयबो गे प्यारी मैं मरी जयबो गे ,
अगे सेनूरा-टिकुलिया गे प्यारी होयतो सपनवाँ गे ।

सेनूरा-टिकुलिया जी प्राभु तारं संग तेजबई जी ,
अजी सवतिन लहरिया जी प्राभु हमें न सहयवो जी ।।

अर्थ

छोटी मालिन की बेटी है जिसके लम्बे केश जमीन पर लोट रहे हैं । उस तन्वंगी मालिन-पुत्री की पतली कमर लचक (काँप) रही है । इसी किशोरी के साथ ही दुलहे ने रात्रि गँवाई थी । घर में मचिया पर बैठी माँ पुत्र से दिल की बात पूछती है कि तुमने सारी रात्रि कहाँ बीताई ? पुत्र कहता है कि हे माता, दिन तो खेल-कूद में वीत गया और रात्रि अपनी श्वसुराल मे बीताई । यहाँ कोहबर में सोई पत्नी ने दिल की बात पूछी कि हे प्रभु, आपने सारी रात्रि कहाँ बीताई ? दुलहा कहता है कि हे प्यारी, दिन तो मित्रों के साथ बीताया और रात्रि मालिन के साथ बिताई । दुलहन कहती है कि मैं इस बात पर विश्वास नहीं करती । मैं तुलसी के चौरे पर कसम खिलाऊँगी । दुलहा कहता है कि कसम खिलाने पर मैं मर जाऊँगा और तुम्हारी सिन्दुर-टिकुली स्वप्नवत् हो जायगी । पत्नी कहती है कि हे प्रभु, मैं सिन्दुर-टिकुली आप ही के साथ त्याग दूँगी परंतु सौत की लहर मुझ से सहा नहीं जायगा । (स्त्री के लिए सौत से बड़ा कोई दूसरा शत्रु नहीं)

●

जेवनार और गाली लोकगीत

विवाह के मांगलिक अवसर पर भोजन करते समय स्त्रियाँ बारात के लोगों को हास्य और मनोरंजन के लिए मधुरगीत में गालियाँ देती हैं । ऐसे गीतों को **जेवनार** कहा जाता है । इन गीतों में भोजन के विविध प्रकारों का अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से वर्णन रहता है । साथ-साथ गाली का भी समावेश होता है । मांगलिक गालियाँ केवल बारात के ही समय नहीं बल्कि छेका, तिलक आदि अवसरों पर खाते समय गाने की प्रथा मगध प्रदेश में है । यह गाली (गाली गीत) कभी-कभी बड़ा अश्लील रूप में भी मिलती है फिर भी **''फिके पर नीके लगे ज्यो विवाह में गारी''** को लोग बड़े चाव से सुनते हैं और स्वाद लेकर खाने में देरी करते हैं ।

विवाह के अन्य आनुष्ठानिक क्रियाओं के समय भी गाली गाने का प्रचलन है जैसा मृतिका खनन के समय मिट्टी कोड़ने वाली दाल धोने वाली, औरत को गाली दी जाती है । मौर लेते समय माली को, कलश लेते समय कुम्हइन को, तेल लेते समय तेलिन को, नहछू के समय नाइन को तथा अन्य अवसरों पर सवासिन को गाली दी जाती है । बारात आने पर बारातियों को गाली देना सामान्य शिष्टाचार है। अतः मगही लोकगीतों में गाली गीत की प्रचुर मात्रा मिलती है । चूँकि ये गाली गीत विविध संस्कारों एवं सांस्कारिक अनुष्ठानों के समय गाए जाते हैं । अतः इन्हें संस्कार गीत के ही अंतर्गत रखा गया है ।

प्रथमतः हम जेवनार और तत्सम्बंधी गीत तथा गाली गीत से प्रारंभ करते हैं ।

(१)

जबही गोपालजी चलले मधुबन के घर-आंगन न सोहाय जी ,
नवही नग्र के नव लोग आये, किसुन गरूड़ चढ़ि आयो जी ।

सोने के गेडुवा गंगाजल पानी, सब सज्जन पैर पखारू जी ,
पैर पखारूँ तिहूँ-लोक के ठाकुर, सब साजन बैठूँ जाँघजोरी जी ।

ओरीयनी-ओरीयन बीड़ी परीय गेले जाजिम झारी झिकझोरी जी ,
सब सजनी जेवनार बनायो, मधुसूदन जेवन आयो जी ।

सोभे रतन जड़ाउ कुंडल, मोर मुकुट सिर छायो जी ,
केसर तिलक लिलार में सोभे, गले बैजन्तरी माला जी ।

साम-बरने में पीयर बसतर, चकमक चकमक लागे जी ,
कनक कलस आउ सुन्नर झारी, चानी गिलास अगे धारयो जी ।

सोने के थारी में रूचगर भोजन, दाल में घीव ढरकायो जी ,
साग, बैगन, आलू, कदुआ, बड़हर, कटहर परोसयो जी ।

अदरख, अमरा, कइता नेमो, इमली चटनी लायो जी ,
ककरी, खीरा, राई दही, चटपट रइता बनायो जी ।

बारा, बजका, तिलौरी, फुलौरी, ऊपरे से पापड़ डालो जी ,
अदउरी, दनउरी, आउ खिरौरी, दही-चीनी चबायो जी ।

खाय-पीय जल अचमन किन्हें, हँसि-हँसि बीरा चबायोजी ,
साजन सब जनमासा आयो, परेम पीरीत बखानो जी ।

अर्थ

जब गोपाल जी मथुरा को चले तो घर-आंगन अच्छा नहीं लगने लगा । उनके साथ नौ नगर के नये-नये लोग आए हैं (यहाँ नवग्रह का भी प्रतीक है) श्री कृष्ण गरूड़ पर सवार होकर आए हैं। उनके आगमन पर यहाँ स्वागत-सत्कार एवं भोजनादि की व्यवस्था की गई है । सोने के पात्र में गंगा का जल भरकर रखा गया है जिससे सभी सज्जन को पैर पखारने का अनुरोध किया जा रहा है । वधू पक्ष के लोग निवेदन करते हैं कि त्रिलोक के मालिक पैर धोकर आपस में मिल-जुल कर बैठ जायें । ओरी के नीचे बीड़ी (पुआल की आसनी) और झारकर सफेदी बिछा दी गई है । सभी सखियों ने भोजन बनाया है, स्वयं मधुसूदन भोजन करने पधार चुके हैं (साथ में सभी सज्जनवृंद बैठ गए हैं) गोपाल के शरीर पर रत्न जटित वस्त्र है, कानों में कुंडल हैं, सर पर मोर पंख का मुकुट है, ललाट पर केशर का तिलक है, गले में वैजंती पुष्प की माला है । श्यामले शरीर पर पीले वस्त्र चमक रहे हैं, सोने का कलश और झारी रख दी गई है, सभी के सामने चाँदी का गिलास रख दिया गया है । सुवर्णथाल में स्वादिष्ट भोजन परोसा जा रहा है । दाल में घी दे दिया गया है। साग-बैगन, आलू, कद्दू, बड़हर, कटहल आदि की सब्जियाँ परोस दी गई हैं । अदरख, अमड़ा, कैइत, नीबूं, इमली आदि की चटनी चला दी गई है । ककरी, खीरा,

राई दही मिला कर चटपटी राइता बनाया गया है । ऊपर से बारा, बजका, तिलौरी, फुलौरी, खिरौरी, दनौरी आदि शूष्क सब्जियाँ भी परोसी गई हैं । अंत में दही-चीनी भी चला दी गई है। सभी सज्जनवृंद भोजन कर आचमन कर रहे हैं । खा-पीकर पान का बीड़ा चबा रहे हैं । इस प्रकार सभी सज्जनवृंद खा-पीकर बारात-निवास-स्थल पर आ गये हैं । सभी प्रसन्नचित और प्रेममग्न हैं, उनकी प्रेम-प्रीत का वर्णन कैसे किया जाय ?

(२)

दुअरे अवते समधी गमकल इलइचिया, मड़वा में गमकल फुलझार जी ,
धन-धन तोहर रसोइया अनजानो-रइया, समधी उत्ताहुल जेवनार जी ।

अंगना में बइठल गमगल ओदन-दाल, धन-धन भाग तोहार जी ,
धन-धन भाग तोहार अनजानो समधी, समधिन सतपचुआ के साथ जी ।

अर्थ

भोजन करने आते समय दरवाजे पर इलायची की गंध महसूस होने लगी तो मंडप में फूल की सुगंधि फैल रही थी । समधी ने कहा कि आपका रसोइया धन्य है जिसके बने भोजन करने के लिए मेरा जी उतावला हो रहा है । आंगन में भोजन के लिए बैठने पर भात-दाल की सुगंधि फैल गई । रसोइया और समधी का भाग्य धन्य है । खाते समय स्त्रियाँ मधुर गाली भी जेवनार करनेवालों को सुनाती है । कहती है कि बारात में आए समधी का भाग्य भी सराहनीय (व्यंग्य)है कि इधर वह स्वादिष्ट भोजन कर रहे हैं और वहाँ घर पर उनकी पत्नी (समधिन) पाँच-सात आदमी की साथ मौज उड़ा रही है ।

(३)

राम से कहे जनकपुर के नारी कि चलहूँ महल हमारी जी ,
आयो महल हम्मर रघुन्नन, अति -बड़-भाग हमारी जी ।

सोने के गेडुवा गंगाजल पानी, आन रखयो दरवारी जी ,
चरन-पखार चरनोदक लीन्हें, अति बड़ भाग हमारी जी ।

जनकपुर के भाग-सराही, देवे सखिन सब गारी जी ,
बसमतिया के भात बनावल, मूंग-रहर के दाल जीं ।

कटहर, बड़हर, सीम आउ कदुआ, तोरई के भुंजिया परोसे जी ,
बइगन, आलू, कचालू के तीना धर आगू कर जोरी जी ।

बजका, भभरा, दिलौरी, दनौरी, सबही भाँति सजायो जी ,
सब सखि मिल-जुल गारी गावत, राम-लखन मुसकाय जी ।

बाबू तोर हथू गोरे-नारे, तू कइसे हो गलऽ कारे जी ,
तोहर मइया बड़ी छिनारो, रीखी-मुनि से जनमल जी ।

बहिनी तोर जनमो के छाटल साधु संग जंगल भरमे जी ,
दादी-परदादी तोर जनमो छिनारी तुहूँ छिनार के पुता जी ।

सुनि-सुनि राम लखन मुसकाये, धन-धन भाग हमारी जी ,
भोजन करिके अचमन कीन्हा, दीन्हे खरिका झारी जी ।

विहँसि-विहँसि के वीरा-चाभे, ई सुख कहलो न जाय जी ।।

अर्थ

इस जेवनार लोकगीत में जनकपुर की नारियाँ और राम को पात्र के रूप में नामित किया गया है लेकिन इसमें सामान्य जनोचित भावों का ही अभिव्यंजन हुआ है । गाली में भी सामान्य शब्दों को ही व्यवहृत किया गया है । जैसा कि प्रथम गाली गीत में श्री कृष्ण का नामोलेख्य है । व्यंजनों का नाम तो प्रायः सभी गीतों में समान रहता है ।

जनकपुर की नारियाँ राम से कहती है कि हमारे महल में भोजन करने चलें । रघुनंदन महल में गए तो नारियों ने अपने भाग्य की सराहना की । सांने के पात्र में गंगाजल भरकर रख दिया । उनके चरण को धोकर चरणामृत लिया और अपने भाग्य की सराहना की । साथ ही समस्त जनक वासियों की सराहना करते सखियाँ राम को गाली देने लगीं । सुगंधित बासमती चावल का भात और मूंग-अरहर की दाल परोस दी गई । कटहल, बड़हर, सीम, कद्दू की तरकारी और तरोई की भुंजिया परोस दी गई । बैगन, आलू, कचालू, आदि की सब्जियाँ हाथ जोड़कर रख दी गई । बजका, भभरा, तिलौरी, दनौरी, सभी सजकर परोस दिया गया । खाते समय सखियाँ गाली गाने लगी और राम-लखन विहँसकर भोजन करने लगे । सखियाँ कहती हैं कि आपके पिता दशरथ जी तो गोरे हैं और आप काले कैसे हो गए ? लगता है आपकी माँ कुलटा है जिसके कारण ऋषि-मुनियों से आपका जन्म हुआ है । आपकी बहने भी छिनाल है, जंगल में साधुओं के साथ विचरण करती है । आपकी दादी-परदादी, सभी जन्म से छिनाल हैं । अतः आप भी छिनाल के पुत्र हैं । यह गाली सुन-सुनकर राम-लखन विहँस रहे हैं । भोजनोपरांत आचमन किया, खरिका से दाँत साफ किया, हँसकर पान का बीड़ा चबाया । इस सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

(४)

सोने के गेडुआ गंगाजल पानी, सब साजन पैर पखारूँ जी ,
पैर पखारूँ तिरलोक कन्हइया, सब साजन बैठूँ जाँघजोरी जी ।

ओरियानी-ओरियानी बीड़ी परीय गेले, सब साजन बैठे जेवनार जी ,
पतल परीये गेले, भात परीय गेले, मूंग-रहर के दाल जी ।

पान कतरी उजे भाजी परीय गेले, सोरही गाई के घीव जी ,
जेवे जे बइठले किसुन कन्हइया, देवे सखी सब गारी जी ।

जब तोरा ये कृस्न गारी दुःख लागे, काहे के अयलऽ ससुरारी जी ,
गारी ये सखी प्रेम-पियारी, लेबों मे पटुका पसारी जी ।

गारी के बदला गारी देबो, लेबो में राधिका दुलारी जी ,
मइया अलारी पूछे, बहिनी दुलारी, किया-किया पयलऽ ससुरारी जी ।

साली ला सरहज अधिक पियारी, सासु गंगाजल पानी जी ,
एक ही रात पुता गेलऽ ससुरारी, सासु के कयलऽ बड़ाई जी ।

नौ महीना बाबू कोखिय में सँचली, बतीसो पियवली दूध जी ,
नित-उठि पुत्ता देव-मनौली, तइयो न कयलऽ बड़ाई जी ।

राम दोहइया, परमेसर किरिया, अब न जयबो ससुरारी जी ,
जुग-जुग जिओ बाबू तोर ससुरारी, नित अइहँऽ नित जइहँऽ जी ।।

अर्थ

सोने के पात्र में गंगाजल रख दिया गया। सभी सज्जनों ने पैर धो लिया । त्रिलोकीनाथ श्री कृष्ण ने भी पैर धो लिया और सभी सज्जनों के साथ जाँघ मिला कर बैठ गए । ओरी के नीचे आंगन में बीड़ी बीछ गई । सभी लोग जेवनार के लिए बैठ गए । पत्तल लगा दिया गया, भात परस दिया गया उस पर सोरही गाय का घी चला दिया गया। कृष्ण जी खाने बैठ गए, सभी सखियाँ गाली देने लगीं और कहने लगी कि हे कृष्ण जब गाली से आपको दुःख लगता है तो ससुराल क्यों आए ? श्री कृष्ण ने कहा कि हे सखि, गाली तो परम-प्रिय लगती है मैं उसे वस्त्र फैला कर ग्रहण कर लूँगा । परंतु गाली के बदले गाली दूँगा ओर ऊपर से राधिका को भी ले लूँगा ।

श्री कृष्ण अपने घर आ गए तो माता प्यार से पूछती है, बहन दुलार से पूछती कि ससुराल में क्या-क्या मिला ? कृष्ण ने कहा कि साली-सरहज अधिक प्यारी

लगती है और सास गंगाजल की तरह पवित्र है । माता कहती है कि हे पुत्र एक ही रात्रि में ससुराल गए तो सास की बड़ाई करने लगे । मैंने तुम्हे नौ महीने तक अपने गर्भ में धारण किया और बत्तीसों धार दूध पिलाती रही । पालते-पोसते समय नित्य देव-पितरों की मनौतियाँ मानी थी तौभी तुमने बड़ाई नही की । इस पर श्रीकृष्ण ने कसम खाई-राम की दुहाई है, परमेश्वर की कसम खाते है कि अब ससुराल नहीं जाऊँगा । माँ ने कहा कि तुम्हारी ससुराल युग-युग तक जीवित रहे, तुम नित्य वहाँ जाना और आना ।

(५)

न घर कारज न घर परोजन, काहे बरतिया भडुवे आयो जी ,
उनकर बहिनी गरभ हथी मातल, सोठ-पीपर लेवे आयो जी ।

सेठिया सड़िये गेले, पीपरा घुनिये गेले, तइयो न छिनरो बिआयो जी ,
मार छवड़ो-चोदनो घरवा से निकालो, अपन नगरिया के हँसायो जी ।

अर्थ

यहाँ घर में कोई कार्य-प्रयोजन नहीं है तो क्यों बाराती भडुवे आ गए है । उनकी बहने गर्भवती हैं जिसके लिए सोठ-पीपर लेने आ गए हैं । सोठ सूख गया, पीपर घुन गया तब भी छिनाल ने बच्चा नहीं दिया । अतः उन्हें घर से बाहर करों । उन लोगों ने अपने गाँव की भी हँसी करा दी है ।

(६)

समधी भडुवा के कपरा कइसन लोकेला ,
जइसन तरवा के फेदा ओइसन लोकेला ।

समधी भडुवा के मुहवा कइसन लोकेला ,
जइसन बनरा के मुहँवा ओइसन लोकेला ।

भैसुरा के मोछवा कइसन लागेला ,
जइसन बकरा के पोछिया ओइसन लागेला ।

भैसुरा के दँतवा कइसन लोकेला ,
जइसन ओरिया के खपड़ा ओइसन लोकेला ।

देवरा के पेटवा कइसन लोकेला ,
भड़भुजवा के हड़िया ओइसन लोकेला ।

बरतियन के टंगवा कइसन लगेला,
जइसन ऊँटवा के टंगरी ओइसन लागेला।

अर्थ

विवाह करते समय आंगन में बैठे समधी और उनके परिवार के लोगों को मजाक में विकृत दिखाना गीत का लक्ष्य है। भडुवा समधी का सिर कैसा दीखता, जैसे ताड़ का काला फेदा (फल) दीखता है। उसका मुँह कैसा है, जैसा बंदर का मुँह दीखता है। दुलहे के बड़े भाई की मूँछ कैसी है, जैसी बकरा की पूँछ। उसके दाँत कैसे हैं, जैसे ओरी (छप्पर) का खपड़ा हो। दुलहे के छोटे भाई (देवर) का पेट कैसा है-जैसा भड़भुंजे की हाड़ी रहती है। बाराती के लोगों की टांगें कैसी हैं, जैसी ऊँट की टांगें।

(७)

एक ही गरिया तोरा देबो अंजानो भडुये, सुनहूँ मन चितलाय जी,
तोहर बहिनी बिरहिया के मातल, खोजले छैला-भतार जी।

गया के गयवलवो न छोड़े, काशी के सब पंडा जी,
आंमझर के पैठनओं न छोड़े, बेलखरा के सब पंडित जी।

भावार्थ

जेवनार के समय स्त्रियाँ कहती हैं कि हे अमुक भडुवे, तुम्हें एक ही गाली दूँगी, थोड़ा ध्यान देकर सुने। तुम्हारी बहन वियोगाग्नि से व्याकुल है और छैल-छवीला भर्त्तार खोजती है। अतः जो कोई देखता है, वही उसे दबोच लेता है। गया के गयावाल और काशी के पंडित भी उसे देखकर छोड़ नहीं पाते। त्यागी और चरित्रवान पठान तथा पंडित भी उसे नहीं छोड़ते, ऐसी विरहिनी आपकी बहन है।

(८)

पतरी अनजानो बहू, ओही बनवाँ में कलौन्दा तोड़ि-तोड़ि खा रे,
पतरे अनजानो रइया, ओही बनवाँ में धोतिया फहरावइत जाय रे।

खइते-पिअइते छिनरो बड़ा बेस लगलई, ओही बनवाँ में,
अब रही गेलई छिनरो के पेट रे ओही बनवाँ में।

रोई-रोई चिठिया जे लिखथी अनजानो बहू बनवाँ में,
अब ढिढवा के करऽ उतजोग रे, ओही बनवाँ में।

सोठ-पिपरिया छिनरो बरधी लदयबो ओही बनवाँ में,
अब कुपवा भरयबो करूआ तेल रे,ओही बनवाँ में ।

सोठ-पिपरिया छिनरो बाँट-चोट खइहाँ ओही बनवा में ,
अब तेलवा जतीहँऽ भथिहान रे ओही बनवाँ में ।।

भावार्थ

समधिन की ओर इंगित कर इस गीत में गाली दी गई है । पतली समधिन वन में कलौंदा तोड़कर खा रही थी तो उसी रास्ते पतले समधी धोती फैलाए गुजर रहे थे । वहाँ समधी समधिन ने खाया-पीया और मौज-मस्ती की । परिणामस्वरूप समधिन का गर्भाधान हो गया । गाली में कहा गया है कि छिनाल को खाने-पीने में तो अच्छा लगा पर अब गर्भ का क्या होगा ? अत: वह रो-रो कर मित्र समधी के पास पत्र लिखती है कि अब गर्भ का उपाय करें । समधी ने जबाब लिखा कि प्रसव के लिए सोठ-पीपर को बैल पर लादकर भेज दूँगा और कुप्पा (टीन) भर कर सरसों का तेल भेज दूँगा । साथ ही हिदायत कर दी कि सोठ-पीपर बाँटकर खाना और तेल को अपनी भाथी में लगाना । छेका, तिलक या बारात के खाते समय यह गाली गाई जाती है ।

(९)

अब वही गयले सीतल बतास बनसी लाल री ,
ताही तर अनजानो बहू सेज-डँसवले जीरवा लाल री ।

अब कोई न आवले मेरे पास, बनसी लाल री ,
धावल-धुपल अयलन, अनजानो रइया लाल री ।

अब सेज पर गिरे मुरछाई बनसी लाल री ,
जब छिनरो देखले अन्नी-दुअन्नी, जीरवा लाल री ।

तब सोझे-भेले-ससुरार, बनसी लाल री ,
जब छिनरो देखले सिक्का रुपया जीरवा लाल री ।

तब सेज पर गिरले चितान, बनसी लाल री ।।

भावार्थ

शीतल हवा बहने लगी, उसी शीतलता में अमुक समधी की पत्नी ने शय्या बीछा दी परंतु उनके पास कोई आ नही रहा है । दौड़े हुए अमुक राय आ गए तो

समधिन को सोई देखकर शय्या पर मूर्छित होकर गिर गए । लेकिन वह एक-दो आने देखकर उठ गई और ससुराल की ओर सीधा हो गई परंतु जब उसने रुपया-दो रुपया देखा तो शय्या पर चित लेट गई । अनेक लोगों के नाम लेकर गीत की पुनरूक्तियाँ होती हैं ।

(१०)

डेग-डेग पर नवरंग बाजे, आले छीट छपायो जी ,
से छीट पेन्हथी छिनरो अनजानो बहू, के जइहें पहुँचावन जी ।

अलपी बयसवा हथी अनजानो रइया, ओही जइहें पहुँचावन जी ,
डेग-डेग पर चुम्मा मांगे, तर मांगे घुसकावन जी ।।

भावार्थ

पग-पग पर नवरंग बाजे बज रहे हैं, वस्त्र पर सुन्दर छाप लगाया गया है । उसी सुन्दर छापवाले वस्त्र को अमुक समधी की पत्नी पहनती है, उसे कौन पहुँचाने जायगा । अमुक राय अल्प उम्र के हैं, वहीं ले जायेंगे । वे डेग-डेग पर चुम्बन लेना चाहते हैं और चुपके से सम्भोग करना भी चाहते हैं ।

(११)

अतरस लहंगा सबुज रंग साड़ी, चोलिया जरद किनारी, हाय अलबेल नऽ ।
से चोलिया पेन्हथी छिनरो अंजानो बहू, बटिया चलली अकेला, हाय अलबेल नऽ ।

अतरही भेटलन रसिया अनजानो रसिया, कहाँ छिनरो जाइथऽ अकेला, हाय अलबेल नऽ ।
जायके तो जाइला रउरे महल में, राउर मन कइसे डोले, हाय अलबेला नऽ ।

तर रजाई, ऊपरे दोलाई, बिचे-बिचे होवऽहे लड़ाई, हाय अलबेलानऽ ।
अरे-अरे गर्मी बड़ा रे बेसर्मी, जोरू-मरद कइसे डोले, हाय अलबेला नऽ ।

अरे-अरे जाड़ा, बड़ा रे बेचारा, जोरू-मरद गले लायब, हाय अलबेला नऽ ।।

भावार्थ

लाल लहंगा अैर सब्ज रंग की सारी तथा पीली रंग की किनारी युक्त चोली पहनने वाी छिनार औरत, अमुक की पत्नी अकेली मार्ग में चली । हाय राम, तदंतर अमुक रसिक से भेंट हो गई । उसने पूछा कि हे छिनार, अकेली कहाँ चली जा रही हो ? उसने कहा कि मैं तो आपके ही घर जा रही थी, आपका मन कैसे डगमगाने लगा ? शीघ्र दोनों शय्या पर बीछी रजाई पर लेट गए और ऊपर से दुलाई ओढ़ली ।

बीच में सम्भोग क्रिया चलने लगी । बेशर्म गरमी को वे लोग कोसने लगे कि मर्द औरत कैसे गतिशील होंगे । बेचारा जाड़ा ही अच्छा है जब मर्द-औरत गले लगाकर सोती हैं ।

(१२)

अंगूठी अरसी रून-झुन बाजे ये लाल, लिलरा झलक मारे टिकुली ।
से टिकुली साटथी, छिनरो अनजानो बहु ये लाल, बटिया चलली अकेली ।

अतरही भेंटलन रसिया अनजानो रसिया ये लाल, कहाँ छिनरो जाइथ अकेली ।
जायके तो जाइला रउरे महल में ये लाल, हम ही छिनार तुहूँ रसिया ।

दिन के मरउनी गोहुम देबो, लाल, रात के मरउनी उरीदिया ।
ओही गोहूँम के दोस्ती बनउली, ये लाल, ओही उरीद के बजकवा ।

से बजका खयलन पुत्ता अनजानो पुत्ता ये लाल, बड़ा नीक लग हई बचकवा ।।

भावार्थ

आरसी (ऐनक- नग) लगी अंगूठी रून-झुन बज रही है, ललाट में टिकुली झलक रही है। चमचमाती टिकुली साटकर अमुक की पत्नी राह में अकेली चली। थोड़ी देर के अंतराल में अमुक रसिक से भेंट हो गई तो उन्होंने पूछा कि हे छिनार अकेली कहाँ जा रही है ? उसने कहा कि मैं तो आपके ही घर जा रही थी । मैं छिनार हूँ और आप रसिक हैं । दिन के सम्भोग के लिए गेहूँ दूँगा और रात्रि के लिए उड़द । उसी गेहूँ के आटा से दोस्ती रोटी बनाई और उड़द की दाल से पकौड़ियाँ । उसी पकौड़ी को हमारे अमुक पुत्र ने खाया तो बड़ी सराहना की कि पकौड़ी बड़ी अच्छी है ।

(१३)

अइगन लोटले-बइगन लोटले, खीरा न लोटऽ हे कियारी, अजी भेडुवे ।
अनजानों भेडुवे लोटथी बहिनी के गोदिया, अजी भेडुवे ।
बहिनी न मारथी लतारी, अजी भेडुवे, बहिनी न मारथी लतारी ।।

भावार्थ

बैगन तो गाछ में डोलते रहता है परंतु खीरा नहीं डोलता । लेकिन अमुक भडुवा अपनी बहन की गोदी में लोट रहे हैं और बहन ऐसी है कि वह चुपचाप है लताड़ नहीं मार रही है अर्थात् वह भी सम्भोग की इच्छुक है ।

(१४)

मोरो पिछुअरवा जोगी मंडपवा, ये जी जोगी तू बसऽ ।
किया खयबऽ जोगी लबंग सोपारी, किया खयबऽ रोटी के टुका ?

न हम चाहिला लवंग सोपारी, न हम चाहिला रोटी के टुका ।
एक हम चाहिला छिनरो अनजानो बहू, लेले मंडप में घूसा ।

रोई-रोई पूछथी पुत्ता अनजानो पुत्ता, ये मइया राते के जोगी कैसा ?
हँसि-हँसि कहथी अनजानो बहू, ये बाबू, तोर बाबूजी से अच्छा ।

भावार्थ

मेरे पीछे मंडप है जिसमें समधिन ने योगी को रहने के लिए कहा और पूछा कि हे योगी क्या खाओगे-लंवग-सुपारी या रोटी का टुकड़ा ? योगी ने कहा कि हे छिनार हम लवंग-सुपारी या रोटी का टुकड़ा नहीं चाहते है । अमुक की छिनार पत्नी, तुम मंडप में प्रवेश करो । सुबह में रो-रोकर पुत्र पूछता है कि माँ रात्रि का योगी कैसा लगा ? अमुक की पत्नी ने अपने पुत्र से कहा कि वह तुम्हारे पिता से अच्छा लगा ।

(१५)

मचिया बइठले अंजानो बहू कचरले पान, छिनरियो कचरले पान ।
घोड़वा चढ़ले अनजानो रइया देई गेले दान छिनरियो देई गेले दान ।

केतना कचरबऽ हे छिनरो, केतना लेबऽ दान, छिनरियो केतना लेबऽ दान ?
दस कचरबई हो साहेब, बीस लेबो दान, छिनरियो बीस लेबो दान ।

नदिया किनारे अंजानो पुत्ता खेले जुगवा सार, छिनरियो खेले जुगवा सार ।
अपन मइया हो बाबू, हमरा कर दऽ दान, छिनरियो हमरा कर दऽ दान ।।

भावर्थ

अमुक की पत्नी मचिया पर बैठकर पान चबा रही है, वह छिनार पान कचर रही है । घोड़े पर सवार अमुकराय दान देने लगे । कहने लगे कि हे छिनार कितना पान खायगी और कितना दान लेगी ? दस बीड़ा पान चबावेगी और बीस दान लेगी । उसका पुत्र नदी के किनारे जुआ खेल रहा है, वहीं समधी ने पूछा कि हे बाबू अपनी माँ को हमें दान में दे दो ।

(१६)

गोबर से लिपलूँ अंगना, बिछवा रेंगल जाय हे हरगोबिंद लाल ।
ओने से अयलन समधिन छिनरो बीन्ह देलक बिछवा हे हरगोविंद लाल ।
कउन बइद के बोलाऊँ कउन गुनी के बोलाऊँ हे हरगोबिंद लाल ।
धावल अयलन समधी रसिया, कहाँ बीन्हलक बिछवा हे हरगोबिंद लाल ।
कइसे में जगहा देखाऊँ लहंगा में बिछवा समायल हे हरगोबिंद लाल ।।

भावार्थ

गोबर से लिपे आंगन में बीछू रेंगते आया और समधिन को डंक मार दिया । किस गुनी को झाड़ने के लिए बुलाया जाय ? उधर से रसिक समधी आया । बीछा काटे स्थान को देखना चाहा । भला वह छिनार स्थान कैसे दिखावे ? बीछा तो उसके लहंगे के भीतर प्रवेश कर गया था ।

(१७)

अतरस लहंगा सबुज रंग साड़ी, चोलिया जड़ल किनारी अहो लाल ।
से चोलिया पेन्हथी अनजानो बहू, महा बजार में खड़ी अहो लाल ।
हँसि-हँसि पूछथी रसिया अनजानो रसिया केकर बहिनी बिगीड़ी अहो लाल ।
रोई रोई बोलथी भेडुआ अनजानो भेडुआ, हमर बहिनी विगड़ी अहो लाल ।
हमसे भी बिगड़ी भत्तार से भी बिगड़ी, अपन समधिया के ले उड़ली आहो लाल ।।

भावार्थ

लाल लहंगा और सब्ज रंग की साड़ी के साथ जरीदारी युक्त चोली पहन कर अमुक की पत्नी भीड़ भरे बाजार में खड़ी है । अमुक रसिक ने हँस कर पूछा कि किसकी बिगड़ैल बहन बाजार में खड़ी है । उसका अमुक भड़ुवा भाई रोकर कर पूछता है कि हमारी बहन बिगड़ गई है, हमसे बिगड़ गई है और अपने भर्त्तार से भी बिगड़ गई है तथा अपने समधी को लेकर भाग गई ।

(१८)

येही पारे गंगा ओही पार जमुना कि बाह-बाह जी ,
बीचे निरमल हे पानी कि बाह-वाह जी ।
ओही पर अनजानो बहु सेज डँसवलन कि बाह-वाह जी ,
कोई राही न आवे कि बाह-वाह जी ।

धावल-धुपल अयलन अंजानो रसिया कि बाह बाह जी ,
चढ़ि मारे-धसोरा कि वाह-बाह जी ।
का तुहूँ रसिया हो मारे धसोरा कि वाह-बाह जी ,
तोरा पाकल हे दाढ़ी कि वाह-बाह जी ।
जब मोरा छिनरो हे पाकल दाढ़ी कि वाह-बाह जी ,
तोरा चूच हे पुरानी की वाह-बाह जी ।
जब हमर रसिया हो चूच हे पुरानी कि वाह-बाह जी ,
हम बेटा बिअयबो कि वाह-बाह जी ।
जब तुहूँ छिनरो हे बेंटा विअयब कि बाह-वाह जी ,
हम सोहर गवयबो कि वाह-बाह जी ।
जबतुहूँ रसिया हो सोहर गवयब कि वाह-बाह जी ,
हम हलुआ खिलैबो कि वाह-वाह जी ।

भावार्थ

इस पर गंगा नदी और उस पार यमुना नदी है, बीच में निर्मल धारा बह रही है। उसी पर अमुक की पत्नी ने शय्या बीछा दी है । वाह कैसी जगह है कि यहाँ कोई राही बटोही (ग्राहक) भी नहीं आता ? धूप में दौड़ते अमुक रसिक आए और शय्या पर सम्भोग करने लगे । समधिन कहती है कि हे रसिक समधी आप क्या सम्भोग करेंगे आप की दाढ़ी तो पक गई है । मेरी दाढ़ी पक गई है तो तुम्हारा स्तन भी पुराना पड़ गया है । यदि मेरा स्तन पुराना है तौ भी पुत्र को जन्म दूँगी । हे छिनार, तुम पुत्र जन्म दंगी तो मैं सोहर गान कराऊँगा । जब आप सोहर गवावेंगे तो मैं आपको हलवा खिलाऊँगी । इस जेवनार गीत में वीभत्स शब्दों और अश्लील श्रृगांर का चित्रण है ।

(१९)

नदियानी-नदियानी बंडा रे सियरा, सियरा जे लावऽ हई गोहरवा अहो लाल ।
चुप रहूँ-चुप रहूँ बंडा रे सियरा, तोहरो बोलयबो अधरतिया अहो लाल ।।
कइसे में छिनरो बोलयबऽ अधरतिया, तोहर खटिया मचमचवा, अहो लाल ।
तोहर बालक बड़ी रोयना, अहो लाल ।।
खटिया में पचरी दियबो, बलकवा के ठोक के सुतयबो, अहो लाल ।।

भावार्थ

नदी किनारे बंडा सियार है जिसने जमात जुटाकर ले आया और ठुनकने लगा तो मैने चुप कराया कि तुम्हें आधी रात में बुला लूँगी । इस पर रसिक सियार ने कहा कि हे छिनार, तुम आधी रात में कैसे बुलाओगी, तुम्हारी खाट मचमच की आवाज करती है , तुम्हारा बच्चा बहुत रोता है । वह कहती है कि खाट में पचरी ठोका दूँगी और बालक को पुचकार कर सुला दूँगी (और तुम्हारा काम बन जायगा)

(२०)

बरवा के पतवा झुमुर-झुमुर, फुलवा अइसन मोरा भात जी ,
एक भतवा छोडबऽ समधी काटबो तोर दूनो कान जी ।

मइया पूछे, बहिनी पूछे, के काटलक तोर कान जी ,
दूर बहिनी हल्ला नऽ करिहें, समधिनियाँ कटलक कान जी ।

भावार्थ

बड़ का पत्तल सुन्दर है और फूल की तरह चावल (भात) है । हे समधी, एक चावल भी पतल पर छोड़ देंगे तो आप के दोनो कान काट लेगी । कनकट्टा समधी जब घर पहुँचा तो माँ-बहन ने पूछा कि तुम्हारे कान किसने काटे । समधी ने बहन को हल्ला करने से रोका कि समधिन ने ही कान काट लिए हैं ।

(२१)

निम्न लोकगीत प्राय: बारात के लोग खा कर आंगन से बाहर दरवाजे पर आचमन के लिए जाने लगते हैं तब गाए जाते हैं जिनमें तीव्रता और खदेरने की ध्वनि व्यंजित होती है --

खत आ गेले, खत आगेले, चिठिया बनारस से -
अंजानो भडुवे चिठ्ठी पढ़ऽ हऽ कि नऽ, पढ़े जानऽ हऽथिनऽ ?
मइया धरऽ हऽ कि नऽ, बहिनी धरऽ हऽ कि नऽ, खत आगेले, चिठिया...

भावार्थ

खत आ गया , बनारस से पत्री आ गई कि अमुक भडुवा पत्र पढ़ते हैं कि नहीं और पढ़ाना जानते हैं कि नहीं ? अपनी माँ को पकड़ते हैं कि नहीं और बहन को पकड़ते हैं कि नहीं । खत में जानकारी ली गई है ।

(२२)

कहथी अनजानो भेड़ुवा बड़ भगता, उजे खाय पुआ, धरे फुआ, बड़ भगता ।
कहथी अनजानो भेड़ुवा बड़ भगता, उजे फेंक बढनियाँ धरे बहिनियाँ, बड़ भगता ।
कहथी अनजानो भेड़ुवा बड़ भगता, उजे दूहे गइया धरे मइया बड़ भगता ।।

भावार्थ

अमुक भड़ुवा कहता है कि मैं बड़ा भक्त हूँ परंतु वह पुआ खाकर अपनी फुआ को पकड़ लेता है । वह घर बहारतं बहन की बढ़नी फेंककर उसे धर दबोचता है । इतना ही नहीं वह गाय दूहना छोड़कर माँ को भी पकड़ लेता है ।

(२३)

हरदी-गेठी सेनुर के पुड़िया, साँझ भेल घर जयबऽ कहिया ?
मेहरी के देहरी अगोरबऽ कहिया, भरल बोरसी उकटबऽ कहिया ?
लगल टाटी खोलबऽ कहिया, बहिनी के भाथी उघरब कहिया ?

भावार्थ

गाँठ में हल्दी और सिन्दुर की पुड़िया लिए शाम हो गई, घर कब जाओगे ? अपनी औरत का दरवाजा कब खटखटाओगे और भरी बोरसी कब पलटोगे । बहन की लगी टट्टी कब खोल उसकी भठ्ठी को उघारोगे (बड़ा वीभत्स गाली का प्रयोग है)

(२४)

जाहूँ-जाहूँ अनजानो भड़ुवे डेरा, तोरा डेरा पतुरिया के घेरा ।
तोर बाप हई बकरचरवा, बकर-चरवा हो लाल ।।
तोर मइया छिनार, तोर बहिनी छिनार, तोर टोला छिनार, तोर परोसन छिनार ।
घइला-घिड़सिर छिनार, ठूठी-बढ़िनी छिनार हो लाल ।।

भावार्थ

भोजनकर बारात जब जनवासे पर जाने लगता है तो स्त्रियाँ जोर जोर से पंचम गति से यह गीत गाती है - अनजानो भड़ुवे अपने डेरा पर जाओ जहाँ वेश्याओं का घेरा लगा हुआ है। तुम्हारे बाप बकरी का चरवाहा है, तुम्हारी माँ-बहन छिनाल है । टोला-परोसन ही छिनाल नहीं बल्कि बर्त्तन-वासन और उनके रखने की जगह भी

छिनाल है । ठूठ बढ़नी भी छिनाल है । इस गीत के बाद जेवनार का गीत समाप्त हो जाता है ।

प्रस्तुत संदर्भ में विविध अनुष्ठान के समय गाये जाने वाले लोकगीतो में प्रयुक्त गाली गीतों का यहाँ उल्लेखकर दिया जाता है क्योंकि ये गीत भी संस्कर गीतों के साथ ही गाए जाते हैं। इसका कोई अलग और स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है । अतः ऐसे गालीगीत भी संस्कार गीत के अंतर्गत आते हैं ।

प्रथमतः छेका-तिलक में गाये जाने वाले गीतों (गलियों) का उल्लेख किया जा रहा है । पुनः मटकोरा, मंडप आदि के समय के गालीगीत आते हैं ।

(२५)

तिलक चढ़ावे कनइया के भाई बाबू मुड़ी-काहे गड़लऽ ।
तिलक में मइया-पूरा दिहँऽजी बाबू मुड़ी काहे गड़लऽ ।।
तिलक में बहिनी-पूरा दिहँऽजी बाबू मुड़ी काहे गड़लऽ ।
तिलक चढ़ावे कनइया के जीजा, बाबू मुड़ी काहे गड़लऽ ।।
तिलक में भाभी-पूरा दिहँऽजी बाबू मुड़ी काहे गड़लऽ ।।

भावार्थ

कन्या का भाई वर को तिलक चढ़ा रहा है और सर नीच किए हुए है । इस पर गायिका कहती है कि तिलक में अपनी माँ को पूर्ण रूप से दान में दे देना, बहन को दे देना । बेटी के जीजा तिलक देने लगे तो वे भी अपनी भाभी को दान में देने के लिए कहे जाते हैं ।

(२६)

चाँदी का रूपया करार किया समधी, कागज नोट चढ़ा दिया जी ,
समधी बैमान ठग लिया जी, लड़का हमारा जी, समधी बैमान ।

फूल के थाली करार किया समधी, पीतल का है न ठेकाना जी ,
समधी बैमान ठग लिया जी, लड़का हमारा समधी बैमान ।।

भावार्थ

समधी ने चाँदी के रुपये देने का वादा किया था और तिलक में नोट चढ़ाकर चला गया । समधी बैमान निकला जिसने हमारे लड़के को ठग लिया । उसने फूल

द्रव्य की थाली देने का वादा किया था और पीतल की थाली दे गया । वह तो पूरा बैमान निकला और हमारे लड़के को ठग लिया ।

(२७)

ई मत जानिहँऽ समधी आंगन है छोटजी आंगन में हीरा जड़ायो जी ,
दुलहा के बाबूजी हथी हजरिया, मांगले नौ लाख तिलक जी ।

ई मत जनिहँऽ समधी आंगन है छोटजी, आंगन में मोती जड़ायो जी ,
दुलहा के चाचा हथी हजरिया, मांगले नौ लाख तिलक जी ।

भावार्थ

समधीजी, यह मत समझे कि वर का आंगन छोटा है, आगन में हीरा जड़ा हुआ है । वर के पिताजी हजारो के (धनी) कारोबारी है जिन्होने नौ लाख तिलक की मांग रखी थी । अत: आंगन को छोटा समझकर अवमूल्यन नहीं करना, इसमें हीरे-मोती जड़े हैं । वर के चाचा हजारी मल है-नौ लाख तिलक के योग्य हैं ।

(२८)

खरिका-खरिका कहे तिलक देउवन, खरिका न देबो जी ,
तोरा मइया धरे सब लड़िका, खरिका न देबो जी ।

लोटा-लोटा कहे तिलक देउवन, लोटा न देबो जी ,
तोरा बहिनी धरे सब चोटा, लोटा न देबो जी ।

धनिया-धनिया कहे तिलक देउवन, धनिया न देबो जी ,
तोरा बहिनी धरे सब बनिया, धनिया न देबो जी ।

भावार्थ

तिलक में खाकर आचमन का प्रसंग है । उस समय दाँत खोदने के लिए तिनका की जरुरत होती है , लोग मांग रहे हैं लेकिन नहीं दिया जा रहा है उलटे उन्हें गाली दी जा रही है कि तुम्हारी माँ सब लड़कों को दबोच लेती है । इसी प्रकार आचमन के लिए जल पात्र मांगा जा रहा है तो स्त्रियाँ गाली देती है कि तुम्हारी बहन चोर के साथ रहती है । मुख-शुद्धि के लिए धनिया भी नहीं दिया जायगा क्योंकि तुम्हारी बहन बनिया के साथ रहती है ।

(२९)

खिरक़िन-खिरकिन अम्मा मोरा झाँके लाल।
हमरा दुलरुआ के का तिलक चढ़े लाल ?

लोटा चढ़े, थारी चढ़े, पितर के कटोरा लाल।
पितर के कटोरवा पर हमें न बिआहब लाल।

चाँदी के कटोरवा पर हमहूँ विआहब लाल।
साइकिल चढ़े, घड़ी चढ़े, कागज के रूपइया लाल।

कागज के रूपइया पर हमें न बिआहब लाल।
चाँदी के रूपइया पर हमहूँ बिआहव लाल।

भावार्थ

झरोखे से माँ झाँक रही है कि हमारे प्यारे पुत्र को तिलक में क्या-क्या चढ़ रहा है ? लोटा-थाली और पीतल का कटोरा चढ़ा तो माँ कहती है कि पीतल के कटोरे पर मैं शादी नहीं करने दूँगी। मुझे चाँदी का कटोरा चाहिए सायकिल, घड़ी और कागज का नोट चढ़ रहा है परंतु माँ नोट पर शादी नहीं करेंगी वह तो चाँदी के सिक्के लेने पर ही शादी करेगी।

(३०)

टोपिया जे लायो सरवा सड़क पर गिरायोजी,
चउका पर आके सरवा गेले लजाय जी।

जोड़वा जे लायो सरवा सड़क पर गिरायो जी,
अंगना में आके सरवा गेले लजाय जी। आदि

भावार्थ

तिलक में चढ़ाने के लिए साले ने टोपी लायी थी परंतु सड़क पर गिर जाने से वह चौके पर आकर लज्जित हो गया। उसी प्रकार वह जोड़ा-जामा भी सड़क पर खो गया और आंगन में आकर लज्जित हुआ।

(३१)

सावन नदिया उमड़ी चढ़िये गेलई, उमड़ी दुनो किनारी जी,
जइसे उमड़े अनजानो साही के जोड़िया? उमड़ी चलले मतवाली जी।

छोड़ूँ-छोड़ूँ रसिया, हमरी अचरावा, फारी गयो जिन साड़ी जी ,
साड़ी बदल हम साड़ी देबो, पाँच रूपया गुनगारी जी ।

सोने के कटोरवा अंजानो पुत के देबो, जिनकर हहुन मतारी जी ,
पाँच रूपया तोर परोहित के देबो, जिनकर हहुन जजमानी जी ।

भावार्थ

सावन में नदियाँ उमड़कर दोनो किनारों को डुबा देती है उसी प्रकार अमुक शाही की जोड़ी (पत्नी) मतवाली होकर उमड़ रही है । ऐसी अवस्था में रसिक ने उसका आंचल पकड़ लिया जिससे उसकी साड़ी फट गई । इस पर रसिक कहता है कि मैं साड़ी के बदले साड़ी दे दूँगा और ऊपर से गाली देने के बदले पाँच रूपए भी दूँगा तुम्हारे अमुक पुत्र को सोने का कटोरा दूँगा और तुम्हारे पुरोहित को भी पाँच रूपए दूँगा जिनकी तुम जजमानी है ।

(३२)

खत आ गयो चिठिया बुरहानपुर से, खत आ गयो ,
सुनऽ समधी राम, राउर बहिनी नमकीन खोजे भतरा सौखीन ,
खाय गाँजा-अफीम, खत आ गयो, चिठिया बुरहानपुर से ।

समधी के बहिनी अइसन मतवाला-कयले घोड़वा-भतार, कयले भूइयाँ कलवार ,
कयले बनिया बेगार, कयले नोनिया चमार, कयले नाई कहार, कयले हमरो भतार ,
कयले भतरो के सार, खत आ गेलो, खत आ गेलो चिठिया बुरहानपुर से ।

समधी बहिनचोद, चिठ्ठी पवलऽ किनऽ, बाँचे जनलऽ कि नऽ ?
बाँचे हमरो भतार, बाँचे भतारो के सार, कहल मानऽ तू हमार, तोहर बहिनी ,
छिनार । खत आगेलो, खत आगेलो, चिठ्िया बुरहानपुर से ।

भावार्थ

यह वीभत्स गाली गीत खाकर जाते समय तिलक देने वाले लोगों को सुनाया जाता है, मुख्य रुप से समधी को सम्बोधित गीत में अश्लील शब्दों का बहुल प्रयोग है । हे समधी राम, सुनें, बुरहानपुर से पत्री आ गई है कि आपकी बहन नमकीन है और शौकीन भर्त्तार खोजती है, वह गाँजा-अफीम भी पीती-खाती है । आपकी बहन ऐसी मतवाली है कि उसने घोड़े को अपना भर्त्तार बना लिया । इसके वावजूद भूइयाँ-कलवार, बनिया-बेगार, नोनिया-चमार, नाई -कहार और हमारे (समधिन) पति के अतिरिक्त अपने भाई को भी भर्त्तार के रूप में उपयोग करती है -चिठ्ठी

से यह विदित होता है । हे बहनचोद समधी, आपको यह चिठ्ठी मिली कि नहीं और आप बाँचना जानते हैं कि नहीं ? हमारे पति चिठ्ठी बाँचते हैं और हमारे भाई भी बाँचते हैं । हे समधी हमारी बात माने, आपकी बहन छिनार है-ऐसी चिठ्ठी आई है ।

इसी प्रकार मटकोरा (मृतिका खनन) के समय भी स्त्रियाँ सवासीन और नेगदारिन को बड़ा वीभत्स गालियाँ देती है । इस वैवाहिक अनुष्ठान-क्रिया में केवल स्त्रियों का ही प्रवेश और प्राधान्य रहता है । अत: उनके गाली-गीत की ध्वनियाँ उच्छृंखलित होकर अवाद्धरुप से रात्रि में नि:सृत होती है कुछ ऐसी गाली-गीत यहाँ उद्धृत हैं –

(३३)

माटी कोड़े गेलऽ छिनरो ओहे मटखान हे ,
चमरा धैलक ढोलवा बजाय हे ।
माटी कोड़े गेलऽ छिनरो ओहे मटखान हे ,
नउवा धैलक नोखर देखाय हे ।

भावार्थ

विवाह में मंडपाच्छादन के पूर्व ५ या ७ दिन पहले घर और पड़ोस की स्त्रियों के साथ वर की माँ अपनी जेठानी या देवरानी को लेकर रात्रि में घर से बाहर खेत से मिट्टी कोड़कर लाने जाती है उसी क्रम में मटकोरा का गीत और गाली-गीत गाये जाते हैं । मटकोरा के गीत पहले भी उद्धृत है यहाँ केवल गालियों का उल्लेख किया गया है ।

वह छिनाल मिट्टी कोड़ने गाँव के बाहर मटखान में गई तो वहाँ ढोल बजाकर चमार ने फुसला लिया ओर उसके साथ सम्भोग किया । इसी तरह वहीं पर नाई ने नोखर दिखाकर समागम किया । अनेक लोगों के नाम लेकर गलियाँ दी जाती हैं ।

(३४)

कथी के काठ-कठनइया कथीय लगल डोरी हो लाल ,
कउन छिनार भरे पानी, कउन मरदा मोहे हो लाल ।

चंदन के काठ-कठनइया रेसम लागल डोरी हो लाल ,
अंजानो छिनार पानी भरे, अनजानो मरदा मोहे हो लाल ।

कहाँ में हवऽ भुंजनइया कहाँ पीसनइया हो लाल ,
कहाँ में हवऽ सुतनइया, कउन-रहिये अयबो हो लाल ।
अंगना में हईऽ भुंजनइया, ओसरवा पीसनइया हो लाल ,
राजमहल सुतनइया, खिरकी-रहिये अइहँऽ हो लाल ।

भावार्थ

किस लकड़ी की घरारी बनी हे और उसमें किस चीज की डोरी लगी है। उससे कौन छिनाल पानी भर रही है और वहाँ कौन मर्द मोहित हो रहा है ? चंदन-काठ की घरारी है, उसमें रेशम की डोरी लगी है, अमुक छिनाल पानी भर रही है और अमुक मर्द मोहित हो गया है । वह मोहित रसिक छिनाल औरत से पूछ रहा है कि तुम कहाँ पर खपड़ी में अनाज भुंजती है और कहाँ पर उसे पीसती है तथा कहाँ पर शयन होता है । मैं किस राह से तुम्हारे पास आऊँगा ? वह कुलटा कहती है कि आंगन में भुंजती है ओसारा में पीसती है और अपने राजमहल में सोती है, आप खिड़की के मार्ग से मेरे पास आ जायेंगे ।

(३५)

खाय के देबो छिनरो पेड़ा-जिलेबी, पीये के ठंढा पानी रे साँवलिया ।
सुते के देबो छिनरो लाली पलंगिया, लगा के मच्छड़दानी रे साँवलिया ।
सोवे ला देबो छिनरो अंजानो मरदवा, हुमच के मारे घानी रे साँवलिया ।

भावार्थ

गीत में कहा गया है कि हे छिनाल औरत, तुम्हें खाने के लिए पेड़ा और जलेबी दूँगा और पीने के लिए शीतल जल दूँगा सोने के लिए लाल पलंग दूँगा उस पर मच्छड़दानी लगी होगी । तुम्हारी साथ सोने के लिए अमुक मर्द को दूँगा जो कसकर चोट करेगा (सम्भोग में दक्ष होगा)

(३६)

घरवा में सुतीहँऽ हे छिनरी, ओसरवा में करिहँऽ दुनो-गोड़वा ,
तनियक अनजानो के दीहँऽ हे छिनरो, लठवा चलवले गाथुन गुनवाँ ।
अनेक पुरूषो के नाम के साथ गीत को गति दी जाती है ।

भावार्थ

हे छिनाल औरत, घर में सोना और दलान में पैर पसार देना तथा अमुक मर्द को थोड़ा मौका दे देना जो लाठा-कुड़ी चलाते समय भी तुम्हारे उदारता का गीत गाते रहेंगे । (व्यंग्यार्थ - सम्भोग की अनुमति)

(३७)

धान कुटबें रे बुधवा, धान कुटबे रे, अनजानो के ओखरी मे धान कुटबे ।
माड़ पीबे रे बुधवा, माड़ पीबे रे, अनजानो के ओखरी में माड़ पीबे रे ।।

भावार्थ

हे बुद्धू, तु धान कुटोगे, अमुक के ऊखल में धान कुटोगे ? माड़ पीओगे बुद्धू ? अमुक की ऊखल में माड़ पीओगे । (ऊखल-योनी)

नोट :–इन छोटे-छोटे लोकगीतों में व्यंग्यार्थ की प्रधानता रहती है और अनेक न और सम्बंधों के साथ पुनरूक्तियाँ होती है ।

(३८)

बेल - बबूर ओखरी, सरइया के सूप रे दइया ,
कूटे बैठलन अनजानो छिनरी, हिले दूनो चूच रे दइया ।
धावल-धुपल अयलन अनजानो भइया, धयलन दूनो चूच रे दइया ।।

भावार्थ

बेल-बबूर की लकड़ी का ऊखल है और सरैया (सरकंडा) का सूप है । अ छिनाल औरत धान कूटने लगी तो उसके दोनो स्तन डोलने लगे । उसका अमुक धूप से दौड़ा हुआ आया तो उसका दोनों स्तन पकड़ लिया ।

(३९)

झिमिर-झिमिर बूँदा बरीस गेले, अंगना में लगल बड़ी कइया रे मन धीरे रे धी
पानी भरे चललन छिनरो अंजानो छिनरो, टंगरी गेले पिछुलइया, रे मन धीरे रे धी
धावल-धुपल अयलन अंजानो भइया भर गोदी लिहले उठहइ रे, मन धीरे रे धीरे
ऑजर टोवले, पाँजर टोबले, कहाँ बहिनी लागल चोट रे, मन धीरे रे धी
ऑजर बचलई भइया, पॉजर बचलई, बीचवा में लागल बड़ी चोट रे, मन धीरे रे धी
लाज के बतिया भइया कहलो न जाय, जल्दी से करऽ न दवइया रे, मन धीरे रे धी
बिलइया के पोछिया, मिचइया के डटिया, घसी-घुसी करऽ न दवइया रे , मन धीरे रे धी

भावार्थ

रिमझिम वर्षा होती रही जिससे आंगन में बड़ी काई लग गई । अमुक पानी भरने निकली तो पैर फिसलकर गिर गई । दौड़ा-दौड़ा उसका भाई आया

गोद में भरकर उठा लिया तथा आंजर-पांजर में स्पर्श कर पूछने लगा कि बहन, चोट कहाँ लगी है। बहन ने कहा कि अगल-बगल तो बच गया परंतु बीच में बड़ी चोट लग गई। लज्जा की बात है, जल्दी दवा करो। भाई ने कहा कि बिल्ली की पूँछ और मिर्चा की डंटी घुसाकर दवा कर लो। बड़ा वीभत्स गाली के शब्दों का व्यवहार किया गया है।

(४०)

केकर कनवाँ में अइरन सोभे, केकर सेज पर मुँह झलके ?
जरा एनें आवऽ छिनरो रजाइया तर हे।
नउनियाँ के कनवाँ में अइरन सोभे, अनजानो के सेज पर मुँह झलके।
जरा एने आवऽ छिनरो रजइया तर हे।
तरे रजाई ऊपरे दोलाई बीचे-बीचे होवऽ हे लड़ाई,
दिया घर-कर छिनरो सरम लागे, दिया घर करऽ ॥

भावार्थ

मटकोरा के समय नाइन पूजा-पात्र और सामान लिए रहती है स्त्रियाँ उन्हें भी बड़ा वीभत्स गाली देती है। यहाँ इसके भी उदाहरण प्रस्तुत हैं। किसके कान में कनौसी (Earring) शोभ रही है और किसकी शय्या पर मुँह चमक रहा है ? नाइन के कान में आभूषण शोभ रहा है और अमुक व्यक्ति की शय्या पर मुँह चमक रहा है। अतः हे छिनाल थोड़ा इधर, रजाई के भीतर तो आ जाओ। भीतर रजाई और ऊपर से दुलाई ओढ़ ली गई और बीच में लड़ाई (सम्भोग क्रिया) होने लगी। मर्द कहता है कि छिनाल, दीपक को बुझा दो, प्रकाश में श़र्म आती है।

(४१)

हरिअर - हरिअर सुगवा , कैलास चढ़ी बइठल हे ,
आज सुगवा बड़ मजा मारऽ हे, नउनिया के देखके खुल-खुल हँसऽ हे।

भावार्थ

छैल-छबीली नइन को देखकर आज मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी भी मोहित हो रहा है। हरा सुग्गा भी कैलाश-पर्वत (स्तन पर) पर बैठ गया है और मजा ले रहा है। नाइन को देखकर सुग्गा खिल-खिलाकर हँस रहा था।

(४२)

नउनियाँ के लहंगा में बिरनी बसे , रात बीन्हे, दिन बीन्हे कि, बीन्हते जाले ।
नउनियाँ के लहंगा में कोयरिया बसे, रात जोते दिन जोते कि जोतते जाले ।

नउनियाँ के लहंगा में बढ़हिया बसे, रात छिले दिन छिले कि छिलते जाले ।
नउनियाँ के लहंगा में लोहरवा बसे, रात पीटे दिन पीटे कि पीटते जाले ।

भावार्थ

नाइन के लहंगा में बर्रे का छात्ता लग गया जो रात-दिन डँसते रहता है । उसके लहंगे में कोयरी ने निवास बना लिया है जो रात-दिन हल चलाते रहता है । उसी प्रकार उसके लहंगे में बढ़ई, कुम्हार आदि बस गए हैं जो रात दिन अपना काम करते रहते हैं । गाली ही गाली ।

(४३)

हरियर बबुरी कटायब छिनरी के पचरी ठोकायब ,
बढ़हिया,कयलक गोहार, पचरी डूबल हमार ।

छिनरो के कते भथिहान पचरी डूबल हमार ,
हरियर बबुरी कटायब,छिनरो के पचरी ठोकायब ।

लोहरा कैलक गोहार, भठिया डूबल हमार ,
कोइरिया कयलक, गोहार, लठवा डूबल हमार ।

छिनरो के कते भथिहान, लठवा डूबल हमार ।।

भावार्थ

मृतिका खनन के बाद पात्र में मिट्टी ग्रहण करने वाली फुआ को गाली दी जाती है । इस गीत में ऐसी ही गाली का प्रयोग है । हरे बबूल का वृक्ष कटाया जायगा और उसकी खपची बनाई जायगी । उस खपची को बढ़ई ठोकने लगा तो उसकी खपची ही उस औरत के भग में डूब गई वह हल्ला करने लगा कि उसका भग कितना बड़ा है । इसी प्रकार लुहार की भिट्ठी और कोयरी का लाठा भी डूब जाता है । सभी गुहार करते रह जाते हैं । यह वीभत्स गाली रात के सन्नाटे में सुदूर वियावन में गूंजती है ।

(४४)

कहथी अनजानो छिनरो माघ नेहायब हे ,
उचटल बीछिया दरार में समाय हे ,
मैं न जानो ये छिनरो लौंडेबाज हे ।

कहथी अंजानो भइया हम ही जवान हे ,
बीछिया निकाल के, गया ले जायम हे ,
बीचे संडकिया छिनरो फटकले-धूर हे ।

सब रहगिरवन मिलके देखलक भूर हे ,
भरखोना मिठइया छिनरो खयलऽ फुसलाय हे ,
सोव ही के बेरिया ससुररिया रूसी जाय हे ।

भावार्थ

अमुक छिनाल माघ स्नानार्थ जाती है तो वहाँ पानी से उछलकर बीछी उसकी दरार (भग) में प्रवेश कर जाती है । गीतहारिने कहती है कि किसी को पता नहीं था कि वह छिनाल लौंडेबाज है । उसका नौजवान भाई कहता है कि मैं बहन को बीछी निकालने गया ले जाउँगा । वह छिनाल पुन: बीच मार्ग में धूल चाटने लगी तो सारे राहगीर उसके साथ समागम करने लगे । एक से उसने बहला कर दोने भर मिठाई खाली और समागम के समय रूठकर श्वसुरार जाने लगी ।

(४५)

कउन मरदा गुन आगर बंगला, से आधी रात करे लठवाही बंगला ।
कउन मउगी छिनार बंगला, से धाई-धाई मोरले-मोरनी बंगला ।।

अनजानो मरदा गुन आगर बंगला, से आधी रात करे लठवाही बंगला ।
अंजानो मउगी छिनार बंगला, से धाई-धाई मोरले मोरानी बंगला ।।

घुघवा उघारी जब देखऽ बंगला, पुअवा अइसन दूनोगाल बंगला ।
ओकरो से अंदर जब देखऽ बंगला, लेमुआँ-अनार अइसन चूच बंगला ।।

ओकरो से अंदर जब देखऽ बंगला, से हबड़ा के पुल अइसन भूर बंगला ।।

भावार्थ

कौन मर्द गुन सम्पन्न है जो आधी रात्रि में लाठा चलाता है और कौन औरत छिनाल है जो दौड़-दौड़कर पानी मोर [illegible] है । अमुक मर्द गुन सम्पन्न है जो

आधी रात्रि को लाठा चलता है और अमुक औरत छिनाल है जो दौड़-दौड़कर पानी मोड़ रही है । रात्रि के अंधकारा में जब मर्द ने औरत को घूँघट उठाकर देखा तो उसके गाल पुए की तरह लाल और फूले हुए दीखे । उसके नीचे जब देखा गया तो नींबू-अनार की तरह का स्तन दीखा । उसके भी नीचे देखने पर हावड़ा के पुलकी तरह उसका भग दीख पड़ा ।

(४६)

अंजानो चढ़लन कटहर तोड़े, भग में लगल लासा ,
जंजाल कैलक लासा, पैमाल कैलक लास ।

धोबी के भग धोबेला देलन तइयोन छूटल लासा ,
भइया के भग देखौलन तइयो न छूटल लासा । जंजाल

भावार्थ

अमुक औरत कटहर तोड़ने पेंड़ पर चढ़ी तो उसके भग में लासा सट गया । उसने छुड़ाने के लिए धोबी को दिया और भाई के साथ सम्भोग किया तौ भी लासा नहीं छूटा, लासा भारी संकट में डाल दिया ।

(४७)

अंजानो अइसन छिनरियो नऽ दइया सुतल हलुअइया के जगा देलन नऽ ,
हलुअइया उठल अपन काम कयलक नऽ दुनो हाथे पेड़वा धरा देलक नऽ ।

अंजानो अइसन छिनरियो नऽ दइया सुतल बजजवा के जगा देलन नऽ ,
बजजवा उठल अपन काम कयल नऽ दइया लाल-पीयर सड़िया पेन्हा देलक नऽ ।

अनेक पुनरूक्तियाँ

भावार्थ

अमुक औरत की तहर छिनाल नहीं देख गया । सोए हुए हलवाई को उसने जगा दिया । हलवाई ने अपना काम किया और उसके दोनो हाथ में पेड़ा पकड़ा दिया । इसी प्रकार उस छिनाल ने बजाजा, सुनार आदि को जगा दिया तो उसने भी लाल-पीली साड़ी और दोनो कानो में सोना पहना दिया तथा अपना काम कर लिया ।

(४८)

मगध क्षेत्र में प्रचलित ऐसे गाली गीत अनेक रूपों में मिलते हैं जो विविध अनुष्ठानों के समय गाए जाते हैं उनका प्रसंग के साथ नीचे विवरण दिया जाता है ।

हाथी-हाथी सोर कयले गदहो न लवलें रे ,
दूर मइया-चोदना दमाद बनके अयलें रे ।

घोड़ा-घोड़ा सोर कयले गदहो ने लवलें रे ,
दूर बहनी चोदना नबाब बनके अयलें रे ।

भावार्थ

यह गालीगीत बारात के दरवाजा लगते समय गाया जाता है । स्त्रियाँ गाती हैं कि बारात वालों ने शोर किया-हाथी ला रहे हैं, हाथी ला रहे हैं परंतु माँ-चोद ने गदहा भी नहीं लाया । घोड़े का शोर कर भी गदहा नहीं ला सका । अनके पदार्थों का नाम लेकर गाली-गीत को आगे बढ़ाया जाता है ।

(४९)

मइया लेले अइहें दुलहा बाबुजी लेले जइहें रे ,
दूनो हाथे फुलगेंदा लोकइत जइहें रे ।

बहिनी लेले अइहें दुलहा, बहनोइया लेल जइहें रे ,
चाची लेले अइहे दुलहा, चाचा लेले जइहें रे ।

दुनो हाथे फूलगेंदा, लोकइत जइहें रे ।।

भावार्थ

यह गीत भी बारात के दरवाजा लगते समय गाया जाता है । कहा गया है कि हे दुलहा, अपनी माँ को लेते आना और यहाँ से पिता को लेते जाना और खुशी में गेंदा का फूल लोकते जाना । इसी प्रकार बहन और चाची को लेते आना और बहनोई और चाचा को लेते जाना तथा फूल के गेंदा से खेलते लौट जाना ।

(५०)

मलिया के बाग में उतरहिं रे सुनर बरऽ,
धिया जोगे टीकवा ले अइहें रे सुनर बरऽ ।।

मइया नचावइत अइहें रे सुनर बरऽ,
धिया जोगे सिकरी ले अइहें रे सुनर बरऽ ।।

बहिनी नचावइत अइहें रे सुनर बरऽ,
धिया जोगे कंगना ले अइहें रे सुनर बरऽ ।। आदि

भावर्थ

हे सुन्दर वर, माली के बाग में डेरा डालना और पुत्री के योग्य मांगटीका लाना साथ ही माँ-बहन को नचाते लेते आना और पुत्री के योग्य सिकड़ी, कंगन आदि लेते आना ।

(५१)

बरतिया मांगली सबेरे तो लवलक-कुबेर,
दिअवा लेसी-लेसी देखली तो सब बकडेर रे।।

भावार्थ

स्त्रियाँ कहती है कि बारात को सबेरे आने के लिए कहा गया था लेकिन उसने काफी देर से आगमन किया । दीपक जलाकर देखा गया तो सभी के सभी काने-कुबड़े निकले ।

(५२)

रहरी के तीन पत्ता, धान हे दुबाल जी,
बरवा के तीन बहिनियाँ, तीनो हे छिनाल जी ।

एगो तो रंडी-पतुरिया, एगो छिनार जी,
एगो तो मोटे-ताजे, सब के रखे पर तइयार जी ।

भावार्थ

अरहर में तीन पत्ते हैं, धान में बालियाँ हैं और वर की भी तीन बहनें हैं । परंतु तीनो छिनाल हैं । एक वेश्या का काम करती है और दूसरी छिनाल है अर्थात् गुपचुप व्यभिचार करती है परंतु उनमें एक मोटी-ताजी है जो सभी मर्दों को रखने के लिए प्रस्तुत है ।

(५३)

बाबू कल्ह बोलायो आज काहे आयो -
बाबू लगन के बेरिया टलीये गेलो ।
आवे के तो सासु आवऽ हली,
मोरा मइया-भुलायल हम तो खोजऽ हली ।

आवऽ हली सरहज आवऽ हल,
मोरा चाची भुलायल हमतो खेजऽ हली ।

भावार्थ

बारात लगते समय स्त्रियाँ गाती हैं कि हे वर, हमने कल ही बुलाया था परंतु तुम आज क्यों आए ? लग्न का समय तो बीत गया । इस पर वर के शब्दों में ही गाली है । मैं कल ही आ रहा था परंतु मेरी माँ भूल गई थी उसी को खोजने में समय बीत गया । हे सरहज, मैं आ रहा था लेकिन मेरी चाची भूल गई थी जिसे खोजने में लगा रहा ।

(५४)

कहथी अनजानो छिनरो डोरिया पेन्हब हाय रे, डोरिया कोई बीनियो न देबे ?
कहथी अनजानो रसिया हमरा बीने आवऽ हे, उठा के मारे आवे हे, हाय रे !

कहथी अनजानो छिनरो डोरिया पेन्हब हाय रे, डोरिया कोई बीनियो न देबे ?
कहथी अनजानो रसिया हमरा बीने आवऽ हे, उठा के मारे आवे हे, हाय रे !

भावार्थ

अमुक छिनाल कहती है कि मैं डोरी पहनना चाहती हूँ, हाय रे, कोई डोरी बीन नहीं दे रहा है । अमुक रसिक कहता है कि हमें डोरी बीनने आता है और उठाकर मारने भी आता है । दूसरे व्यक्ति का नाम लेकर पँक्तियाँ कई बार दुहराई जाती है ।

(५५)

सुखल गाल क्या करेगा, चुम्मा परेगा ओतने, सुखली मिचइया तितइया लागे ओतने ।
सुखल चूच क्या करेगा, मलइया होगा ओतने, सुखली मिचइया तितइया लागे ओतने ।
सुखल भूर क्या करेगा, घुसइया होगा ओतने, सुखली मिचइया तितइया लागे ओतने ॥

भावार्थ

शूष्क गाल रहने से क्या फर्क पड़ता है, चुम्बन तो उतना ही होगा । इसी प्रकार सूखा स्तन रहने पर भी उसे उतना ही मर्दित किया जायगा जितना रसिक चाहेगा । शूष्क भग रहने पर भी सम्भोग क्रिया उतनी ही होगी-शूष्क मीर्च भी उतना ही तीता होता है ।

(५६)

साठ रूपइया के सड़िया हे, कटाय पर के तीन चोलिया,
से चोलिया पेन्हथी अनजानो छिनरो हे, छमक चले ओही गलिया।

अतर ही भेंटलन अनजानो रसिया हे, कहाँ जाइथऽ मोर गलिया ?
आजु के खरची घटीये गेलो हे, जोबनवाँ-रखबो तोर सेजिया।

भावार्थ

साठ रूपए की साड़ी और तीन प्रकार से कलित चोली पहनकर अमुक छिनाल उसी गली में छमछम करती चली। थोड़ी ही दूर जाने पर अमुक रसिक मिल गए तो पूछ दिया कि हमारी गली में कहाँ जा रही हो ? वह छिनाल कहती है कि आज खाद्य-पदार्थ घट गया है, अपना योबन उधार रखकर भोज्य पदार्थ ले लूँगी।

(५७)

ओरीयानी-ओरीयानी बीछवा ओरियाल चले, बोला देहूँ हे।
अंजानो के मारलक बीछवा छिछयाल चले, बोला देहूँ हे।

अंजानो अइसन ओझवा-बीछा झारे-उतारे बोला देहूँ हे।
ऊपर से झारे बीछवा, तरे से सोटा चलावे, बोला देहूँ हे।

भावार्थ

ओरी के नीचे बीछे चल रहे हैं। अमुक औरत को बीछे ने डंक मार दिया तो वह दर्द में व्याकुल चल रही है। अमुक व्यक्ति ऐसा गुनी है कि वह बीछे की लहर झाड़कर उतार देता है। ऊपर से बीछा की लहर उतार रहा है और भीतर-भीतर सोटा चला रहा है (सम्भोग क्रिया करना)

(५८)

केकर हई कोरा-कागज गे माई कि राम दुलारी गे माई।
केकर फोनटन पीनवा चालू गे माई कि राम दुलारी गे माई।

अंजानी के हई कोरा कागज गे माई कि राम दुलारी गे माई।
अंजानो के फोनटन पीनवा गे माई कि राम दुलारी गे माई।

लिखते-लिखते झर-गेलइन सियाही गे माई कि राम दुलारी गे माई।
तइयो न भरलई कोरा कगजवा गे माई कि राम दुलारी गे माई।

भावार्थ

इस गाली गीत पर आधुनिकता का प्रभाव है यहाँ संकेताक्षरों से विशिष्ट अर्थ की अभिव्यंजना होती है । किसका कोरा कागज है, किसका फाउनटेन पेन चल रहा है ? अमुक व्यक्ति का फाउन्टेन पेन चल रहा है । अमुक औरत का कोरा कागज है । सादे कागज पर लिखते-लिखते स्याही सब झड़ गई परंतु सादा कागज पूर्णत: भर नहीं पाया (व्यंग्यार्थ है कि पुरूष आदि स्खलित हो गया औरत यथावत रह गई ।

(५९)

अरना-भरना सूत काटब हे, काटब हे, जोलहा भतार सूत-बीनब हे ।
अपन भतार देख के रूसब हे, जोलहा भतार देखके खुसब हे ।

अरना-भरना सूत काटब हे, काटब हे, बजजवा भतार सूत-बीनब हे ।
अपन भतार देख के रूसब हे, बजजवा भतार देखके खुसब हे ।

भावार्थ

सूत से ताना-झरनी कर के जुलाहे भर्त्तार के साथ वस्त्र बीनूँगी और अपने पति को देखकर रूठ जाऊँगी तथा जुलाहे भर्त्तार को देखकर प्रसन्न होऊँगी । इसी प्रकार बजाजे के साथ भी वस्त्र बीनूँगी तथा उसे देखकर प्रसन्न होऊँगी । अपने पति को देखकर रूठ जाऊँगी ।

(६०)

कउन मरदा खापड़-खुपड़ छावऽ हे, कउन मउगी बइठले बिआय ।
अनजानो मरदा खापड़-खुपड़ छावऽ हे, अनजानो मउगी बइठले बियाय ।

भावार्थ

कौन मर्द परिश्रम कर खपड़े आदि से गृह का निर्माण करता है और कौन औरत बैठी-बैठी केवल बच्चा जनती है । अमुक मर्द खपड़े छाता है, परिश्रम करता है और अमुक औरत बैठकर बच्चा जन्म देती है ।

(६१)

राई-राई-राई, छोड़ावे नहीं कोई, छोड़ावे तोरा भइया अइसन बेदल जाय ।
अर तर गेलऽ छिनरो बरतर गेलऽ, ढिढवा-फुलाय छिनरो घर चल अयलऽ ।।

राई-राई-राई, छोड़ावे नहीं कोई, छोड़ावे तोरा बहिनी, अइसन बेदल जाय ।
अर तर गेलऽ छिनरो बरतर गेलऽ, ढिढवा फुलाय छिनरो घर चल अयलऽ ।।

भावार्थ

मगध क्षेत्र में राई (सरसो की एक प्रजाति) टोटम का प्रतीक माना जाता है । इसे आग में मीर्च के साथ जलाकर किसी को सम्मोहित करने की प्रक्रिया की जाती है । इससे वर की माँ उद्वेग से पूर्ण हो गई और आल तथा बटवृक्ष के नीचे गयी जहाँ से गर्भधारण कर लौट गई । इसी प्रकार उसकी बहन भी सम्मोहित होकर आल और बटवृक्ष के नीचे जाकर गर्भाधान किया । अनेक सम्बंधित औरतों को इस प्रकार गाली दी जाती है ।

(६२)

केकरा अंगनवाँ में बइरिया के गछिया ,
कि कउन रसिया डढ़िया नेबावे रे ललनवा ।

कि कउन छिनरो तोड़ी–तोड़ी खाय रे ललनवा ,
अंजानो के अंगनवाँ में बइरिया के गछिया ।

कि अंजानो रसिया डढ़िया नेबावे रे ललनवा ,
कि अंजानो छिनरो तोड़ी–तोड़ी खाय रे ललनवा ।

से रहि गेलई छिनरो के पेट रे ललनवा ,
साहेब सुनतई साहेब दंड लेतई रे ललनवा ।

जात सुनतई, जात–भात लेतई रे ललनवा ।।

भावार्थ

किसके आंगन में बैर का पेड़ है और कौन रसिक उसकी डाल को झुका रहा है तथा कौन छिनाल बैर तोड़-तोड़कर खा रही है ? अमुक व्यक्ति के आंगन में बैर का पेड़ है और अमुक रसिक उसकी डाल झुका रहा है तथा अमुक छिनाल बैर तोड़-तोड़कर खा रही है । इसी क्रम में वह गर्भाधान कर लेती है। अब तो साहब सुनेंगा तो दण्ड लेगा और जात के लोग सुनेंगे तो भात लेंगे ।

(६३)

कउन मउगी डड़वा के पातरी, कउन मरदा सढ़वा–जुआन, सुन्दर गोर पातरी ।
अंजानो मउगी डड़वा के पातरी, अंजानो मरदा सढ़वा–जुआन , सुन्दर गोर पातरी ।
भागल जाय डड़वा के पातरी, खदेरले जाय सढ़वा जुआन, सुन्दर गोर पातरी ।
गिर गेलई डड़वा के पातरी, चढ़गेलई सढ़वा जुआन , सुन्दर गोर पातरी ।

भावार्थ

पतली कमरवाली कौन औरत है और कौन मर्द साढ़ की तरह पठ्ठा है । अमुक औरत कमर की पतली है और अमुक मर्द साँढ़ की तरह जवान है । पतली कमरवाली भागी जा रही है और साँढ़ की तरह जवान उसे पीछा कर रहा है । पतली कमरवाली गिर जाती है और जवान साँढ़ चढ़ बैठता है ।

(६४)

जइसन चिक्कन बरवा के पतवा ओइसन चिक्कन घीव रे ,
वइसन चिक्कन छिनरो के जोबनवा बुढ़वन के तरसे जीव रे ।

टोला भी रोवे परोसी भी रोवे, रोवे बेलखरा के लोग रे ,
नौकरिया करइत अंजानो भइया रोथी, बहिनी कयलक भतार रे ।

भावार्थ

बटवृक्ष का पत्ता जैसा चिकना होता है, वैसा भी चिकना घी भी होता है उसी तरह उस छिनाल का स्तन भी चिकना है जिसे देखकर बूढ़े का भी जी तरसने लगता है । उसे पाने के लिए टोला-पड़ोस के लोग रोते रहते हैं, सारे गाँव के लोग तरसते हैं । नौकरी पर उसका भाई भी दुखी है कि उसकी बहन ने स्वयँ भर्त्तार चुन लिया है ।

(६५)

अंजानो देई के नन्हीगो करहिया, भूइयाँ धरेला तो लग जा हई कइया ।
सड़क चले तो धरऽ हे रहगिरवा, गाड़ी चढ़े तो धरऽ हे डरइभरवा ।
नोकरी पर जाय तो धरे उनकर भइया, घरे आवे तो धरे उनकर सइयाँ ।।

भावार्थ

अमुक देवी की कढ़ाही (भग) बड़ी छोटी है। जमीन पर रखते ही काई लग जाती है । वह देवी सड़क पर चलती है तो राहगीर लोग छेड़ते हैं, गाड़ी पर चढ़ती है तो चालक उसके साथ समागम करता है और नौकरी करने अपने भाई के पास जाती है तो वह भी नहीं छोड़ता है और घर पर तो उसका पति सम्भोग करता ही है ·। उस छिनाल की विचित्र स्थिति है ।

(६६)

अगे माई नून पइचा, तेल पइचा जूज कइसन पइचा ?
एक दिन पइंचा दू दिन पइचा, रोज कइसन पइचा ।

कहथी अनजानो छिनरो, हम लेबई पइचा ,
कहथी अनजानो रसिया हम देबइन पइचा ।

भावार्थ

नमक-तेल तो उधार-पैचा मिलता है लेकिन लिंग पैचा कैसे लिया जा सकता है ? वह भी एक-दो दिनो के लिए उधार लिया जा सकता है । नित्य तो लिंग उधार में नहीं मिल सकता है परंतु अमुक छिनाल (अपने भाई का) लिंग पैचा लेने के लिए तैयार हो गई तो उसका अमुक रसिक भी तैयार हो गया (लोक मेघा में गाली की कैसी वक्रोक्ति है)

(६७)

मोर पिछुअरवा सीमिया के गछिया ,
सीमिया फरले लदभद हो लाल ।

सीम तोड़े चललन छिनरो अनजानो छिनरो ,
दस मरदवा निरखे हो लाल ।

चार मारे चार बेनिया डोलावे ,
दू मरदवा के मारहूँ न आवे ।

उठि चलले लजाय हो लाल ।।

भावार्थ

मेरे घर के पीछे सीम का गाछ है जो काफी फल से लद गया है। अमुक छिनाल सीम तोड़ने गई तो दस मर्द देखने लगे । फिर चार ने उसे धर दबोचा और चार मर्द पंखा झलने लगे । शेष दो मर्द को सम्भोग नहीं करने आने के कारण लज्जित होकर उठ भागा ।

(६८)

दू पइसा के बीआ मंगवली बुनली भर अंगना ,
गोले गोले बइगन फरे भर अंगना ।

केकर हई सेर-बटखरा केकर दूनो जोबना,
कउन रसिया बइठके तौले लागलन अंगना।

अंजानो के सेर-बटखरा,अंजानो के दूई जोबना,
अंजानो रसिया बइठ के तौले लगलन अंगना।

भावार्थ

दो पैसे में बीज मंगाकर आंगन में बुन दिया तो गोल-गोल बैगन फलकर आंगन भर गया। किसका बटखरा है और बैगन की तरह गोल किसका जोबन है ? कौन रसिक अपने बटखरे से जोबन (स्तन) को तौल रहा है। अमुक मर्द का बटखारा है और अमुक देवी का जोबन है। वह रसिक मर्द उसके जोबन को तौल रहा है।

(६९)

दुलरिया के नन्हीगो ढकनिया गे माई, कि राम दुलारी गे माई।
ओही पर नौमन के घानी गे माई, कि राम दुलारी गे माई।
ठोपे-ठोपे तेल-चूवे घानी गे माई, कि राम दुलारी गे माई।
से तेलवा जातथी अंजानो भइया चानी गे माई, कि राम दुलारी गे माई।
पानी ला ठंढा तेल गे माई; कि राम दुलारी गे माई॥

भावार्थ

उस दुलारी की ढकनी(भग) बहुत छोटी है। फिर भी उस पर नौमन की घानी चल रही है। घानी से बूँद-बूँद तेल चल रहा है। उसी तेल को अमुक भाई बहन को लगा रहा है। बहन कहती है कि तेल तो पानी से भी ज्यादा ठंढा है। व्यंग्य प्रधान गाली में अश्लील चित्रण हुआ है।

(७०)

माटी कोड़े गेलऽ छिनरो ओहे मटखान हे,
चमरा धैलक ढोलवा बजाय हे।
माटी कोड़े गेलऽ छिनरो ओहे मटखान हे,
नउवा धैलक नोखर देखाय हे।
माटी कोड़े गेलऽ छिनरो ओहे मटखान हे,
बरमनवा धैलक पोथिया देखाय हे।

माटी कोड़े गेलऽ छिनरो ओहे मटखान हे ,
कहरवा धैलक डड़िया बैठाय हो ।

भावार्थ

मिट्टी खानने के समय यह गीत-गाली गाई जाती है । गीत गाने वाली स्त्रियाँ सवासिन को विभिन्न जातियों के साथ सम्बंध दिखाकर गाली देती है जैसे चमार ढोल दिखाकर, नाई नोखर दिखाकर, ब्राह्मण पोथी दिखाकर और कहार डोली पर बैठाकर उसके साथ समागम करता है ।



विविध प्रकार के संस्कार लोकगीत

न जाने विविध संस्कारों को सम्पन्न करते कितने प्रकार की गालियाँ लोक जीवन में प्रचलित है, कहा और संग्रह नहीं किया जा सकता। उपर्युक्त उदाहरणों से मगध में प्रचलित गालीगीतों का थोड़ा अभास मात्र मिल जायगा।

उपयुर्क्त गीतों के अतिरिक्त विवाह संस्कार सम्पन्न होने के क्रम में स्थान और परिस्थित के अनुसार अनेकानेक लोकगीत गाए जाते हैं, जैसे बारात चले जाने के बाद वर पक्ष की स्त्रियाँ रात्रिभर अभिनयात्मक गीत गाती हैं जिसे डोमकच (द्रुमकक्ष) कहते हैं। ऐसे गीत लोकनाट्यगीत है जिनका विस्तार के साथ विवरण मैने नाट्यगीतों में अन्यत्र किया है। इसी प्रकार कठौती के गीत, मत्थ झक्का के गीत, समदन के गीत, विदाई के गीत, पुत्रवधू के आने पर निहुछन गीत, दौरा में पैर देते समय के गीत, दही-बड़ेरी के गीत, गौना और विदाई गीत, दोंगा के गीत, नेयार के गीत न जाने कितने संस्कार सम्बंधी विधि-विधान के गीत गाए जाते हैं। कहा नहीं जा सकता, मगध, का लोकजीवन लोकगीतों का इन्साक्लोपीडिया है जिसके संग्रह और भाष्य का काम व्यक्ति नहीं कोई संस्था ही कर सकती है। उपर्युक्त प्रकार के विविध गीतों के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत कर संस्कार गीतों का प्रसंग समाप्त करते हैं।

(१)

कोरे ही नदवा में दहिया जमायो, बहुआरो देई के माथे धरायो,
बहुआरो के पैर सुलछन।
धन-धन भाग अनजानो-रइया, बेटा पुतोह घर आयो,
बहुआरो के पैर सुलछन।

धन-धन भाग तोरो अम्मा सोहागिन, दउरा में पैर धरायो,
बहुआरो के पैर सुलछन ।

डटहर-पान के बीड़ा लगायो, बहुआरो न पान चबायो,
बहुआरो के पैर सुलछन ।

धन-धन भाग अनजानो-रइया, बेटा-पुतोह घर आयो,
बहुआरो के पैर सुलछन ।

भावार्थ

यह गीत उस समय गाया जाता है जब पुत्र विवाह के बाद पुत्रबधू के साथ अपना घर पहुँचता है । वहाँ सवारी से उतर कर जमीन पर नहीं बल्कि दौरे में पैर रखा जाता है । बधू के माथे पर चुके मे भरे दही को वर थाम्हे रहता है और दो दौरे (खचिया) को क्रम से सवासिने आगे बढ़ाती है और पुत्र-पुत्रवधू खचिये में पैर बढ़ाते सिराघर (देवगृह) तक जाते हैं । इसी क्रम में उपयुर्क्त गीत गाया जाता है ।

कोरे मटुके में दही जमाया गया है और उस दही भरे मटुके को बधू के माथे पर रख दिया गया है । बहू का पैर सुलक्षण है । अमुक राय(स्वसुर, दादा आदि) का भाग्य धन्य है कि बेटा-पुतोह घर पर आ गयी है । वर की माँ का भी भाग्य धन्य है कि उनका पुत्र और पुत्र-बधू को दौरे में पैर रखकर घर में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । डंटी लगे पान का बीड़ा तैयार किया गया है परंतु लज्जावश बहू पान नहीं चबा रही है । परिवार के सभी लोगों का भाग्य धन्य है कि आज बेटा-पुतोह का घर में आगमन हुआ है ।

इसके बाद भैंसुर सिरा घर (देव-गृह) में अपने भवह के सर पर दही भरे चुके को रखता है। यह उसका अंतिम स्पर्श है । इसके बाद जीवन पर्यंत भैंसुर-भवह का कभी स्पर्श नहीं होता । उस समय भी प्रकारांतर से उपर्युक्त गीत की कड़ियां को दुहराया जाता है, यथा ।

"कोरे ही नदवा में दहिया जमायो, बहुआयां के माथे धरायो,
धनधन भाग अनजानो-साही, भाई-भवह घर आयो आदि ।।"

(२)

सोने के पालकी सबुज रंग ओहार, ताहि चढ़ि बहुआरों आयो सुलछन ,
धन-धन भाग तोहरो अनजानो रइया, बेटा-पुतोह घर आयो सुलछन ।

काँचही बाँस केरा डलवा बिनायो, बहुआरो के पाँव धरायो सुलछन ,
कोरे नदिअवा में दहिया जमायो, बहुआरो के सिर धरायो सुलछन ।

धन-धन भाग तोहरो अनजानो रइया, बेटा-पुतोह घर आयो सुलछन ।।

भावार्थ

पूर्व गीत के भाव ही इस गीत में व्यक्त है, केवल राग एवं धवनि में थोड़ा अंतर है। पुत्र और पुत्र-बधू के गृह आगमन पर विविध आनुष्ठानिक क्रियाओं के अवसर पर प्राय: यही गीत सर्वत्र गाए जाते हैं ।

(३)

समदन और बेटी विदाई के एक दो गीत भी यहाँ द्रष्टव्य हैं ।

कोई सखि अबटन लगावे, कोई सखि केस सरिआवे हे ।
कोई सखि साजे चीर-पटम्बर, कोई सखि बात-बुझावे हे ।

सास के लगिहँऽ गोड़, गोतनी से न झगड़िहँऽ हे ।
ननदी के करिहँऽ पियार, देवर के दुलार हे ।

भावार्थ

इस समदन लोकगीत में बेटी की विदाई के समय उसकी सखियाँ उसे उबटन लगा रही है । कोई उसका केश सम्हाल रही है तो कोई उसका वस्त्र सम्हाल रही है । कोई उसे श्वसुराल में रहने की रीत-नीत सिखला रही है कि सास को पैर लागना और गोतिनी से कभी नहीं झगड़ना । ननद और देवर से प्यार करना आदि ।

(४)

केकरा रोवले गंगादाह उमड़े, केकरा रोवले जमुनदह हे ?
केकरा रोवले भींजे चदरिया, केकरा अँखियान लोर हे ।

अम्मा के रोबले गंगादह उमड़े, बाबू के रोबले जमुनदह हे ।
भइया के रोवले भींजे चदरिया, भौजी के अँखियान लोर हे ।

अम्मा कहे धिया नित-उठ-अइहँऽ, बाबू कहे छवमास हे ।
भइया कहे बहनी काज परोजन, भउजी कहे दूर जाह हे ।

भावार्थ

यह बेटी विदाई का गीत है । यह समय बड़ा कारूणिक हो उठता है । सभी की आँखे नम हो जाती है । किसी के रोने से गंगा तो किसी के रोने से यमुना नदी उमड़ने लगती है । किसी के रोने से चादर भींग जाती है तो किसी की आँखे आँसू विहीन भी है । गीत में कहा गया है कि माँ के रोने से गंगा नदी और पिता के रोने से यमुना उमड़ पड़ती है । भाई के रोने से चादर भींग रही है लेकिन भाभी की आँख

में आँसू भी नहीं है । जाते समय माँ कहती है कि बेटी नित्य उठकर चली आना और पिता कहते हैं कि छह महीने पर आना, भाई कहता है कि कार्य-प्रयोजन पर आना परंतु भाभी तो सदा के लिए दूर चली जाने के लिए कहती है । (ननद के प्रति भाभी का दुर्भाव)

(५)

विवाह में बेटी विदाई की तरह ही गौना (द्विरागमन) और दोंगा का भी विधि-विधान होता है । इसमें भी प्राय: बेटी-विदाई के ही गीत गाए जाते हैं यथा-

कहवाँ के चनवाँ कहाँ चले जाय मोरे प्रान हरी,
कहवाँ के दुलहा धिया लेले जाय मोरे प्रान हरी ।

पुरूब के चनवाँ पछिम चले जाय मोरे प्रान हरी,
बेलखरा के दुलहा धिया लेले जाय मोरे प्रान हरी ।

देहरी बइठल बाबा बिनती करी मोरे प्रान हरी,
दस दिन रहे देहूँ धिअवा हमार मोरे प्रान हरी ।

जब तोरा येहो सासु धियवा पियार मोरे प्रान हरी,
काहे लागि कयलऽ बिआह, मोरे प्रान हरी ।

भावार्थ

बेटी विदाई या गौना (द्विरागमन) के समय यह गीत जब विरह-विदग्ध कंठ से फूटता है तो श्रोता भी विचलित हो उठता है । कहाँ का चाँद(चन्द्रमुखी) कहाँ चला जा रहा है, लगता है मेरे प्राण को कोई हरण कर रहा है । कहाँ का वर मेरी पुत्री को लिए जा रहा है । पूर्व दिशा का चाँद आज पश्चिम की ओर चला जा रहा है । बेलखरा ग्राम का दुलहा मेरी पुत्री को लेते जा रहा है। दरवाजे पर बैठा पिता प्रार्थना कर रहा है कि मेरी पुत्रो को दस दिन यहाँ रहने दो । इस पर दुलहा कहता है कि हे सास-ससुर, यदि आपकी पुत्री इतनी प्यरी थी तो विवाह ही क्यों किया ?

(६)

काहे बिआहे विदेस रे मेरे बाबू हरी,
खूँटे के गाय जनि हाँको रे मेरे बाबू हरी ।

सुपली-मउनी नहि छोड़ो रे मेरे बाबू हरी,
हमरा के दिहले विदेस रे मेरे बाबू हरी ।

बिरना गिरले पछार रे मेरे बाबू हरी ,
अम्मा रोबे बेजार रे मेरे बाबू हरी।
काहे बिआहे विदेस रे मेरे बाबू हरी ?

भावार्थ

गौना और बेटी-विदाई का यह विरह गीत बड़ा ही मर्मस्पर्शी है। बेटी विदाई के समय अपने पिता से कहती है कि तुमने मुझे विदेश में क्यों व्याह कर दिया ? मैं एक खूँटे में बँधने वाली गाय की तरह हूँ , इसे बाहर मत हाँक दो । अभी मैंने सुपली-मौनी का खेल भी तो नहीं छोड़ा है और आपने मुझे प्रवास दे दिया । मेरा भाई जार-बेजार रो रहा है, पछाड़ खाकर गिर रहा है । मेरी माँ भी जार-बेजार रो रही है, मुझे क्यों विदेश में व्याह कर दिया ?



देवी-देवता सम्बंधित मगही लोकगीत

भारतीय धर्म और संस्कृति में पर्व-त्योहारों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । पर्वों एवं ब्रतों के अवसर पर अनेक प्रकार की आनुष्ठानिक क्रियाएँ चलती रहती हैं । लोकजीवन में बिना लोकगीतों के कोई अनुष्ठान पूर्ण नहीं होता । अतः मगही लोकगीतों में देवी देवता सम्बंधी लोकगीतों का भरमार है ।

बिहार में ब्रतों के अंतर्गत सूर्य षष्ठी का बड़ा महत्व है । उत्तरी बिहार का तो यह सर्वोपरी पवित्र पर्व है । यह पर्व कार्तिक और चैत्र शुक्लपक्ष षष्ठी को मनाया जाता है । इसका उद्देश्य पुत्र-प्राप्ति और स्वास्थ्य रक्षा है । बिहार में इसकी इतनी मान्यता है कि जिस तरह वृन्दावन कृष्णक्षेत्र और अयोध्या रामक्षेत्र कहलाता है उसी तरह बिहार सूर्यक्षेत्र के नाम से पुकारा जाता है । यह पर्व अग्निपूजा से सम्बंध रखता है जिसका प्रचलन विश्व के प्रायः समस्त देशों में मिलता है । सूर्य षष्ठी के अवसर पर गाए जानेवाले लोकगीतों को 'छठीमाता' के गीत के नाम से भी जाना जाता है । षष्ठी तिथि से सम्बंधित रहने के कारण यह नाम प्रचलित हुआ । यहाँ 'छठी माता' के सैकड़ों गीतों में से कुछ चुने हुए गीतों का अर्थ के साथ संकलन किया गया है ।

सूर्य षष्ठी के गीत

(१)

चार कोना के पोखरवा, जल उमड़ल जाय, दूध उमड़ल जाय ।
लेहूँ नऽ दुलरैतो बाबू दउरिया, बहंगी घाट पहुँचाय ।
पेन्हूँ नऽ दुलरैतो देवी पियरिया, भेलो अरग के बेर ।
आगे-आगे जा हई दउरवा, पीछे नेटुआ के नाँच ।
सेकर पाछे जा हथिन दुलरैतो देवी, भेलो अरग के बेर ।।

अर्थ

सूर्य षष्ठी ब्रत में सूर्यास्त के समय प्रथम अर्घ्य दिया जाता है, सूर्योदय के समय दूसरे दिन दूसरा अर्घ्य दिया जाता है । अर्घ्य देने जाते समय टोकरी में पकवान एवं विविध प्रकार के फल आदि रख लिए जाते हैं । घर का एक व्यक्ति पूजन सामाग्री से भरी टोकरी को लेकर तालाब या नदी किनारे जाता है । उसके पीछे ब्रती और परिजन-पुरजन की स्त्रियाँ छठी माता के गीत गाती नदी के घाट पर जाती है जहाँ सूर्य भगवान का अर्घ्य दिया जाता है । निम्न गीत में निहितार्थ है कि चतुर्भुजाकार पोखरे (तलाब) में जल भरा है, दूध की तरह स्वच्छ जल उमड़ रहा है । घर की स्त्रियाँ गीत में कहती हैं कि हे दुलारा बाबू , दौरा (टोकरी) सज कर तैयार है । इसे बहंगी में लटकाकर पोखरे के घाट पर पहुँचा दो । साथ ही दुलारी ब्रती को भी कहती है कि पीले वस्त्र को धारण कर लो, अर्घ्य देने का समय हो गया है । सभी लोग घाट पर जाने के लिए प्रस्तुत हो गए । आगे-आगे दौरा (टोकरी) लिए जा रहा है और उसके पीछे नाँचं होते जा रहा है तब फिर दुलारी ब्रती जा रही है। वस्तुतः यह पर्व उल्लास और पवित्रता का पर्व है । लोकगीत के साथ बाजे-गाजे भी बजते जाते हैं, कहीं कहीं नृत्य-गान का भी अयोजन होता है । इन सारे विधानों का वर्णन उक्त गीत में संक्षेप में हो गया है ।

(२)

न देखूँ घाट तलइया, कहाँ अरग दिआय ,
पूछी आवऽ विप्र ब्राह्मण, कहाँ अरग परी ।

जनकपुर में एक तलइया, उहाँ अरग परी ,
पूरब मुँहे सूरूज-कुंड, उहाँ अरग परी ।

अर्थ

नई ब्रती सूर्य षष्ठी ब्रत कर रही है, उसे तालाब का पता नहीं है, वह अर्घ्य देने कहाँ जाय । अतः दह ब्राह्मण से अर्घ्य देने का स्थान पूछवाना चाहती है। उसे उत्तर मिलता है कि जनकपुर में एक तालाब है, वही अर्घ्य पड़ेगा । वहाँ पूरब की ओर एक सूर्य कुण्ड है, वहीं अर्घ्यस्थल है ।

(३)

सात कोठरिया जी दीनानाथ, सोवरण केबाड़ ,
निपिये-पोतिये जी दीनानाथ, चउकठिया धैले खाड़ ।

सबके डलिअवा जी दीनानाथ, कैले विचार ,

हमरो डलिअवा जी दीनानाथ, धैले तमाये।

सासु मोरा मारे जी दीनानाथ, ननद नोचे गाल,
निर्धन पुरूखवा जी दीनानाथ, धरे तरुआर।

चुप रहूँ, चुप रहूँ बाँझी, पटोरवा पोछऽ लोर,
तोहरो के देबो गे बाँझी,सौदागर अइसन पूत।

सासु तोर दुलरतो गे बाँझी, ननदिया मांगे दान,
निर्धन पुरूषवा गे बाँझी, हिरदा लेतो लगाय।

अर्थ

बाँझ (संतान विहीन) सूर्यमंदिर में संतान के लिए प्रार्थना करती है-सूर्य मंदिर में सात कोठरियाँ हैं जिसकी कीवाड़ स्वर्ण जटित है। बंध्या स्त्री मंदिर को लीप-पोतकर चौखट पकड़ कर खड़ी है। सभी भक्तों की पूजन सामग्रीयुक्त डाली पर विचार किया जा रहा है लेकिन उसकी डाली उपेक्षित पड़ी है। वह सूर्य भगवान से अपना दुख निवेदित करती है कि निःसंतान रहने के कारण उसकी सास मारती है, ननद झकझोरते रहती है। मेरा निर्धन मर्द भी तलवार उठा देता है। करूणा भरी कहानी सुनकर सूर्य भगवान कहते हैं कि हे बंध्या स्त्री, चुप रहो, अपने वस्त्र से आँसू पोंछ लो। तुम्हें सेठ की तरह पुत्र दूँगा तो तुम्हारी सास प्यार करने लगेगी, ननद पुत्रोत्सव में दान मांगेगी, तुम्हारा निर्धन पति हृदय से लगा लेगा।

(४)

कहवाँ में उगलन सुरूज देवा, कहवाँ भइले इंजोर,
सरग में उगलन सुरूज देवा, धरती भइले इंजोर।

कड़के से बोलथी सुरूज देवा, के करिहें छठ हमार,
विनती से बोलथी अनजानो बाबू, हम करबो छठ तोहार।

अर्थ

कहाँ सूर्योदय हुआ और कहाँ प्रकाश फैल गया। स्वर्ग में सूर्योदय हुआ और पृथ्वी पर प्रकाश फैल गया। सूर्य देवता कड़ककर बोलते हैं कि मेरा छठब्रत कौन करेगा ? प्रार्थना पूर्वक ब्रती कहता है कि मैं आपका छठब्रत करूँगा।

(५)

छोटे-मुटे छठी मइया, भूइया-लोटे केस,

देखते सोहावन लागे, बचन अपार।

डोमवा के बेटवा हे मइया, कोलसूपवा लेलेखाड़ ,
कोरे कोल सूपवा लेले, अनजानो बाबू खाड़ ।

उनको के देलऽ हे मइया, अनजानो अइसन पूत ,
उनकर बधइया हे मइया, फिनो करबई छठ ।

अर्थ

सूर्य षष्ठी को मातारूप में चित्रित—ब्रती कहता है कि छठी माँ छोटी हैं पर तेजस्वी हैं जिसके लम्बे केश जमीन को स्पर्श कर रहे हैं । जो देखने में सुहावना लग रहा है । उनकी वाणी अपरम्पार है । डोमपुत्र नया सूप लेकर खड़ा है । ब्रती नया सूप लेकर अर्घ्य देने के लिए खड़ा है । उसे पुत्र की प्राप्ति हो गई है । उसकी बधाई में पुनः वह छठ करेगा । (**ब्रती पुरुष या स्त्री भी हो सकती है**)

(६)

दुअरे ही केलवा के गँछिया सुरूज उगले झमाय ,
कउन कसूरवे जी सुरूज उगलऽ झमाय।

भूखल बलकवा न पिअवलऽ तिरिया ओकरे सजाय ,
रूसल ननदिया देलऽ घुराय तिरिया ओकरे सजाय।

पति के कहनवा न मानलऽ, ओकरे सजाय ।।

अर्थ

दरवाजे पर केला का घौद (जो सूर्य पूजा में व्यवहृत होता है) है, फिर भी सूर्य मलीन होकर उदित हो रहे हैं । ब्रती कहती है कि हे सूर्य किस कसूर के कारण मलीन होकर उग रहे हैं । सूर्य कहते हैं कि भूखे बालक को दूध नहीं पिला सकी है, हे औरत, उसी की सजा है । रूठी हुई ननद आई तो उसे लौटा दिया, पति की बात नहीं मानी, इन्हीं सब की सजा है कि मैं तुम्हारे दरवाजे पर मलीन हूँ, उदास हूँ ।

(७)

सोने खड़उवाँ जी दीनानाथ, चंदन केरा गाछ ,
चलियो में भइली जी दीनानाथ, रउवा दरवार ।

सब के अरजिया जी दीनानाथ, लेलहूँ मनाय ,
हमरो अरजिया जी दीनानाथ, परलो तमाय ।
मंदिर निपइते जी दीनानाथ, बहियाँ पीराय ,
तइयौ न छोड़वल जी दीनानाथ, बाँझी के नाव ।
सासु मोरा मारे जी दीना नाथ, ननद पारे गारी ,
गोतिनी के बतिया जी दीनानाथ, हमें न सोहाय ।
सेज के पुरूषवाजी दीनानाथ, लिहें लुलुआय ,
खरछुत लगवा के बाँझी, कयलऽ जेवनार ।
ओही परीछवे के बाँझी, बहिया तोर पीराय ,
गोदिया में देबो गे बाँझी, अंजानो अइसन पूत ।
हँसते-खेलइते गे बाँझी, घरबा घुरी जाय ,
सासु तोर दुलारे गे बाँझी, ननद देते तेल ।
साथे के पुरूखवा गे बाँझी, हिरदा लेते लगाय ।।

अर्थ

चंदनवृक्ष के नीचे सोने का खड़ाऊँ पहने दीनों के नाथ, सूर्य हैं । वहाँ ब्रत करने वाली श्रद्धालु बाँझ औरत पहुँचती है । वह कहती है कि सभी की प्रार्थना सूर्य भगवान ने ग्रहण कर ली । लेकिन मेरा निवेदन तिरष्कृत क्यों ? मंदिर की सफाई करते मेरी बाह दुखती है तौ भी आपने मुझे बाँझ से नाम नहीं हटाया । इसके लिए सास मुझे मारती है, ननद गाली देती है। गोतनी की बात असह्य हो जाती है । साथ शयन करनेवाला पति भी लज्जित करते रहता है । इस पर सूर्य कहते हैं कि दोषपूर्ण तरीके से तुमने जेवनार (भोजन) कराया । इसी कारण से तुम्हारी बाह में पीड़ा है । अब मैं तुम्हारी गोद में पुत्र दूँगा जो हँसते-खेलते घर में घूमते-फिरते रहेगा । सास दुलार करेगी और ननद तेल देगी । साथ का पति तुम्हें हृदय से लगा लेगा ।

(८)

चढ़ते कतिकवा जी दीनानाथ धड़की समाय ,
कउची से पुरइबो जी दीनानाथ तोहरो के आस ।
चलियों में जाही गे निरधन, बनिवाँ दोकान ,
लेइयो में लाही गे सेबकी, हुमदिया उधार ,
हथवा जोड़िये गे निरधन, होई जइहें खाड़ ,
ओही से पूरइहें गे बाँझी, हमरा के आस ।

अर्थ

एक निर्धन औरत को कार्तिक मास चढ़ते ही धड़कन बढ़ जाता है क्योंकि निर्धनता के कारण वह सूर्य षष्ठी का ब्रत कैसे करेगी ? वह सूर्य भगवान से पूछती है कि किस चीज से मैं आपकी आशा पूर्ण करूँगी ? सूर्य कहते हैं कि बनिये की दूकान पर चली जाओ और वहाँ से केबल हुमाद (धूप) उधार में ले आओ और हाथ जोड़कर खड़ी हो जाना इसी से मेरी आशा पूर्ण हो जायगी ।

(९)

सुपवा के गछिया लहालह, ऊपर धाजा फहराय ,
बिना बालक केरा गोदिया, मोरा एको न सोहाय ।

किया मारली ब्राह्मन, किया मारली धेनु गाय ,
कउची करयते हम चुकली, आदित एतना सजाय ?

नाहीं मारलऽ ब्राह्मन, नाहीं मारलऽ धेनु गाय ,
सासु ननद उदबासलऽ, तिरिया ओकरे सजाय ।

अर्थ

लहलह बाँस है जिसपर पताका फहरा रहा है लेकिन बिना बालक की गोदी के कारण औरत को कुछ भी सुहाना नहीं लगता । वह सूर्य से पूछती है कि क्या हमने ब्राह्मण को मारा है या सीधी गाय को मारा है ? हे सूर्य, मैं किस काम में चुक गई कि इतनी सजा मिल रही है । सूर्य कहते हैं कि तुमने न तो ब्राह्मण को मारा है न गाय को, बल्कि सास-ननद को निकाल दिया है । इसी लिए तुम्हें उसी की सजा है ।

(१०)

सुपवा लेवे गेली ये दीनानाथ, डोमवा दूकान ,
डोमवा के बेटवा ये दीनानाथ, देले लुलुआय ।

ओते चल ओते गे बाँझी तोर देहिआ हउ अछूत ,
तोहरो न परछहिये गे बाँझी, मोर पुतोहिया होयतो बाँझ ।

तइयो न मेटवलऽ ये दीनानाथ, बाँझी केरा नाँव ,
तइयो नाहीं सुनलऽ ये सुरूजदेवा, विनती हमार ।

फलवा लावे गेलियो ये दीनानाथ, कुजंड़ा दूकान ,
कुजंड़वा के बेटा ये दीनानाथ, लेलो लुलुआय आदि ॥

अर्थ

एक बाँझ सूर्यभक्तिन सूर्य पूजा के लिए सामग्री खरीदने जाती है तो उसे सभी दूकानदार तिरष्कृत और अपमानित करते हैं । सूप खरीदते डोम लज्जित करता है और हट जाने के लिए कहता है क्योंकि उसकी छाया से उसकी पुत्र-बधू भी बाँझ हो जायगी । वह बाँझ स्त्री सूर्य से कहती है कि अपमानित होने पर भी उसे बाँझ से मुक्त नहीं किया गया हे सूर्यदेव, हमारी प्रार्थना नहीं सुनी । मैं कुंजड़े की दूकान पर पूजा के लिए फल खरीदने गई तो कुंजड़े के बेटे ने मुझे लज्जित कर दिया ।

(११)

साजलो दउरवा सुरूज के, बलका देलो जुठीआय ,
बलका के मइया हथवा जोड़ले, सुरूज होवऽ न सहाय ।
साजलो पिअरिया सुरूज के, बलका लेले लपटाय ,
बलका के मइया हथवा जोड़ले, सुरूज होवऽ न सहाय ।

अर्थ

सूर्य को अर्घ्य देने के लिए दौरा (टोकरी) सजाकर रख गया तो बालक ने जूठा कर दिया । बालक की माँ हाथ जोड़े खड़ी प्रार्थना करती है कि हे सूर्य भगवान सहायता करें । पुनः पीला वस्त्र सज्जित है जिसे बालक ने लपेट लिया तो उसकी माँ सूर्य को सहायता करने के लिए प्रार्थना करती है ।

(१२)

सुपवा नरियरवा बोझली मोरी नइया, के मोरा नइया पार उतारे हे ?
मैं बनिजारिन राम के, सीता जोहई बाट हे, मैं बनिजारिन राम के ।
राम बोझवइया, कृष्ण खेबइया, हरे कृष्ण पार उतारे हे, मैं बनिजारिन राम के ।
मइया के जनमल भइया जे रहितन, धीरे-धीरे नइया पार उतारे हे, मैं बनिजारिन ।
सासु के जलमल देवरा जे रहितन, हँसत-खेलत पार उतारे हे, मैं बनिजारिन राम के ।
सीता जोहले बाट हे, मैं बनिजारिन राम के ।

अर्थ

इस सूर्य षष्ठी के गीत में आत्मा-परमात्मा सम्बंधी निर्गुण भाव की अभिव्यक्ति मिलती है । ब्रती कहती है कि सूप और नारियल से मेरी नाव लदी है । इस नाव को खेकर कौन पार उतारेंगा ? मैं, ब्रती राम-नाम का सौदा करती करती हूँ । उधर सीता मार्ग देख रही है । राम नाव पर लादने वाले है और कृष्ण (वही) नाव खेने वाले हैं । मैं राम की बंजारिन हूँ, वही संसार समुद्र से पार उतारने वाले हैं । इस संसार समुद्र में जीवात्मा बंजारिन की तरह अपने शरीर रूपी नाव में बैठी है। इसे

भगवान ही पार उतार सकते है । पुनश्च, भाई का जन्मा भतीजा रहता तो वह धीरें-धीरे नाव खेकर पार उतार देता । देवर भी हँसते खेलते पार उतारता । इसमें मूलत: भाई-भतीजे की कामना है । सीता की तरह वह मार्ग देख रही है । वही उसे उद्धार कर ले जायेंगे, पार उतारेंगे ।

(१३)

गोड़े--मुड़े तनबई चदरिया, पटना जयबई जरूर ,
उहवाँ से लयबई कोरा सुपवा, अर्घ देहबइन जरूर ।
पाँच पुत्तर एक धियवा, धियवा माँगबइन जरूर ,
गोड़े-मुड़े तनबई चदरिया, पटना जयबई जरूर ।
उहउँ से लयबई नरियर फलवा, अर्घ देबइन जरूर ,
पाँच पुत्तर एक धियवा, धियवा माँगबइन जरूर ।

अर्थ

ब्रती कहती है कि पैर से सिर तक चादर ओढ़कर पटना शहर जाऊँगी । वहाँ से सादा सूप लाऊँगी और अर्घ्य जरूर दूँगी । साथ ही पाँच पुत्र और एक पुत्री के लिए प्रार्थना करूँगी, पुत्री अवश्य माँगूगी । पुनः आगे कहती है कि पटना जाकर नारियल फल लावेगी जिससे अर्घ्य देगी और पाँच पुत्र तथा एक पुत्री अवश्य माँगेगी ।

(१४)

चार पहर राती जलथल सेविला, सेविला चरन तोहार ,
छठी मइया, दर्सन देहूँ अपान, जगतारन मइया दरसन देहूँ अपान ।
माँगू-माँगू तिरिया कउन फल माँगू, जे तोरा हिरदा में समाय ,
छठी मइया दर्सन देहूँ अपान, जगतारन मइया दरसन देहू अपान ।
नइहरा में माँगिला, अन्न-धन, लछमी, ससुरा में सहन भंडार ,
छठी मइया दर्सन देहूँ अपान, जगतारन मइया दरसन देहू अपान ।
राजा दसरथ अइसन ससुर माँगिला, रानी कौसल्या असन सास ,
छठी मइया दर्सन देहूँ अपान, जगतारन मइया दरसन देहूँ अपान ।
नइहरा में माँगिला भाई रे भतिजवा, ससुरा में सहन भंडार ,
छठी मइया दर्सन देहूँ अपान, जगतारन मइया दरसन देहूँ अपान ।
घोड़वा चढ़न को बेटा माँगिला, गोड़वा लगन को पुतोह ,
बैनाधुरन को चेरी-बेटी माँगिला, पढ़ल पंडितवा दमाद ।
छठी मइया दर्शन देहूँ अपान, जगतारन मइया दरसन देहू अपान ।।

अर्थ

ब्रती कहती है कि जल और थल में रहकर चार प्रहर रात्रि तक आप के चरण की सेवा की । हे छठी माँ, जग को उद्धार करने वाली माता अपना दर्शन दें । इस पर छठी माँ कहती है कि जो तुम्हारे हृदय को भावे, वह बरदान मांगो । ब्रती नैहर में अन्न-धन-लक्ष्मी मांगती है और श्वसुराल में भरा हुआ भण्डार मांगती है। पुनः वह राजा दशरथ की तरह श्वसुर और कौशल्या की तरह सास मांगती है । वह आगे नैहर में भाई-भतीजा मांगती है और श्वसुराल में सब कुछ पूर्ण मांगती है । घोड़ा पर चढ़ने योग्य पुत्र और विनम्र पुत्र-बधू मांगती है, साथ ही टोले पड़ोसे में प्रसाद बाँटने के लिए पुत्री और पढ़ा पंडित दामाद मांगती है । हे छठी माँ, जगतारण माता अपना दर्शन देकर कृतार्थ करें ।

(१५)

चइत ही मासे बरत एक लागले, अगहन लागे एतवार,
सँवरो तू फूलवा कयलऽ न दान, सँवेरो, तू बड़ी पापी नदान ।
हमरो ससुर जी बड़ा धन लोभी, ओही नऽ करे देलन दान,
सुरूज देवा हम कइसे, पापी नदान ।
कातिक मास बरत एक लागल, अगहन लागे एतवार,
सँवरो नरियरवो नऽ कयलऽ तू दान, सँवरो तूँ बड़ी पापी नदान । आदि

अर्थ

चैत महीने में एक ब्रत (सूर्य ष्ठी) लगता है और अगहन में एतवार ब्रत होता है । उस ब्रत से संबंधित देव-सूर्य भगवान कहते हैं कि हे साँवली तूँ बड़ी नादान और पापी हो, तुमने उस अवसर पर एक फूल तक दान नहीं किया । वह कहती है कि हमारे श्वसुर धन के बड़े लोभी हैं, उन्होंने मुझे कुछ दान नहीं करने दिया । अतः हम कैसे पापी और नादान हैं । हमारे भँसुर भी वैसे ही हैं जिससे मैने कुछ दान नहीं किया । कार्तिक में भी एक व्रत होता है और अगहन में एतवार, उस अवसर पर भी साँवली ने नारियल दान नहीं किया, वह पापी, नादान हैं । साँवली अपने परिवार को दोष देकर अपना बचाव करती है ।

(१६)

कथी नीके उजे गज-गजओबर, कथी छाने लगल हई कीवाड़ ।
सोनही के उजे गंज-गजओबर, रूपे छाने लागल हई कीवाड़ ।

ताही पइसी सुतथी देवा सुरूज देवा, बाँझी चउकठिया धयले खाड़ ।
जाई के जगावथी सुरूज देव के मइया, उठऽ बाबू हो गेलो बिहान ।
अन्धरा के आँख दिहऽ कोढ़िया के काया, निर्धन धन रे बहुत ।
बाँझी तिरिअवा के कोख पलटइहँऽ, हँसते-खेलते घर जाय ।

अर्थ

किस सुन्दर पदार्थ से कोहबर बना है और किस चीज की कीवाड़ लगी है ? स्वर्ण जटित कोहबर है जिसमें रूपा (चाँदी) की कीवाड़ लगी है । उसमें प्रवेशकर सूर्य देव सोते हैं । बाँझ औरत चौकठ पकड़कर खड़ी है अर्थात् प्रार्थना करती है । सूर्यदेव की माँ जाकर उन्हें जगाती है कि सुबह हो गई । जाकर अन्धे को आँख दे देना । कोढ़ी को काया परिवर्तित कर देना, निर्धन को बहुत धन देना, बाँझ औरत को गोद भर देना जिससे वह प्रसन्नचित्त घर लौट जाय ।

(१७)

नरिअरवा जे फरले घवद से ऊपर सुग्गा मड़राय ।
मारबो का सुगवा धनुष से सुग्गा गिरे मुरूछाय ।
सुगिया जे रोवले विजोग से, सुरूज होवऽ नऽ सहाय ।
फलवा जे फरले घवद से, ऊपर सुग्गा मड़राय ।
मारबो का सुगवा धनुष से, सुग्गा गिरे मूरूछाय ।
सुगिया जे रोवले विजोग से सूरूज होवऽ नऽ सहाय ।

अर्थ

नारियल घौद का घौद फला हुआ है उस पर सुग्गे मड़रा रहे हैं । उसका रखवाला धनुष से मारता है । वह सुग्गा मूर्छित होकर गिर जाता है । सुग्गी उसके वियोग में रोती है और सूर्य भगवान से सहायक होने का निवेदन करती है । इस प्रकार अन्य फल भी घौद में फले हैं जिसपर सुग्गे मड़रा रहे हैं । रखवाले ने सुग्गे को मारा तो वह मूर्छित होकर गिर गया। सुग्गी वियोग में रो रोकर सूर्य से सहायक होने की प्रार्थना करती है ।

(१८)

चार कोना के पोखरवा, जल उमड़ल जाय, दूध उमड़ल जाय ।
सुरूज देवा चललन नेहाय, उस पर धज्जा फहराय ।
चार कोना के पोखरवा, जल उमड़ल जाय, दूध उमड़ल जाय ।
छठी मइया चललन नेहाय, उस पर धज्जा फहराय ।

अर्थ

चतुर्भुजाकार तालाब में दूध की तरह स्वच्छ जल भरा है उसमें सूर्यदेव स्नान करने चले, वहाँ ध्वजा फहरा रहा है। उसी तालाब पर छठी माता भी स्नान करने जा रही है जहाँ ध्वजा फहरा रहा है।

(१९)

केरवा के पतवा लहालही फुलवा फूले कचनार ,
स्वामी मोरा लोढथी चदर में, हमें अरग दिआयम ।
नरियर के पतवा लहालही, फलवा फूल कचनार ,
स्वामी मोरा लोढ़थी चदर में, हमें अरग दिआयम ।

अर्थ

केला का पत्ता लहलहा रहा है, कचनार फूल रहा है, स्वामी चादर में जमाकर रहे हैं। नारियल का पत्ता लहरा रहा है, कचनार फूल रहा है। स्वामी जमाकर मुझे अर्घ्य दिलावेंगें।

(२०)

सुरूज बाबा बुनलन जीरवा, जीरवा लगले अकास ,
घोड़वा चढ़ल आवे अंजानो बाबू, जीरवा लेलन सिरोक ।
उनकर बेटी अंजानो बेटी, बेटी जाले ससुरार ,
अम्मा दिहले जीरवा खोइछा, खोइछा धमसत जाय ।
भइया दिहले पढ़ल सुगवा, सुगवा पढ़इत जाय ,
भाभी दिहले लाली चुनरी, चुरनी धमसइत जाय ।
बाबा दिहले धेनु-गइया, गइया हँकड़इत जाय ,
दादी दिहले अँकवरिया, धिअवा जाले ससुरार ।

अर्थ

सूर्य बाबा ने जीरा बुना, जीरा बढ़कर आकास स्पर्श करने लगा। घोड़े पर चढ़कर अमुक व्यक्ति जा रहा था जिसने फले जीरे को जमा कर ले लिया। उनकी बेटी ससुरार जा रही है। अतः उसकी माँ ने खोइछे में जीरा दिया जिससे खोइछा सुगंधित है। भाई ने पढ़ा सुग्गा दिया, वह उसके साथ पढ़ते जा रहा है। उसकी भाभी ने लाल चुनरी दी, चुनरी भी सुगंध दे रही है। बाबा ने गाय दी, गाय हँकड़ती जा रही है। दादी ने गले लगाया कि बेटी श्वसुरार जा रही है।

(२१)

काहेला सावित्री रानी चइत नेहयलऽ हे ,
कुछी नहीं दान कयलऽ, कते पापी भेलऽ हे ?
हमरा पति जी जगत्र के राजा ,
जोड़े सुपवा दान कयलन, कइसे पापी भेलूँ हे ?

अर्थ

श्रद्धालु पूछता है कि हे सावित्री रानी चैत्र (षष्ठी को) मास में क्यों स्नान किया ? कुछ दान नहीं किया तो कितनी पापी हुई ? वह कहती है कि हमारा पति संसार का राजा है, उन्होने एक जोड़ा सूप का दान किया है, मैं पापी कैसे हुई ?

(२२)

जोड़े कोर सुपवा लेले, बरती पुकारे हे ,
उगऽ न सुरूज देवा, लेहूँ न अरगिया हे ।
कइसे में लेहूँ बरती, तोहरो अरगिया हे ,
कोढ़िया जे काया मांगई, अन्हरा जे आँख हे ।
बाँझी पुतरवा माँगई, निरधन जे धन हे ,
कोढ़िया के काया दिहँऽ, अंधरा के आँख हे ।
बाँझी पुतरवा दिहँऽ, निरधन के धन हे ।।

अर्थ

जोड़ा सूप में अर्घ्य का समान लिए ब्रती निवेदन कर रही है । वह सूर्योदय होने के लिए प्रार्थना करती हैं और अर्घ्य ग्रहण करने कहती है । सूर्य भगवान कहते हैं कि तुम्हारा अर्घ्य कैसे ग्रहण करूँ ? कोढ़ी स्वस्थ्य शरीर चाहता है अंधा आँख मांगता है । बाँझ पुत्र मांगती है, निर्धन सम्पति मांगता है । ब्रती कहती है कि कोढ़ी को शरीर, अंधे को आँख, बाँझ को पुत्र और निर्धन को धन दीजिए ।

(२३)

बेलखरा के पकी हई सड़किया, उस पर लगले बजार ,
हमरा अंजानो बाबू बिसुनिया, करथी नरियर के मोल ।
जलदी से करऽ नऽ मोलइया, होलई अरग के बेर ,
बेला के पकी हई सड़किया, उसपर लगले बाजार । आदि पुनरूक्तियाँ

अर्थ

बेलखरा गाँव की पक्की सड़क है, उस पर बाजार लगा है । हमारे अमुक व्यक्ति व्रती है, वह नारियल का मोल-जोल करें, जल्दी भाव-बट्टा करें । अर्घ्य देने का समय हो रहा है । उसी प्रकार गाँवों और फलों के नाम लेकर गीत की कड़ी को आगे बढ़ाया जाता है ।

(२४)

काँच ही बाँस के बंहगियां, बहंगी लचकइत जाय ,
बनऽ नऽ अंजानो बाबू कहरिया बंहगी देहूँ पहुँचाय ।

बाट जे पूछले बटोहिया, बहंगी केकर जाय ?
आन्हर का हहीं रे बटोहिया, बंहगी आदित्य के जाय ।

अर्थ

कच्चे बाँस की बहंगी पर (अर्घ्य सामग्री) है जिससे वह लचकती हुई जा रही है । ब्रती कहती है कि बाबू कहार (बहंगी वाहक) बनें और उसे (घाट) पहुँचा दें। रास्ते में बटोही पूछता है कि बहंगी किसकी जा रही है । उत्तर मिलता है कि हे बटोही तुम अंधा तो नहीं है ? यह बहंगी सूर्य की जा रही है ।

(२५)

तुलसी चबुतरा चढ़ी बोलथी सूरूज मलऽ ,
कउन लेबऽ तुलसी के पत्तवा कन्हइया जी ?

घोड़वा चढ़ल आवथी, बाबू अनजानो बाबू ,
हम लेबो तुलसी के पतवा कन्हया जी । पुनरूक्तियाँ

अर्थ

सूर्यदेव तुलसी के चबूतरे पर चढ़कर पुकार रहे हैं कि तुलसी की पत्ती कौन लेगा ? घोड़ पर चढ़कर अमुक व्यक्ति आ रहा है जिसने कहा कि मैं तुलसी की पत्ती लूँगा ।

(२६)

सोने खड़उवाँ सुरूज देव चलथ-फिरथ संसार ,
रहिया में भेंटलई मराछी, चरन गेलई लपटाया ।

कउन कसूर हम कइली, ये सूरूज दरवार ,
भगवान के ओरहन सुनली हे सूरूज दरवार ।

अर्थ

सोने का खड़ाऊँ पहन कर सूर्य देवता सारे संसार में भ्रमण करते हैं । रास्ते में एक मृत वत्सा मिल जाती है जो उनके चरण में लिपट जाती है और कहती है कि मैने कौन सा कसूर किया है । मुझे भगवान के दरवार में उल्हना सुनना पड़ रहा है ।

(२७)

बाँधली सिन्दुर के पुड़िया बिगली अकास लाल ,
उगऽ नऽ आदित देवा, लेहूँ नऽ अरगिया लाल ।

उगऽ नऽ जगतारन देवा, लेहूँ नऽ अरगिया लाल ,
साजली में सभे फलवा, बिगली अकास लाल ।

उगऽ नऽ सुरूज देवा, लेहूँ न अरगिया लाल ।। आदि

अर्थ

ब्रती कहती है कि सिंदुर का पुड़िया बाँध कर आकाश में फेंका और आदित्य देवा से उदित होने के लिए प्रार्थना की कि वे मेरा अर्घ्य ग्रहण कर लें हे जगत के उद्धार करने वाले देवता मेरा अर्घ्य लें । पुनः वह सभी फलों को साजकर आकाश में फेंकती है और सूर्य देवता से उदित होकर अर्घ्य ग्रहण करने की प्रार्थना करती है ।

(२८)

साँझ भयो सूरज कहाँ जाके टीकबऽ ?
भोर भयो सूरज कहाँ जाके रहबऽ ?

जायके जयबो अंजानो बाबू अंगना ,
गइया के गोबर लिपल होइहें अंगना ।

गाय के घीया जरवलन हे धूप्पा ,
गाय के घीया जरवलन हे दीया ।

अर्थ

श्रद्धालु कहता है कि शाम हो गई, हे सूर्य कहाँ जाकर निवास करेंगें ? भोर भी

हो गई, कहाँ जाकर रहेंगे । सूर्य कहते हैं कि जाने के लिए तो अमुक व्यक्ति के यहाँ आँगन में जायेंगे । वहाँ उनका आंगन गाय के गोबर से लिपा हुआ है । गाय के घी से ही धूप और दीप जल रहा है ।

(२९)

आवइत में हलीअई जी दीनानाथ देव से, बीच में गेलियो भुलाय ,
नरियर खरीदबई सूरूजला, सीसिया खरीदबई बैजनाथ ।
आवइत हलीअई गया से बीचवा में गेली भुलाय ,
सब कुछ खरीदबई आदित्य ला सीसिया खरीदबई बैजनाथ ।

अर्थ

श्रद्धालु कहता है कि हे दीनों के नाथ, सूर्य मैं देवधाम से आ रहा था और बीच में रास्ता भूल गया । मैं वैद्यनाथ धाम से सीसी (बोतल) खरीदूँगा और सूर्य भगवान के लिए नारियल खरीदूँगा । मैं गया से आ रहा था तो बीच में भूल गया । बैद्यनाथ धाम से सीसी और सबकुछ सूर्यदेव के लिए खरीदूँगा ।

(३०)

जोड़ली कोर–सुपवा अरग देवे चलली ,
चली भेली जमुना के रेत, छठी मइया ।
बेटिया–पुतोहिया आगे करी लेबो ,
धोयबो में चरन तोहार, छठी मइया ।
जोड़लीओ दउरवा, अरग देवे चलली ,
चली भेजी गंगाजी के रेत, छठी मइया ।
बेटवा भतीजवा के आगे करी लेबो ,
पूजवो में चरन तोहार छठी मइया ।।

अर्थ

ब्रती कहती है कि मै सादे सूप को पूजा के सामान से सजाकर (जोड़कर) तैयार किया और सूर्य भगवान का अर्घ्य देने चली । बेटी और पुत्रवधू को साथ लेकर यमुना किनार की रेती पर चल पड़ी वहाँ अपने परिवार के साथ हे छठी माता, तुम्हारा चरण पखारूँगी । पुनः वह कहती है कि दौरा (टोकरी) को सजाकर गंगा जी की रेती पर अर्घ्य देने चली । हे छठी माता, बेटा और भतीजा को साथ लेकर तुम्हारा चरण पूजूँगी ।

(३१)

काहेलागी सेवली रामा तुलसी हे,
काहेलागी सेवली बैजनाथ कन्हइया, जी।

दूध लागी सेवली रामा तुलसी हे,
पुत लागी सेवली बैजनाथ कन्हइया जी।

भोर उठी गलिया बहारबो, घरवा सम्पत दउ,
घरवा बहारबो मिल कुल परिवार, कन्हइया जी।

भोर उठी गलिया बहारबो, नइहरा कुल परिवार,
गोदिया बालक ला, कन्हइया जी।

अर्थ

साधिका कहती है कि मैने तुलसी के बिरवा का क्यों सेवन किया और वैद्यनाथ (महादेव) का क्यों सेवन किया ? हे प्रियतम (कन्हैया जी) मैने दूध (सम्पति-गाय) के लिए तुलसी का सेवन किया और पुत्र के लिए महादेव का सेवन किया। वह आगे कहती है कि भोर में उठकर कुल परिवार के साथ गली और घर बुहारूँगी, मुझे सम्पति दीजिए। इसी प्रकार मायके के सभी परिवार मिलकर गली-कूचे बुहारूँगी, मुझे गोद में बालक दें। साधिका में सेवा-भावना की प्रधानता है।

(३२)

कथी के मंदिलिया हे सविता, कथी लागल हे केवाड़ ?
पत्थल के मंदिलिया हे सविता, चंदन के हई केवाड़।

सोने के गुलवंदवा हे सविता, सोभे तोहरे लिलार।
रूपे के चउकठिया हे सविता, सोभे तोहरे दुआर।

अर्थ

हे सविता माता, आपका मंदिर किस चीज का बना हुआ है और उसमें किस चीज की कीवाड़ लगी है। वस्तुतः पत्थर का मंदिर है अैर उसमे चंदन की कीवाड़ है। कीवाड़ को सोने की काँटी से जड़ा गया है। वहाँ अवस्थिता सविता माँ का ललाट, सुशोभित है। उस मंदिर में रूपा (चाँदी) के चौखट लगे हैं -वहाँ का विग्रह सुन्दर है।

(३३)

सूरूज अंगनवाँ चननवाँ के गछिया, सुरूज मोरा धयलन अँचरवा ।
छोड़ऽ सूरूज बाबा हमरो अचरवा, भेगेलई सूरूज हुमदिया के बेरवा ।
हो गेलई जी सुरूज पलटनियाँ के बेरिया, दूध ढारे के बेरिया ।

अर्थ

साधिका-नायिका कहती है कि सूर्य के आंगन में चंदन का वृक्ष है, वहीं सूर्य ने मेरे आंचल को पकड़ लिया । वह सूर्य को अपना आंचल छोड़ देने के लिए अनुरोध करती है और कहती है कि होम करने का समय हो गया है । सुबह में अर्घ्य देने का सामान बदल दिया जाता है । अतः ब्रती कहती है कि सामान (नौवैद्य) पलटने और दूध से अर्घ्य देने का समय हो गया है । ऐसा लगता है कि ब्रती शाम में अर्घ्य देने सूर्य के आंगने गई जहाँ सूर्य ने उसे विलमा लिया और सबेरे भी आंचल पकड़ रख है । सभी को अर्घ्य देने के लिए आते देखकर साधिका अपने अराध्य से ही अराधना करने के लिए निवेदन करती है ।

(३४)

अउँटल दुधवा ये दिनानाथ गेलवऽ सेराय ,
कहवाँ गवयलऽ ये दिनानाथ येहो सारी रात ?

आवत में हलिअई ये उम्मा, नदिया किनार ,
बाँझी तिरिअवा ये अम्मा, बटिया लेले रोक ।

कोखिया पलटवते गे अम्मा, बीतले सारी रात ,
अउँटल दुधवा ये दिनानाथ गेलवऽ सेराय ।

कहवाँ गेवयलऽ ये दिनानाथ येहो सारी रात ?
आवइत में हलिअई ये चाची, नदिया किनार ।

निर्धन सेवकिया ये चाची, बटिया लेले रोक,
धनवा दीअइते ये चाची, बीतले सारी रात ।

अर्थ

सूर्य का मानवीकरण-सूर्य की माँ पूछती है कि गर्म किया हुआ दूध ठंढा हो गया । हे सूर्य तुमने सारी रात कहाँ बिताई ? सूर्य ने उत्तर दिया-हे माँ, मैं नदी किनार से होकर आ रहा था । वहीं पर बाँझ औरत ने मेरी राह रोक ली । वह पुत्र की कामना कर रही थी । उसी को पुत्र से गोद भरने में सारी रात बीत गई ।

पुन: सूर्य की चाची पूछती है कि तुमने सारी रात्रि कहाँ व्यतीत की, गर्म दूध ठंढा हो गया । सूर्य उत्तर देते हैं कि मैं नदी किनार से लौट रहा था कि एक निर्धन सेवक ने रास्ता रोक लिया । मैं उसे धन की व्यवस्था करने लगा । इसी में सारी रात बीत गई ।

(३५)

छोटे-मुटे ग्वालिन गे बिटिया, भूइया लोटे केस ,
दुधवा ले अइहें ग्वालिन, अरगिया के बेर ।

छोटे-मुटे डोमिनियाँ गे बिटिया, भूइया लोटे केस ,
सुपवाँ ले अइहें डोमिनियाँ, अरगिया के बेर ।

छोटे-मुटे बजाजिन गे बेटिया, भूइया लोटे केस ,
चुनरिया ले अइहें बजाजिन, अरगिया के बेर ।

छोटे-मुटे सेनुरिया गे बेटी, भूइया लोटे केस ,
संनुर ले अइहें सेनुरियाँ, अरगिया के बेर ।

अर्थ

ब्रती सूर्यार्घ्य के समान के लिए सम्बंधित व्यक्तियों से अनुरोध करती है कि समय हो गया है । अर्घ्य के समय सारे सामान एकत्रित हो जाने चाहिए । ग्वालिन की छोंटी बेटी जिसकी केश राशि जमीन को स्पर्श करती है, अर्घ्य देने के समय, दूध लाने के लिए कहती है । इस प्रकार लम्बी केशवाली डोमिन की छोंटी बेटी को सूप लाने के लिए कहती है । आगे वह बजाज की बेटी को चुनरी और संनुरिया की बेटी को सिन्दुर लाने के लिए कहती है । गीत में सौन्दर्य ओर सुरूचि का ध्यांन है ।

(३६)

ऊँची-ऊँची हवेलिया जी सविता, पूरबी दुअरिया जी सविता ,
बजर केवड़िया जी सविता, पछिम लोटे डढ़िया जी सविता ।

खोलऽ न केबड़िया जी सविता, देह दरसनियाँ जी सविता ,
सासु मोरा आन्हरी जी सविता, ननद ससुररिया जी सविता ।

गोतिनी वैरिनियाँ जी सविता, हम लरकोरिया जी सविता ,
खोलऽ न केबड़िया जी सविता, होवऽ न सहाय जी सविता ।

अर्थ

सूर्य-शक्ति सविता का महल बड़ा ऊँचा है । उमका द्वार पूर्व दिशा में हैं जिसमें वज्र-कीवाड़ लगा है । पच्छिम दरवाजे पर वृक्ष की डाली फैली है । अतः ब्रती सविता से कीवाड़ खोलने का अनुरोध करती है और अपना दर्शन देने कहती है । उसकी सास अंधी है, ननद श्वसुरार में हैं और गोतिनी से बैरभाव है । स्वयं ब्रती पुत्रवती है । अतः उसकी मदद करने वाला कोई नहीं है । वह स्वयं सविता से ही कीवाड़ खोलकर दर्शन देने का आग्रह कर रही है । इसमें ब्रती के मनोभाव और विवशता का चित्रण है ।

(३७)

छोटी-मुटी केवलवा के गछिया, फरले लदमुद,
केवलो न तोड़ली, कउन पाप भेल ।

ननद के एकरओ नऽ मारली, कउन चूक भेल ,
सासु के बचनियो नऽ टारली, कउन चुक भेल ।

भैसुरजी के परछहियों न लाँघली, कउन चुकभेल ,
स्वामी जी के बचनियों न टारली, कउन चुक भेल ।

अर्थ

ब्रती ने लोकजीवन में प्रचलित किसी भी मान्यता का उल्लंघन नहीं किया फिर भी उसे किस गलती का फल मिल रहा है । छोटी नारंगी के पौधे से फल नहीं तोड़ा, ननद को अपमानित नहीं किया । अपनी सास की बात नहीं टाली और जेठ की छाया को कभी स्पर्श नहीं किया । अपने पति का आदेश कभी अवहेलित नहीं किया । आखिर उससे कौन सी गलती हुई, कौन सा पाप हुआ, यह बात उसे समझ में नहीं आती ।

(३८)

किनका के सोभे सूप से दौरी, किनका के सोभे लालधजा ?
यही जल में यही जल में काँपे लालधजा ।

सविता के सोभे सूप से दौरी, छठी मइया के सोभे लालधजा ।
यही जल, में यही जल में काँपे लाल धजा ।।

अर्थ

किस देवी के लिए सूप और टोकरी सुसज्जित है और किसके लिए लालध्वज फहरा रहा है। सविता के लिए सूप-दौरी शोभ रही है और छठी माता के लिए लाल ध्वज प्रस्तुत है। इसकी प्रतिच्छाया सरोवर के जल में प्रतिबिम्वत हो रही है।

(३९)

कथी के गेडुली, कथिये दतुअनियाँ, किनकर जलवा भरऽहई रूकुमिनियाँ।
सोने के गेडुली, अम्मा दतुअनियाँ, सूर्यदेवा के जलवा भरऽ हई रूकुमनियाँ॥

उगऽ न सुरूज देबा लेह नऽ अरगिया, बरतीन लोग बरत कयले खाड़।
उगऽ न सुरूज देबऽ लेह नऽ अरगिया, बरतीन लोग अरघ लेले खाड़॥

अर्थ

किस चिज का पात्र बना है और किसका दातून है ? और रूक्मिनी किसके लिए जल भर रही है। सोने का पात्र है, आम का दातून है और रूक्मिनी सूर्यदेव के लिए जल भर रही है। वह सूर्यदेव से उदित होने के लिए प्रार्थना कर रही है। सभी ब्रती ब्रत किए खड़े हैं। अतः हे सूर्य उदित होकर ब्रती को अर्घ्य स्वीकारें। ब्रत करने वाले अर्घ्य ले कर खड़े हैं।

(४०)

भोरभयो सूरूज कहवाँ के चललन, साँझ भयो सुरूज रहबऽ कहवाँ ?
बसऽ न अनजानो रइया अंगना, उहाँ दुलरइतो देई देतन अरगिया।

अर्थ

गीत में ब्रती की सास (सम्भवतः) कहती है कि भोर में सूर्य किसके यहाँ प्रस्थान कर रहे हैं और संध्या में कहां निवास करेंगे ? वह अनुरोध करती है कि अमुकाराय (अपनो का नाम लेकर) के आंगन में निवास करें। वहाँ हमरी दुलारी देवी अर्घ्य प्रदान करेगी।

(४१)

काहे लागी सेवली देव सूरूजमल हे, काहे लागी सेवली बैजनाथ ?
दूध लागी सेवली देव सुरूजमल हे, पूतलागी सेवली बैजनाथ।
पयली में पयली कटोरवा भरल दूधवा हे, कोरवा भरल अनजानो अइसन पूत।

अर्थ

किस लिए सूर्य देवता का सेवन किया गया और किस लिए महादेव (बैजनाथ) का ? साधिका कहती है कि दूध के लिए सूर्यदेव का सेवन किया और पुत्र के लिए महादेव का। परिणास्वरूप पात्र (कटोरा) भरा दूध की प्राप्ति हो गई और गोद में अमुक जैसा पुत्र मिल गया।

(४२)

कहवाँ में लिहले जलमियाँ, कहवाँ भेले इंजोर ?
कुरखेत लिहले जलमियाँ, नगर भइले इंजोर।

हँसी-हँसी बोलथी सुरूजदेवऽ, के लिहें भार हमार ?
रोई-रोई बोलथी अंजानो साईं हमें तोहर भार न सहाय।

कइसे अरग दिआय, कइसे दंडवत दियाय ?

अर्थ

सूर्योदय कहाँ हुआ और प्रकाश कहाँ तक फैल गया? फसल कटे सुदूर खेत में सूर्योदय हुआ और नगर प्रकाशित हो उठा।

सूर्यदेव हँसकर बोल रहे हैं कि हमारा भार कौन उठावेगा? अमुख व्यक्ति (ब्रती) रोकर कहता है कि हमसे आपका भार सहा नहीं जायगा-तेज सहा नहीं जायगा, किस प्रकार अर्घ्य दिया जाय कैसे आपके चरणों मे नत होऊँ ?

(४३)

जोड़े दउरवा सूरूज के जिनकर महिमा अपार।
जोड़े कोर सुपवा आदित्य के जिनकर महिमा अपार।

जोड़े नरिअरवा जगताग्न के, जिनकर महिमा अपार।
जोड़े अरता दिनानाथ के जिनकर महिमा अपार।

इअरी से पिअरी गंगा लोके जिनका से चले संसार।
खँसिया से पठिया गंगा लोके जिनसे चले संसार।

अर्थ

इस देवगीत में सूर्य के अनेक सार्थक नामों का प्रयोग किया गया है और गंगा-महिमा भी गायी गई है। ब्रती कहती है कि सूर्याघ्य के लिए जोड़ा दौरा और

जोड़ा सूप प्रस्तुत है । उनकी महिमा अपरम्पार है। जगत के उद्धारक आदित्य दिनानाथ के लिए जोड़ा नारियल और जोड़ा आरता तैयार है । गंगा के किनारे अर्घ्य देने की व्यवस्था है । वहाँ नीले-पीले वस्त्राभूषण दीख रहे हैं, खँसी-पाठी भी है । गंगा माँ की कृपा से सारा संसार संचालित होता है । प्रथमत: सूर्य के अनेक नामों का सार्थक प्रयोग से ध्वन्यार्थकता एवं उपादेयता व्यंजित होती है । लोकगीतों में जहाँ लय के लिए शब्दों का प्रयोग मिलता है वहाँ उसमें अर्थ गाम्भीर्य भी वर्त्तमान रहता है ।

(४४)

सुरूज के जोतिया जे चमके, रथवा चमके हे ,
भले तीन लोक उजागर, सुरूज देव आँचल हे ।
लाल जोतिया जे चमके, कत-कत सरसे हे ,
रही-रही जीयरा तरसे, देवा कइसे दरसन देथीन हे ।
रथवा के घोड़वा बड़ी तेज, तेज चाल सरके हे ,
ठहरूँ-ठहरूँ मोरा देव, हमें कुछ नहीं मांगब हे ।

अर्थ

ब्रती कहता है कि सूर्य की ज्योति चमक रही है । उनका रथ तेजी से झमकते हुए चल रहा है । तीनो लोक में प्रकाश फैल गया है । सूर्यदेव का आँचल मानो फहरा रहा है । लाल ज्योति दमक रही है । कितनी सरस सुहानी लग रही है । ब्रती का जी तरस रहा है कि सूर्यदेव का दर्शन कैसे होगा क्योंकि सूर्य के रथ का घोड़ा बड़ा तेज और तेज चाल से सरकते हुए आगे भाग रहा है । साधक सूर्य को ठहरने के लिए प्रार्थना करता है और कहता है कि मैं कुछ नहीं मांगूँगा ।

(४५)

हाथ लोटनी कान्धा धोतिया, सुरूज देवा असनान चले हे ,
चन्दन विरिक्षिया तर खाड़, तो सब देवा गमें-गमें हे ।
सब देवा देहथ असीस, अनजानो साही जुगे-जीहऽ हे ,
जुगे जीहऽ-जुग जीहऽ अनजानो दुलहा, दुलरइतो के सोहाग बढ़े हे ।

अर्थ

हाथ में लोटा और कंधे पर धोती लेकर सूर्यदेव स्नान करने चले । सभी देवता चंदन वृक्ष के नीचे खड़े देख रहे हैं । ये सब देवता मिलकर अमुक साही (ब्रती) को युग-युग जीने का आशीर्वाद दे रहे हैं । कहते हैं कि अमुक साही बर के रूप में युग-युग जीये और उनकी दुल्हन का सुहाग बढ़ता रहे ।



देवगीत

सूर्योपासन से सम्बंधित गीतों को 'छठी माता' के गीत कहते हैं, इसे सूर्यबाबा का गीत भी कहा जाता है । परंतु मगध के लोकजीवन में कोई भी ऐसा व्रत, पर्व-त्योहार या संस्कारजन्य अनुष्ठान नहीं है जब संबधित देवता के गीत नहीं गाए जाते हों । विवाहादि मांगलिक अवसरों पर तो शास्त्रीय रीति के साथ ही लोकरीति का अनुष्ठान होता है और उस समय लोकगीत भी अनिवार्यत: गाए जाते हैं । तीज-त्योहर तो बिना देव लोकगीत के सम्पन्न हो ही नहीं सकते । ऐसे गीतों में मुख्यरूप से महादेव और पार्वती के गीत रहते हैं । राम और कृष्ण के गीत भी गाए जाते हैं । देवी पूजन के समय शीतला गीत गाए जाते हैं । व्यापकता की दृष्टि से महादेव के गीत सर्वाधिक हैं । पुन: रामगीत और कृष्ण के गीत आते हैं । इन समान्य देवलोकगीतों के अतिरिक्त कुल देवता और ग्राम्य देवता के गीत भी प्राय: गाए-सुने जाते हैं । विवाहादि संस्कारों के समय कुलदेवता के गीत गाते समय पूर्वजों के नामों को भी जोड़ दिया जाता है । 'संध्या' और 'प्रभात' को भी लोकजीवन में देवरूप में माना जाता है और इनके गीतों को 'साँझ' और 'पराती' के नाम से मगध जनपद में गाया जाता है । इनके अतिरिक्त गंगा माई, नाग-नागिन, वृक्ष, पहाड़ आदि से सम्बंधित देव लोकगीत आते हैं । यहाँ इन सभी प्रकार के देवगीतों का कुछ उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है ।

महादेव के गीत

सीकया चिरीये चिरी डाली-डुली बिनली ,
से चली भेली बाबा केरे फुलवड़िया ।

फुलवा लोढ़िये जब भरल चंगेलिया ,
से चल भेली सिवा के हो पूजनवाँ ।

पुजिये-उजिये जब धुरली मंदिरिया ,
से सिवा धयलन हमरो रे अचरवा ।

छोड़-छोड़ सिव बाबा हमरो अचरवा,
से रोवत होइहें गोदी केरे बलकवा।

नान्हे अभी उमरिया साँवर, काँच रे बयेसवा,
से कहाँ पयलऽ गोदी केरे बलकवाँ।

गंगा नेहयली सूरूज गोड़ लागली,
से ओही देलन गोदी केरे बलकवाँ।

अर्थ

शिव साधिका ने पतली डंटी चीर कर छोटी टोकरी बनाई और उसे लेकर फूल तोड़ने बाबा के बगीचे में गई। फूल से जब टोकरी भर गई तो शिव की पूजा करने मंदिर में गई। पूजाकर मंदिर से लौट रही थी तो शिव ने उसका आंचल पकड़ लिया। वह शिव से आग्रह करती है कि मेरा आंचल छोड़ दें। घर पर मेरी गोद का बालक रो रहा होगा। इस पर शिव कहते हैं कि हे साँवली, अभी तुम्हारी उम्र कम है, वय कच्चा है। अतः तुमने बालक कैसे प्राप्त कर लिया ? साँवली उत्तर देती है कि मैने गंगा स्नान कर सूर्य की पूजा की। उन्होंने ही मुझे गोदी का बालक दिया (कर्ण-कुंती-कथा का स्मरण करें)।

(२)

केई उठावले सिव के सिवाला, केई बनले पुजारिन,
महादे रउरे रहूँ येही ठइन।

राजा उठावले सिव के सिवाला, रानी बनले पुजेरिन,
महादे रउरे रहूँ यही ठइन।

केई चढ़ावे भांग-धथूरा, केई चढ़ावे बेल पत्तर,
महादे रउरे रहूँ यही ठइन।

राजा चढ़ावले भांग धथूरा, रानी चढ़ावे बेल पत्तर,
महादे रउरे रहूँ यही ठइन।

कोई मांगे अनधन-लक्षमी, केई मांगे एक पुत्तर,
महादे रउरे रहूँ यही ठइन।

राजा मांगले अनधन लछमी, रानी मांगले एक पुत्रतर,
महादे रउरे रहूँ येही ठइन।

अर्थ

कौन शिव का मंदिर बनावेगा और कौन पुजारिन रहेगी ? हे महादेव, आप इसी जगह निवास करें । राजा ने शिवालय बनाया और रानी पुजारिन बनी-महादेव यहीं रहें । कौन भांग-धथूरा से पूजा करेगा और कौन बेलपत्र चढ़ावेगा ? राजा भांग धथूरा और रानी बेलपत्र चढ़ावेगी । कौन अन्न-धन और लक्ष्मी मांगेगा और कौन पुत्र ? राजा अन्न-धन-लक्ष्मी मांगेंगे और रानी पुत्र मांगेगी । महादेव जी यही निवास करें ।

(३)

गउरा के मांगों में टीका सोभे ,
सिव के सोभे बगल झोरी ।

सिकसिक पर सोभले लाल धजा ,
गउरा के गला में सिकड़ी सोभे ।

सिव के सोभे कंठे तुलसी ,
सिकसिक पर सोभले लाल धजा ।

गउरा के पैरों में पायल सोभे ,
सिव के सोभे बगल झोरी ।

सिकसिक पर सोभले लाल धजा ।।

अर्थ

पार्वती की मांग में टीका शोभ रही है और शिवजी के बगल में झोली लटक रही है और वहीं पर बगल में लाल ध्वँजा फहरा रहा है । गौरा के गले में सिकरी सुशोभित है और शिवजी के कंठ में तुलसी की माला है । गौरा के पैर में पायल है तो शिव के कंधे में झोली लटक रही है । बगल में लाल ध्वजा सुशेभित है ।

(४)

पातर-पातर केसिया ये सखिया, जीरवा अइसन तोरा दाँत ,
कउनी संकटिया ये सखिया, गिरलऽ महादे अस्थान ।
पातर-पातर केसिया हे सखिया, जीरवा अइसन मोरा दाँत ,
सिरवा के सेनुरवा ला सखिया गिरली महादे अस्थान ।
गोदी के बलकवा ला सखिया गिरली महादे अस्थान ।।

अर्थ

महादेव पूजने जाती सखी से दूसरी सखी पूछती है कि तुम्हारे केश पतले-लम्बे हैं, जीरा की तरह पतले दाँत हैं । सुन्दर होकर भी तुम पर कौन सा संकट पड़ा कि महादेव स्थान में पड़ी हो । वह उत्तर देती है कि पतला केश और जीरा की तरह दाँत तो है परंतु सिर के सिन्दुर (सौभाग्यवती) के लिए महादेव स्थान पड़ी हूँ । हे सखि, गोदी में बालक के लिए महादेव स्थान आई हूँ ।

(५)

माली फुलवरिया बेइलिया फूले ये जानकी ,
से फुलवा लोढ़न तुहूँ जा सुनये जानकी ।

फुलवा लोढ़िये हम चंगेलिया भरली ये जानकी ,
से गिरिजा पूजन हम जायब सुनये जानकी ।

गिरिजा पूजन से कउन फल ये जानकी ?
राजा दसरथ अइसन ससुर पयबऽ ये जानकी ।

रानी कौसिल्या अइसन सास सुन ये जानकी ,
लछुमन अइसन देवर पयबऽ ये जानकी ।

पुरूष मिलिहें भगवान, सुन ये जानकी ।।

अर्थ

सखी जानकी से कहती है कि माली के बगीचे में बेली के फूल खिले हैं । अतः तुम वहाँ जाकर फूल तोड़ लाओ । जानकी कहती है कि फूल तोड़कर हमने टोकरी भर ली और पार्वती की पूजा करने भी जाऊँगी परंतु उनकी पूजा से कौन फल मिलेगा । मखी कहती है कि पूजा करने से दशरथ की तरह श्वसुर मिलेंगे और कौशल्या की तरह सास मिलेगी । लक्ष्मण की तरह देवर मिलेंगे और राम की तरह पति मिलेंगे ।

(६)

सिवजी जे चलले पुरूब बनिजिया, गउरा देई ये लगले संग साथ ।
घुरऽ घुरऽ गउरा देई हमरो बचनियाँ रही जयब तुहूँ भूखले-पियास ।

भुखवा-पियसवा सिवा तोरो पर तेजबो नहीं छोड़बो तोरा संग साथ ।
एक कोस गेले दोसर कोस गेले परे रे लागल झिमिर एक बून ।

सिवजी के भिंजे माथे पटुकिया, गउरा देई न भिंजले सिरवा सेनुर ।
कउन बरत तू हूँ कयलऽ गउरा देई, तोहरा न भिंजले सिरवा सेनूर ।

सास ननद के कहना नाही टारली गोंतनी के देली न जबाब ।
ओही तपे नाही भिजले सिरवा सेनूर ।।

अर्थ

एक बार शिवजी पूरब दिशा की ओर व्यापार करने चले तो पार्वती जी उनके साथ लग गई । महादेव ने कहा कि हे गौरा तुम लौट जाओ, यह हमारा बचन है अन्यथा तुम भूखी-प्यासी रह जाओगी । पार्वती कहती है कि हे शिवजी, मैं आपके लिए भूख-प्यास त्याग दूँगी परंतु आप की संगति नहीं छोड़ूगी ।

एक दो कोस जाने के बाद झमाझम वर्षा होने लगी शिवजी के माथे की पगड़ी भींगने लगी परंतु पार्वती के सिर का सिंदुर नहीं भींग रहा था । महादेव ने पूछा कि हे गौरा देई, तुमने कौन सा तप किया कि सिर का सिन्दुर नहीं भींग रहा है । पार्वती कहती है कि मैने सास और ननद की आज्ञा नहीं टाली, गोतनी को कभी प्रत्युत्तर नहीं दिया । इसी तप (परिवारिक सौहार्द्र) के कारण सिन्दुर नहीं भींग रहा है ।

(७)

गौरा फूल लोढ़न के चलली फुलवरिया ,
संग में तीन सहेलिया नऽ ।

कोई बेली फूल लोढ़, कोई चम्पा फूल लोढ़े ,
कोई लोढ़े लेलन चुनी चुनी बेलपतिया ,
संग में तीन सहेलिया नऽ ।

राधा बेली फूल लोढ़े, सीता चम्पा फूल लोढ़े ,
गउरा लोढ़ लेलन चुनी चुनी बेल पतिया ,
संग में तीन सहेलिया नऽ ।

राधा कृष्ण वर मांगे, सीता राम वर मांगे ,
गउरा मांगे लेलन तपसी भिखरिया ,
संग में तीन सहेलिया नऽ ।।

अर्थ

गौरी (पार्वती) तीन सहेलियों के साथ फुलवारी में फूल लोढ़ने चली । एक सखी ने बेली फूल का चयन किया और दूसरी ने चम्पा फूल को तोड़ा । एक ने बेल की पत्ती को ही चयन कर लिया । (लोकमानस ने यहाँ पार्वती, राधा और सीता को आरोपित कर दिया है) राधा ने बेली फूल को लोढ़ा और सीता ने चम्पा का चयन किया परंतु पार्वती ने बेल की पत्तियों को ही चुना । उसी प्रकार राधा ने कृष्ण को वरदान में मांग लिया और सीता ने राम को मांगा परंतु पार्वती ने तपस्वी और निर्धन (शिव) को ही बरदान में मांगा (लोकमानसीय समन्वय)

(८)

सिव-सिवजी माथे मउरिया कहाँ पयलऽ ?
तोर नइहरवा गउरी, मोर ससुररिंया, सिव -
सिवजी मालिन बिटिया रचले धमार ।
सिव-सिवजी गले में हार कहाँ पयलऽ ?
तोर नइहरवा गउरी, मोर ससुररिया, सिव -
सिवजी सोनरा बिटिया रचले धमार ।

अर्थ

पार्वती और शिव में हास-परिहास, पार्वती पूछती है कि हे शिव जी, आपने माथे में मौरा कहाँ पाया । वे उत्तर देते हैं कि तुम्हारे मायके और, श्वसुराल में मालिन की बेटी ने मजाक में दिया । पुनः गौरी पूछती है, आपको गले में हार किसने दी । इस पर शिवजी हास्यपूर्ण जबाब देते हैं कि तुम्हारे नैहर और मेरी श्वसुराल में सुनार की बेटी ने मेरे साथ धमार रचाया जहाँ गले हार की प्राप्ति हुई ।

(९)

कथी नीके उजे मंठ-महादे, कथी छाने लगले केवाड़, कुंज भवन में ,
सोने ही के उजे मंठ महादे, रूपे छाने लगले केवाड़, कुंज भवन में ।
ताही पइसी सुतथी इश्र महादे, जौरे गउरा देई साथ, कुंज भवन में ,
ओते चलूँ-ओते चलूँ तु हूँ गउरा देई, पाट-चोलिया भिंजहई पसेन कुंज भवन में ।
भिंजे देहूँ-भिंजे देहूँ आज के रतिया, धोबी घर देववऽ धोआय, कुंज भवन में ,
धोबिया जे धोवले जमुनवा देह रे सुखवे चननवा केरा गाछ, कुंज भवन में ।
एतना बचनियाँ जब सुनलन गउरा देई, रुसी चललन नइहर, कुंज भवन में ,
अतरही भेंटलन, भइया भैरों भइया, कहाँ बहिनी चलेली अकेल, कुंज भवन में ।

काई कहिवऽ लाज के बतिया, ईश्र बोलले बिरही बोल, कुंज भवन में,
चलहूँ गे बहिनी चलहूँ गे , धनुआ चढ़ाई ईश्र मारब, कुंज भवन में।
धेनुहाँ टूटल भइया फिन धेनुहा होइहें, ईश्र महादे कहाँ पायब, कुंज भवन में।

अर्थ

महादेव जी का मठ किस चीज का इतना अच्छा बना है । उसमें किस चीज की किवाड़ लगी है, चतुर्दिक झाड़ी-कुंज भवन बने हैं । महादेव का मठ सोने का बना है और उसमें चाँदी की किवाड़ लगी है । कुंज के बीच सुन्दर मठ में ईश्वर महादेव शयन कर रहे हैं, साथ में पार्वती हैं ।

ईश्वर महादेव पार्वती से थोड़ा हटने के लिए कहते हैं क्योंकि उनकी रेशमी चोली पसेना से भींग गई है जिसे महादेव स्पर्श करना नहीं चाहते । इस पर पार्वती प्रस्ताव रखती है कि आज रात्रि के बाद धोबी के यहाँ धुला दिया जायगा । धोबी यमुना के प्रवाह में धोता है और चंदन के वृक्ष पर सुखाता है । इस पर महादेव ने कुछ कहा तो गौरा रूठकर मायके चली । बीच राह में भैरो भाई से भेंट हो गई । उन्होंने बहन से पूछा कि अकेली कहाँ जा रही हो ? पार्वती कहती है कि लज्जा की बात क्या कहूँ ? ईश्वर ने विरह-विदग्ध वाणी का प्रयोग किया है । भौरो जी कहते हैं कि बहन, चलो, ईश्वर को धनुष चढ़ा कर मारूँगा । परंतु बहन कहती है कि टूटा हुआ धनुष तो फिर बन जायगा परंतु ईश्वर महादेव कहाँ मिलेगें ? (पति-भक्ती) ।

(१०)

सिवजी चलले गउरी बिआह करे, सब अंग भभूति चढ़ाय।
परीछे वाहर भेलन सासु मदाइन, देखी गइे सकुचाय।
सुपवा फेंकिये सासु घर चली अयलन, न करबई सिव से विआह।
अइसन सिव दइया मैं न परीछब, बलु गउरा रहीहें कुँआर।
धिया लेले उगव, धिया लेले डूबब, धिया लेले खिलबो पताल।
काहे अम्मा उगबऽ, काहे अम्मा डूबबऽ, काहे अम्मा खिलबऽ पताल।
पूरब जलम के लिखल गे अम्मा से हो कइसे मेटवल जाय।
सरप देखी डेरयबऽ गे बेटी, भभूति देखी जरी छाय।
सवतीन देखी झुरयबऽ गे बेटी, कउन बेटी भुगतत राज ?
सर्प मोरा लेखे आगर चानन, भभूति मोरा अहिवात।
सवतीन मोरा लेखे सखिया-सलेहर, मिली-जुली भुगतब राज ।

अर्थ

शिवजी विवाह करने चले तो सारे अंग में भभूत लगा लिया । सास वर परीक्षण के लिए बाहर निकली तो शिव को देखकर लज्जित हो गई । परीछन का सूप फेंक कर सास घर में आ गई और कहने लगी कि शिव से गौरी का विवाह नहीं करेगी । हे दैव, ऐसे शिव को मैं नहीं परीछूँगी बल्कि गौरी कुँआर ही क्यों न रह जाय । मैं पुत्री को लेकर उगूँगी और डूबूँगी और साथ लेकर पाताल में प्रवेश कर जाऊँगी । इस पर पार्वती कहती है कि हे माता, क्यों ऐसा करोगी । प्रारब्ध में जो लिखा होता है उसे मिटाया नहीं जाता । फिर माता कहती है कि गले का सर्प देखकर डर जायगी और भभूत देख जलकर राख हो जायगी । माता पुनः कहती है कि सौत देखकर मलीन रहोगी और यह सब राज का भोग कौन करेगा ? पार्वती कहती है कि सर्प मेरे लिए ठंढा चंदन की तरह होगा और भभूत तो मेरा सौभाग्य सूचक है । सौत मेरे लिए सहेली की तरह है । हम लोग मिल जुलकर राजभोग करेंगी ।

(११)

पुरइन के पातपर सुतलन गउरा देई सपना देखली अजगूत ।
टोला-परोसिन तुहूँ मोरा गोतिनी, सपना के करऽ नऽ विचार ।

तुहूँ जे हऊँ गउरा आनी से ज्ञानी तुहूँ पंडितवा के धिया ।
मोरंग देस बाजन एक बाजे सिवजी के होखले विआह ।

किया महादेव चोरनी से चटनी, किया हिवऽ कोखिया विहून ?
किया गउरा देई सेवा से चुकलन, काहे कयलऽ दोसर बिआह ?

नाहीं गउरा देई चोरनी से चटनी, नाहीं हथी कोखिया बिहून ?
नाहीं गउरा देई सेवा से चुकलऽ, भाभी कयलऽ दोसरो विआह ।

पहिरऽ गउरा देई, इयरी से पियरी, सवतीन परीछी घरवा लाव ।
बेटवा जो रहितन, पुतोहिया परीछती, सवती परीछलो न जाय ।

डड़िया उघारी जब देखलन गउरा देई, ई तो छोटी बहिनी हमार ।
देस पइसी बहिनी बर नहीं मिललो, बने अयलऽ सवतीन हमार ।

सार पइसी बहिनी गोबर कढ़िहँऽ, करिहँऽ रसोइया घरूआर ।
हमर बलकवा खेलइहँऽ गे बहिनी, सिवजी के पास न जइहँ ।

मंगिया के जुड़जानी रहिहँऽ गे बहिनी, कोखिया के रहिहँऽ बिहून ।

अर्थ

कमल के पत्ते पर गौरी जी (पार्वती) सोई थी तो एक विचित्र स्वप्न देखती है। टोला-पड़ोस की स्त्रियाँ गोतिनी की तरह होती है। अतः वह उनसे स्वप्न के बारे में विचार करने के लिए कहती है। पड़ोसिन कहती है कि गौरी जी, तुम तो स्वयं ज्ञानी और स्वाभिमानी हो और पंडित की पुत्री हो। मोरंग देस में गाजे-बाजे बज रहे हैं, वहाँ शिवजी का विवाह हो रहा है। पार्वती कहती है कि हे महादेव क्या मैं चोरनी हूँ या चटोर हूँ अथवा गोद की बाँझ हूँ ? क्या गौरी कभी सेवा करने से चुक गई ? क्यों आप दूसरा बिवाह कर रहें हैं ? महादेव कहते हैं कि तुम चोरनी-चटोर नहीं हो, नहीं बाँझ हो, न कभी सेवा से मुकर गई हो। भवितव्यतावश विवाह हो रहा है। अतः अब पीले वस्त्र पहन लो और सौत को परीछ कर घर ले आओ। पार्वती कहती है कि बेटा होता तो पुत्रवधू को परीछ लाती। सौत को परीछने की हिम्मत नहीं हो रही है। पालकी का पर्दा उघार कर गौरी ने देखा तो वह उसकी छोटी बहन थी। वह कहती है कि हे बहन, तुम्हें देश-विदेश में वर नहीं मिला था कि मेरी सौतन बनने आई है ? अतः गोशाला में जाकर गोबर काढ़ना और रसोई घर में भोजन बनाना। हमारे पुत्र की सेवा करना और शिवजी के पास नहीं जाना। मांग भरे रहना अर्थात् सौभाग्यवती रहना परंतु गोदी शून्य रहेगी।

(१२)

ऊँची तोर मंदिलिया महादे, नीचे हई दुआर ,
रचियक निहुरऽ महादे, मउरी ठेकी जाय ।
अम्मा मोरा रहितन महादे, कुछो नहीं बोल ,
भाभी मोरा रहियतन महादे, ओरहन देइतन ।

अर्थ

विवाह कर पार्वती महादेव के यहाँ आती है तो ऊँचा मंदिर और नीचा दरवाजा देखकर कहती है कि थोड़ा झुक जायें अन्यथा मौर स्पर्श कर जायगा (टूट जायगा) यदि माँ होती तो कुछ नहीं कहती और भाभी होती तो उलाहना देती ।

(१३)

मथवा ले अयलन महादे, बड़े-बड़े जट्टा ,
कन्हवा ले अयलऽ महादे, बाघिन के छाल ।
परीछे बाहर भेलन, सासु हो मदाइन ,
गोहुमन साँप छोड़ले फुँफकार ।

तोरा लेखे अहे सासु गोहूमन साँप,
मोरा लेखे गजोमोती हार।

भले-भले सासु गेलऽ डेराय,
अंग के वस्तरवा हे सासु लेह न सम्हार।

कथी केरा दिअरा, कथिये लागलबाती,
कथी केरा तेलवा जरेला सारी राती।

सोना केरा दिअरा, रेसम लागल बाती,
सरसो के तेलवा, जरेला सारी राती।

जरी गेला दिअरा, संपूरन भेलो बाती,
दुलहा-दुलहिनिया जुगवा खेले सारी रात।

खेलते-खेलते गउरा गेले अनसाई,
नींदिया से आँख लगले मउराय।

बाबा जाँघ रहती हे सिव, नींद भर सोय,
तोरा जँघिया जी सिव, नींदो नहीं होय।

बाबा के जँघिया गउरा देई, दूई चार दिन,
हमरो जँघिया गउरा देई जनमो सिनेह।

अर्थ

महादेव का विवाह हो रहा है। उन्होंने माथे पर बड़ा-बड़ा जटा बढ़ा लिया है। काँधे पर बाघिन का खाल है, गले में साँप है। उनकी सास वर-परीछन के लिए घर से बाहर निकलती है तो गेहुमन साँप फुँफकार छोड़ रहा है। शिवजी कहते हैं कि हे सास, आपके लिए यह साँप है परंतु मेरे लिए तो गजमुक्ता की माला है। अतः आपने ठीक ही किया कि डर गई, अंग का वस्त्र सम्हार लीजिए।

विवाहोपरांत कोहबर का दृश्य—वहाँ किस चीज का दीपक जल रह है उसमें किस चीज की बत्ती है ? किस चीज का तेल जो सारी रात्रि प्रज्जवलित है। सोने का दीपक है, उसमें रेशम की बत्ती है और सरसो का तेल है जो सारी रात जलता है। दीपक जल गया, बत्ती समाप्त होने पर है परंतु दुल्हा-दुलहिन सारी रात्रि जुआ खेल रही है। जुआ खेलते-खेलते पार्वती अन्यमनस्क सी हो जाती है, नींद से आँख

बंद होने लगती है तब वह कहती है कि हे शिवजी, पिताजी की जाँघ पर पूरी नींद सोती थी और आपकी जाँघ पर नींद भी नहीं आती। महादेव कहते हैं कि हे पार्वती पिताजी की जाँघ तो दो-चार दिनों के लिए है परंतु मेरी जाँघ तो जन्म जन्मांतर के स्नेह से बँधी है।

(१४)

कहवाँ से आवले आजन-बाजन अउरो सजन लोग,
कहवाँ से आवथी महादे, मुठी में लबंग लेले, भंगिया धथूरा लेले।

पुरूब से आवले आजन-बाजन अउरो सजन लोग,
पछिम से आवथी महादे, मुठी में लवंग लेले, भंगिया धथूरा लेले।

कहवाँ उतारब आजन-बाजन, अउरो सजन लोग,
कहवाँ उतारब महादे, मुठी में लवंग लेले, भंगिया धथूरा लेले।

दुअरा उतारब आजन-बाजन, अउरो सजन लोग,
मड़वे उतारब महादे, मुठी में लवंग लेले, भंगिया धथूरा लेले।

काई खिआयब आजन-बाजन, अउरो सजन लोग,
काई खिआयब माहदे, मुठी में लवंग लेले, भंगिया धथूरा लेले।

दाल-भात खिलायब आजन-बाजन, अउरो सजन लोग,
दुधवे खिलायब माहदे, मुठी में लवंग लेले, भंगिया धथूरा लेले।

कहवाँ सुतायब आजन-बाजन अउरो सजन लोग,
कहवाँ सुतायब महादे, मुठी में लवंग लेले भंगिया धथूरा लेले।

डेरवे सुतायब आजन-बाजन अउरो सजन लोग,
कोहबर सुतायब महादे, मुठी में लवंग लेले, भंगिया धथूरा लेले।

काई देब समधब, आजन-बाजन, अउरो सजन लोग;
काई देब समधब महादे, मुठी में लवंग लेले, भंगिया धथूरा लेले।

दहेज देई समधब, आजन-बाजन, अउरो सजन लोग,
धिया देब समधब महादे, मुठी में लवंग लेले, भंगिया धथूरा लेले।

अर्थ

शिव विवाह का चित्रण—शिव की बारात आ रही है, कहाँ से गाने-बजाने वाले और सज्जन लोग आ रहे हैं। कहाँ से मुठी में लवंग और भांग-धथूरा लेकर महादेव आ रहे हैं। पूर्व दिशा से गाने-बजाने वाले और सज्जनवृंद आ रहे हैं तथा महादेव जी पश्चिम से आ रहे हैं जो हाथ में लवंग और भांग-धथूरा लिए हुए हैं। बारात के गाने-बजानेवाले और सज्जनों को कहाँ ठहराया जायगा ? महादेवजी को कहाँ ठहराया जायेगा। दरवाजे पर गाने बजाने वाले और महादेव को मंडप में रखा जायगा। गवैयों और सज्जनों को क्या खिलाया जायगा ? महादेव को क्या खिलाया जायगा ? दाल-भात गावैयों को और सज्जनों को खिलाया जायगा और महादेव को दूध पिलाया जायगा। गवैयों को और सज्जनों को सुलाने की व्यवस्था कहाँ होगी और महादेव को कहाँ ? डेरा पर गायकों एवं सज्जनों को सुलाया जायगा और कोहबर में महादेव को। गायकों और सज्जनों को क्या देकर बिदा किया जायगा ? महादेव को क्या दिया जायगा ? गायकों एवं सज्जनों को दहेज देकर बिदा किया जायगा और महादेव को पुत्री देकर बिदा किया जायगा।

(१५)

सोने के कटोरिया में माटी हम घोरली, लिपबई महादे के मंदील।
लिपिये-उपिये जब भेली तइअरिया, मलिया मउरिया लेले खाड़।

देवउका मलिया रे सोने केरा सूइया, होवे दे महादे के विआह।
लिपिये-उपिये जब भेली तइअरिया, पाचोटुक दरजी लेले खाड़।

देवउका दरजी रे डाली भर सोनवाँ, होवे दे महादेके विआह।
देवउका नउवा रे पाँचो, टुक जोड़वा, हावे दे महादे के विआह।

अर्थ

सोने के पात्र में मिट्टी घोलकर महादेव का मंदिर लिपा और लिपकर तैयार हुई तो माली मौर लेकर खड़ा हो गया। गृहिणी कहती है कि हे माली, तुम्हें सोने की सूई दूँगी, शिव का विवाह होने दो। पुनः पाँच प्रकार का वस्त्र लेकर दर्जी खड़ा था। उसे डाली भर सोने देने का वचन देती है। पुनः नाई को वस्त्राभूषण देनं के लिए कहकर शिव का विवाह सम्पन्न होने देने का अनुरोध करती है।

(१६)

करिया कुच-कुच महादे, ओड़िसा जगरनाथ ,
बरवा तर पलंग डँसवले गउरा बिदा मांगले।

न देखूँ डाड़ी से डुड़ी तऽ सबुजी ओहार ,
न देखूँ बतीसो कहार, कइसे गउरा जयतन ?

आ गेलई डाड़ी से डुड़ी, तऽ सबुजी ओहार ,
लग गेलई बतीसो कहार, अब गउरा चलली ससुरार।

एक कोस गेले गउरा देई, दूसर कोस गेलन ,
लोके लागल सिव के झोपड़िया, तऽ देखते भयावन।

मरो माई मदोदर, अउरो सहोदर जेठ भाई ,
मरो रीखइया अइसन वप्पा, भिखारी वर खोजलन।

एक कोस गेलन गउरा देई, दोसर कोस गेलन ,
लोक लागल सिव के मंदिलिया, तऽ देखते सोहावन।

जीये माई मदोदर, अउरो सहोदर जेठ भाई ,
जीये रीखइया अइसन बप्पा भले वर खोजलन।

चार कोना चार दीपक जरे, बीचवा में मोती झरे ।।

अर्थ

ओड़िसा के जगन्नाथ महादेव अत्यंत काले हैं। वे वटवृक्ष के नीचे पलंग बिछा दिया और पार्वती की बिदाई मांगने लगे। उनकी सास ने कहा कि डोली-पालकी देखती नहीं हूँ न उस पर सब्ज रंग का ओहार (पर्दा) लगा है। पालकी के बत्तीस कहार भी नहीं दिखे तो पार्वती कैसे जायगी ? क्षणमात्र में सब्ज रंग पर्दा से ढँकी पालकी आ गई और उसे ढोने के लिए बत्तीसो कहार आ गए। तब गौरी ससुराल चली और एक-दो कोस जाने के बाद शिव की भयंकर झोपड़ी दिखने लगी। इसपर पार्वती प्रिय माता, सहोदर भाई और ऋषि-तुल्य पिता को गाली देने लगी कि उन्होंने भिखारी वर खोजा है। पुनः पार्वती एक-दो कोस गई तो शिव का सुन्दर मंदिर दिखने लगा। इस पर वह माता, भाई और पिता को सराहना करने लगी कि उन्होंने भला वर खोजा है। मंदिर के चारों कोने पर दीपक जल रहा है और बीच में मोती झर रहे हैं।

(१७)

सिवजी के द्वार पर गंगा बहुत हैं, सिवजी के जलवा चढ़ा दऽ पार्वती मेरे ।
हरखी न लेहऽ रघुपति आनंद मोरे, सिवजी के जलवा चढ़ा दऽ पार्वती मेरे ।

सिवजी के द्वार पर हरी-हरी पीपर, सिवजी के हवा खिआ दऽ पार्वती मेरे ।
सिवजी के द्वार पर भांग धथूरा, सिवजी के भांग घोटा दऽ पार्वती मेरे ।।

अर्थ

शिवजी के दरवाजे पर गंगा बह रही है अत: हे पार्वती जी, उन पर गंगाजल चढ़ा दें । मेरी प्रसन्नता के लिए वे हर्ष पूर्वक जल ग्रहण कर लेंगे । शिव के दरवाजे पर हरे-भरे पीपल वृक्ष हैं, शिवजी को शीतल हवा लगने दें । शिवजी के दरवाजे पर भांग-धथूरे का पौधा है । अत: शिवजी को भांग घोटकर दे दो ।

(१८)

सिव मानत नाहीं का देई सिव के मनायब हो सिव मानत नाहीं ।
कोठा-अँटारी सिव के मनहूँ न भावे, टूटली मड़इया कहाँ पायब हो, सिव मानत नाहीं ।

हाथी-घोड़ा सिव के मनहूँ न भावे, बसहा बैल कहाँ पायब हो सिव मानत नाहीं ।
का देई सिव के मनायब हो, सिव मानत नाहीं ।

पेड़ा-जलेबी सिव के मनवो न भावे, भांग धथूरा कहाँ पायब हो सिव मानत नाहीं ।
चारु देवा सिव के मनहूँ न भावे, भूत-वैताल कहाँ पायब हो, सित्र मानत नाहीं ।

अर्थ

भक्त कहता है कि शिव को क्या देकर प्रसन्न करूँ, शिव मानते नहीं हैं । कोठा-अँटारी शिवजी को पंसद नहीं लेकिन सम्पन्न भक्त के पास झोपड़ी नहीं है जिसे वह समर्पित कर सकें । हाथी-घोड़ा को शिव पसंद नहीं करते और बसहा बैल कहाँ मिलेगा जिसे देकर शिव को प्रसन्न किया जाय । पेड़ा, जलेबी, मिठाइयाँ शिव को अच्छी नहीं लगती और भांग-धथूरा भक्त को प्राप्त नहीं है । अत: वह क्या देकर शिव को मनावे । शिव को देवता पंसद नहीं, उनके संगी-साथी भूत-वैताल हैं, उन्हें कहाँ से लाया जाय ? यहाँ शिव के श्मसानी रूप का लोक मानस ने सजीव चित्रण किया है ।

(१९)

ढिमिर-ढिमिर डमरू बाजे, बसहा बैल असवार,
सिवजी चलले गउरा बिआहन आठो अंग भभूति-चढ़ाय।

परीछे बाहर भेलन सासु मदाइन, लोढ़े-कोल सुपवा लेले खाड़,
अइसन सिव दइया हम न परीछब, भले गउरा रहिहें कुँआर।

केतना तपस्या से धिया हम पोसली, बरवा मिलले भिखार,
धिया लेले उगब, धिया लेले डूबब, धिया लेले खिलब पताल।

केतना तपस्या से धिया हम पोसली बरवा मिलले भिखार,
काहे अम्मा उगबऽ, काहे अम्मा डूबबऽ काहे अम्मा खिलबऽ पताल ?

पूरब जलम के लिखल गे अम्मा से हो कइसे मेटवल जाय,
जटा देख डेरयबऽ गे बेटी, भभूति देखी जरी छाय।

सवतीन देखी झुरयबऽ गे बेटी, कउन विधि भुगतबऽ राज,
जटा मोरे लेखे आगार चानन, भभूति मोरा अहिवात।

सवती मोरा लेखे सखिया सलेहर, मिली-जुली भुगतब राज,
कलसा अलोते भेले गउरा मिनती करे, सुनू सिवा बचन हमार।

रचियक ये सिवा भेस उतारऽ नइहर लोग पतिआय,
एतना बचन जब सुनल सिवजी, चललन भेस उतारे।

भभूति उतारलन, चंदन चढ़वलन जल्द से कयलन स्नान,
कने गेलऽ किया भेलऽ सासु मदाइन, अब रूप देख नऽ हमार।

देखली दमाद दइया हिरदा जुड़ायल हिरदा बीचे देह असीस।
गउरा के बढ़ो सिर-सेन्दुर, जीयऽ सिव लाख बरीस ।।

अर्थ

बसहा बैल पर सवार होकर, हाथ में डमरू बजाते, सम्पूर्ण अंग में भभूत लगाकर शिवजी पार्वती से विवाह करने चले। महीयसी सास वर-परीछन के लिए बाहर आई और हाथ में लोटा तथा नया सूप लेकर खड़ी रही। वह कहती है कि ऐसे वर शिव को मैं परीछन नहीं करूँगी भले ही गौरी कुँवारी ही क्यों न रह जाय। कितनी तपस्या के बाद हमने पुत्री का पालन पोषण किया है और वर भिखारी

मिला । अत: मैं पुत्री के लिए जगूँगी और पुत्री के लिए सोऊँगी और अंतत: पुत्री के साथ पताल में डूब जाऊँगी कितनी तपस्या से मैने पार्वती को पाला-पोसा है ।

पार्वती कहती है कि हे माता, क्यों साथ लेकर जागोगी और सोओगी तथा पाताल में डूब जाओगी । हे माता, पूर्व जन्म का लिखा, मिटाया नहीं जा सकता । माँ कहती है कि तुम शिव का जटा देखकर डरोगी, भभूत देखकर जलकर छाई होगी । सौत को देखकर मुरझा जाओगी । किस तरह से राज-भोग करोगी ? पार्वती कहती है कि जटा मेरे लिए अगर-चंदन की तरह और भभूत मेरा सौभाग्य का परिचायक है । सौत मेरे लिए सहेली की तरह होगी जिसके साथ मिलजुलकर राजभोग करूँगी । पुन: पार्वती कलश की ओट से प्रार्थना करती है कि हे शिवजी मेरी बात सुनें । थोड़ी देर के लिए अपना भेष बदल लें ताकि नैहर के लोग प्रतीत कर लें । यह सुनकर शिव जी ने भभूत धो लिया, स्नान कर चंदन लगा लिया और सास से कहा कि हे महीयस; अब मेरा स्वरूप देख लें । सास ने दामाद को देखा तो हृदय शीतल हो गया और मन ही मन (हृदय के बीच) आशीर्वाद देने लगी । पार्वती के सिर का सिन्दूर कायम रहे, शिवजी लाख वर्ष तक जीवित रहें ।

(२०)

चंदन काठ कटायब, पीढ़िया बनायब, जाही पीढ़िये बैठले महादे, घुरमी-घुरमी खाँसे हे ।
रोवले माई मदोदर, लाट धुनिये-धुनि अइसन गउरा के भाग भिखरी बर मिलल ।

चुप होख माई मदोदर लाट धुनिये-धुनी पूरूब जलम केरा लिखल से हो कइसे मेटत ।
बसहर चढ़ले महादेव डड़िया गउरा देई, न देखूँ कोठा अँटारी, कउन विधि रखब ।

न देखूँ सास ननद कउन विधि रहब, न देखूँ सहर-बजार कउन विधि रहब ।
अदहन देई गउरा देई पइचा खोजे चललन, कइसन नगरिया के लोग पइचो नहीं मिलल ।

अदहन देले ढरकाइ देहरिया चढ़ी बइठले, अइसन सहरवा के लोग पइचो नहीं दिहले ।
बघछल दिहले बिछाई, बछरू सब बइठले, ये रींध देले छतीसो प्रकार,बछरू सब जेवले ।

अर्थ

चंदन की लकड़ी काटकर पीढ़ा बनाया गया । उस पर महादेव जी बैठ गए और सर घूमाकर खाँसने लगे । इसे देखकर पार्वती की माँ सिर (केश पकड़कर) धुनकर रोने लगीं कि गौरी का भाग्य ऐसा है कि उसे भिखारी वर मिला । पार्वती माँ को समझाती है कि सिर धुनकर रोने से क्या फायदा । पूर्व जन्म का लिखा कैसे मिट सकता है ? फिर बसहा बैल पर चढ़कर महादेव और पालकी पर चढ़कर पार्वती ससुराल गई । वहाँ रहने के लिए घर (कोठा-अँटारी) नहीं देख सकी । वहाँ सास

ननद भी नहीं थी, न शहर-बाजार था । अतः वह वहाँ किस तरह रहती ? फिर भी रसोई तो बनानी ही थी । उसने भात बनाने के लिए पात्र में अदहन दिया और चावल उधार लेने चली । नगर में उसे उधार भी नहीं मिला । उसने अदहन गिरा दिया और दरवाजे पर बैठकर सोंचने लगी कि यहाँ के लोग कैसे हैं कि उधार भी नहीं देते ।

पुनः उन्होंने बघछले को बिछा दिया तो बहुत सारे बछड़े बैठ गए और छत्तीसो प्रकार का भोजन बना दिया । सभी बाल-बुतरूओं ने जेवनार कर लिया ।

(२१)

डम-डम डमरू बाजही संकर नाचही गे माई ,
देखि-देखि पारवती मुस्कुराय, दिल हरसाय गे माई ।

हथवा तिरसूल जे चमकई, मथवा चनरमा सोभई ,
जटवा गंगा उपलाइ, सब सुख पावहि गे माई ।

रहि-रहि बसहा झूमई, भूत सब झूमई ,
परेम के नाच विचित्तर, रहि-रहि डरवा लगई गे माई ।

रहि-रहि शंखा जे बाजई, मिरदंग जे बाजई ,
सुनि घरिघंट के अवाज सब जग आवई गे माई ।

अर्थ

डिम-डिम डमरू बज रहा है और शंकर जी नाच रहें हैं । इसे देखकर पार्वती जी मुस्कुरा रही है । उनका दिल हर्षित हो रहा है । महादेव के हाथ में त्रिशूल चमक रहा है और माथे पर चन्द्रमा शोभ रहा है । जटा में गंगा उपला रही है । यह सब देखकर सभी प्रक़ार के सुख की प्राप्ति हो जाती है । बसहा बैल और भूत पिशाच सभी झूम रहे हैं । यह प्रेम का नाच विचित्र है जिसको देखकर कभी-कभी डर लग जाता है । कभी-कभी शंख बजता है, मृदंग और घड़ी-घंट की आवाज सुनाई पड़ जाती है जिसे सुनकर सारा संसार चला आता है ।

(२२)

बम भोला के गीत गावहु, डमरू बजावहु गे माई ,
ऐसन औघरदानी के, सब मिली रिझावहु गे माई ।

परसाद नहि माँगे, फल नहि भावे, गंगा जल पावे गे माई ,
सोना नाहि खोजे, रूपा नहि खेजे, प्रेम के भाव जे खोज के माई ।

तीन-तीन अँखिया बड़-बड़ जटवा, देहवा विशाल गे माई ,
जटवा लेटे गंगाधार, दमके चनरमा के जोतिया गे माई ।

एक हाथ सोभे तिरसुल, दोसर हाथे संख के माई ,
देहवा विराजे मिरिग के छाला, मुँह भभूत गे माई ।

अर्थ

भक्त सखियाँ कहती हैं कि सब मिलकर बमभोला शिव का गीत गाओ और डमरू बजाकर औघड़दानी शिव को रिझा लो । वह महादेव प्रसाद नहीं माँगते । उन्हें कोई फल नहीं भाता । केवल गंगाजल का पान करते हैं । वे सोना नही खोजते, न चाँदी चाहते, एक मात्र प्रेम भाव चाहते हैं । उनकी तीन आँखे हैं, बड़ी-बड़ी जटाएँ हैं । शरीर विशाल है । जटा में गंगा की धारा लोट रही है । मस्तक पर चन्द्रमा की ज्योति विराजमान है । एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे हाथ में शंख शोभ रहा है । देह में मृगछाला विराजमान है तो मुख भभूत से लिपटा है ।



राम के गीत

(१)

सोने के गेडुवा गंगाजल पानी ,
पनियो न पिये भगवान ,
गिरिजा से हथवा जोड़ के ।

मांग-मांग तिरिया कउन फल माँगऽ ,
जे तोरा हिरदा में समाय ,
गिरजा से हथवा जोड़ के ।

राजा दशरथ अइसन सासु मांगिला ,
रानी कौसिल्या अइसन सास ,
गिरजा से हथवा जोड़ के ।

लछुमन अइसन देवर मांगिला ,
पुरूष मांगिला भगवान ,
गिरिजा से हथवा जोड के ।

अर्थ

सोने के पात्र में गंगाजल लेकर सीता गिरिजा से जलपान करने के लिए प्रार्थना करती है । गिरिजा कहती है कि हे सीते, क्या मांगना चाहती है ? जो तुम्हें रूचि हो, मांगलो । सीता कहती है कि मुझे राजा दशरथ की तरह श्वसुर और कौशल्या की तरह सास मिलना चाहिए । लक्ष्मण की तरह देवर और राम की तरह पति मांगती हूँ ।

(२)

घंटी बाजले रामजी अयले अंगना,
मइया देहूँ न असीस जइबो बनवाँ।

अब रोवले मइया पसारे रोधना,
बबुआ काहे जलमलऽ जयेबऽ बनवाँ ?

मइया कर्म के लिखल विरीछ बनवाँ,
मइया देदऽ असीस जइबो बनवाँ।

घंटी बाजले रामजी अयले अंगना,
चाची देदऽ असीस जइबो बनवाँ।

अब रोवले चाची, पसारे रोधना,
बबुआ काहे के जलमलऽ जयेबऽ बनवाँ ?

चाची कर्म के लिखल विरीछ बनवाँ ,
चाची देदऽ असीस जइबो बनवाँ ।

अर्थ

राम को वन जाने के लिए कूच की घंटी बज रही है । वह आंगन में आकर माँ से वन जाने के लिए आशीर्वाद मांग रहे हैं । यह सुनकर माँ जार-बेजार रोने लगती है । कहती है कि क्यों जन्म लिया था, अब जंगल जा रहे हो ? राम कहते हैं कि तकदीर में जो लिखा रहता है, वन में वृक्षतर निवास लिखा गया है तो अन्यथा कैसे होगा ? अतः हे माता, अब आशीर्वाद दो कि मैं वनगमन कर सकूँ । इसी प्रकार राम चाची से आशीर्वाद लेने जाते हैं और वह भी रोकर वही प्रश्न करती है परंतु राम वही उत्तर देकर आशीर्वाद मांगते हैं ।

(३)

सब के ओरे-छोरे जेवना लगीये गेले हमरो अंगनवाँ चुवे लोर,
कउनी बनवाँ में रामजी भुलयलन हो लाल।

जे मोरा रामजी के खोजी के लावते, उनको दे देबो अयोध्या के राज,
कउनी बनवाँ में रामजी भुलयलन हो लाल।

सब के घरे-घर सेजिया लगीये गेले, हमरो अंगनवाँ में चुये गुलाब,
कउनी बनवाँ में रामजी भुलयलन हो लाल।

जे मोरा रामजी के खोजी के लावते, उनको दे देबो जनकपुर के राज ,
कउनी बनवाँ में रामजी भुलयलन हो लाल ।

अर्थ

कौशिल्या सब के आंगन में एक छोर से दूसरे छोर तक खाना लगते देखती है और उसके आंगन में सभी लोग रो रहे हैं, वहाँ आँसू बह रहे हैं । रामजी किस वन में भूल भटक गए होंगे । वह कहती है कि जो हमारे राम को खोजकर ला देगा उसे अयोध्या का राज दे दूँगी । पुनः वह कहती है कि सभी के घर शय्या लग गई और हमारे घर का शय्या-प्रसादन-गुलाब का फूल चू कर आंगन में फैल गया है । अतः जो हमारे राम को खोज लावेगा उसे जनकपुर का राज दिया जायगा । हमारे राम किस वन में भूल गए हैं ?

(४)

सोने के गेडुवा गंगाजल पानी, पनियो न पिये भगवान ,
चल सखि विरीछ एक पूजन, राम-लखन के विआह ।

राम लखन पर बंधु परे हैं, अब सीता रहिहें कुँआर ,
सोने के प्रात में जेवना लगव लूँ, जेवना न जेबे भगवान ।

चल सखि विरीछ एक पूजन, राम लखन के विआह ,
राम लखन पर बंधु परे हैं, अब सीता रहिहें कुआँर ।

अर्थ

सोने के पात्र में गंगाजल है लेकिन भगवान नहीं पी रहे हैं । सखियाँ कहती है कि राम लखन का विवाह है, एक वृक्ष की पूजा करने चलो । लेकिन राम लखन पर बंधन (स्वयंवर) पड़ा है, लगता है अब सीता जी कुआँरी रह जायगी । पुनः सोने की थाली में भोजन लगाया गया परंतु राम भोजन नहीं करते हैं । सखियाँ कहती है कि राम लखन का विवाह है, एक वृक्ष की पूजा करने चलो । परंतु राम पर बंधन लगा है, अब सीता कुआँरी रह जायगी ।

(५)

जब राजा रामचन्द्र लिहले जलमिया ,
अजी गेंदा खेले जाले सरयूतीर रे ललनवाँ ।

जब राजा रामचन्द्र जनकपुर चलले ,
हजमा लिहले बिलमाई रे ललनवाँ ।

देबउका हजमा रे सोने के नरहनियाँ ?
अजी जनकपुर के रहिया बताव रे ललनवाँ।

जब राजा रामचन्द्र दरवाजा बीचे अयले,
अरे चमरा लिहले बिलमाई रे ललनवाँ।

देवउका चमरा रे सोने केरा ढोलवा,
अरे मड़वा बीचे जाय मोहिके देहूँ रे ललनवाँ।

जब राजा रामचन्द्र मड़वा बीचे अयले,
अरे ब्राह्मन लिहले बिलमाई रे ललनवाँ।

देवउका ब्राह्मण हो सोने के पतरवा,
अरे चउका बीचे जाय मोहि के देहूँ रे ललनवाँ।

जब राजा रामचन्द्र चउका बीच अयले,
अरे नउनियाँ लिहले बिलमाई रे ललनवाँ।

देवउका नउनियाँ रे डाली भर सोनवाँ,
कोहबर बीचे मोहिके जाय देहूँ रे ललनवाँ।

जब राजा रामचन्द्र कोहबर बीच अयले,
अरे साली-सरहज छेकले दुआर रे ललनवाँ।

देवउका साली-सरहज अगूँठी-मुनरिका,
अरे सीता सुन्दर जाय मोहि के देहूँ रे ललनवाँ।

जब राजा रामचन्द्र सीता-सुन्दर देखलन,
अरे सीता सोवले मुँहवा फेरी रे ललनवाँ।

देवउका सीता सुन्दर सारी कमइया,
अरे अपनी सुरत देखलाव रे ललनवाँ।

अर्थ

रामचन्द्र जन्म लेने के बाद बचपन से ही सरयू किनारे कंदुक खेलने जाते थे। पुनः विवाह के लिए रामचन्द्र जनकपुर चले तो हजाम ने रास्ता रोक लिया। राम ने कहा कि हे नाई, जनकपुर का मार्ग बता दो। रामचन्द्र जनकपुर में जनक जी के दरवाजे पर गए तो चमार ने उन्हें रोक लिया। राम ने कहा कि तुम्हें सोने का ढोल दूँगा, मुझे जनपुर जाने का मार्ग बता दो। जब रामचन्द्र मण्डप में पहुँचे तो ब्राह्मणों

ने उन्हें रोक लिया । राम ने उनसे कहा कि मैं आपको सुवर्ण का पंचाग दूँगा, मुझे चौके पर जाने दीजिए । जब रामचन्द्र जी चौके पर चले गए तो नाइन ने रोक रखा । उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें टोकरी भर सोना दूँगा, मुझे कोहबर में जाने दो । जब वे कोहबर में जाने लगे तो साली-सरहज ने दरवाजा रोका । रामने कहा कि मैं आप को मुंद्रिका-अंगूठी दूँगा, मुझे सुन्दरी सीता के पास जाने दें । राजा रामचन्द्र ने सीता को देखा तो वह मुँह घुमाकर सो गई । राम ने यहाँ प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हें सारी कमाई दे दूँगा, जरा अपना सौन्दर्यावलोकन तो करने दो । प्रस्तुत लोकगीत में विवाह के समय होने वाले सारे लोकानुष्ठानों का समाज-शास्त्रीय धरातल पर समन्वय किया गया है ।

(६)

अमवाँ-महुइया के दुई रे विरीछिया, घनघोर पसरले डाढ़ ।
ताही तर सीता सुन्दर खेलले हिंडोलवा, रामचन्द्र छोड़े फूफकार।

रोवते-रोवते सीता घर चली अयली, अम्मा आगू रोधना पसार ।
के सीता मारले, के गरीआवले, केरे कइले दुई बात ।

न कोई मारले, न गरीआवले, न कइले दुई बात ।
जउन बरवा आगे अम्मा आरती उतरली, ओही बरवा छोड़ले फूफकारा ।

आगी लगाव बेटी तुहूँ लामी केसिया, बजर परवऽ तोर जान ।
अपने पुरूषवा बेटी छोड़े फुफकरवा, सेकरो के चिन्हलो न जाय ।

अर्थ

आम और महुआ के दो वृक्ष हैं जिनकी सघन डालियाँ फैली हुई हैं, उसमें सुन्दरी सीता झूला खेल रही हैं ; वहीं रामचन्द्र आकर फूँफकार (परेशान) छोड़ रहे हैं । सीता उनसे तंग आकर रोती हुई घर चली आई और माँ के सामने रोना-धोना करने लगी । माँ पूछती है कि हे सीते, तुमको किसने मारा या गाली दी अथवा किसी ने दो बातें कह दी? सीता कहती है कि किसी ने मारा नहीं, न किसी ने गाली दी और किसी ने कुछ कहा भी नहीं परंतु जिस दुल्हे की मैने आरती उतारी है, वही वर मुझे तंग कर रहा है । इस पर सीता की माता कहती है कि तेरे लम्बे केश में आग लगे, तुम पर वज्र पड़े । तुम्हारा सौन्दर्य बेकार है । तुम्हारा अपना पति ही फूफकार छोड़ता है और उसे तुम चिह्न भी नहीं पाती ? सारांश कि स्त्रियों को अपने सौन्दर्य और व्यवहार से पति को अनुकूल बनाये रखना चाहिए । लोकगीतों में विचारों का तारतम्य हो या नहीं परंतु घटनाओं में भाव-सबलता की प्रधानता रहती है ।

(७)

गाई के गोबर रामा अंगना लिपाय, गजमोती अहो रामा चउका पुराय ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

पाँच फल नरियर पचास बीड़ा पान, इहो जे दीहँऽ राम दसरथ जी के हाथ ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

झारीये-झुरीये रामा जाजीम बीछाय, बइठी गेले अहो रामा पंडवा-पच्चास ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

चउका बइठल रामा कचरले पान, जँघिया ओठगल सीता नैना ढारे लोर ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

कलसा अलोते भेले राम पूछे बात--कउन दुख परलई सीता नैना ढारे लोर ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

किया मन परलई सीता मइया से बात, किया मन परलो सीता सहोदर जेठ भाई ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

नाहीं मन पर लई रामा मइयासे बात, नाहीं मन पर लई राम सहोदर जेठ भाई ,
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

नहिरा के दुख-सुख कहलो न जाय, निरधन माई-बाप तेजलो न जाय ।
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

भइले विआह राम कोहबर जाय, रामजी के बहिनी छेकले दुआर ।
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

का तुहूँ बहिनी हे छेकलऽ दुआर, सीता के खोइछवा रतन होई जाय ।
रामजी के आसन रीखी के दुआर ।

अर्थ

लोक जीवन के स्फुट विचार जिसमें पौराणिक राम कथाओं के बिखरे सूत्र मिल जाते हैं । रीखी (ऋषि) जनक के दरवाजे पर रामजी का आसन लगा हुआ है । धंनुष यज्ञ के बाद राम-सीता के विवाह की तैयारी हो रही है । जनक ने राजा दसरथ के पास पाँच गोले नारियल और पच्चास बीड़े पान भेज दिया । बारात आ गई है ।

झाड़कर विछावन लगा दिया गया है, जिस पर अनेक तरह के पचासों लोग बैठ गए हैं । चौके पर वर रूप में राम आसीन हैं, मुँह में पान कचर रहें हैं और सीता पिता की जाँघ पर बैठी आँख से आसूँ बहा रही है ।

सीता को रोती देख राम ने कलशे की ओट से पूछा कि कौन सा दुख पड़ गया है जिससे आँखों से आसूँ गिर रहे हैं ? क्या माँ से कुछ बातें हो गई हैं या बड़े भाई ने कुछ कह दिया है । सीता ने कहा--माँ-बाप से कुछ भी अन्यथा बातें नहीं हुई है, न सहोदर बड़े भाई से, परंतु नैहर का दुख-सुख कहा नहीं जाता और निर्धन माँ-बाप त्यागा नहीं जाता । बाद में विवाह सम्पन्न हुआ और राम कोहबर में जाने लगे । वहाँ बहनों ने दरवाजा छेंका तो राम ने कहा कि हे बहन तुमने दरवाजा क्यों छेंक लिया है, सीता के खोइछे का पदार्थ रत्न में बदल जाय । लोकरीति में मायके का खोइछे में मिला पदार्थ बहनों को हो जाता है । अतः राम ने उसे रत्नों में बदल दिया ।

(८)

राम के माथे तिलक भला सोभे, चंदन सोभऽ हे लिलार ,
भले हो राम चउका चढ़ी बइठे ।

राम के माथे टोपी भला सोभे, चंदन सोभऽ हे लिलार ,
भले हो राम चउका चढ़ी बइठे ।

राम के गले सोना भला सोभे, चंदन सोभऽ हे लिलार ,
भले हो राम चउका चढ़ी बइठे ।

राम के हाथे बाला भला सोभे, चंदन सोभऽ हे लिलार ,
भले हो राम चउका चढ़ी बइठे ।

राम के देह में पीतम्बर सोभे, चंदन सोभऽ हे लिलार ,
भले हो राम चउका चढ़ी बइठे ।

अर्थ

यह राम गीत विवाह के पूर्व तिलक के समय गाया जाता है । चंदन लेपित राम के ललाट पर तिलक सुन्दर लग रहा है । उनके सिर पर टोपी सुशोभित हो रही है । राम चौके पर बैठे हुए हैं । राम के गले में सोने का आभूषण है और हाथ में कंगन शोभ रहा है । शरीर में पीत वस्त्र सुशोभित है। सुन्दर, भले और वस्त्राभूषण से भूषित राम चौके पर विराजमान हैं ।

(९)

हथवा में लेले हजमा लवंग सोपरिया –
देसे-देसे खोजे सीरी राम हे ललनवाँ।

उरूब खोजले, पुरूब खोजले,
कतहूँ न मिले सीरी राम हे ललनवाँ ?

एक ही जनकपुर के बगिया में –
उहई मिलले सीरी राम हे ललनवाँ।

ओही वर के आरती उतारब,
सीता के करब विआह रे ललनवाँ।

अर्थ

हजाम हाथ में लवंग और कसैली लेकर सीता के लिए वर खोजने निकला। उसने अरब से बंगाल तक(उत्तर से पूर्व तक) छान डाला। कहीं भी सीता योग्य वर नहीं मिला। परंतु एक मात्र जनकपुर के बगीचे में श्री राम मिले जो सीता के लिए सुयोग्य वर हैं। अतः उसी वर की आरती उतारने और सीता से विवाह करने का निश्चय हुआ।

(१०)

बसवाँ काटले चलले राजा दसरथ, अंगुरी गड़ले खोंपचाल हे,
अंगुरी के दरद मरले राजा दसरथ, केकई के परले हँकार जी।

आऊँ केकइया रानी बैठहूँ, पलंग चढ़ी, दुख-सुख कहूँ समुझाय जी,
भरत चतुर्गून राज लिखतु हे, राम जइहें बनवास जी।

एतना बचन जब सुनलन राजा दसरथ, भूइयाँ गिरले मुरूछाय जी,
सँउसे अजोध्या के राम दुलरुआ, से हो कैसे जइहें बनवास जी।

एक कोस गेल रामऽ, दूई कोस गेलऽ, लग गेलो मधुरी पिआस जी,
ये हो नगरिया में कोई न बसतु हैं, राही पिआसल जाय जी।

एतना बचनिया जब सुनलन सीता देई, हाथ गेडुवे जल-पानी जी,
एही नगरिया में हमहीं बसतु हैं, पियऽ न बटोहिया भइया पानी जी।

एक चीरू पीयले, दोसर चीरू-पीयले, तीसरे में पूछें दिलबात जी ,
केकर हहूँ तुहूँ बेटी रे पुतोहिया,केकर हहूँ तुहूँ रानी जी ।

केकर कुलवा में तुहूँ बिआहल,स्वामी जी के नउवाँ बतलावऽ जी ,
राजा जनकजी के बेटी हिवऽ, दसरथ कुलवा विआह जी ।

अपन स्वामी जी के नउवो न जानी,लछुमन देवरा हमार जी ,
एतना बचनियाँ जब सुनलन राजा राम चन्द्र, धाई-धाई खोजले कहार जी ।

देवउ कहरवा भइया डाली भर सोनवाँ, सीता अजोध्या पहुँचाव जी ।।

अर्थ

राजा दसरथ बाँस काटने चले तो हाथ में बाँस की खँपची गड़ गई । दर्द से राजा दशरथ व्याकुल हो गए । रानी कैकई की पुकार हो गई । हे कैकई रानी, आकर पलंग पर बैठें और अपना दुख-सुख कहें । कैकई ने कहा कि भरत और शत्रुघ्न का राज-योग लिखता है और राम वन जायेंगे । जब राजा दसरथ ने इतनी बात सुनी तो मूर्छित होकर जमीन पर गिर गए । राम सम्पूर्ण नगर के प्यारे हैं, वे वन कैसे जायेंगे ?

अंततः राम को वन जाना पड़ा । एक-दो कोस जाने के बाद उन्हें प्यास लगी । उन्होंने कहा कि इस नगर में कोई नहीं बसता ? बटोही प्यासा जा रहा है । वहाँ बाल विवाहिता सीता-रहती थी-वह राम की वाणी सुनकर पात्र में पानी लेकर आई और कहने लगी कि इस नगर में मैं रहती हूँ, हे बटोही भाई, पानी पी लें । राम ने एक-दो चुल्लू पानी पी लिया और तीसरे चुल्लू पीते समय दिल की बात पूछने लगे । तू किसकी बेटी और किसकी पुत्र-वधू हो और किसकी रानी (पत्नी) हो ? किस कुल में तुम्हारा व्याह है अपने पति का नाम बतलाओ । सीता ने कहा–मैं राजा जनक की बेटी हूँ और राजा दशरथ के वंश मे व्याही गई हूँ । अपने पति का नाम नहीं जानती, परंतु लक्ष्मण मेरे देवर हैं । (गीतकार ने बड़ी चातुरी से पति के नाम न लेने की परम्परा को कायम रखा है ।

राम ने इतनी बातें सुनी तो दौड़कर डोली कहार खोजा और कहारों को कहा कि मैं तुम्हे टोकरी भर सोना दूँगा, सीता को अयोध्या में पहुँचा दो ।

नोट-पहले बाल विवाह में पति-पत्नी पूर्णतः अपने ससुरार के बारे में अनभिज्ञ रहते थे । वर्षों के बाद द्विरागमन होता था । इस धारणा की अभिव्यक्ति मगही लोक कथाओं में सर्वत्र मिलती है, यहाँ भी इसकी झाँकी मिलती है ।

(११)

अगना लिपली चीकन-चाकन रूकमिन हाल से बेहाल हरी,
रामजी चलले बन के अहेरिया, बन पइसी खेललन सिकार हरी।

एक पैंतर खेललन रामजी, दू पैंतर खेललन, लगलई मधुरी पियास हरी,
न लोके अहरा, न लोके पोखरा, न लोके दुअरा इनार हरी।

बन से निकललन, सीता एक नारी, हाथे गेडुअवा पानी हरी,
एक चीरु पीलन रामजी, दू चीरु पीलन, लछुमन हँसले ठठाय हरी।

ई तो हथिन भाभी हमार ये हरी ।।

अर्थ

आंगन लिपकर चिकना कर दिया गया है और रूक्मिनी (सीता) की हालत ठीक नहीं है क्योंकि राम चन्द्र वन में शिकार खेलने जा रहे हैं। वहाँ वन में प्रवेश कर शिकार खेल रहे हैं। उन्होंने एक बार खेला और दूसरी बार खेला, फिर उन्हें प्यास लग गई।

कहीं आहर-पोखर नहीं दीख रहा है न किसी के दरवाजे पर कुआँ ही लौक रहा है। पानी कहाँ पीयें ? इसी समय जंगल से सीता नाम की एक नारी निकली, हाथ में जलपात्र लिए हुए । रामजी एक-दो चुल्लू पानी पीने लगे तो लक्ष्मण जी अट्टहास कर हँसने लगे और कहने लगे कि यह तो हमारी भाभी हैं।

(१२)

रामचन्दर चललन विआहन रिमझिम बाजत -
अहे रीखियन खबर जनावऽ कहाँ रे दल उतरत ?

गाँवा के पछिम झँझार पीपर अउरो मधुर पाकड़,
अहे उहाँ बहे सीतल बतास उहई दल उतरत।

परीछे बाहर भेलन सासु सरब रंग चूनर,
अहे कउन बर के आरती उतारब कउन बर सुन्नर।

स्याम बरन रघुनंदन ओढ़ले पीतम्बर,
अहे मुख पर ढुलले बेइलिया, वही रे बर सुन्नर।

अहे ओही बर सुन्नर भयले विआह,
भयले विआह पह फाटल चिरइयाँ एक बोलले।

अहे खोलूँ सासु सोबरन केवाड़, राम जइहें कोहबर,
कइसे में खोलूँ बाबू सोबरन केवाड़।

अहे मोरा सीता लड़िका से बारी, बोलन नहीं जानले,
जब सासु सीता तोरो लड़िका से बारी बोलन नहीं जानले।

हमहीं क़ुमलवा के फूल, दूनो मिली विहँसबऽ ॥

अर्थ

रिमझिम बजते हुए बाजे के साथ रामचन्द्र विवाह करने चले। पुत्री पक्ष के लोगों ने ऋषियों को सूचित किया कि बारात कहाँ ठहरेगी ? गाँव से पश्चिम छतनार पीपल वृक्ष है और सघन पांकड़ वृक्ष है-वहीं शीतल हवा चलती है, वहीं बारात ठहरेगी।

सर्वरंग की चूनरी पहन कर सास वर को परीछने बाहर निकली। कौन वर सुन्दर हैं और किस वर की आरती उतारी जाय। रघुनंदन श्याम वर्ण के हैं और पीले वस्त्र पहने हुए हैं, उनके मुँह पर फूदने लटक रहे हैं, वही सुन्दर वर है। उसी सुन्दर वर से सीता का विवाह हो गया। विवाह होते पौ फट गई, चिडियाँ बोलने लगी। राम दरवाजे पर जाकर सास से स्वर्ण जटित कीवाड़ खोलने कहते हैं। सास कहती है कि बाबू, कीवाड़ कैसे खोलूँ, मेरी सीता अभी बच्ची है, कम उम्र की है, बोलना-बतियाना भी नहीं जानती। राम कहते हैं कि सीता कम उम्र की है, बोलना नहीं जानती तो मैं भी कमल का फूल हूँ, दोनो मिलकर हँसे-खेलेंगे।

(१३)

हथवा में लेले हजमा लबंग सोपरिया, अरे चारो भुवन नेवता पेठाय रे ललनवाँ।
गया में नेबतव गया गजाधर, कासी नेबतव विसुनाथ रे ललनवाँ।

प्रयाग में नेबतव ओहू बैनी माधव, उड़िसा में नेवतब जगरनाथ रे ललनवाँ।
अजोध्या में नेबतव राजा दसरथ जी, अरे राम लखन दूनो भाई रे ललनवाँ।

इन्द्र लोक में नेबतव इन्द्रजी, धरती नेबतव सेस नाग रे ललनवाँ।
गया से अयलन गया गजाधर, कासी से अयलन विसुनाथ रे ललनवाँ।

प्रयाग से अयलन ओहू बेनी माधव, उड़िसा से अयलन जगरनाथ रे ललनवाँ।
अजोध्या से अयलन राजा दसरथ जी, अरे राम लखन दूनो भाई रे ललनवाँ।

इन्द्र लोक से अयलन ओहू इन्द्रजी, धरती से अयलन सेस नाग रे ललनवाँ।
गाई के गोबर अँगना लिपवलूँ, अरे गजमोती चउका पुरायब हो ललनवाँ।

जाहीं चउका बइठथी दसरथ जी के बेटवा, मोतिया से अंजुरी भरायब रे ललनवाँ।
जाहीं चउका बइठे जनक रीखी के धिया, सेनुरा से मँगिया भरायब रे ललनवाँ।

मुँह पटुक देके रोवे जनक रीखी, अरे अब सीता रहतन कुआँरी रे ललनवाँ।
अटकी चलावथ लखन, मटकी चलावले, अरे अब भइया धरऽ न ध्यान रे ललनवाँ।

धेनुख उठयले मुनि जय जय बोलले, अरे धनुख भइले तीन खंड रे ललनवाँ।
मुँह पटुक देके हँसले जनक रीखी, अब सीता होतइन बिआह रे ललनवाँ।

अर्थ

पुत्री पक्ष से राम विवाह के लिए निमंत्रण भेजना-(स्वयंवर क्रिया) हाथ में लवंग और कसैली लेकर हजाम चारो भुवन में विवाह के लिए (स्वयंवर के लिए) निमंत्रण देने चला। गया में वहाँ के राजा गजाधर को निमंत्रित किया गया और काशी में भगवान विश्वनाथ को। प्रयाग के मालिक बेनी माधव (त्रिवेणी का मूर्तिमान रूप) को निमंत्रण दिया गया और उडीसा में जगन्नाथ को। अयोध्या में राजा दशरथ जी को नेवता दिया गया जिनके राम लक्ष्मण जैसे पुत्र हैं। इन्द्र लोक में राजा इन्द्र को पाताल में शेषनाग को निमंत्रण दिया गया।

गया से गयागजाधर और काशी से विश्वनाथ जी आ गए। प्रयाग से बेनी माधव और उड़ीसा से जगन्नाथ जी आए। अयोध्या से राजा दशरथ जी और उनके साथ दोनों भाई-राम-लक्ष्मण आए इन्द्रलोक से इन्द्रजी आए और पाताल से शेष नाग का आगमन हुआ।

गाय के गोबर से अंगना लिपकर गजमुक्ता से चौका पूरा गया। उसी चौका पर राजा दशरथ जी के पुत्र राम बैठेंगे। उनका हाथ मोतियों से भरा जायगा। उसी चौके पर ऋषि जनक की पुत्री सीता बैठेगी। उनकी मांग सिन्दुर से भरा जायगा। परंतु धनुष भंग नहीं होने के कारण मुँह पर वस्त्र रखकर राजा जनक रो रहे हैं कि अब सीता कुँआरी रह जायगी। यह सुनकर लक्ष्मण मटकी मार रहे हैं और राम की ओर ईशारा कर रहे हैं कि हे भाई अब ध्यान दें—धनुष तोड़ें। राम ने धनुष उठाया और वह तीन खण्डों में टूटकर विभाजित हो गया। यह देखकर मुनिगण जय-जय करने लगे। राजा जनक पुनः मुँह ढँककर हँसने लगे कि अब सीता का विवाह सम्पन्न हो जायगा।

(१४)

अंगना बहारइत चेरिया तो अउरो लउड़िया ,
ये राम जी के सेजिया डाँसीये देहूँ, राम नीनियाँ बाउर ।

चेरिया के हाथ गोबराइन अउरो छुछुराइन ,
ये जीनी रे कहले सेई सेजिया डाँसले, राम नीनिया बाउर ।

एक हाथे सीता सेजिया डँासले, दोसरे विछवना लावे ,
ये तीसरे अँचरवा धरी राम बिलमावले हम चाहीला अभरन ।

सात ही घरवा में भइया-भउजी, अठवे में मइया-बप्पा ,
ये कहाँ हम पयबो दूगो राई-सरसो काई होइहें अभरन ?

कोठी-काँन्हा पयबो दूगो राई-सरसो ,
ये रगरी-रगरी सरसो पिसली, आही होइहे अभरन ।

अर्थ

आंगन में दासी बुहार रही थी नौकरानी वर्त्तन साफ कर रही थी सीता ने कहा कि रामजी की शय्या लगा दो वे नींद से व्याकुल हैं । दासी के हाथ गोबर काढ़ने से महक रहा था, छूंछूदर की तरह महक रहा था । अत: जिसने कहा, वही शय्या लगा दें । सुनकर सीता ने एक हाथ से शय्या लगाने लगी और दूसरे हाथ से विछावन लाने लगी । इस पर राम सीता से आँचल पकड़कर कहने लगे कि मैं उबटन चाहता हूँ । सीता कहती है कि सात घरों में भाई-भाभी हैं और आठवें घर में माँ-बाप हैं । अत: हम कहाँ से सरसों आदि पावें और किस चीज से आभरन बनावें । राम ने कहाँ कि घर के कोठी-काँधा से राई-सरसों मिल जायगा जिसे रगड़कर पीस देने पर उबटन बनेगा ।

(१५)

सोने के पावा रे रूपे के पाटी रे अब रेसम सूते ओरचन लागे ।
से खाटी डाँसे अजोध्या में केकई, सोई रहले रघुराई ।

हथवा में लेले सीता तेलवा-फुलेलवा हो, लेले सिरहनवा भेले खाड़ ।
रचीयक हथवा पसारा राजा रामचन्द्र लाई देबो तेलवा-फूलेल ।

कइसे में हथवा पसारी गे जनक धिअवा, हमें आगे अगिनी-विचार ।
जब सीता देई अगिन कुंड हेललन, अगिन गयले पझाय ।

यही किरीअवा सीता हम न पतिआयब, हमें आगू गंगा-विचार।
जब सीता जी गंगादाह हेललन, गंगा न छोड़ले अरार।

यह किरीअवा सीता मैं न पतिआयब, हमें आगू सूर्य-विचार।
जब सीता जी सूरूज कुंड हेललन, सुरूज रहलन छिपाय।

सब किरीअवा सीता देलन पहचारी हो, अब दासी होयबो तोहार ॥

अर्थ

सोने का पावा और चाँदी की पाटी है और रेशम के सूत्र से खाट बीना गया है। इस खाट को अयोध्या में रानी कैकई ने बिछाया है। उस पर रघुवर राम सो रहे हैं। उसी समय वन से लौटने के बाद सीता हाथ में सुगंधित तेल लेकर राम के सिरहाने खड़ी है। वह कहती है कि हे राजा रामचन्द्र थोड़ा हाथ पसारें, सुगंधित तेल लगा दूँ। राम कहते हैं कि हे जनक पुत्री कैसे हाथ पसारुँ, हमारे सामने अग्नि परीक्षा देनी होगी। जब सीता अग्नि कुंड में प्रवेश करती है तो अग्नि बूझ जाता है। राम ने कहा कि इस साक्ष्य पर मेरा विश्वास नहीं है, तुम्हें गंगा प्रवेश की परीक्षा देनी होगी। जब सीता गंगा नदी में प्रवेश करती है तो गंगा ने अपनी तरंग बंदकर दी। इसपर भी राम को विश्वास नहीं हुआ तो राम ने सूर्य-परीक्षा देने को कहा जैसे ही सीता ने सूर्य कुंड में प्रवेश किया तो सूर्य छिप गए। सीता सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो गई और उसने कहा कि अब आप की चरणदासी होकर रहूँगी।

(१६)

कने मुँहे अयलऽ ये रामा कि कने मुँहे गेलऽ गे माई।
कथीए के फुलवा ये रामा कि रहलऽ लोभायल गे माई।

मडुवा मुँहे अयलऽ ये रामा कि दवन मुँहे गेलऽ गे माई।
ओड़हुल के फुलवा ये रामऽ रहलऽ लोभायल गे माई।

एक हाथे अहे सीता कटोरवा तेल लगावे गे माई।
दोसर हाथे अहे सीता नयनवा लोरवा पोछे गे माई।

किया तोरा अहे सीता मइया मन-पावे गे माई।
किया तोरा अहे सीता सहोदर जेठ भाई गे माई।

कउने अवगुनवे सीता नयनवा लोर पोछे गे माई।
नहीं मन परलई रामऽ मइया से बप्पा गे माई।

नहीं मन परलई रामऽ सहोदर जेठ भाई गे माई।
तोहरे करनवा ये रामऽ नयनवाँ लोर पोछूँ गे माई।

छोटे-मुटे राम गे माई, धनुख बड़ा भारी गे माई।
यही करनवे ये रामऽ नयनवाँ लोर पोछूँ गे माई।

अर्थ

लोकगीतों में पौराणिक कथाओं का तारतम्य खोजना निरर्थक है, केवल स्फुट कथा-संकेत मात्र मिलते हैं, फिर भी देव गीतों में उसका यत्किंचित् आधार तो वर्त्तमान रहता ही है। लोक मानस ने सीता स्वयंवर में सीता की विवशता का वर्णन अपनी लैकिक परम्परा और लौकतात्विक रूपों में किया है।

राम किस दिशा से आए और किस दिशा में चले गए और किस फूल से आकृष्ट होकर रुक गए। लोकजीवन उत्तर देता है—मडुवा देखकर आए और दवना की ओर चले गए। ओड़हुल (जपा) देखकर आकृष्ट हो गए (स्वभावतः पुष्प वाटिका प्रसंग है।) वहाँ सीता गौरी पूजनार्थ गई है जहाँ राम का साक्षात्कार होता है। वह एक हाथ में तेल का कटोरा लिए है और दूसरे हाथ से नयन के आँसू पोछ रही है। सीता को रोते देख राम ने पूछा कि क्या तुम्हारी माँ ने कुछ कहा है जिससे मन पर प्रभाव पड़ गया है, या सहोदर बड़े भाई ने तो कुछ नहीं कह दिया है ? किस कारण से सीता नयन से आसूँ पोछ रही है। सीता कहती है कि माँ-बाप या बड़े भाई ने कुछ नहीं कहा है। चिंता है कि राम छोटे हैं और धनुष बड़ा भारी है। यह उनसे कैसे टूटेगा ? यही कारण है कि नयन से आँसू बह रहे हैं और उसे मैं पोछ ले रही हूँ।

(१७)

राम जाले बन सीता जाने को तइयार हो,
मचिया बइठले ससुर लगे समुझावे हो।
घरऽ ही में रहऽ सीता जनक दुलारी हो,
खायके न अन्न मिले पीये के न पानी हो।
सोवे के न सेज मिले जनक दुलारी हो,
खबई में वनफल, पीबई नदी-पानी हो।
सोबई में कुस-चटइया, जनक दुलारी हो,
खटिया बइठले सासु लगे समुझावे हो।
घर ही मे रहऽ सीता जनक दुलारी हो। आदि पुनरूक्तियाँ

अर्थ

राम वन गमन के लिए प्रस्तुत हैं तो सीता भी उनके साथ जाना चाहती है । मचिया पर बैठे श्वसुर समझाने लगे कि हे सीता, घर में ही रह जाओ, तुम जनक जी की दुलारी पुत्री हो । जंगल में खाने के लिए अन्न नहीं मिलेगा न पीने के लिए पानी । हे जनक दुलारी, वहाँ सोने के लिए शय्या भी नहीं मिलना है । सीता कहती है कि वहाँ मैं वनफूल खाकर नदी का पानी पी लूँगी और कुश की बनी चटाई पर सो जाऊँगी । इसी प्रकार सीता की सास भी समझा रही है कि सीता को घर पर ही रहना चाहिए । गीत की कड़ी भिन्न-भिन्न सम्बंधों के साथ बढ़ती जाती है ।

(१८)

सोने के लोटवा में जलवा लगवलूँ, आंगन में फूल छितरवलूँ हो ,
रामजी बइठले आसन मार हो, जीवा हुलसे हमार ।

महल से निकले चार सखिया हो पूछे दिलवा के बात ,
कवनी बरत सखि कयलऽ हो, वर मिलले भगवान ?

कातिक मासे नेहयलूँ हो, अगहन कयलूँ एतवार ।
कंचन सोनवाँ तुड़वलूँ हो, भगिनी के कयलूँ दान ।

अर्थ

सोने के पात्र में जल भर कर रखा, आंगन में फूल विखेर दिया । वही आसन पर वर रूप में राम विराजमान हुए जिन्हें देखकर जी प्रसन्न हो गया । इसी समय राजमहल से चार सखियाँ निकली और सीता से रहस्य की बातें पूछने लगी । हे सखि, कौन सा ब्रत किया था कि भगवान राम जैसा वर मिले । सीता कहती है कि कार्तिक मास में स्नान किया था, अग्रहन में 'रविवार ब्रत' किया था । सुन्दर सोने के आभूषण को तोड़ा कर भगिनी को दान कर दिया था । यही सब ब्रत करने से राम जैसे वर की प्राप्ति हुई है ।

(१९)

नेहाइये-धोआइये रामजी खड़ा भेलन, दादा से अरज कयलन हो ,
दादा हमें तो जइबो मधुबनवाँ, सीता के कइसे रखबऽ हो ।

सीता के रखबई नयन बीचे अउरो सजन बीचे हो ,
बबुओ अगना में कुआँ खनवायम सीता के नहवायम हो ।

बबुआ पूरूब से साड़ी मंगवायम, सीता के पहनायम हो ,
बबुआ चेरी-लउड़ी अभरन लगायम, सीता के नहवायम हो ।

अर्थ

नहा-धोया कर रामजी जंगल में जाने के लिए प्रस्तुत हुए और दादा से प्रार्थना करने लगे—हम तो मधुवन जा रहे हैं सीता को कैसे रखेंगे ? दादा कहते हैं कि सीता को सज्जनों के बीच आँख की पुतली की तरह रखूँगा । सीता को स्नान करने के लिए आंगन में ही कुआँ खुदवा दूँगा । उसे पहनने के लिए पूर्व देश से सारी मंगवा दूँगा । दासी-लौंड़ी उबटन लगाकर स्नान करावेगी ।

(२०)

दखिना के बगिया में दूईगो विरीछिया, एक महुआ एक आम गे माई ।
ताही तर उतरल दूई गो मनुसवा एक सीता एक राम गे माई ।

जोगिया के भेख में आयल रवनवाँ भीख-कटोरवा लेले गे माई ।
अगना बहारइत चेरिया-लउड़िया, जोगिया के भीखे देई अखंड गे माई ।

चेरिया के हाथ चेरिआइन से हम लेबई सासु ठकुराइन गे माई ।
तर लेले सोनवा ऊपर तिलचाउर, जोगिया भीख देवे चललन गे माई ।

तोरो हाथे हम भिक्षा न लेबो माई, हम लेबई कन्या कुँआर गे माई ।
टूटली चलनिया, घुनली खेसरिया, योगिया के भिक्षा देवे चललन गे माई ।

एक ड्योढ़ी गेलन, दूसर ड्योढ़ी गेलन, तीसरे में हर लेकई रवनवाँ गे माई ।

अर्थ

दक्षिण देश के बाग में दो वृक्ष हैं-एक महुआ और एक आम का । उसी वृक्ष के नीचे दो मनुष्य आकर ठहर गए -एक का नाम सीता और दूसरे का नाम राम है । वहाँ पर हाथ में भिक्षा का पात्र लिए रावण योगी के भेष में आया । आंगन में दासी बुहार रही थी । योगी ने अखण्ड भिक्षा दान के लिए आवाज लगाई । दासी भीख देने आई तो योगी ने कहा कि दासी का हाथ दुर्गंधपूर्ण है, हम ठकुराइन से ही भीख लेंगे । ठकुराइन पात्र में भीतर सोना और ऊपर से तिल-चावल लेकर भिक्षा देने चली । योगी ने पुनः कहा कि हम तुम्हारे हाथ से भिक्षा नहीं लेंगे, हम कुआँरी कन्या के हाथों भिक्षा लेंगे । सीता टूटी चलनी में सड़ी खेसारी लेकर योगी को भिक्षा देने चली । ड्योढ़ी पाकर होकर ज्योंही भिक्षा देने लगी तो रावण ने उसे अपहरण कर लिया ।

(२१)

नउवा से ब्राह्मण चललन गे माई, से देसे-देसे खोजे वर कुँअरे गे माई ।
से कतहूँ न मिले बर कुँअरे गे माई, का सीता रहिहें कुँआरी गे माई ?

एक नगरी रहले अजोध्या गे माई, से उहई मिलले बर कुँअरे गे माई ।
सेई बर सीता विआहब गे माई, जलम-जलम सुख होतई गे माई ।।

अर्थ

नाई और ब्राह्मण वर खोजने चले । देश-विदेश में क्वाँरा बालक खोजते रहे परंतु कहीं क्वाँरा बालक नहीं मिला । सोचते हैं कि क्या सीता क्वाँरी रह जायगी ? पता चला कि एक अयोध्या नगरी है वहाँ कुँआरा वर है । उसी वर से सीता का विवाह करेंगे जिनसे सीता को जन्म जन्मान्तर सुख होगा ।

(२२)

मलिया के छोकड़ा मउरिया लेले खाड़ हे ,
पेन्हऽन सीरी राम दुलहा लरिया लगाई के ।

पेन्हीए-ओढ़िए रामऽ चललन विआह के ,
जानकी विआह जोगे राम लछुमन अंग सोभे ।

दरजी के छोकड़ा जोड़ा लेले खाड़ हे ,
पेन्हऽन राम दुलहा बंदवा लगाई के ।

पेन्हीए-ओढ़िए रामऽ चललन विआह के ,
जानकी विआह जोगे राम लछुमन अंग सोभे ।

(इसी प्रकार सारे आभूषण बनाने वालों की पुनरूक्तियाँ)

अर्थ

माली-पुत्र मौर लेकर खड़ा है और कहता है कि लड़ी सम्हाल कर इसे पहन ले। पहन-ओढ़कर राम विवाह करने चले तो लगा कि सीता के योग्य राम लक्ष्मण सुन्दर लग रहे हैं । पुनः दरजी-पुत्र जोड़ा-जामा लेकर खड़ा है । कहता है कि बंद लगाकर, दुलहा जी, इसे पहन लें । राम इसे भी पहन कर विवाह करने चले । राम और लक्ष्मण का अंग-प्रत्यंग सुशोभित हो रहा है (गीत की कड़ी आगे बढ़ती जाती है)

(२३)

जब रघुनंदन देहरी बीचे अयले, से केरवा के थम्हिया गड़ायल गे माई ।
से पनवा के मड़वा छवायल गे माई, से बर देखऽ रघुनंदन गे माई ।

जब रघुनंदन मड़वा बीचे अयले, से गजोमोती चउका पुरायल गे माई ।
जब रघुनंदन चउका बीचे अयले, से सखि सब दिहले गारी गे माई ।

जब रघुनंदन कोहबर बीचे अयले, से साली छेकले दुआर गे माई ।
जब रघुनंदन पलंग बीचे अयले, दुलहिन पूछे दिलबात गे माई ।।

अर्थ

विवाह के समय लौकिक अनुष्ठान की प्रक्रियाओं का चित्रण—जब श्री राम विवाह करने दरवाजे पर पहुँच गए तो केला का खम्भा और तोरण मिला । पान-पत्तियों का मण्डप छाया गया था, जहाँ वर रघुनंदन देखने योग्य थे । जब रघुनंदन मंडप में गए तो वहाँ गजमुक्ता का चौका पुरा गया था वहाँ सब सखियाँ गाली देने लगी । जब रघुनंदन कोहबर जाने लगे तो सालियाँ दरवाजे छेकने लगी । सारी जगहों को पार करते रघुनंदन शय्या पर गए तो दुलहन उनसे रहस्य की बातें पूछने लगी ।

(२३)

भगवान राम पद बंदि के, गीत गावहु हे ,
सीरी दसरथ के नंदन, सब जग जानहु हे ।

नवा मास जब बीतल, चइत सुहावन हे ,
लेले कोसिला के गोद जनम, गीत गावहु हे ।

रिसि मुनि अयलन दुआर, सभे जग अयलन हे ,
गावहु वेद-पुरान मंगल गीत गावहु हे ।

धन-धन कोसिला के भाग रामचन्दर जनम लेलन हे ,
राम जी महिमा आपार सब गीत गावहु हे ।

अर्थ

इसे कोई सोहर के अन्तर्गत रख सकते हैं लेकिन यह स्वभाव से सोहर गीत नहीं है । भगवान राम के चरण की वन्दना कर गीत गाइये । श्री दसरथ के नंदन राम सर्व विदित हैं नौ महीना बीतने के बाद सुहाने चैत्र महीने में कौशल्या की गोद में

राम का आगमन हुआ । ऋषि-मुनि के साथ सारा संसार दरवाजे पर आ गया । वेद-पुरान के मंत्रोचार होने लगे । सोहर गीत गाया जाने लगा । कौशल्या का भाग्य धन्य है जिनके यहाँ स्वयँ राम ने जन्म लिया । उनकी महिमा अपार है । अतः सब मिलकर उनका गीत गायें ।

(२४)

राम चन्दर चलले डगरिया, रिमिझिमि बादर हे ,
खबर सुनि रिखियनऽ आयल कहाँ पर उतारब हे ।

हथवा धनुस आउ बान, मथवा जटवा सोभे हे ,
साम वरन केरा रूप,सबही सोहावन लागे हे ।

रहिया जे चलहीं, सब दुख भोगहि हे ,
तइयो नऽ दुखवा मानहि, हँसि हँसि सब बतिआही हे ।

रामरूप छकि पावे दरसनवा, धन भाग मानहि हे ,
आनंद मंगल तेहि धन, सब मिलिगावहिं हे ।

अर्थ

श्री रामचन्द्र जंगल के पथ चले जा रहे हैं । रिमझिम बादल बरस रहे हैं । यह खबर सुनकर वन के ऋिषिगण शीघ्र आ गय । ये कहाँ रहेंगे ? हाथ में धनुष वाण हैं, माथे पर जटा है, इनका रूप श्याम वर्ण का है जो सब के लिए सुदर लगते हैं । रास्ते में पैदल चल रहे हैं । सभी प्रकार के कष्ट भोग रहे हैं फिर भी दुख नहीं मानते । हँस-हँस कर सभी से बातें करते हैं । बनवासियों का भाग्य धन्य है जो राम का दर्शन कर उनके रूप सौन्दर्य का छक कर पान करते हैं । उन सबका भाग्य धन्य है ।

(२३)

जब रघुनंदन देहरी बीचे अयले, से केरवा के थम्हिया गड़ायल गे माई ।
से पनवा के मड़वा छवायल गे माई, से बर देखऽ रघुनंदन गे माई ।

जब रघुनंदन मड़वा बीचे अयले, से गजोमोती चउका पुरायल गे माई ।
जब रघुनंदन चउका बीचे अयले, से सखि सब दिहले गारी गे माई ।

जब रघुनंदन कोहबर बीचे अयले, से साली छेकले दुआर गे माई ।
जब रघुनंदन पलंग बीचे अयले, दुलहिन पूछे दिलबात गे माई ॥

अर्थ

विवाह के समय लौकिक अनुष्ठान की प्रक्रियाओं का चित्रण—जब श्री राम विवाह करने दरवाजे पर पहुँच गए तो केला का खम्भा और तोरण मिला । पान-पत्तियों का मण्डप छाया गया था, जहाँ वर रघुनंदन देखने योग्य थे । जब रघुनंदन मंडप में गए तो वहाँ गजमुक्ता का चौका पुरा गया था वहाँ सब सखियाँ गाली देने लगी । जब रघुनंदन कोहबर जाने लगे तो सालियाँ दरवाजे छेकने लगी । सारी जगहों को पार करते रघुनंदन शय्या पर गए तो दुलहन उनसे रहस्य की बातें पूछने लगी ।

(२३)

भगवान राम पद बंदि के, गीत गावहु हे ,
सीरी दसरथ के नंदन, सब जग जानहु हे ।

नवा मास जब बीतल, चइत सुहावन हे ,
लेले कोसिला के गोद जनम, गीत गावहु हे ।

रिसि मुनि अयलन दुआर, सभे जग अयलन हे ,
गावहु वेद-पुरान मंगल गीत गावहु हे ।

धन-धन कोसिला के भाग रामचन्दर जनम लेलन हे ,
राम जी महिमा आपार सब गीत गावहु हे ।

अर्थ

इसे कोई सोहर के अर्न्तगत रख सकते हैं लेकिन यह स्वभाव से सोहर गीत नहीं है । भगवान राम के चरण की वन्दना कर गीत गाइये । श्री दसरथ के नंदन राम सर्व विदित हैं नौ महीना बीतने के बाद सुहाने चैत्र महीने में कौशल्या की गोद में

राम का आगमन हुआ । ऋषि-मुनि के साथ सारा संसार दरवाजे पर आ गया । वेद-पुरान के मंत्रोचार होने लगे । सोहर गीत गाया जाने लगा । कौशल्या का भाग्य धन्य है जिनके यहाँ स्वयँ राम ने जन्म लिया । उनकी महिमा अपार है । अतः सब मिलकर उनका गीत गायें ।

(२४)

राम चन्दर चलले डगरिया, रिमिझिमि बादर हे ,
खबर सुनि रिखियनऽ आयल कहाँ पर उतारब हे ।

हथवा धनुस आउ बान, मथवा जटवा सोभे हे ,
साम वरन केरा रूप,सबही सोहावन लागे हे ।

रहिया जे चलहीं, सब दुख भोगहि हे ,
तइयो नऽ दुखवा मानहि, हँसि हँसि सब बतिआही हे ।

रामरूप छकि पावे दरसनवा, धन भाग मानहि हे ,
आनंद मंगल तेहि धन, सब मिलिगावहिं हे ।

अर्थ

श्री रामचन्द्र जंगल के पथ चले जा रहे हैं । रिमझिम बादल बरस रहे हैं । यह खबर सुनकर वन के ऋिषिगण शीघ्र आ गय । ये कहाँ रहेंगे ? हाथ में धनुष वाण हैं, माथे पर जटा है, इनका रूप श्याम वर्ण का है जो सब के लिए सुदर लगते हैं । रास्ते में पैदल चल रहे हैं । सभी प्रकार के कष्ट भोग रहे हैं फिर भी दुख नहीं मानते । हँस-हँस कर सभी से बातें करते हैं । बनवासियों का भाग्य धन्य है जो राम का दर्शन कर उनके रूप सौन्दर्य का छक कर पान करते हैं । उन सबका भाग्य धन्य है ।

●

देवी गीत

उत्तरी भारत के प्रायः सभी गाँवों में देवी की सात चौरियाँ बनी रहती है। वस्तुतः ये पौराणिक सप्त मातृकाएँ हैं। श्रावण में अनिवार्यतः इनकी पूजा की जाती है। देवी की पूजा लोकजीवन में कभी भी की जाती है और उस समय लोककंठ से देवी के गीत फूटते रहते हैं। लोकजीवन में देवी का सम्बंध शीतला या गौरी से हैं। चेचक होने पर प्रायः देवी की पूजा की जाती है और तत्सम्बंधी गीत गाए जाते हैं। घर की स्त्रियों के अतिरिक्त माली जाति के लोग भी झाल बजाकर देवी के गीत गाते हैं और चेचक का उपचार पूजन-विधि से करते हैं। चेचक शीतला माता के आगमन रूप में माना जाता है और लोक विश्वास है कि देवीगीत से देवी की पूजा अर्चना करने पर शीतला ठीक हो जाती है। देवी गीतों में सप्तमातृकाओं के साथ कभी-कभी भैरो भैया का भी नाम आ जाता है। यहाँ देवी लोकगीतों के मगही स्वरूप एवं ध्वनियाँ द्रष्टव्य हैं।

(१)

कथी केरा कंगही भवानी मइया, कथी लागल हो साल
कथीए बइठले भवानी मइया, झारे लामी हो केस।
सोने के कंगही भवानी मइया, रूपे लागल हो साल।
मचिया बइठल सातो बहिनी, झारे लामी हो केस।
टूटी गेले कंगही भवानी मइया, टूटी गेले हो साल।
खिसिया के मातल भवानी मइया,बोले हो खखुआय।
आँख तोरा फुटउ रे सोनरा, जवनियाँ लगे हो घून।
जउन हाथे गढ़ले रे सोनरा, कंगहिया हमार।
अबकी कसुरवा भवानी मइया, बकसू नऽ हमार ?
फिन से गढ़यबो भवानी मइया, कंगही तोहार।।

अर्थ

लोक गायिका कहती है कि किस चीज की कंघी बनी है और उसमें साल (दाँत) किस चीज का है ? किस चीज़ पर बैठकर देवी माता(भवानी) अपने लम्बे केश झार रही है । सोने की कंघी है ओर चाँदी का साल है और मचिया पर बैठकर देवी माता लम्बी केश-राशि झार रही है। इसी क्रम में कंघी और उसका साल टूट जाता है । देवी माता क्रोधित हो उठती है । वह कहती है, कंघी बनाने वाले सोनार की आँखे फूट जाय और उसकी जवानी में घून लग जाय । जिस हाथ से सोनार ने कंघी बनाई है वह बेकार हो । सोनार इस गलती को माफ करने की प्रार्थना करता है और फिर से कंघी बना देने का बचन देता है ।

(२)

नीमिया के डाढ़ मइया लगले हिण्डोलवा,
कि ढुलि-ढुलि मइया गावऽह गीत, कि ढुलि-ढुलि ।

झुलते-झुलते मइया लगले पीअसिया,
कि चली भेलऽ मलहोरिया अंगनवा ।

सुतल हऽ कि जागल तुहूँ मालिन बेटिया,
कि बुन्दा एक मोरा पनिया पिलावऽ कि बुंदा एक ।

सोने के घइलवा मइया, रूपे के बासनवाँ,
रेसम डोरी मइया पीयऽ जुड़वा पानी ।

एक घोंट पीले मइया, दूई घोंट पीले,
कि तीसरे में मइया देह असीसा ।

जइसे जुड़वलऽ मलिन हमरा,
कि ओइसही तोरा बेटिया जुड़ाव,
कि ओइसही तोरा, पुतोहिया जुड़ाव ।।

अर्थ

नीम वृक्ष की डाली में माता ने झूला लगाया है और उस पर झुलती हुई गीत गा रही है । झूला झूलते माता को प्यास लग गई तो वह माली के आंगन में चली गई । वहाँ उसने कहा कि हे मालिन-बेटी, सोई है कि जगी हुई है ? एक बूंद पानी मुझे पिला दो । मालिन ने कहा कि पानी सोने के घड़ा में है । चाँदी के पात्र में

रेसम की डोर से भरा गया है । अत: पानी पीकर ठंढा हो लें । माता एक-दो चुल्लू पानी पीकर आशीर्वाद देती है कि तुमने मुझे जैसे शीतलता प्रदान की है वैसे ही तुम्हारी बेटी पुतोह भी जुड़ाये–संतुष्ट हों । यहाँ नीम वृक्ष और माली जाति का उल्लेख है, अन्य गीतों में भी माता का सम्बन्ध इनके साथ दीखता है । प्राय: देवी माता का सेवक (भक्त-भक्तिन) माली जाति के लोग होते हैं और गाँव में माता की चौरी नीमवृक्ष के नीचे ही रहती हैं । लोकास्था और लोकपरम्परा को गीतों में अभिव्यक्ति मिलती है ।

(३)

नइहरा में सींझले जउरिया मइया, ये जउरिया ये मइया ,
मइया ससुरा में लगले धमसिया ये मइया ।

मइया कउनी बहनवें नइहर जाऊँ ये मइया ?
हथवा में लेले दूई चिपरिया ये मइया ।

मइया अगिये बहनवें नइहर जायब ये मइया ,
ढकनी जे फूटले चउकठिया मइया ये चउकठिया ये मइया ।

मइया बड़ी चोट लगलई ठेहुनवा ये मइया ,
भउजी जे उठलन धरप से ये मइया ।

मइया चुल्हवे खखोरी अगिया देलन ये मइया ,
मइया के जीओ जेठ पुतवा ये मइया ।

मइया भउजी के मरो जेठ मइया ये मइया ,
मइया लगलो असरवा तोड़ी देलन ये मइया ।

अर्थ

शीतला माता के नैहर में खीर सींझ रही है । उसकी सुगंधि श्वसुरार में माता को लगी । उसने सोंचा कि किस बहाने नैहर जाऊँ ? अत: वह हाथ में उपला ले कर आग मांगने के बहाने चली । वहाँ दरवाजे पर पहुँचते ही चौखट के नजदीक ढकनी पर पैर पड़ जाने से गिर गई और घूटना फूट गई ।

माता की भाभी बड़े घमण्ड से उठी और चुल्हे से खरोर कर आग देने लगी -कुछ नहीं पूछा । माता को क्रोध आया तो वह गाली देने लगी । उस । अपना बड़ा भाई तो जीवित रहे परंतु भाभी का बड़ा भाई मर जाय क्योंकि उसने इसकी आशा तोड़ दी है-मानव सुलभ कमजोरी की अभिव्यक्ति ।

(४)

मिलहूँ का सातो बहिनियाँ ये मइया, ये बहिनियाँ ये मइया ।
मइया मिलि-जुलि बगिया देखन जायब ये मइया ।

का देखूँ बगिया के रूपवा ये मइया ये सरूपवा ये मइया ।
मइया पाने आउ फुलवा बगिया भरल ये मइया ।

मइया ठेकुआ-कसरवा बगिया भरल मइया ।
मइया धुपवे-सेनुरवा बगिया भरल मइया ।

मइया बलका-सेवकिया बगिया भरल मइया ॥

अर्थ

सातो बहने (सप्तमातृकाएँ-शीतला माता) मिलकर बाग देखने चली । बगीचे का सेवक कहता है कि हे माता, बाग का रूप और स्वरूप क्या देखोगी ? बाग तो पान और फूल से भरा है । ठेकुआ-कसार (पक्वान एवं लड्डू) से भरा है और धूप-सिन्दुर से भरपूर है । बालक-सेवक यहाँ प्रस्तुत है । यह गीत प्रायः गोटी (चेचक) होने पर रोगी के नजदीक धूप-दीप दिखाकर गाया जाता है ।

(५)

हूरियर विरवा हूरियर विरवा भूइया लोटे डाढ़ हे ,
ताहि तर देवी मइया खेले जुगवा सार हे ।

गइया रउरू घेरले रहगीरवा लेले जाय हे ,
जाय देहूँ, जाय देहूँ गइया हमार हे ।

जइहें देवी मइया, लइहें छोड़ाय हे ॥

अर्थ

हरे वृक्ष की सघन डाली जमीन को स्पर्श कर रही है उसी वृक्ष के नीचे देवी माता जुआ खेल रही है । किसी भक्त की गाय को बटमार (राहगीर) छेंक कर लिए जा रहा है । उसकी सूचना मिलने पर वह कहता है कि मेरी गाय को जाने दें । देवी माता जायेंगी और गायों को छुड़ा लावेंगी ।

(६)

विन्ध्य के पहार पर विराजई विन्ध्य बसिया -
हथवा सोभई त्रिसूल कमान ।

दुनिया लोग बरजई, मत जाहू कमरू के देस -
कमरू के देसवा सात सौ जोगिनिया, रखी लेतो हिरदा लगाय ।

कमरू के देसवा मइया, सेनुरा बहुत ,
रही जयबऽ मइया सेनुरा लोभाय ।

अर्थ

विन्ध्याचल के पहाड़ पर विन्ध्यवासिनी देवी निवास करती हैं, उनके हाथ में कमान और त्रिशूल शोभ रहा है । वह कामरू देश में जाना चाहती है तो दुनिया के लोग मना करते हैं । वहाँ सात सौ जोगिनियाँ रहती है जो हृदय से लगाकर सदा के लिए रोक लेंगे । वहाँ सिन्दुर भी अधिक है जिसकी लालच में वहाँ रह जायगी ।

(७)

बारह ही बरस मइया सेवलूँ चरनियाँ, कवहूँ नाही माता देलऽ दरसनियाँ ।
कउन फूल आसन, कउन फूल बासन, कउन फूल माता तोहर अरमनियाँ ?
बेली फूल आसन, चमेली फूल बासन, ओड़हूल फूल दइया मोर अरमनियाँ ।

अर्थ

सेवक कहता है कि हे माता, मैंने बारह वर्षो तक तुम्हारे चरण की सेवा की परंतु आपने कभी अपना दर्शन नहीं दिया । हे माता किस फूल का आसन लगाती हैं और किस फूल का वस्त्र धारण करती हैं तथा किस फूल को ग्रहण करती हैं ? माता कहती है कि बेली फूल का आसन लगाती हूँ और चमेली फूल का वस्त्र धारण करती हूँ तथा ओड़हुल फूल को ग्रहण करती हूँ ।

(८)

नइहरा से ससुराल चलऽ दुर्गा मइया हे ,
लाली-लाली डोलिया मइया बतीसो कहार हे ।
लगिओं में गेलो मइया सबुज ओहार हे ,
मत तुहूँ रोवऽ मइया, मत तुहूँ कानऽ हे ।

संगवा में जइथुन तोरा भैरो छोटा भाई हे,
जने-जने जयबऽ मइया बगिया लगा के जइहँऽ ।

नगर के बलकवा मइया करीहँऽ रछवार हे,
गोदी के बलकवा मइया करीहऽँ रछवार हे ।

अर्थ

दुर्गा माता अपने नैहर से ससुराल जा रही है । लाल-डाल डोली है, उसमें सब्ज रंग का ओहार (पर्दा) लगा दिया गया है जिसके ढोनेवाले बत्तीस कहार हैं । स्वभावतः मयके से ससुरार जाते समय स्त्रियाँ रोने लगती हैं । पड़ोस के लोग समझते हैं । कहते है कि हे माता, रोवें नहीं मयके छूटने से विलाप नहीं करें । आपके साथ छोटा भाई भैरों जी जायेंगे । भक्त जन अनुरोध करते हैं कि जिधर से जायेंगी उधर हे माता, हरा भरा बाग-बगीचा लगाती जायेंगी गाँव के, नगर के बालकों की रक्षा करती रहेगी । गोद के छोटे शिशु की रक्षा करेंगी ।

(९)

छोटी-मुटी नीमिया गछिया भूइयाँ लोटे डाढ़ गे माई ।
ताही तर शीतली मइया, खेले जुगवा-सार गे माई ।

होवे दे बिहान नीमियाँ, जरी से कटायब गे माई ।
तोहरे डहुँगिये नीमियाँ घोरबो घोरान गे माई ।

अर्थ

नीमवृक्ष का पौधा अभी छोटा ही है परंतु उसकी डाली जमीन तक फैल गई है । अतः वहाँ शीतलता बनी रहती है । वही शीतला माता सदा जुआ खेला करती है । अतः उनका परिवार क्रोधाभिभूत हो कर नीमवृक्ष से कहता है कि सुबह होने दे, तुम्हे जड़-मूल से कटा दूँगा । और तुम्हारी डाली से घोरान (घेरा) लगा दूँगा । नीम-वृक्ष का पौधा न रहेगा न शीतला माँ वहाँ जुआ खेलेगी ।

(१०)

सींक चीरे चलली देवी मइया मइया के गलिया,
सीकिया चीरली भर डलिया, अहो मइया ।

सीकिया-चीरिये चीरी बरूआ बनवलूँ,
डलवा बनवलूँ सतरंगी, अहो मइया ।

से डलवा रखबइन देवी चौरी ये मइया,
सेन्दुर भरल राउर डलवा, अहो मइया।

खँसी पठिया भरल, इयरी-पिअरी भरल,
राउर डलवा अहो मइया।

अर्थ

भक्तिन देवी माँ की गली में सींक चीरने चली। सरकंडे की मूँज को चीर कर डाली भर ली गई। सींक को चीर कर पतला (बरूआ) बना लिया गया और विविध प्रकार के सात रंगों से रंग लिया गया। उससे सप्त रंगी डाली बनाई गई। श्रद्धालु भक्तिन कहती है कि इस डाली को देवी माता की चौरी पर रखेगी। इसमें सिंदुर रखेगी। लाल-पीला वस्त्र और बलि के लिए खँसी-पाठी रखी जायगी। इस पर भरी डाली से देवी माता की पूजा की जायगी।

(११)

सोने के खटोलवा पर सुतल हवे लड़िकवा ये नौलाखन देवी,
बबुआ पर सातो भइया लोभायल ये नौलाखन देवी।

बबुआ के बघइया जोड़ा खँसी-चढ़इबो ये नौलाखन देवी,
रहे देह बंस के निसान ये नौलाखन देवी।

बबुआ के बधइया जोड़ा नचवा नचइबो ये नौलाखन देबी,
रहे देह बंस के निसान ये नौलाखन देवी।

अर्थ

सोने की खाट पर बच्चा सो रहा है जिसे देखकर नौलखा माँ ललचा गई। सातो माताओं को लोभ हो गया। बच्चा की माँ कहती है कि बच्चा की बधाई में जोड़ा खसी की बलि देगी। अत: वंस की निशानी के रूप में इस बच्चे को छोड़ दें। इस की बधाई में जोड़ा नाच नचा दूँगी। हे नौ लाखा देवी, वंस परम्परा के लिए इसे छोड़ दें।

(१२)

केई मोर सोचले दिन रे सुदिनवा, केई मोरा धयले नेयार ?
बाबा मोरा सोंचले दिन रे सुदिनवा, भइया मोरा धयले नेयार, बेटी मोर फूलती हे नऽ।

केई मोरा देलन गाय रे भइसिया, केई मोरा देलन तरूआर ?
बाबा मोरा देलन गाय रे भइसिया, भइया मोरा देलन तरूआर, बेटी मोरा फूलमती हे नऽ।

हँकड़इत जाय गाय रे भइसिया, चमकइत जाय रे तरूआर ।
केई मोरा देलन लहरा-पटोरवा, केई मोरादेलन खोइछा धान ?

अम्मा मोरा देलन लहरा पटोरवा, भउजी मोरा देलन खोइछा धान ।
उड़इत जाहे लहरा-पटोरवा, गड़इत जाहे खोइछाधान, बेटी मोरा फूलमती हे नऽ ।

भइया जे कहले काज-परोजन, बाबा कहले छव मास,
अम्मा कहले नित उठि अइहँ,भउजी कहले दूरन्देस बेटी मोरा फूलमती हेनऽ रेदना पसार ।

अर्थ

मगध के लोकजीवन में सप्तमातृकाओं मे सबसे छोटी का नाम फूलमती है । उसके माध्यम से लोकजीवन में द्विरागमन की रीतिका वर्णन इस देवी-गीत में हुआ है । फुलमतीके द्विरागमन की तिथि निश्चित हो जाने पर वह कहती है कि किसने मेरे गवने की तिथि पर विचार किया है और किसने नेयार का दिन निश्चित किया है । वह अनुमान करती हे कि पिताजी ने सोचकर सुन्दर दिन निश्चित किया है और भाई ने नेयार का समय निर्धारित किया है । इस प्रकार निश्चित तिथि पर उनका द्विरागमन सम्पन्न हुआ । विदाई में किसने गाय भैंस दी और किसने ने तलवार दी ? पुनः वह सोंचती है कि पिताजी ने गाय भैंस दी और भाई ने तलवार दी है । गाय-भैंस हँकड़ते जा रही है और तलवार चमकती जा रही है । पुनः फूलमती विचार करती है कि किसने लहंगा-पाटम्बर दिया है और किसने खोइछे में धान दिया है ? अम्मा ने लहंगा-पाटम्बर दिया है और भाभी ने खोइछे में धान दिया है । लहंगा-पाटम्बर उड़ते जा रहा है और खोइछे का धान गड़ते जा रहा है । बिदा के समय भाई कहते हैं कि यहाँ कार्य और प्रयोजन होने पर आते रहना, पिताजी कहते हैं कि छः महीने पर अवश्य आना, माता कहती है कि बेटी फूलमती, तुम नित्य उठकर भेंट कर जाना परंतु भाभ कहती है कि दूर देस से कैसे आवेगी ? इस देवी लोकगीत में लोकाश्रित पारिवारिक जीवन में बेटी के प्रति कितनी ममता और कैसा संम्बध रहता है, यर्थाथतः अभिव्यक्त हुआ है । लोकरीति और रिवाज का चित्रण-

(१३)

कने हइन बाँस-बसवरिया, कने हइन केदली के फुलवा ,
कने हइन मइया के मंदिलवा ?

पूरूब हइन बाँस-बसवरिया, पछिम हइन केदली के फुलवा ,
दखिन हईन मइया के मंदिलवा ।

कइसन हइन बाँस-बसवरिया, कइसन हइन केदली के फुलवा ,
कइसन हइन मइया के मंदिलवा ।

हरिअर हइन बाँस-बसवरिया, लाल हइन केदली के फुलवा ,
गहगह करऽ हइन मइया के मंदिलवा ।

अर्थ

श्रद्धालु पूछता है कि बाँस की बाँसवाड़ी कहाँ है और केदली का फूल कहाँ है ? और माता का मंदिर कहाँ है ? गाँव से पूरब बाँस-बाड़ी कैसी है, पच्छिम केदली का फूल फूला है तथा दक्षिण में माता का मंदिर है । बाँस-बाड़ी कैसी है, केदली का फूल कैसा है और माता का मंदिर कैसा है ? बाँस-बाड़ी हरी है, केदली का फूल लाल है और माता का मंदिर गह-गह (भरापूरा) कर रहा है ।

(१४)

कथिए के सीतली मइया, कथिए के ढारल हो -
कथिए लेई के ना मइया करेली सिंगरवा ।

सोने के सीतली मइया, सँचवा के ढारल हो -
ऐनकवा लेई के ना मइया करेली सिंगरवा ।

अर्थ

श्रद्धालु पूछता है कि शीतला माता किस चीज की बनी है और कैसे साँचे में ढाली गई है ? और क्या लेकर श्रृंगार कर रही है ? उत्तर मिलता है कि शीतला माता सोने की है और साँचे में ढाली हुई है तथा ऐनक लेकर माता श्रृंगार कर रही है ।

(१५)

पेन्हीयो के लेहूँ मइया जी, सेनुरवा हे मइया, झीली-मीली मइया करहूँ सिंगरवा ।
सिंगरवा कैले मइया जाथिन, पटनवा कपेल मचले जाथिन ।
पृथिनियाँ देखन जाथिन मंडपिया देखन मइया जाथिन बलकवा किरपा करीहँऽ ।

अर्थ

देवी माता वस्त्राभूषण पहनकर, माँग में सिन्दूर लगाकर झिल-मिलाते श्रृंगार कर जा रही है, पटना को प्रकम्पित करते जा रही है, सम्पूर्ण पृथ्वी को अवलोकन करने जा रही है । देवी मंडप देखने जा रही है । श्रद्धालु कहता है कि बालक पर कृपा करते जाना ।

(१६)

पेन्हीये में लेहूँ मइया ये हो टिकुलिया, मइया सोभा चनरहरवा ।
बाइसो रंग के बजवा, छतीसो रंग के बजवा, नचइते आवथीन भैरो मइया ।

पुत्र के मइया लहसी गोड़वा गिर हई, बाँझी करऽ हई गुमान ।
पुत्र के मइया के भाते-पुत उगयबई, बाँझी गरदे लोटयबई ।।

अर्थ

माता ने वस्त्राभूषण पहन लिया, मांग में सिन्दुर लगा लिया, गले में चन्द्रहार शोभ रहा है। साथ में बाइस रंग के बाजे बज रहे हैं, छतीस प्रकार के बाजे बज़ रहे हैं। भैरो भैया भी साथ में नाचते आ रहे हैं । यह देखकर पुत्रवती माँ प्रसन्न होकर पैर पड़ रही है । बाँझ औरत भी गौरवान्वित हो रही है कि अब उसकी गोद भरेगी । देवी माता इन्हें देखकर कहती है कि पुत्रवती माँ को अन्न-धन से सम्पन्न करूँगी और बांझ औरत को धूल-धुसरित कर दूँगी— अर्थात् पुत्र दूँगी जो धूल में खेलेगा जिसे गोद में उठाने पर माँ भी गर्द से लेट जायेगी ।

(१७)

नन्हीं-नन्हीं ओरहुल गछिया, भूइयाँ लोटे डाढ़ मइया हे ।
ताही तरे साते बहिनियाँ, खेले जुगवा सार, मइया हे ।

कोई रे देवे अंगुठी मुनरिया, कोई गले हार, मइया हे ?
कोई रे देवे पाकल पनवाँ, कोइे बिरवा लगाई, मइया हे ।

कोई रे देवे इयरी-पियरी, कोइे निमिया डार, मइया हे ।
कोई रे देवे लाल बछेड़िया, जाय गंगा पार, मइया हे ।।

अर्थ

ओड़हुल फूल का पौधा है तो छोटा परंतु उसकी डाली जमीन पर पसर गई है। उसी के नीचे सातो बहने जुआ खेल रही हैं । कोई अंगूठी और मुद्रिका दे रहा है। कोई गले की हार दे रहा है । कोई पकल पान दे रहा है तो कोई उसका बीड़ा लगा रहा है । कोई श्रद्धालु भक्त पीला-पीला वस्त्र दे रहा है तो कोई नीम की हरी-शीतल डाल ही उपहार में प्रस्तुत कर रहा है । कोई लाल घोड़ी दे रहा है जिस पर गंगा पार किया जा सकता है। इस प्रकार प्रस्तुत गीत में सप्तमातृकाओं के प्रति श्रद्धा-भक्ति का वर्णण हुआ है ।

हरिअर हइन बाँस-बसवरिया, लाल हइन केदली के फुलवा ,

गहगह करऽ हइन मइया के मंदिलवा ।

अर्थ

श्रद्धालु पूछता है कि बाँस की बाँसवाड़ी कहाँ है और केदली का फूल कहाँ है ? और माता का मंदिर कहाँ है ? गाँव से पूरब बाँस-बाड़ी कैसी है, पच्छिम केदली का फूल फूला है तथा दक्षिण में माता का मंदिर है । बाँस-बाड़ी कैसी है, केदली का फूल कैसा है और माता का मंदिर कैसा है ? बाँस-बाड़ी हरी है, केदली का फूल लाल है और माता का मंदिर गह-गह (भरापूरा) कर रहा है ।

(१४)

कथिए के सीतली मइया, कथिए के ढारल हो -
कथिए लेई के ना मइया करेली सिंगरवा ।

सोने के सीतली मइया, सँचवा के ढारल हो -
ऐनकवा लेई के ना मइया करेली सिंगरवा ।

अर्थ

श्रद्धालु पूछता है कि शीतला माता किस चीज की बनी है और कैसे साँचे में ढाली गई है ? और क्या लेकर श्रृंगार कर रही है ? उत्तर मिलता है कि शीतला माता सोने की है और साँचे में ढाली हुई है तथा ऐनक लेकर माता श्रृंगार कर रही है ।

(१५)

पेन्हीयो के लेहूँ मइया जी, सेनुरवा हे मइया, झीली-मीली मइया करहूँ सिंगरवा ।
सिंगरवा कैले मइया जाथिन, पटनवा कपेल मचले जाथिन ।
पृथिनियाँ देखन जाथिन मंडपिया देखन मइया जाथिन बलकवा किरपा करीहँऽ ।

अर्थ

देवी माता वस्त्राभूषण पहनकर, माँग में सिन्दूर लगाकर झिल-मिलाते श्रृंगार कर जा रही है, पटना को प्रकम्पित करते जा रही है, सम्पूर्ण पृथ्वी को अवलोकन करने जा रही है । देवी मंडप देखने जा रही है । श्रद्धालु कहता है कि बालक पर कृपा करते जाना ।

(१६)

पेन्हीये में लेहूँ मइया ये हो टिकुलिया, मइया सोभा चनरहरवा ।
बाइसो रंग के बजवा, छतीसो रंग के बजवा, नचइते आवथीन भैरो मइया ।

पुत्र के मइया लहसी गोड़वा गिर हई, बाँझी करऽ हई गुमान ।
पुत्र के मइया के भाते-पुत उगयबई, बाँझी गरदे लोटयबई ॥

अर्थ

माता ने वस्त्राभूषण पहन लिया, मांग में सिन्दुर लगा लिया, गले में चन्द्रहार शोभ रहा है । साथ में बाइस रंग के बाजे बज रहे हैं, छतीस प्रकार के बाजे बज़ रहे हैं। भैरो भैया भी साथ में नाचते आ रहे हैं । यह देखकर पुत्रवती माँ प्रसन्न होकर पैर पड़ रही है । बाँझ औरत भी गौरवान्वित हो रही है कि अब उसकी गोद भरेगी । देवी माता इन्हें देखकर कहती है कि पुत्रवती माँ को अन्न-धन से सम्पन्न करूँगी और बांझ औरत को धूल-धुसरित कर दूँगी— अर्थात् पुत्र दूँगी जो धूल में खेलेगा जिसे गोद में उठाने पर माँ भी गर्दे से लेट जायेगी ।

(१७)

नन्हीं-नन्हीं ओरहुल गछिया, भूइयाँ लोटे डाढ़ मइया हे ।
ताही तरे साते बहिनियाँ, खेले जुगवा सार, मइया हे ।

कोई रे देवे अंगुठी मुनरिया, कोई गले हार, मइया हे ?
कोई रे देवे पाकल पनवाँ, कोइे बिरवा लगाई, मइया हे ।

कोई रे देवे इयरी-पियरी, कोइे निमिया डार, मइया हे ।
कोई रे देवे लाल बछेड़िया, जाय गंगा पार, मइया हे ॥

अर्थ

ओड़हुल फूल का पौधा है तो छोटा परंतु उसकी डाली जमीन पर पसर गई है । उसी के नीचे सातो बहने जुआ खेल रही हैं । कोई अंगूठी और मुद्रिका दे रहा है । कोई गले की हार दे रहा है । कोई पकल पान दे रहा है तो कोई उसका बीड़ा लगा रहा है । कोई श्रद्धालु भक्त पीला-पीला वस्त्र दे रहा है तो कोई नीम की हरी-शीतल डाल ही उपहार में प्रस्तुत कर रहा है । कोई लाल घोड़ी दे रहा है जिस पर गंगा पार किया जा सकता है। इस प्रकार प्रस्तुत गीत में सप्तमातृकाओं के प्रति श्रद्धा-भक्ति का वर्णण हुआ है ।

(१८)

गावहुँ सातो बहिनियाँ, हे सीतला मइया,
सातो आलर, सातो झालर, हे सीतला मइया।
मइया सातो मिलि बगिया देखे जाहुँ, हे सीतला मइया।
का देखूँ बगिया के रूपवा हे सीतला मइया।
मइया सेनुरे टीकुलिये बगिया भरल हे सीतला मइया।

अर्थ

शीतला माता सात बहनें हैं। सातो आलर-झालर युक्त वस्त्र पहनकर बाग में भ्रमण करने जा रही हैं। वहाँ बाग का स्वरूप क्या देखा मानो सिन्दुर-टीकुली से सम्पूर्ण बाग भरा-पूरा है।

(१९)

झारी लेले केसिया, सम्हारी ले ले पटिया,
नौ सौ गलिया तिरपन बज़ार, गे माई।
गोदी बलकवा देखी रहलन लोभाई, गे माई,
छोड़ी देहूँ अहुरी मइया, छोड़ी देहूँ बहुरी।
छोड़ी देहूँ अहे मइया मन के क्रोध, गे माई,
लाली-लाली डोलिया मइया सबुजी ओहार, गे माई।
आगे पाछे लगन मइया बत्तीसो कहार, गे माई,
येही पार गंगा मइया ओही पार यमुना।
बीचे-बीचे पड़ल मइया बालू के रेत, गे माई,
जाही पर सातो बहिनी पड़ले हाहाकार, गे माई।
कहाँ गेलई विमल मलहा, नइयो न लावई, गे माई,
धाबल-धुपल अयले मलहा के माय, गे माई।
अबकी कसुरवा मइया बकसु हमार, गे माई,
हम लेई अयबो मइया हुनरी से हार गे माई॥

अर्थ

देवी माँ ने केश झारकर पटी (मांग) निकाल ली और नौ सौ गली तथा तिरेपन बाजार के लिए चल पड़ी परंतु गोदी के बालक को देखकर उन्हें लोभ हो गया।

उसकी माँ देवी से प्रार्थना करती है कि इस बार आते-जाते मेरे बालक को छोड़ दें. अपने मन से क्रोध को निकाल दें । देवी माँ लाल-लाल डोली के नीले पर्दा में बैठ गई जिसे बत्तीस कहार ढो रहे हैं । रास्ते में गंगा नदी पड़ी, उस पार यमुना नदी है, बीच में बालू की रेती है जहाँ से देवी माँ ने हाहाकार किया- विमल मल्लाह कहाँ गया, नाव नहीं ला रहा है । मल्लाह की माँ दौड़ी-दौड़ी आई और देवी माँ से प्रार्थना करने लगी कि इस बार हमारी गलती माफ कर दें, हम हुनर देश की हार लेकर आऊँगी ।

(२०)

सबके बेरिया निमिया, भयले जुड़ छहियाँ के गे माई ।
हमरा के बेरिया निमिया, भयले पतझार गे माई ।
होवे दे बहिनियाँ निमिया, पसरे दे डाढ़, गे माई ।
टंगवा बेसाहम निमिया, रोपबो अनार, गे माई ।
जेही तर लगयबो निमिया, पनवा के डाढ़ गे माई ।
पवना जे खइहँऽ मइया सीठिया मेंरइहँऽ गे माई ।
ओही से भीखिया दिहँऽ बलका के माय, गे माई ।
बलका के माय गे माई, बलका के बाप, गे माई ।

अर्थ

दूसरों की बारी आने पर नीमवृक्ष ने शीतल छाया प्रदान की मेरी बारी में नीम के सारे पत्ते झड़ गए। साधिका कहती हे कि हे नीम, सुबह होने दो और अपनी डाली को फैला दो । मैं टांगी खरीदूँगी और जड़ से ही तुम्हें कटवा दूँगी । जड़ से कटवाने के बाद उस जगह पर अनार रोप दूँगी और उसके नीचे पान की लत्ती लगा दूँगी । भक्तिन कहती है कि हे माता पान खाना और सीठी के रूप में हमें भिक्षा दे देना । बालक के रूप में माँ और बाप को भिक्षा दे देना ।

(२१)

छोटी मुटी नीमिया गछिया भूइयाँ लोटे डाढ़ ,
जाही तरे सातो बहिनियाँ खेले जुगवा सार ।
जुगवा खेलइते गे मइया गेलूँ अलसाय ,
केई देवे अंगूठी मुनरिका, केई गलेहार ।
केई दे देवे पाकल पनवाँ बीड़वा लगाय ,
कहाँ सोभे अंगूठी मुनरिका कहाँ गले हार ।

कहाँ सोभे पाकल पनवाँ, बीड़वा गलेहार,
मुखे सोभे पाकल पनवाँ, बीड़वा लगाय।
टूटी जइहें अंगूठी मुनरिका, सूखे गलेहार,
रही जइहें पाकल पनवाँ, बीड़वा लगाय।
हँसते घर जायम मइया खेलते घर जायम ॥

अर्थ

छोटा नीम का वृक्ष है जिसकी डाली जमीन तक लोट रही है। उसी छाया में सातो बहनें जुआ खेल रही है। जुआ खेलते-खेलते वे सब सुस्त पड़ गईं तो कोई अंगूठी-मुद्रिका दे रही है तो कोई गले की हार दे रही है। कोई पके पान का बीड़ा लगाकर दे रही है। कहाँ पर अंगूठी और मुंद्रिका शोभ रही है और कहाँ गलेहार शोभती है ? मुँह में पका पान शोभता है और गला में हार शोभती है। अंगूठी-मुंद्रिका टूट जा सकती है, गले में फूल की हार सूख जा सकती है परंतु मुख का पान रह जायगा। इस प्रकार साधिका हँसते-खेलते अपना घर चली जायगी।

(२२)

देवा घर निपीला रोज अंगनवाँ राउर न जानी ला हे।
माताजी, रोबेले बलकवा के दादी नयनवाँ ढारे लोर हे।
माताजी, मोरो बबुआ लड़िका नदान, लहरिया कइसे अंगेजत हे ?
चुपहुक-चुपहुक बलका के दादी, पटोरवा लोरवा पोछहुँ हे।
माताजी, बबुआ सुतयबो फूलवा सेज, नयनवाँ बीचे रखब हे।
देवा, घर निपीला रोज अंगनवाँ राउर न जानी ला हे।
माताजी, रोवले बलकवा के माय नयनवाँ ढारे लोर हे।

अर्थ

हे देवी, अपना घर नित्य लिपती हूँ परंतु आपका आंगन नहीं जानती हूँ। हे माता, बालक की दादी नयन से आँसू बहा रही है। वह देवी माता से प्रार्थना करती है कि मेरा बालक नादान है, आपकी लहर को कैसे सहन करेगा। देवी माता, बालक की दादी को चुप कराती है, पटोर से आँसू पोछने के लिए कहती है। दादी कहती है कि यह बालक आपका है, मैं इसे फूल की शय्या पर सुलाऊँगी और नयनों के बीच रखूँगी। हे देवी, मैं अपना घर नित्य लिपती हूँ परन्तु आपका आंगन नहीं जानती हूँ। इसलिए मेरी आँखों से आँसू गिर रहे हैं।

कुल देवता के गीत

भारतीय संस्कृति में अनुष्ठान सम्पन्नता के अवसर पर प्राय: तीन प्रकार के देवी-देवता मान्य रहते हैं । (१) परम्परागत शास्त्रीय देव-ब्रह्मा, विष्णु, महेश, लक्ष्मी, सरस्वती, देवी, राम कृष्ण आदि (२) ग्राम्य देवता-देवी, भैरव, डीहवार, ब्रह्मस्थान और सतीथान आदि (३) कुल देवता-भारतीय समाज के परम्परागत संरचनानुसार जातिगत कोटिक्रम स्थापित है । इन सभी जातियों में कुछ विशिष्ठ देवता होते हैं जो वंश परम्परा से पूजित होते आते हैं । उनके पूजनोपचार की विधियाँ भी विभिन्न प्रकार की होती है और तत्सम्बंधी गीत भी भिन्न-भिन्न होते हैं । मगध क्षेत्र की विभिन्न जातियों में प्रचलित कुछ देवताओं के नाम-सोखा, परमेसरी, डाक, फूलडाक, बैमत, बनदेवी, आदि हैं । अनुष्ठान के समय इनके नाम लेकर लोकगीत गाए जाते हैं जिनका कुछ उदाहरण निम्न प्रकार है:-

(१)

अहे ओरिया के तरे बेली रोपब, नेवता पेठायब ,
अहो नेवता पेठायब सोखा देवा काहे मन-वेदील ।

अहे नेवता पेठायब परमेसरी देवा काहे मन वेदील ,
अहे सोने के डलियवा, फुलवा लोढ़ब नेवता पुजायब ।

अहे ओरिया के तरे बेली रोपब, नेवता पेठायब ,
अहे नेवता पेठबइन छतीसो देवा, काहे मन वेदील ।

अर्थ

विवाह के ५, ८, या १० दिन पूर्व से ही संध्या के समय आंगन में बैठकर परिवार और पड़ोस की स्त्रियाँ कुल देवता का नाम लेकर नित्य गीत गाती है । इसके बाद झूमर और आमोद के लिए गालियाँ भी गाई जाती हैं ।

स्त्रियाँ गाती है कि आँगन में ओरी के नीचे बेली का फूल रोपंगी और सोखा देव को आमंत्रण भेजेगी, वे क्यों मनो मालिन्य रखेंगे ? उसी प्रकार वह परमेसरी देव

को आमंत्रित करेगी, सोने की डाली में फूल एकत्रित करेगी और आमंत्रितों की पूजा करेगी । इस प्रकार छतीसो देवता के नाम लेकर अभिमंत्रित किया जाता है ।

(२)

बोलथी सोखा देवा-केकरा घरवा आयब, के मोरा साँझ मनावत ?
बोलथी अनजाने रइया- हमरा घरे आयब, हम रउवा साँझ मनायब ।

साझे देवो सँझउत, पराते देवो बढ़नी ।
बोलथी परमेसरी देवा-केकरा घरवा आयब, के मोरा साँझ मनावत ?

बोलथी अनजानो रइया-हमरा भवना आयब, हम रउवा साँझ मनायब
साँझे देवो सँझउत, पराते देबो बढ़नी— (पुनरूक्तियाँ)

अर्थ

सोखा देव बोलते हैं कि मैं किसके घर आऊँ ? कौन मेरा संध्या बंदन करेगा । फलाँ राय कहते हैं कि हमारे घर आवें मैं आपका संध्या बंदन करूँगा । शाम में साँझबाती दिखाऊँगा, सुबह में बढ़नी से आपका निवास साफ-सुथरा कर दूँगा । इसी प्रकार परमेसरी देव भी अपना प्रश्न करते हैं और अमुक व्यक्ति उनकी संध्या बंदना तथा सफाई करने के लिए प्रस्तुत है । इस प्रकार घर के प्रायः सभी व्यक्तियों के नाम लेकर देवताओं की अभ्यर्थना की जाती है ।

(३)

गोर ही माटी के भीती पड़ोरूँ, लिपतु है अंगना, लिपतु हैं अंगना ।
जहाँ हो परमेसरी देवा खेलतु हैं अँगना, खेलतु हैं अंगना ।।

खेलत-खेलत देवा जीव अनसयले, कुदी परे जमुना, कुदी परे जमुना ।
कइसन वृंदाबनऽ कइसन है जमुना ? हरीयर वृंदाबनऽ सीतल है जमुना ।।

(नोट- इस प्रकार सभी देवों के नाम लेकर अंतिम दो पंक्तियाँ दुहराई जाती हैं)

अर्थ

गोरी मिट्टी से दिवाल को लिप-पड़ोर दिया गया । उस साफ सुथरे आंगन में परमेसरी देव खेल रहे हैं । खेलते-खेलते देव का जी उदास हो गया, थक गए तो जमुना नदी में कूद पड़े । वृंदावन कैसा है और जमुना नदी कैसी है ? वृंदावन हरा-भरा है और जमुना शीतल है । (अतः थके को शीतलता प्रदान करती है ।)

(४)

आज मोरा अइहें सोखा देवा, काई बइठन देबो ?
पान ही गहवर छवाइके, फूल बइठन देबो।

खायके संकर लड्डुवा, दूध अँचवन देबो।
आज मोरा अइहें परमेसरी देवा, काई बइठन देबो ?

पान ही गहबर छवाइके, फूल बइठन देबो।
खाय के संकर लड्डुवा, दूध अँचवन देवो ।।

अर्थ

आज हमारे सोखादेव आवेंगे, उन्हें बैठने के लिए क्या दूँगा ? पान के गहरे आच्छादन के नीचे फूल की सेज बैठने के लिए दूँगा । खाने के लिए सक्कर का लड्डू दूँगा और आचवन के लिए दूध दूँगा । आज हमारे परमेसरी देव आवेंगे । उन्हें बैठने के लिए क्या दूँगा ? पान के गहरे आच्छादन के नीचे बैठने के लिए फूल दूँगा खाने के लिए सक्कर का लड्डू और आचवन के लिए दूध दूँगा ।

(५)

अगे माई पार गंगा केरा चिकनी मटिया,
अगे माई ओही मटिये लिपली सोखादेव चउरिया।

लिप लवली भीतिया, पड़ोरली चउरिया,
अगे माई जीरवा के छंदे-बंदे लगल हई केवड़िया।

अगे माई पार गंगा केरा चिकनी मटिया,
अगे माई ओही मटिये लिपली परमेसरी देव चउरिया ,

लिप लवली भीतिया, पड़ोरली चउरिया,
अगे माई जीरवा के छंदे-बंदे लगल हई केवड़िया।

अर्थ

हे माँ, गंगा पार की चिकनी मिट्टी है, उसी मिट्टी से सोखादेव की चौरी को लिप दिया है । दीवाल को लिपकर चौरी को पड़ोर दिया है । जिस घर में देव की चौरी है उसमें कीवाड़ है जो जीरे की तरह छंद-बंध से सुशोभित है । लोक गायिका आगे कहती है कि गंगा पार की चिकनी मिट्टी से परमेसरी देव की चौरी को लिप

दिया, दीवाल को भी लिपकर चौरी को सुन्दर (पड़ोर) बना दिया है उस घर की कीवाड़ भी जीरे की तरह छंद-बंध से सुन्दर लग रहा है । (सभी देवों के नाम लेकर पुनरूक्तियाँ की जाती हैं)

(६)

बधवा रे छोटे बधवा बधवा घनेहर हे ,
जाही बाध घुरथी सोखा देव ,
नर लोग नीन सोवे हे ।

बधवा रे छोटे बधवा बधवा घनेहर हे ,
जाही बाध घुरथी परमेश्वरी देव ,
नर लोग नीन सोवे हे ।

अर्थ

गाँव के बाहर छोटा सा बाध है, वह बाध घनघोर है । उस बाध में सोखादेव भ्रमण करते हैं जिससे फसल की सुरक्षा बनी रहती है । अतः गाँव के लोग निश्चिंत होकर सोते हैं । इसी प्रकार सभी देवों के नाम लेकर यह लोकगीत गाया जाता है । दूसरी पँक्तियों में भी यही रहती बात है ।

(७)

सोने खड़उवाँ चढ़ी अयलन सोखा देवऽ, हाथ सोवरन केरा साटी ,
ओही साटी मारबऽ भगता अनजानो भगता, हमरो पहुरवा देले जा ।

हमरो पहुरवा देवा हरखी न लेह, हमरो अनजानो बाबू असीसो न देह ,
सोने खड़उवाँ चढ़ी अयलन परमेसरी देव, हाथ सोवरन केरा साटी ।

सोने खड़उवाँ चढ़ी अयलन छतीसो देवा हाथ सोवरन केरा साटी ,
ओही साटी मारबऽ भगता अनजानो भगता, हमरो पहुरवा देले जा ।

हमरो पहुरवा देवा हरखी न लेह, हमरो अनजानो बाबू असीसो न देह ।
संखा बाढ़ो, सम्पति बाढ़ो, बाढ़ो कुल परिवार ,

बाहर बाढ़ो अन-धन-लछमी, भीतर गइया धेनु गाय ।
करमी के लरेजरे बढ़थी अनजानो दुलहा जइसने ओड़हुल केरा फूल ।

पुरइन के पता अइसन बढ़ीथी अनजानो सुगई जइसने बेइलिया केरा फूल ।।

अर्थ

सोने के खड़ाऊँ पर चढ़कर सोखा देव आते हैं । उनके हाथ में सोने की साटी (चाबुक) है । उसी साटी से अपने अमुक भक्त को पीटेंगे, वह हमारा चढ़ावा देता जाय । भक्त कहता है कि हमारा चढ़वा तो आप हर्षित होकर ग्रहण नहीं करते और हमारी संतान को आशीर्वाद भी नहीं देते । इसी प्रकार परमेसरी आदि छतीस कोटि देवताओं के नाम लेकर गीत की पुररूक्तियाँ की जाती है । देवगण आशीर्वाद देते हैं— तुम्हारी संख्या बढ़े (संतान), सम्पति बढ़े और कुल परिवार बढ़े अर्थात् सबों की उन्नति हो । बाहर में धन सम्पति की वृद्धि हो और घर में दूध देनेवाली गाय रहे । (विवाह पूर्व मगध क्षेत्र में गाया जाने वाला यह चर्चित लोकगीत है ।) देवता आगे आशीर्वाद देते हैं कि जिस प्रकार करमी की लती बढ़ती है उसी प्रकार अमुक दुलहा (वर) बढ़े । उसका सौन्दर्य और सुगंध ओड़हुल (जपापुष्प) के पुष्प की तरह सर्वत्र फैलता रहे । उसी प्रकार उसकी अमुक पत्नी पुरइन (कमल) के पत्ते की तरह फैलती जाय और उसका यश बेली के फूल की सुगंध की तरह गमकता रहे ।

(८)

सातो ही घोड़वा देवा सातो असवार,
अगिला ही घोड़वा देवा सोखा असवार,

घोड़वा चढ़ले देवा करथी पूछार,
कवनी अवासे-बासे सेवका हमार।

कहाँ पयबऽ संकर लाड़ू, कहाँ पयबऽ दूध ?
कहाँ पयबऽ लील-बछेड़िया, जयबऽ बड़ी दूर।

हलुअइया घरे संकर लाड़ू , अहिरा घरे दूध,
सेवका घरे लील बछेड़िया, जयबऽ बड़ी दूर ॥

(नोटः-सभी देवताओं के नाम लेकर यह सारी पुनरुक्तियाँ की जाती हैं)

अर्थ

सात घोड़े पर सात लोग सवार हैं । आगे के घोड़े पर सोखादेव सवार हैं । घोड़ा पर चढ़े देवता पूछ रहे हैं कि किस निवास स्थान में हमारा सेवक रहता है ? कहाँ शक्कर का लड्डू मिलेगा और कहाँ दूध मिलेगा और कहाँ पर तेज चलनेवाली छोटी घोड़ी मिलेगी जिससे दूर स्थान पर पहुँचा जा सके । उत्तर मिलता है कि हलवाई के घर पर शक्कर का लड्डू मिलता है, ग्वाले के घर दूध रहता है और भक्त, सेवक के घर तेज चलनेवाली छोटी घोड़ी मिलेगी जिससे दूर जाया जा सकता है ।

(९)

सातो घोड़वा देवा सातो असवार, घोड़वा चढ़ले देवा करथी पुकार ।
ऊँची कुरीयवा देवा, पुरुब दुआर, अरे बाजे मंजीरवा देवा उठे झंझकाल ।

सातो घोड़वा देवा सातो असवार, घोड़वा चढ़ले देवा करथी पुकार ।
घोड़वा चढ़ले देवा करथी पुकार, अरे कउनी अवासे-बासे सेवका हमार ?

हाथे लोटीयवा देवा, पहिरले चीर, ओही देखूं अहो देवा सेबका तोहार ।

अर्थ

सात घोड़े पर सातो देवगण सवार हैं । घोड़ पर चढ़े वे पुकार रहे हैं, पूछ रहे हैं कि हमारा सेवक कहाँ है । उत्तर मिलता है कि ऊँचा महल है, पूरब की ओर दरवाजा है, वहाँ मंजीरा बज रहा है और वातावरण झंकृत है । पुनः पूछते हैं कि हमारे सेवक का निवास कौन है । उत्तर है कि हाथ में लोटा (पात्र) है और चीर धारण करनेवाला आपका सेवक वहाँ देखें ।

(१०)

कुश के चटइया चढ़ी बोलथी सोखा देवा फुल बिनु निंदियो न होय ।
जउन देसे अहो देवा, फुलवा फुलायल, ओही देस बघवा बहुत ।
बघवा के मारब बघिनिया राड़ होयत, डमरू बजाई फुलवा लोड़ब ।

अर्थ

कुश की चटाई पर चढ़कर सोखा देव कहते हैं कि फूल की सेज के बिना नींद नहीं आती । भक्त कहता कि हे देव जिस देश में फूल फुलाता है, उस देश में बाघ बहुत रहता है । देवता कहते हैं कि बाघ को मार दूँगा और बाघिन राँड़ हो जायेगी-दुखी रहेगी तो डमरू बजाकर फूल तोड़ लूँगा ।

(११)

ये कोपी-कोपी बोलथी सोखा देवा ,
रउरी माड़ो जलवा लगीये गेलो ,
मकरी बिआई गेलो ।

हँसी-हँसी बोलथी अनजानो रइया,
रउरी चउरी चनन पड़ोरी देबो,
घीव ठरकाई देबो, फुलवा छितराई देबो ।

ये कोपी कोपी बोलथी परमेसरी देवा
रउरी माड़ो ...... पुनरुक्तियाँ

अर्थ

क्रोधित होकर सोखादेव बोलते हैं कि तुम्हारे मण्डप में जाला लग गया है, उसमें मकड़ी ने बच्चा दे दिया है । हँस-हँस कर अमुक राय कहते हैं कि आपकी चौरी चन्दन से पड़ोर दूँगा और उस पर घी ढरका दूँगा तथा फूल चढ़ा दूँगा । इसी प्रकार एक-एक-कर सभी देवों के नाम लेकर गीत की पुनरुक्तियाँ की जाती है ।

(१२)

नउवा न नर भेजो ब्राह्मण सोपारी भेजो ,
अहो नेवता पेठयबइन सोखादेवा काहे मन बेदील ।

डोलिया कहार देवो, सबुजी ओहार देबो ,
लग जइहें बतीसों कहार, लहसी देवा मड़उवा अइहें ।
(पुनरुक्तियाँ)

अर्थ

नाई नौकर और ब्राह्मण के साथ सुपारी भेज देंगे और सोखादेव को आमंत्रण भेजेंगे, वह क्यों उदास रहते हैं ? आने के लिए डोली और कहार भेज देंगे । डोली में सब्ज रंग का पर्दा लगा रहेगा जिसमें बतीस कहार लगे रहेंगे । इस प्रकार प्रसन्न चित्त होकर देव गण हमारे मण्डप में पधारेंगे ।

(१३)

लीली मटिया भीती पड़ोरलूँ गोबरा लीपतु हैं अंगना ।
तहाँ चलि अयलन गोरइया बाबा खेलतु हैं अंगना ।

कइसन हवे वृदावन, कइसन है जमुना ?
हरिअर लागे वृदावन, सीतल है जमुना ।।

अर्थ

लाल मिट्टी से दिवाल पड़ोर दिया और गोबर से आँगन लीप दिया । वहाँ गोरया बाबा आ गए और आंगन में खेलने लगे । बृदावन कैसा है ? और यमुना कैसी है ? बृन्दावन हरा है और यमुना नदी शीतल है ।



विविध पर्व-त्योहार सम्बंधित देवगीत

धर्म प्रधान देश भारत में पर्व-त्योहार की अधिकता के कारण यहाँ की संस्कृति बहुरंगी हो गई है । कोई ऐसा सप्ताह नहीं जब देश के किसी कोना में बड़ा धार्मिक अनुष्ठान न हो रहा है । छोटे-मोटे पर्व तो सर्वत्र होते ही रहते हैं । मगध और यहाँ के ग्रामवासी तथा बनवासी में कोई भी पर्व बिना लोक गीतात्मक अनुष्ठान के सम्भव नहीं । गंगा स्नान करने जाते हों, या सर-सरिता सरोवर में स्त्रियों की जमात स्नान करने जाती हो । तुलसी के पौधे में जल डालती हों, लोकगीत अवश्य गाया जायगा । प्रकृति पूजा (नदी, बाढ़, पहाड़, वृक्षादि) में ही नहीं विष पूजा (सर्प पूजा, नाग पंचमी) में भी गीत आवश्यक है । अतः शास्त्रोक्त विधि-विधान के साथ ही लोक प्रचलित रीति-रिवाज का पालन और लोकगीतों का गायन लोक अनुष्ठान का अनिवार्य तत्व है । यहाँ वैसे ही देव गीतों के कुछ उदाहरण मात्र द्रष्टव्य हैं –

तुलसी जी के गीत

कुम्हिला गेलो तुलसी रामऽ बिना, कुम्हिला गेलो तुलसी रामऽ बिना ,
सोने के थारी में गेडुवा लगवली , गेडुवा न जेवे सीरी राम बिना ।

कुम्हिला गेलो तुलसी रामऽ बिनु, रामऽ बिना, भगवान बिना, कुम्हिला...
सोने के झारी गंगाजल पानी, पनियों न पिये सीरी रामऽ बिना, कुम्हिला...

पाँच-पाँच पनवाँ के बिरवा लगौली, बिरवो ने चाभे सीरी रामऽ बिना...
कुम्हिला गेलो तुलसी रामऽ बिना, हो भगवान बिना, कुम्हिला गेलो तुलसी...

अर्थ

राम के बिना तुलसी मुरझा गई । सोने की थाली में भोजन लगाया तो वह राम के बिना भोजन नहीं करती । सोने की झारी में गंगाजल दिया तो वह पीती नहीं । पाँच पान का बीड़ा लगाया लेकिन तुलसी श्री राम भगवान के बिना पान भी नहीं खाती । अतः वह मुरझा गई है ।

नाग पंचमी के गीत

(१)

पनिया के ओरवे में चरऽ हई हो नऽ,
ताहि रे बीचे बसऽ हई नगिनियाँ हो नऽ, ताहि रे बीचे .... ।

नगवा से पूछऽ हई नगिनियाँ हो नऽ,
से हमें जयबो बीजू बन चरनियाँ हो नऽ, से हमें जयबो .... ।

पनिया के ओरे-ओरे चरऽ हई नगिनियाँ हो नऽ,
हमतो पूछली बन, बनसपती हो नऽ ।

से हमरो नगिनियाँ कहाँ गेलई हो नऽ, रामा हमरो .... ।
सावन भदउबा के अलई बूढ़ी बढ़वा हो नऽ, राम ओही में ।

ओही में दहलई नगनियाँ हो नऽ, रामा ओही में,
पनिया के ओरवे ।

अर्थ

नाग के लिए कटोरी में दूध और लावा रखकर स्त्रियाँ गीत गाती है और शून्य रात्रि में उसे छोड़ देती है । लोक मान्यता है कि नाग-नागिन आकर लावा-दूध पी जाती है । गीत का भावार्थ है कि पानी के बीच में नागिन रहती है और किनारे आकर चर जाती है । एक दिन नागिन ने नाग से पूछा कि हम बीजूवन चरने जाऊँगी और वह चली गई । नाग वन वनस्पितियों से पूछते चलता है कि हमारी नागिन कहाँ चली गई ? उसे उत्तर मिलता है कि सावन-भादों में बड़ी बाढ़ आई और उसी बाढ़ में वह बह गई ।



गंगा माई के गीत

(१)

दरसन देहूँ भोरे-भोरे ये गंगा मइया, दरसन देहूँ भोरे-भोरे ....
अपना गंगाजी के चदरा चढ़ायब, फलवा चढ़ायब जोड़े-जोड़े ।
ये गंगा मइया ....

अपना गंगाजी के सेनुरा चढ़ायब, टिकुली चढ़ायब जोड़े-जोड़े ।
अपना गंगाजी के फुलवा चढ़ायब, माला चढ़ायब जोड़े-जोड़े ।
ये गंगा मइया ....

दरसन देहूँ भोरे-भोरे ये गंगा मइया, दरसन देहूँ भोरे-भोरे ।

अर्थ

भक्त-भक्तिन कहती है कि हे गंगा माई, भोर में ही दर्शन दें । अपनी गंगाजी को चादर चढ़ाऊँगी और जोड़े-जोड़े फल-फूल चढ़ाऊँगी । सेविका अपनी गंगाजी को सिन्दुर चढ़ायेगी और जोड़े-जोड़े टिकुली चढ़ावेगी । वह फूल के साथ ही जोड़ा माला पहनावेगी । अतः हे गंगा माई सुबह-सुबह अपना दर्शन दें ।

(२)

भोरे होखत ही उमड़ल लहरिया, दिहीं नऽ दरसन अपन गंगा मइया.... ।
मांगू-मांगू तिरिया कवन फल मांगू, जे तोरा हिरदा में समाय, गंगा..... ।

अपने के मांगिला अवध-सिन्होरवा, भरल, पूरल परिवार, गंगा मइया.... ।
घोड़वा चढ़न के बेटा मांगीली, सुन्नर-पातर, पुतोह, गंगा.... दरसन ।।

रूनकी-झुनकी बेटी मांगीला, पढ़ल पंडितवा दमाद, गंगा.... दरसन ।।

अर्थ

सुबह होते ही गंगा की लहरें उमड़ने लगी । दर्शनार्थी एकत्रित होने लगे । एक स्त्री गंगा से प्रार्थना करती है कि आप मुझे दर्शन दें । गंगा कहती हैं कि हे स्त्री, तुम्हें जो रूचे, वरदान मांग लो । स्त्री कहती है कि मैं अपने लिए अवध का सिन्होरा (सिन्दुर रखने का छोटा मंजूषा) मांगती हूँ और भरा-पूरा परिवार । घोड़ा चढ़ने योग्य पुत्र मांगती हूँ और सुन्दर पतली पुत्रवधू चाहती हूँ । चंचल पुत्री और पढ़ा-लिखा दामाद मांगती हूँ । इस प्रकार कामिनी ने सब कुछ मांग लिया ।

(३)

तनिकी संजोहूँ लहरिया ये गंगाजी–गंगाजी ।
डूबल हे खेतवा डगरिया ये गंगाजी, तनिकी संजोहूँ लहरिया ।।

गाँव में आयल लहरिया ये गंगाजी, तनिकी.... ।
मड़ई गिरल हे, मचान छितरायल, उमड़ल हे चउकठ केवड़िया ।।

ये गंगा जी तनिकी संजोहूँ लहरिया ये गंगाजी.... ।

अर्थ

गंगा नदी में बाढ़ आ गई है, लहरे उफन रही है । तटवासी प्रार्थना कर रहे हैं कि हे गंगा माता, अपनी लहर समेट लें । हमारे खेत पानी से डूब गए हैं, रास्ते दीख नहीं रहे हैं । गाँव तक लहरें उमड़ रही है । अत: अपनी लहर थोड़ी भी समेट लें । हमारी कुटिया गिर गई है । फसल अगोरने का मचान गिरकर पानी मैं फैल गया है । चौखट-कीवाड़ तक लहरें उमड़ रही हैं । अत: थोड़ी अपनी लहरें समेट लें । गंगा बाढ़ से बचाव के लिए आर्त्तनाद ।

(४)

अहे गंगा मइया, सुनहूँ अरजिया हमार ,
जगतारनी, लहर नेवार, अयली सरन तोहार ।

नहि मोरा ससुर दुख, नहि मोरा नैहर दुख ,
नहि मोरा कंत विदेस, कोखिये दुख अयलो पछार ।।

अर्थ

एक बंध्या स्त्री गंगा माई से प्रार्थना कर रही है कि मैं आप की शरण में आ गई हूँ, हे जगतारिणी, अपनी लहर को रोक लें । मुझे कोई दुख नहीं है, श्वसुराल और नैहर में भी कुछ दुख नहीं है । मेरा पति भी विदेश में नहीं है परंतु गोद का दुख मुझे पछाड़ रहा है अर्थात् पुत्रहीन होने से अति दुखी हूँ ।

(५)

गंगा मइया के लहरवा अनूप ,
अजब रूप बिराजे गंगा मइया, बसती मोर घटिया ।

लहरि–लहरि लहरवा दउरे ,
पवना हिलकोरे से झकझोरे, बसती मोर घटिया ।

दूनो दने जंगल विरिछिया ,
अजब सोभे गछिया, बसती मोर घटिया ।।

अर्थ

गंगा माता की लहर विचित्र है । गंगा गजव रूप में सुशोभित हो रही है, वह मेरे घाटपर निवास करती है । गंगा की तरंगे उफन रही है, हवा से हिलोरे उठ रही है । गंगा के दोनों किनार पर वृक्ष है जो अत्यंत सुन्दर लगते हैं । वह गंगा मेरे घाट पर बसती है ।



जाति एवं कर्म सम्बंधी लोकगीत

परम्परागत भारतीय समाज वर्णों एवं जातियों में विभक्त रहा है । कुछ अपवाद को छोड़कर यहाँ विभिन्न जातियों के अलग-अलग पेशा या कर्म बँटे रहे हैं । उनके अनुकूल जातियों के परम्परागत संस्कार भी अगल-अलग दीखते हैं जिनसे जातिगत वैशिष्ट्य एंव उनके पेशों का पता चल जाता है । जाति एवं कर्म सम्बन्धी लोकगीतों में जाति एवं उनके कर्मों की विशेषताओं का परिचय मिलता है । इनमें जातिगत संस्कृति एवं रूढ़ परम्परा के भाव भी वर्त्तमान मिलते हैं । चूँकि देश प्राचीन काल से कृषि प्रधान रहा है और कुटीर उद्योगों का विकास भी मुख्यत: इसी से सम्बंधित हुआ है । अत: इस संवर्ग के लोकगीतों में प्रमुख रूप से कृषि एवं कृषि कर्म तथा सम्बंधित कुटीर उद्योगों पर आधारित तथ्यों का वर्णन मिलता है ।

खेत में धान रोपते, समय सोहनी करते समय, फसल काटते समय पुरुष-स्त्री कंठों से लोकगीतों की कोमल रागिनी फूटती रहती है । जाँता-पीसते समय, धान कूटते समय, घानी पेरते समय, चर्खा-तकली काटते समय, यहाँ तक कि घास गढ़ते समय भी स्त्रियाँ क्रिया लोकगीतों से वातावरण को झंकृत करती रहती है ।

काम के समय गीतों के गाने से कार्य भार का पता नहीं चलता और मनोरंजन होते रहता है तथा कभी-कभी उपदेश भी मिलते रहता है । ये गीत रोपनी, कोड़नी, सोहनी, चर्खा-तकली, कूटनी-पीसनी और जँतसार आदि गीतों के नाम से जाने जाते हैं । इनमें जातिगत पेशा के विशिष्ट भाव वर्त्तमान मिलते हैं । धोबियों, मछुओं मालियों, ग्वालों एवं कोयरियों आदि के संस्कार भाव भी इन क्रियागीतों में मिलते हैं । अत: मैंने ऐसे सारे मगही लोकगीतों को जाति एवं कर्म सम्बंधी लोकगीत के अंतर्गत रखा है । यहाँ यह अवश्य जानलेना चाहिए कि कर्म करते समय गाये जाने वाले लोकगीतों के वर्ण्य केवल कार्य से ही सम्बंधित नहीं रहते बल्कि विविध विषयों का लोकधर्मी एवं लोकसांस्कृतिक समावेश इसमें रहता है जिसमें वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक सम्बंधों (राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि) का वर्णन मुख्य रूप से मिलता है, यहाँ कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं ।

(१)

कर्म सम्बंधी लोकगीत

बेर ही बेर तोरा बरजूँ छयलवा से उखिया के खेत जनी जोतिहँऽ हो राम ।
पेन्हिये-ओढ़िये रामा भेली तइअरिया से चलिये भेली कोलसरिया हो राम ।

जबही पहुँचली रामा ऊख कोलसरिया से देवरा-पापी फेंक मारे अंगेरिया हो राम ।
जाँघ तोरा थाकऊ जवानी घुन लागऊ अरे तोरे अछते देवरा पापी मारे हो राम ।

अर्थ

पत्नी पति से कहती है कि हे मेरे छैला, ईख की खेती मत करो पर तुम तो माने नहीं । मैं पहन-ओढ़कर तैयार हुई और कोलसार गई । जब ईख पेरने के समय कोलसार पहुँची तो पापी देवर ने अंगेरी फेंककर मारने लगा । वह पति को गाली देती कहती है कि तुम्हारी जाँघ थक जाय और जवानी में घुन लग जाय, तुम्हारे रहते पापी देवर ने ईख फेंककर मारा है । पारिवारिक नोंक-झोंक का चित्रण ।

(२)

धोबी के गीत

छियो राम छियो, छियो राम छियो, छियो राम छियो ।
नीमिया के पेड़वा बड़ा नीक लागे जब नीम कौड़िया होय ।

गोहुँमा के रोटिया बड़ी नीक लागे जब घीव दे चुपड़ी होय ।
हो मालिक, धीव दे चुपड़ी होय—छियो राम छियो, छियो राम छियो ।

अच्छा धोबिया बड़ नीक लागे, जब धोवे बगुलवा के पाँख, हो मालिक, धोवे.... ।
लेके रोटिया चली धोबिनियाँ पहुँची गंगाघाट, हो मालिक, पहुँची गंगा घाट ।

बजरा के रोटिया, सरसो के सगिया, धोबिया मगन मन खाय, हो मालिक ,
धोबिया मगन मन खाय । छियो राम छियो, छियो राम छियो ।।

पाछे सकारे आयो धोबिनियाँ, रोटिया लियो चोराय, हो मालिक ,
रोटिया लियो चोराय । छियो राम छियो, छियो राम छियो ।

अच्छा धोबिया बड़ नीक लागे, जब धोबे बगुलवा के पाँख । छियो राम .... ।

अर्थ

नदी या तालाब किनारे धोबी प्पाट पर वस्त्र धोते यह गीता गाता है । इसमें उसकी दीनता, पारिवारिक विक्षोभ एवं हीन भावना के साथ स्वच्छ वस्त्र प्रक्षालन के

प्रति आस्था का भाव व्यक्त हुआ है । 'छियो राम छियो' लोकगीत की ताल-ध्वनि है जो वस्त्र के पिटने के साथ निकलती है । नीम का पेड़ तभी अच्छा लगता है जब उसमें नीमौरियाँ निकल आती हैं । गेहूँ की रोटी बड़ी अच्छी लगती है जब घी में चुपड़ी हुई होती है । हे मालिक, घी में चुपड़ी रोटी अच्छी होती है । उसी प्रकार वह अच्छा धोबी है जो बगुले के पाँख की तरह साफ वस्त्र धोता है ।

धोबिन धोबी के लिए रोटी का कलवा लेकर गंगा-घाट पर पहुँची । वहाँ बाजरे की रोटी के साथ सरसो का साग मिलाकर मग्न हो धोबी खा रहा है । पीछे से जल्दी धोबिन आई और रोटी चुरा ली, हे मालिक, उसने रोटी चुरा ली । फिर भी अच्छा वस्त्र धोवेगा क्योंकि वही धोबी अच्छा कहलता है जो बगुले के पंख की तरह उजला वस्त्र धोता है ।

(३)

मोटे-मोटे लिटिया पकइहें गे धोबिनियाँ, से बिहने जायबउ धोबीघाट।
तार के खोंचड़िया में टिकिया तमकुआ गे, से रखिहें साज के सम्हार।

हथवा में लिहें धोबिन नरियर-नर बोचवा, से मथवा पर लिहे धोबी मोट।
धोबिया के छौड़ा रे, मुड़िया कटौना से चुल्हवा झोंकौना, से हाय धोबी।
बिहने जयबे धोबीघाट।

अर्थ

धोबी अपनी पत्नी से कहता है कि मोटी-मोटी रोटी पकाना, सुबह में धोबी-घाट पर वस्त्र धोने जाना है । तार की खोचड़ी में टिकिया, तम्बाकू आदि सम्हारकर रख लेना । हाथ में तम्बाकू पीने वाला नारियल और नरबोचा लटका लेना और माथे पर धोबी मोट (वस्त्र का गट्ठर) रख चले आना । इस पर धोबिन क्रोधित होकर कहती है कि रे धोबी पुत्र, मुड़कटावन, तुम्हें चुल्हें में झोंक दूँगी, हाय धोबी सबेरे घाट जाओगे ?

नोट :- उक्त दोनों गीत धोबी और उसके पेशे से सम्बन्ध रखते हैं तथा उनकी दीनावस्था से उत्पन्न पारिवारिक नोक-झोंक की स्थिति का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं ।

(४)

सुअर चराने का गीत

संझिया के सुतल गे रहुदी उगलो भला किरिंगिया गे,
भूखलो सुअरिया गे रहुदी खरोटउ भला देवलिया गे,

एतना सुनल गे रहुदी उठले चेहाई भला गे।
अँखिया मंजइते गे रहुदी खोलई सुअरिया भला गे।

पोखरा के पीड़िया के रहुदी सुअरिया ढेंघउलकइ भला गे ।
पूरबे-पछिमे गे रहुदी बइठलई मन-मार भला गे ।

हमरा के अजी सूरूज जी किया विधि लिखलऽ भला जी ।
ओने-सेती आयल रसिया सुअरिया भड़कवले भला गे ।

छोड़ा पुत्ता-लौड़ा-पुत्ता, काहे सुअरिया भड़कवले भला गे ।
ठेंगलो सुअरिया छौड़ापुत्ता, देलक भड़काई भला गे ।

मचिया बइठल तोही मइया गे बठैतिन भला गे ।
लेइयो में लाहूँ गे मइया भखरा सेनुरवा भला गे ।

हमहूँ जे करबउ गे मइया, रहुदी से विअहवा भला गे ।।

अर्थ

हजारीबाग एवं चतरा के जंगलों में निम्नजाति की लड़कियाँ सुअर चराते समय प्राय: यह गीत गाती है । माँ अपनी बेटी रहुदी से कहती है कि शाम से सोई हुई है, किरण फूट गई । बखोर में सुअर देवाल को खरोच रहा है । यह सुनकर रहुदी अचम्भित होकर उठी । आँख मलते वह सुअर खोलने लगी और पोखरे की पीड़िया पर सुअरों को चराने के लिए खदेड़ दिया और मन मारे बैठकर पूरब-पच्छिम की ओर देखने लगी । वह सूर्यभगवान से प्रार्थना करने लगी कि हमारे भाग्य में क्या लिखा है ? यह सोच ही रही थी कि उधर से रसिक आया और सुअरों को भड़का दिया । स्थिर से चरते सुअर इधर-उधर भागने लगे । इसपर उसने गाली के लहजे में कहा कि छौड़ेपुत्ते ने क्यों मेरे सुअरों को भड़काया है ? रसिक ने घर आकर माँ से कहा कि हे मचिया पर बैठी बड़ी माँ मेरे लिए भखरा सिन्दुर ला दो मैं रहुदी से विवाह करूँगा ।

(५)

मुक्कल (जाति संबंधी गीत)

गँजवा पीअइते हो जोगी रहिआ चले अन्हाधुन हो ,
गँजवा के झोंके हो जोगी चलई अन्हाधुन हो ।

मचिया बइठल गे तुहूँ मइया गे बढ़इतिन गे ।
अगे हमारा के लिखल गे मइया, जोगिया-फकीरवा गे ।

अगे हमहू में जैबउ गे मइया, झीकरीपुर सहरवा गे ।
झीकरीपुर सरहरवा गे मइया डेरा हम गिरैबो गे ।

अगे राम-राम जपबो गे मइया, सूरूज हाथा जोड़ि गे ।
जहाँ साँझ बीतती बाबू, डेरवा तू गिरइहँऽ हो ।

गोइठवे जराइये हो बाबू, भभूती लगइहँऽ हो ।
राम-राम जपिहँऽ हो जोगी सूरूज तूँ सेविहँऽ हो ।।

अर्थ

गाँजा पीते योगी तेजी से रास्ता चल रहा है । यह गाँजा के झोंक का प्रभाव है । योगी की संगति के बाद एक युवक को भी योगी बनने की इच्छा हुई । वह मचिया पर बैठी बड़ी माँ से कहने लगा कि हमारे भाग्य में योगी-फकीर बनना लिखा है । अतः हे माँ मैं भी योगियों का देश झीकरीपुर जाऊँगा, वहीं अपना डेरा डालूँगा । वहाँ राम का नाम जपते हुए सूर्य को हाथ जोड़कर प्रार्थना करूँगा । माँ सहर्ष आज्ञा देकर कहती है कि जाओ और जहाँ शाम हो जाय वहीं डेरा गिरा देना और उपला जलाकर शरीर में भभूत लगा लेना । वहाँ राम-नाम जपते सूर्य की उपासना करना ।

(६)

दुसाधों की राह-पूजा के गीत

सँझिया के सुतल गे रूदवा उगलउ किरिंगिया गे ।
अगे सगरी रतिया के रूदवा हँसलऽ खेलय गे ।

अगे भोरे भिनसरवा गे रूदवा नींदिया देलको चाँतिये गे ।
अगे बसिया आंगन गे रूदवा कगवा लाँघी देलको गे ।

एतना जे सुनइते गे रूदवा उठले चेहाइये गे ।
अगे हथवा में लेले गे रूदवा कुस के बढ़नियाँ गे ।

बाढ़े जे लगलई रूदवा ये भला अगनवाँ गे ।
अगे अंगना बढ़ैते गे रूदवा अचरा-खरकलो गे ।

अगे बाबा खउकी, मइया खउकी सँवरो पुतोहिया गे ।
अगे हमरो का अगे रूदवा दूनो कुल हँसवलऽ गे ।

अजी मत सासु बाबा खाऊँ, मत सासु भइया जी ।
अजी हमरो से लेहूँजी सासु भला, किरिअबा जी ।

अजी साते हाथ अजी सासु अरबा खनावहूँ जी ।
अजी साते मन अजी सासु चइलियों जमा करहूँ जी ।

जब तुहूँ अजी सासु लेहुँ किरिअवा जी।
अजी साते मन अजी सासु दुधवा जमा करहूँ जी।

अजी साते मन अजी सासु घिवा जमा करहूँ जी।
जब तुहूँ अजी सासु लेबऽ किरिअवा जी।

अजी साते मन चइलिया जी सासु अरवा में भरहूँ जी।
अजी साते मन दुध्वा जी सासु अरवा में भरहूँ जी।

अजी साते मन घिवा जी सासु अरवा में भरहूँ जी।
जब तुहूँ सासुजी लेबहु किरिअवा जी।

अजी वोलाइयों में लावहूँ जी सासु एक नउनियाँ जी।
एक ओर बइठे जी सासु, ससुर-भइसुरवा जी।

अजी एक ओर बइठे जी सासु नइहर भाई-भतिजवा जी।
जब तुहूँ लेबहुँ जी सासु ये हो किरिअवा जी।

अगिया उठले रे दइयो ये हो धंधकलवा जी।
हथवा जोड़िये रूदवा सूरूज पुकारे जी।

गोड़ तोरा लागूँ सूरूज जी, विनती तोरा करियो जी।
अजी आजू रूदवा अगिया दहन होअई जी।

सत के जे होबई सूरूज जी, करिहँऽ उबरियो जी।
अजी पाप के जो होबई सूरूज जी, जरी छाई करिहँऽ जी।

रंगियो का देहूँ नउनियाँ गोड़ के अरतवा गे।
सात बेर धुरलई गे रूदवा साते बेर निकलले गे।

गोड़ के अरतवा गे रूदवा धूमइलो नहि होयलो गे ।।

अर्थ

दुसाध जाति में राह बाबा (जाति-देवता) की पूजा के समय भक्त प्रज्जवलित अग्नि में पैर देकर पार करता है और वहाँ बैंठी स्त्रियाँ अपनी जाति की सत्ती-साध्वी 'रूदवा' के गीत से पूजा स्थल को धार्मिक भावों से उद्वेलित करती रहती हैं। यह जाति-विशेष में प्रचलित लोकगीत हैं जिससे उनके क्रिया-कलापों का परिचय मिलता है।

सास अपनी पुत्र-वधू 'रूदवा' से कहती है कि शाम को सोई थी और सुबह में सूर्योदय हो गया । सारी रात हँसती-खेलती रही और भोर में तुम्हें नींद दबा गई। बासी आंगन को कौवे लाँघ गए । यह बात सुनकर रूदवा आश्चर्य करते उठी । उसने हाथ में कुश की बढ़नी ले ली और आंगन को बुहारने लगी । आंगन बुहारते समय उसके सर से आँचल खिसक गया । इसपर उसकी सास गाली देने लगी और कहने लगी कि तुम निर्लज हो, मेरे दोनों कुलों का नाम हँसा दिया । रूदवा ने कहा कि हमारे माई-बाप को मत खाएँ, शाप मत दें । आप हमसे क्रिया लेलें (परीक्षा ले लें) सात हाथ लम्बा गद्ढ़ा खुदवा लें । उसमें सात मन लकड़ी की चैली जमाकर दें । जब आप हमारी परीक्षा लेने लगें तो सात मन घी अेर सात मन दूध भी जमा कर लें । सभी गद्ढा में डालें । फिर मेरे ससुर-भैंसुर को एक ओर बैठा दें और एक ओर मेरे भाई-भतीजा को बैठा दें और मेरी अग्नि परीक्षा ले लीजिए । लकड़ी-घी-दूध में आग लगा दी गई । आग धधकने लगी । रूदवा वहाँ उपस्थित होकर सूर्य की ओर हाथ जोड़े प्रार्थना करने लगी–हे सूर्य भगवान आज 'रूदवा' की अग्नि परीक्षा है–अग्निदाह है । यदि मैं सत्यवादिनी होऊँ तो मेरा उद्धार करेंगे । यदि मैं पापी हूँ तो जलकर राख हो जाऊँगी । उसने नाइन से गोड़ में आलता लगवाई और अग्नि में सातबार चली परंतु उसके पैर का (रंग) तनी भी धूमैल नहीं हुआ । इस प्रकार रूदवा अपनी परीक्षा में सफल हो गई ।

(७)

रोपनी गीत

सात ही भइया के एक चाँनो बहिनी, से आई गेलई अचके नेअरवा रे दइयो ,
के मोरा धरले दिन रे सुदिनवाँ, से के मोरा धरले नेयरवा रे दइयो ।

बढ़का भइया धरले दिन रे सुदिनवाँ, से छोटका भइया धरले नेअरवा रे दइयो ।
के मोरा दिहले गहया रे भइसिया, से के मोरा देलन खोइछा धनवाँ रे दइयो ।

भइया मोरे दिहले गइया रे भइसिया, से भउजी मोरा देलन खोइछा-धनवाँ रे दइयो ।
के मोरा दिहले लाली-लाली डड़िया, से के देलन सबुजी ओहरवा रे दइयो ।

बाबा मोरा दिहले लाली-लाली डड़िया से मइया दिहले सबुजी ओहरवा रे दइयो ।

अर्थ

सात भाइयों के बीच एक 'चाँनो' बहन थी । उसका अचानक गवना कराने की सूचना आ गई । वह सोचती है कि इतनी जल्द किसने दिन निशिचित कर दिया और किसने नेयार (सब सामानादि) की तैयारी कर दी । बड़े भाई ने सुदिन निश्चित कर

दिया और छोटे भाई ने सामानादि की तैयारी कर दी । किसने दान में गाय-भैंस दी और किसने हमारी खोइछा में धान भर दिया। भाई ने गाय-भैंस दी और भाभी ने खोइछा में धान दिया । किसने लाल-लाल डोली दी और किसने उसका पर्दा (ओहार) दिया । पिताजी ने डोली दी और माता ने नीला पर्दा लगा दिया ।

(८)

सासु के इरखे हम घर लिये चलली से सान्ही में से निकलल गेहुमन सपवा रे दइयो ।
मचिया बइठल तुहूँ सासुजी बठैतिन से सान्ही में से निकलई गेहुमन सपवाँ रे दइयो ।

चुप रहूँ-चुप रहूँ पुतहु बहुरिया से येहू हवऽ बामी मछलिया रे दइयो ।
घर ही बनइहँऽ घर ही में खइहँऽ से सोई रहऽ अपनी महलिया रे दइयो ।

हर जोति अयले कुदारी फारी अयले से देहरी बइठले मनवाँ-मार हई रे दइयो ।
सब के तो देखली महया घर-घरू अरिया से पतरी तिरिअवा कहाँ गयले रे दइयो ।

पतरी तिरिअबा बाबू बड़ा रे गुमनियाँ से सुतल होइहें अपनी महलिया रे दइयो ।
कटियों में लेहूँ बाबू रेड़ के छेकुनियाँ सोवले तिरिअवा उठा लावहुँ रे दइयो ।

एक छेकुनी मारले दूसर छेकुनी मारले से तीसरे में करवो न फेरई रे दइयो ।
मइया जे हंहूँ तुहूँ काई हम करीवऽ से मरले तिरिअवा पिटवला रे दइयो ।

अर्थ

पुत्र वधू सास के डर से घर लिपने चली तो कोठी के कोने से गेहुमन साँप निकला । उसने सम्मानित सास से कहा कि सान्ही से गेंहुमन साँप निकल रहा है । सास ने कहा कि पुत्रवधू, चुप रहो, वह बामी मछली है । उसे घर में बनाकर घर में ही खा जाओ और अपने महल में सो जाओ । उसका पति हल-कुदाल चलाकर आया और मन मलीनकर बैठ गया । पुत्र ने माँ से पूछा कि सभी को तो घर और रसोई घर में देख रहा हूँ परंतु मेरी पतली पत्नी कहाँ गई है ? माँ ने कहा कि बेटा, पतली पत्नी तुम्हारी बड़ी घमंडी है, वह अपने घर में सोई होगी । बेटा, रेड़ की डाली काट लो और सोई पत्नी को जगा लाओ । उसने जाकर एक छड़ी मारी, दूसरी छड़ी मारी और तीसरी छड़ी मारने पर भी करवट नहीं घुमा सकी । इस पर पुत्र ने माँ से कहा कि तुम माता हो, मैं क्या कहूँ और क्या करूँ ? तुमने मरी हुई पत्नी को भी पिटवा दिया ।

(१०)

जँतसार

घामा के घमायल जोगिया आयल हो राम,
बइठी गेलई घरवा-ओसरवा हो राम।

बइठिये-उठिये जब भेलई समतुलवा हो राम,
जोगिया पूछे लग हई घरवा के भेदवा हो राम।

कहाँ गेलो ससुर, कहाँ गेलो भइसुरवा हो राम,
कहाँ गेलन तोहरो पातर सामियाँ हो राम?

ससुर गेलन अटना, भैंसुर गेलन पटना हो राम,
रामा मोरो प्राभु जीरवा-लदनियाँ हो राम।

मैं धानी घरवा रहली अकेलवा हो राम,
एतना बचनियाँ सब सुनले जोगिया हो राम।

काढ़े लगले दखिन के चीरवा हो राम,
पेन्हिये-ओढ़िये जब भेलई तइअरवा हो राम।
से हमे जोगिया हिअऊ बड़ी सुन्नर हो राम।

दुअरे पर घोड़वा हिनहिनायल, स्वामी मोरा अयलन हो राम।
न देखूँ खिरकी आउ कोलवा, कइसे हम झाँकू हो राम।

हथवा में लेहूँ जोगी गोइठा रे चिपरिया हो राम,
अगिया बहनवे जोगिया निकलई हो राम।

जोगिया बरतर बंसी बजइहँऽ सबद सुनी अयबो हो राम।
बारह बरस के बेटिअबा कतेक बुध-छेरलऽ हो राम ॥

अर्थ

नायिका कहती है कि धूप से गर्माया एक योगी आया और धर्म की दुहाई देता मेरे सायबान में बैठ गया। बैठने के बाद जब वह सुस्ता कर स्थिर हुआ तो वह मेरे घर का रहस्य पूछने लगा। तुम्हारे श्वसुर-भैंसुर कहाँ गए हैं ? तुम्हारे पतले साँवले पति कहाँ गए हैं ? श्वसुर तीर्थाटन और भैंसुर पटना शहर को गए हैं और मेरे प्रभु (पति) जीरा का व्यापार करने गए हैं, मैं अकेली हूँ। इन बातों को सुन और नायिका

को एकाकी समझकर योगी दक्खिन का सुन्दर वस्त्र निकालने लगा और पहन ओढ़कर सुन्दर बन गया और अपनी सुन्दरता का बखान कर ही रहा था कि दरवाजे पर घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई पड़ी । नायिका ने कहा कि मेरे स्वामी आ गए । योगी व्याकुल हुआ । उसे कोला-खिड़की कहीं नहीं दीख रहा था, वह कैसे भागे । अंततः नायिका ने ही उसकी मदद की, कहा कि हाथ में उपला (गोइठा) ले लो और आग लेने के बहाने घर से निकल जाओ । बाहर वट-वृक्ष के नीचे निवास करो, वहीं से वंशी बजाना । वंशी की ध्वनि सुनकर मैं वहीं आ जाऊँगी । योगी सोचता है कि अल्पव्यस्का ने कितनी बुद्धिमानी से काम निकाला ।

नोट :- इस गीत में नायिका की चातुरी का तो पता है परंतु वह कुल्टा है या कुलीन, स्पष्ट पता नहीं चलता क्योंकि मध्य और अंत में दोनों प्रकार की नायिका का संकेत वर्तमान है ।

(११)

तिसिया के तेलवा में मथवा बन्हवली से केसिया गेले लटिआई रे दइया ।
मोरे पिछुअरवा कयेथा भइया हितवा से एक कली चिठिया लिखी देहूँ रे दइया ।

नहियों में हउ साँवर कोरा रे कगजवा, से नहियों में हउ मसिहनवाँ रे दइया ।
अचरा फारी-फारी कोरा रे कगजवा, से नैना कजरवा मसिहनवाँ रे दइया ।

अउठी-पउठी लिखिहँऽ कैथा खेम रे कुसलिया, से बीचे ठइयाँ बारहो वियोग रे दइया ।
मोरे पिछुअरवा हजमा भइया हितवा, से मोरे चिठिया स्वामी पहुँचाव रे दइया ।

नहियों में चिन्हीं सँवरो तोहरो बलमुआ के, नहियो में देखल हई देसवा रे दइया ।
मोरे बलामुजी के घुट्टी सोभे धोतिया से ऐठी बॉन्हल सिर पर पगिया रे दइया ।

हमरो बलमुआ बैठल दस-पाँच सभवा में, ओही होथुन हमरो बलमुआ रे दइया ।
हथवा लफाई प्राभु चिठिया जे लेलन, ठेहुना चढ़ाई चिठिया बाँचलन रे दइया ॥

अर्थ

तीसी के तेल में माथे का केश बाँधा जो सटकर जटा की तरह हो गया जिसे सुलझाने वाला कोई नहीं, पति विदेश है । किसके द्वारा संदेश भेजूँ । नायिका सोंचती है कि उसके घर के पीछे कायस्थ मेरा शुभ चिन्तक है । उसने उससे पत्र लिखने के लिए कहा । कायस्थ भाई ने कहा कि हे साँवली, मेरे पास सादा कागज नहीं है न स्याही ही है । नायिका कहती है कि मेरे आँचल को फाड़ कर कागज बना

लो और नयन के काजल से स्याही का काम ले लो । हे भाई कायस्थ, पत्र के किनारे कुशल क्षेम लिखना और बीच में बारह प्रकार कि वियोग दुःख लिख देना । पत्र लिखने के बाद अपने पिछवाड़े के हजाम को कहा कि मेरे स्वामी के पास इस पत्र को पहुँचा दो । हजाम ने कहा कि मैं तुम्हारे स्वामी को जानता-पहचानता नहीं कि वे किस देश में रहते हैं ? नायिका ने पूरा पता बताया-मेरे प्रिय पैर की एड़ी तक धोती पहनते हैं और सिर पर ऐठकर पगड़ी बाँधते हैं । वहाँ वे दस-पाँच की सभा में विराजमान होंगे । वही हमारे स्वामी हैं । नाई ने जाकर पत्र दिया और स्वामी ने हाथ बढ़ाकर पत्र ले लिया और ठेहुना पर रखकर पत्र को पढ़ा ।

(१२)

पूरब-पछिमवाँ से अयले नटिनियाँ ये निरावन जोगे,
कवनी साँवर गोदना रे गोदाव, ये निरावन जोगे ?

अपनी महलिया से निकले सँवरिया ये निरावन जोगे,
हमें साँवर गोदना रे गोदायब, ये निरावन जोगे ।

काई रे देबऽ साँवर गोदना के गोदइया ये निरावन जोगे,
काई देबो हमरो के दान ये निरावन जोगे ।

तोहरा के देबो नटिन दूनो कान सोनवाँ ये निरावान जोगे,
नटवा के देबो झिरही-सतुआ ये निरावन जोगे ।

झिरही सतुइया साँवर तोरो घर बाढ़वऽ ये निरावन जागे ?
हम लेबो छोटकी ननदिया ये निरावन जोगे ।

हर जोती अयले, कुदारी फारी अयले, ये निरावन जोगे,
देहरी बइठले मनवाँ मार ये निरावन जोगे ।

सबके तो देखली राम घर-घरूअरिया ये निरावन जोगे ?
छोटकी बहिनियाँ कहाँ गेल ये निरावन जोगे ।

छोटकी बहिनिया प्रभु बिरही के मातल, ये निरावन जोगे,
चली गेलो नटवा के संग ये निरावन योगे ।

पिसियों में देहूँ धानी झिरही सतुइया ये निरावन जोगे,
हमें जयबो बहिनी के खोजनवाँ ये निरावन जोगे ।

पनिया भरइते पूछे पनिहरनियाँ ये निरावन जोगे,
देहूँ नटवा के घरबा बतलाय, ये निरावन जोगे,

नटवा के घरवा बाबू, नेटुआ नाचत होइहें, ये निरावन जोगे।
उहईं मिलिहें नटवा के घर, ये निरावन जोगे।

लेहूँ-लेहूँ नेटुआ रे डाली भर सोनवाँ, ये निरावन जोगे।
देई देहूँ बहिनी हमार ये निरावन जोगे।

डालीभर सोनवाँ बाबू रउये घर बाढ़उ, ये निरावन जोगे?
तोरो बहिनी धनियाँ हमार ये निरावन जोगे।।

अर्थ

पूरब-पश्चिम से आई नटिन गाँव में गुहार लगा रही है कि कोई साँवली गोदना गुदवावेगी? एक साँवली अपने महल से निकली और कहने लगी कि मैं गोदना गोदाऊँगी। नटिन ने पूछा कि गोदाई में तुम क्या दोगी? नट ने पूछा कि मुझे दान में क्या दोगी? साँवली ने कहा कि हे नटिन, तुम्हें दोनो काम में सोना दूँगी और नट को बढ़िया सत्तु दूँगी। नट ने कहा कि झिरही सत्तु तुम्हारे घर की शोभा बढ़ावे, मैं तो तुम्हारी छोटी ननद लूँगी। निदान, गोदना के बाद नट छोटी ननद को लेते गया।

हल-कुदाल चलाकर उसका भाई आया और दरवाजा पर उदास मन बैठ गया। उसने पत्नी से पूछा कि सभी को तो घर-गृहस्थी में लगे देख रहे हैं परंतु छोटी बहन कहाँ गई? पत्नी ने कहा कि हे प्रभु, तुम्हारी छोटकी बहन कामुक (विरही के मातल) थी। वह एक नट के साथ चली गई। पुरुष ने कहा कि हे धनी, झिरही सत्तु पीस दो, लेकर मैं बहन को खोजने जाऊँगा। वह पानी भरते पनिहारिन से पूछता है कि नट का घर किधर है? वह कहती है कि नट के घर में नचनियाँ नाच रहा होगा, वहीं वह मिल जायगा। उसने जाकर नट से कहा कि मुझसे डाली भर सोना ले लो और मेरी बहन को दे दो। इस पर नट ने कहा कि डालीभर सोना आपके यहाँ बढ़े, अब तो तुम्हारी बहन हमारी पत्नी हो गई।

(१३)

तीसिया के तेलवा में मथवा बन्हौली से मथवा गइले लटिआई रे मयनवाँ,
मोरे पिछुअरवा बाबा के पोखरवा से हम जयबई पोखरा नेहाय रे मयनवाँ,

बाबा के पोखरवा में माथा मइसे गेली से टिकुली भुललई लहरदार रे मयनवाँ,
मोरो पिछुअरवा मलहवा भइया हितवा से येही घाटे डाले महाजाल रे मयनवाँ,

काई में देवऽ साँवरो टिकुली छनइया से यही घोटे डालब महाजाल रे मयनवाँ ,
तोहरो के दोबो मलहा दूनो कान सोनवाँ से मलहिन के देबो गलेहार रे मयनवाँ ,

आग लगवऽ सँवरो कान दूनो सोनवाँ से बजर परवऽ गलेहार रे मनयनवाँ ?
तोहरो के हई साँवर दूई नौरंगिया से करहूँ में एगो दान रे मयनवाँ ,

जेकर लगल मलहा साठ सौ रुपइया सेहो नहीं कयले नेवान रे मयनवाँ ।
पहिले जे खाले सावरो चिरई-चिरगुनियाँ-से तब खाले खेत रखवार रे मयनवाँ ।।

अर्थ

सिर में तीसी का तेल लगा लिया जिससे केश सटकर चटचटा हो गया । मेरे घर के पीछे बाबा का पोखरा है, हम उस पोखरे में स्नान करने जाऊँगी । नायिका बाबा के पोखर में माथा साफ करने गई तो वहाँ मेरी चमकदार टिकुली भूल गई । मेरे पीछे मल्लाह भाई रहता है, तुम इसमें जाल डालो । नाविक ने पूछा कि इस घाटपर जाल डालकर टिकुली निकल दूँ तो क्या दोगी ? नायिका कहती है कि तुम्हें दोनों कान में स्वर्णभूषण दूँगी और मल्लाहिन को गले की हार दूँगी । नाविक कहता है कि तुम्हारा स्वर्णभूषण और गलेहार में आग लगे । तुम्हारे पास दो नारंगी है (उरोज) उनमें से एक दान कर दो । नायिका ने कहा कि जिसका साठ सौ रुपये लगा है, उसने भी अभी प्रथम बार स्पर्श नहीं किया है । इसपर नाविक कहता है कि पहले फसल को चिड़ियाँ खाती है तब खेत का मालिक खाता है ।

(१४)

बारह बरस से पिअवा विदेसवा गेलन हो राम ,
सासु ननदिया हो पिअवा, घर-बनवसवा देलन हो राम ।

कहते-सुनते पिअवा घरवा अयलन हो राम ,
खोलऽ अम्मा सोबरन केवड़िया हो राम ।

सासु लेले दउड़ले पीढ़वा से बेनिया हो राम ,
ननदी लेले दउड़ले लोटा पनिया हो राम ।

सबके तो देखली अम्मा घर-घरूअरिया हो राम ,
पतरी तिरिअवा अम्मा कहाँ गेलन हो राम ।

पतरी तिरिअवा बाबू, बड़ा रे गुमनियाँ हो राम ,
से सुतल होइहें अपनी महलिया हो राम ।

एतना बचनियाँ पिअवा सुनलन हो राम ,
रामा चली भेलन धनिया के घरवा हो राम ,

खोलऽ धनियाँ सोबरन केवड़िया हो राम ,
कइसे में खोलू प्राभु सोबरन केवड़िया हो राम ,

सात साँझ उपासल हो पिअवा, देहिया डोले हो राम ,
जब तुहूँ धनिया गे सात साँझ उपासल हो राम ,

अपनी खोइछवा गे धनिया गलाई खयतऽ हो राम ,
अपनी खोइछवा हो पिअवा गलाई खंयती हो राम ,

सासु ननदिया हो पिअवा ओरहनवा मारे हो राम ,
सासु के बोलिया गे धनिया सिरहनवाँ रखितऽ हो राम ,

ननदी के बोलिया गे धनिया बदलिआ फेरीतऽ हो राम ।

अर्थ

बारह बर्ष से प्रिय विदेश चला गया है । सास-ननद ने मिलकर उसे घर में ही वनवास दे दिया । कहते-सुनते उसका पति घर आ गया और दरवाजे से बोला— हे माता, सुवर्ण कीवाड़ खोल दो । नायिका की सास पुत्र के लिए पीढ़ा और पंखा लेकर दौड़ी और ननद पानी लेकर दौड़ी । पुत्र ने माँ से पूछा कि हे माता, सभी को तो घर-गृहस्थी में देख रहा हूँ, मेरी पतली पत्नी कहाँ गई है ? माँ ने कहा कि तुम्हारी पतली पत्नी बड़ा घमण्डी है, वह अपने घर में सोई होगी । इतनी बात नायिका-पति ने सुना तो अपनी पत्नी के घर के नजदीक गया और कहने लगा कि धनी, सुवर्ण कीवाड़ को खोलो । पत्नी ने भीतर से ही कहा कि हे प्रभु, मैं कैसे सुवर्ण कीवाड़ खोलूँ । मैं तो सात शाम से उपवास में हूँ, मेरी देह हिल-डोल भी नहीं कर सकती है । पति ने कहा कि जब तुम सात शाम से उपवास में हो तो अपने खोइछे का अन्न गलाकर खा लेती । वह कहती है कि खोइछा का पदार्थ खा लेती तो सास ननद उलहना देती । पति कहता है कि हे धनी, सास की बात को सिरोध र्य कर लेती और ननद की बात का प्रत्युत्तर देती ।

(१५)

पिया गेलन उतरी बनिजिया तुलसी गछिया लगवले गेलन हो राम।
एती बड़ी भेलई तुलसी गछिया, तइयो पिया न लवटी अयलन हो राम।

बारह-बरिस पर बाबा अयलन पहुनवाँ, बइठऽ बाबा तुलसी गछिया हो राम।
कुछ-कुछ देहूँ अकिल-बुधिया तऽ कउना रूपे-रंगे रही जयबऽ हो राम।

कसी बेटी बनिहँऽ अचरवा तो नयना मलिन करिहँऽ हो राम।
नेई-नेई चलिहँऽ डगरिया तो बाबा-कुलवा रखि लिहँऽ हो राम।

नेई-नेई चलिहँऽ डगरिया तो भइया-कुलवा रखि लिहँऽ हो राम।

अर्थ

प्रिय उत्तरी दिशा को व्यापार करने गए। जाते समय उन्होंने तुलसी का पौधा लगा दिया है। यह पौधा बढ़कर इतना बड़ा हो गया तौभी प्रिय लौटकर नहीं आये। बारह वर्ष के बाद बाबा घर पर आये। पुत्री ने कहा कि तुलसी की छाया तले बैठें और मुझे बुद्धिमत्ता पूर्ण उपदेश दें कि मैं किस प्रकार जीवन व्यतीत करूँ। पिता ने कहा कि सहेटकर आँचल को बाँधे रहना, नयन उदास रखना, विनम्र होकर राह चलना। इस प्रकार पितृ और मातृ कुल की प्रतिष्ठा कायम रखना।

(16)

(सोहनी-निकौनी के समय यह गीत सुना जाता है)

नया-नया टिकवा के नया हई गढ़नियाँ से नया हई हमरी जवानी रे सिपहिया।
अगल से हटी जाहूँ, बगल से हटी जाहूँ, सामीजी से होबई बदनाम रे सिपहिया।

नया-नया बलवा के नया हई गढ़नियाँ से नया हई हमरी जवानी रे सिपहिया।
खेतवा से हटी जाहूँ, अरिया से हटी जाहूँ, सामीजी से होबई बदनाम रे सिपहिया।

अर्थ

निकौनी करती स्त्रियाँ गाती हैं कि हमारे नये मांगटीका का नया गढ़न है और मेरी जवानी भी नई है। अतः हे सिपाही (बटोही) अगल-बगल से हटकर जाओ; मैं अपने स्वामी से बदनाम हो जाऊँगी। नया बाला का नया गढ़न है और मेरी जवानी नई है। हे बटोही, तुम खेत और आल से हटकर जाओ अन्यथा मैं अपने स्वामी से बदनाम हो जाऊँगी।

(१७)

(मगध में निम्न सारे गीत रोपनी या जाँता पीसते समय गाए जाते हैं)

ठीक दुपहरिया में तजवा कुटवलूँ से तजवा धमसे सारी रात रे मयनवाँ।
देहूँ सासु हे सोने के घइलवा से हमें जयबई जमुना जल भरे रे मयनवाँ।

एक कोस गेले मयना दुई कोस गेले से जाई जुमले जमुना के अरार रे मयनवाँ।
एक तो हहूँ पतहू राजा जी के बेटिया दूसरे में हहूँ सुकुमारी रे मयनवाँ।

एक घइला भरले मयना, दुई घइला भरले से तीसरे में खिलले-पताल रे मयनवाँ।
मोरे पिछुअरवा मलहा भइया हितवा से जमुना में चलूँ डाले जाल रे मयनवाँ।

एक जाल डालले मलहा, दुई जाल डालले से बझी गेलई पातरी तिरिअवा रे मयनवाँ।
के तोरा मारई मैना के रे गरिअवले से केकरे इरिखिवे जमुना डूबे रे मयनवाँ।

मइया तोरा मारले राजा, बहिनी गरिअवले से गोतनी के दूरखे जमुना डूबली रे मयनवाँ।
मइया के मारबई धानी, बहिनी रोसगदिया से भौजी से रहबई जुदागी रे मयनवाँ।

मइया नऽ मारहिँऽ राजा, बहिनी रोसगदिया, भौजी से रहिहँ दिल जोड़ी रे मयनवाँ।

अर्थ

नायिका ने ठीक दोपहर में (किसी कारणवश) तेजपत्ता कूटा। उसकी गंध सारी रात फैलते रही। सुबह में उसने सास से घइला मांगा कि मैं यमुना में पानी भरने जाऊँगी। मैना एक कोस गई, दो कोस गई और यमुना के किनार पर पहुँच गई। एक तो वह राजा की पुत्री थी, दूसरे व सुकुमार थी। अतः उसने एक के बाद दूसरा घइला पानी भरा और तीसरे में डूबकर पाताल में चली गई। पति को खबर मिली तो उसने अपने घर के पीछे वाले मल्लाह को कहा कि चलकर यमुना में जाल डालो। मल्लाह ने एक जाल डाला और दूसरा जाल डालने पर उसकी तन्वंगी पत्नी जाल में बझ गई। पति ने पूछा कि हे मैना, किसने तुम्हें मारा, किसने गाली दी, किसकी ईर्ष्या से यमुना में डब रही थी। हे राजा, तुम्हारी माँ ने मारा, बहन ने गाली दी और गोतनी की ईर्ष्या से यमुना में डूब रही थी। हे प्रिया, माँ को मारूँगा, बहन को रूखसदी कर दूँगा और भाभी से अलग होकर रहूँगा। पत्नी ने अपनी सहिष्णुता का परिचय दिया–माँ को नहीं मारें और बहन को बिदा नहीं करें और भाभी से दिल मिलाकर साथ में ही रहें। (आदर्श नारी का पारिवारिक सौहार्द्र चित्रण)

(१८)

कहवा से अयले दरजिया के बेटवा, कहवाँ से आवे रंग-हो-रेज ।
पूरूबा से आवे दरजिया के बेटवा, पछिमऽ से आवे रंग-हो-रेज ।

काई लेई अयले दरजिया के बेटवा, काई ले आवे रंग-हो-रेज ।
चोलिया ले अयले दरजिया के बेटवा, चुनरी ले आवे रंग-हो-रेज ।

चुनरी पहिरी हम सुतली ओसरवा, ननदी के जरले हो करेज ।
का तुहूँ ननदो हे जरले करेजवा, मोरो पिया नन्हें से हो विदेश ।

अर्थ

कहाँ से दरजी का पुत्र आया और कहाँ से रंगरेज आया । पूरब से दरजी पुत्र और पच्छिम से रंगरेज आया । दरजी के पुत्र ने क्या लाया और रंगरेज ने क्या लाया ? दरजी-पुत्र ने चोली लाई और रंगरेज ने चुनरी । चुनरी पहन कर मैं सायबान में सोई तो ननद की छाती जलने लगी । नायिका ने कहा कि हे ननद, तुम्हारा कलेजा क्यों जल रहा है । मेरा प्रिय बचपन से ही विदेश है ।

(१९)

छव महीनवाँ के रानी के गरभवा हो राम ,
ये रामा खीरवा ला लगलई सरधवा हो राम ।

झर ये झरोखा चढ़ी रजवा निरेखई हो राम ,
ये रामा केकरी तिरिअवा-कोइरिन झगड़ई हो राम ।

जाँघ तोरा थाकउ राजा जुवानी लागउ घुनवाँ हो राम ।
ये रामा अपने तिरियवा राजा नहीं चिन्हई हो राम ।

एतना बचनियाँ जब राजा मोरा सुनलन हो राम ,
ये रामा चली भेलन सोनरवा दोकनियाँ हो राम ।

ये रामा धानी-जोगे गढ़ी दऽ गहनवाँ हो राम ।
उहऊँ से उड़लन राजा, चललन धानी के महलिया हो राम ।

ये रामा धानी जइहें अपनी नइहरवा हो राम ।
उहऊँ से उठलन राजा चली अयलन दर्जी दुकनियाँ हो राम ।

ये रामा धानी जोगे चोलिया सिला दऽ हो राम।
उहऊँ से उठलन राजा चली अयलन रंगरेजवा दोकनियाँ हो राम।

ये रामा धानी जोगे रंग दऽ चुनरिया हो राम,
ये धानी जइहें अपनी नइहरवा हो रांम।

उहवाँ से उठलन राजा चली अयलन कहरवा दोकनियाँ हो राम,
ये रामा धानी जोगे डड़िया बेसाहलन हो राम।

उहवाँ से उठलन राजा चललन अपनी महलिया हो राम,
ये रामा चलऽ धानी अपनी नइहरवा हो राम।

लाली-लाली डड़िया के सबुजी ओहरवा हो राम,
ये रामा लागी गेलई बतीसो कहरवा हो राम।

ये रामा धानी जयतन अपनी नइहरवा हो राम,
एक कोस गेलन रानी, दुई कोस गेलन हो राम,
ये रामा बीजूबन में डड़िया बिलमावहूँ हो राम।

अर्थ

एक राजा ने कोयरिन-लड़की से विवाह किया। उसे छह मास का गर्भाधान हो गया। उसे खीर खाने की इच्छा हुई। राजा अन्य रानियों के साथ दूसरे महल में था। उसने झरोखा से देखा और पूछा कि किसकी कोयरिन पत्नी झगड़ा कर रही है? रानी ने कहा कि तुम्हारी जाँघ थके, जवानी में घुन लग जाय, तुम अपनी पत्नी को भी नहीं पहचानते?

राजा ने इतनी बातें सुनी तो वह सुनार की दूकान पर चला गया और कहा कि मेरी पत्नी के योग्य आभूषण गढ़ दें। राजा वहाँ से भी उठकर रानी के महल में गया और कहा कि पत्नी अपनी मयके जायगी–वह तैयार हो जाय। राजा फिर महल से दर्जी की दूकान पर आया और कहा कि मेरी पत्नी के लायक चोली बना दो। वहाँ से फिर राजा रंगरेज की दूकान पर आया और रंगरेज से पत्नी के लिए चुनरी रंग देने का आदेश दिया। धनी नैहर जायगी।

उसके बाद राजा कहार के यहाँ आया और पत्नी के लायक डोली के लिए कह दिया और पुनः महल में आकर पत्नी को नैहर जाने के लिए सूचित कर दिया। रानी को तैयार करा लिया। लाल-लाल डोली पर नीला पर्दा लग गया और उसे ढोने के लिए बत्तीस कहार लग गए। पत्नी नैहर जाने लगी। एक-दो कोस जाने के बाद

राजा ने आदेश दिया कि बीजूवन में डोली को रख दो । इस प्रकार राजा ने रानी को वन में छोड़ दिया । (पुरुष समाज का पौरुषहीन कर्म)

(२०)

गवना कराई पिया देहरी बइठवले हो, अपने चलले परदेश रे निरमोहिया ।
निरमोहिया रे बालम छाई रहले नरियर-देस रे बालम ।

अपने नऽ आवे पिया चिठिया न भेजले, एक चिट्ठी भेजे संदेश रे निरमोहिया ।
निरमोहिया रे बालम, छाई रहले नरियर देसवा ।

मोर पिछुअरवा कायथ भइया हितवा, एक काली-चिठिया लिखी देहूँ रे निरमोहिया ।
निरमोहिया रे बालम छाई रहले नरियर देसवा ।

नहीं मोरा हई सावर कोरा रे कगजवा, नहीं मोरा हई मसीहान रे निरमोहिया ।
आँचर फारी-फारी कोरा रे कगजवा हो, नयना कजरवा मसिहान रे निरमोहिया ।

अउठी-पउठी लिखिहँऽ भइया सर-रे-सनेसवा, बीचवा में बारहो वियोग रे निरमोहिया ।
मोर पिछुअरवा हजमा भइया हितवा हो, एक काली चिठिया पहुँचाव रे निरमोहिया ।

तोहरो बलामुजी के चिन्हिअई न जानिअई, से कइसे कहब समझाई रे निरमोहिया ।
एही पार गंगा ओही पारे जमुना, बीचवा में बहे बालू-रेत रे निरमोहिया ।

ओही पारे राजा मोरा करऽ हई नोकरिया रे निरमोहिया । निरमोहिया रे बालम ।
हथवा लफाई बालम चिठियो जे लिहले, ठेहुना चढ़ाई चिठिया बाँचे रे निरमोहिया ।

चिठिया बाँचइते बालम मन मुसकयले, से केता धानी भेजलन वियोग रे निरमोहिया ।
बाबा कुल रखली, भइया कुल रखली, सामी कुल रखलो न जाई रे निरमोहिया ।

इहो सनेसवा धानी समुझइहँऽ, चरखा काटी कुल रखिहँऽ रे निरमोहिया ।
निरमोहिया रे बालम छाई रहले नरियर देसवा ।

अर्थ

पति ने पत्नी को द्विरागमन कराकर श्वसुराल में रख दिया और स्वयं परदेश चला गया । वह निर्मोही पति नारियल देश (बंगला देश) में जाकर निवास करने लगा । पत्नी कहती है कि उसका पति स्वयं नहीं आता न पत्र में कोई विशेष खबर देता, केवल संदेश मात्र भेज देता है ।

नायिका सोचती है कि उसके पिछवाड़े में कायस्थ भाई रहता है । वह उससे एक काली चिट्ठी लिख देने का आग्रह करती है । कायस्थ कहता है कि मेरे पास सादा कागज नहीं है, नहीं स्याही है । नायिका कहती है कि मेरे आँचल को फाड़कर कागज बना लो और नयन के काजल को स्याही की तरह व्यवहार कर लो । हे भाई, पत्र के किनारे सारे कुशल-क्षेम लिख देना और बीच में बारहो प्रकार का दुख (वियोग दुख) लिखना । नायिका के घर के पीछे नाई था । उससे इस काली चिट्ठी पहुँचाने का आग्रह किया । नाई ने कहा कि तुम्हारे पति को मैं पहचानता जानता नहीं, मैं कहाँ और किसे जाकर समझाऊँगा ? नायिका ने पता बतलाया कि इस पार गंगा और उस पार यमुना के बीच में बालू की रेत है । वहीं मेरा पति नौकरी करता है । नाई ने जाकर पत्र दिया, पति ने हाथ बढ़ाकर चिट्ठी ले ली और ठेहुने पर रखकर पत्र पढ़ा । पढ़कर मन ही मन मुस्कुराया और सोचने लगा कि पत्नी ने कितना वियोग दुख लिख भेजा है । उसमें पितृ और भ्रातृ कुल की प्रतिष्ठा रखने की बात भी लिखी गई है परंतु स्वामी के कुल की रक्षा कैसे की जाय ? अत्यधिक वियोगाग्निी में उसे असह्य दुख हो रहा है । अतः पति नाई से कहता है कि मेरा यह संदेश मेरी प्रिया को देना और समझा देना कि खाली समय में चर्खा काटकर मनोरंजन कर ले और मन बहलाकर हमारे कुल की रक्षा करे ।

(२१)

काहे के घइलवा साँवर हे, काहे के बसनवाँ हे ?
अहो रामा काहे केरा हे डोरिया, भरे जुड़ पनियाँ न हे ।

अहो रामा सोने के घइलवा हे, रूपे के वसनवाँ न हे ,
अहो रामा रेसम के डोरिया भरे जुड़ पनियाँ न हे ।

पनिया ला गेलई साँवर हे, साँवर जमुना किनरवा न हे ,
अहो रामा पनिया जे भरई चारो घाट निरेखई न हे ।

केनहूँ न देखहूँ दयवा रहिया रे बटोहिया न हे ,
अहो रामा कनहुँ न देखीये कुइयाँ पानी न हे ।

एक हम देखई रामा उतमा भइसुरवा आवई हे ;
अहो रामा घोड़वा जे बाँधई भँवरा-डढ़िया न हे ।

पनिया जे भरलूँ दयवा मथवा चढ़वली हे ,
अहो रामा उतमा भइसुरवा घटिया जे रोकी लेलकई हे ।

ओते जाहूँ-ओते जाहूँ बड़जाना भइसुरवा न हे,
अहो रामा बुन्दवे-बरीसिया चुनरी मोरा भींजऽ हकैई हे ।

भींजे देहुँ-भींजे देहुँ ये हो भल चुनरिया हे,
अहो रामा हमही के अंगोछवा करीहँऽ पलटवा न हे ।

तोहरो अंगोछवा भैंसुरजी हिंगुवा लगैबो न हे,
अहो रामा प्राभुजी के अंगोछवा करबई पलटवा न हे ।

पनिया जे धरलूँ दयवा रे धइली घिड़िसीरिया हे,
अहो रामा गेडुआ जे धरलूँ छनिया के चनिया न हे ।

मचिया बइठली तुहूँ सासुजी बठैतिन हे,
अहो रामा बड़जाना भइसुरवा करथुन मजकिया हे ।

बाबा खउकी, मइया खउकी साँवर पुतोहिया न हे,
अहो रामा मोरा पुत्ता के अछरंगयिा लगावई न हे ।

मचिया बइठली तुही मइयो गे बढ़इतिन ए गे,
अहो रामा काढ़िये जे देहूँ सारी अन धनवा न हे ।

धनवा कुटिये साँवर हे भतवा पकलूँ न हे,
अहो रामा मुंगिया दरी-दलिया पकवलहूँ न हे।

पकाइये उकाई साँवर हे, कयलको तइयरिया न हे,
अहो रामा, कने गेलऽ किया भेलऽ लउड़िया हे ।

अहो रामा छोटे-बड़े के करऽ न विचरिया न हे,
सब कोई जेवें दइयो हे अंगना-ओसरवा न हे।

अहो रामा उतमा भइसुरवा जेवऽ हे रसोइये घर न हे,
सब कोई लेहई दयवारे अरसन परसन हे,
अहो रामा उतमा भइसुरवा आँचर झिकझोरे न हे ।

अर्थ

किस चीज का घइला है, किस चीज का बसना है और पानी भरने के लिए उसमें डोरी किस चीज की है । सोने का घइला और चाँदी का बसना है तथा उसमें रेशम की डोरी है जिससे साँवरी पानी भरती है । पानी लाने के लिए वह यमुना

किनारे गई जहाँ चारो ओर देख रही है । उसे कहीं राहगीर-बटोही नहीं दीख रहे हैं । सन्नाटे में उसका उत्तम नाम का भैंसुर दिखाई पड़ा । उसने वृक्ष की डाली में घोड़े को बाँध दिया । साँवरी ने पानी भर कर माथे पर रख लिया कि उसका उत्तम भैंसुर ने राह रोक लिया । नायिका ने अपने जेठ को अलग हट जाने के लिए कहा कि पानी के टपकने से मेरी चुनरी भींग रही है । भैंसुर कहता है कि चुनरी भींगने दो मेरे गमछे से चुनरी पलट लेना । नायिका ने कहा कि भैंसुर जी आपके गमछे में मैं हींग लगा दूँगी । मैं तो अपने पति के गमछे से चुनरी पलट लूँगी ।

साँवली नायिका ने घर आकर पानी का घइला घिड़सिर पर रख दिया और नेठो को खाट के ओरचाने पर रखा और मचिया पर बैठी सास से कहा कि आपके बड़े पुत्र जेठजी ने मजाक किया है । इस पर सास पुतोह को गाली देने लगी (बाबा भइया खउकी) कि तुमने हमारे पुत्र को झूठा दोष लगाया है । साँवरी ने पुनः अपनी माँ से कहा कि इसकी परीक्षा लो–अन्न धन को निकालो । साँवर ने धान कूटकर भात बनाया । मूँग दलकर दाल बनाई । पूरा भोजन बनाकर दासी को बुलाया और सभी को खाने पर बैठा कर कहा कि सभी छोटे-बड़े मिलकर विचार करें । सभी लोग आंगन और सायबान में भोजन करने लगे परंतु उत्तम भैंसुर रसोई घर में ही खाने लगा । सभी लोग परोसन लेकर खा रहे थे तो उत्तम भैसुर साँवरी का आँचल पकड़कर खींच रहा था ।

(२२)

अहो रामा गाँवा के पछिम बसे राजा दसरथ हे ,
अहो रामा पतवा तोड़ी के मांगे राजा दसरथ हे ।

अहो रामा बारहे बछरवा राजा बनिजरवो गेलन हे ,
अहो रामा तेरही हे बछरवा राजा बनिजरवो से लौटलई हे ।

अहो राम ऊपरे से घबराहर धूम कइसे होवई हे ,
अहो रमा हमरो धराहर कइसे होबई हे ।

अहो रामा तोहरी ओ मइया मठवा पीलावलन हे ,
अहो रामा जीरवे-जवइनिये बोरसी भरीये देलन हे ।

अहो रामा एतने में जीतले गले घंघोटवा ले ले ,
अहो रामा ऊपरे हे घबराहइ डगरिन काहे बोलये हे ।

अहो रामा तोहरो मइया पेटवा मंजइयो कयलन हे ,
अहो रामा तोहरो के मुँहवा काहे लागो पीयर हे ।

अहो रामा तोहरो मइया मछरी मारीये ललथुन हे ,
अहो रामा हरदी पीसइते मुँह, पीयर भेलो हे ।

अहो रामा येतना जे जीतल गले-घंघोटवा हे ,
अहो रामा तोहरी छतिया जे लागे लरकोरिया हे ।

अहो रामा तोहरी भइया कयलन बलजोरिया हे,
अहो रामा उनके जलमल बालक रोवई हे ।।

अर्थ

हे राम, गाँव के पश्चिम में राजा दशरथ बसते हैं । वे वृक्षों के पत्ते तोड़कर मांगते हैं । पुनश्च, ननद भाभी से कहती है कि राजा तो बारह वर्ष के लिए व्यापार करने गए थे और तरेह वर्ष पर घर लौट रहे हैं । हे राम, ऊपर से तो घबराहट है, राजा के आगमन पर उत्सव कैसे मनाया जाय । भाभी कहती है कि मेरी पकड़ाहट क्यों हो रही है । तुम्हारी माँ ने मुझे मठा (छाछ) पिलाया था और जीरा-अजवाइन की बोरसी भर दी थी । इस पर ननद कहती है कि तुमने गले घंघोटकर (गाल से वात बनाकर) जीत लिया परंतु ऊपर से घबराकर डगरिन (धाई) क्यों बुलाई । भाभी कहती है कि तुम्हारी माँ ने अपना पेट मलने के लिए डगरिन को बुलाया था । ननद भाभी से पुनः कहती है कि तुम्हारा मुँह पीला क्यों लग रहा है । भाभी कहती है कि तुम्हारी माँ ने मछली मार लाई थी । उसे बनाने के लिए हल्दी पीसनी पड़ी थी जिससे मुँह पीला हो गया था । इसे भी तुम गले घंघोट कर जीत गई परंतु यह तो बताओ कि तुम्हारी छाती प्रसूति की तरह क्यों दीखती है ? इस पर भाभी स्पष्ट कह देती है तुम्हारे भाई ने मेरे साथ बलजोरी की थी, उन्हीं का जन्मा हुआ यह बालक रो रहा है ।

(२३)

सासु देलन गोहुमा, ननद देलन चंगेरिया, गोतिनी वैरिनियाँ भेजे जँतसरिया ।
रगड़ी-रगड़ी गोहुमा पिसली रे दइया, से मथवा में उठले दरदिया रे दइया ।

सास मांगे रोटिया, ननद मांगे टिकरी, से सेर भर मडुवा रगड़ी पिसली रे दइया ।
जेहू बौना देलक उदबसवा रे दइया, सेहु बौना मांगे परसनवाँ रे दइया ।

बौना के जलमल टेंगरा से पोठिया, ओहू जे देहई उदबसवा रे दइया ।।

अर्थ

पुत्रवधू कहती है कि सास ने गेहूँ दिया और ननद ने टोकरी दी और वैरी गोतनी ने आँटा पीसने का आदेश दिया। मैंने रगड़-रगड़ कर गेहूँ पीसा तो सर में दर्द हो गया। इसपर सास रोटी पका कर मांगती है और ननद टिकरी बनाने कहती है। परंतु आटा तो बहुत कम है । अतः मैंने पुनः रगड़-रगड़ कर मडुवा पीसा। इसपर मेरे बौने पति ने तकलीफ दी वह बार-बार परोसन मांग रहा है। उसके पुत्र भी पोठिया और टेंगरा मछली की तरह छोटे पर खाने में बड़ी तेज है। वे भी बार-बार खाने के लिए तंग करते हैं। हे दैव, मैं क्या करूँ ?

(२४)

कउने उमरिया सासु निमिया लगौलन, कउनी उमरिया गेलन विदेसवा हो राम।
खेलते-कूदते बाबू निमिया लगौलन, रेघिया-मिंजइते गेलन विदेसवा हो राम।

फरी गेलई निमिया, लहरी गेलई डरिया, तइयो न आयल मोर विदेसिया हो राम।
घोड़वा चढ़ल आवे बाट रे बटोहिया से तुहूँ जयबऽ नरियर के देसवा हो राम।

सासु मोरा धउगलन, ननद मुसकयलन, ई तो हथी हमर छोट भइवाँ हो राम।

अर्थ

बाल विवाह से पीड़ित नव यौवना अपनी सास से पूछती है कि मेरे पति ने इस नीम के वृक्ष को कब लगाया था और कब वे विदेश गए थे ? सास कहती है कि जब वह खेलता-कूदता था, तभी नीम वृक्ष को लगाया था और जब उसकी मूँछे आने लगी तो वह विदेश चला गया। पत्नी सोचती है कि नीम की डाली बड़ी-बड़ी होकर चारो ओर फैल गई उसमें फल भी आ गए, फिर भी मेरा विदेशी पति नहीं आया। इसी बीच कोई बटोही घोड़ा पर चढ़ा आता दीखा तो नायिका ने पूछा कि क्या तुम नारियल का देश जाओगे। उस बटोही को देखते ही सास दौड़ पड़ी और ननद मुस्कुराने लगी और कहने लगी कि यह तो मेरे छोटे भाई लगते हैं। अर्थात् नायिका के पति।

(२५)

सुपली मउनियाँ खेलते सबके बिअहले अम्मा, हमरो बिअहवा न कयले रे कि ....।
तोरो बिअहली मैनी बाले रे पनवाँ में, तोरो विअहुता मरी गेलउ रे कि ....।

हमरो बिअहुता अम्मा मरिये जे गेलन, उनखर चैतिया बताई दे रे कि .....।
सावन-भदउवा के अयलो बूढ़ी धधिया, ओकरे में गेलो चैतिया दहिये रे कि ....।

माथा पटकी मैनी अम्मा से बोलई, अगे चैतिया दही गेलई धरतिया न रे कि .....।

अर्थ

लड़की माँ से पूछती है कि सुपली-मौनी (शैशवास्था) खेलते समय सभी की शादी कर दी परंतु मेरी शादी क्यों न की ? माँ कहती है कि तुम्हारी शादी भी बचपन में कर दी थी परंतु तुम्हारा पति मर गया। बेटी कहती है कि हमारा पति मर गया। उनका चिता बता दो। माँ ने कहा कि एक बार सावन-भादो में बड़ी बाढ़ आई थी, उसी बाढ़ में चिता बह गई। लड़की रोती माँ से पूछती है कि चिता तो बह गई परंतु वह स्थल तो नहीं बह गया है ?

(२६)

गंगा किरिअवा तुहूँ खाहूँ हे धनिया, तब धरऽ पलंगा पर पइयाँ हे नाऽ।
गंगाजी के हथवा में लेलन धानी, गंगा हो गेलन छतिर छीप हे नाऽ।

इहो किरिअवा धानी हम न पतिआऊँ, सूरूज किरिअवा तुहूँ खाहु हे नाऽ।
जब ही धानी सूरूज गोड़ लागलन, सुरूज हो गेलन छतिर छीप हे नाऽ।

इहो किरिअवा धानी हम न पतिआऊँ, अग्नि किरिअवा तुहूँ खाहूँ हे नाऽ।
जब ही धानी अगिन हाथ लेलन, अगिन भेलई जरी-छाई हे नाऽ।

कहथिन प्राभुजी सुनूँ धानी मोरी, अब हम दास तोहार हे नाऽ।
पुरुख के अइसन जात हे बनावल, झूठ-मूठ लगावे अकलंकिया हे नाऽ।

फट जा हे धरती तोरे में समाई, मुहवाँ न देखी मरद के हे नाऽ।

अर्थ

एक पति को पत्नी पर विश्वास नहीं है और जब उसकी पत्नी पलंग पर पैर रखना चाहती है तो उसे गंगा की कसम खाने के लिए कहता है। जब उसकी पत्नी गंगा को अपने हाथ में लेती है तो वह स्वतः लुप्त हो जाती है। पति इस कसम पर विश्वास नहीं करता है और सूर्य की कसम खाने कहता है। जब पत्नी सूर्य को गोड़ लागती है तब सूर्य भी छिप जाते हैं। अंत में पति अग्नि की कसम खाने कहता है। जब पत्नी ने अग्नि को हाथ में लिया तो अग्नि भी राख में बदल गई। इस प्रकार वह सभी परीक्षाओं में सफल हो गई तो पति ने कहा कि अब मैं तुम्हारा दास हो गया। परंतु पत्नी का स्वाभिमान जाग उठा। उसने कहा कि पुरुष की ऐसी जाति है जो झूठा दोष लगाती है। अतः हे धरती माता, तू फट जा और मैं समा जाऊँ फिर कभी मर्द के मुँह देखने का अवसर न मिले।

(२७)

पटना सहरवा से आयल गोदहरनी रे जान ,
जान बैठी रे गेलई चनन वृछीये रे जान ।

अपना महलिया से निकलल सुन्न बहुरिया रे जान ,
जान, हमरे सुन्नर गोदना गोदवइबई रे जान ।

छतिया गोदवले सुन्नर आउ पहुँची गोदवले रे जान ,
बहिया गोदवले सुन्नर हथवा गोदवले रे जान ।

छतिया गोदवले अनमोलवा रे जान ,
मचिया बइठले तूही लहुरे बरइतिन रे जान ।

जान हमे रे सुन्नर गोदना गोदवबई रे जान ,
जान, देहूँ टकवा कउड़िया रे जान ।

लेहूँ गोदहरनी गे सेर भर समवा रे जान ,
जान अउरे लेहूँ टकवा-कउड़िया रे जान ।

हम नहीं लेऊँ सुन्नर सेरभर समवाँ रे जान ,
जान न लेबई टकवा-कउड़िया रे जान ।

जान हमें लेबे चल्लहकी ननदिया रे जान ,
हर जोति अयले रे बहुआ, कुदारी फारि अयले रे जान ।

जान बइठि रे गेलई देहरी मनवाँ मारी रे जान ,
सब के बहिनियाँ गे मइया घर-घरुअरिया रे जान ।

हमरो बहिनियाँ कहाँ गेलन रे जान ,
पूरुब से आन्ही अयलो, पछिम से पानी रे जान ।

जान ओहीं में तोहर बहिनियाँ उड़ि गेलउ रे जान ,
तोहरो तिरिअवा गोदना गोदौलकऊ रे जान ।

बहीयाँ गोदौलकउ, पहुँची गोदौलकऊ,
छतिया गोदौलकऊ अनमोलवा रे जान ।

ओही में तोहरो बहिनियाँ के देलकउ दनवा रे जान,
दें ही गे मइया सेर भर सतुइया रे जान।

हमें रे जयइबई बहिनियाँ ऊ देसवा रे जान,
एक कोस गेलो में दूसर कोस गेलो रे जान।

तीसर कोस देखलों में नटवा संगे खेले युवा सरिया रे जान,
देवउ रे नटवा सेर भर सतुइया रे जान।

जान अउरो देवउ डाल भर सोनवाँ रे जान,
जान हमरो बहिनियाँ छोड़ि देहूँ रे जान।

आगि लगैबई तोहर डाल भर सोनवाँ रे जान,
बजड़ परऊँ सेर भर सतुआ रे जान।

तोहरे तिरिअवा रे भइया, गोदना गोदौलकउ रे जान।
जान ओही में देलकउ दान बहिनियाँ रे जान।

अर्थ

पटना से गोदना गोदने वाली नटिन आई और चंदन वृक्ष के नीचे बैठ गई। अपने महल से सुन्दरी बहू बाहर आई और कहने लगी कि मैं सुन्दर गोदना गुदवाऊँगी। उसने छाती, बाह, पहुँची और सम्पूर्ण हाथ में गोदना गुदवा लिया। गोदहारिन ने मचिया पर बैठी मालकिन से गोदना गोदने का दान मांगा। उसने गोदाई में सेर भर सावाँ, कुछ टका-कौड़ी देने लगी। गोदहारिन ने कहा कि मैं सेर भर सावाँ और टका-कौड़ी नहीं लूँगी, मैं चंचला बेटी को लूँगी। निदान, बहू की ननद को गोदहारिन को दे दिया गया। उसका भाई हल कुदाल चलाकर घर आया तो मन उदास कर बैठ गया। माँ से पूछा कि सभी को तो घर-गृहस्थी में लगा देखता हूँ परंतु हमारी बहन कहाँ गई ? माँ ने कहा कि पूरब-पच्छिम से आंधी आई, उसी में तुम्हारी बहन उड़ गई। पुनः उसने स्पष्ट बता दिया कि तुम्हारी पत्नी ने गोदना गुदवाया था, छाती और हाथ में सर्वत्र गुदवाया था, उसी में उसने बहन को दान में दे दिया। भाई ने माँ से सेर भर सत्तु मांगा कि हम बहन को उसके देश में खोजने जायेंगे। वह एक कोस गया, दो कोस गया और तीसरे में देखा कि उसकी बहन नट के साथ युआ खेल रही है। भाई ने नट को सेर भर सत्तु और डाली भर सोना देने के लिए कहा कि हमारी बहन को छोड़ दो। नट ने कहा कि तुम्हारे डाली भर सोना में आग लगे और सेर भर सत्तु में बज्र पड़े। तुम्हारी पत्नी ने गोदना गुदवाया है। उसमें दान स्वरूप बहन को मुझे दे दिया है।

(२८)

पनिया के चलल हे साँवरो गंगा रे जमुनवा रे की ।
अरे झीसिये-फुहिये साड़ी मोरा भिंजले रे की ।

भिंजे देहूँ - भिंजे देहूँ भावह आजु के रतिया न रे की ।
अरे हमरे चदरिया तुहूँ पहिरी लिहँऽ न रे की ।

तोहरो चदरिया भैंसुर अगिया के गोतल न रे की ।
अहे सासुजी गुदरिया सेहू पहिरम न रे की ।

एतना बचनिया ये राम सुनलन बलमुआ न रे की ।
अरे भइया जोगे छुड़िया बेसाहल न रे की ।।

अरे भइया मारहुँ न प्रभुजी, अरे भइया नहीं अयतो ।
चिर तिरिया मरइते फिन तिरिअवा लयबऽ जी ।

अर्थ

साँवली गंगा-यमुना से पानी भरने चली । रास्तें में झीसी पड़ने के कारण उसकी सारी भींग गई । भैंसुर ने कहा कि आज की रात सारी भींगने दो, हमारी चादर पहन लो । भावह (छोटे भाई की पत्नी) ने कहा कि आपकी चादर में कामाग्नि प्रविष्ट है । मैं सास की गुदरी पहनकर रह जाऊँगी । उसके पति ने ये बातें सुनी तो उसने भाई को मारने के लिए एक छूरी खरीदी । इसपर उसकी पत्नी ने समझाया कि भाईजी को मत मारें, फिर भाई कहाँ से आवेंगे ? परंतु पत्नी के मरते पुनः दूसरी पत्नी आ जाएगी ।

(२९)

घामा में घमायल मैना बैठई बसवरिया न रे की ,
अरे दुरे पर गोविंद बंसीया बजावऽ हई न रे की ।

तूहूँ तो चरवाहा गोबिंद गइया से भइसिया न रे की ,
से हमे मैना बछुड़ चरावे ले रे की ।

खेलइत रहले गे मैना अरे सुपली मउनिया रे की ,
अरे आई गेलई औचक नेयार न रे की ।

केरी तोरा रखउ मैना दिनवा-सुदिनवाँ न रे की ,
केही तोरा रख हउ नेयार न रे की ।

अम्मा मोरा रखलन गोबिंद दिनवा-सुदिनवाँ न रे की ,
भउजो मोरा रखलन नेयार न रे की ।

तुहूँ तो जाहऽ मैना अपनी ससुररिया न रे की ,
अरे केकरा जउरे जिअरा-बुझयबई न रे की ।

मइया जौरे सुतिहँऽ हो गाबिंद बहिनी जौरे उठीहँऽ रे की ,
भउजी जउरे जियरा बुझइहँऽ रे की ।

अचरा में लिहले मैना उलटी सरसोइया न रे की ,
सरसो के छिटइते ससुरा जा हई रे की ।

घर पछुअरवा गे मैना अरे घानी बसवरिया न रे की ,
अरे उहें परी बंसीया बजायम न रे की ।

गोड़ तोरा पड़ीला से सासुजी बठैतिन रे की ,
बंसीया सबदिया सुने हम जायम रे की ।

तुहूँ तो जे हहूँ घरे के बहुरिया न रे की ,
से बंसीया सबदिया कइसे सुने जयब न रे की ।

किया तोरा हवे पुतहो भाई रे भतीजवा न रे की ,
किया तोरा नन्हे के इयार न रे की ।

नहीं मोरा अहे सासु भाई रे भतीजवा न रे की ,
अरे नहीं मोरा नन्हें के इयार न रे की ।
हमें गोबिंदा बछड़ु चरावे न रे की ॥

अर्थ

उपर्युक्त सारे लोकगीत या तो कर्म और जाति से सम्बंध रखते है अथवा क्रिया-विशेष के अवसर पर मनोरंजन के लिए गाए जाते हैं । प्रस्तुत मगही क्रिया गीत में राधा कृष्ण के बंशीवादन एवं निश्चल प्रेम का लोकधर्मी चित्रण हुआ है । धूप से गर्म होकर मैना बाँसवाड़ी के झुरमुट तले बैठ गई । इधर दरवाजे से गोबिंद वाँसुरी बजाने लगा । मैना ने कहा कि हे गोबिंद, तुम तो गाय-भैंस चराते हो और मैं बछड़ा चराती हूँ । इसी खेल-खेल में मैना के द्विरागमन की खबर आ गई । गोबिंद ने पूछा कि तुम्हारा दिन किसने निश्चित किया और लग्न किसने निकाला । मैना कहती है कि माँ ने शुभ दिन निश्चित किया और भाभी ने लग्न निकाला । पुनः

गोबिंद ने पूछा कि मैना तुम तो अपनी श्वसुराल जाती हो परंतु मैं किसके साथ जी का तपन बुझाऊँगा । मैना कहती है कि माँ के साथ सोना और बहन के साथ उठना (खेलना) तथा भाभी के साथ जी का तपन बुझाना । इस प्रकार मैना अपने खोइछा में उलटी सरसो लेकर छिटती हुई श्वसुराल चली । गोबिंद ने कह दिया कि तुम्हारे घर के पीछे बाँस का झुरमुट है, मैं वहीं आकर वंशी बजाऊँगा । गोबिंद वहाँ वंशी बजाता है तो मैना सास से वंशी की ध्वनि सुनने जाने के लिए अनुरोध करती है । सास कहती है कि तुम तो घर की बहू हो, वंशी ध्वनि सुनने बाहर कैसे जाओगी और वह तुम्हारा कौन है ? क्या वह तुम्हारा भाई या भतीजा है या बचपन का दोस्त है । मैना कहती है कि हे सास, वह मेरा न भाई है न भतीजा है, नहीं बचपन का मित्र है वल्कि हम और गाबिंद बचपन में एक साथ बछड़े चराया करते थे ।

(३०)

हाय रे हाय, कहवाँ से आवई राजाजी के बेटवा–
कहवे से आवई धोबीनियाँ हाँ जी ।

हाय रे हाय, हटी जाहूँ–हटी जाहूँ, राजाजी के बेटवा–
से पड़ी जयतो रेह के छिटकवा जी ।

हाय रे हाय, तोरे लेखे हउगे धोबीन रेहके छिटकवा–
मोरे लेखे अतर गुलाब जी–हाय रे हाय ।

धोबीन जे सुतई राम लाली रंग पलंगिया से,
राजा बेटा सुतई गोरथारी जी ।

हटी जाहूँ–हटी जाहूँ राजा जी के बेटवा हो,
से लगी जय तो पैरो से चोटवा, हाय रे हाय ।

हाय रे हाय तोरा लेखे हउगे धोबीन पैरो के चोटवा,
से मोरा लेखे फूल के छड़ीयव जी, हाय रे हाय ।

अर्थ

कहाँ से राजा जी का पुत्र आ रहा है और कहाँ से धोबिन आ रही है । धोबिन कहती है कि राज–पुत्र, थोड़ा अलग हट जायें, इधर वस्त्र धोते समय रेह का छीटा पड़ जायगा । राज–पुत्र कहता है कि तुम्हारे लिए रेह का छीटा है परंतु मेरे लिए तो इत्र–गुलाब की तरह है । धोबिन लाल–लाल पलंग पर सो रही है और राज–पुत्र

गोड़थारी सोता है । इस पर भी धोबिन कहती है कि हे राज-पुत्र गोड़थारी से भी हट जायें, वहाँ मेरे पैर से चोट लग जायगी । राज-पुत्र कहता है कि हे धोबिन तुम्हारे लिए तो पैर का चोट है परंतु मेरे लिए तो वह फूल की छड़ी की तरह है ।

(३१)

तुहूँ तो जे जाहऽ देबर उरवी-पुरबी बनिजिये हो ना।
देवरा हमरा लागि कउची लयबऽ सनेसवे हो ना।

तोरा लागी लयबो भउजो कसमस के चोलिया हो ना।
भउजो अपना लागि लयबो धनुष तलवरवे हो ना।

फटी-चिटी जयतो हे देवरा कसमस के चोलिया हो ना।
देबरा हो जुगे-जुगे सालई धनुष तलवरवे हो ना।

काहे लागि भउजी हे ओठवा सुखिये गेलवऽ हो ना।
भउजो हे काहे लागि बदन मलीन भेलो हो ना।

पान बिनु अहो देबरा ओठवा सुखिये गेलई हो ना।
देवरा हो सामी बिना बदन मलीन भइले हो ना।

पिस देहूँ अहो भउजो झिलमिल सतुये हो ना।
भउजो हे हम जयबई भइया केउ देसवे हो ना।

एक कोस गेलियो में दूई कोस हो ना,
तीसर कोस में मिलिये गेलई भइया के दुअरिया हो ना।

चलहुक अजी भइया अपनी नगरिया हो ना,
भइया हो तोरा बिनु भउजी मलीन भइले हो ना।

हम नही जयबो बबुआ हो अपनी घरवा हो ना।
से बउवा हो भउजी के खिअइहऽ पाकल बीड़वे हो ना।

बबुआ हो भउजी के सुतइहऽ अपनी सेजरिया हो ना।
खाई लेहूँ अहो भउजो पाकल बीड़ा पवनवे हो ना।

भउजी रहूँ हमरी सेजरिया हो ना।
अगिया लगयबो देवरा पाकल बीड़वा पनवा हो ना।

देवरा नहिये सुतबो तोहरो सेजरिया हे ना।

अर्थ

देवर जब पूर्व देश में व्यापार करने जाने लगा तो भाभी ने पूछा कि हमारे लिए कौन सा उपहार लावेंगे। देवर ने कहा कि हे भाभी, तुम्हारे लिए कसमस चोली और अपने लिए धनुष और तलवार लाऊँगा। हे देवर, मेरी कसी हुई चोली फट जायेगी और तुम्हारा धनुष-तलवार युग-युग तक जी में कचोटता रहेगा। हे भाभी तुम्हारा ओठ क्यों सूख गया है और मुख क्यों मलीन हो गया है। पान के बिना होठ सूख गया है, हे देवर, पति के बिना मुख मलीन हो गया है। देवर ने कहा कि भाभीजी, मुझे पतला सत्तु पीस दें, मैं भाई के उद्देश्य से बाहर जाऊँगा। वह एक कोस गंया, दूसरा कोस गया और तीसरे कोस में उसके भाई का दरवाजा दीख पड़ा। उसने कहा कि हे भाई, अपने नगर में चलो, तुम्हारे बिना भाभी उदास रहती है। भाई ने कहा कि बबुआ, मैं घर नहीं जाऊँगा, तुम भाभी को पके पान का बीड़ा खिलाना और अपनी शय्या पर सुलाना। देवर भाभी से कहता है कि हे भाभी, पका पान का बीड़ा खा लो और मेरी शय्या पर रहो। इसपर भाभी क्रोधित हो जाती है-देवर से कहती है कि तुम्हारे पान के बीड़े में आग लगे, मैं तुम्हारी शय्या पर नहीं सोऊँगी।



मौसमी लोक गीत

कुछ ऐसे लोकगीत हैं जो मौसम विशेष में ही गाए जाते हैं । लेकिन देवी-देवता से सम्बंधित गीत किसी भी मौसम में गाए जाने पर वे मौसमी गीत नहीं हो सकते । अत: मौसमी गीतों की अपनी विशेषताएँ होती है । जैसे फागु या चैता को फागुन या चैत्र महीने के बाद गाया नहीं जा सकता है । पूर्वी, कजरी या चौहट भी वर्षा ऋतु के अतिरिक्त अन्य ऋतुओं में नहीं गाए जा सकते हैं । यह ठीक है कि विभिन्न ऋतुओं में गाए जानेवाले गीतों के कार्य विषय अलग-अलग होते हैं । परंतु उनमें सम्बंधित ऋतुओं का प्रभाव अवश्य रहता है । ऋतु विशेष के साथ तारतम्य स्थापित कर लेने के कारण ही हमने ऐसे सभी लोकगीतों को ऋतुगीत के अंतर्गत रखा हैं । इन गीतों में फागु, चैता, पूर्वी, कजरी, बारहमासा, चउहट वर्षा गीत आदि आते हैं । फागु या फगुआ माघ शुक्ल पंचमी से फाल्गुन पूर्णमासी तक और चइता तथा घाटो चैत्र प्रतिपदा से मेष की संक्रांति तक ही गाए जाते हैं । इसका विषय बसंत ऋतु में गाए जाने के कारण मुख्य रूप से श्रृंगार ही रहता है । ऐसे धार्मिकता का पुट भी इनमें मिलता है । पूर्वी, कजरी, चौमासा, बारह मासा प्राय: अषाढ-श्रावण में गाए जाते हैं । इनकी विषय वस्तु भी श्रृंगार के साथ वर्षा रहती है । चौहट या चउहट प्राय: भादों में गाया जाता है । इसमें थोड़ा नृत्य का भी अभिनय मिलता है । चौहट का विषय विविधता से पूर्ण रहता है परंतु पारिवारिक संबंधो का वर्णन इसमें विपुलता से पाया जाता है । इसे लोक नाट्यगीत के अंतर्गत भी रखा जा सकता है । चउहट में कथातत्व की प्रधानता रहती है । यहाँ चौहट के उदाहरण से इस प्रसंग को प्रारंभ करते हैं ।

(१)

पूरब भर उगले सूरजमल हे न, दइया पछिम रे भरऽ ,
पछिम भर जयेबई जउहट खेले हे नऽ ।

तुहूँ का जयबऽ धानी चउहट खेले हे न, दइया हमरो ,
हमरो के जलवा लगा के जइहँ नऽ ।

जलवा लगवते बड़ी देर होतई न, दइया दुअरे ,
दुअरे सहेली सब खाड़ हथी हे नऽ ।

जाहूँ सलेहर सब घर अप्पन हे न, दइया घर ही
घर ही में पिया बेइमनवाँ हे नऽ ।

अर्थ

चौहट खेलने वाली सखियों को घर से एक बधू कहती है कि पूर्व दिशा में सूर्य उगते हैं और मैं पछिम की गली में चौहट खेलने जाऊँगी । घर में बैठा पति कहता है कि हे धनी, जब तू चौहट खेलने जाओगी तो मेरे लिए जल रखकर ज़ाना । पत्नी कहती है कि पानी लाने में देरी होगी, दरवाजे पर सभी सखियाँ खड़ी है । अंत में खीझकर वह कहती है कि हे सखि, तुम सब घर चली जा, मेरे घर पर मन का बेइमान पति रहता है ।

(२)

खेले में गेली बाबा नगरिया, उगले इंजोरिया हो रात, रयमल ।
खेलिये-खुलिये जब घर घुरे लगली बीचही में ससुरजी के सेज, रयमल ।।

गोड़ तोरा लागीला ससुर जी बढ़इता, सेज उड़ासी जाय दऽ, रयमल ।
खेले में गेली बाबा नगरिया, उगले इंजोरिया हो रात, रयमल ।।

खेलिये-खुलिये जब घर घुरे लगली, बीच ही में भैंसुरजी के सेज रयमल ।
गोड़ तोरा लागीला भैसुरजी बढ़इता, सेज उड़ासी जायदऽ, रयमल ।।

अर्थ

नवेली बाबा की नगरी (गली) में चौहट खेलने जाती है तो वहाँ देर हो जाती है और चाँदनी उग जाती है । जब वह घर लौटकर आती है तो बीच रास्ते पर श्वसुर जी की शय्या लगी देखती है । वह उनसे प्रार्थना करती है, पैर पड़ती है कि खाट को उठा दें और मुझे जाने दें । जब वह नायिका घर में आगे बढ़ती है तो फिर वह जेठ (भैंसुर) जी की शय्या देखती है । वह उनसे भी पार्थना करती है कि हे सम्मान्य जेठ जी अपनी शय्या उठा दें ताकि मैं भीतर जा सकूँ । अत: देर होने से उसे सभी लोग सोये मिलते हैं ।

(३)

सभवा बइठले तुहूँ ससुरवा अपन रामा ,
हम जयबई, नेटुआ देखन रामा ।

जब तुहूँ जयबऽ पुतहू नेटुआ देखन रामा ,
काई देबऽ नेटुआ देखाई रामा ।

दस अंगुरिया के अंगुठिया अहो रामा ,
से हो देबो नेटुआ देखाई रामा ।

अर्थ

सभा में बैठे श्वसुर से किशोरी पुत्र वधू बाहर जाकर नेटुआ का नाच देखने के लिए आज्ञा मांगती है । श्वसुर पूछते हैं कि जब तुम नाँच देखने जायगी तो उसे क्या दोगी । वह कहती है कि मेरे हाथ की दसो अंगुलियों में अंगूठी है । वे अंगूठियाँ ही उसे दे देगी । (चंचला किशोरी की बाल सुलभ अभिव्यक्ति)

(४)

गंगा के ऊँची अररिया हे जहाँ केवला के गाछ ,
भइया जे अयलन पहुनवाँ हे बइठऽ केवला के छाह ,

निरहली में कोदो-चाउर भतवा हे, ऊपर रहरी के दाल ,
भइया जे बइठलन जेबनरवा हे, बिदा मांगले हमार ,

पिआ के बुधी ओछ बुधिया हे, दिनवा धर देलन हमार ,
करूँ न सासु बिदइया हे, डोलिया लगल हे हमार ।।

अर्थ

गंगा के ऊँचे कछार पर नारंगी का पेड़ है । वहीं नायिका की ससुराल है । आज उसके भाई पाहुन हैं और नारंगी की छाया में बैठ गए हैं । उनके खाने के लिए कांदो चावल का भात और अरहर की दाल बनाई । भैया खाने बैठे तो मेरी विदाई का प्रस्ताव रख दिया । हमारे पति समझदार नहीं हैं, उन्होंने शीघ्र ही विदाई का दिन निश्चित कर दिया । दरवाजे पर डोली लग गई, हे सास अब तो विदा करना ही पड़ेगा । (मुग्धा नायिका पति के साथ ही रहना चाहती थी)

(५)

खेलतो में रहली सुगिया सुपली-मउनिया हे नऽ ,
अहे जदुवंसी मारले मटकिया हे नऽ ।

काँख जाती लेले सुगिया सुपली मउनियाँ हे नऽ ,
अहे चली भेले अपन ससुररिया हे नऽ ।

हर जोती अयले भइया, कुदारी फारी हे नऽ ,
अहे सुगिया बहिनियाँ काहाँ गेले हे नऽ ।

सबके तो देखली मइया घर घरूअरिया हे नऽ ,
अहे सुगिया बहिनियाँ काहाँ गेलई हे नऽ ।

सुगिया बहिनिया बाबू जगली छिनरिया हे नऽ ,
अहे अपने से जा हई ससुररिया हे नऽ ।

देहुका मइया गे ढाल तरूअरिया हे नऽ ,
अहे हमे जयबे सुगिया के लिआवन हे नऽ ।

किया तोरा सुगिया गे अम्मा मरी गेलई हे नऽ ,
अहे किया तोरा भौजी गरिअवलन हे नऽ ।

नाहीं मोरा अम्मा मरी गेलन हे नऽ ,
अहे किया तोरा भौजी गरिअवलन हे नऽ ।

खेलत में रहली भइया सुपली-मउनिया हे नऽ ,
अहे जदुवंसी मारले मटकिया हे नऽ ।

अर्थ

किशोरी सुगिया घर से बाहर सुपली-मौनी से खेल रही थी । एक जदुवंशी नामक युवक मटकी (इशारे से काम प्रस्ताव का संकेत) मारने लगा । अतः वह पति-परायणा किशोरी बगल में सुपली-मौनी को जाँते अपनी ससुराल को चली गई । इधर उसका भाई हल जोतकर और कुदाल चलाकर घर लौटा तो अपनी बहन को न पाकर पूछा कि मेरी सुगिया बहन कहाँ चली गई ? वह माँ से पूछता है कि सभी के घर या रसोई में देखा परंतु सुगिया बहन कहाँ गई ? माँ कहती है कि बेटा, सुगिया जंगली है, छिनाल है, वह स्वतः ससुराल चली गई । भाई क्रोधित होकर माँ से ढाल-तलवार मांगता है और कहता है वह सुगिया को लाने जायगा ।

भाई-बहन के यहाँ जाकर पूछता है कि क्या तुम्हारी माँ मर गई ? या तुम्हारी भाभी ने गाली दी ? सुगिया कहती है कि मेरी माँ नहीं मरी है न भाभी ने गाली दी है । मैं घर से बहार सुपली-मौनी से खेल रही थी तो जदुवंसी ने मटकी मारी और मैं उसके डर से यहाँ चली आई ।

(६)

कहवाँ में रोपबई हरी केबड़ा अहो रामा ,
कहवाँ में रोपबई बेइलिया अहो रामा ।

नइहरा में रोपबई हरी केवड़ा अहो रामा ,
ससुरा में रोपबई बेइलिया अहो रामा ।

पनिये पटयबई हरी केवड़ा अहो रामा ,
दूधवे पटयबई बेइलिया अहो रामा ।

काँचे सुते गुथबई हरी केवड़ा, अहो रामा ,
रेसम सुते गुथबई बेइलिया अहो रामा ।

के मोरा पेन्हतन हरी केबड़ा अहो रामा ,
के मोरा पेन्हतन बेइलिया अहो रामा ।

भइया मोरा पेन्हतन हरी केवड़ा अहो रामा ,
सइयाँ मोरा पेन्हतन बेइलिया अहो रामा ।

अर्थ

नायिका के लिए नैहर और ससुराल दोनो प्रिय है परंतु उसकी कार्य प्रणाली में निहित भावना से पता चलता है कि ससुराल ज्यादा प्रिय है । सोचती है कि हरे-हरे केतकी पौधे को कहाँ लगावें और बेली फूल को कहाँ रोपे ? पुनः निर्णय करती है कि हरे केवड़े को वह नैहर में लगावेगी और ससुराल में बेली लगावेगी । पानी से केवड़ा को और दूध से बेला का सिंचन करेगी । कच्चा धागा से केवड़ा पुष्प को गूँथेगी और रेशमी धागे से बेली फूल को गूँथेगी । कौन केवड़ा की माला पहनेंगे और कौन बेली की माला पहनेंगे ? पुनः वह उत्तर देती है कि मेरे भाई केवड़ा की माला पहनेंगे और मेरे पति बेली की माला पहनेंगे । वस्तुतः नायिका भाई से अधिक पति को महत्व देती है जो उसके कार्यों से पता चलता है ।

(७)

सोने केरा चेहर, रूपे केरा येहर, जीरवे छंदे लगल हई केबड़िया हे ,
ताही पइसी सुतथी, सुतथी मयनवाँ, जवरे सुतथी सुरूजदेवा हे ।

रात भर देवा कयलऽ बरजोरिया, होत भिनसरवा उगी गेलऽ हे ।
जब मोरा होइहें एक नंदललवा, तोरा मइया लगौथू अछरंगवा हे ।

जब मोरा मइया लगौथुन अछरंगिया, तब हम होयबो सहइया हे ।
निहुरी-निहुरी हम अंगना बहारली, सासु निरखे जोबनवा हे ।

तुहूँ जे हलहूँ पुतहू अकेला, बान्हल केसिया कइसे अझुरायल हे ।
रातभर सासु मथवा पीरयलई, तेलवा जतइते केस अझुरायल हे ।

येहू तो उड़वल मैना गला रे घँघोटलऽ, तोहर मुहवाँ कइसे पीयर हे ?
हमरो नइहरवा सासु भइया के बिअहवा, हरदी लगइते मुहवाँ पीयर हे ।

येहू तो उड़वल मैना गला रे घँघोटलऽ नैना कजरवा कइसे मेटल हे ।
नौमन सासु घीव तइअरिया करिहँऽ नव मन चइलियौ फरइहँऽ हे ।

तुहूँ नेवतिहँऽ सासु, ससुर-भैसुरवा, हमहूँ नेवतब नइहर लोगवा हे ।
एक ओर बइठले नइहरा के लोगवा, दोसर ओर ससुरारी के लोगवा हे ।

सात खेवा मैना के डड़िया फनौलन, तइयो न छूटे गोड़ महावर हे ।।

अर्थ

सोने के महल में चाँदी का दरवाजा है जिसमें जीरे की तरह छंद-बंद लगा है । इसमें मैना देवी सोती है, साथ में सूरज देव सोते हैं । सूरज देव रात्रि भर मैना के साथ बरजोरी करते हैं और सबेरे आकश में प्रकट हो जाते हैं । मैना पूछती है कि मुझे बच्चा होगा तो आपकी माँ मुझपर दोषारोपण करेगी । सूरज कहते हैं कि जब मेरी माँ दोष लगावेगी तो मैं सहायता करूँगा ।

मैना निहुर कर आंगन बहार रही थी तो सास ने उसके दूध से भरे स्तन को देखा और कहा कि हे पुतोह, जब तुम अकेली थी तो तुम्हारे केश कैसे उलझ गए । मैना कहती है कि हे सास, रात्रिभर मेरा सर दुख रहा था और तेल लगाते समय केश उलझ गए । सास कहती है कि इसे तुमने नकार दिया और उल्टे गला घँघोट लिया परंतु तुम्हारा मुँह पीला कैसे हो गया । मैना कहती है कि हमारे नैहर में भाई का

विवाह था, हल्दी लगाने से मुँह पीला हो गया है । परंतु नैन का काजल कैसे मिट गया ? मैना पुनः कहती है कि भाई-पाहुन आए थे, भेंट करते समय काजल मिट गया है । अंत में मैना सास से कहती है मेरी परीक्षा लेकर देख लीजिए । नौ मन लकड़ी फार कर तैयार कर लें और नौ मन घी भी तैयार रखें । आप ससुर और भैंसुर को नेवता दें और मैं भी नैहर के लोगों को बुला लूँगी । इस प्रकार सारी तैयारी के साथ सभासद के बीच अग्नि प्रज्ज्वलित हो गई । नैहर-ससुराल के लोग उपस्थित थे । उसी समय मैना प्रज्ज्वलित अग्नि में सातवार प्रवेश कर निकल गई । उसके पैर के महावर पर तनी भी अग्नि का प्रभाव नहीं पड़ा । उसके सत्तीत्व की परीक्षा हो गई । (सूर्य-कुंती परम्परा, नारी पर अविश्वास)

(८)

दिनभर राजा मोरा बन के अहेरिया ,
अहे रात भर मांगे गोड़ तेलवा हे नऽ ।

हमरो से रजवा हो तेल नहीं लगतो-
अहे मोरो गोदी बेटी देवरिनया हे नऽ ।

जब तोरा रनिया तेल नहीं लगतो-
अहे चली जाहूँ अपनी नइहरवा हे नऽ ।

गोदी लेई लिहले बेटी देवरनिया ,
अहे चली भइले अपन नइहरवा हे नऽ ।

झर से झरोखा चढ़ी अम्मा निरेखे-
अहे जइसे देखूँ धिअवा चलल आवे हे नऽ ।

किया तोरा बेटी गे राजा मरि गेलन-
अहे किया तोरा गढ़वा लुटायल हे नऽ ।

नाहि मांग अम्मा गे राजा मरी गेलन-
अहे नाहि मांग गढ़वा लुटायल हे नऽ ।

लाज के बतिया अम्मा कहलो न जाय-
अहे आधी रात मांगे राजा तेलवा हे नऽ ।

आगि लागो बेटी तोहरो गेअनवा ,
अहे बजर परो तोहरो सुरतिया हे नऽ ।।

अर्थ

नायिका कहती है कि मेरे राजा (पति) दिन भर जंगल में शिकर खेलते रहते हैं और रात्रि भर पैर में तेल लगाने कहते हैं । रानी कहती है कि हे राजा, हमसे तेल लगाया नहीं बनेगा क्योंकि मेरी गोद में देवरानी बेटी है । राजा कहता है कि हे रानी, जब तुमसे तेल नहीं लगेगा तो अपनी नैहर चली जाओ । रानी ने बेटी देवरानी को गोद में उठा लिया और अपने मायके चल पड़ी । माँ ने महल के झरोखे से बेटी को आते ही जैसे देखा तैसे ही पूछा कि क्या तुम्हारा राजा मर गया या तुम्हारा गढ़ लुटा गया । बेटी ने कहा कि लज्जास्पद बात कहीं नहीं जाती । मेरे राजा नहीं मरे हैं न गढ़ लुटाया है बल्कि वे आधी रात में तेल लगाने कहते हैं । इस पर माँ और क्रोधित होकर कहती है कि तुम्हारी बुद्धि में आग लगे और तुम्हारी सुन्दरता पर बज्र पड़े । अर्थात् ये कोई काम के नहीं है ।

(९)

केकर हई हरिहर खेत गे दिल बोधनी ,
से केकर चरऽ हई कड़रूआ गे दिल बोधनी ?

बाबा के हइन हरिअर खेत गे दिल बोधनी ,
से भइया के चरऽ हइन कड़रूआ गे दिल बोधनी ।

कड़रू फेरइते ससुर देखलन गे दिलबोधनी ,
से झट-पट भेजलन नेअरवा गे दिलबोधनी ।

से अब पुतहू हो गेलन सेयान गे दिलबोधनी ।

अर्थ

आज भी ग्राम्य परिवेश में बच्चे-बच्चियों का बाल विवाह प्राय: हो जाया करता है । ऐसी ही विवाहिता किशोरी गीत की नायिका है ।

यह हरा-भरा खेत किसका है ? इसमें किसका कड़रू (पाड़ा) चर रहा है । खेत बाबा का है और भैया का कड़रू चर रहा है । एक दिन किशोरी दिलबोधनी हरे भरे खेत में कड़रू को हँका रही थी कि उसके श्वसुर ने देख लिया । उन्हें भान हो गया कि उनकी पुत्रवधू सयानी हो गई है । अत: उन्होंने शीघ्र ही द्विरागमन के लिए सूचना भेज दी कि युवती को नैहर में रहना अपेक्षित नहीं ।

(१०)

सुपली खेलइते तुहूँ बेटी गे जयपत, अगे जयपत धो लाव हाड़ी बरतनवाँ ।
हमारा से अगे अम्मा हाड़ी न धोअतवऽ अगे अम्मा फुटी जनई हाड़ी बरतनवाँ ।

तोहरा से अगे बेटी हाड़ी न धोअतवऽ, अगे बेटी चली जाहुँ डोम के घरवा ।
सुपवा बिनैते तुही डोम मोरा भइया, अहो रखबऽ कि घरवा चली जाईं ।

तोहर घरवा बहिनी कोठा अटरिया, अगे बहिनी मोरा घरे टूटली मड़इया ।
कोठा अटरिया भइया सब तेजी दिहबई, अहो भइया रीची, रीची लिपबई मड़इया ।

तोहरो घरवा बहिनी दूध भात खोरवा, अगे बहिनी मोरा घरे जूठा के असरवा ।
दूध-भात, खोरवा भइया, मइया बप्पा तेजली, हमे करबई जूठा के असरवा ।।

अर्थ

जयपत बेटी सुपली से खेल रही थी तभी माँ ने कहा कि हाँड़ी वर्त्तन धोकर ले आओ । जयपत कहती है कि माँ मुझसे हाड़ी वर्त्तन नहीं धोया जायगा क्योंकि वह धोते समय फूट जायगा । इस पर माँ ने क्रोधित होकर कहा कि तुमसे वर्त्तन नहीं धोया जायगा तो तुम डोम के घर चली जाओ । डोम अपने घर सूप बीन रहा था, उसी समय जयपत ने कहा कि हे डोम भाई मुझे अपने घर रखोगे कि मैं लौटकर चली जाऊँ । डोम ने कहा कि हे बहन तुम्हारे यहाँ कोठा अटारी है और हमारे यहाँ टूटी हुई कुटी है । भाई, मैं कोठा-अँटारी सब त्याग दूँगी, मड़ई को साफ सुथरा करके लिपूँगी । डोम कहता है कि बहन, तुम्हारे घर में दूध-भात, खोआ है और मेरे घर में दूसरे के जूठा अन्न का ही भरोसा है । हे भाई मैने दूध, भात खेआ के साथ माँ-बाप को भी त्याग दिया, अब हमें जूठा की ही आशा है । मैं इसी तरह जीवन बीता लूँगी । भारतीय समाज में पुत्री का तिरस्कार-एक भयंकर विडम्बना ।

(११)

धोबीन जे धोबले गंगा रे जमुनवा, से राजा दिलजोड़ के ।
राजा बेटा खेलऽ हई अहेरिया, से राजा दिलजोड़ के ।

ओते चलूँ, ओते चलूँ राजाजी के बेटवा, से राजा दिलजोड़ के ।
परी जइहे रेह के छिटकवा से राजा दिलजोड़ के ।

तोरा लेखे अगे धोबीन रेह के छिटकवा, से राजा दिलजोड़ के ।

(१२)

राजा-रानी मिली पोखरा खनौलन हो राऽऽम ।
ये रामा पोखरा में पनिया नहीं उखड़े हो राऽऽम ।

आवहु ब्रह्मन बइठऽ सतरंगियो हो राऽऽम।
ये रामा पोखरा के करऽ न विचरवा हो राऽऽम।

नया पोथी देखलन ब्रह्मन, पुराना पोथी हो राऽऽम।
ये रामा पोखरा मांगे दौलत बेटी हो राऽऽम।

मोरा पिछुअरवा हजमवा भइया हितवा हो राऽऽम।
ये रामा दौलत घर देहूँ नऽ नेवतबा हो राऽऽम।

झरऽ ये झरोखा चढ़ी दौलत निरेखे हो राऽऽम।
ये रामा जइसे देखूँ हजमा आवई हो राऽऽम।

आबहु हजमा हो बइठऽ संतरंगिया हो राऽऽम।
ये रामा कहऽ भइया नइहरा के कुसलिया हो राऽऽम।

सब कुसलिया नइहरा ठीक हवऽ हो राऽऽम।
ये रामा तोरो भइया के होबऽ हई बिअहवा हो राऽऽम।

सभवा बइठल तुहूँ ससुरवा मोरा हो राऽऽम।
ये रामा अबकी नेअरवा नइहरवा जाय दऽ हो राऽऽम।

अबकी नेबतवा पुतहू मत जाहूँ हो राऽऽम।
ये रामा येही नेबतवा जनवा जतवऽ हो राऽऽम।

सेजिया सोअइते तुहूँ बलुमुआ हमर हो राऽऽम।
ये रामा अबकी नेवतवा नइहरवा जाय दऽ हो राऽऽम।

अब की नेबतवा नइहर मत जाहूऽ हो राऽऽम।
बिअहवे बहनवे जनवाऽ जतवऽ हो राऽऽम।

सबकं कहनवा दौलत टारी देलन हो राऽऽम।
ये रामा अपने से चललन नइहरवा हो राऽऽम।

झरऽ ये झरोखा चढ़ी अम्मा निरेखे हो राऽऽम।
ये जइसे देखलन दौलत चलल आवई हो राऽऽम।

लेइये में लेहूँ दौलत सोने के सिन्होरवा हो राऽऽम।
एक टीका खीचले दौलत, दोसर टीका हो राऽऽम।

ये तेसरे में पोखरा भरी गेलई हो हो राऽऽऽम॥

अर्थ

एक प्राचीन प्रथा (कुरीति) जिसमें पुत्री बली से पोखर में पानी उखड़ता है ।

राजा-रानी ने मिलकर पोखरा खुदवाया । लेकिन तालाब में पानी नहीं निकला तो ब्राह्मण को संतरंगी आसन पर बैठाकर पोखर पर विचार करने के लिए कहा गया । ब्राह्मण ने नये-पुराने ग्रंथों को देखकर वताया कि पोखरा दौलत-बेटी का बलिदान मांगता है । अत: पीछे के हजाम को बुलाया गया और दौलत बेटी के घर निमंत्रण देने के लिए भेज दिया गया । वहाँ कोठे के झरोखे से दौलत ने हजाम को आते देखा तो उसे बुलाकर सतरंगी पर बैठाया और नैहर का कुशल क्षेम पूछा । हजाम ने का कि नैहर का सब कुशल ठीक है, तुम्हारे भाई का विवाह है, उसी में बुलाने आया हूँ । दौलत ने सभा में बैठे श्वसुर से नैहर में जाने की अनुमति माँगी । श्वसुर ने कहा कि इसबार तुम मत जाओ । इस नेवता में तुम्हारी जान जाने की सम्भावना है । अपने सेज पर सोने वाले पति से भी पूछा तो उसने भी यही कहा । परंतु सभी की बातों को दौलत ने टाल दिया और स्वयं नैहर चल पड़ी । यहाँ माता ने महल के झरोखे से जैसे ही देखा कि दौलत बेटी चली आ रही है तैसे ही कहा कि हे दौलत बेटी, सोने की सिन्दुरदानी में सिन्दुर ले लो और बाबा के पोखर को पूज आओ । दौलत पोखरा पूजने गई-एक टीका लगाया, दूसरा टीका लगाया और तीसरे टीका लगाते ही पोखरा भर गया और दौलत बेटी उसी में डूब गई ।

(१३)

मिलहूँ का सखिया, मिलहूँ सलेहर, मिली-जुली सैरा नेहैबई हे नऽ ।
खोइछवा में लेले चंपिया जीरहुल मटिया, हथवा में लेले सोने कंगहिया हे नऽ ।

सब सखिया मिली घर चली अयली, असगर चंपिया केसिया झारे हे नऽ ।
झर ये झरोखा चढ़ी राजा निरेखे, केकरी बहिनिया केसिया झारे हे नऽ ।

तुहूँ न जानलऽ राजा हो नरायण सिंह, गंगा राम बहिनिया केसिया झारे हे नऽ ।
केने गेलऽ किया भेलऽ गाँवाँ चौकीदरवा, गंगा राम के खबर जनावऽ हे नऽ ।

किया राजा मारतन, किया गरिअवतन, किया राजा नगर छोड़वतन हे नऽ ।
बारह बरस राजा नगर बसौलन, कबहूँ न दिहलन खबरिया हे नऽ ।

आवहुँ गंगा राम पलंग चढ़ी बइठऽ, सरवे बहनोइया नतवा जोड़ऽ हे नऽ ।
देबवऽ गंगा राम डालीभर सोना चंपिया बहिनियाँ हमरा के देहुँ हे नऽ ।

आगि लगवऽ राजा डाली भर सोनवाँ, मोरा बंसे चंपिया न जनमल हे नऽ ।
कने गेले किया भेले गाँव चौकीदरवा, गंगा राम के मुसुक चढावऽ हे नऽ ।

झर ये झरोखा चढ़ी मइया निरेखे, धिअवा करनवे पुतवा बान्हल गेल हे नऽ ।
झर ये झरोखा चढ़ी भौजी निरेखे, ननदी करनवे सामी बान्हल गेल हे नऽ ।

लेहु का मइया गोदी के बलकवा, हम जबइन भैया के छोड़ावन हे नऽ ।
लेहु का भउजी हे अपन घरूअरवा, हम जयबे भइया के छोड़ावन हे नऽ ।

एक ड्योढ़ी गेली चंपिया दुई ड्योढ़ी गेली, पर गेली राज के नजरिया हे नऽ ।
मुँहवा पटुक देले राजा हँस गइले, गंगा राम के मुसुक छोड़ावऽ हे नऽ ।

जब तोहे राजा हमें से लोभयलऽ हम जोगे पूर्वी सेनुरवा हे नऽ ।
हँसी-हँसी राजा सेनुरा बेसहले, रोई-रोई टिकले बेटी चंपिया हे नऽ ।

जब तोहे राजा हमें से लोभयलऽ, हमें जोगे लाली-लाली डड़िया हे नऽ ।
हँसी-हँसी राजा डड़िया बेसहले, रोई-रोई चढ़े बेटी चंपिया हे नऽ ।

लाल डड़िया के सबुजी ओहरिया, लगी गेलो बतीसो कहरवा हे नऽ ।
गोड़ तोरा लागिला अगिला कहरवा, बाबा के पोखरवा डाड़ी बिलमइहऽँ हे नऽ ।

जब तोरा चंपिया लगले पिअसिया, हमरे गेडुवा पनिया पीय हे नऽ ।
तोहरा गेडुअवा राजा जलमो सिनेहिया, बाबा के पोखरबा सपना होतई हे नऽ ।

एक चीरू पीले चंपिया, दूई चीरू पीले, तीसरे में खिलले पताल हे नऽ ।
हम तो जनइती चंपिया एता बुध छेरबऽ डड़िया पइसी जतिया लेती हे नऽ ।

अर्थ

सखियाँ सब मिलें, सहेलियाँ सब एकत्रित हों और सभी मिल-जुलकर सरोवर स्नान करने चलें । एक सुन्दरी चंपिया ने भी हाथ में चिकनी मिट्टी और सोने की कंघी लेकर स्नान करने गई । सभी सखियाँ स्नान कर घर लौट आई और अकेली चंपिया केश झारती रह गई । राजा ने झरोखे से देखा तो पूछा कि किसकी बहन केश झार रही है । क्या राजा नारायण सिंह नहीं जानते कि गंगाराम की बहन केस झार रही है ।

राजा ने गाँव के चौकीदार को बुलाया और गंगाराम को सूचित किया । गंगा राम ने सोचा कि क्या राजा गाली देंगे या मारेंगे ? बारह वर्ष से राजा के नगर में रहता

हूँ, कभी उन्होंने खबर नहीं दी । अतः गंगाराम राज दरबार गया । राजा ने उचित सत्कार किया । पलंग पर बैठाकर पूछा कि हम तुम साले-बहनोई का संबंध जोड़ लो । मैं डाली भर सोना दूँगा, मुझे अपनी चंपिया बहन दे दो । गंगा राम ने कहा कि डाली भर सोना में आग लगे, मेरी बहन चंपिया अब मेरे बंस की नहीं है (विवाहिता है) राजा क्रोधित होकर पुनः चौकीदार को बुलाया और गंगा राम को बँधवा दिया । इधर खिड़की से माँ देख रही थी कि बेटी के कारण मेरा बेटा बाँधा गया है । भाभी ने भी देखा कि ननद के कारण मेरा पति बाँध दिया गया है ।

चंपिया ने स्थिति को ताड़ लिया और माँ से कहा कि मेरी गोद का बालक पकड़ो, मैं भैया को छुड़ाने जाऊँगी । भाभी को कहा कि अपनी रसोई सम्हालो, मैं भैया को छुड़ाने जाऊँगी । वह चल पड़ी । एक-दो दरबाजे को पार कर रही थी कि राजा की नजर उस पर पड़ी । राजा मुँह पर वस्त्र रखकर हँस दिया और कहा कि गंगा राम को खोल दो । चंपिया ने कहा कि हे राजा, जब आप हम पर मोहित हैं तो हमारे योग्य पूर्वी सिन्दुर ला दें । हँस-हँस कर राजा ने सिन्दुर खरीदा और रो-रोकर चंपिया ने टीक लिया । चंपिया पुनः कहती है कि जब आप हम पर मोहित है तो हमारे लायक लाल-लाल डोली की व्यवस्था करें । हँस-हँसकर राजा ने नई डोली खरीदी और रो-रोकर चंपिया उसमें बैठ गई । लाल डोली में सब्ज रंग का पर्दा लगा था जिसे बत्तीस कहार ढो रहे थे । चंपिया ने अगले कहार से प्रार्थना की कि हमारे बाबा के पोखर पर डोली रखना । राजा ने देखा तो कहा कि जब तुम्हें प्यास लग गई है तो हमारे जलपात्र से पानी पी लो । चंपिया ने कहा कि आप का पात्र तो आजीवन उपलब्ध रहेगा । परंतु बाबा का पोखरा तो स्वप्नवत् हो जाएगा । चंपिया पोखर से एक चिल्लू पानी पी सकी और दूसरा पीने के बाद उसमें कूदकर डूब मरी । यह देखकर राजा अफसोस करता रहा कि मैं जानता कि चंपिया इनती चतुराई से काम लेगी तो उसे मैं डोली में ही प्रवेश कर पथ भ्रष्ट कर देता । इस प्रकार भारतीय ललना ने अपनी चतुराई से दोनों कुलों की प्रतिष्ठा बचायी ।

(१४)

मोर पिछुअरवा गूलर के गछिया हे, गूलर के गछिया हे, गूलर फरले लदभद हो राम ।
गूलर चुनीये-चुनी रसवा चुअवली, से रसवा चुअवली, रसवा भइले घइला चार ।

ओही रसवा से चुनरी रंगवली, से चुनरी रंगवली, से चुनरी भइले टहकार ।
चुनरी पहिरी हम चलली ससुररिया, से चलली ससुररिया से रोवे लगलन रघुबर इयार ।

चुप रहूँ चुप रहूँ रघुबर इअरवा हो, रघुबर इअरवा हो, योगिया के भेसधरी अइहँऽ ।
दूई दिन बीतले, चार दिन बीतले आ गये रघुबर इयार, भीख लागि दुअरे पर खाड़ ।

मचिया बइठले तुहूँ सासुजी बढइतीन, सासुजी बढ़इतीन, जोगिया के भिक्षा हम देब ।
किया तोरा अहे पुतहू, भाई रे भतिजवा, भाई रे भतिजवा, किया तोरा नान्हे के इयार ।

नाही मोरा सासुजी भाई रे भतिजवा, भाई रे भतिजवा, नाही मोरा नान्हे के इयार ।
मोरा नइहरवा सासु गाय रे भइसिया, गाय रे भइसिया, से हमे रघुवर गइया हो चराय ।

अर्थ

नायिका कहती है कि मेरे घर के पीछे गूलर का पेड़ है जो बहुत ज्यादा फला है । मैने गूलर चुन-चुनकर रस चुलाया जो चार घैला हुआ । उसी रस से अपनी चुनरी रंगवाई जिसका रंग बड़ा चटकदार हुआ । इसी चुनरी पहनकर ससुराल चली तो मेरा प्रेमी रघुबर देखकर रोने लगा । मैने उसे चुप कराया और कहा कि योगी का वेश बनाकर मेरे यहाँ आना । वहाँ एक दो दिनो के बाद रघुबर आ गया और भिक्षा के लिए दरवाजे पर खड़ा हुआ । नायिका ने सास से पूछा कि मैं योगी को भिक्षा देने जाऊँगी । इसपर सास ने कहा कि क्या वह तुम्हारा भाई-भतीजा है या बचपन का प्रेमी है ? नायिका ने कहा कि वह न मेरा भाई भतीजा है न बचपन का प्रेमी है बल्कि हमारे नैहर में गाय-भैंस रहती है, यह उन्हीं का चरवाहा है । यह खण्डिता नायिका चतुर और वाग्मी है ।

(१५)

अगना बहारी धुरवा लवली अहो रामा, जमी गेले आमके अमोलवा अहो रामा ।
जब अमवा भेलई दू पतवा अहो रामा, तब सुगवा हेरी-हेरी जा हई अहो रामा ।

जब अमवा भेलई चार पतवा अहो रामा, तब सुगवा हेरी-हेरी जा हई अहो रामा ।
जब अमवा फैलले अकसवा अहो रामा, तब सुगवा हेरी-हेरी जा हई अहो रामा ।

ज़ब अमवा लगलई टिकोरवा अहो रामा, तब सुगवा हेरी-हेरी जाह हई अहो रामा ।
जब अममा पकी गेलई अहो रामा, तब बुढ़वा बइठलई अगोरवा अहो रामा ।

अर्थ

आंगन बहारकर घूरे को जमा कर दिया । उस पर अमोला (आम का पौधा) जम गया । जब आम का दो पत्ता हुआ तभी से सुग्गा आम फलने की आशा में मड़राने लगा । पुनः आम का पौधा चार पत्ते का हुआ तो सुग्गा घूम-घूम कर देखने लगा । जब पौधा वृक्ष बनकर आकाश में फैल गया तो सुग्गा देखकर चला गया । जब आम का टिकोला लगा तो सुग्गा देखने आया और पकने की आशा में घूमकर चला गया । लेकिन जैसे ही आम पक्का तो सुग्गे ने देखा कि वहाँ आम का अगोरा बूढ़ा व्यक्ति बैठ गया है । (दूसरों की चीज पर आशा लगाने वालों को तो निराशा हाथ लगती ही है)

(१६)

खेलतो में रहली सुपली मउनिया अहोरामा, आई गेलई अचके नेअरवा अहो रामा ।
अबकी नेअरवा बाबा फेरी दऽ अहो रामा, खेले देहूँ भादो के चउहटिया अहो रामा ।

खेलतो में रहली सुपली मउनिया अहो रामा आई गेले ससुरा नेअरवाअ हो रामा ।
आई गेले भैंसुरा नेअरवा अहो रामा, आई गेले देबरा नेअरवा अहो रामा ।

अबकी नेअरवा फेरी दऽ अहो रामा, खेल दऽ भादो के चउहटिया अहो रामा ।
खेलत में रहली सुपली–मउनिया अहो रामा, आई गेलई सइयाँ जी नेअरवा अहो रामा ।

अबकी नेअरवा मइया फेरी दऽ अहो रामा, दमदा नेअरवा कैसे फेरी अहो रामा ।
एतना काहे बाबा अकुतयलऽ अहो रामा, झटसीन धयलऽ नेअरवा अहो रामा ।

एतना काहे अम्मा अकुतयलऽ अहो रामा, झटसीन देलऽ अकबरिया अहो रामा ।
एतना काहे मइया अकतुयलऽ अहो रामा, झटसीन डड़िया फनौलऽ अहो रामा ।

अर्थ

बाल विवाहिता जब सुपली–मौनी (बच्चियों का खेल) खेल रही थी अचानक द्विरागमन की खबर आई । किशोरी ने पिता से कहा कि इस बार गवना का दिन निश्चित नहीं करें, भादो का चौहट खेलने दें । वह सुपली–मौनी खेल रही थी कि स्वयं श्वसुरजी नेयार लेकर (सुदिन निश्चित करने के लिए) आ गए । इसके बाद तो भैंसुर और देवर भी वारी–बारी से नेयार लेकर आते गए । किशोरी के कहने पर सभी को लौटा दिया गया तभी उसके पति ही स्वयं आ गए । अब पति को कैसे लौटाया जाय । अतः पिता ने कहा कि सभी को तो किसी प्रकार लौटा दिया, दामाद को कैसे लौटावें ? लड़की कहती है कि पिताजी, इतना क्यों घबरा कर दिन निश्चित कर दिया । माँ ने भी शीघ्र गले से मिलकर बिदाकर दिया । भाई से कहती है कि क्यों घबराकर डोली चढ़ा दी ?

(१७)

पीपरा के पतवा झालर मारे जी बाबा ,
कि बरवातर खेलन हम जबई जी बाबा ।

खेलते–खुलते बेरिया झुकलई जी बाबा ,
से आई गेलई नउआ नेअरवा जी बाबा ।

नउवा नेअरवा फेरी देहूँ जी बाबा ,
कि नउवा के संग हम न ज़यबई जी बाबा ।

खेलते-खुलते बेरिया झुकलाई जी बाबा ,
से आई गेलई ससुरा नेअरवा जी बााबा ।

ससुरा नेअरवा फेरी देहूँ जी बाबा ,
से राहे-बाटे घुघवा तनवतन जी बाबा ।

भैंसुरा नेअरवा फेरी देहूँ जी बाबा ,
से राहे-बाटे छुआछुत करतन जी बाबा ।

खेलते-खुलते बेरिया झुकलई जी बाबा ,
से आई गेलन सइयाजी नेअरवा जी बाबा ।

सइया नेअरवा कइसे फेरब जी बाबा ,
से सइयाँ के संगे हमें जयबई जी बाबा ।

अर्थ

पीपल के पत्ते डोलते रहते हैं, मैं बड़ के पेड़ के नीचे खेलने जाऊँगी खेलते-खेलते सूर्य पश्चिम की ओर झुक गया और नाई नेआर लेकर श्वसुराल ले जाने के लिए आ गया । नायिका पिताजी से कहती है कि नाई को लौटा दीजिए, मैं नाई के साथ नहीं जाऊँगी । पुनः श्वसुरजी नेआर लेकर आ गए । उन्हें भी लौटा देने का अनुरोध करती है क्योंकि श्वसुर जी घूँघट काढ़कर चलने कहेंगे । इसी प्रकार वह खेल रही थी तो बेर झुक गया और भैंसुर (जेठ) नेआर लेकर आ गए । वह इन्हें भी लौटा देने के लिए पिता से कहती है क्योंकि जेठजी रास्ते में छुआछूत करेंगे । अंत में उसका पति ही लिवाने आ गया तो नायिका कहती है कि स्वामी को कैसे लौटाया जा सकता है । अतः मैं उनके साथ श्वसुरार चली जाऊँगी ।

(१८)

गाँव के पछिम झाँझर पीपर हे न ,
अहे ताहि तर जोगी चौपड़ खेले हे न ।

बेर ही बेर बलमु बरजूँ हे न ,
अहे जोगी संग चौपड़ मत खेलऽ हे न ।

पहिला पझरिया पिया खेललन हे न,
अहे हार गेलन कान दूनो सोनवाँ हे न।

बेर ही बेर तोरा बरजूँ हे न,
अहे जोगी संग चौपड़ मत खेलऽ हे न।

दूसर पझरिया पिया खेललन हे न,
अहे हार गेलन मइया बहिनिया हे न।

तेसरे पझरिया पिया मोर खेललन हे न,
अहे हार गेलन सुन्नर धनियवाँ हे न।

अर्थ

गाँव से पश्चिम ठूँठ पीपल के नीचे योगी चौपड़ खेल रहा है। नायिका का पति खेलने के लिए उतावला है। वह अपने पति को बारबार मना करती है लेकिन वह मानता नहीं। ज्योंही उसने चौपड़ में पहली पारी लगाई त्योंही दोनों कान का स्वर्णाभूषण हार गया। पुनः उसकी पत्नी चौपड़ खेलने से मना करती है कि योगी के साथ चौपड़ मत खेलें। लेकिन पति महोदय मानते नहीं और दूसरी पारी में माँ-बहन को हार गए। फिर भी उनकी आदत नहीं छूटी और तीसरी बार भी चौपड़ खेलने लगे। इस बार तो अपनी सुन्दर पत्नी को ही हार कर चले आए।

(१९)

बारह बरीस पर लौटल बनिजरवा हो रयमल,
से हो पिअवा उतरे बहिनिया घर हो रयमल,

जीवा के हुलासे हम पनिया लेके गेली हो रयमल,
से हो पिअवा गोड़वा धोवे बहिनिया घर हो रयमल,

जीवा के हुलासे हम जेबनो लेके गेलीअई हो रयमल,
से हो पिअवा जेवना जेवे बहिनिया घर हो रयमल,

आधी रात अगली, पहर रात पिछली हो रयमल,
से हो पिअवा खोलवऽ हई केवड़िया हो रयमल,

दूर छू-छू कुतवा से दूर छू-छू बिलइया हो रयमल,
दूर छू-छू चोरवा चंडलवा हो रयमल,

नाही हई कुतवा से नाही बिलइया हो रयमल ,
नाही हई चोरवा चंडलवा हो रयमल ,

हम हिअई बबुआ के बाबूजी हो रयमल ,
से चल जाहूँ कानुन-घोनसरिया हो रयमल ,

कानु घोनसरिया में झोल से मकरिया हो रयमल ,
सोवे देहूँ अपन गोड़थरिया हो रयमल ,

हमर गोड़थरिया चुरवा-पइरिया हो रयमल ,
लगी जइहें चुरवा के चोटवा को रयमल ,

लगे देहूँ-लगे देहूँ चुरवा के चोटवा हो रयमल ,
सही लेवई आज के रतिया हो रयमल ,

अर्थ

पत्नी कहती है कि उसका वंजारा पति वारह वर्षों के वाद लौटा तो अपनी बहन के घर ठहरा । वह कहती है कि जी में प्रसन्नता के कारण मैं पानी लेकर गई तो उसका पति बहन घर में ही पैर धोने लगा । फिर मैं प्रसन्न होकर भोजन लेकर गई तो उन्होंने बहन के घर ही भोजन कर लिया । पत्नी घर आकर सो गई तो आधी रात में उसका पति कीवाड़ खोलवाने आया । पत्नी ने कुत्ता-बिल्ली समझकर दुत्कार दिया फिर चोर चाण्डाल जानकर डाँट दिया । यह सुनकर पति ने कहा कि कोई कुत्ता-बिल्ली नहीं हैं और न चोर चाण्डाल हैं । हम तो बावू के बाबूजी हैं । तब तो पत्नी ने स्पष्टतः कहा कि आप काँदू की घोनसारी में चले जायें । पति ने कहा कि काँनु की घोनसारी में मकड़ी के जाले लगे हैं । अतः तुम अपने पैताने सोने दो । पत्नी ने कहा कि मेरे पैर में मोटे-मोटे गहने हैं जिससे चोट लग जायगी । पति ने कहा कि गहने से चोट लगने दो, आज की रात्रि चोट भी सह लूँगा । (निर्मोही पति को यथोचित उत्तर)

(२०)

अंगना बहारी दुरवा घुरवा लवली हो रयमल ,
जामी गेले तरवा खजुरवा हो रयमल ,

तरवा-खजुरिया चढ़ी सँवरो निरखे हो रयमल ,
कै कोस बसे नइहरवा हो रयमल ?

कै कोस बसे ससुररिया हो रयमल ?
दस कोस बसे मोरो नइहरवा हो रयमल ?

बीस कोस बसे ससुररिया हो रयमल ,

अर्थ

आंगन बहार कर दरवाजे पर घूरे को जमाकर दिया उस घूरे पर ताड़, खजूर का पेड़ जम गया । ताड़, खजूर के लम्बे पेड़ पर चढ़कर साँवली देख रही है कि नैहर कितने कोस पर बसा हुआ है ? श्वसुराल कितने कोस पर बसा है । लगता है नैहर दस कोस और श्वसुराल बीस कोस पर अवस्थित है ।

(२१)

नदिया किनारे में बुनली जीरवा, ननद हे, जीरवा फरले लदभूद ।
देहूँ का सासु हे सुपवा-बढ़निया ननद हे, जीरवा बहारी घरवा लायब ।

जीरवा बहारत टूटल बढ़नियाँ ननद हे, सासु मोरा देतन ओरहनवाँ ।
रहिया-बटोहिया से तुहूँ मोरा भइया, ननद हे, हमरो सनेसवा लेले जाहूँ ।

येहो सनेसवा भइया भउजी से न कहिहँऽ , ननद हे, भउजी मोरा देतन ओरहनवाँ ।
येहो सनेसवा भइया मइया सेन कहिहँऽ , ननद हे, मचिय बइठल मइया रोयतन ।

ये हो सनेसवा भइया बाबूजी समझइहँऽ ननद हे, बढ़नी के बरधी लदवयतन ।
आगे-आगे आवेला बढ़नी-बरधिया ननद हे, पाछे-पाछे आवे जेठ-भइया ।

अर्थ

नायिका ने नदी किनारे जीरा बुना । जीरा उपजकर खूब फला । उसने सास से सूप-बढ़नी मांगी कि जीरा बहार कर घर ले आऊँगी । परंतु जीरा बहारते समय बढ़नी टूट गई । इसपर उसे भय है कि उसकी सास उलाहना देगी । अतः वह राह के बटोही से कहती है कि हे भाई, मेरा संदेश लेते जा परंतु यह संदेश मेरी भाभी से मत कहना क्योंकि वह भी उलाहना देगी । उसने इस संदेश को माँ से भी कहने नहीं कहा । वह तो सुनकर मचिया पर बैठी-बैठी रोने लगेगे । हे बटोही भाई, यह संदेश केवल मेरे पिताजी से कहना कि वे बैल पर लाद कर बढ़नी पहुँचा देंगे । वस्तुतः ऐसी ही हुआ । आगे-आगे बढ़नी से लदा बैल आ रहा है तो पीछे-पीछे उसका बड़ा भाई भी चला आ रहा है ।

(२२)

जाही दिन से ससुर हो कयलऽ गवनवाँ राम ,
ताही दिन से ससुर छूटल मोर नइहरवा राम ,

आई गेलई गंगा, उमड़ी गेलई जमुनवाँ राम ,
कइसे जयबऽ पुतहु अपनी नइहरवा राम ,

कटबई में काँच बँसवा, बिनबई नौरंगिया राम ,
ताही चढ़ी ससुर जयबई नइहरवा राम ,

जाही दिन से भैंसुर हो छूलन लिलरवा राम ,
ताही दिन से भैंसुर छूटलई नइहरवा राम ,

आई गेलई गंगा, उमड़ी गेलई जमुनवाँ राम ,
कइसे जयब भवहु अपनी नइहरवा राम ,

काटवो में काँच बँसवा , बिनबई नौरंगिया राम ,
ताही चढ़ी भैंसुर जयबई नइहरवा राम ,

जाही दिन प्राभु धयलन अंगुठवा राम ,
ताही दिन से प्राभुजी छुटलई नइहरवा राम ,

काटबो में काँच बँसवा, बिनबई नौरंगिया राम ,
ताही चढ़ी प्राभुजी जयबो नइहरवा राम ,

टूट जइहें काँच बँसवा, दही जइहें नौरंगिया राम ,
चली जइहें धनियाँ, चढ़ती जवनियाँ राम ।।

अर्थ

नव विवाहिता जब से श्वसुराल आई, तभी से उसका नैहर छूट गया । द्विरागमन के बाद वह कभी नैहर नहीं गई । वह अपने श्वसुर से इस बात की ओर संकेत करती है तो श्वसुर कहते हैं कि गंगा में बाढ़ आ गई है और यमुना उफन रही है । हे बहू, कैसे अपने नैहर जाओगी ? बहू कहती है कि कच्चा बाँस काटूँगी जिससे नाव बनाऊँगी और उसी पर चढ़कर नैहर चली जाऊँगी । पुनः वह अपने जेठ से कहती है कि जिस दिन से आपने ललाट का स्पर्श किया है, उसी दिन से मेरा नैहर छूट गया । भैंसुर भी बाढ़ की बात करता है । बधू नाव बनाकर पार हो जाने की सम्भावना व्यक्त करती है । अंत में वह अपने पति से कहती है कि हे प्रभु, आपने जिस दिन से मेरा अंगूठा पकड़ा है, उसी दिन से मेरा नैहर छूट गया है । पति ने भी कहा कि गंगा में बाढ़ आ गई है और यमुना उफन रही है । कैसे जाओगी । पत्नी कहती है कि कच्चा बाँस काटूँगी और उससे नाव बनाऊँगी तथा उसी पर चढ़कर

नदी पार श्वसुराल चली जाऊँगी । पति कहता है कि कच्चा बाँस टूट जायगा और नाव बह जायगी और हे धनी, तुम्हारी चढ़ती जवानी समाप्त हो जायगी ।

सारांश-मत जाओ ।

(२३)

एक ओर सींझले खीरिया- जउरिया हो राम ,
दूसरा ओर सींझे कच्चा दूधवा हो राम ।

ससुर-भैंसुर जेवले खीरिया- जउरिया हो राम ,
मोरे प्रभु पीय अउटल दूधवा हो राम ।

हाली-हाली जेवहूँ ससुर भैंसुरवा हो राम ,
दुअरे सहेली सब खाड़ हो राम ।

कउनी नगरिया के सखिया-सलेहर हो राम ,
कउनी नगरिया चउहट खेलवई हो राम ।

हरदी नगरिया के सखिया-सलेहर हो राम ,
पीपरी नगरिया चौहट खेलब हो राम ।

खेलते-खुलते बीतले आधी रतिया हो राम ,
कउनीं बहनवें घरवा जयबई हो राम ।

थारी भर लेबई में अगर चननवाँ हो राम ,
डाली भर लेबई पकल पनवाँ हो राम ।

चनन छिरकते घरवा जयबो हो राम ,
पनवाँ चभइते सेजिया सोबई हो राम ।

खोलूँ-खोलूँ प्रभु हो सोवरन केबड़िया हो राम ,
दुअरें भिंजले लामी केसिया हो राम ।

कइसे में खोली धानी सोबरन केवड़िया हो राम ,
मोरो गोद सुतल सवतीनियाँ हो राम ।

खोलूँ-खोलूँ प्रभु हो सोवरन केवड़िया हो राम ,
सवतीन के रूप देखे आयव हो राम ।

का तुहूँ देखब धानी सवतीन के रूपवा हो राम ,
चनवाँ-सूरूजवा छपित होवे हो राम ।

देहूँ का सासु हे सेर-बटखरवा हो राम ,
सवतीन के मांग फोरी देबइन हो राम ।

अर्थ

नायिका कहती है कि एक ओर ईख के रस में खीर बन रही है और दूसरी ओर कच्चा दूध औंटा जा रहा है । श्वसुर और जेठ खीर खा रहे हैं और मेरे पति गरम दूध पी रहे हैं । वह कहती है कि श्वसुर जी और भैंसुर जी, शीघ्र भोजन कर लें, दरवाजे पर सहेलियाँ खड़ी हैं । किस नगर की सखियाँ-सलेहर हैं और किस नगर चौहट खेलेंगी ? हरदी नगर की सखियाँ हैं और पीपरी नगर चौहट खेलेंगी । चौहट खेलते-खेलते आधी रात बीत गई । अब नायिका कैसे घर जाय, क्या बहाना करे ? उसने सोचा कि थाली में सुगन्धित चंदन लेगी और डाली में पका पान भर लेगी । इस प्रकार चंदन छिड़कते घर जायगी और पका पान खाते प्रिय की शय्या पर जायेगी । दरवाजे पर जाकर पति को सुवर्ण किवाड़ खोलने कहती है, क्योंकि उसकी लम्बी केश-राशि वर्षा में भींग रही है । उसका पति भीतर से बोलता है कि हे धनी, सुवर्ण किवाड़ कैसे खोलूँ मेरी गोद में तो तुम्हारी सौत सोई है । फिर भी पत्नी दरवाजा खोलने कहती है कि मैं सौत का रूप देखने आऊँगी । पति कहता है कि तुम सौत का रूप क्या देखोगी ? उसके सामने तो चाँद और सूर्य छिप जायेंगे । इस पर पत्नी क्रोधित होकर सास को कहती है कि हे सास, मुझे पत्थर का बटखारा दें, मैं उसी से सौत का सर (मांग) फोड़ दूँगी ।

(२४)

केई रोपले झालर धनवा, केई रोपले अनार ,
केई रोपले नरियर फरवा, नरियर लगले अकास ।

ससुर रोपले झालर धनवा, भैंसुर रोपले अनार ,
मोरे प्रभु रोपे नरियर फरवा, नरियर लगले अकास ।

ससुर पटावे झालर धनवा, भैंसुर पटावे अनार ,
मोरे प्रभु पटावे नरियर फरवा, नरियर लगले अकास ।

ससुर तोड़ले झालर धनवा, भैंसुर तोड़ले अनार ,
मोरे प्रभु तोड़े नरियर फरवा, नरियर लगले अकास ।

ससुर खाले झालर धनवा, भैंसुर खाले अनार,
हम-प्रभु खयबई नरियर फरवा, नरियर लगले अकास ।।

अर्थ

किसने झालरदार धान रोपा है और किसने अनार रोपा ? किसनें नारियल का फल लगाया है जो आकाश में फलता है । पुनः नायिका कहती है कि श्वसुर ने झालर धान रोपा है और भैंसुर ने अनार रोपा तथा पति ने नारियल फल रोपा है जो आकाश में फलता है । श्वसुर झालर धान पटाते हैं, भैंसुर अनार पटाते हैं और पति नारियल फल पटाते हैं । परिणाम-स्वरूप श्वसुर ने झालर धान काटा और खाया, भैंसुर ने अनार पटाया और तोड़ा-खाया । इसी प्रकार मेरे प्रभु (पति) ने नारियर फल को तोड़ा और हम दोनों नारियल फल को ही खायेंगे ।

(२५)

केकरी अंगनवाँ हे नीमिया के गछिया, केकरी अंगनवा छाह, मोरीआ गइले।
ननदी अंगनवाँ नीमिया के गछिया, हमरी अंगनवाँ छाह, मोरीआ गइले ।

ताहीतर पातर पियवा पलंग बिछा देलन, हमरी राजाजी के नीन, मोरीआ गइले ।
पुरूब-पछिमवाँ के अलई नटिनियाँ, हमरी राजाजी के जादू मोर लगा गइले ।

तोहरो के देवो नाटिन डाली भर सोनवाँ, हमरी राजा जी के जादू मोर छोड़ा दे ।
डाली भर सोनवाँ सावँर तोर घर बाढ़व, राजा जी के जादू जड़िया गइले ।

अर्थ

किसके आंगन में नीम का पौधा है और किसके आंगन में छाया है । ननद के आंगन में नीम का पौधा है और हमारे आंगन में छाया है । उसी छाया में मेरे पतले पति ने पलंग बिछाया और सोने पर नींद आ गई । इसी बीच पूरब-पश्चिम-देश की नटिन आई मेरे स्वामी को जादू लगा गई । पत्नी नटिन को डाली भर सोना देने का वादा करती है और कहती है कि मेरे पति को जादू से मुक्त कर दो । इसपर नटिन कहती है कि डालीभर सोना तुम्हारे घर पर बढ़े, तुम्हारे पति पर किया गया जादू तो जड़िया गया, पुराना हो गया ।

(२६)

मोरे पिछुअरवा हरदिया हो लाल, रने बने पसरले डढ़िया हो लाल ;
एक डढ़िया बाबा मोर नेवयलन हो लाल , आई गेलई ससुरजी नेअरवा हो लाल ।

अबरी नेअरबा बाबा मोरा फेरऽ हो लाल, खेले देहूँ भादो के चउहटिया हो लाल ।
मोरे पिछअरवा हरदिया हो लाल, रने-बने परसले डढ़िया हो लाल ।

एक डढ़िया चाचा मोर नेवयलन हो लाल, आई गेलन भैंसुरजी नेअरवा हो लाल ।
अबरी नेअरवा चाचा मोरा फेरऽ हो लाल, सीखे देहूँ घर-घरूअरिया हो लाल ।

मोर पिछुअरवा हरदिया हो लाल, रने-बने पसरले डढ़िया हो लाल ।
एक डढ़िया भइया मोर नेवयलन हो लाल , आई गेलई सामीजी नेअरवा हो लाल ।

अबकी नेअरवा भइया मोरा फेरऽ हो लाल, खेले देहूँ कनेया-गुड़ियवाँ हो लाल ।
सबके नेअरवा बेटी फेरली हो लाल, दमदे नेअरवा कइसे फेरी हो लाल ?

अइसे काहे भउजी अकुतयलऽ हो लाल, झटसिना मथवा बन्हौलन हो लाल ।
अइसे काहे अम्मा अकुतयलन हो लाल, झटसिना भेटवा करौलन हो लाल ।

अइसे काहे बहिनी अकुतयलन हो लाल, झटसिना डंडिया चढ़ौलन हो लाल ।
अइसे काहे नउनियाँ अकुतयलन हो लाल, झटसिना कुलिया करैलन हो लाल ।

अर्थ

मेरे पिछवाड़े हल्दी का पौधा है जिसकी डाल खेत-वन में फैल गई है । इसकी एक डाल मेरे बाबा ने नवाया तो श्वसुर जी द्विरागमन का दिन निश्चित करने आ गए । किशोरी कहती है कि इस बार नेयार फेर दें (दिन निश्चित न करें) भादो का चौहट खेलने दें । पुनः चाचा ने हल्दी की डाल नवा दी तो किशोरी के भैंसुर नेयार लेकर चले आए । वह पनुः नेयार लौटा देने कहती है और घर में रसोई–पानी सीखने की इच्छा वयक्त करती है । पुनः उसका भाई हल्दी की एक डाल नवाता है तो किशोरी का पति ही नेयार लेकर चला आता है । वह कहती है कि इस बार का नेयार फेर दें अभी तो मैं 'कनेया-गुड़िया' का खेल खेलती हूँ अर्थात् बच्ची हूँ । पिताजी कहते हैं कि सभी का नेयार तो लौटा दिया परंतु अपने दामाद को ही कैसे लौटा दूँ ? अतः दिन निश्चित हो गया ।

भाभी ने माथा बाँध दिया तो किशोरी कहती है कि इतना जल्द क्यों घबरा गई ? माँ ने भेंट करना शुरू किया तो माँ को भी यही बात कहती है । भाई को कहती है कि क्यों घबराकर शीघ्र डोली पर बैठा दिया और नाइन ने अंतिम अनुष्ठान-कुल्ली करा दिया । किशोरी बिदा हो गई ।

(२७)

उगले इंजोरिया, झलरिया हो बाबा, से हम जबई बरवातर खेले हो बाबा
खेलते-खेलते बेरिया झुकलई हो बाबा, से आ गेलन ससुरजी लिआवन हो बाबा ।

ससुरजी के संगवा हम न जबई हो बाबा, से राहे बाटे घुँघवा तनवतन हो बाबा ।
भैंसुर जी के संग हम नऽ जबई हो बाबा, से राहे बाटे छुआछूत होतई हो बाबा ।

अर्थ

हे बाबा, चाँदनी उग गई, झलमल कर रही है । हम बड़ पेड़ के नीचे खेलने (चौहट) जाऊँगी । खेलते-खेलते जब सूर्य झुक गया । संध्या होने को हुई तो श्वसुरजी मुझे लिवाने आ गए । विवाहिता किशोरी कहती है कि मैं श्वसुरजी के साथ नहीं जाऊँगी क्योंकि वे मार्ग में घूँघट काढ़ने कहेंगे । इसी प्रकार भैंसुर के साथ भी वह नहीं जायगी क्योंकि उनसे राह में छुआछूत होने का डर है ।

नायिका का बालोचित हठ ।

चौहट लोक गीतों के अंतर्गत यहाँ कुछ वर्षा गीतों का भी उल्लेख किया जाता है । इसका राग पूर्णतः चौहट की तरह रहता है परंतु विषय वस्तु वर्षा से सम्बंधित रहती है । प्रायः वर्षण के समय ऐसे गीत वर्षा के आह्वान के लिए गाए जाते हैं । यदा-कदा इन गीतों के साथ मगध में स्त्रियाँ आनुष्ठानिक कार्य भी करती हैं ।

(२८)

बेंगवा जे, रोवऽ हे बेंगुचिया के कोरवा हे नऽ ,
दइया पानी बिनु परे हाहाकरवा हे नऽ ।

अनजानो बाबू रोवथी अपन मउगी के कोरवा हे नऽ ,
दइया पानी बिनु मरऽ हे गजिनवाँ हे नऽ ।

अर्थ

गड्डे के पानी में रहने वाला मेढ़क अपनी मेढ़क की गोदी में रो रहा है । पानी के बिना सर्वत्र हाहाकार मच गया है । अमुक व्यक्ति अपनी स्त्री की गोद में रो रहा है उसकी चीना की खेती (जो मात्र 60 दिनों में हो जाती है) जो अत्यल्प वर्षा में होती है, भी पानी के बिना मर रहा है । अतः स्त्रियाँ इस गीत से इन्द्रभगवान को गुहार करती है ।

(२९)

कहवाँ में गरजले मयगर हथिया, कहवाँ में बरसे इन्द्रदेवा हे नऽ ।
गया में गरजले मयगर हथिया, बेलखरा में बरसे इन्द्रदेवा हे नऽ ।

कहवाँ के रनियाँ करले पूछरवा, कइसन हथुन अंजानो बाबू मलिकवा हे नऽ ।
टेकारी के रनिया करले पुछरवा, कइसन हथुन गाँवा के गोमस्ता हे नऽ ।

अंगवा के पातर मुहवाँ के ढुलढुल, मोछवा में भँवरा गुंजारे हे नऽ ।
कहवाँ में गरजले मयगर हथिया, कहवाँ में बरसे इन्द्रदेवा हे नऽ ।

बराबर में गरजले मयगर हथिया, बेलखरा में बरसे इन्द्रदेवा हे नऽ ।।

अर्थ

कहाँ पर मयगर हाथी (मस्त काले-कजरारे बादल) गरज रहे हैं और कहाँ पर इन्द्र देव (वर्षा) बरस रहे हैं । स्त्रियाँ रात के सन्नाटे को भंग करती गाती है कि गया में बादल गरज रहें हैं और बेलखरा में वर्षा हो रही है । कहाँ की रानी पूछ रही है कि अमुक बाबू कैसे मालिकाना करते हैं ? टेकारी की रानी पूछ रही है कि अमुक गुमस्ता कैसा है ? वह अंग से पतले और मुँह से चिकने हैं । उनकी मूँछ में भँवरे गुंजार करते हैं । इस प्रकार गाँव प्रमुखों के नाम लेकर पुनरूक्तियाँ की जाती है ।

(३०)

नन्हें-नन्हे धनवाँ के चुरवा कुटवली, ऊपरे सोरहिया गाय के दूधवा हे नऽ ।
हाली-हाली जेवहूँ देवा सूरज देवा, बादल लगले हे गम्भीर से हे नऽ ।

नन्हे-नन्हे धनवाँ के चुरवा कुटवली, ऊपरे सोरहिया गाय के दूधवा हे नऽ ।
हाली-हाली जेवहूँ देवा छतीसो देवा, बादल लगल हे गम्भीर से हे नऽ ।

अर्थ

छोटे-छोटे धान का महीन चूड़ा कुटवाया, उसके साथ सोरही गाय का दूध दिया । इसे देवता गण खा रहे हैं । गीतिहारिन कहती है कि हे सूर्य देव ! शीघ्र भोजन कर लें । आकाश में गम्भीर बादल उमड़ रहे हैं । इसी प्रकार छत्तीसो प्रकार के देवताओं से जल्द भोजन करने की प्रार्थना करती है क्योंकि वर्षा होने लगेगी तो भोजन करना मुश्किल हो जायगा ।

(३२)

अच्छा-अच्छा टीकवा बीबी मन भावे हे ,
बइठी जंगल में खोदा से पनिया मांगे हे ।

अच्छा-अच्छा चूड़िया बीबी मन भावे हे ,
बइठी बधार में खोदा से पनिया मांगे हे ।

अर्थ

इस मगही वर्षा लोकगीत पर मुस्लिम संसकृति का प्रभाव है । मुस्लिम कृषक कहता है कि हमारी बीबी को अच्छा टीका मन को प्रिय लगता है जिसे पहनकर वह जंगल में बैठकर खुदा से पानी की याचना करती है । पुनः वह कहता है कि अच्छी चूड़ी हमारी बीबी को प्रिय लगती है । वह बाध में बैठकर खुदा से पानी मांगती है ।

(३२)

गाँवा के मलिकवा अंजानो बाबू नऽ, दइया घोड़वा चढ़ी निरखथ बधरिया हे नऽ ।
उनकर बेटिया अंजानो बेटिया नऽ, दइया सोने सिन्होरवा बादर पूजलन हे नऽ ।
पुरुब से घेरले बदरिया हे नऽ, दइया बरसे लागल मूसरा के घरवा हे नऽ ।
लेहूँ न अनजानो बांबू कान्हे कुदारी हाथे छतवा हे नऽ ।
दहया धाई-धाई मोरहूँ मोरनियाँ हे नऽ ।।

अर्थ

गाँव के मालिक अमुक बाबू हैं जो घोड़े पर सवार होकर बाध का निरीक्षण कर रहे हैं (वर्षा नहीं होने से खेत सूखा हुआ है ।)उनकी अमुक बेटी सोने की सिन्दुरदानी से बादल की पूजा करती है । इसी बीच पूर्व दिशा से बादल घिर आई और मूसलाधार वृष्टि होने लगी । अब कृषक के घर के लोग कहने लगे कि हे अमुक बाबू कंधे पर कुदाल और हाथ में छाता लेकर दौड़कर जायें और खेत से बहते हुए पानी को बाँध कर रोक दें ।

(३३)

साँप छोड़ले साँप केचुल, गंगा मइया छोड़ले अरार ,
देवी मइया छोड़थी अपन चौरिया, बरसे मूसरा के धार ।
अंजानो बाबू छोड़थू अपन जोरूआ , बरसे मूसरा के धार ।।

अर्थ

अवर्षण के बाद मूसलाधार बर्षा होने लगी । साँप ने केचुली छोड़ दी, देवी माँ ने अपनी चौरी छोड़ दी, गंगा माई का किनारा छूट गया अर्थात् वर्षाधिक्य से कूल-कछार डूब गया । अब अमुख बाबू अपनी पत्नी को त्यागें क्योंकि मूसलाधार वृष्टि हो रही है । (कृषि कर्म मे संलग्न हो जायें)

(३४)

फूल लोढ़े गेली फुलवरिया हे, देवरा गेले संग साथ ,
एक खोइछा लोड़ली दूसर खोइछा हे, अयले माली रखवार ।

रगड़ी-रगड़ी मेंहदी पीसली हे, उठौली रेड़वा के पात ,
कई चढ़ावे कानी अंगुरी हे, केई चढ़ावे भर हाथ ।

देवरा चढ़ावे कानी अंगुरी हे, हम चढ़ायब भर हाथ ।
सइयाँ चढ़ावे कानी अंगुरी हे, हम चढ़ौली भर हाथ ।

अर्थ

नायिका कहती है कि वह फूल लोढ़ने फुलवारी में गई तो साथ में उसका देवर भी गया । वहाँ एक खोंइछा फूल जमा किया और दूसरा खोंइछा जमाकर रही थी कि बगीचा का रखवाला माली आ गया । घर आकर मेंहदी का पत्ता रगड़-रगड़ कर पीसा और रेड़ के पते पर उठाकर रख दिया । कौन मेंहदी को कानी अंगुली पर चढ़ावेगा और कौन पूरे तलहत्थी पर चढ़ावेगा ? देवर और स्वामी कानी अंगुली पर चढ़ावेंगे और मैं पूरे तलहत्थी पर चढ़ाऊँगी (मेंहदी प्राय: सावन-भादो में चढ़ाई जाती है और तर्ज भी वर्षा गीत का है । अत: यह भी वर्षा गीत ही है इसे मेंहदी गीत भी कह सकते हैं ।)

(३५)

आहर सूख गेलई, पोखर सूख गेलई, सूखी गेलई भइया जी के खेत ,
भइया जी के खेत में पपरी परीये गेलई, अब इंदर होबऽ न सहाय ।

अर्थ

आहर सूख गया, पोखर सूख गया अर्थात् ताल-तलैया जल विहीन हो गए । नायिका-गायिका कहती है कि मेरे भाई की खेत में पपरी पड़ गई-आर्द्रता नहीं बची । अत: हे इन्द्र भगवान सहायता करें-वर्षा करें ।

(३६)

नन्हें-नन्हें बूँदवा बरीस हई गे माई, देवी माई के चुनरी भिंजुत हैं गे माई ।
नन्हें-नन्हें बूँदवा बरीस हई गे माई, छतीसो देवा के चुनरी भिंजुत हैं गे माई ।।

अर्थ

छोटी-छोटी बूँदें बरस रही है-अर्थात् रिमझिम वर्षा हो रही है, देवी माँ की चुनरी भींग रही है । रिमझिम वर्षा में छतीसो देवता के वस्त्राभूषण भींग रहे हैं ।

(३७)

अँवर सूखले चँवर सूखले ये रामा, सूखले नाला पर के धनवाँ हो राम ।
अँवर सूखले चँवर सूखले ये रामा, सूखले नहर तर के धवनाँ हो राम ।
देवा तोरा छतिओ न फाटे पनीया के देहूँ छछकाल ।

अर्थ

गद्ढे और सोता सूख गए, हे राम, नाला पर का धान भी सूख गया । नहर के नजदीक का भी धान सूख गया । गायिका कहती है कि हे देवगण तुम्हारी छाती नहीं फटती ? पानी से छछकाल क्यों नहीं कर देते । अर्थात् इस क्यारी से उस क्यारी तक बहने वाली वर्षा कर दें ।

(३८)

दइया इन्द्र के करहूँ इन्दर पूजवा हे ना ।
दइया गाँव के ठकुरवा अनजानो साही ना ।

दइया घोड़वा चढ़ल निरखई बदरा हे ना ।
दइया मूसरा के धार पनिया बरसई हे ना ।

दइया उनकर बेटवा अनजानो साही नाऽ ।
दइया कुदि-कुदि बान्हथी मोहनिया हे ना ।

दइया उनकर बेटिया दुलरइतो बेटी ना ।
दइया सुपली-मउनी खेलइत धराहर ना ।

दइया मूसरा के धार पनिया बरसई हे ना ।

अर्थ

गीत गाती स्त्रियाँ इन्द्र की पूजा का अनुष्ठान करती हैं, आह्वान करती हैं कि हे सखियाँ, गाँव के सभी लोग इन्द्र-पूजा करो । गाँव के ठाकुर अमुक शाही हैं । वे घोड़े पर सवार होकर बादल को देख रहे हैं । देखते-देखते मूसलधार वृष्टि होने लगी । उनके अमुक बेटा दौड-दौड़ कर खेत की मुहानी बाँध रहे हैं । उनकी दुलारी बेटी सुपली-मौनी का खेल खेल रही है । मुसलाधार वृष्टि हो रही है ।

(३९)

पानी बिना छछने परान कि हो भइया पानी रे बिना।
बेंगवा जे रोवऽ हई बेंगंची कोरा कि हो पानी रे बिना।

अनजानो साही रोथिन दुलरइतिन कोरा कि रे पानी रे बिना।
पानी बिना छछने परानी सब हो कि पानी रे बिना॥

अर्थ

पानी के बिना प्राण व्याकुल है। मेढ़क मेढ़की की गोद में पानी के बिना रो रहा है। अमुक व्यक्ति अपनी दुलारी पत्नी की गोद में रो रहे हैं। सभी प्राणी पानी के बिना आकुल-व्याकुल हैं।

(४०)

कहीं भींजत होइहें भगवान, प्रेम-रस बूँदन में।
कहवाँ से आयल कारी रे बदरिया, कहवाँ बरसल मेह, प्रेम रस बूँदन में।
अजोध्या से आयल रामा कारी रे बदरिया, मिथिला बरसल नेंह-प्रेम रस बूँदन में।

केकरा के भींजे रामा लाली रे पगड़िया, केकरा के भींजे पटोर-प्रेम रस बूँदन में।
रामजी के भीजे लाली रे पगड़िया, सीताजी के भींजे पटोर-प्रेम रस बूँदन में॥

अर्थ

भगवान कहीं प्रेम रस में भींग रहे होंगे। काले-काले बादल आकाश में कहाँ से आए और कहाँ वर्षा होने लगी ? अयोध्या से काली बदली आकर मिथिला में वर्षा करने लगी। किसकी लाल पगड़ी भींग रही है और किसका पटम्बर भींग रहा है ? रामजी की लाल पगड़ी भींग रही है और सीताजी का पटम्बर भींग रहा है।

(४१)

देहूँ का सासु हरवा हम जोतबई बिगहाचार, भूइयाँ लोरी भरबऽ हो लाल।
कहवाँ हम पयबो हरवा तूँ जोतबऽ बिगहा चार, भूइयाँ लोरी भरबऽ हो लाल॥

आगी लगावऽ सासु देसवा, हम नइहर से मंगायब, भूइयाँ लोरी भरबऽ हो लाल।
देहूँ का गोतनी कुदरिया हम बुनबई मेथिया-साग, भूइयाँ लोरी भरबऽ हो लाल॥

कहाँ में पयबई कुदरिया तूँ बुनबऽ मेथी-साग, भूइयाँ लोरी भरबऽ हो लाल।
आगी लगावऽ गोतनी देसवा, हम नइहरवा से मंगायब, भूइयाँ लोरी भरबऽ हो लाल॥

अर्थ

बधू सास से हल मांग रही है और कहती है कि मैं चार बीघे खेती जोत दूँगी, जमीन पर लोरी लग गई है। (लेई-कादो लायक हो गई है) सास कहती है कि मैं हल कहाँ से पाऊँगी कि तुम चार बीघे खेत जोत देगी। हे सास इस देस में आग लगे, हम अपने नैहर से हल मँगाऊँगी। पुनः वह गोतनी से कुदाल मांगती है कि वह मेथी का साग बुनेगी। गोतनी भी कहती है कि कहाँ से मैं कुदाल लाऊँ ? बधू कहती है कि हे गोतनी इस देस में आग लगे, मैं अपने नैहर से कुदाल मांग लूँगी। (गृहस्ती का समय हो और हल-कुदाल न हो तो खेती कैसे होगी ?)



कजरी या पूर्वी

कजरी या पूर्वी सावनी लोकगीत है । आकाश में जब प्रथम बादल अषाढ़ की सुबह में उमड़ने-घुमड़ने लगते हैं तब ग्राम्य बालक-बालिकाओं का समूह गाँव से बाहर किसी अश्वत्थ वृक्ष या आम-वृक्ष की विशाल डालियों पर झूला लगा डालता है और झूला के पेंग के साथ कजरी लोकगीतों के स्वर लहरियों से दिक्‌दिगंत गूँज उठता है । रिमझिम वर्षा बहार की सावनी-समाँ में प्रेमिका अपने प्रिय से मनुहार के लिए ठुमक उठती है तो उसका प्रिय 'आई वर्षा की बहार, कहना मानो गोपी नार' के मधुर विनम्र शब्दों में उसकी मनौती करता है । शीघ्र ही उसका मान भंग होकर कजरी के मधुर स्वर में फूट पड़ता है । दोनों झूला के पेंग के साथ एक दूसरे में समर्पित हो जाते हैं । लेकिन नायिका को तो गवना का भय और आकर्षण दोनों लगा रहता है ।

(१)

हरि-हरि बाबा के सगरवा मोरवा बोले ये हरी ,
हरि-हरि कउन मासे करबऽ मोर गवनवाँ ये हरी ।

खेलियो में लेहूँ बेटी भादो के चउहटिया रामा ,
बेटी अगहन मासे करबो तोर गवनवाँ ये हरी ।

आगि लगो बाबा भादो के चउहटिया रामा ,
बाबा समय मोरा बीतले नइहरवा ये हरी ।।

अर्थ

हे हरि, बाबा के तालाब किनारे मोर बोल रहे हैं । सुनकर नायिका की कमाग्नि उदीप्त हो उठती है और वह अपने बाबा से गवना करने का प्रस्ताव रख देती है । बाबा कहते हैं कि बेटी, इस बार भादो का चौहट खेल लो, अगहन महीने में तुम्हारा गवना कर दूँगा । बेटी कहती है कि भादो के चौहट में आग लगे, मेरा समय तो नैहर में ही व्यतीत होते जा रहा है । (सावनी प्रभाव से मत्त धृष्ठ नायिका)

(२)

बाबा टीकवा गढ़ादऽ बडा भारी, सवनवा-भादो खेलब कजरी ।
बेटी टीकवा गढ़वबऽ नौ लाख, केकरा संग खेलबऽ कजरी ।।

बाबा मथुरा में हथिन नंदेलाल, कन्हइया संग खेलब कजरी ।
बाबू लौकेट गढ़ादऽ बड़ा भारी, सवनवा-भादो खेलब कजरी ।।

बेटी लौकेट गढ़बवऽ नौ लाख, केकरा संग खेलबऽ कजरी ।
बाबा मथुरा में हथिन नंदेलाल, कन्हइया संग खेलब कजरी ।।

अर्थ

बेटी पिता से कहती है कि मांग का भारी टीका गढ़ा दें, मैं सावन-भादो में कजरी खेलूँगी । पिता कहते हैं कि मैं नौ लाख का टीका गढ़ा दूँगा परंतु तुम किसके साथ कजरी खेलेगी ? बेटी कहती है कि मथुरा में नंद के लाला-'कन्हइया' है, उन्हीं के साथ कजरी खेलूँगी । पुनः बेटी लौकेट गढ़ाने कहती और तदनुकूल वार्ता होती है । इस प्रकार गहनों के नाम लेकर पुनरूक्तियाँ बढ़ती जाती है ।

(३)

हरि-हरि दतुअन तोड़े गेली घनी बगिया ये हरी ।
हरि-हरि टीकवा अँटकल लेमो डढ़िया ये हरी ।।

हरि-हरि सइयाँ के इअरवा हइन सोनरवा ये हरी ।
हरि-हरि रइये-रइये जोड़ले टीकउवा ये हरी ।।

हरि-हरि दतुअन तोड़े गेली घनी बगिया ये हरी ।
हरि-हरि सिकड़ी अँटकल लेमो डढ़िया ये हरी ।।

हरि-हरि सइयाँ के इअरवा हइन सोनरवा ये हरी ।
हरि-हरि रइये-रइये जोड़ले सिकरिया ये हरी ।।

अर्थ

नायिका घने बाग में दातुन तोड़ने गई । वहाँ उसके मांग का टीका नीबू की झाड़ी में फँसकर टूट गया । वह कहती है कि मेरे पति का मित्र सोनार है जो एक-एक राई सहित मांगटीके को जोड़ देता है । पुनः वह घने बाग में दातुन तोड़ने जाती है तो इसबार उसके गले की सिकड़ी नीबू की झाड़ी में फँसकर टूट जाती है । परंतु उसके पति का सोनार मित्र सिकड़ी को भी राई सहित जोड़ देता है ।

(४)

देखके झाँकी तोहार, जियरा हुलसे हमार,
मनवाँ रमी गेलो साँवरी सुरतिया में।

माथे मटुक बिसाल, काने कुंडल के बहार,
सोभे मोतियन के हार गरदनियाँ में।

जामा-जोड़ी बूटेदार, तामें लगल हे किनार,
सोभे धोती कोरदार, तोर कमरियाँ में।

सुनऽ अरज हमार, अब नऽ करऽ इनकार,
हमरा राखी लेहूँ अपना चरनियाँ में॥

अर्थ

भक्ति भावना से सम्पृक्त कजरी का उदाहरण-भक्त का हृदय भगवान की झाँकी देखकर उमंगित होने लगता है। उनकी साँवली सुरत में मन लग गया है। भगवान के सर पर बड़ा मुकुट और कानों में कुण्डल शोभ रहा है। गले में मोती की माला शोभ रही है। बूटेदार जामा है जिसमें सुन्दर किनारी है। कमर में कोरदार धोती है। इस रूप से प्रभावित भक्त कहता है कि हे भगवान मेरी प्रार्थना सुनकर अपनी शरण में रख लें, हमारी प्रार्थना को अस्वीकार न करें।

(५)

मोही अन्ह कर देलऽ बलमुआ, रतिया कहाँ गँवलऽ नऽ।
मिरजापुर में होबे कजरिया, रतिया उहें गँववली नऽ।

लौका लौके, बिजुरी चमके, ठनका ठनके ना, हो साजन ठनका ठनके नऽ।
सून डगरिया सून मोरे अंगना, जीअरा धड़के ना, हो साजन जीअरा धड़के नऽ।

लौका-लौके बिजुरी चमके ठनका ठनके ना, मिरजापुर में होवे कजरिया-
रतिया उहें गँववली ना, हो रतिया उहें गँववली नऽ।

हरियर बनवाँ, हरियर धनवाँ, हरियर सवनवाँ नऽ।
हरित बन बोले हरियर सुगना, रतिया कहाँ गँववलऽ नऽ ?

मिरजापुर में होवे कजरिया, रतिया उहें गँववली नऽ॥

अर्थ

रात्रि में घर नहीं आने पर पत्नी पति से पूछती है कि मुझे रात्रि में अनदेखी क्यों कर दिया ? रात्रि कहाँ बीताई ? पति कहता है कि मिर्जापुर में कजरी हो रही थी, रात्रि वहीं बीत गई । पत्नी कहती है कि रात में बिजली चमक रही थी ठनका ठनक रहा था, डगर-डगर सूना पड़ा था, मेरा आंगन भी सूना था, अकेले में दिल धड़क रहा था । फिर भी पति कहते जा रहा है कि रात्रि मैने मिर्जापुर में कजरी सुनते व्यतीत कर दी । पुनः पत्नी कहती है कि वन प्रदेश हरे हो गए हैं, धान भी हरा है, सावन में हरा ही हरा दीख रहा है । हरे-भरे वन में हरे सुग्गे बोल रहे हैं । ऐसी हालत में आपने रात्रि कहाँ बीताई । उत्तर वहीं कि मिर्जापुर में कजरी हो रही थी, वहीं रात बीत गई । अर्थात् मिर्जापुर की कजरी अत्यंत मोहक होती है ।

(६)

पानी लावे गेली हम जमुना किनरिया रामा ,
हरि-हरि बीचे रहिया रोकलन कन्हइया ये हरी ।

सनन-सनन-सन बहे ला बेयरिया रामा ,
हरि-हरि रिमझिम बरसे सावन महीनवाँ ये हरी ।

कंकर चुनी-चुनी फोरले घइलवा रामा ,
हरि-हरि भिंजी गेलो कुसुमी चुनरिया ये हरी ।

छोड़ूँ-छोड़ूँ कान्हाजी हमरो डगरिया रामा ,
हरि-हरि ननदी मोरा दीहें ओरहनवाँ ये हरी ।

अर्थ

एक गोपी पानी लाने यमुना किनारे जाती है । बीच राह में श्री कृष्ण रोक लेते हैं । सन्-सन् हवा चल रही है और सावन रिमझिम बरस रहा है । कंकड़ चुन-चुनकर मेरा घड़ा श्री कृष्ण ने फोड़ दिया जिससे कुसुम रंग चुनरी भींग गई । वह गोपी अनुरोध कर रही है कि हे श्री कृष्ण, मार्ग छोड़ दें । घर पर मेरी ननद उलहना देगी ।

(७)

अजी, तू देदऽ दही के दान, गुजरिया बरसाने की ,
अरे करो न मग में रार, मैं जानूँ तेरे मन की ,

तोर सर पर मटुकी भारी, औ चाल चले मतवारी ,
अजी तोरे सुरत पर बलिहारी, गुजरिया बरसाने की ।

मोहे मारग में भरमावे, बांसुरिया मधुर बजावे ,
मैं बरसाने की गोरी, तोहे बरजू कृष्ण मुरारी ,

अजी तु देद दहि के दान, गुजरिया बरसाने की,
मैं बरजू कृष्ण मोहन की, मैं जानूँ तेरे मन की ।

अर्थ

ये बरसाने की गुजरी, दही बेचने चली है तो दान दे दे । गुजरी कहती है कि मैं तुम्हारे मन की बात जानती हूँ–रास्ते में तकरार मत करो । श्री कृष्ण कहते हैं कि तुम्हारे सरपर भारी मटुकी है, और मस्त चाल में चल रही हो । मैं तुम्हारी सुरत पर बलि-बलि जाता हूँ, ये बरसाने की गोरी ? गुजरी कहती है कि मधुर बासुरी बजा कर तुम मुझे मार्ग में दिग्भ्रमित करते हो । हे कृष्ण, मैं बरसाने की गोरी हूँ, तुझे वर्जित करती हूँ । परंतु श्री कृष्ण मानते नहीं और दही का दान (कर) मांगते रहते हैं । गुजरी श्री कृष्ण के मन की बात जानती है फिर भी वर्जित करती है ।

(८)

आयल सावन के बहार, पिया आये न हमार ,
रिमझिम-रिमझिम बरसे कारी रे बदरिया न ।

घटा उठे घन घोर, ब्रिजुरी चमके चहुओर ,
बाट सुझे नाहीं डगर डगरिया न ।

पिया छाये परदेस, लिखी भेजे न संदेस ,
मोहि के इयाद आवे पिया के सुरतिया न ।

बहे सावन के बेयरिया, सखियन गावेला कजरिया ,
चुनरी सून लागे हमरो नजरिया न ।

अर्थ

नायिका कहती है कि सावनी बहार आ गई है परंतु मेरे प्रिय नहीं आए । काले-काले बादल रिमझिम बरस रहे हैं । घनघोर घटा छाई है, चारो ओर बिजली चमक रही है, रास्ते दीख नहीं रहे हैं । परदेशी पिया संदेश तक नहीं लिख भेज रहा है, वह वहाँ रम गया है । और मुझे उसकी सुरत सदा याद आ रही है । सावनी समीर में सखियाँ कजरी गा रही हैं और हमारी चुनरी सून है, कही दृष्टि ठहरती नहीं ।

(९)

बाब! के अरिया धरी बोलऽ हई तितिरिया ,
सड़क बीचे बोलऽ हई रे बन मोरवा ।

मोरवा के बोलिया सुनी फट हई करेजवा ,
से जल्दी बाबा करहूँ न गवनवाँ ।

एसों के साल बेटी खेलहूँ कजरिया ,
से अगहन मासे करबई रे गवनवाँ ।

आगि लगवऽ बाबा एसों के कजरिया रामा ,
से जल्दी बाबा कर दऽ गवनवाँ ।

अर्थ

बाबा के आल के किनारे तितिर बोल रहा है । वन पाँखी मोर सड़क के बीच आकर बोल रहा है अर्थात् पक्षिओं ने अपनी रहस्यमयता त्याग दी है । इस वर्षा में उनकी बोली सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है । अत: हे बाबा, शीघ्र मेरा द्विरागमन करे दें । बाबा कहते हैं कि बेटी, इस वर्ष तुम यहीं कजरी खेल लो और अगहन मास में गवना कर दूँगा । बेटी सुनकर बिगड़ जाती है—इस साल की कजरी में आग लगे, मेरा गवना शीघ्र कर दें ।

(१०)

नीक लागे नाहीं सावन में कजरिया, सवरिया नहीं आये रे सखी ।

बन में बोले पपीहा मोर, दादुर करे बड़ी सोर ।
रही-रही बोल सुनावे बिरही कोइलिया, सजनवाँ नहीं आये रे सखी ।

घटा घेरे चहुओर, पूरवा बहे बड़ा जोर ,
चमकत देख बिजुरिया मोरा जिया घबराय, नीक लागे नहीं सावन में....

पिया गेलं कउना ओर लिहले सुधिया न मोर ,
कउन सवतिन पर छोड़लै नगरिया, सवरिया नहीं आये रे सखी ।

अर्थ

सावन में कजरी अच्छी नहीं लगती क्योंकि मेरा साँवला प्रिय घर नहीं आया । वन में पपीहा, मोर दादुर आदि शोर कर रहें हैं । इस पर कभी-कभी कोयल विरह-गान सुना दिया करती है । चारो ओर से घनघोर घटा छा गई है और पूरवाई जोर से बह

रही है । इसपर बिजली को चमकते देख मेरा जी घबराता है । अतः मुझे कजरी अच्छी नहीं लगती । मेरा प्रिय किस देश को चला गया, कोई सुधि नहीं ली । किस सौत पर इस नगर को छोड़ गया । हे सखी मेरा साँवला अभी नहीं आया ।

(११)

हरि-हरि बालू-रेत चलब हम कइसे ये हरी ,
ओही बालू-रेतिया पर बंगवा लगइवो रामा ।

हरि-हरि बंगवे फरल लोढ़े जयबो ये हरी ,
ओही बालू-रेतिया पर बढ़ही बोलयबो रामा ।

हरि-हरि गढ़े पलंगवा छोट, सोअबऽ हम कइसे ये हरी ,
ओही बालू रेतिया पर सोनरा बोलयबो रामा ।

हरि गढ़े टीकउवा छोट, पेन्हअब हम कइसे ये हरी ,
ओही बालू-रेतिया पर मलिया बोलयवो रामा ।

हरि-हरि गूथे हरउआ छोट, पेन्हब हम कइसे ये हरी ,
ओही बालू-रेतिआ पर ढिलुआ लगैबो रामा ।

हरि-हरि ढुले बलमु सब चोर, ढुलब हम कइसे ये हरी ।।

अर्थ

नायिका इस कजरी में प्रति पग अपनी असमर्थता प्रकट करती है । बालू की रेती पर मैं कैसे चलूँगी ? अतः उस बालू-रेती पर कपास की खेती करूँगी । फले हुए कपास को काटने-बीनने जाऊँगी । उसी बालू रेती पर बढ़ई को बुलाकर पलंग बुनाऊँगी परंतु उसने तो छोटा पलंग बना दिया । मैं उसपर कैसे सोऊँगी । वहीं मैं सुनार को बुलाऊँगी परंतु उसने मेरा टीका को छोटा बना दिया, उसे कैसे पहनूँ ? फिर नायिका उसी बालू-रेती पर माली को बुलाती है परंतु उसने भी हार को छोटा बना दिया, उसे कैसे पहना जाय ? अंत में उसी स्थान पर झूला लगाने का निर्णाय किया और झूला लगा भी परंतु यहाँ भी उसे मार खानी पड़ी । झूला पर उसका साजन झूलने लगा, वह कैसे झुले ?

(१२)

झूला लगे कदम के डढ़िया, झूले कृष्ण कन्हइया नऽ ।
रेसम डोरी चंदन के पलरा, पूरवइया के उठत लहरा ।।

बाजे मुखे बसुरिया नऽ झूला लगे कदम के डढ़िया, झूले कृष्ण कन्हइया नऽ ।
राधा ढुले कृष्णा ढुलावे, ब्रज की सखिया हिलमिल गावे ।

गावे कजरिया नऽ, झूला लगे कदम के डढ़िया, झुले कृष्ण कन्हइया नऽ ।
बरखा के रीतु अजब लुभावन, नाचे मोर लगे मन भावन ।

बरसे बदरिया नऽ, हो सखिया, झूला लगे कदम के डढ़िया, झूले कृष्ण कन्हइया नऽ।

अर्थ

यमुना किनारे कदम्ब की डाली पर झूला लग गया है । उसपर श्री कृष्ण झूल रहे हैं । रेशम की डोरी है और पूरबाई हवा में झूला-झूल रहा है । कृष्ण बासुरी बजा रहे हैं । फिर राधा झूल रही है और श्री कृष्ण झूला रहे हैं तथा बृंदावन की सारी सखियाँ हिल-मिलकर कजरी गा रही हैं । वर्षा ऋतु अत्यंत लूभावन है । नाचते हुए मोर मन को भले लगते हैं । वर्षा हो रही है और कदम्ब की डाली पर झूला लगा हुआ है ।

(१३)

लागे सावन अधिक सुहावन, बन में बोलन लागे मोर ।
उमड़ घुमड़ के कारी बदरिया, बरसत हे घनघोर ।

अमवा पर कारी कोइलिया बोले, करे पपीहा सोर ।
वृंदावन में खेल करतु हैं, राधे नवल किसोर ।
लागे सावन ....

अर्थ

सावन अत्यंत सुहाना लग रहा है, वन में मोर बोलने लगे । काले-काले बादल उमड़-घुमड़ घनघोर वृष्टि कर रहे हैं । अमराई में काली कोयल कूक रही है, पपीहा शोर मचा रहे हैं । इस सावनी समॉ में वृंदावन में राधे और श्री कृष्ण भ्रमण कर रहे हैं ।

(१४)

हमार बलमु राते काहे न अयलऽ, काहे न अयलऽ तू काहे न अयलऽ । हमार ...
बरसे बदरिया, बिजुरीघन चमके, हमार बलमु राते काहे न अयलऽ ।

मोरवा के बोली सुनी बिहरे करेजवा, हमार बलमु बिरहा में रखलऽ ।
हमार धनियाँ, हम लाजे न अयली, हमार धनियाँ राते लाजे न अयली ।

धोती धुमिल रहे, कुरता मलीन रहे, तोहार किरिया राते लाजे ने अयली ।
रमती बहेले पुरवइया-बेयरिया, हमार बलमु राते काहे न अयलऽ ।।

अर्थ

नायिका कहती है कि हे प्रिय रात्रि में क्यों नहीं आए ? बदली बरस रही थी, बादल से बिजली चमक रही थी, मोर की बोली सुनकर कलेजा विदीर्ण हो रहा था। ऐसी अवस्था में क्यों नहीं आए ? नायक कहता है कि हे प्रिया, मैं रात्रि में लज्जा के कारण नहीं आया। हमारी धोती धुमिल थी कुर्त्ता मैल था, तुम्हारी कसम मैं रात्रि में लज्जा वश नहीं आया। रात्रि में पूर्वा हवा रमण कर रही थी और मैं अकेली थी। अतः हे प्रिय आप क्यों नहीं आए।

(१५)

सखि हे पिया नहीं घर आए, बदरा बरसन लागे नऽ,
सावन हे सखि सरब सोहावन, रिमझिम बरसे नऽ, सखि हे रिमझिम ...

बादर गरजे बिजूरी चमके, छतिया धड़के नऽ, सखि हे छतिया ...
उमड़-घुमड़ घन बरसन लागे, झींगुर झनके न, सखि हे झींगुर ...

दादुर मोर पपीहा बोले, डारी-डारी नऽ सखि हे पिया नही घर आए।

अर्थ

हे सखि, प्रिय घर नहीं आए और बादल बसरने लगे। सावन सभी प्रकार से सुहाना लग रहा है–रिमझिम वर्षा हो रही है, बादल गरज रहे हैं, बिजली चमक रही है जिसे देखकर छाती धड़कने लगी। घेर-घेर कर बादल बरस रहे हैं, झींगुर का झंकार सुनाई पड़ रहा है, मेढ़क, मोर, पपीहा डाली-डाली पर बोल रहे हैं और हे सखि, प्रिय घर नहीं आए हैं।

(१६)

झर-झर बरसे रे बदरवा अयले मास सवनवाँ नऽ।
दादुर मोर पपीहा बोले, बिरहीन छतिया माहुर घोले, कलपे जीयरा नऽ।

सुतल मनके घाव जगौलक, झर-झर बूँद चुवौलक, चमचम चमके कगनवाँ नऽ।
सुतल रहली तो सपना में देखली, आँख खुलल तो देखहूँ न पवली, झरझर बरसे नयनवाँ नऽ।

अर्थ

सावन मास में बादल रिमझिम बरस रहा है, दादुर, मोर, पपी... बोलक... वियोगिनी की छाती में विष घोल रहा है, उसका जी कलप रहा है। बूँद की झ... लगी है जो मन के सोये घाव को जगा दे रहा है। साथ ही विजली की तरह कंगन

भी चमक जा रहा है । सोई अवस्था में सपने में वे आ जाते हैं और आँख खुलने पर देख नहीं पाती । अतः नयन भी झर-झर बहने लगते हैं ।

झूला गीत भी मौसमी वर्ग में आते हैं । इसका सम्बंध प्रायः कजरी-पूर्वी से रहता है । अषाढ़-सावन माह में ही अमराइयों के झूले पर ये गीत गाए जाते हैं । अतः मैने झूला गीत को भी इसी संवर्ग में रखा है ।

(१७)

बाबा के बगीचवा में अमुआँ ला गेलिये, अमुआँ के डारी लहरावे हो राम ।
तोही रे बगीचवा में लागले हिन्डोलवा, डारे-पाते कोयली पुकारे हो राम ।

सखी सब ढुले रामा ऊँचे-ऊँचे डरिया, से पूरबा में अँचरा उड़ावे हो राम ।
ढुलुआ के साथे-साथे बेधे रे करेजवा, पिया परदेसिया न आवे हो राम ।

अर्थ

किशोरी बाबा के बगीचे में आम लाने गई । वहाँ आम की डाली लहरा रही थी । उसी बगीचे में झूला लगा था । वहाँ डाली-डाली पर कोयल बोल रही थी । सखियाँ सब आम की ऊँची डालियों पर झूला लगाकर झूल रही थी । उनका आंचल पूरबा हवा में उड़ रहा था । इस दृश्य को देखकर उक्त किशोरी का हृदय दुखी हो गया क्योंकि उसका विदेशी प्रिय आया नहीं था ।

(१८)

जमुना किनारे कदम केरा गछिया हे, ताहि बीचे लगले हिंडोलवा हो राम ।
अँउठी-पउँठी ढुलथी राधा सखिया हे, बीचे-बीचे ढुलथी कन्हइया हो राम ।

केकर फाटलई पाट-पटम्बर हे, केकर फाटलई चदरिया हो राम ।
केई जयथिन अपनी नइहरवा हे, केई जयथिन ससुररिया हो राम ।

राधा जयथिन अपनी नइहरवा हे, किसुन जयथिन ससुररिया हो राम ।

अर्थ

यमुना किनारे कदम्ब का वृक्ष है । उसी पर झूला लगा है । झूले के किनारे सखियों के साथ राधा झूल रही हैं और बीच में श्री कृष्ण झूल रहे हैं । झूला झूलते किसका रेशमी वस्त्र फट गया और किसकी चादर फट गई । कौन अपना नैहर जायगी और कौन श्वसुराल जायेंगे ? राधा नैहर चली जायगी और कृष्ण श्वसुराल जायेंगे ।

(१९)

चनन के गाछ में लागे हिन्डोला, सखी सब झूलन जाय, हम धानी असगर ठाढ़ ।
राह के बटोहिया तुहूँ मोरा भइया, सजना से कहिहँ बुझाय, लागल झूला डाढ़ ।

सुन-सुन भइया राही-बटोहिया, मोर धानी कहिहँऽ समुझाय ।
छोट की ननद साथे झूलत हिन्डोलवा, जोवना के रखत बचाय-आसिन हम घरे आयब ।

अर्थ

चंदन के वृक्ष में झूला लगा है, सभी सखिया झूल रही है । मैं अकेली खड़ी हूँ । उसने राह के बटोही से कहा कि हे बटोही भाई, मेरे प्रिय से जाकर कहना कि डाली में झूला लग गया है । वहाँ से उसके प्रिय ने बटोही के द्वारा ही खबर भेजी कि मेरी धानी छोटी ननद के साथ झूला झूलेगी परंतु अपने यौवन को सम्हालकर रखेगी मैं वर्षा के बाद आश्विन में घर आऊँगा ।

बारह मासे को अगर मौसमी गीत के अंतर्गत नहीं रखा जाय तो उसे किस संवर्ग में रखा जा सकता है ? उसमें बारहो महीने की स्थिति और विरह जन्य वेदना का वर्णन रहता है । भारतीय लोकगीतों में बारह मासा अत्यंत वियोग-दुख और विदग्ध नायिका के चित्रण से भरा रहता है । शायद इसमें निहित नायिका की कातर मनः स्थिति से प्रभावित होकर मध्यकालीन भारतीय काव्य में इसका स्थान प्रायः प्रमुख कवियों ने दिया है। जायसी का विरह वर्णन तो बारह मासे को हटा देने पर निष्प्राण हो जायेगा । लोकगीतों में बारह मासा भारत के प्रत्येक जनपदीय बोलियों में अवश्य मिलता है । इसके स्वरूप और वर्णन में थोड़ा अंतर अवश्य रहता है परंतु भाव में सर्वत्र विरह की ही प्रधानता रहती है । यह लोकगीत प्रायः वर्षा ऋतु में ही गाए जाते हैं, कृषि कर्म करती स्त्रियों के द्वारा । अतः ये मौसमी गीत है ।

बारह मासे में प्रायः बारहो महीने का वर्णन रहता है परंतु किसी-किसी में छः और चार महीनों का भी वर्णन मिलता है । अतः स्वरूप की दृष्टि से बारह मासे के कई प्रकार होते हैं । यहाँ सभी प्रकार के उदाहरण दिए जाते हैं ।

(२०)

मास असाढ़ गगन घन गरजे, सावन फुलत दवनवाँ हो राम,
भादो रइनी भेयावन लागे, अंगना लागे विदेवसा हो राम ।

आसिन मास रीतु सरद चाँदनी, कातिक बरत दिअनवाँ हो राम ।
अगहन मास हमे नीक न लागे, सखि सब चलली गवनवाँ हो राम ।

पुस महीना तन पाला सतावे, माघ में रहली अगनवाँ हो राम ,
फागुन फाग खेलब केकरा संग, आस नहीं पिया के अवनवाँ हो राम ।

चइत मास बन टेसू फूले, बइसाख में गरम पवनवाँ हो राम ,
जेठ महीना तन-सूखत-घामा, बीत जाहे बारहो महीनवाँ हो राम ।

अर्थ

अषाढ़ मास में गगन में बादल गरज रहे हैं । सावन में दौना फुला रहा है। भादों की रात्रि भयंकर लग रही है और आंगन विदेश की तरह लग रहा है । आश्विन महीना में शरद की चाँदनी छिटक गई है और कार्तिक में दीपावली सज गई है । नायिका कहती है कि अग्रहन महीना हमें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता । क्योंकि सभी सखियों का गवना हो रहा है । पूस माह में शरीर पाला (जाड़ा) से सिकुड़ गया है । माघ में तो आंगन में ही बीताना पड़ा । फागुन में वह किसके साथ रंग-अबीर खेलेगो ? प्रिय के आगमन की कोई आशा नहीं दीखती । चैत्र महीने में वन पलास से लाल हो गया है और वैशाख में गर्म हवा चल रही है । जेठ में धूप से शरीर सूख रहा है । इस तरह बारहो मास बीत गए ।

(२१)

मास असाढ़ सखि कइसे बितायब, पियवा गेलन परदेस हे ।
सावन अधिक सुहावन लागे, रिम-झिम बरसे मेह हे ।

हम धानी भींजली अपनी महलिया, बलमा भींजले परदेस हे ।
भादो हे सखि रइनी भेयावन, न कोई आवे न जाऽय हे ।

लौका जे लौके रामा बिजुरी जे चमके, बिना पुरुष के नारी हे ।
आसिन ये सखि आस पुजायब, ना पूजे आस हमार हे ।

ई दुख परो रामा कुबरी धोबिनियाँ, जे पिअवा राखे विरमाय हे ।
कातिक ये सखि आयो देबारी, सब सखि दियरा जराय हे ।

सखिया सलेहर रामा पेन्ही पटम्बर, चलि भेले गंगा स्नान हे ।
अगहन ये सखि अग्र महीना, चहुदिसि उपजल धान हे ।

चकवा चकइया राम केलि करतु हैं, ई दुख सहलो ना जाय हे ।
पुस महीना सखि जाड़ा पड़तु हैं काँपल बदन हमार हे ।

माघ मास सखि पाला पड़ेला, सखि सब रूइया भराई हे।
हम अकेली धानी सून सेजरिया, पिया बिनु जड़वो न जाई हे।

फागुन हे सखि मस्त महीना, सखि सब खेलत अबीर हे।
आजु घरे रहतन मोरे बलुआ, खेलती धूम मचाई हे।

आयल बसंत रामा फूलल टेसू वन, तापर भौंरा लोभाय हे।
कारी कोइलिया रामा जोर पुकारे, ई दुख सहलो न जाय हे।

बइसाख माह सखि बाँस कटायब, बहुविधि बंगला छवाय हे।
कलिया जे चुनि-चुनि सेजिया लगवलूँ, पिया बिनु सेजिया उदास हे।

जेठ में सखि भेंट भेलन पूजी गेलौ मनकेरा आस हे।
बारह मास सखि बीतल पिया बिनु, सबके पूजे अइसन आस हे।

अर्थ

विरह विदग्धा नायिका कहती है कि अषाढ़ मास कैसे बीतावेगी ? प्रिय परदेस चला गया है। सावन अत्यंत सुहाना है, रिमझिम वर्षा हो रही है। हम अपने महल में भींज रहे हैं और प्रिय परदेस में भींग रहे हैं। हे सखि, भादो की रात्रि भयावन लगती है, न कोई आता है न जाता है। बिजली चमक रही है, ठनका ठनक रहा है और बिना पुरुष की नारी अकेली है। आश्विन में आश पूजने की सम्भावना है लेकिन आश पूजी नहीं। इसका दुख कुबड़ी धोबीन को परे जिसने हमारे प्रिय को रोक रखा है। हे सखि, कार्तिक में दीपावली आ गई। सभी सखिया दीप मालिका सजा रही है। सहेलियाँ रेशमी वस्त्र पहनकर गंगा स्नान करने चली। अगहन प्रथम मास है जब चारो ओर धान उपज गया है। चकवा-चकई केलि कर रही हैं जो असह्य हो रहा है।

पूस महीना में जाड़ा पड़ रहा है, हमरा शरीर काँप रहा है। हे सखि माघ में तो बर्फ पड़ने लगा। सभी सखियाँ रूई (दुशाला) भरा रही है। हम अकेली हैं, मेरी शय्या सून है। अतः प्रिय के बिना जाड़ा नहीं जा रहा है। हे सखि, फागुन मस्त महीना है। सखियाँ रंग-अबीर खेल रही है। आज हमारे प्रिय घर पर रहते तो मैं भी खोली खेलती, धूम मचाती रहती। अब बसंत ऋतु आ गई है। वन में पलाश खिल गए हैं जिस पर भौंरे मड़रा रहे हैं। काली कोयल पंचमतान में अलाप रही है, यह दुख सहा नहीं जाता। वैशाख में बाँस कटाऊँगी और टूटे-फूटे बंगला की मरम्मत कराऊँगी कलियों को चुन-चुनकर शय्या लगाई परंतु प्रिय के बिना

उदास है। जेठ में, हे सखि, भेंट हो गई, मन की सारी आशा पूर्ण हो गई। हे सखि, वारह महीने प्रिय के बिना बीत गए तब मेरी आशा पूरी हुई। सभी की आशा ऐसी ही पूर्ण हो। मगही लोकगीत की यही सार्वभौमिक मंगल कामना है।

(२२)

चढ़ल असाढ़ घर छावल बाया, गावत गीत झुल-झुल घर नाया।
काँस-कुस चिर महल बनौलक, मोर पिया जाय विदेस में छौलक।

सावन सुहाबन सरित भर नीर, सूखल रहल पिउ बिन मोर तीर।
झूला झूल सखि गवलन गीत, बिन पिउ सब सुख भेल मोर बीत।

भादो मास घेरलक बदरी, गवलन लोग मिल मधुरे कजरी।
झलके ताल तलैया नीर, देख-देख सोच सखि बढ़लक पीर।

आसिन आस लगल बलजोर, पिया मोर अयतन भरतन कोर।
पिया बिरमौलक कुब्जा मोर, कहाँ छिप बइठल हथ चित चोर।

मछरीन कातिक कैल कुलेल, मोर पिया छोड़ मगह-हटी गेल।
सबही मिल जुल तीरथ नहाय, पिउ बिन हमरा कुछ न सोहाय।

कातिक बीतल अगहन भेलक, सखियन के गवना दिन बन गेलक।
काटलूँ दिवस रात गिनगिन, विछुरत पिउ प्रभुजी, दुख दीन।

पूस मास दुख सीतल भेलक, कॉपल तन सिकुरल नस लेलक।
काँपल तन-मन काँपल सेज, बिन पिउ थर-थर काँपल करेज।

माघ मास सिव सखिन बहार, धन धनी रखलूँ सब एतवार।
पूजइत देवं-देवी मंगली असीस,जीवथ पिउ मोर लाख बरीस।

बहल सगर दिन फगुनी बेयार, झरल पात डोलल सब डार।
ठूँठ बनल सब तरूअर रुखें, केतना पिउ सहवलन दुख।

चैत मास टहकल फूल पलास, भेजल सनेस गौरी पिउ पास।
भेल बइसाख रस फूलल कचनार, गुल बहार कलि लेलक अनार।

जेठ मास लगन उठ गेलक, कंता मोर भेंट हो गेलक।
मिल-जुली दिन में मंगल गायल, संग सेज मिली रात बीतायल॥

अर्थ

इस बारह मासा पर मैथिली का प्रभाव विदित होता है । परन्तु थोड़े रूपांतर से यह बारह मासा मध्य बिहार में कई स्थलों पर प्रचलित मिलता है । इसमें लोक जीवन और प्रकृति के क्रिया-कलापों का चित्रण वियोगिनी नायिका की पृष्ठ भूमि में चित्रित दीखता है । असाढ़ चढ़ते बाया पक्षी ने घोसला लगाना शुरू कर दिया । अपने नये घर में झूले की तरह झूलता हुआ वह पक्षी गीत गा रहा है । काँस-कूस के चिर कर उसने महल बनाया । लेकिन मेरा प्रिय विदेश में रह रहा है । नायिका आगे कहती है कि सुहाने सावन में नदियाँ जल से पूर्ण हो गयी हैं । लेकिन प्रिय के बिना मेरा हृदय सूखा का सूखा ही रह गया । सभी सखियाँ झूले पर गीत गा रही हैं लेकिन प्रिय के बिना मेरा सारा सुख तिक्त हो गया है । भादो मास में बदरी घिर आयी है । लोग मिल जुलकर मधुर कजरी गा रहे हैं । ताल-तलैया जल से पूर्ण हो गये हैं जिसे देखकर मेरे हृदय में पीड़ा बढ़ गयी है । आसिन में आशा बलवती हुई कि मेरा प्रिय आकर गोद में सुलावेगा परन्तु मेरे प्रिय को तो कुब्जा ने रोक रखा है । मेरा चित्त चोर कहाँ छिपकर बैठ गया है । कार्तिक मास में मछलियाँ कुलेल कर रही हैं परन्तु मेरा प्रिय मगह प्रदेश छोड़कर चला गया है । सभी लोग मिल जुलकर तीर्थ स्नान करने जा रहे हैं लेकिन प्रिय के बिना मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता । कार्तिक बीतने पर अगहन आ गया । सखियों के गौना का सुदिन बन गया । दिन और रात गिनते-गिनते बीत रही है । ईश्वर ने मुझे दारुण वियोग दुख दे दिया है । पूस महीने में मेरा दुख भी ठंढा से सिकुड़ गया है, सारा शरीर काँप रहा है । नसें सिकुड़ गयी हैं । तन, मन और शय्या काँप रही हैं । बिना प्रिय की छाती काँप रही है । माघ में सखियों के लिए शित्रपूजा की बहार आ गयी है । वह धनी धन्य है जिसने इस महीने के सारे रविवार व्रत को किया है । मैने देवी, देवताओं की पूजा कर आशीर्वाद माँगा कि मेरा प्रिय लाख बरीस तक जीवित रहें । फागुन में फगुनी हवा चलने लगी । वृक्ष की डालियाँ डोलने लगी और पत्ते झड़ गये । सारे वृक्ष ढूँठ लग रहे हैं । प्रिये ने कितना दुख दिया । चैत में पलास फूल गया और बैसाख में कचनार और अनार फूल गये । जेठ महीने में लगन उठा और मुझे प्रिये से भेट हो गयी । दिन में मिल जुलकर मंगल गाना गाया और रात्रि में एक साथ शयन किया ।

(२३)

ऊधो तुरंत ही मधुपुर जाहो कन्हइया के ले आबहु रे की ।
जब लगि ऊधो मधुपुर जइहो बीति जइहयें मास असाढ़, कन्हैया नहीं आयल रे की ।

सीतल चनन अंग लपेटीत कामिनी करत सिंगार । कन्हैया ....
एक तो सखिरी बारी बयसके, दूजे पिया परदेस ।

बीजे बून झमाझम बरखे, सावन अधिक कलेस - कन्हैया ....
भादो रैनी भेयावन ऊधो, जीयरा अधिक घबरात ।

बिजुरी चमके लउका लौके, देखी जीया हमरो डेराय - कन्हैया ....
आसिन आस लगावली ऊधो, प्रभु हम्मर नहीं धाम,

मधुपुर जायके स्याम के लाईं, व्याकुल हई ब्रजनार- कन्हैया ....
कातिक के पुनमासी ऊधो, सखिसब गंगा नेहाय,

हम अइसन गोरी नीक सुन्नरी, कहवा चरनधरी जाय- कन्हैया ....
अगहन में गोरी ताके बटिया, उपजल चहुदिस धान ।

चकवा चकइया रामा केलि करत हैं, आये न हमर भगवान- कन्हैया ....
पाला पूस परत हे ऊधो, भींजल सब अंगचीर ।

बंसी बजावे जमुना तटपर, मोर नैन ढरके नीर- कन्हैया ....
माघ ही जाड़ा अधिक पड़तु हैं, नहिं अयलन जदुराय ।

अबकी बेरिया जे प्रभु मोरे अइहें, सोइहें में अंग लगाय- कन्हैया ....
फागुन फगुआ आयल ऊधो, घर नहीं नंद किसोर ।

जउन दिना मोरे प्रभुजी अइहें, खेलब रंग झिकझोर- कन्हैया ....
चइत मास बन टेसू फूले, तापर भौंरा लोभाय ।

काहे भौंरा तू लोटत-पोटत, हरि बिना दुख न सहाय- कन्हैया ....
बइसाख में बाँस कटायब ऊधो, रचि-पचि बंगला छवाय ।

मेरे प्रभु सोइहें लाल पलंग पर, हम धानी बेनिया डोलाय- कन्हैया ....
जेठ मास तपते दुपहरिया, अंग नऽ चीर सोहाय ।

हम धानी प्रभु तोहरे दरसबिन, बिरहिनि मन पछताय- कन्हैया ....
जब लागि ऊधो मधुपुर जइहें, बीती जइहें बारह मास-
कन्हैया नहीं आयल रे की ।

अर्थ

इस बारह मासे में ऊधो को सम्बोधित कर नायिका मधुपुर भेज रही है और अपनी स्थिति का परिचय दे रही है । परंतु बारह महीने बित जाते हैं और न ऊधो जाते हैं न माधव मधुपुर से आते हैं । इसका तर्ज कुँअर (विजयी) गाथा का है । परंतु विरह जन्य भाव परंपरागत हैं । नायिका ऊधो को शीघ्र मधुपुर भेजकर श्रीकृष्ण को लाने कहती है । हे ऊधो, जबतक आप मधुपुर जायेंगे, तब तक वर्षा का प्रथम मास आषाढ़ बीत जायेगा ।

नायिका अंग में शीतल चंदन लपेट रही है और श्रृंगार कर रही है । वह कम उम्र की है और उसपर उसका प्रिय परदेश में है । इस पर झमाझम वर्षा हो रही है- यह सावन मास अति क्लेशपूर्ण है। भादो में रात्रि भयंकर लगती है जी घबरा रहा है । बिजुली चमक रही है, ठनका ठनक रहे हैं । आश्विन में आशा लगी, लेकिन हमारे प्रभु घर नहीं आए । हे ऊधो, मथुरा जाकर श्याम को ले आवें-वहाँ कहें कि ब्रजनारी आपके बिना व्याकुल है । हे ऊधो, कार्तिक की पूर्णमासी आ गई, सखियाँ गंगा स्नान जा रही है परंतु मैं सुन्दरी किसकी चरण में शरण पाऊँ ? अगहन में गोरी राह देख रही है, चारो ओर धान उपज गया है । चकवा-चकई केलि कर रही है परंतु हमारे भगवान अभी तक नहीं आए हैं । पूस में पाला पड़ रहा है, मेरे अंग का वस्त्र सब भींग गया है। उधर श्रीकृष्ण यमुना किनारे बंशी बजा रहे हैं और मेरे नैन से अविरल अश्रु प्रवाह हो रहा है । माघ में जाड़ा और बढ़ गया है परंतु यदुवीर नहीं आए । यदि इस बार मेरे प्रभु आ जायें तो उनके साथ जी भर सोऊँगी । फागुन का फाग भी आ गया, घर पर नंदकिशोर नहीं हैं जिस दिन मेरे प्रभु आ जायेंगे, उनके साथ झकझोर कर रंग खेलूँगी ।

बसंत (चैत्र) का आगमन हो गया । वन में पलाश फूल गए । उस पर लोभी भौंरे मड़रा रहे हैं । लोट-पोट हो रहे हैं । इसे देखकर मुझे दुख सहा नहीं जाता । हे ऊधो, वैशाख आ गया, बाँस कटाकर दुख के बावजूद रचकर बंगला बनाऊँगी । मेरे प्रभु लाल पलंग पर सोवेंगे और मैं धानी पंखा झलूँगी । लेकिन यह भी सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ और जेठ मास आ गया । इसमें सारा तन तप रहा है। शरीर पर वस्त्र अच्छा नहीं लगता, हे प्रभु, हम आपके दर्शन के बिना अत्यंत पछता रहे हैं । हे ऊधो, जबतक आप मथुरा जायेंगे, बारहो महीने बीत जायेंगे । इस बारह मास में नायक-नायिका की भेंट नहीं होती जैसा कि अन्य बारह मासों में जेठ आते ही दर्शन या भेंट का विधान रहता है ।

(२४)

प्रथम मास अषाढ़ हे सखि, साजी-चलले जलधार हे।
ऐही प्रीत कारन सेत बंधौलन, सिया उदेसे सीरी राम हे।

सावन हे सखि सब्द सोहावन, रिमझिम बरसई बूँद हे।
सबके बलमुआ रामा, घर-घर होइहें हमरो बलमु परदेस हे।

भादो हे सखि रइनी भेयावन, दूजे अन्हरिया रात हे।
ठनका जे ठनके रामा, बिजुरी जे चमके, से देखि जियरा डेराय हे।

आसिन हे सखि, आस लगवली, आस नऽ पूरल हमार हे।
आस जे पूरई रामा कुबरी सौतिनियाँ, जे कंत रखलक लोभाय हे।

कातिक हे सखि, आयो देवारी, सब सखि दियना जराय हे।
सखिया सलेहर रामा पेन्हीं पटम्बर, चलि भेले गंगा अस्नान हे।

अगहन हे सखि, अग्र महीना, चहुदिसि पीयर धान हे।
चकवा-चकइया राम केलि करतु हैं, से देखि जियरा झुराय हे।

पूस मास सखि जाड़ा पड़तु हैं थरथर कापऽ हे करेज हे।
माघ हे सखि पाला पड़ेला, सब सखि रूइया भराय हे।

हमहूँ अकेली धानी, सून सेजरिया, पिया बिनु जड़वो न जाय हे।
फागुन हे सखि, मस्त महीना, सब सखि खेलई अबीर हे।

ओही देखि-देखि जियरा जे तरसई, कापर डारूँ रंग हे?
चइत हे सखि सब बन फूलई, फूलले बेली-गुलाब हे।

सखि सब फुलई रामा पिया के संग में, हमरो फुलवा मलीन हे।
बइसाख हे सखि पिया नहीं आयल, बिरहे कुहकई मोरा जीव हे।

दिन जे बीतई रमा रोवत-रोवत, कुहकत बीते सारी रात हे।
जेठ में सखि आयल बलमुआ, पूरल मनवाँ के आस हे।

सारा दिन रामा मंगल-गैली, रैनी गमौली पिया संग हे।

अर्थ

हे सखि, वर्षा का प्रथम महीना अषाढ़ आ गया । जल की धारा प्रवाहित होने लगी । सीता के साथ प्रेम के कारण श्रीराम ने समुद्र में सेतु का निर्माण किया था । हे सखि, सावन में सुहाने शब्द सुनाई पड़ रहे हैं रिमझिम वर्षा हो रही है । सभी के प्रिय घर पर हैं, परंतु मेरा प्रिय परदेश में हैं । भादो की रात्रि भयंकर लगती है, अंधकार छाया रहता है, बिजुली चमकती और ठनका ठनकता है जिसे देख-सुनकर जी डर जाता है । आश्विन में आशा बँधी परंतु मेरी आशा पूरी नहीं हुई । आशा तो मेरी सौत कुब्जा की पूरी हुई जिसने मेरे प्रिय को लुभा कर रख लिया है । कार्तिक में दीपावली आ गई । सभी सखियाँ दीपक जला रही है और रेशमी वस्त्र पहनकर गंगा स्नान करने चली । अगहन प्रथम मास है जिसमें धान पक कर पीले हो जाते हैं। चकवा-चकई केलि करती है जिसे देखकर मेरा जी मुर्झा जाता है । हे सखि, पूस में जाड़ा पड़ता है, मेरा कलेजा काँप रहा है । माघ में तो बर्फ पड़ने लगी। सभी सखिया रूई (दुशाला) भरा रही है । हम अकेली हैं, मेरा सेज सून है, पिया के बिना जाड़ा दूर नहीं होता है । हे सखि, मस्त महीना फागुन आ गया, सभी सखियाँ रंग-अबीर खेल रही है जिसे देखकर जी तरस रहा है, मैं किसपर रंग डालूँ ? चैत्र मास में सारा वन प्रांत फूलों से भर गया है, वेली-गुलाब भी खिल गए हैं। सखियाँ अपने प्रिय के साथ चहक रही है लेकिन मेरा फूल (प्रिय) उदासीन है । वैशाख महीने में भी प्रिय का आगमन नहीं हुआ, बिरह में जी कुहक रहा है। दिन तो रोते-राते बीता और रात्रि सिसकते बीती । अंत में जेठ का महीना आया। मेरा प्रिय का आगमन हो गया और मेरी मनोकामना पूर्ण हो गई । सारा दिन मंगल गान गाया और रात्रि प्रिय के साथ में बीताई ।

(२५)

चइत अजोध्या जनमलन राम, चन्नन से लिपवायम धाम।
गजमोतियन से चउका पुरायम, सोने कलस पर दीप रखायम।

बइसाख मास रीतु गरमी लाग, चले पवन जइसे बरसे आग।
जल बिनु जइसे तलफे मीन, वोही गति केकई मोरा कीन।

जेठ मास लोह-लागल अंग, सीता राम लखन हथ सग।
सीताराम पद कमल समान, धरती तलफे, तपे असमान।

मास असाढ़ गगन घनघोर, पपीहा पी-पी कुँहके मोर।
कोसिला कुहुँके अवधपुर धाम, भींजत होइहें लखन सिया राम।

सावन में भरे सागर नीर, कइसे कोसिला धरथिन धीर।
नन्हें-नन्हें बुनवाँ बरसे नीर, भींजत होइहें सिया रघुवीर।

भादो रैन भेयावन रात, बरसत-कड़कत जियरा डेरात।
झींगुर झनकत फिरत भुंजग, राम लखन सीता के संग।

आयल हे सखि मास कुँआर, धरम करे सबहे संसार।
जो घरे रहतन लछुमन राम, विप्र जिमा के देवी दान।

हे सखि, आयल कातिक मास, उठे करेजवा विरह के फाँस।
सखियन घर-घर दियना बार, हमरो अजोध्या भेल अन्हियार।

अगहन कुँअरी करे सिंगार, जिया देखी जार बेजार।
पूस मास रीतु पड़े तुसार, राम लखन सिया कइसे बिसार ?

माघ मास रीतु आयल बसंत, खेलूँ किनका संग वसंत ?
फागुन फाग खेलइती चौरंग, रंग अबीर लपेटती अंग ।

ठाढ़े भरत न घोरथी अबीर, किनका पर छिटूँ विन रघुवीर ।
चउदह बरस पूरल जब धाम, घर अयलन सीय लखन रघुराय।

अर्थ

यह बारह मासा राम वनवास पर आधारित है। अयोध्या में राम का जन्म चैत्र मास में हुआ जब महल को चंदन से पड़ोरा गया। गजमुक्ता से चौका पूरा गया, सोने के कलश पर दीप प्रज्जवलित किया गया। परंतु कैकेई के कारण राम बनवास हुआ और वैशाख से अयोध्या तपने लगा। वैशाख महीने में गर्मी पड़ रही है जैसे हवा से अग्नि की वर्षा हो रही हो। जल के बिना जैसे मछली तड़पती है, कैकेई ने वैसी ही गति कौशिल्या को कर दी है। जेठ में गर्मी और शरीर मे लोहा लग (जंग) गया है और राम लखन सीता साथ-साथ जंगल में है। सीता राम का चरण कमल की तरह कोमल है और धरती-गगन तप रहा है। असाढ़ महीने में आकाश घनघोर बादल से ढँक गया है। पपीहा पी-पी की पुकार कर रहा है, मोर कुहुँक रहा है। कौशिल्या अयोध्या में सिसक रही हैं कि लखन और सीताराम वन में भींग रहे होंगे। सावन में सर-सरोवर पानी से भर गए। कौशल्या कैसे धैर्य धारण करें ? रिमझिम बूँद में सीता राम भींग रहे होंगे। भादो की भयंकर रात होती है, वर्षा में बिजली कड़ती है, झींगुर झंकार करते हैं, साँप घूमते हैं। वहाँ राम लखन के साथ सीता भी है। कौशल्या कहती है कि हे सखि, आसिन महीना आ गया, सभी लोग

व्रत-धर्म में लग गए । यदि मेरे घर पर राम-लक्ष्मण रहते तो मैं भी ब्राह्मण को खिलाकर दान-दहेज देती । से सखि, कार्तिक महीना आ गया । कलेजे में पुत्र वियोग की फाँसी लगी है । सभी सखियाँ घरों में दीपक जला रही है, हमारा अयोध्या अंधकार पूर्ण है । अगहन में कुँआरियाँ श्रृंगार कर रही हैं जिसे देखकर हृदय तार-तार हो रहा है । पूस में पाला पड़ रहा है, भला राम-लखन को कैसे विसार दूँ ? माघ में बसंत ऋतु का आगमन हो गया, किनके साथ बसंत खेला जाय ? फाल्गुन में विविध रंगों से अबीर खेलती, शरीर में रंग लपेटती । भरत खड़े हैं, रंग नहीं घोल रहे हैं क्योंकि रंग किस पर छिटा जायगा, रघुवीर तो हैं नहीं । जब चौदह वर्ष पूर्ण हो गया तो राम, लखन और सीता घर लौट आए । सर्वत्र खुशियाँ छा गई ।

इस बारह मासे में पति-पत्नी वियोग की जगह पुत्र वियोग चित्रित है, इसका भाव-सौन्दर्य प्रचलित बारह मासा से भिन्न है ।

(**नोट**- विषय वस्तु और तर्ज के कारण बाहर मासा के अंतर्गत-वियोग श्रृंगार)

(२६)

सावन हे सखि बूँद पड़ेला, पिया गेलन परदेस हे,
पिया-पिया कही रटेला कामिनी, पिया बिनु कुछो न सोहाय जी,

कथी के करब हम कोरा कगजवा, कथी करब मसीहान हे,
केकरा के बदव रामा पढ़ल पंडितवा, भेजब पिया के संदेस जी,

आचर फारि-फारि कोरा कगजवा, नैना-कजरवा मसीहान हे,
देवरा के बदब रामा पढ़ल पंडितवा, पिया के भेजब संदेस जी,

बाट-बटोहिया रामा तुहूँ मोरा भइया, हमरो संदेसा ले ले जाहूँ हे,
येहो संदेसवा रामा हरिजी से कहिहँऽ, चुवेला बंगला हमार जी,

तोहरो बलमुजी के चिन्हलो न जानल, कइसे कहब समुझाय हे,
हमरा बलमुजी के अखिया बड़े-बड़े, मुहवाँ चिबावे पकल पान जी,

घोड़वा चढ़ल पिया मोरा होइहें, जइसे लगेला कोई वीर हे,
घोड़वा चढ़ले तुहूँ राजा के बेटवा, तोरा धानी भेजले संदेस जी,

चिठिया पढ़ी के तुहूँ घरे चली जाहूँ, चुवेला बंगला तोहार हे,
चिठिया पढ़इते पिया मन मुसकयलन, केता धानी लिखलन वियोग जी,

सास ससुर रामा घरही मे हलथिन, लेहूँ न बंगला छवायऽ जी ।

इस सावनी गीत में वियोग की पराकाष्ठा है और पत्र लेखन की अनोखी विधि ।

अर्थ

सावन में वर्षा हो रही है, प्रिय परदेश चला गया है । वियोगिनी 'पिया-पिया' की रट लगाए हुए है, प्रिय के बिना कुछ अच्छा नहीं लगता । वह संदेश कैसे भेजे ? किस चीज को सादा कागज बनावें, किस चीज की स्याही बनावे, किसको पढ़ा-लिखा पंडित निश्चित करे और प्रिय को संदेश भेजे । उसने आंचल फाड़कर सादा कागज बनाया और नैन के काजल को स्याही बनाई । अपने देवर को पढ़ा-लिखा पंडित मान लिया और प्रिय के पास संदेश लिखवाया । नायिका ने राह के बटोही से कहा कि हे भाई, मेरा संदेश लेकर जरा चले जाओ । यह संदेश मेरे हरिजी से कह देना और बता देना कि हमारा बंगला वर्षा में चू रहा है । बटोही ने कहा कि तुम्हारे स्वामी को मैं पहचानता नहीं तो किसे समझा कर कहूँगा ? वियोगिनी कहती है कि हमारे स्वामी की आँखे बड़ी-बड़ी हैं और मुँह में पके पान चबाते रहते हैं । वे सदा घोड़े पर सवार रहते हैं जैसे कोई वीर हो । बटोही ने घोड़े पर चढ़े राजकुमार को देखा और कहा कि तुम्हारी पत्नी ने सदेश भेजा है । पत्र पढ़कर घर चले जायें, वहाँ बंगला भी पानी में चू रहा है । पत्र पढ़कर राजकुमार मन ही मन मुस्कुराया कि प्रिया ने कितना वियोग भरा पत्र लिखा है । उसने कहा कि घर पर सास-श्वसुर हैं, उनसे बंगला छवा लेना चाहिए ।

(२६)

माघ ही बूँद परीये गेल हे, थर थर काँपे सरीर ,
सब सखि सेज अटारी हे, राधा विकल सरीर ,

फागुन फगुआ आयल हे, उड़त रंग अबीर ,
सब सखि खेलय पिया संग हे, राधा ढारय लोर ,

हमरो मोहन सखि रहतन हे, खेलती रंग अबीर ,
चइत सखि चित्त चंचल हे, फूलल बन केरा फूल ,

फूलवनं रस भौंरा पीयल हे, किसुन बसे बड़ी दूर ।
बइसाख में बँसवा कटवली हे, रची के बंगला छवाय ।

कान्हा न अयले वृदावन हे, के मोरा आसा पुराय ।
राधा गिरले मुरछाय हे, सखियन ढारे लोर ।

हे दुख सहलो न जाय हे, हरि कुबजा के कोर ।

अर्थ

माघ में वर्षा हो गई । नायिका का शरीर थरथर काँपने लगा । सभी सखियाँ अटारी के ऊपर सेज पर सोई है परंतु राधा कृष्ण के बिना विकल है । फाल्गुन में फाग गाया जा रहा है । रंग अबीर उड़ रहा है । सभी सखियाँ प्रिय के साथ खेल रही है और राधा नैन से लोर ढार रही है ।

वह कहती है कि हे सखि हमारे मन मोहन रहते तो हम भी रंग अबीर खेलती । चैत्र (बसंत) में चित्त चंचल हो जाती है, वन में फूल खिल जाते हैं । फूलों पर भौरे गुंजार करते रस पान करते हैं । हमारा कृष्ण बड़ी दूर बसता है । वैशाख में बाँस कटाकर बंगला छवाया, सुन्दर बनया परंतु कृष्ण वृंदावन नहीं आए । मेरी आशा कौन पूर्ण करेगा ? राधा मूर्छित होकर गिर जाती है, सभी सखिया आँसू बहाकर रो रही है । यह दुख सहा नहीं जा रहा है । वहाँ श्री कृष्ण कुब्जा की गोदी में विराजमान है ।

(२७)

जेठ जरल जहान सजनी, घास जरके भुंजरी भेल हे ,
सर-सरिता वन सूखके सखि, माटी दरकी गेल हे ,

घन घेरलक अषाढ़ सखि, सज रहल बरसात हे ,
भींज रहल तन के बसन सब, चूड़ी सरकल हाथ हे ,

सावन में सखि नाग पूजे, पिया मोर परदेस हे ,
भादो रैनी बड़ भेयावन, घुप अन्हरिया घर-द्वार हे ,

मोर करेजा फट रहल हे, झींगुर के झनकार हे ।

अर्थ

हे सखि, जेठ मे सकल जहान जल रहा है । घास-पाँत जलकर भुँजिया की तरह हो गई है । नदी-नद, वन आदि सूख गए हैं, मिट्टी फट गई है । अषाढ़ में बादल घिर आए हैं । वर्षा की समाँ बँध गई है । शरीर का वस्त्र भींग रहा है, हाथ की चूड़ी सरक रही है । सावन में सखियाँ (नागपंचमी) नाग की पूजा कर रही है परंतु मेरे पति परदेश हैं । भादो की रात्रि बड़ी भयंकर है । घर द्वार घनघोर अंधकार में विलीन है जिसे देखकर मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है, उसपर झींगुर का झंकार मन-प्राण को विह्वल कर रहा है ।

पावस गीत में सामान्यत: वर्षा का चित्रण रहता है । इसका दूसरा वर्ण्य है विप्रलम्भ शृंगार । वर्षा में अनेक नामों से गीत गाए जाते हैं । लेकिन ये सारे गीत अषाढ़-सावन और भादो तथा आश्विन में ही गाए जाते हैं । अत: ये सब प्राय: पावस गीत के ही अंतर्गत आते हैं । चौहट का वर्ण्य पारिवारिक और सामाजिक होते हुए भी वर्षा ऋतु में ही गाए-जाने के कारण पावसगीत के विशाल क्षेत्र के अंतर्गत आ जाते हैं । अत: इन सारे गीतों को हम इसकी विविधता एवं विपुलता के बावजूद पावस गीत के ही अंतर्गत रखते हैं । सुधी पाठक अपने विवेक से और पुस्तक की प्रस्तावना के आधार पर इसे विविध संवर्गों की सीमा रेखा में बाधना चाहें तो बाँध सकते हैं, इससे मेरे लक्ष्य में कोई अंतर नही आवेगा । यहाँ लोक गायिका के अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विखरे पावस गीतों को भी कुछ समेटने का प्रयास किया है जिनके लेखकों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ ।

(२८)

बदरवा, सनन-सनन-सनन नाच ।
भींजे मोर चुनरी बलम परदेसिया, दरर्दी न जाने तू वेदर्दी रसिया ।

हियरा मोर साले सावन कजरिया, संदेसवा पिया के घर बाँच । बद.......
दादुर गावे पिया मोरनी नित नाचे, झरझर बुंदिया जी में आग लगावे ।

ठनक ठनक ठनका रह रह चमकावे, निरमोहिया घर आवे न आज । बद...

अर्थ

बादल आकाश में सनन-सनन की आवाज कर नाच रहे हैं । मेरा बालम परदेश में हैं, यहाँ मेरी चुनरी भींग रही है, वह वेदर्दी रसिक मेरा दुख नहीं समझता । सावन की कजरी मेरे घर आकर प्रिय का संदेश सुना रही है जो हृदय को दुखी बना रहा है । मेढ़क टर्रा रहे हैं । मोरनी नाँच रही है, रिमझिम वर्षा मेरे जी में आग लगा रही है । ठनका ठनक कर हृदय को कौंध रहा है, ऐसे में भी मेरा निर्मोही आज तक नहीं घर आया ।

(२९)

स्याम गेलन परदेस से मदन सतावे हो मोरे रामा ।
चइत मास चित चंचल हमरो, भर बइसाख फिरली हम सगरो ।

जेठ में अति धूप काड़ा बिरह से मदमातल हो मोरे रामा ।
आयल आषाढ़ घेरी आयो बदरा, सावन बिन पिया सोहे न कजरा ।

भादो निसी अंधियारी, काटम कइसे राती हो मोरे रामा।
आसिन आस लगल हल हमरो, कातिक दीप बरीये गेल सगरो।

अगहन पिया नहीं आयो न लिखी भेजे पाँती हो मोरे रामा।
पूस मास में ओस परतु हैं, माघ में पिया बिना जाड़ा कटतु हैं।

सूर स्याम कर जोरे राधिका, फागुन धूम मचल, से कंत घर आयल
हो मोरे रामा।

अर्थ

राधिका कहती है कि मेरे श्याम परदेश चले गए हैं और मुझे काम सता रहा है। चैत्र महीने में मेरा चित चंचल हो गया और वैशाख में मैं सर्वत्र घूमती रही। जेठ मास में अत्यंत प्रखर धूप है और मैं विरहाग्नि से व्याकुल हूँ। अषाढ़ में बादल घिर आए हैं। सावन में बिना प्रिय के काजल शोभता नहीं। भादो में रात्रि अंधकार पूर्ण है। हे राम, रात्रि कैसे कटेगी ? आश्विन में मुझे आशा लगी और कार्तिक में सर्वत्र दीपक जलने लगे। अगहन में भी प्रिय नहीं आया न कोई पत्र ही लिख भेजा। पूस में ओस पड़ रहा है और माघ में भी प्रिय के बिना ही जाड़ा कट गया। फाल्गुन में राधिका ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, सर्वत्र फाग का धूम मचा है और उसका प्रिय भी घर आ गया।

(३०)

बरसई पावस के रिमझिम धार सखिया,
बादर घेरि-घेरि आयल, घनघोर घटा छायल।

तड़कई बिजुरी तड़ातड़, धड़कई जीया धड़ाधड़ ,
झरई झरझर पुरवा बेयार सखिया।

उठल हिरदा में पिरीत, फूटल ओठवा से गीत ,
मिलल सपना में मीत, हम भूलली सब गीत ,

भींजल मनवा के अँचरा, हमार सखिया।
पी-पी पपीहा सुनावे, पिया हमरा भोरावे।

रह-रह बतिया बनावे, हमरा खिसिया बरावे ,
हम पिया-पिया थकली, पुकार सखिया।
बरसई पावस के रिमझिम धार सखिया।।

अर्थ

वर्षा ऋतु में रिमझिम धार बरस रही है । घनघोर बादल छा गए हैं, बिजली तड़ातड़ तड़क रही है और मेरा जी धड़क रहा है । पूरवा हवा झर लगाये है । हृदय में प्रीत की भावना उठ रही है और ओठ से गीत फूट रहे हैं । स्वप्न में मेरा मित मिला तो मेरे सब गीत भूल गए । हे सखि, मेरे मन का आँचल प्रेम रस में भींग गया । पपीहा पी-पी की आवाज कर हमें भ्रम पैदा कर रहा है । मैं तो प्रिय-प्रिय की रट लगाते थक गई । पावस का रिमझिम बरसना जारी है ।

(३१)

आयल सवनवाँ से उमड़ल बदरीया, हुलस मारई नाऽ ,
देखि मनवाँ किसनवाँ हुलस मारई नाऽ ।

धनवाँ रोपनिया हुलस गीत गावई, मचल गीत गावई ,
कि राह चलते बटोहिया के मन भावई नाऽ ।

ऐही रे समइया कदम जुड़ छहिया, थिरक उठई नाऽ ।
गोरी झूला पर कजरी अलाप उठल नाऽ ।।

अर्थ

सावन में बादल उमड़ आए । इसे देखकर किसानों का मन हुलास से भर गया । खेत में रोपनी धान रोप रही है और खुश होकर मचलती हुई गीत गा रही है जो राह चलते बटोहियों के मन को बरबस आकृष्ट कर लेती है । इसी समय कदम्ब की छाया भी थिरकने लगी, वहाँ गोरिया झूले पर कजरी अलापने लगी ।

(३२)

काजर हे सावन के बदरी, रह-रह चमक रहल हे बिजुरी ।
पूरबा के ओढ़नी पर कजरी, बेला महमह महके नाऽ ।

हार गेली हम पाती लिख-लिख, उत्तर तक न भेजे नौ सिख ,
गुमसुम अंगना आउ अटारी, जियरा हमार कसके नाऽ ।
बेला महमह ....

पिंजरा के पीछे से मैना, बोले दुख के कातर बैना,
भरभर आयल दूनो नयना, लोरवा ढरढर ढरके नाऽ ।

अर्थ

सावन की बदली काजल की तरह काली है । बीच-बीच में विजली चमक रही है । पूरवाई में कजरी सुनाई पड़ रही है और बेला का फूल महमह महक रहा है। नायिका कहती है कि मै पत्र लिखते-लिखते थक गई परंतु वह नौ सिखुआ उत्तर तक नहीं देता । आंगन और कोठा-अटारी सून है, मेरा हृदय कसक रहा है । घर का पिंजरवद्ध मैना दुख की करूणा बोली बोल रही है । मेरे दोनो नयन आँसू से भर आए और अविरल धारा प्रवाहित होने लगी ।

(३३)

रामा आई गेलई सवनवाँ मोरा सजनवाँ आवे नाऽ ।
रामा गरजई कारे बदरवा, झर-झर मेहा बरसई नाऽ ।

रामा बन में बोलई कोइलिया, मोरा मनवाँ तरसई नाऽ ।
रामा चमचम चमकई बिजुरिया, मोरा मनवाँ डरपई नाऽ ।

रामा सनसन चलई पवनवाँ, मोरा तनवाँ काँपई नाऽ ।

अर्थ

सावन आ गया परंतु मेरा साजन नहीं आया । काले बादल गरज रहे हैं । रिमझिम वर्षा हो रही है, वन में कोयल बोल रही है और मेरा मन प्रिय के बिना तड़प रहा है । चमचम बिजली चमक रही है और मेरा जी डर रहा है । सन-सन हवा चल रही है और मेरा तन काँप रहा है ।

(३४)

हवा बहे रसे-रसे घुमड़इ कजरिया ,
जिया कहे चल-चल पिया के नगरिया ।

जहिया से सइँया मोरा गेलन विदेसवा ,
आवे न अपने न भेजे कोई सनेसवा ।

लिलचा के रह जाहे ललकल नजरिया ,
जिया कहे चल-चल पिया के नगरिया ।

जाड़ा जड़ाई गेलई सउँसे ई देहिया ,
गरमी में सब जरई सबरे सनेहिया ।

जियरा डेराय रामा छाय घटा करिया ,
जिया कहे चल-चल पिया के नगरिया ।।

अर्थ

हवा धीरे-धीरे बह रही है, कजरारे बादल घुमड़ रहे हैं । जी कहता है कि प्रिय के नगर चलो । जब से मेरा प्रिय विदेश गया है, तब से न स्वयं आया न कोई पत्र भेजा । अतः ललचाई नजर विवश रह जाती है । जाड़ा में सारी देह दलदला गई । गर्मी में सारा स्नेह जल गया । अब आकाश में काले बादल छा गए तो जी डर रहा है और कहता है कि प्रिय के नगर में चल चलो ।

(३५)

रिमझिम बरसई रे बदरिया बलमा मत जा विदेस ।
चमचम चमकई रे बिजूरिया बलमा मत ज़ा विदेस ।

खन गरजई खन बरसई बदरा, कड़कई खनो बिजुरिया ,
हलफा हलफई नदी पोखरिया, भरलई सभे डगरिया ,

उमड़ई-घुमड़ई रे कजरिया बलमा मत जा विदेस ।।

अर्थ

वर्षा में विदेश जाते पति को नायिका वर्जित कर रही है कि बादल रिमझिम बरस रहे हैं, चमचम बिजली चमक रही है । कभी बादल गरजते हैं तो कभी बरसते हैं, कभी बिजली कड़कती है । नदी-तालाब में पानी भरने से हलफा उठ रहे हैं । सभी मार्ग पानी से भर गए हैं । कजरारे बादल उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं । अतः हे प्रिय विदेश मत जा ।

(३६)

झूला लागल हई कदमवाँ भौजो चलहूँ झूले नाऽ ।
पियवा सावन में विदेसवा, ननदो झूला भावे नाऽ ।

आवई पानी के छिटकवा, भौजो जियरा हुलसई नाऽ ।
मनवाँ कुहके हे ननदिया, सैंया पतिया भेजे नाऽ ।

आयल सावन के फुहरवा, भौजो पपीहा बोले नाऽ ।
बुंदवा लागई मोर तनवाँ जियरा मोरा झुलसई नाऽ ।

अगहन के महीनवाँ भौजे मोर भइया अइहे नाऽ ।
झिरी-झिरी बहऽ हई रे पवनवाँ भौजो चलहूँ झूले नाऽ ।

(३७)

झुलवा झूलथ राधारानी, झूलवथ स्याम बिहारी ना ।
चमचम चमकई कंचन पलना, चमकई रेसम डोरिया ना ।।

गमगम गमकई चनन गछिया, गमकई तनवाँ गोरिया ना ।
एक ओर झूलथ राधारानी, एक ओर स्याम बिहारी ना ।।

झूला लागल कदम के डरिया, झूले किसुन मुरारी ना ।
कथिए के डोरी, कथिए के झूला, कथिए के डारी ना ।

रेसम के डोरी, सोना के पलना, कदम के डारी ना ।
केई झूले झुलवा, कई मारई पेंगवा ना ।
कान्हा झूले झुलवा, राधा मारई पेंगवा ना ।।

अर्थ

राधारानी झूला झूल रही हैं और श्याम बिहारी झूला रहे हैं । सोने का पालना चमक रहा है और रेशम की डोरी भी चमकती है । चंदन का वृक्ष महक रहा है और गोरी का वदन भी महक रहा है । एक ओर राधा रानी और एक ओर श्याम बिहारी झूल रहे हैं । कदम्ब की डाली पर झूला लगा है जिसपर कृष्ण मुरारी झूल रहे हैं । किस चीज की डोरी है और किस चीज का झूला (पलना) है और किस डाली पर झूला लगा है । रेशम की डोरी है, सोने का पलना है और कदम्ब की डाली में झूला लगा है झूला पर कौन झूलता है और कौन पेंग मारता है । कृष्ण झूला झूल रहे हैं और राधा पेंग मार रही है ।

(३८)

गोरे-गोरे बहियाँ में हरि-हरि चूरिया ,
से झलक मारे नाऽ, रामा मथवा के बिंदिया । झलक ...

बिंदिया साटी हम झाँकली झरोखवा ,
ललक मारे ना, मोर चढ़ल जवनियाँ । झलक......

रहीतन पिया मोर एही रे सवनवाँ ,
पलक मारती नाऽ भरी नयना कजरवा । झलक .... ।

अर्थ

नायिका ने गोरे-गोरे बाहों में हरी-हरी चूड़ियाँ पहन रखी है, माथे की बिंदिया झलक रही है। बिंदी साटकर हमने झरोखे से बाहर देखा तो मेरी जवानी उमंगित होने लगी। यदि इस सावन में मेरे पति रहते तो काजल भरे नयनों से देखती रहती।

(३९)

उमड़ी-घुमड़ी घन गरजे बदरिया, घेरि-घेरि मोतिया बरसे ना।
अँचरा बिछाई हँसे धरती सुहागिन, हँसि-हँसि मोतिया बटोरे ना।

करिया चदरवा के सतरंग कोरवा, ओढ़ि मुसकाय बदरा ना।
अँचरा बिछाई फिन बिहँसे धरतिया, हरियर ओढ़े चदरिया ना।

उड़ल पहरवा आवई बदरवा, चढ़ि चढ़ि सोर बेयरिया ना।
मंगिया सँवार करे सोरहो सिंगरवा, लुह-लुह लहसे बधरिया ना।

करिया बदरवा के धोवल कजरवा, ताहि बीच चमके बिजुरिया ना।
हरवा चलावे कुरखेत किसनवाँ, मटिया सोनवाँ बनावे नाऽ।

अर्थ

उमड़-घुमड़कर बादल गरज रहे हैं और मोतियों की वर्षा हो रही है। अपना आँचल बिछाकर सुहागन धरती हँसती हुई मोतियों को बटोर ले रही है। बादल काली चादर के सतरंगी कोर युक्त वस्त्र ओढ़कर मुसका रहा है। पुनः आँचल बिछा कर धरती विहँस रही है, उसने हरी-हरी चादर ओढ़ ली है। चंचल और शोख हवा पर चढ़कर पहाड़ की तरह बादल उड़ रहे हैं। बाध-बधार मांग सँवार कर और सोलहो ऋंगार कर लहस रहे हैं। बिजली चमकने के कारण काले बादल के काजल धुल गए से लगते हैं। ऐसे समय में कोरे खेत में किसान हल चला रहे हैं और मिट्टी को सोना में बदल रहे हैं।

(४०)

धनधन गंगा मइया, धन हमरो गइया राम, धन हवे गइया हमार।
गइया बछरूआ से भरल दलान हवे, पुअरा से भरल खरिहान।

माटी के मकान हमरो फूस के पलान हवे, दुअरे पर पकवा इनार।
हो रामा धन हवे गंगा मइया, धन हवे गइया हमार॥

अर्थ

किनार पर गंगा के बसे एक गाँव का निर्धन किसान अपनी ग्रामीण स्थिति का हर्षोत्फुल्ल होकर वर्णन करता है । हमारे गाँव के बगल में प्रवाहित गंगा माई धन्य है, हमारी गो माता धन्य है और हमारा गाँव भी धन्य है । हमारा दालान गाय और बछड़े से भरा-पूरा है । हमारा खलिहान पुआल से भरा है । गाँव का मकान मिट्टी का बना हुआ है । उसपर फूस की छावनी है तथा घर के बाहर दरवाजे पर पक्का कुआँ है । हे गंगा माई आप धन्य हैं, हमारी गाय धन्य है और हमारा गाँव धन्य है । (मगध क्षेत्र के गाँव का यथार्थ चित्र)

(४१)

सइयाँ हमरा गेलन रामा पूर्वी बनिजिया से देके गेलन ना ,
ओगे सुगना खेलवना राम से देके गेलन ना ।

खायके देबो सुगना दूध भात खोउवा से सुते खातिर ना ,
दूनो जोबना के बीचवा रामा सुते खातिर ना ।

आधी रात बीतले राम पहरे रात बीतले से काटे लगले ना ,
दूनो जोवना के बंदवा रामा काटे लगले ना ।

एक मनवाँ करई सुगना भूइयाँ में पटकती, दूसरे मनवाँ ना ,
हवे सइयाँ के हो खेलवना रामा दूसरे मनवाँ ना ।।

अर्थ

इस पूर्वी लोक गीत की नायिका कहती है कि हमारे पति पूर्व देश में व्यापार करने गए तो हमारे लिए खेलने वाले साथी के रूप में सुग्गा को रख दिया । वह कहती है कि खाने के लिए दूध-भात और खोवा दूँगी, सोने के लिए दोनो योवन के बीच में स्थान दूँगी । पहर भर रात्रि के बाद आधी रात्रि बीत गई तो सुग्गा दोनों योवन के बंद को काटने लगा । नायिका कहती है कि मन करता है कि जमीन पर पटक दें, फिर सोचती है कि यह प्रिय द्वारा दिया हुआ खिलौना है ।

(४२)

जब हम जानती सखिया राम घर जइहें बनवाँ ,
से बिहने सबेरे घरवा अयती हो राम ।

एक मनवाँ करइ सखि हे संगे बतिअवती ,
दूसरे मनवाँ करई संघवा जयती हो राम ।

लाली रंग डोलिया, सबुजी रंग ओहरवा ,
से फर-फर उड़ेला बदरिया हो राम ।।

अर्थ

एक सखी दूसरी से कहती है कि यदि मैं जानती कि राम घर से जंगल चले जायेंगे तो खूब सबेरे ही अपने घर से चली आती । एक मन करता है कि उनके साथ बातें करती रहती और पुन: मन विचार करता है कि उनके साथ ही जंगल में चली जाती । लाल रंग की डोली और नीले रंग का पर्दा बादल की तरह उड़ता जा रहा है ।

(४३)

भर घुठी पनिया में डूबे ना घइलवा ,
कन्हइया कइसे जमुना में डूबलन हो राम ।

कहवाँ में डूबले कान्हा कहाँ उपहले ,
से कवने बनवाँ बंसीया बजवले हो राम ?

कन्हइया कइसे जमुना में कुदलन हो राम ?
गोखुला में डूबले रामा, मथुरा में उपहले ,
से बृंदावन बंसिया बजवले हो राम ।

अर्थ

यमुना नदी में घुट्ठी भर पानी है जिसमें घइला भी नहीं डूबता, लेकिन कृष्ण उसमें कैसे डूब गए ? वे कहाँ डूब गए और कहाँ लापता हो गए और किस वन में बंसी बजा रहे होंगे ? वे यमुना में कैसे कूद गए ? इसका समाधान करती दूसरी सखि कहती है कि श्री कृष्ण गोकुल में डूब गए और मथुरा में लापता हो गए तथा बृंदावन में बंसी बजा रहे हैं ।

(४४)

फुलवड़िया में घुमत होइहें सखियन के साथ ,
राजा हो जनक जी के बाड़ी-दुलारी सुकमारी हो ,
घूमत होइहें सखियन के साथ ।

राजा दसरथ जी के दूइगो ललनवाँ,
से आई गेलन बगनवाँ हो राम,

एतना में सीताजी के परले नज़रिया,
फेरी लेलन अपनी नयनवाँ हो राम ।।

अर्थ

राजा जनक की बड़ी दुलारी, सुकुमारी पुत्री, सीता सखियों के साथ फुलवारी में घूम रही है । उसी समय राजा दसरथ के दो पुत्र उसी बगीचे में आ गए । सीता की नजर उनपर पड़ी तो उन्होंने अपनी आँखें फेर ली ।

(४५)

झूला लगल कदम के डारी, झूले कृष्ण मुरारी ना ।
कदम के डारी रेसम डोरी, सोने पलना ना ।।

राधा ढुले कृष्ण ढुलावे फेरा-फेरी ना ।
झूला लगल कदम के डारी, झूले कृष्ण मुरारी ना ।।

अर्थ

कदम्ब की डाली पर झूला लग गया है, कृष्ण झूल रहे हैं । कदम्ब की डाली पर रेशम की डोरी है और सोने का पलना है । राधा झूल रही है और श्री कृष्ण झूला रहे हैं ।

(४६)

पटना जिला में प्रचलित बारहमासा का एक तर्ज बटोहिया की तरह है जो निम्न प्रकार द्रष्टव्य है–

आयल अषाढ़ मास, लगल हे पिया के आस,
बरखा में पिया घरवा रहीतन बटोहिया ।

पिया रहीतन बुनिया में, राखी लेतन दुनिया में,
अधिक सतावऽ हे सवनवाँ बटोहिया ।

आई गेले मास भादो, केई खेली दही-कादो,
किसुन के जलम अस बीते हे बटोहिया ।

आसिन महीनवाँ के, काड़ा घाम दिनवाँ के,
बन नियन घरवा बुझावे हे हो बटोहिया ।

कातिक के मसवा में, पियवा के असवा में,
रहली न मिटऽ हे पिअसवा बटोहिया।

अगहन-पूसवा के, दुख कहीं केकरा से,
वनवाँ समनवाँ भवनवाँ बटोहिया।

आ गेलो मघवा, कँपावे लागल जंघवा,
हड़वा मे जड़वा समाले हो बटोहिया।

आ गेले मास होरी, अबीर के घोरा-घोरी,
फागुआ जे खेलती अबीर से बटोहिया।

चढ़ल चइतिया में, बोले हे कोइलिया से,
चढ़ल हे जवानी मस्तानी हो बटोहिया।

आयल बइसाख मास, लगन उठे हे खास,
बजवा सुनत राति बीते हो बटोहिया।

आई गेले जेठवा, मदन भेले हेठवा से,
अब नहि हमसे सहाय हो बटोहिया ।।

अर्थ

अषाढ़ आते ही प्रिय की आशा बलवती हो उठी, काश, वर्षा में वे घर पर रहते। हे बटोही, यदि प्रिय घर पर रहते तो दुनिया में रहना सार्थक था। सावन मास अत्यंत दुखद हो रहा है। भादो आ गया, कृष्ण जन्म दिवस बीत रहा है किसके साथ दधि-कादो खेलूँ ? आश्विन महीने में कड़ी धूप हो जाती है, घर भी वन की तरह लगने लगा है। कार्तिक महीने में प्रिय की आशा में रही परंतु मन की प्यास नहीं मिटी। अग्रहण-पूस का दुख किससे कहूँ, मेरा भवन जंगल की तरह हो गया है। माघ महीने में जाँघ काँप रही है, जाड़ा हड्डी में प्रवेश कर गया है। देखते-देखते होली आ गई। रंग-अबीर घोला जाने लगा। यदि प्रिय होते तो अबीर से मैं भी फागु खेलती। चैत्र मास में कोयल बोलने लगी और मेरी मस्त जवानी चढ़ी है। जब वैशाख मास आ गया तो लग्न उठा, विवाह में रात्रि भर बाजे-गाजे सुनने में बीता। इस प्रकार जेठ पहुँच गया। उदीप्त कामदेव भी बुझने लगे, अब निराशा जनक स्थिति असह्य हो रही है। (दुखांत बारहमासा)

●

मौसमी लोकगीतों में फागु और चैता

मौसमी लोक गीतों में फागु और चैता का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। शिष्ट साहित्य में भी इन गीतों की परम्परा वर्त्तमान है। संस्कृत अपभ्रंश से लेकर ब्रजी, अवधी, गुजराती, मेवाड़ी, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि भारत की समस्त बोलियों में साहित्य की यह विद्या वर्त्तमान मिलती है। ब्रजभाषा में इसका विशिष्ट स्थान है। रीति कालीन कवियों ने कृष्ण साहित्य के अन्तर्गत फागु को अवश्य समाहित किया है। मगही में भी फागु और चैता साहित्य की प्रचुरता है जो स्वतंत्र रूप से अनुसंधान की अपेक्षा रखता है। इनकी प्रचुरता, विषय वस्तु की व्यापकता लोक धुनों की मनमोहकता एवं मानवीय भावनाओं की उन्मुक्त अभिव्यक्ति आदि विशिष्ट गुण फागु और चैता लोक गीतों की प्रभावोत्पादकता एवं महत्व के विशिष्ट कारण हैं।

माघ बसंत पंचमी से फागु का प्रथम धुन प्रारम्भ होकर चैत्र प्रतिपदा को समाप्त होता है। करीब डेढ़ महीने तक मगह का लोकजीवन फागु लोकगीतों से गुंजते रहता है। प्रतिपदा की अर्द्धरात्रि से चैता की मधुर रागिनी फूट पड़ती है जो मेष की संक्रांति तक चलती रहती है। फागु और चैता लोकगीतों में मनुष्य के मादन भाव बड़े ही स्प्ष्ट और कोमल रूपों में व्यक्त होता है। बासंती साहित्य में चैता अपनी कोमलता, मधुरिमा और सुरीली रागिनी के लिए प्रसिद्ध है। इसका एक रूप घाटो के नाम से चर्चित है। कहीं-कहीं नर्त्तक के साथ भी चैता गाया जाता है। यहाँ मगह में प्रचलित फागु और चैता लोकगीतों को उदधृत किया जाता है। जिनसे इनके भाव सौन्दर्य और कला सौन्दर्य का पता चलेगा।

(१)

सुमिरहूँ सीरी भगवान अरे लाल, सुमिरहूँ सीरी भगवान होऽ,
अहो जेही, जेही सुमिरत सब काम बनत है-सुमिरहूँ सीरी... ।

पूरूब में सुमिरहूँ उगत सुरूजवा, उगत सुरूजवा होऽऽ ,
पछिम में चिर सुलतान अरे लाला सुमिरहूँ सीरी भगवान होऽ ,

उत्तर में सुमिरहूँ उत्पति गंगा, दखिन सुमिरहूँ हनुमान ,
नीचे में सुमिरहूँ धरती माई के, ऊपर सुमिरहूँ भगवान होऽऽ ,

गया में सुमिरहूँ गया गजाधर, कासी विसेसर नाथ ,
जेही सुमिरत सब काम बनत है, सुमिरहूँ सीरी भगवान होऽ ॥

अर्थ

फागु या होली प्रारम्भ करते समय मगध में यह गीत अवश्य गाया जाता है । यह ''सुमिरण'' है, देव स्मरण गीत, जिससे गायन निर्विघ्न समाप्त हो । गायक मंडली ढोल-झाल-करताल, डफ आदि वाद्य यंत्रों के साथ सुरीले तान में अलाप उठता है–श्री भगवान का स्मरण करें जिनके स्मरण मात्र से सारे कार्यों की सिद्धि होती है । पूरब में उगते हुए सूर्य का स्मरण करो और पश्चिम में हमेशा रहने वाले सुलतान का । उत्तर दिशा में हिमालय और गंगा का स्मरण करो तथा दक्षिण में हनुमान का । नीचे धरती माता और ऊपर में भगवान का स्मरण करो । गया के गजाधर और काशी के विश्वनाथ भगवान का स्मरण करो । इन देवों के स्मरण करने से सारे कार्य सिद्ध होते हैं ।

(२)

सिया राम बिन नइया डगमग डोले सिया राम बिना ,
सिया राम बिना हो, सिया राम बिना हो ।

काठ के नइया टूटल पतवरिया, खेवत हैं भगवान ,
नइया डगमग डोले सियाराम बिना हो ।

अर्थ

सीताराम के बिना मेरी नाव डगमग डोल रही है । यह नाव काठ का है और इसका पतवार टूट गया है । अब तो एक मात्र भगवान ही सहारा है, वही खेने वाले हैं, उनके बिना नाव डगमगा रही है ।

(३)

सिव संकर खेलथ फाग, गउरा संग लिए ,
अहो एक ओर खेलथ गउरा महादेव ,
अहो लाल एक ओर भूत-बैताल, गउरा संग लिए ।

अर्थ

पार्वती के साथ महादेव फाग (रंग-अबीर) खेल रहे हैं । एक ओर तो स्वयं महेश और गौरी हैं और दूसरी ओर उनके गण-भूत-बैताल होली खेल रहे हैं ।

(४)

लड़िका हो गोपाल, कूद पड़े जमुना में ,
जमुना में कूदे काली नाग नाथे, अहो फन पर भये असवार ,
कूद पड़े जमुना में, लड़िका हो गोपाल, कूद पड़े जमुना में ।

अर्थ

खेलते-खेलते बाल कृष्ण यमुना नदी में कूद पड़े । यमुना में कूदकर काले नाग को नाथ दिया और उसके फन पर सवार हो गए । (कालिय दह, नाग-नाथन की कथा पर आधारित)

(५)

कन्हैया ना माने, नयनवाँ में डाले गुलाल ।
मत डारऽ रंग कान्हा, अँखिया पिराय, हो गेली चुनरिया लाल ।
जाय कहबो हम जसोदा अंगनवाँ, देखऽ कन्हैया केचाल-कन्हैया न माने ।।

अर्थ

होली में श्रीकृष्ण किसी की बात नहीं मानते । वे लोगों की आँखों में गुलाल डाल देते हैं । एक गोरी कृष्ण को गुलाल डालने से वर्जित करती है कि मेरी आँखे दुख रही है और चुनरी लाल हो गई है । हम जाकर यशोदा के आंगन में कहूँगी कि अपने कन्हैया की करतूत जरा देख तो भला ? वह लाख मना करने पर भी नहीं मानता ।

(६)

वन को जात राम रघुराई ।
आगे-आगे राम चलतु हैं, पाछे लछुमन भाई ।

सेकरो पाछे सीता चलतु हैं, बटिया जोहत चली जाई ।
केकरा बिना सून अयोध्या, केकरा बिन चउपाई ।

रामा बिना सून अयोध्या, लछुमन बिना चउपाई ।
केकरा बिना सुन रसोइया, के मोरा भोजन बनाई ?
सीता बिना सून रसोइया, ओही मोरा भोजन कराई ।।

अर्थ

रघुपति राम वन को चले जा रहे हैं । आगे-आगे राम जा रहे हैं और उनके पीछे भाई लछुमन जा रहे हैं । उनके पीछे सीता चली जा रही है । वह राह देखते जाती है । प्रश्न है कि किसके बिना अयोध्या शून्य है और किसके बिना खाट शून्य है ? राम के बिना अयोध्या शून्य है और लक्ष्मण के बिना पलंग शून्य है । किसके बिना रसोई घर शून्य है और कौन भोजन बनावेगी ? सीता के बिना रसोई घर शून्य है वही भोजन बनावे-करावेगी ?

(७)

बाबा हरिहर नाथ, सोनपुर में होली खेले ।
गया में खेले, गजाधर में खेले,
अहो खेले विसेवेस्वर नाथ, सोनपुर में होली खेले ।

अर्थ

सोनपुर में बाबा हरिहर नाथ (महादेव) होली खेल रहे हैं । गया में गजाधर नाथ खेल रहे हैं और काशी में विश्वनाथ महादेव होली खेल रहे हैं । अर्थात् महादेव सर्वत्र होली खेल रहे हैं ।

(८)

जमुना जी के तीर, जमुना जी के तीर, दही मोरा लुटले कन्हइया ।
दही मोरा लुटले, मटुक सिर फोड़ले, गेडुली हो, अहो गेडुली,
अहो गेडुली दहवो जमुना में, जमुना जी के तीर, दही मोरा लुटले कन्हइया ।।

अर्थ

गोपी कहती है कि यमुना किनार श्रीकृष्ण ने मेरा दधि लूट लिया । दधि ही नहीं लूटा बल्कि सिर की मटुकी भी फोड़ दी और गेडुली (नेठो) भी यमुना नदी में प्रवाहित कर दिया । उसने यमुना किनार मेरा दधी लूट लिया ।

(९)

केदली बन बोले रे भौंरा, केदली बनऽ,
किनकर पुत्री सिया जानकी, किनकर पुत्री है गौरा ?
केदली बन बोले रे भौरा, केदली बन बोले रे भौंरा ।

राजा जनकजी के पुत्री जानकी, राजा अहो राजा, हिमांचल के गौरा ।
केदली बन बोले रे भौंरा, केदली बन बोले रे भौंरा ।

अर्थ

केवड़े के वन में भौंरे गुंजार कर रहे हैं । सीता किनकी पुत्री है और गौरी किनकी पुत्री है ? राजा जनक की पुत्री सीता है और हिमालय की पुत्री गौरी है । केदली वन में भौंरे बोल रहे हैं ।

(१०)

लिखूँ पाँती भेजहूँ अवधपुर ये हो- होली खेले राम जनकपुर अइहें ।
हँसऽ हई जनकपुर के लोग ये हो, बालक राम धनुष कइसे तोड़िहें ?
धनुहा टूटल सोर भेले ये हो, सीताजी के होवऽ हई विआह ।

अर्थ

पत्र लिखकर अयोध्या में भेज दो कि राम जनकपुर में होली खेलने आवें । जनकपुर में राम को देखकर लोग हँसते हैं कि बालक राम धनुष कैसे तोड़ेंगे ? परंतु धनुष तोड़ दिया गया और सर्वत्र हल्ला हो गया । अब राम के साथ सीता का विवाह होने लगा ।

(११)

गौरी पूजन जात कुँवारी ।
अछत चंदन बेल के पाती, भरी कंचन लिये थारी,
सब सखियन मिली झुंड बान्ह के गावथी मंगलचारी,
मंदिलवा में पहुँचल प्यारी । गौरी पूजन जात कुँवारी ।।

पूजा करत मनावत बहुविधि, बिनती करत कर जोरी,
पूजा करी सिया, निकले मंदिर से देखन गए फुलवारी,
उहवाँ देखल दसरथ जी के नंदन, राम लखन दूनो भाई,
बाग बीच फिरत फिरोरी । गौरी पूजन जात कुँवारी ।।

अर्थ

कुँवारी सीता गौरी की पूजा करने जा रही है । सोने की थाली में अक्षत, चंदन और बेलपत्र भरे हैं । सभी सखियाँ समूह बनाकर मंगल गीत गाती मंदिर में पहुँचती है । कुँवारी मंदिर में पूजा करते समय बहुत प्रकार से प्रार्थना करती है कि उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण हो । पूजा के बाद सीता मंदिर से निकलकर फुलवारी देखने गई तो वहाँ दशरथ जी के पुत्र राम और लक्षमण को बगीचे के बीच भ्रमण करते देखा ।

(१२)

कान्हा हो मत मारूँ फुचकारी ।
भरी फुचकारी मारे कान्हा बदनपर, भींग गयो मोरे सारी ।

एक बूँद जो परीहे बदन पर, देबव हजारन गारी, जो चूनर भींजे हमारी ।
अइसन-अइसन चुनरी बहुत मेरो घर है, जे पेन्हे पनीहारी ।

गारी के बदला गारी हम देबो हमहीय बन के बिहारी ।
कारी कमरीया के ओढ़न हारे, बात करत जीमेदारी ।

तुहूँ बिकैबऽ तोर गइयो बिकैतो, आऊ जसोमती माई ।
लला तू तो निपट गोवारी ।।

अर्थ

गोपियां कहती है कि हे कृष्ण तू पिचकारी मत मारो । भरी पिचकारी मारने से मेरी कंचुकी और मेरी सारी भींग गई । यदि एक बूँद भी मेरे शरीर पर पड़ गई तो मैं हजारो गाली दूँगी । ऐसी चुनरी मेरे घर पर बहुत है जो हमारे यहाँ पानी भरने वाली पहनती है । मैं वन विहारी हूँ, गाली के बदला गाली दूँगा । गोपी कहती है कि काली कम्बल ओढ़ने वाले सामंती बात करते हो । हे लला तू निपट ग्वाला ही मालूम पड़ते हो ।

(१३)

केकरा संग खेलब होरी ।
फागुन फाग पिया संग खेलब, चइत खेलब बरजोरी,

आए बइसाख धूप लगे तलफे, जेठ में हेठ भयोरी,
पिया मुख मैल भयोरी । केकरा संग खेलब होरी ।।

आए असाढ़ घटा घन गरजे, सावन देत झकोरी,
भादो में रिमझिम बूँद बरीसे, आसीन आस लगोरी,

कातिक कंत विदेस गयो हैं, अगहन अग्र चढ़ोरी,
पूस के जाड़ा सइयाँ मैं न सहूँगी, माघ में भाग-लड़ोरी,
पिया संग खेलब होरी ।

अर्थ

नायिका कहती है कि किसके साथ होली खेलूँगी ? फागुन में प्रिय के साथ होली खेलूँगी, चैत्र में जबर्दस्ती भी कर सकती हूँ । वैशाख आने पर धूप तेज हो गई । जेठ में मन मलीन और प्रिय का मुख उदास हो गया । मैं किसके साथ होली खेलूँ ? अषाढ़ में बादल गरज रहे हैं और सावन में झकोरी (झपसी) लगी है, भादो में रिमझिम बूँद पड़ रही है और आश्विन में कुछ आशा लगी । कार्तिक में प्रिय विदेश चला गया और अगहन का अग्र महीना आ गया । हे प्रिय पूस का जाड़ा मैं नहीं सह पाऊँगी । माघ मास तो भाग्य के भरोसे है । इस प्रकार फागुन आ गया, प्रिय के साथ ही होली खेलूँगी ।

(१४)

फागुन धरीहँऽ नेआर, फागुन धरीहँऽ नेआर, ये भौजी भइया से कहिहँऽ ।
भइया आउ भौजी सुतलन अंगनवाँ, अरे हमरा, अरे हमरा के जीया ललचाय ।
ये भौजी भइया से कहिहँऽ, फागुन धरीहँऽ नेआर-फागुन धरीहँऽ नेआर ।।

अर्थ

ननद भाभी से कहती है कि मेरे द्विरागमन का दिन फागुन मास में निश्चित कर देना । भइया और भाभी आंगन में शयन करते हैं तो मेरा जी ललचने लगता है । अतः हे भाभी, मेरे भाई से कहकर फागुन मास में ही सुदिन निश्चित करवा दो ।

(१५)

अबकी गयो कब अइहें मोहन, अबकी गयो कब अइहें ?
सावन सखिया चीरा रंगइहें, भादो मत भूल जइहों ,
ए हाँ-हाँ, भादो मत भूल जइहों ।

जो तू मोहन भादो भूलीहें, कुँवर में कपट लगइहें । मोहन....
माघ मास में मकर नहायो, फागुन रंग बनइहों ,
ए हाँ-हाँ फागुन रंग बनइहों ।

चैत मास में बेला फूले भँवरा सोर मचइहों ,
ए हाँ-हाँ भौंरा सोर मचइहों, अबके गए कब अइहों
भर बइसाख धूप लगे तलफे, जेठ में नींद भर सोइहों ।
ए हाँ-हाँ जेठ नींद भर सोइहों ।

आये असाढ़ घटा घन गरजे, सावन देत झकोरी ,
ए हाँ-हाँ सावन देत झकोरी । अबके गयो कब अइहों ...

अर्थ

श्रीकृष्ण गोपियों को छोड़कर जा रहे हैं तो वह कहती है कि इस बार जाने के बाद कब आओगे ? सावन में सखियाँ चीर रंगावेगी । अतः भादो में आना मत भूलना, भादो आना कभी न भूलना । हे माधव, यदि तू भादो में भूल जाओगे तो आश्विन में तुम्हें कपटी होने का दोष लगेगा । माघ महीने में मकर संक्रांति का स्नान होता है और फागुन में रंग-गुलाल का बहार रहता है, हाँ रंग-गुलाल मचा रहता है । चैत्र मास में बेली का फूल खिलता है और भौंरे शोर मचाते रहते हैं । वैशाख में धूप जलने लगती है और जेठ में नींद भर सोया जाता है असाढ़ में बादल गरजने लगते हैं, सावन में झकोरी लग जाती है । अतः इन बातों को ध्यान में रखोगे और इसके बाद कब आओगे ? यह भी बताते जाओ । (इस फागु मे बारहमासे का सौन्दर्यांकित है)

(१६)

उठूँ पिया लिखूँ पाँती, भेजूँ नइहरवा ,
झूमका मोरा छूटल ओही कोहबरवा ।

झूमका मोरा ये हो, झूमका मेरा ये हो ,
झूमका मोरा छूटल ओही कोहबरवा ।।

अर्थ

पत्नी प्रिय से कहती है कि उठकर मेरे मायके में पत्र लिख दें कि मेरा झूमका वहीं कोबर में छूट गया । मेरा झूमका वहीं छूट गया है ।

(१७)

होली धूम मचे बाबा भोला के दरबार ।
सौ-सौ काँवर भोला पर चढ़ई, सीसीयन ऐ अनुहारे,
अहो सीसीयन के धुंधकार । होली धूम मचे बाबा भोला के दरबार ।

अर्थ

भोले बाबा के दरवार में होली का धूम मचा है । भोला पर सौ-सौ काँवर और सीसी भरे रंग छिड़के जा रहे हैं । वहाँ होली का धूम मचा है ।

(१८)

ये गोरी मैं तुमसे पूछूँ कहाँ रंगवलऽ दँतवा हो, कहाँ रंगवलऽ दँतवा ?
बाबा हमार एक पोखर खनायो, घाट बँधायो चार घटवा हो, घाट बंधायो चार घटवा ।
अहो ओही घाट पर दतवन कइली, झलके बतीसो दँतवा हो, झलके बतीसो दँतवा ।
ये गोरी मैं तुमसे पूछूँ कहाँ रंगवलऽ दँतवा हो, कहाँ रंगवलऽ दँतवा ।।

अर्थ

हे गोरी, मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुमने अपने दाँतों को कहाँ रंगाया है ? वह कहती है कि हमारे बाबा ने एक तालाब खुदवाया । उसके चारों ओर चार घाट बनवाया । उसी घाट पर मैं रोज दातुन करती हूँ । इसीलिए हमारे बतीसो दाँत झलकते हैं ।

(१९)

काहेला गउरी तप कैलऽ, बरवा मिलल बउराह ।
केसिया हइन पाकल-पाकल, दँतवा हइन टूटल-टूटल ।
अहो, गोड़वा में फटल हइन बेयार- हे अनुहारे ।

अर्थ

सखियाँ पूछती हैं कि हे पार्वती, किसलिए इतनी तपस्या की ? वर पागल मिल गया । केश पके हैं, दाँत टूट गए हैं और पैर में बिवाई फट गई है ।

(२०)

अंगीय बैंगनी, कहवाँ रंगवले हो लाल ।
किया तोरा अंगीया नइहरवा से आवले ,
किया तोर एक अनुहारे, अहो किया तोरा भेजले इयार । अंगीया..

अर्थ

नायक नायिका से पूछता है कि अपनी कंचुकी बैंगनी रंग में कहाँ रंगवाया ? क्या यह चोली मायके से आई है ? या तुम्हारे योग्य किसी मित्र ने तुम्हारे पास भेजा है ।

(२१)

केसिया सम्हार जुरवा बाँध गे ननदिया ,
होली खेले अइहें देवर, ननदोसियो ।

देवर ननदोसिया, देवर ननदोसिया,
होली खेले अइहे देवर ननदोसिया।

अर्थ

भाभी ननद से कहती है कि केश सम्हालकर जूड़ा बाँध लो, अर्थात् श्रृंगार कर लो। हमारे देवर और तुम्हारे पति (ननदोसी) होली खेलने आवेंगे। देवर और ननदोसी अवश्य आवेंगे।

(२२)

अवध में कोसिला करली सगुनवाँ,
से बने-बने रामजी खेललन फगुनवाँ। बने-बने...

अर्थ

अयोध्या में माता कौशिल्या सगुन कर रही है और राम वन-वन में फाग खेल रहे हैं।

(२३)

नइहर दूर बसेला, केकरा संग जाऊँ ? केकरा संग जाऊँ-नइहर दूर बसेला।
ससुर-भैंसुर संग लाज लगेला, अहो देवरा के मन बेइमान।
नइहर दूर बसेला, केकरा संग जाऊँ ? केकरा संग जाऊँ, नइहर दूर बसेला।

अर्थ

श्वसुराल में निवास करने वाली पत्नी कहती है कि मैं किसके साथ मयके जाऊँ क्योंकि नैहर यहाँ से दूर है। श्वसुर-भैंसुर के साथ जाने में शर्म का अनुभव होता है और देवर के मन में बेइमानी है अर्थात् वह मेरा रूप लोभी है। अतः मैं जाऊँ तो किसके साथ ?

(२४)

त्रिसूले पऽ कासी रूप-रासी।
आधा कासी ब्राह्मन बसी गये, अहो आधा कासी सन्यासी। त्रिसूले...

अर्थ

रूपवती काशी त्रिशूल पर बसी हुई है जो महादेव जी का अस्त्र है। वहाँ आधा में ब्राह्मणों का निवास है और आधी काशी में सन्यासी रहते हैं। वस्तुतः वह त्रिशूल पर अवस्थित महादेव नगरी है।

(२५)

लगे चुनरी में आग बुझाऊँ कैसे, लगे चुनरी, लगे चुनरी में आग, बुझाऊँ कैसे?
पिया परदेस, देवर घर लड़िका, सुतल भैंसुर जगाऊँ कैसे ? लगे चुनरी में ...।

अर्थ

प्रोषितपतिका (नायिका) विरहाग्नि से बेचैन है । उसकी चुनरी में अग्नि प्रज्जवलित हो रही है, उसका पति परदेश है, देवर अभी बच्चा है और सोये भैंसुर को कैसे जावें ? चुनरी में आग लगी है ।

(२६)

कबले सुकरवा उदय लेत है, कबले गवने जायब दइया ।
कातिक सुकरवा उदय लेत है, अगहन गौने जायब दइया ।।

अर्थ

युवती को अभी द्विरागमन नहीं हुआ है । वह आशा में है कि शुक्रोदय कब होगा (उसी नक्षत्र से गवना का दिन निर्धारित होता है) और कब गवना में वह श्वसुराल जायगी । कार्तिक में शुक्रोदय होता है और अग्रहन में द्विरागमन होगा ।

(२७)

मथुरा कैसे जाऊँ, रहिया बतावऽ हो कन्हइया ।
रहिया बतावऽ नतो छिनबो बसुरिया, छिनबो ए अनुहारे ।।

अर्थ

गोपी श्रीकृष्ण से मथुरा जाने का मार्ग पूछती है और कहती है कि राह नहीं बताओगे तो तुम्हारी बासुरी छीन लूँगी, समझे ?

(२८)

नकबेसर कागा ले भागा, नकबेसर कागा ले भागा, नकबेसर ।
उड़ि-उड़ि कागा पलंग चढ़ी बइठे, जोबन के सब रस ले भागा ।
पिया अभागा न जागा, नकबेसर, नकबेसर कागा ले भागा ।।

अर्थ

पत्नी के साथ पति सोया है । कौवा आकर पत्नी की नाक का बेसर लेकर उड़ गया और पति की नींद नहीं खुली । वह काग नायक बार-बार पलंग पर चढ़ बैठता है और मेरे यौवन के रस को चूसकर भाग जाता है परंतु अभागा पति नही जागता ।

(२९)

होली खेलत नन्द लाला बिरज में, होली खेलत नन्द लाला।
ग्वाल-बाल संग रास रचावत, नटखट नंद गोपाला।

बाजत ढोल, झाल, मंजीरा, गावत सब मिली आज कबीरा।
नाचत दे-दे ताल बिरज में, होली खेलत नन्दलाला।

अर्थ

ब्रज में नन्द लाल होली खेल रहे हैं। ग्वाल-बालों के साथ रास रचा रहे हैं– नटखट नंदलाल होली खेल रहे हैं। ढोल, झाल, मंजीरा बज रहे हैं। सभी मिलकर आज 'कबीरा' गा रहे हैं और ताल-दे-दे कर सभी नाँच रहे हैं।

(३०)

कइसे के जलवा भरीयो कन्हइया, जमुना गहरी,
खाड़ भरूँ तो घइलवो न डूबे, अहो निहुरी भरूँ तो भिंजे चुनरी,
कइसे में जलवा भरीयो कन्हइया, जमुना गहरी।।

अर्थ

गोपी कहती है कि हे कृष्ण, कैसे मैं जुमना से जल भरूँ। यमुना नदी गहरी है-खड़े होकर घइला भरूँ तो वह डूबेगा नहीं, यदि झुक कर भरूँ तो हमारी चुनरी भींग जायगी। अतः कैसे जल भरूँ ?

(३१)

सरयू तट राम खेलत होरी, सरयू तट।
केकर हाथ कनक फुचकारी, केकर हाथ अबीर झोरी,

राम के हाथ कनक • फुचकारी, लछुमन हाथ अबीर झोरी,
सरयू तट राम खेलत होरी, सरयू तट, सरयू तट राम खेलत होरी, सरयू तट।

अर्थ

सरयू के किनारे राम होली खेल रहे हैं। किसके हाथ में सोने की पिचकारी और किसके हाथ में रंग-अबीर की झोली है। राम के हाथ में सोने की पिचकारी और लक्ष्मण के हाथ में अबीर की झोली है। वे सरयू किनारे होली खेल रहे हैं।

(३२)

गोरिया पातरी, जइसे लपहई लवंगिया के डार, गोरिया पातरी ,
पनवा अइसन गोरी आँतर-पातर अहो फुलवा अइसन सुकुमार हो ,
अहो फुलवा अइसन सकुमार, गोरिया पातरी, जइसे लीपहई लंवगिया के डार ।।

अर्थ

नायिका तन्वंगी है, वह लवंग की डाली की तरह झुक जाती है । वह पान की पत्ती की तरह पतली है और फुल की तरह सुकूमार है । फूल की तरह सुकमार गोरी लवंग की डाल की तरह झुक जाती है ।

(३३)

होली कैसे खेलूँ, बालम हमरे विदेस ।
सबके बलमुआँ अंगनवाँ खेले, हमरो बलम परदेस ।।
होली कैसे खेलूँ, बालम हमरे विदेस ।

अर्थ

प्रोषितपतिका (नायिका) कहती है कि मैं होली कैसे खेलूँ ? हमारा प्रिय विदेश में है । सभी के पति अपने आंगन में होली खेल रहे हैं पर मैं क्या करूँ, मेरा पति तो प्रदेश में है ।

(३४)

अँखिया लाले-लाल, एक नींद सोवे दऽ बलमुआँ ।
भर फागुन धानी सोबहुँ न देबो, अहो चइत सुतिहँऽ भर रात हो ,
अहो चइत सुतिहँऽ भर रात, एक नींद सोवे दऽ बलमुआँ, अँखियाँ .... ।।

अर्थ

पत्नी कहती है कि हे प्रिय, थोड़ा भी तो सोने दें । पति कहता है कि फागुन मास में सोने नहीं दूँगा । चैत्र में रात्रि भर सोना । अभी तो होली का महीना-फागुन है ।

(३५)

(1) दसरथ साजे बरियात, हरे लाला, दसरथ साजे बरियात हो ,
भीर भयो राजा जनक दुहरिया-दसरथ साजे बरियात हो ।

(II) सुन्दर वर भगवान हरे लाला, सुन्दर वर भगवान हो,
चलूँ हो, सखि मड़वा वर परीछन । सुन्दर वर भगवान हो ।

अर्थ

(I) दशरथ अपने पुत्र राम की बाराती साज रहे हैं । बारात से जनकपुर के राजा जनक का दरवाजा भर गया, भीड़ हो गई ।

(II) सखियाँ कह रही हैं कि भगवान एक सुन्दर वर है । हम सब उन्हे परीक्षण करने चलें, सुन्दर हैं, देख भी लेंगी ।

(३६)

सिव गौरी के मुख पर रंग डाले ,
अहो सिव ऐसो जटाधारी ,
सिव गौरी के मुखपर रंग डाले ।

अर्थ

जटाधारी शिव सुन्दरी गौरी के मुख पर रंग डाल रहे हैं ।

(३७)

खेलहूँ रंग बनाई अहो लाला, हो, फेर नहीं राम जनकपुर अइहें ,
खेलहूँ रंग बनाई हो लाला, खेलहूँ रंग बनाई ।

अर्थ

राम जनकपुर गए हैं, वहाँ के लोग कहते हैं कि रंग घोलकर होली खेलो । फिर राम जनकपुर नहीं आवेंगे ।

(३८)

लामी-लामी केसिया भूइयाँ लोटे हो ,
अब **कइसे** अंगना वहारब ननदो । लामी-लामी...

अर्थ

नायिका की केश राशि लम्बी है । उसे आंगन बुहारने में नहीं बनता है । वह ननद से पूछती है कि मैं कैसे आंगन बहारूँ ?

(३९)

अंगना में बोलले काग हरे लाल–अंगना में बोलले काग हो।
सइयाँ–आवन केरा सगुन बनतु हैं – अंगना में बोलले काग हो ॥

तोहरा के देबो कागा दूध-भात कोरवा।
सइयाँ सगुन लेले आवऽ, अंगना में बोलले काग, हरे लाल ॥

अर्थ

आंगन में कौवा बोल रहा है। पत्नी सोचती है कि यह पति के आगमन की सूचना है। अतः वह काग से कहती है कि तुम्हें दूध-भात का कौर दूँगी, तुम जाकर प्रिय के आगमन की सूचना ले आओ।

(४०)

जमुना तट स्याम खेले होली, जमुना तट।
केकरा हाथ कनक पिचकारी, केकरा हाथ कनक पिचकारी।
अहो किनकर हाथ अबीर-झोली, जमुना तट स्याम खेले होरी ॥

कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी।
राधा के हाथ अबीर झोली, जमुना तट स्याम खेले होरी ॥

अर्थ

यमुना के किनारे श्याम होली खेल रहे हैं। किसके हाथ में सोने की पिचकारी है और किसके हाथ में अबीर की झोली है। कृष्ण के हाथ में सोने की पिचकारी है और राधा के हाथ में अबीर की झोली है। श्याम यमुना किनारे होली खेल रहे हैं।

(४१)

सइयाँ, मत बरजोरी करऽ होरी में।
हाँ, दउरी-दउरी पिचकारी चलावे।

हाँ, रंग अबीर लिये झोरी में, सइयाँ मत ....।
रात-रात भर ऊधम मचावे।
कही पकरा जयबऽ पिया चोरी में– सइयाँ मत ..।

अर्थ

पत्नी कहती है कि हे प्रिय होली में बलजोरी नहीं करें, झोली में रंग-अबीर लेकर। दौड़-दौड़कर पिचकारी से रंग फेंक रहे हैं। इतना ही नहीं, रात्रि भर उपद्रव मचाते रहते हैं, कहीं सास-ननद देख लेगी तो आपकी चोरी पकड़ ली जायगी।

(४२)

बीत जाले फागुन बहार अरे लाला, बीत जाले फागुन बहार हो।
ननदी कहे भौजी करी दऽ गवनवाँ, बीत जाले फागुन बहार हो।

अर्थ

ननद भाभी से प्रस्ताव रखती है कि फागुन का बहार बीता जा रहा है। अतः मेरा गवना करा दें।

(४३)

ऊँचे गढ़ रोहतसवा ताके नीचे पटवा केरा हाट,
हाट बेसाहन मैं निकली, बाके-छैला ये मरोड़ले बाह,

काला पानी मैं न पीऊँ, काला बैगन खाय,
काला मरद सांगे मैं न सोऊँ, करिया होय जायब।

अर्थ

रोहताश्व के ऊँचे पहाड़ पर बने गढ़ (रोहित किला जिसे राजा मानसिंह ने बनाया था) के नीचे रेशमी वस्त्र का हाट लगा है। नायिका बाजार में खरीददारी के लिए निकली। वहाँ एक तिरछी चितवन वाला सावला छैल-छवीले ने मेरी बाह पकड़ कर खींच लीया नायिका ने कहा कि मुझे काली चीज से परहेज है। मै काला पानी (गंदा पानी) नहीं पीती, काला बैगन नहीं खाती और काले मर्द के साथ नहीं सोती। काले के संसर्ग से काली हो जाऊँगी।

(४४)

वृंदावन मोहन दधी लूटे।
कहाँ टूटे हार, कहाँ नकवेसर, कउन गलिन में लर टूटे।
गोकुला हार, मथुरा नकवेसर, कुंज गलिन में लर टूटे। वृंदावन ....

अर्थ

श्री कृष्ण वृन्दावन में दधि की चोरी कर रहे हैं । दही चुराने और गोपियों से लूटने में उनके गले की हार टूट गई । उन्हें पता नहीं कि हार टूटी कहाँ और नकवेसर कहाँ खो गया । लगता है गोकुल में गले की हार टूट गई और मथुरा में नकवेसर खो गया । कृष्ण वृंदावन में दही लूट रहे हैं ।

(४५)

बृज में हरि होरी मचाई ।
इतसे निकली नवल राधिका, उतसे कुँवर कन्हाई ,
खेलत फाग परस पर हिलमिली, सोभा बरनी न जाई ,
घरे-घरे बाजत बधाई । बृज में हरि होरी मचाई ।।

बाजत ढोल मृदंग झाल, डफ औ मुरली सहनाई ,
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रहत सकल नभ छाई ,
लाल मेघवा घेरी आई । बृज में हरि होरी मचाई ।।

खेलत गेंद गिरे जमुना में, के मोरा गेंद चोराई ,
हाथ डालि अंगिया बीच दूढो, एक गए दोउ पाई ,
लाल मोही चोरी लगाई । बृज में हरि होरी मचाई ।।

राधा सैन दियें सखियन के, झुंड-झुंड उठि धाई ,
लपकी-झपकी कर स्याम सुनर को, बरबस-पकरी मंगाई ,
लालजी को नारी बनाई । बृज में हरि होरी मचाई ।।

छीन लिये मुख मुरली पीताम्बर, सिर से चुनरी ओढ़ाई ,
बिन्दी भाल नयन बीच काजर, नकबेसर पहिराई ,
लालजी को नारी बनाई । बृज में हरि होरी मचाई ।।

मुसकत है मुखमोर, कन्हैया कहाँ गयो चतुराई ,
कहाँ गयो तेरे नंद बाबा, कहवाँ जसोमती माई ,
लालजी को लेहूँ छोड़ाई । बृज मे हरि होरी मचाई ।।

फाग बिना घर जाने न दूँगी, तुम बड़ निठुर कन्हाई ,
लेंगे चुकाई कसर सब दिन के, तुम बड़ चोर कन्हाई ,
बहुत दही-माखन खाई । बृज में हरि होरी मचाई ।।

अर्थ

वृंदावन में श्री कृष्ण ने होली का धूम मचा रखा है । एक ओर से नवोढ़ा राधिका निकली तो दूसरी ओर से श्री कृष्ण निकले । आपस में मिलजुल कर होली खेल रहे हैं जिसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है । घर-घर में बधाई दी जा रही है । वृंदावन में कृष्ण होली खेल रहे हैं । मंडली में ढोल, मृदंग, झाल, डफ, मुरली और शहनाई वज रही है इतने गुलाल छिटे जा रहे हैं कि लाल बादल की तरह सारे आकाश में छा गए हैं । ऐसा लगता है कि लाल-लाल बादल आकाश में घिर आए हैं । होली के साथ गेंद खेलते समय, गेंद यमुना नदी में गिर जाता है तो सखियाँ गेंद की चोरी का आरोप लगाती है । कृष्ण ने गोपी की कंचुकी में हाथ डाला तो एक गेंद की जगह दो मिल गये । गोपी ने कहा कि श्री कृष्ण ने मुझे चोर बना दिया है । इस पर राधा ने सखियों को इशारा किया और वे सब झुण्ड-के-झुण्ड उठकर दौड़ी । दौड़कर श्याम सुन्दर को बलजोरी पकड़ लिया उनको नारी का स्वरूप बना दिया । मुँह की वासुरी छीन ली, पीताम्बर उतार लिया और सिर से चुनरी ओढ़ा ललाट पर बिन्दी लगा दी, आँखो में काजल लगा दिया, नाक में नकबेसर पहना दिया गया और इस प्रकार ललाजी को पूर्णतः नारी बना दिया गया । देखकर सखियाँ मुस्कराई कि कहिये कन्हैया जी, आपकी चतुराई कहाँ गई ? आपके नंदबाबा कहाँ हैं ? और माता यशोदा कहाँ गई जो अपने लला को छुड़ा कर ले जाती ? सुन लीजिए, फागुन के बिना घर नहीं जाने दूँगी, तुम बड़े निष्ठुर हो, बड़ी चोरी की है, काफी दही-माखन चुराकर खाया है, आज सब बदमाशी का बदला ले लूँगी । अब ब्रज में धूम मचाते रहें ।

(४६)

साँवरी के चरित्र सुनोरी ।
घर-घर से निकले बृजबाला, जमुना तीर-गयो री ,
मज्ज्न हेतु धँसे जमुना में, कोई साँवर कोई गोरी ,
करत जल में झकझोरी लाल हो, करत जल में झकझोरी ।

वाही समय निकले जदुनंदन, ताही घाट पहुँचो री ,
लेकर चीर कदम चढ़ि बइठे, विहँसत है मुखमोरी, सावरी .. ।
पुरइन-पात पहिन सब निकले, विनय करत कर जोरी ,
अबरी चीर बकसऽ बृजमोहन, होयबो चेरी तिहारी ।

बोले स्याम मधुर रसबोली, हमसे लाज करो री ,
अहो हमसे लाज करो री लाल हो, हमसे लाज करो री साँवरी ..।।

लेके चीर हरसे सब सखिया, पारे-हजारन-गारी,
सूर स्याम प्रभु तुम्हरे दरस के, ऐसो नंद किशोर,
कियो हमसे बर जोरी, साँवरे के चरित्र सुनोरी ।।

अर्थ

गोपियों के चरित्र सुनें । वृन्दावन की बालाएँ घर-घर से निकली और यमुना किनारी गईं । साँवली और गोरी सखियाँ यमुना में स्नान करने पैठ गई और जल बिहार करने लगी । उसी समय यदुनंदन श्री कृष्ण घर से निकले और उसी यमुना घाट पर पहुँच गए और (चीर हरण प्रसंग) सखियों के रखे सारे बस्त्रों को लेकर कदम्ब वृक्ष पर चढ़ गए । वहाँ वे मुख मोड़कर विहँस रहे हैं । गोपियाँ कमल के पत्ते से अपनी लज्जा ढँक कर बाहर निकली और हाथ जोड़कर वस्त्र के लिए प्रार्थना करती है । हे मोहन इस बार वस्त्र दे दो, हम सब तुम्हारी चेरी हो जाऊँगी । श्याम मधुर बोली में कहते हैं कि हमसे लज्जा क्यों कर रही हो ? जब श्री कृष्ण ने वस्त्र दे दिया तो सखिया हर्षित होकर हजारो-हजार गाली देने लगी । वे कहती है कि नंद किशोर ऐसे हैं जो हमसे बरजोरी किया करते हैं ।

(४७)

बीते फागुन मास अजहूँ न ऐलन कन्हइया,
छन आंगन छन बाट निरेखे, छने-छने ये अनुहारे,
अहो छने-छने करत सगुन, अजहूँ न अयले कन्हइया ।।

अर्थ

फागुन महीना बीत गया परंतु अभी भी कृष्ण नहीं आए हैं । नायिका घर से आंगन आती है, कभी राह देखती है और बार-बार सगुन करती है कि अभी तक कृष्ण नहीं आए ।

(४८)

श्री कृष्ण चरन के बलिहारी ।
एक समय हरि कदम के ऊपर जाई हँसे गिरवर धारी,
भये निरत बाँस के बंसी तामे छेद किए चारी,
भरी भुवन पर डहर दियतु हैं, मोह लिए ब्रज के नारी,
माथन में हीरा मुख में वीरा, हुकुम सरीरा तन भारी,
मोर मकुट कुंडल अति झलके, तिरछे चितवै बनवारी । श्री कृष्ण .. ।

कंचन भवन सुदामा दीन्हा, गौतम नारी सिला तारी ,
भरी छेत्र में अंडा सेवे, टिहुरी बोले टिहुकारी ,
भरी सभा में लजा राखे, चीर बढ़ायो अति भारी । श्री कृष्ण .....।

मारत गेंद गिरे जमुना में, नाग जगावे वनवारी ,
बार-बार चरनन लपटाये, नागिन विनती कर हारी ,
नाग कालिया बाहर आए, हँसे ग्वालिन दै तारी । श्री कृष्ण ......।

अर्थ

श्री कृष्ण के चरण पर बलि-बलि जाता हूँ । एक बार कृष्ण कदम्ब वृक्ष पर चढ़कर हँसने लगे और बाँस की बाँसुरी के चार छिद्रों के साथ रत हो गए अर्थात् बाँसुरी बादन करने लगे । सम्पूर्ण पृथ्वी गूँज उठी, बृंदावन की नारियाँ मोहित हो गई श्री कृष्ण की छवि निराली है । माथे पर हीरा और मुख में पान का बीड़ा शोभ रहा है । मोर का मुकुट है, कानों में कुंडल है । सारा शरीर वस्त्राभूषण से युक्त हो गया है । वे वन विहारी तिरछी चितवन से देख रहे हैं । भक्तों को मोहित कर रहे हैं, उनपर कृपा कर रहे हैं । सुदामा को सोने का भवन दिया, गौतम पत्नी को शिला से उद्धार किया, कुरूक्षेत्र के मैदान में टिटिहा पक्षी के अंडे का सेवन किया जो अंडे फूटने पर टी-टी कर बोलने लगी । द्रौपदी का वस्त्र बढ़ाकर भरी सभा में उसकी लज्जा रख ली । गेंद खेलते समय, यमुना में गिर गये जहाँ कालीय नाग रहता था । वहाँ जाकर नाग को नाथ कर ऊपर पकड़ लाए-नागिन प्रार्थना कर हार गई-जिसे देखकर ग्वाल बाल प्रसन्न हुए । श्री कृष्ण चरण की बलिहारी है ।

(४९)

कंगना में तेरो हीरा जड़ी, कंगना में तेरो हीरा जड़ी,
कउन सहर से सोना मंगाये, कहाँ के गढ़े सोनरवा,
गया सहर से सोना मंगायो, आरे के गढ़े सोनरा । कंगन में...।

अर्थ

तुम्हारे कंगन में हीरा जड़ा हुआ है । तुमने किस शहर से सोना मंगाया था और कहाँ का सुनार था । उसने कहा कि गया शहर से सोना मंगाया था । आरा शहर का सोनार था ।

(५०)

नदी बहे जल धारा संतो-नदी बहे जल धारा ।
पुरइन पात जल बीच लागे, जल में करत पसारा ,
धर्मा-धर्मी पार उतर गयो, पापी डूबे मझधारा । संतो नदी ... ।

अर्थ

हे संत, संसार रूपी नदी में जल की भयंकर धारा वह रही है । इस धारा में पुरइन के पता सर्वत्र फैला है जिसमें सांसारीक व्यक्ति उलझ जाता है जो धर्म परायण हैं वे संसार की जलधारा से पार उतर जाते हैं और पापी मझधार में डूब जाते हैं ।

(५१)

केकरा के सोभे हरी-हरी चूरिया, केकरा के सोभे लाल धजा ?
गउरा के सोभे हरी-हरी चूरिया, सिव मठ पर सोभे लाल धजा ।
सिव मठ पर सोभे लाल धजा, सिव मठ पर सोभे लाल धजा ।।

अर्थ

किसको हरी-हरी चूड़ी शोभ रही है और कहाँ पर लाल ध्वजा फहरा रहा है ? गौरा के हाथ में हरी-हरी चूड़ी शोभ रही है और शिव के शिवाला पर लाल ध्वजा फहरा रहा है । शिव के मठ पर लाल ध्वजा शोभ रहा है ।

(५२)

आजु राम सिया खेले होरी ।
केकरा कर सर धनुस विराजे, केकरा हाथ मनोहारी ।

केकरा हाथ कनक पुचकारी, के लिए रंग झोरी ।
कहाँ पर होवई होरी, आज राम सिया खेले होरी ।

राम के कर सर धनुस विराजे, सिया के हाथ मनोहारी ।
लछुमन हाथ कनक पुचकारी, भरत लिए रंग झोरी ।
अवधपुर होवत होरी । आज राम सिया खेले होरी ।।

अर्थ

आज राम और सीता होली खेलते हैं । किसके हाथ में धनुष-वाण शोभ रहा है और किसका हाथ सुन्दर है – मन को हरण करने वाला । किसके हाथ में सोने की पिचकारी है और कौन रंग की झोली लिए है ? कहाँ होली हो रही है ? राम के हाथ में धनुष-वाण है, सीता का हाथ सुन्दर है । लक्ष्मण के हाथ में सोने की पिचकारी है और भरत रंग की झोली लिए हैं । अयोध्या में राम-सीता होली खेल रहे हैं ।

(५३)

आली रे, मैं पिया संग सोई–आली रे मैं पिया संग सोई ।।
सुतल रहली रंग महल में, पिया के गले लपटोयी ?

टूट गयो लाखन के हरवा, चिहुँकी उठे धानी रोई पलंग पर ,
चारो ओर खोजे पलंग पर, चाहू ओर ढूँढ़े पलंग पर ,
आली रे मैं पिया संग सोई–पिया के गले लपटोयी ।

होत फजीर धानी रोधना-पसरले, लोटा मुख धोई ,
ननदी अझोलवा लहरी लगावे–कउन मरद संग सोई ?
लाल नकबेसर खोई–आली रे मैं पिया संग सोई ?

सास सुनिहें हजार गारी दिहें, ससुर सुने का होई ?
चुप रहूँ चूप रहूँ धानी सुलछनी ,
होवे दऽ बिहान नकवेसरी गढ़यबो चोलिया सियबो मस्तानी–
पहिन गोरी मन मुस्कानी रे–मैं पिया संग सोई ।

अर्थ

हे सखि, मैं अपने प्रिय के साथ सो रही थी । रंग महल में प्रिय के गले में लिपटकर सोई थी । मेरी लाख रुपए की हार टूट गई । प्रिया अचकचाकर उठी और पलंग पर ही रोने लगी और वहीं खोजने लगी । पलंग पर चारो ओर ढूँढ़ने लगी । सुबह होते ही उसने रोना-धोना शुरू कर दिया । लोटा से मुँह धोया तो ननद अझोलवा ने दोष लगाया कि किस पुरुष के साथ सोई थी कि नकबेसर ही खो गया । सास सुनेंगी तो हजार-हजार गाली देगी और ससुर सुनेंगे तो क्या-क्या हो जायगा ? यह देख-सुन कर उसके पति ने कहा–बिहान होने पर नकबेसर गढ़ा दूँगा और मस्तानी चोली सिलवा दूँगा जिसे पहनकर हँसती रहोगी ।

(५४)

ठाकुर धाम में होली खेलत रंग बनाय ।
कथिन के उजे मंदिल बनत है, कथिन लगल केवाड़ ।
पत्थल के उजे मंदिल बनत है, चंदन के लगल केवाड़ ।
कथिन के उजे रंग बनत है, कथिन बनत अबीर ।
गंगाजल के रंग बनत है, बालुन उड़त अबीर ।। ठाकुर धाम .....।

अर्थ

ठाकुरवाड़ी में विविध प्रकार से रंग बनाकर होली खेली जा रही है । ठाकुरवाड़ी का मंदिर किस चीज का बना है और उसमें किस चीज की कीवाड़ लगी है ? पत्थर का मंदिर है और चंदन की कीवाड़ है । वहाँ पर किस चीज का रंग बनाया गया है और अबीर किस चीज का है । गंगा जल से रंग बना है और बालू का अबीर बना है । अतः ठाकुरवाड़ी में स्वतः स्फूर्त होली है ।

(५५)

गोरिया लावऽ न अबीर, मड़वा में विहँसे कन्हइया ।
अजी मड़वा में विहँसे कन्हइया, हो लाला मड़वा में विहँसे कन्हइया ।

अर्थ

मंडप में श्री कृष्ण हँस रहे हैं । हे गोरी अबीर ले आओ अर्थात् कृष्ण को लगाओ ।

(५६)

सिव संकर खेलत फाग हरे लाला, सिव संकर खेलत फाग हो ।
गावत, गावत ताल बजावत डमरू, साथ में भूत वैताल हो । सिव संकर ..।।

अर्थ

महादेव फाग खेल रहे हैं । ताल दे-देकर गा रहे हैं और डमरू बजा रहे हैं । साथ में भूत-वैताल भी नाँच गा रहे हैं । शिव शंकर का फाग हो रहा है ।

(५७)

बंगला में उड़त अबीर, हरे लाल बंगला में उड़त अबीर हो ,
राजा कुँअर सिंह तेगवा बहादुर, बंगला में उड़त अबीर हो ।

अर्थ

स्वतंत्रता सेनानी राजा कुँअर सिंह के बंगले में होली हो रही है । रंग गुलाल उड़ रहा है । वे तेगा चलाने में बहादुर है । वीर हैं ।

(५८)

ये गाँधी फिर से तू अइहँऽ भारत माता के गोद,
अपने भी अइहँऽ, नेहरू-पटेल लइहँऽ, संगवा में ये अ...
अहो संगवा सुभास चन्दर बोस । ये गाँधी फिर से तू ......।

अर्थ

लोक बोलियों में स्ववंत्रता सेनानी और नेताओं पर अनेक लोकगीत बने हैं उसी कड़ी में मगही में फागु और चैता का भी निर्माण हुआ है । लोकनायक कहता है कि हे गाँधीजी, भारत माता की गोदी में फिर से जन्म लेना और अपने साथ में नेहरू, पटेल और सुभाष चन्द्र बोस को भी लेते आना ।

(५९)

सदा अनंदा रहे यही द्वारे, मोहन खेले होरी हो।
एकबर खेले दोबर कन्हइया, तेबर राधा गोरी हो।

श्री कृष्ण जब पेम्हा मारे, दूले राधा प्यारी हो।
सदा अनंदा रहे यही द्वारे, मोहन खेले होरी हो।।

अर्थ

यह होली घर-घर घूमकर गानेवाली मंडली जब किसी घर से लौटती है तब यह गीत गाती है । इस द्वार पर सदा आनंद बना रहे और मोहन होली खेलते रहें । एक बार ग्वाल-वाल और उससे दुगुना श्री कृष्ण और तिगुना राधा गोरी खेलती रहे । श्री कृष्ण झूला पर पेंग मारते हैं और राधा प्यारी झूल रही है । इस दरवाजे पर सदा आनंद विराजमान रहे । इस गान के बाद गायक मंडली दूसरे के दरवाजे पर चली जाती है ।

(६०)

बृज मंडल देस देखावे रसिया बृज मंडल ,
ओही रे बिरजवा में गउवा बहुत है ,

दुहले दूध, मथेला दहिया, बृज मंडल ,
बृज मंडल देस देखावे रसिया, बृज मंडल ,

ओही रे बिरजवा में कोयल बहुत है ,
कुहकले, मोर धड़के छतिया, बृज मंडल ,

ओही रे बिरजवा में नारी बहुत है ,
एक पर एक नवल रसिया, बृज मंडल ,

बृज मंडल देस देखावे रसिया, बृज मंडल ।

अर्थ

रसिक ब्रज मण्डल प्रदेश दिखा रहा है । उस ब्रज मण्डल में गाय बहुत है, दूध दूह कर दही बनाया जाता है जिसे मथा जाता है । उसी ब्रज मण्डल को रसिक दिखा रहा है । उस ब्रज में कोयल भी बहुत रहता है । जब वह कुहूँ-कहूँ बोलती है तो मेरा कलेजा धड़कता है । वहाँ नारियाँ भी बहुत हैं उनमें एक-पर-एक नवेली और रसिक हैं । ऐसा ही ब्रज मण्डल दिखा रहा है ।

(६१)

साँवरिया के संग रंग, मैं कैसे होरी खेलूँ रे ?
कोरे-कोरे कलस मंगाया उसमें घोरा रंग-रंग ।

भर पिचकारी, मुख पर मारी, चोलिया हो गई रंग-रंग ,
मैं कैसे होरी खेलूँ रे ।

अर्थ

साँवली सुन्दरी के साथ मैं कैसे रंग खेलूँ ? सादा मटका मंगाया और उसमें रंग ही रंग घोल डाला । पिचकारी भरकर-साँवली के मुख पर मारी तो उसकी चोली रंग से सराबोर हो गई । मैं कैसे होली खेलूँ ।

(६२)

कन्हइया घरे आयो गोइयाँ आज खेले होरी ।
ब्रज के लोग हरि देई-बिछुरइहें बक्सर खेले होरी ।

बाजल ताल मृदंग खंजड़ी ढोलक तासा जोरी ,
कन्हइया घरें आयो गोइयाँ आज खेले होरी ।।

अर्थ

हे मित्र, आज श्री कृष्ण मेरे घर आए हैं । ब्रज के लोगों ने हरि को छोड़ दिया है, वे बक्सर में होली खेलने आए हैं । लय ताल पर मृदंग, खंजड़ी ढोलक, ताशा और जोड़ी बज रही है । आज श्री कृष्ण हमारे घर होली खेलने आए हैं ।

(६३)

घर ही कोसिला मइया करथी सगुनवाँ,
बनवें में रामजी वितवलन फगुनवाँ ।

अर्थ

माता कौशल्या घर पर सगुन मना रही है और रामजी वन में फागुन मास बीता रहे हैं ।

(६४)

जेलवा में खेलथी अबीर हो, हथवा में लेले गान्ही चरखा-तकलिया ,
हथवा में लेले गान्ही चरखा-तकलिया, जेलवा में खेलथी अबीर हो ।

अर्थ

गाँधीजी हाथ में चर्खा और तकली लिए जेल में ही रंग-अबीर खेल रहे हैं ।



जोगीड़ा या कवीरा

होली के अवसर पर कुछ 'जोगीड़ा कुछ' कबीरा कुछ अन्य गीत भी गाए जाते हैं। जिनमें उलट वासियों, गालियों और कभी-कभी प्रशस्तियों की प्रधानता रहती है। मगह में प्रचलित कुछ जोगीड़ा-कबीरा के उदाहरण द्रष्टव्य हैं।

(१)

कउन देस के राजा बढ़ियाँ, कउन देस के रानी ?
कउन देस के कपड़ा बढ़ियाँ, कउन देस के पानी ?

राम राज के राजा बढ़ियाँ, आउ जनकपुर के नारी,
पच्छिम देस के कपड़ा बढ़ियाँ, उत्तर देस के पानी,
सुनलऽ भइया मोर कबीर .....॥

अर्थ

किस देश का राजा अच्छा होता है ? किस देश की रानी अच्छी होती है ? किस देश का वस्त्र अच्छा होता है और किस देश का पानी अच्छा होता है ? उत्तर–राम राज में राजा अच्छा होते हैं और जनकपुर की नारियाँ अच्छी होती है। पश्चिम देश का वस्त्र अच्छा होता है और उत्तर का पानी अच्छा होता है। इसे कबीर की वाणी की तरह सुन-समझ लो, भाई।

(२)

पोर-पोर के रंग सभीके कर दऽ लाले लाल,
एको अंग न खाली छोड़िहँऽ बाकी रहे न गाल,
कोई ढोल, मृदंग बजावे, कोई बजावे झाल,
डफ के सोर मंदिल बीच पहुँचे, उड़त अबीर गुलाल।
सरऽ ररऽ........सुनलऽ भइया मोर कबीर॥

अर्थ

हे भाई कबीर वचनावली सुनें-होली में सारे शरीर के पोर-पोर लाल रंग दें। एक अंग भी खाली नहीं बचे–गाल तो भूलकर भी मत छोड़ना। साथ में कोई ढोल

बजा रहा है । कोई मृदंग और झाल बजा रहा है । डफ तो इतना जोर से बज रहा है कि उसका शोर मंदिर में पहुँच गया है । सर्वत्र अबीर और गुलाल उड़ रहा है-सर-सर-सरसर.......।

(३)

राजा जनक के द्वार पर, चहबच्चा भरल अवीर ,
राम लखन के पगिया भींजे, भींजे सिया के चीर ,
जोगीड़ा सरऽ सरऽऽ–भले जी भइया भले ।

अर्थ

राजा जनक के दरवाजे पर बड़ा टब है जिसमें रंग अबीर घोलकर भर दिया गया है । राम लक्ष्मण की पगड़ी और सीता की सारी भींज रही है– हे भाई यह तो भली होली है ।

(४)

चम्पा पर भौंरा गूंज रहे–चम्पा पर हो,
सुखल गोरी के बेल–गवनवें कइसे हो ?
जोगीड़ा सरऽ सररर ऽऽऽ।।

अर्थ

विरोधा भास–चम्पा पर भौरें नहीं गूंजते और गवना में ही गोरी का स्तन नहीं ढल जाता है । इसका क्या कारण है– अन्योक्ति अलंकार-अर्थ कुछ दूसरा है ।

(५)

कै हाथ के धोती पहिने, कै हाथ के लपेटा ,
कै घाट के पानी पीये, कै बाप के बेटा–जोगीड़ा सरऽ सररऽऽ ।
दस हाथ के धोती पहिने, पाँच हाथ लपेटा ,
एक घाट के पानी पीये, एक बाप के बेटा ।
जोगीड़ा सरऽ ररऽऽ ।।

अर्थ

जोगीड़ो प्राय: प्रश्न वाचक के रूप में होते हैं । कितने हाथ की धोती पहननी चाहिए और उसे कितना हाथ कमर में लपे[illegible] चा[illegible] । अन्यार्थ–धोती की लम्बाई

दस हाथ और उससे छोटा लपेटा की लम्बाई पाँच हाथ होनी चाहिए । कितने घाट का पानी पीना चाहिए और कितने बाप का बेटा होना चाहिए । जोगीड़ा उत्तर देता है कि एक घाट का पानी पीना अच्छा होता है और एक बाप का बेटा ।

(६)

कउन देस के राजा अयलन, कउन देस के रानी,
कउन देस के गोरख बाबा, बोललन उलटी बानी, जोगीड़ा सरऽ ररऽऽ ।
उत्तर देस के राजा अयलन, दखिन देस के रानी,
पछिम देस के गोरख बाबा, बोललन उलटी वानी ।
जोगीड़ा सरऽ ररऽऽ ।

अर्थ

किस देश से राजा आए और किस देश से रानी आयी । किस देश से गोरख बाबा आए जो उलटवाणी बोल रहे हैं । उत्तर देश से राजा आए और दक्षिण देश से रानी आई । गोरख बाबा पश्चिम देश से आकर उलटी बात बोलने लगे । गोरख वाणी कठिन और गूढ़ार्थ रहती है ।

(७)

काम-क्रोध के कीचड़ धोके, ग्यान गुलाल लगावऽ ।
पकड़ प्रेम पिचकारी भाई, रामनाम गुन गावऽ, ई तो रामनाम के होरी ।।

अर्थ

राम नाम की होली हो रही है । काम-क्रोध के कीचड़ धोकर ज्ञान का गुलाब लगा लो । हे भाई ! प्रेम की पिचकारी से राम के नाम और गुण को छिड़कते रहो– राम के नाम का गुन गाते रहो ।

(८)

जे बकरी के दूध पीलऽ तू, ऊ मइया भेल तोर ।
ऊ बकरी पर छुरा रेतलऽ, ई घोर पाप हे घोर ।
भला देवी के क्यों बदलाम करो ।

अर्थ

जिस बकरी का दूध पीता है लोग, वह तो उसकी माँ हुई । उसी माँ को वह देवी मंडप में छूरा से रेतकर मारता है । यह तो घोर पाप है, भला, इसमें देवी को क्यों बदनाम करते हो ?

मगही का चैता लोकगीत

(१)

आजु चइत हम गायब हो रामा, येही ठइयाँ......3
येहीजा के ठइयाँ, सुमिरी भगवान, अहो रामा, येहीजा.....3
आजु चइत हम गायब हो रामा, यही ठइयाँ–अनेक पुनरुक्तियाँ ।।

अर्थ

चैता गीत प्रारंभ करते समय सर्व प्रथम यही गीत गाया जाता है । यह एक तरह का सुमिरण (स्मरण) है । गायक कहता है कि आज इसी जगह चैता गावेंगे । इस जमीन पर भगवान का स्मरण करते हैं और इसी जगह चैता-गाना प्रारंभ करते हैं ।

(२)

अहो रामा पहिले मनावऽ आदि भवानी हो रामा,
आजहूँ चइत हम गायब हो रामा–२
बिरहनी सखी सब गावई हो रामा ।
आज चइत हम...।।

अर्थ

हे राम, सर्व प्रथम आदि शक्ति भवानी को स्मरण करो तब हमें आज यहाँ चैता गाना प्रारंभ करना चाहिए । वियोगिनी सखियाँ सब मिलकर गा रही है । आज हम चैता गावेंगे ।

(३)

अहो रामा, बाबा फुलवरिया में फूल लोढ़े गेली हो रामा,
गड़ी गेलई कुसीमी के कटवाँ हो रामा गड़ी गेलई ।
रामा केई मोरा कटवाँ सहेजिये निकाले हो रामा,
केई मोरा हरतई दरदिया हो रामा–कई मोरा ।
रामा बाबा मोरा सहजे में कँटवा निकाले हो रामा,
सइया मोरा हरतन दरदिया हो रामा–सइया मोरा ।।

अर्थ

बाबा के बगीचे में मैं फूल चुनने गई । वहाँ फूल में लगे काँटा गड़ गया । मेरा यह गड़ा हुआ काँटा सहज रूप से कौन निकालेगा ? और इसका दर्द कौन हरण करेगा ? बाबा सहज रूप से काँटा निकालेंगे और प्रिय को दर्द हरण करेंगे ।

(४)

सुतला में काहेला जगैलऽ हो रामा भोरे ही भोरे ।
रस के सपनवाँ में हलइ अँखिया डूबल, भोरे ही भोरे ।

अंग ही अंग अलसाय हो रामा-भारे ही भोरे ।
पिया बिना हिया मोरा कुँहकई हो रामा-भोरे ही भोरे ।

चम्पा के फुलवा मुरझाय हो रामा, भोरे ही भोरे ।

अर्थ

सुख नींद और स्वप्निल अवस्था में जगा देने पर नायिका कहती है कि मुझे इतना सबेरे किसलिए जगा दिया गया । मैं रस से युक्त स्वप्न में सराबोर थी । जगने पर अंग-अंग में आलस्य भर गया है, प्रिय के बिंना मेरा हृदय कुँहक रहा है । चम्पा फूल की माला मुर्झा गई है ।

(५)

अहो रामा सोने के सिंहासन, ठाकुरजी के आसन हो रामा ,
बीचे अंगना, बीचे अंगना, ठाकुर जी सोहत हो रामा ।

अर्थ

हे राम, सोने के सिंहासन पर भगवान का आसन है । यह आंगन के बीच में अवस्थित है जहाँ ठाकुर जी सुशोभित हैं ।

(६)

अहो जमुना किनारे कन्हइया खेवनहरवा ये रामा ,
खेवा मांगई, खेवा मांगई दूनो जोबनवाँ ये रामा ।

अर्थ

यमुना किनारे श्री कृष्ण नाव खेने वाले घटवार हैं । वे पार होने वाली स्त्री से खेवा में दोनों स्तन मांगते हैं—कृष्ण लीला ।

(७)

लगई सून भवनवाँ हो रामा, कान्हा रे बिना ।
सुनहर घरवा में सुतली सेजरिया, हरिजी के देखली सपनवाँ हो रामा ।
कान्हा रे बिना..... ।

खुलि गेलई बेनिया, उपटि गेलई नीनियाँ, पौली न हरि दरसनवाँ हो रामा ।
कान्हा रे बिना..... ।
गहनवाँ मोरा सबे लगई दुखदइया, भावे न पियरी चुनरिया हो रामा ।
कान्हा रे बिना... ।

चइत बीत गेल सखि स्याम नहीं आयो, रहि-रहि जिया घबरावे हो रामा ।
कान्हा रे बिना..... ।

अर्थ

श्री कृष्ण के बिना मेरा भवन शुन्य लग रहा है । शून्य घर में शय्या पर सोई तो हरि जी को स्पप्न में देखा । घर के दरवाजे का बलेठा खुल गया और मेरी नींद टूट गई तो हरि जी को पूर्ण रूप से देख भी नहीं पाई । मेरे सारे आभूषण दुखद मालूम पड़ रहे हैं और पीली चुनरी अच्छा नहीं लग रही है । चैती का वासंती महीना बीत गया और श्याम नहीं आये–रह-रह कर जी घबरा रहा है ।

(८)

रामजी के बनवाँ पेठौलऽ हो रामा, कठिन तोरा जियरा ।
बसिहें न अवधा नगरिया हो रामा, कठिन तोरा जियरा ।

जइहें जहाँ राम के बसेरवा हो रामा, कठिन तोरा जियरा ।
मरियो न गेलई केकइया निरदइया हो रामा, कठिन तोरा जियरा ।

जारे-मुख कठिन बचनवाँ हो रामा, कठिन तोरा जियरा ।
राम लखन बिना सूना हो रामा, कठिन तोरा जियरा ।

अर्थ

अयोध्या के लोग कैकेई को कह रहे हैं कि तुम्हारा कठोर हृदय है, तुमने राम को वन में भेज दिया है । हम लोग अयोध्या नगर में नहीं बसेंगे, जहाँ राम बसते हैं वहीं चले जायेंगे । जिस मुख से यह कठोर बचन निकला था वह निर्दयी कैकेई मर क्यों नहीं गई ? राम-लखन के बिना यहाँ सब शून्य है, भवन में नागिन लोट रही है ।

(९)

चाँदनी चितवा चुरावे हो रामा, चैत के रतिया ,
मधु रीतु मधुर-मधुर रस घोरे, मधुर पवन अलसावे हो रामा।
चैत के...

गमगम गमकत वारी फुलबरिया, भँवरा गुन-गुनावे हो रामा।
चैत के...

अमवाँ-महुइया मधुर रस टपके, मंजर झुकि-झुकि आवे हो रामा।
चैत के...

हरसत-विहँसत उगल अंजोरिया, कोइल कुहँक सुनावे हो रामा।
चैत के ...

(१०)

कुसुमी लोढ़न हम जायब हो रामा, राजा केरा बगिया ।
मोर चुनरिया सैया तोर पगड़िया, एकही रंग रंगायब हो रामा ।।

अर्थ

पत्नी कहती है कि राजा के बगीचे में मैं फूल चुनने जाऊँगी और अपनी चुनरी तथा तुम्हारी पगड़ी एक ही पुष्प रस-रंग से रंगा दूँगी ।

(११)

हरि मोरा गेलन मधुबनवा हो रामा, चइत रे मासे।
बोलई कोयलिया सब कुंजनवा हो रामा, चइत रे मासे।

रामा बिरही पपीहा बोले अधिरतिया हो रामा, चइत रे मासे।
रामा पिया नहीं अयलन, बरसत नयनवाँ हो रामा, चइत रे मासे।

अर्थ

चैत्र मास में मेरा प्रिय (हरि) मधुवन चला गया । इस महीने में कोयल कुंजों में अलाप रही है । वियोगिनी पपीहा आधी रात में ही बोल उठती है । मेरा नयन बरस रहा है, प्रिय नहीं आया है-चैत में भी ।

(१२)

अहो रामा, खटिया पर गोरिया लगावे घनी बगिया हो रामा ,
अँचरा के, अचरा के घोरले घोरनियाँ हो रामा-अचरा के ।।

अर्थ

हे राम, गोरी ने खाट पर ही घना बगीचा लगा दिया है और **आंचल का घेरा** लगा दिया है । घेरा तोड़कर प्रिय जायगा कैसे ?

(१३)

अहो रामा ननदी कहेली, सुन भउजी, करी दऽ गवनवाँ ये रामा ,
चोली मोरा, चोली मोरा फारेला जोवनवाँ ये रामा ।

अर्थ

ननद अपनी भाभी से कहती है कि सुनो, मेरा गवना करा दो क्योंकि मेरा योवन बढ़कर चोली को फाड़ रहा है । पूर्ण यौवना की धृष्ठता ।

(१४)

गोरी सुरतिया निहारई ये रामा, पिया नहीं अयले ।
कजरी कजरवा बहावई ये रामा, पिया नहीं अयले ।

चइती चनरमा गगनवाँ में विहँसल-विहँसल मनवाँ के बगियो न लहसल ।
पुरवा अँचरवा उड़ावई ये रामा, पिया नहीं अयले ।

अँखिया ई कह दे हई लजवा के बतिया-मसकई करेजवा न टसकई रतिया ।
नयना डगरिया निहारई ये रामा, पिया नहीं अयले ।

सहकल जवनियाँ के वहकिल मनवाँ-दहकल छतिया लहकल अगनवाँ ।
नेहिया ई देहिया जगावई ये रामा, पिया नहीं अयले ।

जब से विदेसिया से नेहिया लगवली-तड़पइत-तरसइत रतिया गवँवली ।
जिनगी जवनियाँ बिसारई ये रामा, पिया नहीं अयले ।

अर्थ

गोरी अपना सौन्दर्य स्वयं निहार रही है और प्रिय के न आने के कारण नयन लोर ठरका रहा है जिससे काजल बह जा रहा है । चैत में चाँदनी आकाश में विहँस रही है लेकिन मेरे मन का बाग नहीं लहलहा रहा है । पुरवाई में आँचल उड़ रहा है परंतु मेरा प्रिय नहीं आया । लज्जा की बातें मेरी आँखें बता दे रही हैं । मेरा हृदय मसक रहा है लेकिन रात कट नहीं रही है । आँखें प्रिय आगमन की राह देख रही है । जवानी बेकाबू हो रही है, मन बस में नहीं है, छाती दहल रही है । आंगन जल

रहा है । इस शरीर में स्नेह जग रहा है । जब से विदेशी से प्रेम हुआ तव से तड़प-तरस कर रात्रि बीतता है । जिन्दगी में जवानी विसर गई-पर प्रिय नहीं आए । वियोगिनी की विदग्ध अवस्था का मार्मिक चित्र ।

(१५)

अहो रामा, काहे लागी साँवर बढ़वलें लामी केसिया हो रामा ।
काहे लागी, काहे लागी सूरूज गोड़ लगलऽ ये रामा ?

अहो रामा सोभा लागी बढ़वली लामी केसिया ये रामा ।
सइयाँ लागी, सइयाँ लागी सूरूज गोड़ लागली ये रामा सइया लागी...

अर्थ

हे राम, साँवली ने अपने केश को इतना लम्बा क्यों बढ़ा रखा है ? वह सूर्य को क्यों गोड़ लागती है ? साँवली कहती है कि अपनी शोभा के लिए मैंने केश बढ़ाया है और अपने पति के लिए सूर्यव्रत करती हूँ ।

(१६)

ये रामा भाग-बेरा सुमिरहुँ भाग भगवती ये रामा,
रइनी बेरिया सुमिरहुँ देवी दुर्गा हो रामा ।। रइनी बेरिया

अर्थ

भाग्योदय के समय भाग्य की देवी भाग्यवती का स्मरण करना चाहिए और रात्रि के समय देवी-दुर्गा का स्मरण करना चाहिए ।

(१७)

ये रामा सुरसती-मतवा, जोरीला दूनो हथवा ये रामा,
कंठे-सुरवा, कंठे सुरवा होवऽ न सहइया हो रामा । कंठे सुरवा ।।

अर्थ

हे माता सरस्वती, मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ । मेरे कंठ में स्वर का निवास हो, कंठ स्वर मुझे सहायता करें ।

(१८)

रामा सोने के चउकिया पर राम नेहावल गेलन हो रामा ,
सखी सब, सखी सब मंगल गावे हो रामा । सखी सब... ।।

अर्थ

सोने की चौकी पर राम को स्नान कराया गया । सभी सखियाँ मंगल गाने लगी ।

(१९)

ये रामा चइता में रामजी जलमन अयोध्या हो रामा ।
घरे-घरे, बाजेला, आनंद बधइया हो रामा ।। घरे-घरे ।।

अर्थ

अयोध्या में चैत्र मास के अंतर्गत राम जी का जन्म हुआ और घर-घर में आनंद की बधाइयाँ बजने लगी ।

(२०)

अहो रामा, येही पार जमुना, ओही पार गोखुला हो रामा ,
बीचवा में कान्हा धयले मोरा बहियाँ हो रामा-बीचवा में ।

अहो रामा, छोडू-छोडू कान्हा, हमरो अचरवा हो रामा ,
मोरा गोदी अबोधा लड़िकवा हो रामा । बीचवा में ।

अहो रामा तोरा घरवा हकउ सासु-ननदिया हो रामा ,
वही तोरा लड़िका खेलावउ हो रामा, ओही तोरा ।।

अर्थ

इस पार यमुना नदी है और उस पार गोकुला है । बीच में श्री कृष्ण गोपी की बाह पकड़ ली । गोपी कहती है कि हे कृष्ण मेरा आंचल छोड़ दें मेरी गोद में अबोध शिशु है । कृष्ण कहते हैं कि तुम्हारे घर में सास ननद हैं, वहीं तुम्हारे बालक को खेलावेगी ।

(२१)

रामा कउन बने कृष्ण जी बछरू चरावे हो रामा ,
कउन बने राधिका फूलवा लोड़े हो रामा । कउन बने...

ये रामा बृंदा बने कृष्ण जी, बछरू चरावे हो रामा ,
कुंज हो बनवाँ, राधिका फूलवा लोढ़े हो रामा । कुंज हो... ।

अर्थ

हे राम, किस वन में कृष्ण जी बछड़े चराते हैं ? किस वन में राधा फूल चुन रही है ? वृन्दावन में कृष्ण जी बछड़े चराते हैं और कुंज बन में राधा फूल चुनती है ।

(२२)

ये रामा कहेला कन्हैया, सुनहूँ गोपी राधिका हो रामा ,
तोरा-मोरा, प्रीतिया लगल, मधुबनवाँ हो रामा तोरा-मोरा ।

अर्थ

श्री कृष्ण कहते हैं कि हे गोपी राधिका, सुनो ! तुम्हारे और मेरे बीच मधुवन में प्रेम का सूत्रपात हुआ ।

(२३)

ये रामा भरल सभा में द्रौपदी पुकारे हो रामा ,
धावऽ कृष्ण चीरवा हरले दुसासन हो रामा । धावऽ कृष्ण ।।

अर्थ

भरी सभा में द्रौपदी पुकार रही है, हे कृष्ण दौड़कर आवें मेरा वस्त्र दु:शासन हरण कर रहा है । दौड़कर शीघ्र आवें ।

(२४)

ये रामा गोरे-गोरे बहियाँ पऽ हरी-हरी चूरिया हो रामा,
लिलरा पर, सोभे ला इंगुर के बिंदिया हो रामा । लिलरा पर... ।

अर्थ

नायिका की गोरी-गोरी बाहों पर, हरी-हरी चूड़िया शोभ रही है और ललाट पर इंगुर की बिंदी सुशोभित हो रही है ।

(२५)

अहो रामा राजा भगीरथ बड़-तप कयलन हो रामा ,
ले अयलन, ले अयलन गंगाजी के घरवा हो रामा-ले अयलन.. ।

अहो रामा जने-जने राजा भगीरथ हो रामा ,
ओने-ओने हई गंगा जी के घरवा हो रामा । ओने-ओने... ।

अर्थ

राजा भगीरथ ने वड़ी भारी तपस्या की और गंगा की धारा को पृथ्वी पर लाया। राजा भगीरथ जिधर-जिधर गए गंगा की धारा भी उधर ही गई।

(२६)

सइयाँ मोरा रे कुसुमी बोअइहँऽ हो रामा,
चम्पा लगइहँऽ, चमेली लगइहँऽ,
खेतवन कुसुमी लगइहँऽ हो रामा।

ओही रे कुसुमियाँ में चुनरी रंगइहँऽ,
आरी-आरी गोटवा लगइहँऽ हो रामा।

जब हम जायेब नइहरवा हो,
गुनि-गुनि सुदिन पठइहँऽ हो रामा।

हजमा पठइहँऽ बभना पठइहँऽ,
अपने चुनर लेके अइहँऽ हो रामा ।।

अर्थ

पत्नी कहती है कि हे स्वामी, फूल बुन दें। खेत में चम्पा-चमेली का फूल लगा दें। उसी कुसुम-रस से चुनरी रंगा दें और उसके किनारे वेल-बूट लगवा दें। जब मैं मयके जाऊँ तो सोच-समझकर सुदिन भेजें, हजाम, ब्राह्मण के बाद स्वयं चुनरी लेकर आवेंगे।

(२७)

चैत के रतिया अकसवा में चढ़ले, धीमे-धीमे चानी के चंदा हो रामा।
गछिया के डारी से बीचे-बीचे झाँके, धीमे-धीमे गोरकी चननियाँ हो रामा।

जमुना किनारे नागिन अस डोले, धीमे-धीमे जलके लहरिया हो रामा।
सुतल कलियन के चुपके जगावे, धीमे-धीमे सीतल पवनवाँ हो रामा।

सुध-बुध हेरइली सुनली जे पिअवा के धीमे-धीमे मीठी मुरलिया हो रामा।

अर्थ

चैत्र की रात्रि में धीरे-धीरे आकाश में चाँदी की तरह स्वच्छ चाँद बढ़ रहा है। वृक्षों के झुरमुट से गोरी-गोरी चाँदनी झाँक रही है। यमुना किनारे जल की तरंगे

नागिन की तरह सरक रही है । सोई कलियों को शीतल पवन धीरे-धीरे जगा रहा है । नायिका कहती है कि जब मैंने प्रिय की धीरे-धीरे मधुर आवाज सुनी तो सुध-बुध खो गई ।

(२८)

अहो रामा चइत महीनवाँ बड़ा हई सुभ दिनवाँ हो रामा ।
राम चन्दर लिहलन जनमिया हो रामा, नौमी के दिनवाँ ।

अहो रामा, केहू लुटावे अन-धन सोनवाँ,
केहूँ लुटावे कंगनवाँ हो रामा ।

अहो रामा, राजा लुटावे, अन-धन सोनवाँ हो रामा,
रानी लुटावे कंगनवा हो रामा ।

चइत के दिनवाँ बड़ा हई सुभ महीनवाँ,
राम जी लिहलन जनमियाँ हो रामा ।

अर्थ

हे राम, चैत्र महीना का बड़ा शुभ दिन होता है । रामचन्द्र ने उसी महीने की नौमी तिथि को जन्म लिया था । उस अवसर पर कोई अन्न-धन और सोना लुटा रहा है और कोई अपना कंगन ही लुटा रही है । राजा अन्न-धन-सोना लुटा रहे हैं और रानी कंगन लुटा रही है । शुभ महीना चैत्र का दिन बड़ा सुन्दर है जब राम ने जन्म लिया था ।

(२९)

पिया से मिलन हम जायब हो रामा,
अतलस लहंगा, कुसुम रंग सारी, पहिर-पहिर गुन गायब हो रामा ।
बाजूबंद अनंत पहिर के, नाम के नथ झमकायब हो रामा ।
ज्ञान-ध्यान के घुँघरु बांधे, सबदन मांग भरायब हो रामा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बहुरिन येही जग आयब हो रामा ।।

अर्थ

यह एक निर्गुण चैता है । इसके साथ कबीर का भी नाम जुड़ा है । [illegible] सारी मगही रचनाएँ कबीर के नाम के साथ जुड़ी मिलती है जो किसी मगही लोक कवि के द्वारा रचित रहती है ।

निर्गुण भक्त कहता है कि अब मैं प्रिय (भगवान) से मिलने जाऊँगी। अतलस लहंगा और कुसुम रंग की सारी पहनकर प्रिय का गुण गाऊँगी। अनंत के रूप में वाजूबंद पहनूँगी और भगवन्नाम का नथ पहनकर झमकाती फिरूँगी। पैर में ज्ञान और ध्यान का घूँघट बाँधकर शब्दों (कबीर पंथ में 'सबदी' का महत्वपूर्ण स्थान है) से मांग भराऊँगी। इस तरह मैं ब्रह्म में लीन हो जाऊँगी और फिर कभी इस संसार में नहीं आऊँगी। इसमें भक्त अपने को पत्नी और ब्रह्म को पति मानकर अराधना करता है। कवीर ने भी अपने प्रिय को पुरुष मानकर उनकी भक्ति की है। (लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल)

(३०)

अहो रामा काहे लागी साँवर कइले छठ एतवरवा हो रामा ?
काहे लागी सूरूज गोड़वा लागे हो रामा, काहे लागी ?

अहो रामा काया लागी साँवर कयले छठ एतवरवा हो रामा।
पुत्र लागी सूरूज गोड़वा लागे हो रामा, चइत के महीनवाँ।

अर्थ

साँवली ने चैत्र महीने में छठ व्रत किस लिए किया है और सूर्य भगवान की प्रार्थना क्यों की ? अपने शरीर स्वास्थ्य के लिए साँवली ने छठ व्रत किया और पुत्र के लिए सूर्य के चरण की सेवा की।

(३१)

ये रामा, येही पारे जसोदा करेली असननीया हो रामा,
ओही पारे देवकी नयनवाँ नीर ठारे हो रामा। ओही पारे ।।

अर्थ

यमुना नदी के इस पार यशोदा स्नान कर रही है और दूसरे किनारे पर पुत्र वियोग के कारण देवकी अपनी आँखों से आँसू बहा रही है।

(३२)

ये रामा कोरे नदियवा सासु दहिया जमावे हो रामा।
डाली दिहले, डाली दिहले अमरीत जोरनवाँ हो रामा।

हमरा के भेजले जमुना किनरवा हो रामा। हमरा के..।
ये राम जमुना किनरवा कन्हइया घटवरवा हो रामा।

खेउवा मांगे, खेउवा मांगे बाला-जोबनवा हो रामा । खेउवा...।
ये रामा बाला जोबनवाँ बलमुआँ के देखल हो रामा ।

तोरा देबवऽ हाथ के कंगनवाँ हो रामा । तोरा देबवऽ... ।

अर्थ

कोरा मटुकी में सास ने दही जमाया । उसमें अमृत का जावन डाला गया और हमको जमुना किनारे जल लाने के लिए भेज दिया । यमुना किनारे श्री कृष्ण घटवार है वे नाव खेने के बदले मेरा नया योबन मांगते हैं । गोपी कहती है कि यह मेरा बाला योबन पति द्वारा देखा हुआ है । अत: आपको खेवाई हाथ का कंगन दूँगी ।

(३३)

अहो रामा, राम भइले जोगिया, भरत वैरगिया हो रामा ,
लछुमनऽ, लछुमन बन के पपीहरा हो रामा ।
अहो रामा गाँधी बाबा भइले जोगिया, जवाहिर बैरगिया हो रामा ,
नेता लोगऽ, नेता लोग देस के पपीहरा हो रामा ।

अर्थ

राष्ट्रीय चैता—राम योगी बनकर वन गए थे और भरत घर में ही वैराग्य धारण कर लिया है । लक्ष्मण वन का पपीहा बनकर राम के साथ वन-वन रटते चले । उसी प्रकार गाँधी बाबा योगी बन गए और जवाहर लाल वैभव सम्पन्न होते हुए भी वैराग्य धारण कर देश की सेवा की और अन्य सभी नेता पपीहा की तरह देश के लिए उनके साथ रटते चले ।

(३४)

ये रामा खेलइत गेन्दवा गिरले महधरवा हो रामा ,
गेन्दवे कारन कृष्ण भइले वैरनिया हो रामा-गेन्दवे....।

अर्थ

खेलते समय गेंदा कालीय दह में गिर गया जिसकी वजह से कृष्ण वैरी हो गए ।

(३५)

ये रामा होतऽ भिनसरवा सिवजी जगावथ हो रामा ।
उठूँ गउरा, भँगिया रगरी पियावऽ हो रामा । उठूँ गउरा... ।

ये रामा कइसे में उठूँ इसर-महादे हो रामा ,
मोरा गोदिया, सुतल गनपत-ललनवाँ हो रामा । मोरा....।

अर्थ

सुबह होते ही शिवजी पार्वती को जगाते हैं और कहते हैं कि भांग रगड़कर पिलाओ । पार्वती कहती है कि हे ईश्वर महादेव, मैं कैसे उठूँ, मेरी गोद में गणेश बालक सोया है ।

(३६)

अहो रामा, कहवाँ में रामचन्द्र लिहले जनमियाँ हो रामा ,
कहवाँ में बजले बधइया हो रामा-कहवाँ में।
अजोध्या में रामचन्द्र लिहले जनमियाँ हो रामा ,
उहईं में बज हई बधइया हो रामा, उहईं में।

अर्थ

कहाँ में रामचन्द्र ने जन्म लिया था और कहाँ पर जन्मोत्सव मनाया जा रहा है । अयोध्या में राम का जन्म हुआ था और वहीं पर उनका जन्मोत्सव मनाया जा रहा है ।

(३७)

ये रामा कउना मासे उमड़ले गोरी के जोबनवाँ हो रामा ,
कउने मासे, गंगा-जमुनवाँ हो रामा । कउन मासे ।।
चइत मासे उमड़ले गोरी के जोबनवा हो रामा ।
ये रामा सावन मासे उमड़ले गंगा हो जमुनवाँ हो रामा-सावन...।

अर्थ

किस महीना में गोरी का योवन उमड़ रहा है और किस महीने में गंगा-यमुना उमड़ती है ? चैत महीना में गोरी का योवन उमड़ता और सावन मास में गंगा-यमुना उमड़ती है ।

(३८)

अहो रामा, ननदी के अगनवाँ चनन के रा गछिया हो रामा ।
ओही चढ़ी बोले काग कुलक्षण बोलिया हो रामा ।

देवउ रे कागा दूध-भात खोउवा, पिया क संदेसवा लाहूँ हो रामा ।
पिया-पिया जनु करहूँ पि.. के सोहागिन हो रामा ।

कह गोरी कइसन नानू-तमोली हो रामा ।
अंगनवा के पातर मुँहवा के ठुनमुन हो रामा ।
केसिया पर, केसिया में भौंरा लोभाय हो रामा ।।

अर्थ

हे राम, हमारी ननद के आंगन में चंदन का वृक्ष है । उसी वृक्ष पर कौवा कुबोली बोल रहा है । नायिका कहती है कि हे काग, तुम्हें दूध-भात और खोवा दूँगी, मेरे प्रिय का संदेश ला दो । कौवा कहता है कि ये प्रिय की सौभाग्यशालिनी-प्रिय-प्रियतम कहो । तुम्हारा प्रिय नानू तमोली कैसा है ? वह अंग का पतला और सुन्दर मुँहवाला है, उसके केश से भौरें मात खाकर आकृष्ट रहते हैं ।

(३९)

ये रामा बाबा मोरा रहीतन सुन्दर बरवा खोजतन हो रामा ,
भइया मोरा खोजलन बर बउरहवा हो रामा । भइया मोरा ....।

अर्थ

यदि हमारे पिताजी रहते तो हमरा सुन्दर वर खोजकर विवाह करते, मेरे भाई ने पागल वर खोज दिया है ।

(४०)

ये रामा कहवाँ कुम्हरा रचले घइलवा हो रामा ।
कहवाँ के सुन्दर हवे पनभरीन हो रामा । कहवा के.....।
ये रामा गोखुल-कुम्हरा रचले घइलवा हो रामा ।
मथुरा के, सुन्दर हई पनभरीन हो रामा । मथुरा के ...।

अर्थ

कहाँ के कुम्भकार ने घइला की रचना की है ? कहाँ की सुन्दरी पानी भरने वाली है ? गोकुल का कुम्भकार है जिसने घइला बनाया है और मथुरा की सुन्दरी पानी भरने वाली है ।

(४१)

ये रामा, तोहरा से पूछीला लहुरी ननदिया हो रामा।
पीठिया में धुरवा कइसे लागल हो रामा । पीठिया में ।।

ये रामा बाबा के दुअरिया नाचई नटुरिया हो रामा ।
भीतिया में, ओठंगे से धूरिया लागल हो रामा । भीतिया में ...।

अर्थ

हे राम, तुम से मैं पूछती हूँ, हे चुगली लगाने वाली ननद, तुम्हारी पीठ में धूल कैसे लग गई है । ननद चातुरी ने उत्तर देती है कि पिता के दरवाजे पर एक पतुरिया नाँच कर रही थी । उसे देखते समय दिवाल में ओठंग गई जिससे पीठ में धूल लग गई ।

(४२)

रामा, राजा हो जनक जी कठिन प्रन ठनलन हो रामा ।
देसे-देसे पतिया लिखि-लिखि भेजलन हो रामा । देसे-देसे...।

रामा, देस हो विदेसवा के भूप सब अयलन हो रामा ।
केउ नाहीं, तोड़ले चाप धनुसिा हो रामा । केउ नाहीं...।

अर्थ

हे राम, राजा जनकजी ने कठिन प्रतिज्ञा की अर्थात् सीता के लिए स्वयंवर रचाया और पत्र लिखकर देश-विदेश में भेजवाया । देश-विदेश के बहुत सारे राजा आये । किसी ने धनुष-वाण को नहीं तोड़ा ।

(४३)

चलूँ सखि करे दरसनियाँ हो रामा, बिसुन चरनियाँ ।
नर आउ नारी सब पिन्ड देतु हैं पितर होइहें तरनियाँ हो रामा ।

अर्थ

हे सखि विष्णु भगवान के चरण का दर्शन करने चलो । अर्थात् गया चलो जहाँ नर-नारी अपने पितरों को पिंडदान कर रहे हैं । इससे पितरों को उद्धार होता है ।

(४४)

अहो रामा, काहे लागी कृष्ण चरावे धेनु-गइया हो रामा ,
काहे लागी वंशी बजावे हो रामा-काहे लागी ।

अहो रामा दूध लागी कृष्ण चरावे धेनु गइया हो रामा ,
प्रेम लागी, प्रेम लागी [illegible]ी बज्‍वई हो रामा, प्रेम लागी ।

अर्थ

हे रामा, किसलिए श्री कृष्ण धेनु गाय (लगहर=दूध देने वाली) चरातें है ? वंशी किस लिए बजाते हैं ? कृष्ण दूध के लिए धेनु गाय चराते हैं और प्रेम-प्रसार के लिए वासुरी-वादन करते हैं ।

(४५)

अहो रामा, कौन तोरा रोकले डगरिया हो रामा–अहो नगरिया । अहो रामा, कौन... ।
अहो रामा, कान्हा मोरा रोकले डगरिया हो रामा–बृज के नगरिया। कान्हा मोरा ... ।
दही मोरा खयले मटुक सिर फोरले, गेडुरी दहयले जमुनवाँ हो रामा–वृज के नगरिया ।

अर्थ

हे रामा, किसने तुम्हारी राह रोकी ? किस नगर में रोका । गोपी कहती है श्री कृष्ण ने मेरा मार्ग रोका और ब्रज नगर में रोका । इतना ही नहीं मेरा दही खा लिया और सिर की मटुकी फोर दी तथा मटुकी रखने वाली गेडुरी को यमुना नदी में प्रवाहित कर दिया–ब्रज नगर में ही ।

(४६)

चैत मासे चुनरी रंगा दऽ हो रामा चैत मासे ।
चुनरी रंगादऽ चोलिया सिलादऽ ,
बने-बने घुँघरू लगादऽ हो रामा (चैत...)।

अर्थ

नायिका कहती है कि चैत महीना में मेरी चुनरी रंगा दे साथ ही चोली भी सिला दें और किनारे-किनारे घुँघरू भी लगा दें-यह चैत महीना है ।

(४७)

सखिया झारेला लामी केसिया हो रामा, नदिया किनारे ,
नदिया के मटिया बड़े हवे चिकन, पइया परत पिछुलाय न हो रामा । नदिया किनारे ।

अर्थ

स्नान कर नदी के किनारे सखियाँ लम्बी-लम्बी केश झार रही है । नदी की मिट्टी बड़ी चिकनी है । पैर पड़ते ही पिछल न जाय ? नदी किनारे ।

(४८)

बाजत अवध बधाई हो रामा, अवधपुर नगरी ।
केहो लुटावे रामा अन-धन सोनवाँ,
केहो लुटावे गहनवाँ हो रामा । अवधपुर...।

राजा लुटावे रामा अन-धन सोनवाँ,
रानी लुटावे गहनवाँ हो रामा । अवधपुर...।

अर्थ

राम जन्म के अवसर पर बधाई बज रही है अयोध्या में । कौन अन्न-धन-सोना लुटा रहा है और कौन आभूषण लुटा रही है । राजा अन्न-धन-सोना लुटा रहे हैं और रानी आभूषण लुटा रही है । अयोध्या में ।

(४९)

राधा तोड़े पकली बइरिया हो रामा, सीरी वृंदावन में ।
एको बइरिया राधा तोड़हूँ न पवले, कृष्ण देलन बंसिया बजाई हो रामा ।

वंसी के सबद सुन उत तकलन, से गड़ि गेलइन अंगुरी में कटवा हो रामा । सीरी..।
कउन पपिया असइन बंसी बजौलक, से मोरा दुख सहलो न जाय हो रामा । सीरी..।

अर्थ

श्री बृंदावन में राधा पका बैर तोड़ रही है । एक बैर भी न तोड़ पाई थी कि श्री कृष्ण ने बासुरी बजा दी । बंसी की ध्वनि सुनकर उस ओर घूमी कि उसकी अंगुली में काँटा चुभ गया । राधा कहती है कि किस पापी ने ऐसी बासुरी बजाई कि मेरा यह दुख सहा नहीं जाता ।

(५०)

अहो रामा काहे लागी साँवर बढ़वले लामी के सिया हो रामा,
काहे लागी, काहे लागी बाला जोबनवाँ हो रामा ?

अहो रामा सोभा लागी साँवर बढ़वले लामी केसिया हो रामा,
पिया लागी, पिया लागी बाला जोबनवाँ हो रामा ।

अर्थ

साँवली ने अपने केश को क्यों लम्बा बढ़ाया ? और अपने योवन को क्यों सुरक्षित रखा है । वह कहती है कि शोभा सौन्दर्य के लिए अपना केश बढ़ाया और प्रिय के लिए बाला योवन को संचितकर रखा है ।

(५१)

अहो रामा, कँटवा गड़त जियरा सालय हो रामा-अंगुरी के पोरवा ।
केहूँ निकालय रामा अंगुरी के कँटवा, केहूँ दरद हर लेतई हो रामा-अंगुरी..।
हजमा निकाले मोरा अंगुरी के कँटवा, पिअवा दरद हर लेतन हो रामा अंगुरी...।

अर्थ

अंगुली के पोर में काँटा गड़ गया जो जी में गड़ रहा है-अति दुख दे रहा है। अंगुली का काँटा कौन निकालेगा और कौन मेरा दर्द हरण करेगा। मेरी अंगुली का काँटा हजाम निकालेगा और उसका दर्द मेरे प्रिय रहेंगे।

(५२)

सेजिया सुतल बलमा जागई हो रामा-कोइली मीठी बोलिया।

रोज-रोज बोले कोइली भोर भिनसरवा-
आजु काहे बोले आधी रतिया हो रामा-कोइली मीठी बोलिया।

होबे दऽ बिहान कोइली खोतवा उजारबऽ-
बगिया कटइबो धनी बगिया हो रामा-कोइली मीठी बोलिया।

अर्थ

कोयल की मीठी बोली सुनकर शैय्या पर सोया प्रिया जाग गया। नायिका कहती है कि कोयल नित्य सवेरे बोलती थी और आज क्यों आधी रात में बोल गई। यह मुग्धानायिका क्रोधित होकर कहती है कि सुबह होने दो, तुम्हारे घोसले को उजाड़ दूँगी और घने बाग को भी कटवा दूँगी

(५३)

रामा कबनऽ बने सीरी कृष्ण बछरू चरावे हो रामा।
कउन बने राधिका फुलवा लोढ़े हो रामा।

रामा बृंदा बने सीरी कृष्ण बछरू चरावे हो रामा।
कुंज बने राधिका फुलवा लोढ़े हो रामा। कुंज बने।

रामा काहे लागी सीरी कृष्ण बछरू चरावे हो रामा।
काहे लागी राधिका फुलवा लोढ़े हो रामा।

दूध लागी सीरी कृष्णा बछरु चरावे हो रामा।
चुनरी लागी राधिका फुलवा लोढ़े हो रामा।।

अर्थ

श्री कृष्ण किस वन में बछड़े चरा रहे हैं ? राधिका किस वन में फूल लोढ़ रही है। वृन्दावन में श्री कृष्ण बछरू चरा रहे हैं। राधिका कुंज वन में फुल चुन रही

हैं । श्री कृष्ण किसलिए बछड़ा चरा हैं और राधिका किसलिए फूल चुन रही है । श्री कृष्ण बछरू, दुध के लिए चरा रहे हैं और राधिका चुनरी रंगने के लिए फुल चुन रही है ।

(५४)

अहो रामा, छोटे-मुटे ग्वालिन, मुँहवा के ठुनमुन हो रामा ।
चली भइले, चली भइले मथुरा नगरिया हो रामा ।

जमुना किनरवा बटमरवा हो रामा ।
अचरा धयले विलमावई हो रामा ।

छोड़ू-छोड़ू कान्हा रइया हमरो अँचरवा हो रामा ।
पड़ी जइहें दही के छिटकवा हो रामा ।

तोरा लेखे दही के छिटकवा हो रामा ।
मोरा लेखे अगर चननवाँ हो रामा ।।

अर्थ

कम उम्र की गोपी है जिसका मुख सुन्दर है । वह मथुरा नगर दही बेचने चली । यमुना किनारे बटमार (चोर कृष्ण) है जिसने आँचल पकड़कर रोक लिया । गोपी कहती हैं कि हे कृष्ण राय मेरा आँचल छोड़ दें, दही का छीटा पड़ जायगा । कृष्ण कहते हैं कि तुम्हारे लिए यह दही का छीटा है लेकिन मेरे लिए तो अगर-चंदन की तरह है ।

(५५)

रामा चइत के महीनवाँ वाही नौमी दिनवाँ हो रामा,
वाही दिनवाँ, रामचन्दर लेलन जलमियाँ हो रामा । वाही.....

जीरा हो जवाइन बोरसी भरावे हो रामा चनन के पहसी जरावे हो रामा ।
राम सोने के चउकिया पर राम के नेहावे हो रामा ।

सखि सब दिहले नेछावर हो रामा-सखि सब ।
रामा कोई दिहले अंगूठी-मुनरिका हो रामा ।

कोसिला जी देवथिन रतन-पदारथ हो रामा-कोसिला जी ।
रामा, दास तुलाकी सवइया छाटो गावे हो रामा ।

गाई-गाइ विरहिन सखी समुझावे हो रामा ।

अर्थ

चैत्र महीना की नौमी तिथि को रामचन्द्र ने जन्म लिया । जन्म के बाद सौरी-गृह में जीरा-जवाइन का अलाव (बोरसी) भरा गया और चन्दन की पसंघी (पहसी) जलाई गई ताकि जच्चा-बच्चा को प्रर्याप्त गर्मी और सुगंधि मिलती रहे । सुवर्ण चौकी पर राम को स्नान कराया गया और सभी सखियों ने न्योछावर (दान-दहेज) दिया । याचक को दान दिया गया । कोई अंगुठी-मुद्रिका दे रहा है । कौशिल्या रत्न से बने पदार्थ दे रही है । दास बुलाकी सवैया-घाटो गा रहे हैं । गा-गा कर वियोगिनी नायिका को आश्वत कर रहे हैं ।

(५६)

ननदी भउजइया दोनो पनिहारिन हो रामा ,
पानी भरे चलली जमुना किनारे हो रामा ,

पनिया जे भरी-भरी ऊपरे चढ़ावई हो रामा ,
कोई नहीं घइला अलगावई हो रामा ,

जमुना किनारे कन्हइया घटवरवा हो रामा ,
एके हाथे घइला अलगावे हो रामा ,

दोसर हाथे अचरा धर विलमावे हो रामा ,
छोड़ू-छोड़ू कान्हा हमरो अचरवा हो रामा ,

सासु ननद हमरो घर वैदारून हो रामा ,
जब तोरे सासु ननद वैदारून हो रामा ,

काहे लागी पनिया भरे अयलऽ हो रामा ,
देवरा पियासल देवरा भइया पाहुन हो रामा ,

ओही लागी पानी भरे अइली हो रामा ,
जब तोरा देवरा भइया पाहुन हो रामा ,
काहे नहीं घरवा कुआँ खनवलऽ हो रामा ।

अर्थ

ननद और भाभी, दोनो पनिहारिन के रूप में यमुना किनारे पानी भरने गई । पानी भरकर नदी कछार पर लाई तो यहाँ कोई घइला उठानेवाला नहीं मिला । यमुना किनारे श्री कृष्ण नाविक थे जो एक हाथ से घइला उठाने लगे और दूसरे हाथ से

उसका आँचल पकड़कर विलम्ब करने लगे । इस पर गोपी ने कहा कि हे कृष्ण हमारा आँचल छोड़ दें । घर पर हमारी सास ननद ईष्यालु हैं । कृष्ण कहते हैं कि जब तुम्हारी सास-ननद तुम से ईर्ष्या करती है तो तुम पानी भरने आई ही क्यों ? घर पर देवर भैया पहुन बैठे हैं, उन्हीं के लिए मैं पानी भरने आई हूँ । कृष्ण ने कहा कि जब तुम्हारे देवर भाई पाहुन हैं तो तुम्हें घर पर ही कुआँ खुदवा लेना चाहिए ।

(५७)

मिलल न पिया के संदेसवा हो रामा, चइत रे मासे।
फुलल रसाल मदन-रस-महुआ, धीरे-धीरे बहल पवनवाँ हो रामा।
टेसू गुलाब परास रंगछिरके, महमह महके अंगनवाँ हो रामा। चइतरे मासे ।।

अर्थ

चैत्र महीना में भी प्रिय का संदेश नहीं मिला । मादन रस से पूर्ण आम और महुआ में फूल लग गए और मंद-मंद हवा चलने लगी । गुलाब और पलाश ने अपना रंग छिड़कना शुरू कर दिया जिससे आंगन भी महमह महकने लगा ।

(५८)

कोइली-बोली बिरहिन बेहाल हो रामाऽ-चइत मासे ।
बजर परे अइसन नोकरिया हो रामाऽ-चइत मासे ।

मदन सतवे दिन-रतिया हो रामाऽ-चइत मासे ।
आग लागो सूने सेजरिया हो रामाऽ-चइत मासे ।

आस नऽ छोड़ूँ सजनियाँ हो रामाऽ-पिया के अवनवाँ ।
उचर हे काग छवनियाँ हो रामाऽ-पिया के सनेसवा । चइत मासे ।।

अर्थ

चैत्र के महीना में कोयल की बोली सुनकर वियोगिनी व्याकुल हो गई । वह विदेशी पति की नौकरी पर खीझ रही है क्योंकि चैत में दिन रात मदन दुख दे रहा । शैय्या शून्य है, उसमें आग लगे । इसी बीच छावनी पर कौवा उड़कर बैठ गया मानो कह रहा है कि प्रिय के आने की आशा मत छोड़ो । चैत में आवेंगे ।

(५९)

चइत चार भइया के जनमवाँ हो रामा, नौमी सुभ दिनवाँ ।

किनका के राम जनमें, किनका के लछुमन ,
किनका के भरत भुवनवाँ हो राम, चइत नौमी दिनवाँ ।

कोसिला के राम जनमे, सुमित्रा के लछुमन ,
केंकई के भरत भुवनवाँ हो रामा, चइत नौमी दिनवाँ ।

अर्थ

चैत मास की नौमी तिथि को चार भाइयों को जन्म हुआ । राम का किनसे जन्म हुआ और लक्ष्मण का किनसे ? इस पृथ्वी पर भरत का किनसे जन्म हुआ । कौशिल्या से राम, सुमित्रा से लक्ष्मण और कैकेई से भरत का जन्म इस पृथ्वी पर हुआ-चैत्र मास की नौमी तिथि को ।

(६०)

रामजी के सुनि के जनमिया हो रामा, भोले बाबा अयलन ।
थरिया में लेके रानी अन-धन सोनवाँ ,
करे लगली सोना-चानी दनवाँ हो रामा, भोले...

हमरा न चाही रानी अन-धन सोनवाँ ,
दरसन करादऽ चारो ललनवाँ हो रामा, भोले बाबा......

अर्थ

राम जन्म की खबर सुनकर महादेव आ गए । रानी थाली में अन्न, धन और सोना-चाँदी लेकर दान करने लगी । महादेव ने कहा कि मुझे अन्न-धन-सोना नहीं चाहिए, मुझे चारो पुत्रों का दर्शन करा दें - भोले बाबा इसीलिए आए हैं ।

(६१)

बीत गेले चइत महीनवाँ हो रामा, कोई नहीं अयले ।
बाबा मोरा रहीतन रोज-रोज अयतन ,
भइया मोरा भेले निरमोहिया हो रामा, कोई नहीं अयले ।

अर्थ

चैत्र बीत गया और मायके से कोई नहीं आया । पिताजी होते तो नितदिन आते, मेरे भाई ममताहीन हो गए हैं, वहाँ से कोई नहीं आया ।

(६२)

जनक ललित फुलवरिया हो रामा, चल भोरे सखिया ,
जनक नगर के साँकरी गलिया, कंचन महल अटरिया हो रामा, चल भोरे सखिया ।

अर्थ

सखियाँ कहती है कि जनकजी की फुलवारी सुन्दर है, वहाँ भोरे-भोरे ही चलो। जनकपुर की गली पतली हैं और सोने के महल-अँटारी हैं। भोरे चलकर देख लो।

(६३)

रहली कुआँरी-रहली कुआँरी,
कुंती जी रहली कुआँरी हो रामा, रहली कुआँरी।

कुंती के कान से करन के जनम भेले,
हो गेले भारी कलंकारी हो रामा, रहली कुआँरी ।।

अर्थ

कुंती कुआँरी थी और उनके कान से कर्ण का जन्म हो गया। इससे वह भारी दोषी हो गई, आखिर वह कुआँरी नारी थी।



झूमर लोकगीत

देव विषयक झूमर

(१)

सोने खड़ाउँ रूपे केरा खूँटी हे ,
गोड़वा धोवऽ न रामजी, देखब भर नजरी हे ,

आजु अयोध्या रहब कइसे रामजी हे ,
सोने के परात में जेवना लगवलू हे ,

जेवऽ न रामजी देखब भर नजरी ।

अर्थ

प्रसंग–लोकधर्मी राम ।

सोने के खड़ाऊ में चाँदी की खूँटी लगी है । सखियाँ कहती है कि हे राम, पैर पखारें, हम सब नजर भर देखेंगी । आज किसी तरह रामजी अयोध्या में रह जायें । सोने की थाली में भोजन परोस दिया गया है । हे राम, भोजन करें, हम सब संतुष्ट होकर (भर नजर) देखेंगी ।

(२)

सूनी लागी अहे सखी रामजी पहुँनवाँ ,
से बिहने सबेरे चली जइहें हो लाल ,

हम तो जनइती सखी हे राम दागा दिहें ,
से पहिले से सूर्य मनइती हो लाल ।

सूनी लागी अहे सखी रामजी पहुँनवा ,
से बिहने सेबेरे चली जइहें हो लाल ।

अर्थ

प्रसंग–राम का वनगमन ।

राम के वन गमन समय अयोध्या की सखियाँ आपस में बातचीत कर रही हैं कि रामजी तो अब पाहुन की तरह हो गए हैं । वे सबेरे ही अयोध्या छोड़कर चले जायेंगे और सर्वत्र शून्य व्याप्त हो जायगा । सखियाँ आगे कहती हैं कि राम इस प्रकार हम लोगों को सोती हुई अवस्था में छोड़कर चले (दगा देकर) जायेंगे तो

हमलोग सूर्योपासना कर उन्हें वन गमन करने से रोक लेती । अब तो राम सबेरे चले जायेंगे और सबकुछ शून्य हो जायगा ।

(३)

कहीं भिंजत होइहें भगवान, फूलों के बरसा से ,
केकरा के भिंजत लिलरा चंदनवाँ ?
केकरा के भिंजत लामी केस, फूलों के बरसा से ।

रामजी के भिंजत लिलरा चंदनवाँ ,
सीता के भिंजे लामी केस, फूलों के बरसा से ,
कहवाँ सुखायब लिलरा चंदननवाँ ?

कहवाँ सुखायब लामी केस, फूलों के बरसा से ,
लिलरे सुखायब लिलरा चंदनवाँ ,
चोटिया सुखायब लामी केस, फूलों के बरसा से ।

अर्थ

प्रसंग–राम के वनवास काल में स्त्रियों की चिंता ।

वर्षा में फूल की तरह जल की बूँदें पड़ रही है राम कहीं वर्षा में भींग रहे होंगे । स्त्रियाँ बात कर रही है कि किसके ललाट का चंदन भींग रहा है ? और जल बूँदों से किसके लम्बे केस भींग रहे हैं । पुनः वे कहती है कि राम के ललाट का चंदन भींग रहा है और सीता के लम्बे-लम्बे केश भींग रहे हैं । पुनः उन्हें चिंता होती है कि वर्षा में ललाट का चंदन कहाँ सूखेगा और लम्बे-लम्बे केस कहाँ सूखेंगे । फिर वे संतोष कर लेती हैं कि ललाट का चंदन ललाट में ही सूख जायगा और केस झारकर चोटी गूँथ लेने पर लम्बे केस सूख जायेंगे ।

(४)

जब बरिअतिया जनकपुर में अयले ,
से नर लोग हे, बर देख के चकितवा ।

जइसन राम, ओइसने सीता मिलले ,
से दूनो कुल हे सखि बजले बधइया ।

अर्थ

प्रसंग–जनकपुर में राम की बाराती का आगमन ।

जब राम की बाराती जनकपुर में आ जाती है तो जनकपुर के निवासी वर को देखकर आश्चर्य चकित हो उठते हैं । राम को देखकर स्त्रियाँ बातें करती हैं कि जैसे राम हैं वैसी ही सीता हैं । दोनों की अद्वितीय जोड़ी देखकर दोनों कुलों में बधाइयाँ बजने लगी ।

(५)

रामजी, जलवा लेके सीता चढ़ली अँटारी हे सखिया ,
राम अइसन वर पाई के सुख सपना हो गेल हे सखिया ।
चित टूटल ओही मित से जोड़ी लगायब हे सखिया ,
रामजी, जेवनवा लेई सीता चढ़ली अँटारी हे सखिया ।
राम अइसन बर पाइके सुख सपना हो गेल हे सखिया ,
चित टूटल ओही मित से जोड़ी लगायब हे सखिया ।

अर्थ

प्रसंग–राम जैसे वनवासी पति पाकर सीता का दुखी होना ।

सीता राम के लिए जलपान लेकर उँची अटारी पर चढ़ती है और विचार करती है कि राम जैसे पति पाकर उसका सुख स्वप्नवत हो गया । फिर भी जिस पतिमित्र से चित्त टूट गया है उसी के साथ पुनः चित्त को जोड़ लेगी । अँटारी पर चढ़ी सीता इसी बात का चिंतन बार-बार कर रही है ।

(६)

कइसन हथी राम चन्दर, कइसन हथी लछुमन जी ,
कउन बरन के सीता, जनकपुर मंगल गायबजी ।
साँवरो हथी राम चन्दर, गोरे हथी लछुमन जी ,
गोरे बरन के सीता, जनकपुर मंगल गायब जी ।
झर रे झरोख चढ़ी सीता निरखथी ,
अब राम तोड़े धनुष जनकपुर मंगल गायब जी ।
तड़पी के राम जी धनुष उठौलन,
धनुष भइले नवखंड जनकपुर मंगल गायब जी ।
अब सीता होइहे विआह, जनकपुर मंगल गायब जी ,
हँस के सीता माला पेन्हवले, जनकपुर मंगल गायब जी ।

अर्थ

प्रसंग–जनकपुर में राम-सीता विवाह प्रसंग ।

राम जनकपुर के स्वयंवर में पहुँच गए हैं । वहाँ की स्त्रियाँ राम-सीता-लक्ष्मण के बारे में बातचीत कर रही हैं । राम कैसे हैं ? लक्ष्मण कैसे हैं और सीता का क्या वर्ण है ? अब जनकपुर में मंगल गीत गाए जायेंगे । एक स्त्री कहती है–राम साँवले हैं, लक्ष्मण गोरे हैं और सीता भी गौर-वर्ण की है । अब जनकपुर में मंगल गीत गाए जायेंगे ।

सीता कोठे के झरोखे से देख रही है कि अब शीघ्र ही राम धनुष भंग करेंगे और मंगल-गान होगा । शीघ्र ही राम ने झपट कर धनुष उठा लिया और वह नव खण्डों में टूट कर बिखर गया । सभी लोग कहने लगे कि अब सीता का विवाह होगा, लोग मंगल गीत गावेंगे । सीताजी ने हँस कर वरमाला पहना दिया और मंगल गीत होने लगे ।

(७)

एक कोठरिया में राजा जलवा पियले, दूजे कोठरिया में फूलन के हार ।
हो खगवा हरके ले गेले सीता कुमार, हो खगवा ले गेले सीता कुमार ।।
जे हमरा सीता के खोज लेआवे उनका के देबो अयोध्या के राज ।
हो खगवा ले गेले हर के सीता कुमार ।।

अर्थ

प्रसंग–सीता हरण के बाद राम की चिंता ।

एक कोठरी में राजा (राम) जल पी रहे हैं और दूसरी कोठरी में फूलों की हार है (सीता के अभाव में हार बिखरे पड़े हैं) खग रूपी रावण ने सीता कुमारी को हरण कर लिया है । राम कहते हैं कि जो हमारी सीता को खोजकर ला देगा उसे अयोध्या का राज दे देंगे । खग ने सीता कुमारी का हरण कर लिया है ।

(८)

रामजी के जलवा गंगा बहतु हैं, बन-पइसी सीतिया मोहाल ,
राम कइसे नहइहन बनवा, जानकी जी उदास ।

राम जी के जेवना पूरी-कचौरी, बन पइसी फुटहा मोहाल ,
राम कइसे जइहें बनवा, जानकी जी उदास ।

रामजी के बिरवा पाकल पनवा, बन पइसी पतिया मोहाल ,
रामजी के सेजिया तोसक आउ तकेया, बन पइसी खरई मोहाल ।

राम कइसे जइहें बनवा जानकी जी उदास ।

अर्थ

प्रसंग—राम वनवास के समय दुख-चित्रण ।

राम के लिए तो गंगा जल प्रवाहित होता है लेकिन वन में प्रवेश करते ही ओस भी दुलर्भ हो गया । अत: सीता जी उदास हैं कि वन में राम कैसे स्नान करेंगे ? रामजी के लिए तो पूरी और कचौरी भोज्य है लेकिन वन में भुना चना भी दुर्लभ है । यह सोचकर सीताजी उदास हैं । रामजी के लिए पके पान का बीड़ा है परंतु जंगल में पत्ते भी मुश्किल हैं । रामजी के लिए तोसक और तकेया की शय्या है परंतु वन में प्रवेश करने पर खर-पुआल पर सोना भी नसीब नहीं ।

(९)

जलवा लेले राधा कबसे खड़ी, जमुना जी से कब लौटीहें ये हरी ,
राधा गोरी अइसन लाखो खड़ी, जमुना जी से कब लौटीहें ये हरी ।

जेवना लिए राधा कब से खड़ी, जमुना जी से कब लौटीहें ये हरी ,
कृष्ण अइसन बर कतही न मिलल, राधा-गोरी अइसन लाखो खड़ी ।

अर्थ

प्रसंग—कृष्ण के लिए राधा की प्रतीक्षा ।

राधा जल लेकर कब से खड़ी है न जाने कृष्ण यमुना किनार से कब लौटेंगे ? राधा की तरह लाखों गौरवर्णी कृष्ण की प्रतीक्षा में खड़ी हैं । राधा भोजन लेकर कभी से खड़ी है, यमुना से कृष्ण कब लौटते हैं । कृष्ण की तरह वर कहीं नहीं मिलते हैं । अत: राधा की तरह लाखों सुन्दरियाँ प्रतीक्षा में खड़ी हैं ।

(१०)

सोने सुराही गंगाजल पानी एकबर हम पीये, एकबर लछुमन ,
एक ओर राम पीये अकेला ।

हम तो जनइती राम अकेला, जोगिनियाँ बनती हो, करती कासी में डेरा ,

सोने के प्रात में जेवना लगैलूँ, एकबर हम जेवें एकबर लछुमन।
एक ओर जेवंले राम अकेला।
हमतो जनइती राम अकेला, जोगिनियाँ बनती हो, डालती कासी में डेरा।

अर्थ

प्रसंग—सीता पर लोकापवाद के बाद चिंतन।

सोने की सुराही में गंगा जल भरा है एक बार सीता और लक्ष्मण पी रहे हैं परंतु राम अकेले ही पी रहे हैं। सीता कहती है कि मैं जानती कि राम ने अपने को अलग कर रखा है तो मैं योगिन बन कर काशी मे डेरा जमा देती। सोने के पात्र में भोजन लगाया। एक बार हम और लक्ष्मण खा रहे हैं परंतु राम अकेले ही खाते हैं। हम जानती कि राम अकेला हो गए हैं तो हम काशी में जाकर योगिन बनकर डेरा डाल देती।

(११)

सोने सुराही गंगा जल पानी, पीये के बेरिया हो रामजी जाये मधुबनवाँ,
भेजले वैरीन चिठिया, मतु रे जइहँऽ हे धानी अपनी नइहरवा।
नइहर जयबऽ सखिया संग घूमबऽ ससुरवा गलिया हो अंग मोरी-मोरी चलिहँऽ,
सोने के प्रात में जेवना लगवलूँ, जेवे के बेरिया रामजी जाये मधुबनवाँ।
भेजले बैरीन चिठिया मतु रे जइहँऽ धानी अपनी नइहरवा।

अर्थ

प्रसंग—राम का सीता को समझाना।

सोने की सुराही में गंगा जल रखा है। राम जल पान करना त्याग कर वन गमन कर रहे हैं। वे पत्र लिखते हैं कि प्रिय तुम नइहर (मायके) मत जाना। वहाँ जाकर सखियों के साथ घूमती फिरोगी, श्वसुराल में अंग मोड़कर विनम्रता पूर्वक चलोगी। सोने के पात्र में भोजन लगा है और भोजन करने के समय रामजी वन जा रहे हैं। क्रम-से गीत प्रक्रिया बढ़ती है।

(१२)

अच्छा जलवा लेयाम, सीता सुन्नर के पीयाम, सीता व्याकुल होले,
बगिया में जायके लछुमन के समझावे के नऽ।
दउड़ऽ दउड़ऽ हो भगवान जीवन डाले के, लछमन के समझावे के नऽ,
अच्छा जेवना लगायम, सीता सुन्दर के जेवायम, सीता व्याकुल होले।

बगीया में जायके, लछुमन के समझावे के नऽ,
दउड़ऽ दउड़ऽ हो भगवान जीवन डाले के, लछुमन के समझावे के नऽ ।

अर्थ

प्रसंग--वन-पथ में सीता की स्थिति ।

सीता वन में व्याकुल हो गई हैं । ग्रमीण कहती है कि स्वच्छ जल लाकर सीता को पिलाऊँगी, लक्ष्मण इन्हें सांत्वना दें । सीता में नव जीवन संचार करने के लिए राम को दौड़कर आने कहती हैं । ग्राम्य बालाएँ आगे कहती हैं कि अच्छा भोजन लगा कर सीता को खिलायेंगी । राम दौड़कर आवें और सीता में नया जीवन डालें, लक्ष्मण इन्हें सांत्वना दें ।

(१३)

राम जाले बनवाँ, सीता जाने को तैयार हे,
मत जाहूँ सीता जनक दुलारी हे ।

खाय के न अन्न मिले, पीये के न पानी हे,
सोवे के न सेज मिले जनक दुलारी हे ।

खयबो में बन फलवा, पीबो ठंढा पानी हे,
सुतबो में कुस चटइया जनक दुलारी हे ।
मत जाहू सीता बनवाँ जनक दुलारी हे ।।

अर्थ

प्रसंग--वनगमन समय राम का सीता को समझाना ।

राम वनगमन के लिए प्रस्तुत हैं तभी सीता भी जाने के लिए तैयार हो जाती है । राम समझाते हैं कि सीता को वन नहीं जाना चाहिए । वहाँ खाने के लिए अन्न नहीं मिलेगा न पीने के लिए पानी ही मिलेगा । हे जनक दुलारी, वहाँ सोने के लिए शय्या भी नहीं । इस पर सीता कहती है कि मैं भोजन में वनफल खा लूँगी और ठंढा जल पी लूँगी । कुश की चटाई पर सो लूँगी ।

(१४)

मोर पिछुअरवा बेइलिया फूले जानकी, से फुलवा फूलले कचनार सुन ये जानकी,
फुलवा लोढ़ीये-लोढ़ी चंगेलिया भरली ये जानकी से गिरिजा पूजनवाँ हम जाम,
सुन ये जानकी ।

गिरिजा पूजन के कउन फुल ये जानकी, से गिरिजा पूजन हम जाम ,
सुन ये जानकी ।

गिरिजा पूजन के सरब फल ये जानकी से गिरिजा पूजन हम जाम ,
सुन ये जानकी ।

राजा दसरथ अइसन ससुर मिलिहें, ये जानकी, माता कौसिल्या अइसन सास ,
सुन ये जानकी ।

वीर हनुमान अइसन सेवक मिलिहें, ये जानकी से गोतीनी मिलिहें गलेहार ,
सुन ये जानकी ।

सखिया-सलेहर अइसन ननद मिलिहें, जानकी, से पुरुष मिलिहें भगवान ,
सुन ये जानकी ।

अर्थ

प्रसंग—पुष्प वाटिका में सीता के द्वारा गिरिजा पूजन ।

हमारे पीछे के वगीचे में बेली फूलती है, वहाँ कचनार भी फूलता है । जानकी ने फूल लोढ़कर डाली को भर लिया और गिरिजा पूजने चली । सखियाँ पूछती हैं कि पार्वती की पूजा से कौन फल की प्राप्ति होती है ? वह कहती है कि गिरिजा की पूजा से सभी प्रकार के फल मिलते हैं । राजा दशरथ की तरह श्वसुर मिलेंगे, माता कौशल्या की तरह सास मिलेगी । वीर हनुमान की तरह सेवक मिलेंगे । गले की हार की तरह देवरानी मिलेगी, सहेलियों की तरह ननद मिलेगी और भगवान राम की तरह पति मिलेंगे ।

(१५)

कउन बन कृष्ण गइया चरावेला, कउन बन बंसिया हो बजवले ?
रामे बन कृष्ण हो गइया चरवले, गोखुल बन बंसिया हो बजवले ।

काहे लागी कृष्ण हो गइया चरवले, काहे लागी बंसिया हो बजवले ?
दुधवा पीयन लागी गइया चरवले, सवख लागी बंसिया हो बजवले ।

काहे लगी कृष्ण हो कयल विअहवा, काहे लागी गवनवाँ हो कयलऽ ?
अपन सौख लागी कइली विअहवा, तुम्हरे लागी गवनवाँ हो कइली ।

काहे लागी धनियाँ हे मथवा बन्हौले , काह रे लागी मंगिया टीकवलऽ ?
अपन सौख लागी मथवा बन्हौली, तुम रे लागी मंगिया टीकौली ।

काहे लागी धनिया तोसक लगौलऽ, काहे लागी तकेया लगौलऽ ।
अपन सौख लागी तोसक लगौली, तुम्हरे लागी तकेया लगौली ।

अर्थ

प्रसंग—कृष्ण का गो चारण एवं बंशीवदन ।

प्रश्न—कृष्ण किस वन में गाय चराते हैं और किस वन में वंशी वजाते हैं ?
उत्तर—रामवन में कृष्ण गाय चराते हैं और गोकुल वन में वंशी वजाते हैं ।
प्रश्न—किस लिए कृष्ण गाय चराते हैं और किस लिए वंशी बजाते हैं ।
उत्तर—दूध पीने के लिए गाय चराते हैं और सौख के लिए वंशी वजाते हैं ।
प्रश्न—कृष्ण ने किस लिए विवाह रचाया, क्यों गवना (द्विरागमन) कराया ?
उत्तर—अपने सौख के लिए विवाह किया है और तुम्हारे (पत्नी) लिए गवना कराया है ।
प्रश्न—हे प्रिये किस लिए माथा बाँधा है और क्यों मांग टीक लिया है ?
उत्तर—अपने सौख के लिए माथा बाँधा है, आपके (पति) लिए माँग टीका है ।
प्रश्न—हे धानी, किस लिए तांशक लगाया है, तकेया क्यों लगाया है ?
उत्तर—अपने सौख के लिए तोसक लगाया है, आपके लिए तकेया लगाया है ।

(१६)

अयोध्या नगरिया से गेलन से गेलन रामा ,
जलवा लिये मैं तो रने-वने खोजली रामा ।

न जानु रामजी कवन बने गेलन रामा ?
अयोध्या नगरिया से गेलन से गेलन रामा ।

हाथ कमंडल गले तुलसी के माला रामा ,
भोजन लिए मैं तो रने-वने खोजली रामा ,

न जानु रामजी कवन बने गेलन रामा ?

अर्थ

प्रसंग—राम वनगमन एवं अयोध्या वासियों की खोज ।

राम अयोध्या से चले गए हैं, वहाँ के लोग जल लेकर रण क्षेत्र और वन-वन खोज रहे हैं । पता नहीं राम अयोध्या से कहाँ चले गए ? किस वन में भटक

गए ? हाथ में कमंडल और गले में तुलसी की माला सुशोभित थी राम भूखे होंगे । अतः नगरवासी भोजन लेकर वन-वन खोज रहे हैं, वे कहाँ किस वन की ओर चले गए हैं ।

(१७)

कउन सखी गावे, कउन समुझावे, केकरा के लागे अछरंगिया ।
बसुरिया चोरी हो गेले ।
मीना सखी गावे, नगीना समुझावे, राधा जी के लागल अछरंगिया ,
बसुरिया चोरी हो गेले ।

अर्थ

प्रसंग—कृष्ण की बाँसुरी चोरी ।

किसी गोपी ने कृष्ण की बाँसुरी चुरा ली । कोई उन्हें समझा रही है । कोई गा कर रिझा रही है लेकिन किसी को दोष तो लगाना ही है । पुनः गीतकार कहता है कि मीना सखी गा रही है और नगीना समझा रही है और दोष राधा को लग रहा है ।

(१८)

सीता के कान में कुंडल सोभे, हथवा में सोभे रूमाल ,
चिरइयाँ बनके उड़ गेलन सीता कुमारी ।
जे मोरा सीता के खोज के लावे, उनको देबई अयोध्या के राज ,
चिरइयाँ बन के उड़ गेलन सीता कुमारी ।

अर्थ

संदर्भ—सीता हरण ।

सीता के कानों में कुण्डल शोभ रहा है और हाथ में रूमाल, वह चिड़िया की तरह उड़ा ली गई, रावण अपहरण कर ले गया । लोकजीवन कहता है कि जो मेरी सीता को खोज लावेगा, उसे अयोध्या का राज दे दिया जायगा, सीता चिड़ियाँ की तरह उड़ गई ।

(१९)

जलवा लगाई खिरकी पर ठढ़ी ,
कबले अइहें किसुन जी बीतले रतिया ।

ओही वनवाँ में वंसिया वजावें रसिया,
ओही वंसी के अवाज सुनी अइहें सखिया।

ओही सखियन के लेके गवाँवे रतिया।
खनवाँ लगाई खिरकी पर ठढ़ी,

कवले अइहें किसुनजी वीतले रतिया – पुनरूक्तियाँ

अर्थ

संदर्भ—कृष्ण की रासलीला।

जल लेकर एक सखी झरोखे पर खड़ी प्रतीक्षा कर रही है-वे कवतक वन से लौटेंगे, रात वीत रही है। रसिक कृष्ण ने वन से ही वाँसुरी वजाई। सुनकर वह सखी सोचती हैं कि बंशी की आवाज सुनकर सखियाँ वहीं चली जायेंगी। और श्री कृष्ण उन्हीं सखियों के साथ रात्रि व्यतीत करेंगे। वह सखी भोजन लगाकर झरोखे पर खड़ी है, रात्रि बीत रही है और कृष्ण आ नहीं रहे हैं, वे कवतक आते हैं ?

(२०)

राम सड़किया पर हम न जयवो जी, सड़क बड़ी छोट, चलव कइसे ?
राम इनरवा पर हम न जइबो जी, उवहनी बड़ी छोट, भरव कइसे ?

राम रसोइया हम न जयवो जी, वेलना बड़ी छोट, वेलब कइसे ?
राम सेजिअवा हम न जयबो जी, पिअवा बड़ी छोट, सोअब कइसे ?

अर्थ

संदर्भ—राम प्रदत पदार्था से अरूचि।

नायिका राम निर्मित सड़क पर नहीं जाना चाहती क्योंकि सड़क सकरी है, उस पर कैसे चला जायगा ? राम के कुएँ पर भी वह नहीं जाना चाहती क्योंकि रस्सी छोटी है, पानी कैसे भरेगी ? वह आगे कहती है कि राम भोजनगृह में मैं नहीं जाऊँगी, वेलना छोटा है। रोटी कैसे वेली जायगी ? मैं राम की शय्या पर भी नहीं जाऊँगी, प्रिय छोटे हैं, उनके साथ कैसे सोऊँगी ?

(२१)

एक समइया में जलवा लगौलूँ रामा ,
जलवा लगौलूँ सूरूज गोड़वा लगलूँ रामा ।

अपने करम रामा, अपने बिगड़लूँ रामा ,
कोई न करम गति बचके सुनावे रामा ।

एक समइया हम जेवना लगौलूँ रामा ,
जेबना लगौलूँ जेवावहूँ न जनलूँ रामा ।

एक समइया हम सेजिया लगौलूँ रामा ,
सेजिया लगौलूँ सोवहूँ न जनलूँ रामा ।

अर्थ

संदर्भ—कर्म की गति से कोई नहीं बचता ।

एक स्त्री कहती है—एक समय मैंने जल लगाया, जल ढालकर सूर्य का पैर पूजन किया । परंतु मुझसे कोई भूल हो गई, अपना कर्म मैंने अपने ही बिगाड़ लिया । कोई भी कर्म की गति से बचते नहीं सुना गया । एक समय मैंने भोजन लगाया और भोजन कराने की विधि नहीं जान सकी । इसी प्रकार एक समय मैंने शय्या लगाई परंतु सोने-सुलाने की विधि नहीं जान सकी ।

(२२)

सीता जलवा लिए, सीता जुड़वा लिये ,
चलहूँ रामेश्वर के बगिया हे जहाँ नाचत मोर ।

जाई पड़ले दूई सखिया हे-एक साँवर, गोर ,
सीता भोजन लिए, सीता सेजिया लिये ,

चलहूँ रामेश्वर के बगिया हे, जहाँ नाचत मोर ,
जाई पड़ले दूई सखिया हे, एक साँवर गोर ।।

अर्थ

प्रसंग—सीता का पुष्प वाटिका गमन ।

सीता जल और पूजा-सामग्री लिए है, महादेव के बाग में चलने के लिए कह रही हैं जहाँ मोर नाचते हैं । साथ में साँवली-गोरी दो सखियाँ जाने के लिए प्रस्तुत हो गई । सीता भोजन और शय्या लेकर प्रस्तुत है और रामेश्वर के बाग में चलने कहती हैं जहाँ मोर नाचते हैं । उनके साथ साँवली-गोरी दो सखियाँ जाने के लिए प्रस्तुत हो गई ।

(२३)

सोने प्रात मधुर रंग मिठइया, एक ओर जेवले कासी के लोगवा,
दोसर हो जेवें राम अकेला।

हम तो जनइती राम अकेला जोगिनियाँ, वनती, डालती कासी में डेरा।

अर्थ

सोने के पात्र में मधुर मिठाइयाँ हैं। एक तरफ काशी के लोग भोजन कर रहे हैं तो दूसरी ओर राम अकेले भोजन करते हैं। सीताजी कहती हैं कि यदि राम अकेले हैं तो मैं भी योगिन बनकर काशी में डेरा डाल देती।

(२४)

सोने के गेडुवा गंगाजल पानी, पनियो न पिये भगवान, गले में गमुछा डाल के,
गोरो जे रहितऽ प्राभु डर मनइती, करिया पर एतना गुमान, गले में गमछा डाल के।

सोने के प्रात में जेवना लगवलूँ, जेवनो न जेवे भगवान, गले में गमुछा डाल के,
गोरो जे रहितऽ प्राभु डर मनइती, करिया पर एतना गुमान, चलऽले अपना सान से।

अर्थ

संदर्भ–भगवान का स्वरूप और गृह जीवन।

सोने के जलपात्र में गंगाजल रखा है, भगवान पानी नहीं पी रहे हैं, । गला, दुपट्टा से सुशोभित है। लक्ष्मी कहती है–हे प्रभु आप गौर वर्ण होते तो मैं डर मानती, काले होने पर ही इतना अभिमान रखते हैं ? सोने के पात्र में भोजन लगा दिया गया। भगवान गले में दुपट्टा बाँधे भोजन नहीं कर रहे हैं। पुनः लक्ष्मी कहती है कि यदि आप गोरे होते तो मैं डर मानती, काले पर इतना गुमान करते हैं क्यों ? और अपने शान में चलते हैं।

(२५)

सोने के खाटी आंगन बीचे डाँसब,
ताही चढ़ी राम के वोलायब हो, बर मिलले भगवान।

कउन बरत सीता कयलऽ हो, बर मिलले भगवान,
माघ ही मासे नेहइली हो, अगहन कइली एतवार।

भूखल ब्राह्मन जेववली हो, बर मिलले भगवान।

अर्थ

संदर्भ—सीता का ब्रत और पति रूप में राम की प्राप्ति ।

सुवर्ण पलंग को आंगन में बिछाऊँगी, उस पर चढ़कर राम को बुलाऊँगी, मुझे राम जैसे पति मिले जो स्वयं भगवान हैं । किसी ने पूछा कि सीता जी, आपने कौन ब्रत किया है जिससे स्वयं भगवान ही प्रतिरूप में प्राप्त हो गए । सीता कहती है कि माघ महीने में स्नान करती रही और अग्रहन में रविवार ब्रत करती रही है । भूखे ब्राह्मणों को भोजन कराया है । इसीलिए भगवान पति मिले हैं ।

(२६)

कहवाँ से आवले राम-लछुमन, कहवाँ से आवे भगवान...
अंगनवाँ में तुलसी लागी गेल हो ।

पूरब से आवे राम-लछुमन, पछिम से आवे भगवान, अगंनवाँ में...
कहवाँ उतारब राम-लछुमन, कहवाँ उतारब भगवान, अंगनवाँ में...

दुअरा उतारब राम-लछुमन, मड़वा उतारब भगवान हो, अंगनवाँ में...
काई खिलायब राम-लछुमन, काई खिलायब भगवान हो, अंगनवा...

दाल-भात खिलायब राम-लछुमन, दूधवा पिलायब भगवान हो, अंगनवाँ...
दान-दहेज समधब राम से लछुमन, छोटकी ननदिया भगवान, अंगनवाँ...

अर्थ

संदर्भ—दैवी पात्रों का लोकजीवन ।

कहाँ से राम-लक्ष्मण आ रहे हैं और कहाँ से भगवान आ रहे हैं, आंगन में तुलसी का बिरवा लगा है । पूर्व से राम-लक्ष्मण आ रहे हैं और पश्चिम से भगवान का आगमन हो रहा है । परिवार की स्त्रियाँ कहती हैं कि राम-लक्ष्मण को कहाँ उतारा जायगा और भगवान को कहाँ ? दूसरी औरतें कहती हैं कि राम-लक्ष्मण को दरवाजे पर उतारेंगी और भगवान को मड़वा में उतारा जायगा । राम-लक्ष्मण को क्या खिलाया जायगा और भगवान को क्या खिलाया जायगा ? राम-लक्ष्मण को दाल-भात खिलाया जायगा और भगवान को दूध पिलाया जायगा । राम-लक्ष्मण को दान-दहेज देकर बिदा किया जायगा और भगवान को छोटी ननद देकर बिदा किया जायगा ।

(२७)

मैं तो जाती रही मथुरा नगरी, कृष्ण मारे गुलेल फूटे गगरी ।
फूटे गगरी हो भिंजे चुनरी, घरवा सासु पूछे बहुआ क्या बिगड़ी ?

सासु, बिगड़ी से बिगड़ी हमार बिगड़ी, तोरा बेटा अलबेला को क्या बिगड़ी ?
मैं तो जाती रही मथुरा नगरी, कृष्ण मारे गुलेल फूटे गगरी ।

फूटे गगरी हो भिंजे चुनरी, घरवा गोतनी पूछे बहुआ क्या बिगड़ी ?
गोतनी, बिगड़ी से बिगड़ी हमार बिगड़ी तोरा देवर अलबेला को क्या बिगड़ी ?

अर्थ

संदर्भ—गोपी-कृष्ण लीला ।

गोपी कहती है कि मैं मथुरा जा रही थी । कृष्ण ने गुलेल मार कर जल भरी गगरी फोड़ दी । फूटी गगरी से पानी चूने पर गोरी की चुनरी भींग गई । घर पर उसकी सास पूछती है कि बहू, तुम्हारा क्या बिगड़ गया ? वह कहती है कि सास, हमारा सबकुछ बिगड़ गया लेकिन तुम्हारे दुलारे कृष्ण का क्या बिगड़ा ? मैं तो मथुरा नगर जा रही थी । कृष्ण ने गुलेल से मेरी गागर फोड़ दी और मेरी चुनरी भींग गई और गोतनी पूछ रही है कि तुम्हारा क्या बिगड़ गया है ? गोपी गोतनी को कहती है कि हमरा ही सबकुछ बिगड़ गया, तुम्हारे लाडले को क्या बिगड़ा ?

(२८)

कहवाँ से आवे लालबुकवा, कहवाँ से आवेला अबीर, खेला दऽ हरी झूमर ।
पूरब से आवे लाल बुकवा, पछिम से आबेला अबीर, खेला दऽ हरी झूमर ।

केकरा के हाथे लाल बुकवा, केकरा के हाथे अबीर, खेला दऽ हरी झूमर ।
राधे के हाथे लालबुकवा, कृष्ण के हाथे अबीर , खेला दऽ हरी झूमर ।।

अर्थ

संदर्भ—राधे-कृष्ण का रंग-अबीर खेलना ।

कहाँ से लाल बुकनी (रंग) आती है और कहाँ से अबीर, हे हरी, झूमर खेलें । पूरब से लाल बुकनी आती है, पश्चिम से अबीर । किसके हाथ में लाल बुकनी है और किसके हाथ में अबीर है ? राधे के हाथ में लाल बुकनी और कृष्ण के हाथ में अबीर है ? अतः अब झूमर खेलें ।

(२९)

कव होइहें दरसनवाँ मोरा साम सुनर के ?
सपना में खाली भवनवाँ हो, मोरा साम सुनर के ।

कुब्जा से नेहिया लगवले हो, हमरा से छोड़के ,
न जाने कवने करनवाँ हो, हमरा के तेज के ।

आधी राति बोलेला पपीहरा हो, जीयरा में बेध के ,
नैना से झरेला नीरवा हो, सुमरी साम-सुनर के ।

अर्थ

प्रसंग-- गोपी का विरह-वर्णन ।

एक गोपी कहती है कि मेरे श्याम सुन्दर का दर्शन कब होगा ? श्याम सुन्दर के बिना मेरा भवन खाली है । वहाँ श्री कृष्ण ने मुझे त्यागकर कुब्जा से स्नेह कर लिया है । न जाने मुझे त्याग कर किस कारण से ऐसा किया ? आधी रात में पपीहा बोलती है । उसकी बोली मेरे जी को बेधित करती है । श्याम सुन्दर को स्मरण कर मेरे नयन से आँसू गिरते रहते हैं ।

(३०)

मोरे वगिया फुलायल फूल-गेन्दवा ,
बेलिया फुलायल, फूल कचनार, फुलायल फूल गेन्दवा हो मोरे बगिया ।

फूल जे लोढ़े गेली रामा, गेली फुलवड़िया कि चुभी गेलो कटवा हमार रे अंगुरिया ।
चंदन-रोड़ी फूल बेल पातर, गौरी के पूजनवाँ, जाऊँ रे सहेलिया बोलिया ।

अर्थ

संदर्भ—सखियों के साथ गौरीपूजन ।

एक सखी कहती है कि मेरे बाग में गेंदे का फूल फुला गया है । साथ ही बेली और कचनार भी फूल गए हैं । वह फुलवारी में फूल लेने गई कि उसकी अंगुली में काटा चुभ गया फिर भी वह चंदन रोड़ी फूल, बेलपत्र, लेकर अपनी सखियों के साथ गौरी की पूजा करने जायेगी ।

(३१)

जसोदा के नटखट ललनवाँ न माने मोर कहनवाँ।
न माने मोर कहनवाँ-कहनवाँ जसोदा के नटखट ललनवाँ।

गइया चरवले, बंसिया बजवले, ग्वालन से करेला झगरवा,
माखन चोरावे, मटुकिया भी फोरे, सारी मुख दधि के लिपटनवाँ।

अर्थ

संदर्भ—कृष्ण लीला ।

यशोदा का नटखट लाल मेरा कहना नहीं मानता, वह गाया चराता है, बंसी वादन करता है, ग्वाल-बालों से झगड़ा करता है । मक्खन चुराता है और मटुकी भी फोर देता है और सभी के मुख में दही लपेट देता है ।

(३२)

नथिया हमारी अनारो के कली, टिकवा सुरूजवा के जोत,
हरि मोरा काहे न अयले बारह बजे के करार ।

बारह भी बज गेल, एक भी बजी गेले गुजरी नाचले सारी रात,
हरि मोरा काहे न अयले, बारह बजे के करार ।

बलवा हमारो अनारो की कली, सिकरी सूरूजवा के जोत,
हरि मोरा काहे न अयले, बारह बजे के करार ।

अर्थ

प्रसंग—गोपी की प्रतीक्षा ।

प्रतीक्षारत गोपी श्री कृष्ण के न आने का करण पूछती है । उन्हें बारह बजे आना था । वह पूर्ण सुसज्जित है । उसका नथ अनार की कलि की तरह है । टीका सूर्य ज्योति की तरह है । सुसज्जित नायिका कहती है कि बारह बजने के बाद एक भी वज गया फिर भी श्री कृष्ण नहीं आए । उसके हाथ का कंगन अनार-कली की तरह है, सिकड़ी सूर्य की ज्योति की तरह है, हरि क्यों नही आए, बारह बजे का समय निश्चित था ।

(३३)

शिवजी गेले झंडी-खनवाँ गिरवले रतिया।
शिवजी लाली-लाली अँखिया गिरवले रतिया।
शिवजी भंगिया पीसा के जोहवते बटिया।

अर्थ

प्रसंग—पार्वती-प्रतीक्षा ।

शिवजी साधना करने गए हैं, रात्रि बीत रही है । पार्वती जागकर प्रतीक्षा कर रही है, उनकी आँखे लाल-लाल हो गई है । पार्वती ने भांग पीसकर रख दिया है । वह कहती है कि शिवजी भांग पिसवा कर बाट जोहने को विवश कर देते हैं ।

(३४)

कोरे नदिवा सासु दहिया जमवली से अमरीत दिहली हो जोरनियाँ ।
अपने तो बेचे सासु गाँव के गोयठवा, से हमारा के भेजेली हो जमुनवाँ ।

जमुना किनरवा कन्हइया घटवरवा, से खेवइया मांगे दहिया रे मखनवाँ ।
दहिया-मखनवाँ मोरा सब खाई गेले, गेडुरिया मोरा फेंकले हो जमुनवाँ ।
जइसे-जइसे हलफे ला पानी में गेडुरिवा, से ओइसे-ओइसे बिहरेला करेजवाँ ।

अर्थ

संदर्भ—कृष्ण लीला ।

सास ने अमृत देकर नये पात्र (मटुकी) में दही जमाया । उस दही को लेकर स्वयं गाँव के नजदीक बेचने गई और पुत्रबधू को यमुना पार भेज दिया । यमुना किनारे कृष्ण घाट के रखवाला हैं । नदी पार करने में दही और मक्खन नावें-खेवाई मांगते हैं और उन्होंने सारा दही-मक्खन खा लिया । दधि-पात्र को यमुना में फंक दिया । यमुना में दधि-पात्र हलफे के साथ बह रहा है । देख कर गोपी का हृदय विदीर्ण (फाट) हो रहा है ।

(३५)

कहवाँ से आवे सीरी जमुना हे, कहवाँ से आवे भगवान, मुरलिया मधुर बाजे ।
जहाँ होबऽहे कथा रमायन उहाँ प्रभु आवे हे ।

पुरूब से आवे सीरी जमुना हे पच्छिम से आवे भगवान, मुरलिया मधुर बाजे जहाँ ...
दुअरा उतारब सीरी जमुना हे, मड़वा उतारब भगवान, मुरलिया मधुर बाजे-जहाँ ...

काई खिआयब सीरी जमुना हे काई खिअयाब भगवान, मुरलिया मधुर बाजे जहाँ ...
काई देई समधब सीरी जमुना हे, काई देई समधब भगवान, मुरलिया मधुर बाजे, जहाँ ...
दान देई समधब सीरी जमुना हे, छोटकी ननदिया भगवान मुरलिया मधुर बाजे, जहाँ ...

अर्थ

संदर्भ—दैवी चरित्र में लोकजीवन ।

श्री यमुना कहाँ से आ रहे हैं और मुरली बजाते श्री कृष्ण कहाँ से ? जहाँ राम कथा होती है वहाँ भगवान आते हैं । पूरब से श्री यमुना और पच्छिम से भगवान आ रहे हैं । मधुर-मधुर बाँसुरी बज रही है । श्री यमुना को कहाँ उतारेंगे और श्री भगवान को कहाँ उतारेंगे ? श्री यमुना को क्या खिलावेंगे और भगवान को क्या खिलावेंगे ? श्री यमुना को क्या देकर विदा करेंगे और श्री भगवान को क्या देंगे ? एक गोपी कहती है कि श्री यमुना को दान देकर और श्री भगवान को छोटी ननद देकर विदा करेगी ।



श्रृंगार प्रधान झूमर

(१)

उगी गेले चाँदी रंग इंजोरिया, पिया बिना निन्दो न आवे,
कोई-कोई हाल से पिया के बोलवली, जगी गेले सासु बइरिनियाँ, पिया..
कोई-कोई हाल से सास के सुतौली, जगी गेले ननदी बइरिनिया, पिया....
कोई-कोई हाल से ननदी सुतौली, बोली गेले काली रे कोइलिया, पिया...
कोई-कोई हाल से कोयली भगवली, फूट गेले लाली रे किरिंगिया, पिया....

अर्थ

संदर्भ–क्रिया चतुर विदग्धा ।

चाँदी रंग की तरह चाँदनी उग गई है, प्रिय के बिना नींद नही आ रही है । चतुर नायिका ने किसी तरह प्रिय को बुलाया । उसी बीच वैरी की तरह सास जाग गई । उसने पुनः किसी तरह सास को सुला दिया तो ननद बैरी बनकर जाग गई । फिर किसी तरह ननद को सुलाया तो काली कोयल ने कूकना शुरू कर दिया । अंत में नायिका ने किसी तरह कोयल को भगा दिया तब तक सूर्योदय हो गया और लाल-किरणें फूट पड़ी ।

(२)

मोर पिछुअरवा बेइलिया के गछिया ताही रे चढ़ी नऽ ।
कोइलर बोलले कुबोलिया ।
मारबो रे कोइलर काढ़ब दुनो अँखिया तोहरे बोलिया नऽ ।
पिया गेलन पर देसवा ।
काहे लागी साँवरो काढ़बो दुनो अँखिया बोलाई रे देबो नऽ ।
परदेसिया बलमुआ ।
जबरे बलमुआँ दरवाजा बीचे अयलन, बजावे लगलन नऽ ।
रने-बने के बसुरिया ।

अर्थ

संदर्भ–विरह विदग्धा का आक्रोश

नायिका कहती है कि मेरे घर के पीछे बेल का पेड़ है । उसी पेड़ ...

कोयल कुबोली (बिरह को बढ़ाने वाली) बोलती है । उस कोयल के बोलने के कारण ही उसका प्रिय परदेश चला गया था । अत: वह उसे मारेगी और दोनों आँखे कढ़ा लेगी । कोयल कहती है कि हे साँवली, मेरी दोनो आँखें क्यों कढ़ा लेगी ? तुम्हारे परदेशी प्रिय को मैं बुला दूँगी । और सचमुच उसका साजन बीच दरवाजे पर आकर बाँसुरी बजाने लगा ।

(३)

टीकवा मोरा छुटले पलंग पर से घुरी-घुरी खोजली अंगनवाँ ।
पिया तोरा कठिन हो करेजवा, उलटीयो न ताकले अंगनवाँ ।
धानी तोरा अजबी सुरतिया, सुरत देखी बिहरे करेजवा ।।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी नोंक-झोंक ।

पत्नी कहती है कि मेरा टीका भूल गया है–वस्तुत: वह पलंग पर ही छूट गया था । वह आंगन में घूम-घूम कर खोज रही है । पति का हृदय कठोर है, वह आंगन में उलटकर भी पत्नी की ओर नहीं देखता । पति कहता है कि हे प्रिया, तुम्हारी सूरत विचित्र है, उसे देखकर मेरा हृदय विदीर्ण हो जाता है ।

(४)

अगिया बहाने हम घर में समइली ,
निकली अयलन हो पिया खिड़की के रहिया ।

घर ही में हथी धानी माई रे बहिनियाँ ,
सरम लागे हो तोरा अजबी सुरतिया ।

एतना सरम तोरा लागे बलमुआँ ,
काहेला कयलऽ हो अगहन में गवनवाँ ।।

अर्थ

संदर्भ–नव विवाहिता की कर्म चातुरी ।

नव विवाहिता युवती आग लेने के बहाने घर में प्रवेश करती है तो शर्मिला पति खिड़की के मार्ग से बाहर निकल जाता है और कहता है कि घर में ही मां बहनें हैं जिससे शर्म लगती है लेकिन तुम्हारा सौन्दर्य विचित्र है । फिर पत्नी कहती है कि इतनी शर्म तुम्हें लगती है तो अग्रहन मास में गवना क्यों करा लाया था ।

(५)

टीकवा पहिरी हम सुतली अंगनवाँ, सारी राती नऽ ये ठुनके ननदोसिया ।
बरजहू अजी प्रभु अपन बहनोइया, सारी राती नऽ ये ठुनके ननदोसिया ।
कइसे में बरजू धानी अपने बहनोइया, काहे रे लागी धनियाँ बनलऽ सरहजिया ।
सिकरी पहिरी हम सुतली अंगनवाँ, सारी राती नऽ ये ठुनके ननदोसिया ।
कइसे में बरजूँ भाभी अपने बलमुआ काहे रे लागी तुहूँ बनलऽ सरहजिया ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी, ननद संवाद ।

पत्नी–टीका पहनकर आंगन में सो रही थी तो उसे देखकर उसका ननदोसी (ननद का पति) सम्पूर्ण रात्रि ठुनकते रहा, हठ करता रहा । वह अपने पति से कहती है कि आप अपने बहनोई को इस हठ से मना करें, वें रात्रि भर ठुनकते रहते हैं ।

पति कहता है कि हे प्रिये मैं अपने बहनोई को कैसे मना करूँ और तुम तो उसकी सरहज हो । फिर पत्नी अपनी ननद से कहती है मैं सिकड़ी पहन कर आंगन में सोयी तो ननदोसी सारी रात्रि ठुनकते रहे । इस पर ननद कहती है कि मैं अपने बलम को कैसे बरजूँ और तुम सरहज किस लिए बनी थी ।

(६)

साँझ के सुतल भइले बिहनवाँ, बहार धनियाँ झटकार के अंगनवाँ–बहार धनियाँ ।
अंगना बहारइत टीकवा भुललई, खोजहूँ पियवा हमारा मांग के टीकउवा ।
टीकवा खोजइते मुरूके दहिना बहियाँ, पीस ये धनियाँ चनाचूर के हरदिया ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी गृह-परिचर्या ।

शाम को सोये पति-पत्नी को सुबह हो गई । पति पत्नी को शीघ्र उठकर आंगन बुहारने के लिए कहता है । आंगन बुहारते पत्नी का टीका भूल जाता है । वह अपने पति को अपने मांग-टीका को खोजने कहती है । पति को मांग-टीका खोजते दाहिने बाँह में मोच आ जाता है । वह पत्नी को हल्दी और चूना पीस कर लगाने कहता है ।

(७)

टीकवा पहिरी हम उतरीला पार हे, कउन घाटे छूट गेले हरि के रूमाल हे ।
ओही रूमलिया में दू-दू अनार हे, बनारस में छूट गेले हरि के रूमाल हे ।
सासु के बेटवा ननदजी के भइया हे, सड़िया में डाल गेले घोरल अबीर हे ।

सिकरी पहिरी हम उतरीला पार ह, कउन घाटे छूट गेले हरि के रूमाल हे ।
ओही रूमलिया में दू-दू अनार हे, बनारस में छूट गेले हरि के रूमाल हे ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी का नदी पार होना ।

पत्नी कहती है कि हम टीका पहन कर नदी पार कर रही थी । पता नहीं प्रिय का रूमाल किस घाट पर गिर गया । उस रूमाल में दो-दो अनार ? लगता है बनारस में प्रिय का रूमाल छूट गया । सास के पुत्र और ननद के भाई (पति) ने मेरी सारी में घुला हुआ अबीर डाल दिया है । सिकड़ी पहन कर हम नदी पार कर रही थी, न जाने प्रिय का रूमाल किस घाट पर छूट गया ? उसी रूमाल में दो-दो अनार ? बनारस में हरि का रूमाल छूट गया ।

(८)

सोने के लोटवा में जलवा लगवलूँ, उसमें मिसरी डालो सखी,
पिया अभागा के पिअहूँ न आवे, मिसरी दे हई गिराई सखी,

सोने के प्रात में जेवना लगवलूँ, उसमें चटनी लगायो सखी,
पिया अभागा के जेवे न आवे, चटनी दे हई गिराई सखी,

काँच-पकल पनवा के बिरवा लगवलूँ, उसमें जर्दा डालो सखी,
पिया अभागा के चाभहूँ न आवे, जर्दा दे हई गिराई सखी,

फूल हजारन के सेजिया लगवलूँ, उस पर तकेया लगायो सखी,
पिया अभागा के सोवहूँ न आवे, तकेया दे हई गिराई सखी ।।

अर्थ

संदर्भ–अनुभव हीन या बालक पति की नादानी ।

पत्नी ने सोने के पात्र में जल लगाया और सखियों ने मिश्री डाल दी लेकिन अभागे पति को पीने नहीं आया, उसने मिश्री को गिरा दिया । सोने के पात्र में भोजन लगाया, लेकिन अभागे पति ने खाते समय चटनी गिरा दी । अंत में पान का बीड़ा लगाया, सखी ने जर्दा डाल दिया तो पति ने जर्दा गिरा दी । फिर हजार प्रकार के फूलों की शय्या लगाई तो सोते समय पति ने तकेया को गिरा दिया । इस प्रकार चतुर पत्नी नादान पति से परेशान है ।

(९)

पुरुववा में मोर पिया चमकत आवे, बगलवा में मोर पिया जलवा लगावे।
सोहाग जल पीना राजा बूँद न गिराना, बूँद गिरइया राजा लगतई जुर्माना।

उलट के मत तकिहँ राजा बिगड़ल जमाना।
बगलवा तऽ मोर पिया जेवना लगावे, सोहाग जेवना जेवीहँ राजा जूठा न गिराना।

जूठवा गिरइया राजा लगतई जुर्माना।
उलट के मत तकिहँ राजा बिगड़ल जमाना।

बगलवा में मोर पिया बिरवा लगावे, बगलवा में मोर पिया सेजिया लगावे।
सोहाग-सेजिया सोइहँऽ राजा तकिया मत गिराना।

उलट के मत तकिहँऽ राजा बिगड़ल जमाना।

अर्थ

संदर्भ–सुहाग रात की बातचीत।

पूर्व से मेरे पति चमकते आते हैं और मेरे बगल में ही जलपात्र लगा देते हैं। इस पर भी पत्नी कहती है कि सुहाग रात का जल पीना और एक बूँद भी गिरने नहीं देना। गिर जाने पर जुर्माना लगेगा। साथ ही वह चेतावनी भी देती है कि उलटकर किसी को मत देखना क्योंकि जमाना बिगड़ गया है। पति ने बगल में ही भोजन लगाया और पत्नी कहती है कि सुहाग रात का भोजन करना परंतु जूठा मत गिराना अन्यथा जुर्माना देना पड़ेगा। इसी प्रकार प्रिय बगल में ही शय्या लगाता है, पान का बीड़ा लगाता है और पत्नी उसे हिदायत करती जाती है कि सुहाग की शय्या पर सोना लेकिन तकिया को गिरा मत देना। पत्नी बार-बार पति को बिगड़े जमाना की याद दिलाते जाती है।

(१०)

हमारे जलवा बागों में मंगवा दो, पियाने वाली स्वामी को बुलवा दो।
चुनरिया नीलों से रंगवा दो, अचरवा मोती से भरवा दो।

हमारे जेवना बागों में लगवा दो, जेवने वाले स्वामी को बुलवा दो।
हमारे सेजिया बागों में लगवा [illegible] सोने वाले स्वामी को बुलवा दो।

अर्थ

संदर्भ–रूप गर्भिता नायिका की गर्वोक्ति ।

नायिका कहती है कि मैं बाग में निवास करूँगी, वहीं पानी मंगा दो और पिलाने वाले स्वामी को भी बुलवा दो । नीले रंग में चुनरी रंगा दो और आंचल को भी मोती से भर दो । हमारा भोजन बाग में ही लगा दो और खाने वाले स्वामी को भी बुला दो । साथ ही हमारी शय्या भी बाग में लगा दो और सोने वाले स्वामी को भी बुला दो ।

(११)

लाली पलंग जमींदानी तकेया, करवा फेरऽ न बलमुआ हमारी ओरिया ।
कइसे में फेरूँ धानी तोरी ओरिया तोर हँसुली के गुंजन्रा गड़ेला छतिया ।
गड़े देहूँ–गड़े देहूँ आजु के रतिया, तू तो जइबऽ परदेश, जोहम बटिया ।

अर्थ

संदर्भ–परदेश जाने की पूर्व रात्रि में पति के प्रति प्रेम ।

पत्नी कहती है कि पलंग लाल है, सब्ज रंग का तकेया है, हमारी ओर मुँहकर सोवें । इस पर पति कहता है तुम्हारी ओर मैं मुँहकर कैसे सोऊँ ? तुम्हारी हँसुली की नक्काशी मेरी छाती में गड़ती है । पुनः पत्नी कहती है कि आज की रात्रि में गड़ने दीजिए । आप परदेश चले जायेंगे तो मुझे बाट जोहते (रास्ता देखते) समय बीतेगा ।

(१२)

पिया हो सिकरी गढ़ा दऽ कलकतिया, उसमें हरियर पतिया ना ,
पिया हो तीन दिन से जोहत हली बटिया, कहाँ गँवलऽ रतिया ना ,
धनियाँ तोहरोला सुन्नर मालिन बिटिया, उहई गँवली रतिया ना ,
पिया हो टिकवा गढ़ा दऽ कलकतिया, उसमें लाल बचवा ना । आदि–आदि ।

अर्थ

संदर्भ–खंडिता के अरमान ।

खण्डिता नायिका अपने प्रिय से कहती है कि मुझे कलकतिया सिकरी बना दें । जिसमें हरी–हरी पतियाँ लगी हों । मैं आज तीन दिनों से आपकी राह देख रही

थी । आपने कहाँ रात्रि व्यतीत की । निर्लज्ज पति कहता है कि हे धानी, तुम से सुन्दर मालिन बेटी है, वही रात्रि बिताई है । फिर भी पत्नी कहती है कि प्रिय कलकतिया टीका गढ़ा दें, उसमें लाल-लाल घुँघरू लगा दें ।

(१३)

पहिल-पहिल हम गवना में गेलू, से पिया देलन रेडियो हो लगाय।
रेडियो के गनवाँ हम सुनहूँ न पवलूँ, से पिया मारलन चम्पवा के हो मार।

आधी राती अगली, पहर राती पिछली, से भर देली बजर हो केवार।
खोलऽ-खोलऽ धनियाँ हो बजर केवड़िया, से खोना भर मिठइया लेले खाड़।

आग लगई-प्रभु खोना भर मिठइया में, बजर परई तोर सुरतिया ;
से न बिसरई चम्पवा के हो मार।

अर्थ

संदर्भ–गवना में आई नव दुल्हन का पति से नोक-झोक ।

नायिका द्विरागमन में श्वसुराल आई, उसके पति ने मनोरंजनार्थ रेडियो लगा दिया । पत्नी रेडियो के गाना भी नहीं सुन पाई थी कि उसके पति ने चम्पे पुष्प से प्रहार कर दिया । पत्नी बिगड़ गई और बज्र कीवाड़ लगाकर घर में सो गई । रात्रि के प्रथम प्रहर से सुबह के पिछले पहर तक कीवाड़ बंद रही । पति दोने में मिठाइयाँ भरे दरवाजे पर पत्नी से बज्र कीवाड़ खोलने का अनुरोध करता रहा । लेकिन पत्नी कड़ा उत्तर देती रही–आप के दोने भर मिठाई में आग लगे, सूरत पर बज्र पड़े, मुझे तो चम्पे की मार विस्मृत नहीं हो रही है ।

(१४)

सोने के लोटवा में जलवा लगवलूँ, पिये के बेरिया पिया गेले इसकुलिया ,
हम तो जनइती पिया जयतन इसकुलिया, चोराई रखती उनकर कलम रे दोवतिया।

हम चोरवती ननदी के लगैती, पियाजी के हम घर ही में पढ़वती, पियाजी के ,
सोने के प्रात में जेवना लगवलूँ जेवे के बेरिया पिया गेले इसकुलिया।
हम तो जनइती पिया जयतन इसकुलिया, चोराई रखती उनकर कलम रे दोवतिया ,
हम चोरवती गोतनी के लगवती, पियाजी के हम घर ही में पढ़वती पियाजी के।

इस गीत में पान खिलाना, सेज लगाना आदि में प्रिय को रोकने के प्रयास वर्णित है ।

अर्थ

संदर्भ–किशोरी पत्नी का चांचल्य ।

किशोरी का पति स्कूल में पढ़ता है जिससे पत्नी का पति के साथ साहचर्य भंग हो जाता है । वह कहती है कि सोने के लोटा में पानी लगाया और पति पीने के समय स्कूल चला गया । मैं जानती कि जल पीने के समय वह स्कूल चले जायेंगे तो उनकी कलम और दावात चुराकर रख देती और इसका दोष ननद पर मढ़ देती । इस प्रकार प्रिय घर पर रह जाते जिन्हें हम यहीं पढ़ाती रहती । सोने के पात्र में भोजन लगाया परंतु खाने के समय प्रिय स्कूल चला गया । मैं जानती कि प्रिय स्कूल चले जायेंगे तो उनकी कलम-दावात चुराकर रख देती और गोतनी को दोष लगा देती । प्रिय को घर पर पढ़ाने से तात्पर्य है काम कीड़ा में संलग्न होना ।

(१५)

हाली हाली जलवा लगइहँऽ हो ननदिया, इसकुलिया से पिअवा पिआसल आवेला ।
मुँह पर डाल के रूमलिया हँसत आवेला, हाथ गमके कितबिया बजते आवेला ।

हाली हाली जेवना लगइहँऽ हो ननदिया, इसकुलिया से पिअवा भुखायल आवेला ।
हाली हाली सेजिया लगइहँऽ हो ननदिया, इसकुलिया से पिअवा नीनासल आवेला ।

अर्थ

संदर्भ–स्कूल गए पति के लिए पत्नी की चिन्ता ।

नायक की पत्नी ननद से कहती है जल्द-जल्द पानी लगाओ, पति स्कूल से प्यासे आ रहे होंगे । मुँह पर रूमाल डालकर हँसते और किताब बजते आ रहे होंगे । हे ननद जल्द-जल्द भोजन लगाओ, प्रिय स्कूल से भूखे आ रहे होंगे । वह ननद से जल्द शय्या बिछाने कह रही है, उसका पति स्कूल से तंद्रिल आ रहा होगा । थका मॉदा होगा ।

(१६)

हमर पियाजी के कुर्ता कसाना, कुर्ता के कालर उलटाना, सच्ची बोली बोलो जी ।
कहवा गवलऽ सारी राती, सच्ची बोली बोलो जी ।

तोरो ला सुन्दर मालिन बेटिया उहई गववली सारी राती, सच्ची बोलो जी ।
तोहरे अंगनवाँ में तुलसी के गछिया, तुलसी के किरिया भी खाना, सच्ची बोली ।

अर्थ

संदर्भ–प्रिय के उलटे वस्त्र को देखकर खंडिता की उक्ति ।

हमारे पति का कुर्ता कसा हुआ है, उसका कालर भी उलटा दीख रहा है । वस्त्र को उल्टे-पुल्टे देखकर पत्नी सच्ची बात पूछती है कि आपने रात्रि कहाँ बिताई ? इस पर पति कहता है कि तुमसे अधिक सुन्दर मालिन की बेटी है, उसी के साथ रात्रि बिताई है । पुन: पत्नी कहती है कि आपके आंगन में तुलसी को गाछ है, तुलसीदल लेकर कसम खाना पड़ेगा ।

(१७)

सोने के झारी गंगाजल पानी कर दो पिअन की तैयारी देवर से ,
ना छूटे हे यारी, कर दो मोकदमा जारी देवर से ।
आधी रात जब चंदा छिपतु हैं, कर दो मिलन की तैयारी देवर से ,
हीरा के लाल जड़ी डोलिया फंदा दो, कर दो चलन की तैयारी देवर से ।
ना छूटे हे यारी करदो मोकदमा जारी देवर से ।

अर्थ

संदर्भ–भाभी का देवर से संबंध ।

सोने की सुराही में गंगाजल लगाया और देवर के साथ पीने के लिए तैयार होने लगी । देवर के साथ भाभी का संबंध (यारी) नहीं छूट रहा है । देवर के साथ स्थायी संबंधी के लिए वह मुकदमा करने तक के लिए प्रस्तुत है । पुन: वह आधी रात में चंदा के छिप जाने पर देवर से अभिसार के लिए प्रस्तुत है । उसके लिए वह हीरा और लाल जड़ी डोली पर चढ़कर देवर से मिलने की तैयारी कर रही है । उसका प्रगाढ़ प्रेम छूट नहीं सकता ।

(१८)

कोठवा ऊपर पिया टीका देखावे, चली आवऽ सोरी जानकी दुलारी ,
कइसे में आऊँ पिया तोहर अँटारी, जगल हवे घरवा सासु बेचारी ।
सासु बेचारी से लाजो नहीं है, लगावऽ धनियाँ झटपट केवाड़ी ,
कोठवा ऊपर पिया सिकरी देखावे, चली आवऽ सोरी जनक दुलारी ।
कइसे में आऊँ पिया तोहर अँटारी, जगल हवे घरवा गोतनी बेचारी ,
गोतनी बेचारी से लाजो नहीं है, लगावऽ धनियाँ झटपट केवाड़ी ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी आकर्षण और विमर्श ।

कोठे के ऊपर प्रिय आभूषण (टीका) दिखा रहा है और श्री जानकी की तरह प्रिय पत्नी को आने का निमंत्रण दे रहा है । पत्नी उत्तर देती है कि अभी सास जगी हुई है अत: उनके सामने आपके कोठे पर कैसे आऊँ ? पति कहता है कि सास से लजाने की जरूरत नहीं, आकर घर का दरवाज़ा शीघ्र बंद कर लो । पुन: पति कोठे से सिकड़ी (आभूषण) दिखाता है और आने के लिए कहता है । इस पर पत्नी कहती है कि कोठे पर कैसे आऊँ, घर में गोतनी जाग रही है । पुन: पति कहता है, गोतनी से लज्जा क्या ? आकर शीघ्र दरवाजा बंद कर लो ।

(१९)

पटना सहरिया दुपट्टी बजरिया, केकर तिरिया तू लोभयलऽ हो बालम ।
तिरिया लोभयलऽ बड़ा वेस कयलऽ, जवानी जीयरा तरसवलऽ हो बालम ।
पटना सहरिया दुपट्टी बजरिया, केकरा तिरिया तू लोभयलऽ हो बालम ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का पति को उल्हाना एवं विवशता ।

पटना शहर में दोनो ओर बाजार है, नायिका का पति वहाँ जाकर किसी की स्त्री के साथ प्रेमासक्त हो गया । खण्डिता इस पर भी संतोष कर कहती है कि दूसरी स्त्री के साथ प्रेम कीड़ा किया तो अच्छा किया परंतु मेरी जवानी में मुझे ललचाकर छोड़ दिया ।

(२०)

सोने सुराही गंगाजल पानी, पानीयो न पीले बाबू अमीर हो ।
बेदामी रंग कपड़ा पर खेले अबीर हो ।
काली-काली जुलफी राजा तिरछी नजरिया मुहवाँ फेरी-फेरी डाले रूमाल हो ।
बेदामी रंग कपड़ा पर खेले अबीर हो ।

अर्थ

संदर्भ–होली में नायक की भंगिमा ।

सोने की सुराही में गंगाजल रखा है लेकिन अमीर बाबू पानी नहीं पीते । वे बादामी रंग के वस्त्र पहन कर होली अबीर खेल रहे हैं । उनकी केश राशि (जूल्फी) काली है, मुँह फेरकर रूमाल से ढँक रखा है और तिरछी नजर से देख रहे हैं ।

(२१)

फोरलन घइलवा कान्हा मोर, पानी भरे नाहीं जयबो,
मोहनी मूरतिया उनकर साँवरी सुरतिया, पानी भरे नाहीं जयबो।

फेंकतन गगरी हो हमार, पानी भरे नाहीं जयबो,
पातर कुइयाँ पतालब से पनियाँ डूबत नाहीं बसरी हो हमार, पानी...

बहियाँ हम्मर ममोरी दिहलन, देहिया झकझोरी देलन,
कान्हा मांगेला मोसो दान, पानी भरे नाहीं जयबो।

अर्थ

संदर्भ–कृष्ण की दान लीला।

गोपी कहती है कि कृष्ण ने मेरी गगरी फोड़ दी, मैं पानी भरने नहीं जाऊँगी। उनकी मूर्ति मोहक है और सूरत साँवली है। गोपी कहती है कि वह पानी भरने अब नहीं जायगी क्योंकि वे मेरी गगरी फेंक देंगे। साथ ही कुआँ संकीर्ण है, पानी काफी नीचे है। कुएँ में हमारा जलपात्र डूबता नहीं। इधर कृष्ण हमारी बाँह मरोड़ देते हैं और सारे बदन को झकझोर देते हैं। कृष्ण मुझसे दान (कर) मांगते हैं। अतः गोपी पानी भरने नहीं जाना चाहती।

(२२)

सोने के थाली में जेवना लगवलूँ, जेवना जेवे सजनवाँ मुँहवा फेरी ये राधे।
कवनी कसूरवा हम कइली सजनवाँ, काहे के जेवना जेवलऽ मुँहवा फेरी ये राधे।
बहुत कसूर तूहूँ कयल हे धानी, उमरी वितवलऽ नइहरवा, गवनवाँ नही अयलऽ ये राधे।
जूती रहीत जूती से मुँह पोछती बिना रे सुदिनवाँ गवनवाँ कइसे अइती ये राधे।
लवंग-इचाइची के बिरवा लगवलूँ, बिरवा चाभे सजनवाँ मुँहवा मोरी ये राधे।
कवनी कसूरवा हम कइली सजनवाँ, काहे बिरवा चभलऽ मुँहवा मोरी ये राधे।
बहुत कसूर तुहूँ कयलऽ हे धानी, उमरी बितौलऽ नइहरवा, गवनवाँ नहीं अयलऽ ये राधे।
जूती रहीत जूती से मुँह पोछती, बिना रे सुदिनवाँ गवनवाँ कइसे अइती ये राधे।

अर्थ

संदर्भ–धृष्ट पत्नी और उदंड पति का वार्तालाप।

पत्नी सोने की थाली में भोजन परोसा। पति मुँह फेर कर भोजन करने

लगा । पत्नी ने पूछा की मैंने कौन सी गलती की कि आपने मुँह फेर कर भोजन किया । पति ने कहा कि तुमने भारी गलती की । सारी उम्र नैहर में बिता दी द्विरागमन में भी नहीं आई । इस पर पत्नी बिगड़ कर कहती है कि जूती रहती तो उससे तुम्हारा मुँह पोछ देती । बिना सुदिन बने कैसे गवने में आती । पुनः पत्नी ने लवंग इलाइची के साथ पान का बीड़ा लगाया । बीड़े को भी पति ने मुँह फेर कर चाभा । पत्नी पूछती है कि किस गलती के कारण आपने मुँह फेर कर पान का बीड़ा चाभा। पति ने पुनः वही उत्तर दिया और पत्नी ने भी वही बेरूखी प्रत्युत्तर देकर मुँह बंद कर दिया ।

(२३)

टिकवा भेले अपना से बचवा भेले सपना, से पिअवा भेले डूमरी के हो फूल ,
जब तुहूँ पिअवा डूमरी के फूलवा, तलबिया तुहूँ भेजीहँऽ हो नइहरवा ।
जब तुहूँ पिअवा तलबिया नहीं भेजबऽ जहरवा खाई मरबो नइहरवा ,
सिकड़ी भेले अपना बलवा भेले सपना से पिअवा भेले डूमरी के हो फूल ।

अर्थ

संदर्भ–प्रोषित पतिका की विशेषता ।

पत्नी कहती है कि आभूषण स्वप्नवत् हो गए हैं क्योंकि प्रिय गूलर के फूल की तरह अदृश्य है । हे प्रिय, जब तुम गुलर फूल की तरह हो तो नैहर में ही वेतन भेजते रहना । यदि वेतन नहीं भेजोगे तो मैं नैहर में जहर (विष) खाकर प्राण दे दूँगी । सिकरी, बाला सारे आभूषण सपना हो गए और प्रिय गूलर का फूल हो गया ।

(२४)

सब रंग टिकवा बिकाहई हे ननदो, से पिया बिनु एको न सोहाहई हे ननदो ।
सबके बलमुआ घरवा आवऽ हई हे ननदो, से हमरो बलमुआ कहाँ विलमल हे ननदो ।
पटना सहरिया साकर गलिया हई हे ननदो, से उहईं में सुन्नर एक बंगालिन हई हे ननदो ।
से उहईं में बलमुआ विलमलई हे ननदो । से सब रंग सिकरी बिका हई हे ननदो ।

अर्थ

संदर्भ–खण्डिता नायिका की उक्ति ।

नायिका कहती है कि सभी तरह के मांग टीका बिकने आया है । हे ननद, प्रिय के बिना एक भी अच्छा नहीं लगता । सभी के पति घर आते हैं लेकिन हमारे पति

कहाँ ठहर गए हैं ? फिर वह कहती है कि पटना में एक संकीर्ण गली है, उसी में एक सुन्दर बंगालिन रहती है । लगता है वहीं मेरे पति ठहर गए हैं । यहाँ सभी तरह के आभूषण बिकने आया है ।

(२५)

टिकवा टूट के गिरे बचवा झर के गिरे ,
खोजऽ खोजऽ हे ननद के भइया कहाँ गिरे ?
नदी-नाला में गिरे, कुआँ खाद में गिरे ,
डांलिया डालऽ हो ननद के भइया, इन्द्रा में गिरे ।
सिकरी टूट के गिरे बलवा झर के गिरे ,
खोजऽ-खोजऽ हो ननद के भइया, कहाँ गिरे ?
नदी-नाला में गिरे, कुआँ-खाद में गिरे ,
डांलिया डालऽ हे ननद के भइया, कहाँ पर गिरे ?

अर्थ

संदर्भ–नायिका का आभूषण प्रेम ।

नायिका का टीका टूट कर गिर गया उसका घुँघरु झर गया । वह ननद के भाई अर्थात् अपने पति को खोजने कहती है कि उसका आभूषण कहाँ गिर गया ? नदी-नाला में गिर गया या कुआँ-खाद में गिरा ? हे ननद के भाई, बालटी डाल कर कुएँ में खोज करें । सिकड़ी भी टूट कर गिर गई, बलवा भी झर गया । अतः वह अपने पति को बालटी डाल कर खोजने का अनुरोध कर रही है ।

(२६)

हमरा बलमुजी के सिर सोभे टोपिया, देखत मन लागे रे साँवलिया ।
हमरा बलमुजी के काली रे नगिनियाँ, से हो रे दिल मोहे रे साँवलिया ।
हमरा बलमुजी के हाथे सोभे घड़िया, देखत मन लागे रे साँवलिया ।
हमरा बलमुजी के काली रे नगिनियाँ, से हो रे दिल मोहे रे साँवलिया ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का पति-रूप के प्रति आकर्षण

पत्नी कहती है कि हमारे प्रिय के सिर पर टोपी सुशोभित है जिसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है । हमारे प्रिय के केश काली नागिन की तरह है । वह भी मुझ

लगा । पत्नी ने पूछा की मैंने कौन सी गलती की कि आपने मुँह फेर कर भोजन किया । पति ने कहा कि तुमने भारी गलती की । सारी उम्र नैहर में बिता दी द्विरागमन में भी नहीं आई । इस पर पत्नी बिगड़ कर कहती है कि जुती रहती तो उससे तुम्हारा मुँह पोंछ देती । बिना सुदिन बने कैसे गवने में आती । पुन: पत्नी ने लवंग इलाइची के साथ पान का बीड़ा लगाया । बीड़े को भी पति ने मुँह फेर कर चाभा । पत्नी पूछती है कि किस गलती के कारण आपने मुँह फेर कर पान का बीड़ा चाभा। पति ने पुन: वही उत्तर दिया और पत्नी ने भी वही बेरूखी प्रत्युत्तर देकर मुँह बंद कर दिया ।

(२३)

टिकवा भेले अपना से बचवा भेले सपना, से पिअवा भेले डूमरी के हो फूल ,
जब तुहूँ पिअवा डूमरी के फूलवा, तलबिया तुहूँ भेजीहँऽ हो नइहरवा ।
जब तुहूँ पिअवा तलबिया नहीं भेजबऽ जहरवा खाई मरबो नइहरवा ,
सिकड़ी भेले अपना बलवा भेले सपना से पिअवा भेले डूमरी के हो फूल ।

अर्थ

संदर्भ–प्रोषित पतिका की विशेषता ।

पत्नी कहती है कि आभूषण स्वप्नवत् हो गए हैं क्योंकि प्रिय गूलर के फूल की तरह अदृश्य है । हे प्रिय, जब तुम गुलर फूल की तरह हो तो नैहर में ही वेतन भेजते रहना । यदि वेतन नहीं भेजोगे तो मैं नैहर में जहर (विष) खाकर प्राण दे दूँगी । सिकरी, बाला सारे आभूषण सपना हो गए और प्रिय गूलर का फूल हो गया ।

(२४)

सब रंग टिकवा बिकाहई हे ननदो, से पिया बिनु एको न सोहाहई हे ननदो ।
सबके बलमुआ घरवा आवऽ हई हे ननदो, से हमरो बलमुआ कहाँ बिलमल हे ननदो ।
पटना सहरिया साकर गलिया हई हे ननदो, से उहईं में सुन्नर एक बंगालिन हई हे ननदो ।
से उहईं में बलमुआ बिलमलई हे ननदो । से सब रंग सिकरी बिका हई हे ननदो ।

अर्थ

संदर्भ–खण्डिता नायिका की उक्ति ।

नायिका कहती है कि सभी तरह के मांग टीका बिकने आया है । हे ननद, प्रिय के बिना एक भी अच्छा नही लगता । सभी के पति घर आते हैं लेकिन हमारे पति

कहाँ ठहर गए हैं ? फिर वह कहती है कि पटना में एक संकीर्ण गली है, उसी में एक सुन्दर बंगालिन रहती है । लगता है वहीं मेरे पति ठहर गए हैं । यहाँ सभी तरह के आभूषण बिकने आया है ।

(२५)

टिकवा टूट के गिरे बचवा झर के गिरे ,
खोजऽ खोजऽ हे ननद के भइया कहाँ गिरे ?

नदी-नाला में गिरे, कुआँ-खाद में गिरे ,
डोलिया डालऽ हो ननद के भइया, इन्द्रा में गिरे ।

सिकरी टूट के गिरे बलवा झर के गिरे ,
खोजऽ-खोजऽ हो ननद के भइया, कहाँ गिरे ?

नदी-नाला में गिरे, कुआँ-खाद में गिरे ,
डोलिया डालऽ हे ननद के भइया, कहाँ पर गिरे ?

अर्थ

संदर्भ–नायिका का आभूषण प्रेम ।

नायिका का टीका टूट कर गिर गया उसका घुँघरु झर गया । वह ननद के भाई अर्थात् अपने पति को खोजने कहती है कि उसका आभूषण कहाँ गिर गया ? नदी-नाला में गिर गया या कुआँ-खाद में गिरा ? हे ननद के भाई, बालटी डाल कर कुएँ में खोज करें । सिकड़ी भी टूट कर गिर गई, बलवा भी झर गया । अतः वह अपने पति को बालटी डाल कर खोजने का अनुरोध कर रही है ।

(२६)

हमरा बलमुजी के सिर सोभे टोपिया, देखत मन लागे रे साँवलिया ।
हमरा बलमुजी के काली रे नगिनियाँ, से हो रे दिल मोहे रे साँवलिया ।

हमरा बलमुजी के हाथे सोभे घड़िया, देखत मन लागे रे साँवलिया ।
हमरा बलमुजी के काली रे नगिनियाँ, से हो रे दिल मोहे रे साँवलिया ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का पति-रूप के प्रति आकर्षण

पत्नी कहती है कि हमारे प्रिय के सिर पर टोपी सुशोभित है जिसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है । हमारे प्रिय के केश काली नागिन की तरह हैं । वह भी मुझे

मोहित होता है । हमारे प्रिय के केश काली नागिन की तरह हैं, वह भी मेरा मन मोहित करता है । हमारे प्रिय के हाथ में घड़ी सुशोभित है जिसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है । काली नागिन सरीखे केश तो मोहक है ही ।

(२७)

सुतल में रहली अँटारी, बेनिया गिरल गोड़थारी, ननद हे बेनिया देदऽ हमारी ।
जइसन आम के फरुआ, ओइसन पिया मोर दुलरूआ, ननद हे बेनिया देदऽ हमारी ।
जइसन पान के बीरा, ओइसन पिया मोर हीरा, ननद हे बेनिया देदऽ हमारी ।
जइसन लवंग के डारी ओइसन पिया मोर दुलारी, ननद हे बेनिया देदऽ हमारी ।

अर्थ

संदर्भ–पति प्रियतम रूप में मुग्धा नायिका की उक्ति ।

पत्नी पति के साथ अँटारी पर शयन कर रही है और पंखा झल रही है । पंखा पायदान की तरफ गिर गया तो वह ननद से कह रही है कि पंखा उठाकर मुझे दे दो (क्योंकि वह क्षणमात्र के लिए अलग होना नहीं चाहती) वह कहती है कि जैसा आम का फाँक होता है वैसा ही मेरा प्रिय दुलारा है । जैसा पान का बीड़ा होता है वैसा ही मेरा प्रिय हीरा है, हीरा । अतः हे ननद पंखा उठाकर मुझे हाथ में दे दो । वह आगे कहती है कि जैसी लवंग की डाली होती है वैसा ही मेरा प्रिय दुलारा है । यहाँ अनेक कोमल उपमानों से प्रिय को उपमित किया है ।

(२८)

हवा बहे टिकवा डोले, ये हो बलमु जरा फेरऽ करवटिया ।
अपन गरज पिया उठे आधी रतिया, हमरा गरज पिया सटी जाय पटिया ।
हवा बहे सिकड़ी डोले, ये हो बलमु जरा फेरऽ करवटियां ।
अपना गरज पिया उठे आधी रतिया, हमरा गरज पिया सटी जाय पटिया ।

अर्थ

संदर्भ–संवेदनहीन पति ।

हवा मंद-मंद बह रही है, पत्नी पति के साथ शयन कर रही है । वह पति को अपनी ओर घूमने कह रही है । प्रिय ऐसा नहीं करता । पत्नी कहती हे कि अपनी जरूरत पर प्रिय आधी रात में उठ जाते हैं और हमारी जरूरत पर खाट की पाटी में सटे जा रहे हैं । हवा चलने से पत्नी की सिकड़ी डोल रही है । वह अपने प्रिय को अपनी ओर घूमने कहती है और पुनः उल्हना देती है कि अपनी जरूरत पर वह आधी रात को उठाते हैं और हमारी बारी में पाटी में सट जाते हैं ।

(२९)

हजी काली कमलिया, सबुज तकिया ,
सोवो-सोवो बलमुआ हमार सेजिया ।
भोरे जयबऽ कलकतवा, जोहबऽ बटिया ,
हजी कइसे में सोबवऽ तोहार सेजिया ।
तोहर मांग के टिकवा गड़ले छतिया ,
हजी गड़ेदेहूँ-गड़े देहूँ आज रतिया ।
भोरे जयबऽ कलकतवा सून होत सेजिया ।।

अर्थ

संदर्भ–विदेश जाते पति से पत्नी की उक्ति ।

काली कम्बल है उस पर सब्ज रंग का तकिया है । पत्नी अपनी शय्या पर पति को शयन करने कहती है । वह सबेरे कलकत्ता जायगा तो उसे बाट जोहना पड़ेगा । पति कहता है कि तुम्हारी शय्या पर कैसे सोऊँ ? तुम्हारे मांग का टीका मेरी छाती में गड़ता है । पत्नी कहती है कि आज की रात्रि गड़ने दीजिए, सबेरे कलकता चले जाने पर शय्या शून्य हो जायगी ।

(३०)

लादऽ पिया काला कंगहिया, उल्टा केस झारेंगे ।
राम-सीता से भोजन लगादऽ, भोजन न जेबेंगे ।
ई भोजन में काला भवनवा काला हो जायेंगे ।

अर्थ

संदर्भ–उदण्ड पत्नी की पति के प्रति उक्ति ।

वह पति को काली कंघी लाने कहती है जिससे वह केश को उलट कर सम्हारेगी । वह राम-सीता की तरह भोजन लगाने कहती है परंतु खायेगी नहीं । उसे भोजन में खोट (काला) मालूम पड़ रहा है जिससे काला हो जाने की संभावना है ।

(३१)

हमरा बलामुजी के तीन किसीम के जलवा भावे ,
लोटा, गिलास, इनरवा जरा जादे भावे ।

हमरा बलामुजी के तीन किसीम के भोजन भावे ,
पुड़ी, कचौड़ी, जिलेबी जरा जादे भावे ।
हमरा बलामुजी के तीन किसीम के औरत भावे ,
गोरकी, परतकी, सबरकी जरा जादे भावे ।
हमरा बलामुजी के तीन किसीम के सजिया भावे ,
तोसक, तकेया, गलइचा जरा जादे भावे ।

अर्थ

संदर्भ–अपने पति की इच्छा का प्रकाशन ।

पत्नी कहती है कि हमारे पति को तीन तरह का जल अच्छा लगता है लोटा, ग्लास, और कूप जल थोड़ा ज्यादा ठीक लगता है । हमारे पति को तीन तरह का भोजन अच्छा लगता है-पुड़ी-कचौड़ी से ज्यादा अच्छा जलेबी लगती है । पुनः वह कहती है कि हमारे पति को औरत भी तीन ही तरह की अच्छी लगती है-गोरी, पतली और साँवली थोड़ा ज्यादा अच्छी लगती है । हमारे पति को तीन तरह की शय्या ठीक लगती है-तोसक, तकेया और गद्दा थोड़ा ज्यादा अच्छा लगता है ।

(३२)

प्रभु हमें जयबो अपनी नइहरवा, सीया के बिअहवा नऽ ,
जब धानी जयबऽ अपनी नइहरवा, सीया के बिअहवा नऽ ।
कहिया अयबऽ नइहरा से ससुररिया, कयले जा कररिया नऽ ,
पिया जहिया छोड़बऽ रेल के नोकरिया, तहिया अयबो नऽ ।

अर्थ

संदर्भ–बहन के विवाह में पत्नी का नैहर गमन ।

पत्नी पति से कहती है कि हे प्रभो, मैं अपनी मयके जाऊँगी क्योंकि सीता का (बहन का) विवाह है । पति कहता है कि हे प्रिय जब तुम अपनी नैहर जाओगी-बहन के विवाह में-तो नैहर से ससुरार कब आओगी ? इसका वादा करती जाओ । पत्नी कहती है कि जब आप रेल की नौकरी छोड़कर घर आ जायेंगे, तभी मैं आऊँगी ।

(३३)

राज महल में भोजन लगायो, चल के देखोगे ?
पिया राज महल में भोजन जरा जेव के द[illegible]गे ?

राज महल में जलवा लगायो, चल के देखोगे ?
राज महल में जलवा पिया पीकर देखोगे ?

राज महल में सेजिया लगाओ, चल के देखोगे ?
राज महल में सेजिया पिया सोकर देखोगे ?

अर्थ

संदर्भ–राजमहल में रहने की कल्पना।

पत्नी कहती है कि राजमहल में भोजन लगाया गया है, हे प्रिय जरा चलकर देखोगे ? खाकर देखोगे ? राज महल में जल लगाया गया है। चलकर और पीकर देखोगे ? राज महल में शय्या बिछाया गया है। अत: हे प्रिय जरा सोकर देखोगे ?

(३४)

हमे जे जयबो धानी कुंज के गलिया –
अनेसा मत करिहँऽ ये प्यारी धनियाँ।

सनेसा लेले अयबो हे प्यारी धनिया।
टीकवा लयबो, बचवा भी लयबो।

किलिया लेले अयबो, हे प्यारी धनिया।
अनेसा मत करिहँऽ हे प्यारी धनिया।

सनेसा लेले अयबो हे प्यारी धनिया।

अर्थ

संदर्भ–विदेश जाते पति का पत्नी को प्रबोध।

हे धानी, हम कुंज गली (विदेश) जायेंगे। तुम चिन्ता मत करना। हे प्यारी, तुम्हारे लिए मैं विभिन्न पदार्थ लाऊँगा। मांग टीका के साथ ही बचवा लेते आऊँगा। कर्णाभूषण के लिए कील भी लेता आऊँगा। अत: तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए मैं सब कुछ तुम्हारे लिए लेता आऊँगा।

(३५)

टीकवा गढ़ा के पिया पूछे दिल बतिया, ये प्यारी कै बजल रतिया !
एक बजल, दू बजल, तीन बजल रतिया, ये बंगीवाला मजा करो रतिया।

कंगना गढ़ा के पिया पूछे दिल बतिया, ये प्यारी कै बजल रतिया ?
एक बजल, दू बजल, तीन बजल रतिया, ये मुरलीवाला मजा करो रतिया ।

अर्थ

संदर्भ–रात्रि में पति-पत्नी परिहास ।

टीका गढ़ा कर प्रिय ने पूछा कि रात्रि के कितने बजे हैं । प्रिया कहती है कि एक-दो के बाद तीन बज गया, अब मजा करो । पुनरूक्तियाँ

(३६)

हँसुली गढ़ा के पिया घर ही रहना, पूरूब मत जाना ये मेरे राजा ।
पूरूब के रंडी असली बंगालिन, खराब कर देगी चढ़ती जवानी ।

टीकवा गढ़ा के पिया घर ही में रहना, पूरूब मत जाना ये मेरे राजा ।
पूरूब के रंडी असली बंगालिन, खराब कर देगी चढ़ती जवानी ।

अर्थ

संदर्भ–विदेश जाते पति को समझाना ।

हे प्रिय, हँसुली गढ़ा दो परंतु पूर्व देश मत जाना । पूर्व देश की बंगलिने रंडी होती है । वह चढ़ती जवानी को बर्बाद कर देगी । टीका गढ़ाकर घर पर ही रह जाना, पूर्व देश मत जाना । वहाँ की बंगालिने रंडी होती हैं, वह चढ़ती जवानी बर्बाद कर देगी ।

(३७)

इलायची-गुलायची के लम्बी-लम्बी पोर हे ,
ओइसही नेवयबो पिया तोहरो के–जरा होवेदऽ जवान पिया हमरो के ।।

जलवा में जब बलवा झलके, ओइसही झलकयबो पिया तोहरा के ।।
जरा होवे दऽ जवान पिया हमरो के ।

अर्थ

संदर्भ–किशोरी पत्नी की चुनौती ।

किशोरी पत्नी पति को कहती है कि इलायची और गुलाबचीन की डाली की लंबी-लंबी पोर होती है । (इलायची तो एक प्रकार का झाड़ीदार पौधा है परंतु गुलाबचीन को पेड़ साधारण कद का होता है जिसकी उपयोगिता केवल फूल के लिए

है । यह लचीला पौधा है (गुलाबचीन) नवा देने से झुक जाता है । पत्नी कहती है कि मुझे जवान होने दें, मैं वैसे ही तुम्हे भी नवा दूँगी । जिस प्रकार जल में बाला (हाथ का कंगन) झलकता है, उसी प्रकार वह अपने प्रिय को भी युवती होने पर झलकावेगी ।

(३८)

पटना सहरिया से अलई एक सेनुरिया,
टीकवा लेदऽ बलमुआ सवख लागेला।

टीकवा पहिरी हम सुतली मंदिलिया,
करवा फेरऽ न बलमुआ सवख लागेला।

लोटवा में पनिया कटोरवा चबेनिया,
चबेनिया फाँक नऽ बलमुआँ सवख लागेला।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की पति से कामना ।

पटना शहर से एक सिंदुर बिक्रेता आया तो पत्नी ने कहा कि हे प्रिय मुझे एक टीका खरीद दें, पहनने का सौख लगता है । वह टीका पहनकर अपने घर में सोयी और प्रिय को कहती है कि हमारी ओर मुँह करके सोवें, मुझे सौख है । पत्नी ने लोटे में पानी और कटोरे में भुंजा लेकर प्रस्तुत है और पति से कहती है कि प्रिय, चबेनी फाँके, मुझे सौख है । आप हमारे सम्मुख ही सब काम करें ।

(३९)

देवर आंगन लगा दऽ चनन ढिलुआ,
कथी के डोरी, कथी के पटरा।

देवर आंगन लगा दऽ चनन ढिलुआ,
सोने के डोरी, लोहे के पटरा।

देवर आंगन लगा दऽ चनन ढिलुआ,
केहूँ ढुले में केहूँ ढुलावे में।
भाभी ढुले में देवर ढुलावे में,
टूट गयो डोरी, पसर गयो पटरा।
तर भये भाभी ऊपर देवरा।

अर्थ

संदर्भ–देवर से भाभी की परिहास पूर्ण बातचीत ।

भाभी देवर से कहती है कि आंगन के चंदन गाछ में झूला लगा दें । किस चीज की डोरी और किस चीज की तख्थी होगी । हे देवर, आंगन के चंदन वृक्ष में झूला लगा दें । सोने की डोरी और लोहे की तख्थी होगी । कौन दूलेगा और कौन दूलावेगा । भाभी दूलेगी और देवर दुलावेगा । इसी क्रम में झूला की डोरी टूट गई, पटरा (तख्थी) गिर गया । भाभी नीचे हो गई और देवर ऊपर हो गया ।

(४०)

खिलैबो में मेवा, करवो में सेवा, सोलैबो सारी रात ।
ये मेरो पिया अन्हेरी है रात, सोलैवो सारी रात ।।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का पति के प्रति ।

पत्नी कहती है कि मैं मेवा खिलाऊँगी, सेवा करूँगी परंतु सारी रात अपने साथ सुलाऊँगी । हे प्रिय, रात अंधेरी है, रात्रि भर सुलाऊँगी ।

(४१)

चोलिया के कसमम, वचवा के गरमी ,
से खोल दऽ राजा जोड़ पंखा, वहुत लागे गरमी ।
बहुत लागे गरमी, से पिया हे बेसरमी ,
से खोल दऽ राजा जोड़ पंखा, वहुत लागे गरमी ।

अर्थ

संदर्भ--संकीर्ण वस्त्राभूषणधारिणी पत्नी ।

नायिका ने संकीर्ण चोली पहन रखी है । ऊपर से आभूषण पहने है । वह गर्मी से बहुत परेशान है । अतः अपने पति से कहती है कि एक ही साथ जोड़ा पंखा लगा दें-बहुत गर्मी लग रही है । लेकिन पति बेशर्म है । पत्नी एक नहीं दो-दो पंखा लगाने के लिए कहती है ।

(४२)

हमरो बलमुजी वड़ मछरमरवाः से मार लेलन हे उजे झींगा मछरिया ,
[illegible] आगे [illegible] अंगना उझलेलन से भूँज लेहूँ हे धानी झींगा मछरिया ।

भुंजियं-उंजिये जब सिखर चढ़वली, से खा गइले हं उजे काली विलइया ,
हर जोंती अयलन, कुदारी फारी अयलन, से मांगे लगलन हे उजे झींगा मछरिया ।

भुंजियं-उंजिये जब सिखर चढ़ौली, से खा गेलई हे उजे काली विलइया ,
एक हाथ झोंटा, दूसर हाथे सोंटा, चलावे लगलन हे हनहन केरा सोंटा ।

आधी राती अगली, पहर राती पिछली, से सारी राती हे पिया खोलवई कंवड़िया ,
एक हाथे बेनिया, दूसर हाथे झुलफी, चले रे लगल नऽ हनाहन केरा बेनिया ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी का नोंक-झोक ।

हमारे पति बहुत मछली मारते हैं । एक दिन उन्होंने झींगा मछली मार लाई । मारकर आंगन में रख दिया और कहा कि झींगा मछली को भूनकर तैयार कर लो । मछली भूनकर छींका पर रख दी तो उस छींके से काली बिल्ली खा गयी । पति हल जोतकर और कुदाल चलाकर आये तो झींगा मछली माँगने लगे । पत्नी ने कहा कि भूनकर मछली छींके पर रख दी थी लेकिन उसे काली बिल्ली ने खा गयी । अतः उन्होंने एक हाथ से झोंटा पकड़कर दूसरे हाथ से दनादन सोंटा से पीटना शुरू किया ।

पुनः मेरी बारी आयी । आधी रात के पूर्व और पहर भर के बाद सारी रात्रि वे कोंवाड़ खोलवाते रहे मैंने भी एक हाथ से झुलफी पकड़कर दूसरे हाथ के पंखा से दनादन पीटना प्रारंभ किया ।

(४३)

जब हम भंसा गेली, पिया साथे गेले ,
मारली में छोलनी घुमाय पिया रोवे लागे ।

जब पिया रोवे लागे, तब हमरा माया लागे ,
लेली में गोदिया उठाय पिया हँसे लागे ।

जब पिया हँसे लागे, तब हमरा गोसा लागे ,
देली अंगना पटक पिया रोवे लागे ।

अर्थ

संदर्भ–बालक पति और युवती पत्नी का संबंध व्यवहार ।

एक पत्नी को बालक पति मिल गया । जब वह रसोई घर में जाती है तो पति

भी साथ लग जाता है । इस पर वह क्रोधित होकर छोलनी घुमाकर मार देती है । प्रिय रोने लगता है । उसकी रूलाई सुनकर पत्नी को दया आ जाती है । तब वह पति को गोदी में उठा लेती है । इसपर वह हँसने लगता है । प्रिय को हँसते देखकर पत्नी को क्रोध आ जाता है और वह आंगन में पटक देती है तव पति पुनः रोने लगता है ।

(४४)

अन्दर अन्दर बालम जाने न देंगे, जाने न देंगे जनावे न देंगे ।
लहंगवा में दाग लगे न देंगे, लगे न देंगे लगावे न देंगे ।
सेजरिया ऊपर राजा चढ़ने न देंगे, चढ़ने न देंगे चढ़ावे न देंगे ।
सेजरिया पर राजा चढ़ने नऽ देंगे ।

अर्थ

संदर्भ—पत्नी का पति के प्रति आक्रोश ।

पत्नी कहती है कि भीतर के घर में प्रवेश नहीं करने दूँगी । साथ ही इसकी खबर भी नहीं करने दूँगी । अपने लहँगा में दाग नहीं लगाने दूँगी । अपनी शय्या पर, हे राजा, चढ़ने नहीं दूँगी ।

(४५)

गुलेजार जार बगिया में सैर करूँगी ,
पिया गेलन इस्कुलिया मैं साथ चलूँगी ।
तू तो लड़कन पढ़ाबऽ मैं हिसाब करूँगी ,
पिया गेलन कचहरिया मैं साथ चलूँगी ।
तू तो पढ़िहऽ आउ लिखिहऽ मैं हिसाब करूँगी ,
तूँ तो चलिहऽ स्टेशन मैं साथ चलूँगी ।
तू तो टिकट कटइहँऽ मैं तो रेल चढूँगी ,
गुले जार जार बगिया में सैर करूँगी ।

अर्थ

संदर्भ—एक चतुर पत्नी की पति के प्रति उक्ति ।

प्रिय स्कूल जाने को प्रस्तुत हैं, पत्नी कहती है कि मैं भी साथ चलूँगी तुम

लड़को को पढ़ाना मैं हिसाब करूँगी । पुनः पति को कचहरी जाते समय कहती है कि मैं भी साथ चलूँगी । तुम पढ़ने लिखने का काम करना और मैं हिसाब करूँगी । वह कहती है कि तूँ स्टेशन चलोगो तो मैं भी साथ चलूँगी । तू टिकट कटवाना और मैं गाड़ी पर चढ़ूँगी और फूल भरे बगीचे में सैर करूगी । पत्नी पति को क्षण भर के लिए भी नहीं छोड़ना चाहती है ।

(४६)

रेल पर बिकाहई पिया हरे किसीम के चीज जी ,
हरे किसीम के पाउडर पिया खरीदियों के लादऽ जी ,

हरे किसीम के पाउडर धानी रंडी के सिंगरवा जी ,
माता पिता नगर फिरिहें हँसे सब लोगवा जी ,

हँसे देहूँ हँसे देहूँ हँसे सारे लोगवा जी ,
दुनिया सहचरवा भेलइ रंडी के सिंगरवा जी ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की फैशन प्रियता ।

पत्नी पति से कहती है कि रेलगाड़ी पर प्रत्येक तरह की चीज बिकती है । हरेक तरह के पाउडर हैं, हे प्रिय, उसे खरीद कर ला दो । पति कहता है कि प्रत्येक तरह के पाउडर वेश्या का श्रृंगार है । हमारे माता-पिता नगर में घूमते हैं, लोग देखकर हँसेगे । इस पर पत्नी कहती है कि हँसने दीजिए । सारे लोग हँसेगे । दुनियाँ में वेश्याओं का श्रृंगार ही प्रचलन में आ गया है ।

(४७)

हाथ में देखा पिया लड्डू आउ पेड़ा, रडिया के साथ पिया जा रहे हैं ।
जाते भी देखा जनाते भी देखा, रंडिया के साथ पिया जा रहे हैं ।

हाथ में देखा पिया तोसक आउ तकेया, रडिया के साथ पिया जा रहे हैं ।
सोते भी देखा सोलाते भी देखा, झूठा कसम पिया खा रहे हैं ।

अर्थ

संदर्भ–खंडिता नायिका की उक्ति ।

नायिका ने अपने प्रिय को हाथ में लड्डू और पेड़ा लेकर दूसरी स्त्री के साथ

जाते देखा । जाते हुए भी देखा और दूसरे लोगों ने जाना भी । वे हाथ में तोसक और तकेया लिए उसके साथ जा रहे थे । इतना ही नहीं बल्कि उनको उसके साथ सोते और सुलाते भी देखा । इस पर भी वे झूठी कसमें खा रहे हैं ।

(४८)

सबके पिया पैदल जा हइ रे गोरियो, पिया घोड़वा दउड़ावऽ हई रे गोरियो ,
पिया के गेला भेलइ बरसवा रे गोरियो, पिया चिट्ठियों नऽ भेजई रे गोरियो ।

टोला परोसिन भइया बहिनियाँ, तनी देह सीख बुद्धिया रे गोरियो ,
घर में ही हथुन छोटका देवरा रे गोरियो, चिट्ठिया लिख के पेठावऽ रे गोरियो ।

चिट्ठिया के गेला भेलइ हई चार महिनवाँ रे गोरियो, पिया तइयो न भेजई रे गोरियो ,
करियो में लेहूँ बहिनी सोरह सिंगरवा रे गोरियो, कसबिनिया बनी जाहूँ रे गोरियो ।

सब कोई देखई रंडी के नचवा रे गोरियो, पिया मुड़िया गड़ावई रे गोरियो ,
सब कोई देवे अन्नी दुअन्नी रे गोरियो, पिया नम्बरी लूटावई रे गोरियो ।

तुहूँ जे हलऽ पिया राजा के बेटवा रे गोरियो, गुड़ावाज काहे होयलऽ रे गोरियो ,
तुहूँ जे हलऽ धानी राजा के बेटिया, कसबिनियाँ काहे भेलऽ रे गोरियो ।

अर्थ

संदर्भ–विदेशी पति की पत्नी का क्रिया-कलाप ।

प्रोषित पतिका कहती है कि सब के प्रिय पैदल गये लेकिन मेरे पति घोड़े पर बाहर गये । उनके बाहर गये बारह वर्ष हो गये लेकिन एक भी पत्र नहीं भेजा । वह टोला पड़ोसी के भाई बहनों से सीख देने के लिए कहती है । पड़ोस के लोग कहते हैं कि घर में छोटा देवर हैं, उससे चिट्ठी लिखाकर भेज दो । चिट्ठी भेजे हुए भी दो चार महीने हो गये तो भी उधर से कोई जवाब नहीं आया । पड़ोस की एक बहन उससे कहती है कि सोलह सिंगार कर कसबिन बन जाओ । वह कसबिन बनकर विदेश में नाच करने गयी । सारे लोग उसका नाच देखने लगे । उसके प्रिय ने भी देखा तो सर नवा लिया । सभी लोग उसके नाच देखकर दो चार आने देने लगे । उसके पति ने नम्बरी नोट दिया । यह देखकर उसकी पत्नी ने कहा, तू तो राजा के बेटा थे, रंडीबाज क्यों बन गये ? इस पर उसने जवाब दिया कि तुम तो राजा की बेटी थी, कसबीन क्यों बन गयी ?

(४९)

क्या मजा पेड़ा में, क्या है लड्डू, क्या मजा रसगुलवा में होवे राजा ,
कुछ मजा पेड़ा में, कुछ मजा लड्डू, सब मजा रसगुलवा में होवे राजा ।

क्या है बूढ़ी में, क्या मजा जवनकी में, क्या मजा छोकड़िअन में होवे राजा ,
कुछ मजा बुढ़िया में, कुछ मजा जवनकी में, सब मजा छोकड़िअन में होवे राजा ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी-पति का संलाप ।

हे राजा, पेड़ा लड्डू, रसगुल्ला में क्या स्वाद मिलता है । पेड़ा और लड्डू में थोड़ा स्वाद और रसगुल्ला में पूर्ण स्वाद मिलता है । बूढ़ी, युवती और किशोर में क्या मजा मिलता है । बूढ़ी और युवती में थोड़ा मजा आता है परंतु किशोरी में पूर्ण मजा आता है ।

(५०)

चार कोना के तलैया हे जहाँ गोरी नेहाय ,
लौंडन के फाटे करेजवा हे गोरी डुबियो न जाय ।

चार कोना के कोठा हे गोरी झंडा उड़ाय ,
लौंडन के फाटे करेजवा हे गोरी गिरियो न जाय ।

अर्थ

संदर्भ–युवती-स्नान और मनचले की अभिव्यक्ति ।

चतुर्भुजाकार तालाब में गौरवर्णी युवती स्नान कर रही है । युवकों को देखकर कलेजा फटा जा रहा है कि गोरी डूब न जाय ? चौकोर कोठे पर गोरी झंडा फहरा रही है । युवकों को कलेजा फट रहा है कि वह कोठे से गिर क्यों नहीं जाती ।

(५१)

कंकरा के लागे जड़इया हे, कंकरा के बोखार ,
कंकरा के लागे रतउंधी हे, दिन सूझे न रात ।

सासु के लागे जड़इया हे, ननदो के बोखार ,
पिया के भेलई रतउंधी हे, दिन सूझे न रात ।

सास के ले गेल ससुरबा हे, ननदो के इयार ,
पिया के ले गेल परोसन हे, जीया जरे हमार ।

कउची से झारब जड़इया हे, कउची से बोखार ,
कउची से झारब रतउंधी हे, दिन सूझे न रात ।

बालों से झारब जड़इया हे, खालो से बोखार ,
झाड़ू से झारब रतउंधी हे, दिन सूझे न रात ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की पारिवारिक परेशानी

एक पत्नी पारिवारिक सदस्यों से परेशान है । वह कहती है कि किसी को जाड़ा, किसी को बुखार और किसी को रात्रि अंधता हो जाती है । सास को जाड़ा है, ननद को बुखार है और प्रिय को रात्रि की अंधता हो जाया करती है । सास को ससुर ले गए, ननद को उसका दोस्त ले गया और पति को पड़ोसन ले गई । यह देखकर मेरा जी जलने लगा । अत: उसने सोचा कि जाड़ा कैसे उतारें, बुखार का क्या करे ? और पति की 'रतउंधी' कैसे दूर करें । उसने सोचा कि बाल (केश) से जाड़ा उतार दें, चमड़े से बुखार झाड़ दें और पति की रतंउधी (रात्रि अंधता) झाड़ू से झार दे । इस प्रकार वह अपना आक्रोश प्रकट करती है ।

(५२)

नइहर तुहूँ जयबऽ ये प्यारी धनियाँ, नइहर तूहूँ जयबऽ ,
नइहर तूहूँ जयबऽ लेमुआ खड़ी होयबऽ ।

पर जयतो लेमुआ के रस खट्टा होई जयबऽ ये प्यारी धनिया ,
नइहर तूहूँ जयबऽ बुआरी खड़ी होयबऽ ये प्यारी धनिया ।

पर जयतो सखिया पर नजर सखि के बुध लयबऽ, ये प्यारी धनिया ,
नइहर तूहूँ जयब सड़क खड़ी होयब पर जयतो मोटर के गर्दा ।
मइल हो होई जयबऽ, ये प्यारी धनिया ,

नइहर तूहूँ जयबऽ अगरिया खड़ी होयबऽ पर जयतो अगरी के छिटा ।
ठंढा होई जयबऽ, ये प्यारी धनिया ।।

अर्थ

संदर्भ–पति द्वारा नैहर जाते पत्नी को वर्जित करना ।

हे प्यारी धनी, तुम नैहर जाना चाहती है । नैहर में नीबू-पेड़ के नीचे खड़ी होगी तो नीबू का रस पड़ जायगा और तू खट्टी हो जायगी । हे धनी, तू नैहर में दरबाजे पर खड़ी होगी, वहाँ सखियों की दृष्टि तुम पर पड़ जायगी और तुम्हें वह सीख देगी, तुम वैसा ही हो जायगी । वहाँ तुम सड़क पर खड़ी होगी तो मोटर की धूल पड़ जायगी और तुम गंदा हो जायगी । नैहर में तुम अगर–वृक्ष के नीचे खड़ी होगी तो उसका छीटा पड़ा जायगा और तुम ठंढा पड़ जायगी ।

(५३)

पातर टीकवा लयल पिया मंगिया भयार गे माई ,
सुग्गा–साड़ी लयल पिया जीया के जंजाल गे माई ।

पेन्हीये–उन्हीये सड़क पर खाड़ गे माई ,
लौंडा साला पूछले दिलवा के वात गे माई ।

घोड़वा चढ़ल आवे छोटका देवरवा गे माई ,
कौन साले पूछने ओला भाभी हमार गे माई ।।

अर्थ

संदर्भ–सुन्दरी के प्रति मनचलों की अभिव्यक्ति ।

पतले टीका को पहनने से मांग भर गया । सुग्गा पंखी सारी पहनना उसे जी का जंजाल हो गया । सुन्दरी वस्त्राभूषण पहन कर सड़क पर खड़ी हुई तो मनचले उससे दिल की बात पूछने लगे । उसी समय उसका देवर घोड़े पर सवार उधर से आया और वह क्रोधित होने लगा कि मेरी भाभी से कौन साला बोलने वाला होता है ? यह तो हमारी भाभी है ।

(५४)

पातर हई मंगिया, पातर टीकवा लइहँऽ राजा ,
नया नोकरिया जमीदार बनके अइहँऽ राजा ।

हमरो नइहरवा मुलकात कयले अइहँऽ राजा ,
छोटकी सरहजिया पर खेयाल कयले अइहँऽ राजा ।

सास के ले गेल ससुरबा हे, ननदो के इयार ,
पिया के ले गेल परोसन हे, जीया जरे हमार ।

कउची से झारब जड़इया हे, कउची से बोखार ,
कउची से झारब रतउंधी हे, दिन सूझे न रात ।

बालों से झारब जड़इया हे, खालो से बोखार ,
झाड़ू से झारब रतउंधी हे, दिन सूझे न रात ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की पारिवारिक परेशानी

एक पत्नी पारिवारिक सदस्यों से परेशान है । वह कहती है कि किसी को जाड़ा, किसी को बुखार और किसी को रात्रि अंधता हो जाती है । सास को जाड़ा है, ननद को बुखार है और प्रिय को रात्रि की अंधता हो जाया करती है । सास को ससुर ले गए, ननद को उसका दोस्त ले गया और पति को पड़ोसन ले गई । यह देखकर मेरा जी जलने लगा । अतः उसने सोचा कि जाड़ा कैसे उतारें, बुखार का क्या करे ? और पति की 'रतउंधी' कैसे दूर करें । उसने सोचा कि बालें (केश) से जाड़ा उतार दें, चमड़े से बुखार झाड़ दें और पति की रतंउधी (रात्रि अंधता) झाड़ू से झार दे । इस प्रकार वह अपना आक्रोश प्रकट करती है ।

(५२)

नइहर तुहूँ जयबऽ ये प्यारी धनियाँ, नइहर तूहूँ जयबऽ ,
नइहर तूहूँ जयबऽ लेमुआ खड़ी होयबऽ ।

पर जयतो लेमुआ के रस खट्टा होई जयबऽ ये प्यारी धनियाँ ,
नइहर तूहूँ जयबऽ बुआरी खड़ी होयबऽ ये प्यारी धनियां ।

पर जयतो सखिया पर नजर सखि के बुध लयबऽ, ये प्यारी धनिया ,
नइहर तूहूँ जयब सड़क खड़ी होयब पर जयतो मोटर के गर्दा ।
मइल हो होई जयबऽ, ये प्यारी धनियां ,

नइहर तूहूँ जयबऽ अगरिया खड़ी होयबऽ पर जयतो अगरी के छिटा ।
ठंढा होई जयबऽ, ये प्यारी धनिया ।।

अर्थ

संदर्भ–पति द्वारा नैहर जाते पत्नी को वर्जित करना ।

हे प्यारी धनी, तुम नैहर जाना चाहती है । नैहर में नीबू-पेड़ के नीचे खड़ी होगी तो नीबू का रस पड़ जायगा और तू खट्टी हो जायगी । हे धनी, तू नैहर में दरबाजे पर खड़ी होगी, वहाँ सखियों की दृष्टि तुम पर पड़ जायगी और तुम्हें वह सीख देगी, तुम वैसा ही हो जायगी । वहाँ तुम सड़क पर खड़ी होगी तो मोटर की धूल पड़ जायगी और तुम गंदा हो जायगी । नैहर में तुम अगर-वृक्ष के नीचे खड़ी होगी तो उसका छीटा पड़ा जायगा और तुम ठंढा पड़ जायगी ।

(५३)

पातर टीकवा लयल पिया मंगिया भयार गे माई ,
सुग्गा-साड़ी लयल पिया जीया के जंजाल गे माई ।

पेन्हीये-उन्हीये सड़क पर खाड़ गे माई ,
लौंडा साला पूछले दिलवा के वात गे माई ।

घोड़वा चढ़ल आवे छोटका देवरवा गे माई ,
कौन साले पूछने ओला भाभी हमार गे माई ।।

अर्थ

संदर्भ–सुन्दरी के प्रति मनचलों की अभिव्यक्ति ।

पतले टीका को पहनने से मांग भर गया । सुग्गा पंखी सारी पहनना उसे जी का जंजाल हो गया । सुन्दरी वस्त्राभूषण पहन कर सड़क पर खड़ी हुई तो मनचले उससे दिल की बात पूछने लगे । उसी समय उसका देवर घोड़े पर सवार उधर से आया और वह क्रोधित होने लगा कि मेरी भाभी से कौन साला बोलने वाला होता है ? यह तो हमारी भाभी है ।

(५४)

पातर हई मंगिया, पातर टीकवा लइहँऽ राजा ,
नया नोकरिया जमीदार बनके अइहँऽ राजा ।

हमरो नइहरवा मुलकात कयले अइहँऽ राजा ,
छोटकी सरहजिया पर खेयाल कयले अइहँऽ राजा ।

अर्थ

संदर्भ–विदेश जाते पति को समझाना ।

पत्नी कहती है कि हमारी मांग पतली है । अतः बाहर से आते समय ... टीका लावेंगे । पहली बार नौकरी करने जा रहे हैं । अतः लौटते समय ... से लौटना । उधर से आते समय हमारे मायके में सबसे भेंट करके लौटना, साथ ही वहाँ छोटी सरहज पर विशेष ध्यान देना ।

(५५)

ससुर भेजलन एक टीका डिब्बा में बंद करके
सासु बोलऽ हई कुबोलिया अटारी पर चढ़के ।

खवई जहर मर जवई इनरा डूबके
गया से अलई एक मेमिन सवारी चढ़के ।

कइसे डूबलन बृजरानी, इनरा में डूबके
जल्दी से बताव हमरा के खोज बीन के ।

अर्थ

संदर्भ–सास की गाली से पुत्र-बधू का डूब मरना ।

श्वसुर ने डिब्बे में बंदकर एक टीका भेजा तो सास देखकर कोठे से कुबोली (रहस्यमय आक्षेप) बोलने लगी । पुत्रवधू ने विष खा लिया और कुँए में डूबकर मर गई । इसकी सूचना गया शहर में चली गई तो वहाँ से एक महिला पदाधिकारी जाँच में आ गई और पूछने लगी कि ब्रजा रानी कुँए में डूबकर कैसे मरी ? हमें शीघ्र पता लगाकर बताओ ।

(५६)

बारह बरस पिया गेलन परदेसवा, टीकवा भेजलन लिफफवा ।
टीकवा पहिरी के सुतली ओसरवा, टीकवा ले गेल चोराय ।

बारह बरस परदेसिया अयलन, टीकवा खोजे लिफफवा ।
टीकवा पहिरी हम सुतली ओसरवा, टीकवा ले गेले चोराय ।

तोहरो बहिनिया प्रभु हमरो ननदिया, टीकवा ले गेले चोराय ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का टीका-भूषण की चोरी ।

पत्नी कहती है कि प्रिय ने बारह वर्ष परदेश रहने पर एक टीका लिफाफे में बंद कर भेजा । मैं उसे पहनकर ओसारे में सो गई तभी उसकी चोरी हो गई । पुनः बारह वर्ष के बाद प्रिय लौटा तो टीका खोजने लगा । पत्नी ने कहा कि मैं टीका पहनकर ओसारे में सो रही थी तो तुम्हारी बहन ने टीका चुरा लिया था ।

(५७)

खइली में बासी भतवा, मथवा पिराय गे माई ,
सुतली में कोठा घरवा तलवा लगाय गे माई ।

तलवा तोड़ीये देवर रचहई धमार गे माई ,
ई मत जनीहँऽ देवर, भइया हथु विदेस गे माई ।

लगल कचहरिया देवर देववऽ बन्हाई गे माई ,
ई मत जनीहँऽ भाभी देवर हथी लड़िकवा गे माई ।

मँचलो जोबनवाँ भाभी देववऽ जुठाई गे माई ।

अर्थ

संदर्भ–भाभी के साथ देवर का यौनाचार ।

नायिका बासी भात खाती है तो उसका सर दर्द करने लगा । अतः वह कोठे के घर में ताला लगाकर सो गई । इधर घर पर भाई को न देखकर देवर ने ताला तोड़ दिया और भाभी से चुहल करने लगा । इसपर भाभी ने कहा कि देवर, यह मत समझना कि भाई विदेश में है तो तुम मनमाना करोगे । कचहरी में जाकर सजा दिलवा दूँगी । देवर कहता है कि भाभी, मुझे लड़का मत समझना, तुम्हारा संचित यौवन जूठा कर दूँगा ।

(५८)

छोटे मोटे पिया ले के चढ़लू अँटारी ,
बोले के न चाले के भरऽ हई हुँकारी ।

खोले के तो चोली बंद, खोले केवाड़ी ,
कइसन में सासु, बेटा जनमौलऽ अनाड़ी ।

अर्थ

संदर्भ–छोटे और नादान पति के प्रति ।

नायिका अपने बालक पति को लेकर कोठे पर गई । वह कुछ बोलता नहीं, केवल 'हाँ-हाँ करता है । उसे चोली खोलना चाहिए था तो कीवाड़ खोल रहा है । अतः नायिका अपनी सास से कहती है कि आपने कैसे नादान बेटा को जन्म दिया ।

(५९)

बाबा के अंगनवा में लउंगिया के चपिया, चपिया अजबी सुरतिया ।
चपिया फोरीय-फोरी टीकवा गढ़वली, टीकवा अजबी सुरतिया ।

टीकवा पहिरी के हेलली बजरिया, सिपाही सब मारऽ हई नजरिया ।
का तू सिपाही सब मारेला नजरिया, से तोहरो से आले हई बलमुआ ।

नाहीं तोरे भेलई साँवर गवना रे रोसगदिया, कइसे चिन्हलऽ अपनी बलमुआ ।
मड़वा झूलेला ये हो झुलुफिया, से वहीं चिन्हली अपना रे बलमुआ ।

अर्थ

संदर्भ–विवाहिता की अनुभूति ।

विवाहिता का द्विरागमन नहीं हुआ है । वह अपने मायके में ही रहती है । उसके पिता-गृह में लवंग का फूल खिला है । उसका विचित्र सौन्दर्य है । उसने लबंग के फूल को तोड़कर टीका बनाया । टीका पहनने से उसका सौन्दर्य विचित्र (अच्छा) हो गया । वह टीका पहनकर बाजार गई । वहाँ सिपाहियों ने देखकर उसपर नजर मारी । नायिका कहती है ये सिपाही तू क्या नजर मारोगे ? तुमसे आला है मेरा पति । सिपाही कहता है कि तुम्हारा द्विरागमन नहीं हुआ है तो तुमने अपने पति को कैसे पहचाना ? वह कहती है कि विवाह के मंडप में उसके घुँघराले बाल लटक रहे थे । इसी से मैने अपने पति को चिन्ह लिया है कि वह सुन्दर है ।

(६०)

हजारो के बाग में हजार किसीम के लेमुआँ, से बार-बार लेमुआ तोड़ऽ न राजा ,
एक बार डढ़िया तोड़ लेबो राजा, से बार-बार लेमुआ तोड़ऽ न राजा ,
बार-बार पिअवा न कहबो राजा, एक बार गुंडवा कह देबो राजा ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी नोंक-झोंक ।

कीमती बाग में हजार तरह के नीबू हैं । हे प्रिय, नीबू को बार-बार मत तोड़ो मैं एक बार में ही डाली तोड़ दूँगी और बार-बार प्रिय नहीं कहूँगी, एक बार गूंडा भी कह दूँगी ।

(६१)

अंगना में तितिर बोले कोठवा पर मोर हो ,
सेजिया पर बालम बोले, जइसे लगे चोर हो ।

मारे के तो मारबऽ पिया, सान तोड़बो तोर हो ,
हमतो नइहरवा जयबो, जीया तरसतो तोर हो ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी मत-वैभिन्न ।

आंगन में तितिर पंक्षी बोल रहा है, कोठे पर मोर बोलता है और नायिका की शय्या पर उसका पति बोल रहा है जैसे चोर बोलता है । इस पर पति पत्नी को मारने दौड़ता है तो वह कहती है कि तुम मार सकते है लेकिन हम तुम्हारा शान तोड़ दूँगी, नैहर चली जाऊँगी और तुम्हारा जी तरसते रह जायगा ।

(६२)

नया लोटवा मंगवई, उसमें जलवा भरबई ,
पिया के पैर धोअइब हिरदा खोलके, सुन्दर मुख से बोल के नऽ ।

पिया तइयो न ताके अँखिया खोलके, सुन्दर मुख से बोलके नऽ ,
नया थरिया मंगबई, उसमें जेवना लगबई ।

पिया के जेवना लगबई, हिरदा खोल के, सुन्दर बोलिया बोल के नऽ ,
पिया तइयो न ताके अँखिया खोल के सुन्दर बोलिया बोल के नऽ ।

अर्थ

संदर्भ–पति-भक्ति ।

पत्नी कहती है नया लोटा मंगवाऊँगी, उसमें जल भरूँगी और हृदय खोलकर प्रिय को पैर पखारूँगी । सुन्दर बोली बोलकर प्रसन्न करूँगी । इस पर भी प्रिये आँख

खोलकर नहीं देखता, मीठी बोली नहीं बोलता । वह नई थाली मँगवावेगी उसमें भोजन परोसेगी और हृदय खोलकर भोजन करावेगी । इसपर भी उसके प्रिय आँख खोलकर नहीं देखता ।

(६३)

पिया सेंट लगा के अयलन सेजिया धम धम करे नऽ ,
पिया एको भलाई नऽ कयलन, कुल में दाग लगवलन नऽ ।

पिया कब कयलऽ सवतिनियाँ, हमरा विरान कयलऽ नऽ ,
पिया जोड़ा पहिन के अयलन सेजिया धम-धम करे नऽ ।

पिया एको भलाई न कयलन, कुल में दाग लगौलन नऽ ,
पिया कब कयलऽ सवतिनियाँ हमरा विरान कयलऽ नऽ ।

अर्थ

संदर्भ–खंडिता की उक्ति ।

खंडिता नायिका कहती है कि उसका पति सेंट लगाकर आया जिससे उसकी शय्या सुगंधित होने लगी । लेकिन वह कहती है कि प्रिय ने थोड़ी भी भलाई नहीं की । उल्टे वंश में दाग लगा दिया । वह पूछती है कि प्रिय, तूने कब सौतिन को बुलाया और हमें विरान कर दिया । वह आगे कहती है कि प्रिय जोड़ा पहनकर आया, शय्या सुगंधित होने लगा लेकिन हमारे लिए कोई भलाई नहीं की बल्कि सौतिन लाकर कुल में भी दाग लगा दिया ।

(६४)

ऊपर उड़ेला जहाज नीचे गोली के आवाज ,
पिया चचल जाहई जर्मन के लड़ाई में हाय रे समलिया ।

हम तो चिठिया लिखबई, मैं तो डाको में लगवयबई ,
पिया के बोलयबई चिठिया लिखके, हाय रे समलिया ।

पिया रंडी लेके बुलऽ हई बजरिया, हाय रे समलिया ।

अर्थ

संदर्भ–द्वितीय विश्व युद्ध में पत्नी की कामना ।

युद्ध के समय आकाश में हवाई जहाज उड़ रहे हैं, जमीन पर गोली चल रही है । प्रिय जर्मनी की लड़ाई में चला गया है । मैं उनके पास चिट्ठी लिखकर

डाकखाना में लगवाऊँगी और चिट्ठी के द्वारा प्रिय को बोलवाऊँगी । आकर उसका प्रिय वेश्या के साथ बाजार में घूमते चलता है ।

(६५)

अगर जयबई भागलपुर, ले जयबई जरूर ।
पिया जी रात भर सोलैबो, गोड़थरिया हाय रे सममिया ।

बोलवऽ नीचे-ऊँचे बात, लेबवऽ बोलवऽ झुलफी कुबार ।
सूइया दिलैबवऽ बीच करेजवा, हाय रे समलिया ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी द्वारा पति को प्रताड़ित करना ।

यदि मैं भागलपुर जाऊँगी तो पति को भी जरूर ले जाऊँगी और उन्हें रात्रि में पैताने सुलाऊँगी । इस पर वह भला-बुरा बोलते हैं तो उनकी झुलफी कुबार लूँगी इतना ही नहीं । उनके बीच कलेजे में सूई दिलवा दूँगी ।

(६६)

टीकवा पेन्हे न देबो, पेन्हावे न देबो, महलिया अंदर जाने न देबो ।
जाने न देबो, जगावे न देबो, पलंगिया पर राजा सोने न देबो ।
सोने न देबो, सोलावे न देबो, लहंगवा में दाग लगे न देबो ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का पति के प्रति आक्रोश ।

पत्नी पति से कहती है कि मैं टीका स्वयं नहीं पहनूँगी न पहनाने दूँगी साथ ही अपने प्रिय को महल मे नहीं आने दूँगी और न जगाकर पलंग पर सोने दूँगी । वह किसी भी तरह अपने प्रिय को अपने पास सुलाकर अपने लहँगा में दाग नहीं लगने देगी ।

(६७)

दानापुर के मीना बजरिया से टीकवा बिकाहई जी बलमुआ ,
टीका ले दऽ माँग पहिरा दऽ सिनेमा देखा दऽ ये बलमुआ ।

चलते-चलते पउँआ पिरायल, से गोदिया उठा लऽ ये बलमुआ ,
गोदिया उठालऽ से जाँघ बइठा लऽ, हिरदा लगालऽ ये बलमुआ ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की लालसा ।

पत्नी कहती है कि दानापुर में मीना बाजार लगा हुआ है उसमें माँग टीका बीकता है । टीका खरीदकर मेरी माँग में पहिना दें और सिनेमा दिखला दें । हे प्रिय चलने से पैर दुखने लगा अतः गोदी में उठाकर ले चलें गोदी में उठाकर जाँघ पर बइठा लें और हृदय से लगा लें ।

(६८)

नदिया किनारे पिआ टिकवा गढ़ावे हो ,
टीकवा के सोच पिया घर हूँ नऽ आवे हो ।

घरवो नऽ आवे पिया चिट्ठियो न भेजे हो ,
बाहरे बाहरे पिया मजवा उड़ावे हो ।

नदिया किनारे पिया बलवा गढ़ावे हो ।
वलवा के सोचे पिया घरहूँ नऽ आवे हो ।

अर्थ

संदर्भ–पति का अन्यत्र संबंध ।

पत्नी कहती है कि उसका प्रिय दूर देश नदी के किनारे किसी के लिए टीका गढ़वा रहा है । उसी सोच के कारण घर पर नहीं आ रहा है । घर नहीं आता और चिट्ठी भी नहीं लिख भेजता है । वह बाहर ही बाहर दूसरे के साथ मौज मस्ती में व्यस्त है । पुनः वह नदी किनारे बाला गढ़ाता है और उसी सोच के कारण घर पर नहीं आता है ।

(६९)

नाया–नाया टीकवा के नया हई गढ़निया हो ,
पनियाँ भरन कइसे जयबऽ प्यारी धनियाँ हो ।

जिनकर अँगनवा में सासु ननदिया हो ,
पकवा इनरवा पर सीरी भगवनवाँ हो ।

नाया–नया बलवा के नाया हई गढ़निया हो ।

अर्थ

संदर्भ–पति द्वारा पत्नी के पनघट में जाने से रोकना ।

पति कहा है कि तूने नया-नया टीका पहन रखा है जो नये तरीके से बनाया गया है अत: हे प्रिये धनी तुम पनघट पर पानी भरने कैसे जाओगी ? जिसके आँगन में सास और ननद हो तथा बाहर के पक्के कुँआ पर श्री कृष्ण हो । वहाँ कैसे जाओगी इसी प्रकार नया बाला भी नये तरीके से गढ़ा गया है । इसे पहनकर कैसे जाओगी ?

(७०)

मोर पिछुअरवा लइचिया के गछिया, लइचिया चुवेला हो अंगनवाँ ।
निहुरी निहुरी हम अंगना बहरली, दोसवा मारेला नजरिया ।

का तु हूँ दोसवा हो मारले नजरिया, साँझ बेरी अइहें हो अगनवाँ ।
अपने बलमुजी के भेजवई खरिहनवा, तोरा लागी जेवना हो लगैबई ।

तोरा लागी सेजिया लगैबई, तोरा कोरवा हो सुतयबई ।

अर्थ

संदर्भ–कुलटा नायिका की उक्ति ।

नायिका कहती है कि मेरे घर के पीछे इलाइची का गाछ है । इलायची आँगन में टपकता है । हम झुककर आँगन बुहार रही थी तो दोस्त देखकर नजर मार रहा था । इसपर नायिका ने कहा कि मित्र, क्यों नजर मार रहे हो । साँझ के समय मेरे आँगन में आना । मैं अपने पति को खलिहान में भेज दूँगी और तुम्हारे लिए भोजन लगाऊँगी । तुम्हारे लिए शय्या लगाऊँगी और तुमको अपनी गोद में सुलाऊँगी ।

(७१)

अइले जेठवा के दिन दिहले पंखवो नऽ कीन ,
पिया जी टप-टप चुवऽ हई पसेनवाँ, लाई दऽ रूमलवा नऽ ।

एक दिन एतना मुहब्बत कयलऽ, जलवा अपने से पिअयलऽ ।
पिया जी का कयलऽ काँचे निंबुआ तोड़ के नया बदन झिकझोर के नऽ ।

अइले अगहन के दिन, दिहले चदरो नऽ कीन ?
पिया जी थर-थर काँपऽ हई बदनवाँ प्रेम के करनवा नऽ ।

एक दिन एतना मुहब्बत कयलऽ चदर अपने से ओढ़वलऽ ,
पिया जी का कयलऽ काँचे निंबुआ तोड़ के नया बदन झिकझोर के नऽ ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का पति को उलहना देना ।

पत्नी कहती है कि जेठ के समय आ गया लेकिन तुमने पंखा तक नहीं खरीदा हे प्रिय टप्-टप् पसीना चू रहा है । कम से कम एक रूमाल भी तो ला दें ? एक समय इतना प्रेम किया था कि अपने से पानी पिलाया था । कच्ची उम्र को झकझोर दिया था और आज अगहन का महीना आ गया है, एक चादर भी नहीं खरीद सके हैं । हे प्रिय प्रेम के कारण आज मेरा वदन ठंढ से थर थर काँप रहा है । एक दिन इतना प्रेम किया था कि अपने हाथ से चादर ओढ़ाई थी और मेरी कच्ची उम्र को झकझोर कर रख दिया था । कच्चे निम्बू को (नव उरोज) तोड़कर छोड़ दिया था ।

(७२)

जलवा लगावे चलली ओही रे होटलवा ,
होटलवा ओला हे सखी मटकी चलावे हे ,

सास मोरा मारऽ हई ननद गरिआवऽ हई ,
जुलुफिया ओला हे सखी घरवा से निकालऽ हई ,

सेजिया लगावे चलली ओही रे होटलवा ,
होटलवा ओला हे सखी मटकी चलावे हे ।।

अर्थ

संदर्भ–सखि से सखि की बात ।

हे सखि, उस होटल में जल पीने गई तो होटल वाले ने नजर मारना शुरू किया । यह जानकर सास मारने लगी और ननद गाली देने लगी और जुलफी वाले (मर्द) तो घर से निकलने लगे । जब मैं शैय्या लगाने चली तो होटल वाले नजर मारने लगा ।

(७३)

लड्डू आउ पेड़ा के कोठा उठा दऽ ,
जिलेबिया के राजा खिड़की लगा दऽ ।

आहर-पोखर के सेजिया डँसादऽ ,
मछरिया के पिया तकेया लगा दऽ ।

चाँद-सूरज पिया टिकवा गढ़ा दऽ ,
तरेगन के राजा बचवा लगा दऽ ।

लड्डू आउ पेड़ा के कोठा उठा दऽ ,
जिलेबिया के राजा खिड़की लगा दऽ ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की महत्वाकाँक्षा ।

पत्नी पति से कहती है कि हे राजा, लड्डू और पेड़ा का कोठा बनवा दें तथा उसमें जलेबी की खिड़की लगा दें । नायिका विराट कल्पना करती है-हे प्रिय, आहर-पोखर की शैय्या लगा दें और मछलियों को तकेया बनवा दें । नायिका की महत्वकाँक्षा और बढ़ती है तथा चाँद-सूर्य की मांग टीका गढ़वाने कहती है जिसमें तारंगण का घुँघरू जड़ने कहती है । इस प्रकार इस लोकगीत में लोक गीतकर की विराट कल्पना का दर्शन होता है ।

(७४)

हमारी जलवा बाग में लगवा दऽ पीने वाले पटना से मंगवा दऽ ,
चादर मोर नील में रंगवा दऽ हमारी जेवना बाग में लगा दऽ ।

जेवने वाले पटना से मंगवा दऽ, चादर मोरा नील में रंगवा दऽ ,
हमारी सेजिया बाग में लगवा दऽ, सोने वाले पटना से मंगवा दऽ ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी को पति-साहचर्य की लालसा ।

हमारे लिए बगीचे में जल लगा दें और साथ में पीनेवाले को पटना से बुलवा दें । मेरी चादर को नीले रंग में रंगा दें । हमारा भोजन बाग में लगवा दें और खाने वाले को पटना से बुलवा दें । हमारी शय्या बाग में लगवा दें और साथ में सोने वाले को पटना से बुलवा दें और नीले रंग में चादर रंगा दें ।

(७५)

सोने के गेडुआ गंगाजल पानी, पिये के बेरिया पिया जाले कौलेजिया ।
जाले कौलेजिया लिखले एक चिठिया, सुनहूँ धानी तू नइहर मत जइहँऽ ।
नइहर जयबऽ तो गली-गुची घुरबऽ, ससुर घरवा में घर ही में रहबऽ ।

अर्थ

संदर्भ–काजेल जाते पति के प्रति ।

सुवर्ण पात्र में गंगा जल लगाया गया परंतु पीने के समय प्रिय कालेज जाने लगे । कालेज से ही उन्होंने पत्र लिखा कि हे प्रिय, नैहर मत जाना । नैहर जाने पर गली-गुंची में घूमेगी और श्वसुराल में घर पर ही रहेगी ।

(७६)

बलमु जब जाना विदेसवा हो, हमरो संग लेते जाना, बलमु जब जाना विदेसवा ।
छोटका देवरवा बड़ा रंग रसिया, उनको संग लेते जाना, बलमु जब जाना विदेसवा ।

अर्थ

संदर्भ–विदेश जाते पति के प्रति ।

हे प्रिय विदेश जाना तो हमें भी साथ में लेते चलना । छोटा देवर भी वड़ा रंगीला है, उसको भी अपने साथ लेते जाना-जब विदेश जाना ।

(७७)

सबके बलमु रंग टीका गढ़ावे ,
हमार बलमु घर ही में समुझावे ,
हाथे रूमाल खटिए छोड़ गेले ।

सासु पूछे, बेटा कुछ कह गेले ,
न कुछ कहले न कुछ समुझवले ,
हाथे रूमाल खटिए छोड़ गेले ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी और सास ।

पत्नी कहती है कि सबके पति रंगीन टीका गढ़ा रहे हैं और हमारे प्रिय घर में ही समझा-बुझाकर और हाथ का रूमाल खाट पर ही छोड़कर चले गए । सास पुत्र-बधू से पूछती है कि बेटा कुछ कहकर गया तो पुतोह कहती है कि उन्होंने न कुछ कहा है न कुछ समझाया है बल्कि हाथ का रूमाल खाट पर छोड़कर चले गए ।

(७८)

हँसुली भुलायल रामा अमरूद के जरी ,
खोजऽ खोजऽ हो देवरवा अमरूद के जरी ।

सासु रगरी ननद मोरा झगरी,
पिया हरमजदवा ममोरे अंगरी।

बलिया भुलायल अमरूद के जरी,
खाजऽ खोजऽ हो देवरवा अमरूद के जरी।

सासु मोरा रगरी ननद मोरा झगरी,
पिया हरमजदवा ममोरे अंगरी।

अर्थ

संदर्भ–पारिवारिक नोंक-झोंक।

पत्नी कहती है कि मेरी हँसुली अमरूद की जड़ के नीचे खो गयी। वह देवर से हँसुली खोजने कहती है। उसकी सास रगड़ कर रही है ननद झगड़ रही है, और उसका पति क्रोध में उसकी अंगुली ऐंठ रहा है। इसी प्रकार एक समय हाथ बाला उसी अमरूद की जड़ के नजदीक भूल गया। पुन: वह देवर को खोजने कहती है और सास ननद तथा पति द्वारा पूर्ववत प्रताड़ित की जाती है।

(७९)

टिकवा गिरे झलक से हो बालम बचवा गिरे पसेनवाँ,
सूरूज पर धाजा नगीना हो बालम अयबऽ कउनी महिनवाँ।

माघ न अइहँऽ, पूस न अइहँऽ अइहँऽ फागुन महिनवाँ,
हँसुली गिरे झलक से हो बालम सिकरी गिरे पसेनवाँ।
सुरूज पर धाजा नगीना हो बालम अयबऽ कउनी महीनवाँ,
माघ नऽ अयबो, पूस न अयबो, अयबो फागुन महीनवाँ।

अर्थ

संदर्भ–विदेश जाते पति से पत्नी का प्रश्न।

विदेश जाते पति से बात करते समय पत्नी को सात्विक भाव उत्पन्न हो जाता है जिससे शरीर में कम्पन और पसीना छूटने लगता है उसकी माँग का टीका चमकते हुए नीचे खसक जाता है और उसका घुँघरू पसीना में सन्ध जाता है। उसका पति सूर्य मन्दिर पर फहराते हुए ध्वजा की तरह है जो नागीना की तरह है। उसे विदेश जाते समय पत्नी पूछ रही है कि आप कौन महीने में लौट कर आयेंगे। माघ और पूस में न भी आवें तो फागुन के मस्त महीने में जरूर आवें। इसी प्रकार नायिका

की हँसली भी चमकते हुए गिर जाती है । सिकरी भी पसीना से सरकने लगती है । अतः ऐसी श्वेदन में तर-वतर होकर अपने प्रिय से बार-वार पूछती है कि किस महीने में आवेंगे । इस पर पति पत्नी की मान रक्षा करता हुआ कहता है कि पूस, माघ में न आकर फागुन में जरूर आऊँगा ।

(८०)

टीका पहिरी हम खाड़ खिड़की पर,
पिया गेन्दा खेले मैदान विरीछ तर ।

तूँ तो गेन्दा फेको मैदान से हम लोकी लेंगे,
नैना से मटकी चलाव हम तो बुझी लेंगे ।

हँसुली पहिरी हम खाड़ खिड़की पर,
पिया गेन्दा खेले मैदान विरीछ तर ।

तूँ तो गेन्दा फेंको मैदान से हम लोकी लेंगे,
नैना से मटकी चलाव हम समझी लेंगे ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी पति का क्रीड़ा-विलास ।

माँग टीका पहनकर हम खिड़की के नजदीक खड़ी थी और मेरे प्रिय मैदान में वृक्ष के नीचे गेन्दा खेल रहे थे । इस पर पत्नी कहती है कि तुम मैदान से गेन्दा फेंको और हम लोक लेंगी । आँख से इशारा करोगे तो हम जान जायेंगी । वह पुनः आगे कहती है कि हँसुली पहनकर खिड़की के नजदीक खड़ी थी और प्रिय मैदान में वृक्ष के नीचे गेन्दा खेल रहे थे । वह कहती है कि तुम मैदान से गेन्दा फेंको हम लोक लेंगी । तुम्हारे इशारे को समझ लेंगी ।

(८१)

झरेली पनियाँ के मत जा अकेली,
ओही पनघटवा पर पनेहरिया छोकड़वा,

पनवाँ खिलाय मजा लेली,
झरेली सोनरा घर मत जा अकेली,

ओही घरवा सोनरवा छोकड़वा,
सोनवाँ पेन्हाय मजा लेली ।

(८२)

फूलवा आगे-आगे हो डढ़िया सोहरल जाय,
हम सड़क पर गेली हो पियवा साथे-साथे जाय।

हम सरम से मरली हो, मरली ईंटा चलाय,
हम स्टेशन पर गेली हो पियवा साथे-साथे जाय।

हम सरम से मरली हो, मरली टीकटे घुमाय,
हम रसोइया गेली हो, पियवा साथे-साथे जाय।

हम सरम से मरली हो, मारली बेलना घुमाय।

अर्थ

संदर्भ–स्त्रैण पति का पत्नी द्वारा कोपभाजन बनना ।

पत्नी कहती है कि फूल लगने से डाली झूक गयी है । हम सड़क पर गयी तो हमारा प्रिय भी साथ-साथ गया । हम शर्म से गड़ गयी और ईंटा उठाकर फेंक मारा । पुनः हम स्टेशन पर गयी तो प्रिय भी साथ-साथ गया । मैं शर्म से गड़ गयी और टिकट घुमाकर ही फेंक मारा । यहाँ तक कि प्रिय साथ-साथ रसोई घर में भी घुस गये । हम शर्म से मरने लगी और बेलना घुमाकर मार बैठी ।

(८३)

पटना शहरवा साँकर गलिया हई हे ननदो,
से चढ़ते-उतरते कमर लचकऽ हई हे ननदो।

सबके बलमुआ घरवा आवऽ हई हे ननदो,
से हमरो बलमुआ रंडीबजवा हई हे ननदो।

गावऽ हई बजावऽ हई रिझावऽ हई हे ननदो,
से पूर्वी बंगालिन के नचावऽ हई हे ननदो।

अर्थ

संदर्भ–विदेशी पति का भ्रष्टाचरण ।

हे ननद, पटना शहर में एक पतली गली है । वहाँ कोठे से उतरने वाली की कमर लचकते रहती है । सभी के प्रिय घर आते हैं परंतु मेरा प्रिय वहाँ वेश्यागामी बन गया है । वह वहाँ पर गाना-बजाना करता है और पूर्वी बंगालिन को रिझाता और नचाता है ।

(८४)

नई रे झुलनियाँ के छइयाँ, सजन दुपहिरया गवाँ जाना ।
पतरी तिरिअंवा के लंबी-लंबी केसिया लंबी-लंबी केसिया के छइयाँ, सजन...
गोरी-गोरी मुखड़ा के लाली-लाली बिंदिया, नई रे बेसरिया के छइयाँ, सजन...
गोरी-गोरी बहिया में लाली-लाली चुड़िया, नई रे कंगनवाँ के छइयाँ, सजना..
लाली-लाली चुनरी पर धानी चदरिया, नई रे चदरिया के छइयाँ, सजन...
नई रे झुलनियाँ के छइयाँ सजन दुपहिरया गवाँ जाना ।

अर्थ

संदर्भ–वस्त्राभूषित पत्नी की लालसा ।

पत्नी कहती है कि उसने नई चोली बनायी है । अतः हे प्रिय चोली की छाया में दोपहर व्यतीत करके चला जाना । उसकी पतली पत्नी के लम्बे-लम्बे केश हैं । अतः अपने साजन से केश की छाया में दोपहर व्यतीत करने का अनुरोध करती है । गोरे मुख पर लाल बिन्दी है, नाक में नया बेसर है जिसकी छाया में पति को दोपहर गवाँना चाहिए । पुनः वह कहती है कि गोरी-गोरी बाहों में लाल-लाल चूड़ी है और नया कंगन भी है । अतः कंगन की छाया में दोपहर व्यतीत कर जाना । अंत में पत्नी कहती है कि लाल रंग की चुनरी पर धानी रंग की चादर है । अतः चादर की छाया में दोपहर व्यतीत कर जाना ।

(८५)

आरे जइहँऽ टिकवा लइहँऽ, सवतिनियाँ मत लइहँऽ ये बलमुआँ ।
सवतीन अइहें टीका पेन्हीहें, करेजवा मोरा विहरे ये बलमुआँ ।
आरे जइहँऽ सिकरी लइहँऽ, सवतिनियाँ मत लइहँऽ ये बलमुआँ ।
सवतीन अइहें सिकड़ी पेन्हीहे, करेजवा मोरा विहरे ये बलमुआँ ।

अर्थ

संदर्भ–विदेश जाते पति को पत्नी की चेतावनी ।

पत्नी कहती है कि हे राजा आरा शहर जायें तो माँगटीका लावेंगे लेकिन सौतिन नहीं लाइयेगा । सौतिन आयेगी तो टीका पहनेगी जिसे देखकर हे प्रिय, मेरा कलेजा फटने लगेगा । पुनः कहती है आरे जायेंगे तो सिकड़ी लायेंगे लेकिन सौतिन नहीं लाइयेगा । सौतिन सिकड़ी पहनेगी और मेरा कलेजा फटने लगेगा ।

(८६)

अपना सवख लागी टिकवा गढ़वली, पेन्ही लेले सवतीनियाँ हो ।
डग-मग करे पिया के नजरिया हो ।

सारे सहर पिया तम्बुआ तनवले, नाची रहले सवतिनियाँ हो ।
डग-मग करे पिया के नजरिया हो ।

सारे सहर पिया तम्बुआ तनवले नाची रहले सवतिनियाँ हो ।
डग-मग करे पिया के नजरिया हो ।

अर्थ

संदर्भ–सौतिन ।

नायिका ने अपने सौख के लिए टीका बनवाया और सौतिन ने पहन लिया जिसे देखकर पिया की दृष्टि डगमगाने लगी । प्रिय ने सम्पूर्ण शहर में तम्बु लगाया जिसमें सौतिन नाच रही है ।

(८७)

गलियानी-गलियानी, बोले बन तितिर हरि लालन हे ,
केकर पिया परदेश में गइले, हरि लालन हे ?

हम तो जनइती कि पिया कवलेजिया हरि लालन हे ,
घरही में कवलेज बना रखती हरि लालन हे ।

आप भी पढ़ती आउ पिया के पढ़वती हरि लालन हे ,
सगरी रतिया जगा रखती हरि लालन हे ।

हम तो जनइती कि पिया रंडीबजवा हरि लालन हे ,
घरही में रंडिया बोला रखती हरि लालन हे ।

अपने भी देखती पिया के देखइती हरि लालन हे ,
सगरी रतिया जगा रखती हरि लालन हे ।

हम तो जनइती कि पिया भांगखयेना हरि लालन हे ,
घरही में भंगिया मंगा रखती हरि लालन हे ।

अपने भी खइती आउ पिया के खिलइती हरि लालन हे ,
सगरी रतिया जगा रखती हरि लालन हे ।

अर्थ

संदर्भ–पति के लिए मनोवांछित कार्य कर घर में रखने की कामना ।

गली-गली में वन का तितर बोल रहा है । किसका प्रिय परदेश गया हुआ है । नायिका कहती है कि मैं जानती कि प्रिय कालेज में पढ़ता है तो घर ही पर कालेज बनाकर उन्हें यही रख लेती । मैं भी पढ़ती, प्रिय को भी पढ़ाती और सारी रात्रि उन्हें जगाकर रखती । वह पुन: कहती है कि यदि मैं जानती कि प्रिय वेश्यागामी है तो घर ही में वेश्या को बुलाकर रख लेती । मैं स्वयं उसे देखती और प्रिय को भी दिखाती । इस तरह से सारी रात जगाये रखती । मैं जानती कि प्रिय भांग खाने वाला है तो घर ही में भांग मंगाकर रख लेती और मैं भी खाती, प्रिय को भी खिलाती । इस प्रकार उसे सारी रात जगाये रखती ।

(८८)

अमवाँ-महुअवा के दुई रे बीरिछिया, ताही रे तर नऽ सुन्नर लगवे जेवनवाँ ।
घोड़वा चढ़ल आवे राजा के कुँअरूआ, जेवी रे लेहूँ नऽ कुँवर हमरो जेवनवाँ ।
कइसे में जेऊँ साँवरो तोहर जेवनरवा, जोहत होइहें नऽ घरवा साम सुन्नर वटिया ।
जोहत होइहें बटिया फाटत होइहें छतिया, भिंजत होइहें न उनकर रेसमी चुनरिया ।

अर्थ

संदर्भ–नायिका की प्रतीक्षा और नायक का तिरस्कार ।

आम और महुआ के दो वृक्ष के नीचे सुन्दरी भोजन लगा रही है । उसी रास्ते से राजकुमार घोड़े पर चढ़ा आ रहा है । सुन्दरी ने उससे भोजन करने कहा । इसपर राजकुमार ने उत्तर दिया कि हे साँवली तुम्हारा भोजन कैसे करूँ ? हमारे घर पर श्याम सुन्दरी हमारी राह देख रही होगी । राह देखते-देखते उसका कलेजा विदीर्ण हो रहा होगा । आँख से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही होगी जिससे उसकी रेशमी चुन्दरी भींग रही होगी ।

(८९)

हम तो जनइती कि पिया के अवइया, सड़क बीचे नऽ जलवा लगवइती ।
अपने भी पीती, पिया के पिलइती, देवर जी से नऽ पनिया ढरवइती ।

हम तो जनइती कि पिया के अवइया, सड़क बीचे नऽ जेवना लगवइती।
अपने भी जेवती, पिया के जेवइती, देवर जी से नऽ थरिया मंजवइती।

हम तो जनइती कि पिया के अवइया, सड़क बीचे नऽ सेजिया लगवइती।
अपने भी सोवती, पिया के सोवइती, देवर जी से नऽ सेजिया लगवइती।

अर्थ

संदर्भ–प्रिय आगमन में प्रतीक्षारत कार्य।

नायिका कहती है यदि मैं जानती कि प्रिय का आगमन होगा तो सड़क के बीच में जलपान की व्यवस्था करती। स्वयं भी जलपान करती और प्रिय को भी करवाती तथा देवर से पानी ढलवाती। पुनः वह कहती है कि सड़क के बीच भोजन लगवाती। स्वयं खाती और प्रिय को भी खिलाती तथा देवर से थाली मलवाती। अंत में कहती है कि यदि मुझे यह ज्ञात रहता कि प्रिय का आगमन हो रहा है तो सड़क के बीच में सेज लगवाती। स्वयं भी सोती और प्रिय को भी सुलाती तथा देवर से शय्या लगवाती।

(१०)

बाबा हो जरा गवना करा दऽ, पिया के मारब नजरी।
नजरी मारब पइसा बटोरब किनब ऐनक-कंगही।

अपने झारब लम्बी-लम्बी केसिया, पिया के झारब झुलफी।
भइया हो जरा गवना करा दऽ, पिया के मारब नजरी।

नजरी मारब पइसा बटोरब, किनब ऐनक-कंगही।
अपने झारब लम्बी-लम्बी केसिया, पिया के झारब झुलफी।

अर्थ

संदर्भ–विवाहिता की प्रियसम्पर्क की कामना।

हे बाबा मेरा गवना करा दें, मैं प्रिय को नजर मारुँगी और पैसा जमा करुँगी, ऐनक-कंघी खरीदूँगी। उससे अपने लम्बे केश झारुँगी और प्रिय की झुलफी झारुँगी। पुनः वह अपने भाई से कहती है कि मेरा गवना करा दें। मैं प्रिय को नजर मारकर पैसा जमा करुँगी और ऐनक-कंघी खरीदूँगी जिससे अपने लम्बे केश और प्रिय की झुलफी झारुँगी।

(९१)

मेंहदी के गाछतर झंझरी कटवली, वही गेले अजवी हो बेयरिया ,
ताहीतर सुन्दर धनिया सेजिया डँसवले, आई गेले सुखवा के हो नींदिया ।

बारह बरस पर पिया घरवा अयलन, गेंदवा से मारी के हो जगवलन ,
उठ-उठ धनियाँ हो हमरो बचनियाँ तोरो जोगे टिकवा ले लवली ।

ये टिकउबा प्राभु माई रे बहिनियाँ काँचे नींदिया दिहले हो जगाई ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी ।

मेंहदी के गाछ के नजदीक खिड़की खोलवा दी, अद्‌भुत हवा चलने लगी । उसी जगह सुन्दरी पत्नी ने शय्या लगाई जहाँ गहरी नींद में सो गई । प्रिय परदेश चला गया और पत्नी यहाँ सोती रही । जब पति बारह वर्ष पर घर लौटा तो गेंदा के फूल से मार कर जगाया और कहा कि मेरी बात मानकर मांगटीका ग्रहण कर लो । पत्नी कच्ची नींद में जगने के कारण क्रोधाभिभूत हो गई और कहने लगी कि यह टीका तुम्हारी माँ-बहन को लगे, तुमने तो हमें कच्ची नींद से जगा दिया है ।

(९२)

बेर ही बेर तोरा बरजू पातर पिअवा, बतिया मानऽन काहे ?
बीड़ी के पियनवाँ छोड़ी दऽ, बतिया मानऽ न काहे ?

बीड़ी के पिये से पिया जरीहें करेजवा, बतिया मानऽन काहे ?
गली के घूमनवाँ छोड़ी दऽ, बतिया मानऽ न काहे ?

रंडी के रखनवाँ छोड़ी दऽ, बतिया मानऽ न काहे ?
रंडी के रखनवाँ पिया लागी हें अछरंगवा, बतिया मानऽ न काहे ?

अर्थ

संदर्भ–पति को दुष्कर्म से बचने की सलाह ।

पत्नी अपने दुबले-पतले प्रिय को बुरे कर्म करने से मना करती है । बीड़ी पीना छोड़ दें, बीड़ी पीने से कलेजा जल जाता है । गली में घूमना छोड़ दें, गली घूमने से नजर लग जाती है । वेश्या का रखना छोड़ दें । इससे कलंक लगता है । हे प्रिय हमारी बात क्यों नहीं मानते ?

(१३)

सोने के गेडुआ गंगाजल पानी, पनिया घर ही तवाँय पिया न अयले।
कैसा दरोगा, कैसा मलटरी, कैसा है सब अफसर पिया के छुट्टी न दिहले।
कैसा है आपिस, कैसा मनेजर पिया के छुट्टी ने दिहले।
सोने के प्रात में जेवना लगवलूँ, जेवना घर ही तवाँय पिया न अयले।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का प्रशासन पर आक्रोश।

सोने के पात्र में गंगाजल रखा हुआ है जो बेकार घर पर पड़ा है क्योंकि विदेश से प्रिय नहीं आया है। वहाँ का दारोगा और मिलिटरी कैसे हैं और आफिसर कैसा है ? वहाँ कार्यालय और उसके व्यवस्थापक कैसे हैं जो प्रिय को छुट्टी नहीं देते। सोने की थाली में भोजन लगाया जो घर पर रखा बेकार हो रहा है, छुट्टी नहीं मिली, प्रिय नहीं आए।

(१४)

पातर-पातर टीकवा पर हरियर नगीना, नगीना बड़ी लाल, घरे रहूँ राजा।
अन्हारी बड़ी रात, घरे रहूँ राजा, अन्हारी बड़ी रात।
करबो में सेवा, खिलयबों में मेंवा, सोलयबो सारी रात, घरे रहूँ राजा।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का प्रिय को घर पर रहने का अनुरोध।

पत्नी कहती है कि पतले महीन टीके पर हरा नग जडा़ है। नगीना बड़ा सुन्दर है। अतः हे राजा, घर पर ही रहें। रात्रि बड़ी अन्धेरी है। यहाँ सेवा करूँगी, मेवा खिलाऊँगी और सारी रात अपने साथ सुलाऊँगी।

(१५)

टिका जे लइहँऽ पिया जोग जान के, सेजरिया पर अइहँऽ पिया हाथ जोड़ के।
रोपेआ भेजइहँऽ पिया कागज में मूँद के, सुरतिया भेजइहँऽ पिया फोटो खिचाके।
सिकरी जे लइहँऽ पिया जोग जान के, सेजरिया पर अइहँऽ पिया हाथ जोड़ के।

अर्थ

संदर्भ–परदेश जाते पति को पत्नी का समझाना

पत्नी कहती है कि टीका भेजें तो सुन्दर जानकर भेजें और शय्या पर आवें तो हाथ जोड़कर आवें । रुपया कागज में मोड़कर भेजें और अपनी सूरत फोटो खिचाकर भेज देना । सिकड़ी भी सुन्दर भेजना और शय्या पर विनम्रतापूर्वक (हाथ जोड़कर) आना ।

(१६)

भेज देलऽ हो पिया भेज देलऽ, बिना गवने के टीकवा भेज देलऽ ,
न सोभे हो पिया न सोभे, बिना गवने कि टीकवा न सोभे ।

सोभत हे धानी सोभत, हम करबो गवना खूब सोभत ,
भेज देलऽ हो पिया भेज देलऽ, बिना गवने के सिकरी भेज देलऽ ।

न सोभे हो पिया न सोभे बिना गवना के सिकरी न सोभे ,
सोभत हे धानी सोभत, हम करबो गवनवा खूब सोभत ।

अर्थ

संदर्भ–बिना गवने के पति का आभूषण लेकर आना ।

पत्नी नवागंतुक पति से कहती है कि हे प्रिय, बिना गवना किए ही मांगटीका भेज दिया । बिना गवना के टीका नहीं शोभता । पति कहता है कि शोभेगा, हे धनी गवना करा लेंगे फिर खूब शोभेगा । पत्नी पुनः कहती है कि बिना गवना के सिकड़ी भेज दी जो शोभा नहीं देती । पति पूर्ववत् उत्तर देता है ।

(१७)

सुतली में चूना घरवा, देखली सपनवाँ हो ,
सपना में देखली बलमुआँ बड़ी हो छोटा हो ।

बेचबो में मांग के टीका किनबो धेनु गइया हो ,
दूधवा पिलाई पिया के करबो जोड़ीदरवा हो ।

सुतली में चूना घरवा देखली सपनवाँ हो ,
सपना में देखली बलमुआँ बड़ी छोटा हो ।

बेचबों में गला के सिकरी किनबो धेनु गइया हो ,
दूधवा पिलाई पिया के करबो जोड़ीदरवा हो।

अर्थ

संदर्भ–कम उम्र पति को हमउम्र बनाने की कामना ।

चूना घर में सोई तो सपना देखा कि पति बड़ा छोटा है । अत: मैं मांगटीका बेचकर दुधारु गाय खरीदूँगी और प्रिय को पिलाकर जोड़ीदार (हमउम्र) बना लूँगी । पुन: वह कहती है कि चूनाघर में सोने पर वहीं स्वप्न देखती है और कहती है कि गले की सिकड़ी बेचकर दुधारु गाय खरीद लेगी और प्रिय को दूध पिला-पिला कर जोड़ीदार बना लेगी ।

(९८)

टीका बेची-बेची पिया के पढ़ौली, मास्टर कर देले फेल,
दुखित मत होइहँऽ ये राजा।
हाथ कितबिया ठेहुन धरी बचिहँऽ, मन ही मन मुस्कइहँऽ,
दुखित मत होइहँऽ ये राजा।
सिकरी बेची-बेची पिया के पढ़ौली, मास्टर कर देले फेल,
दुखित मत होइहँऽ ये राजा।
हाथ कितबिया ठेहुन धरी बचिहँऽ, मन ही मन मुस्कइहँऽ,
दुखित मत होइहँऽ ये राजा।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी का पति को सांत्वना देना ।

पत्नी कहती है कि मांगटीका बेचकर प्रिय को पढ़ाया और मास्टर ने फेल कर दिया। अत: हे राजा दुखी मत होना। हाथ में किताब लेकर ठेहुना पर रखकर पढ़ना और मुस्कुराते रहना, दुखी मत होना। सिकड़ी बेचकर प्रिय को पढ़ाया और मास्टर ने फेल कर दिया। अत: हाथ में किताब लेकर ठेहुने पर रखना और मुस्कुराते रहना, दुखी मत होना हे राजा ।

(९९)

पटना तू जइहँऽ राजा, टीकवा लइहँऽ राजा ,
टीकवा के लिग्गा-पढ़ी पूर्जा लेते अइहँऽ राजा।

हाथ में किताब लेके घइला अलगइहँऽ राजा ,
आई. ए. बी. ए. पास कर के मिट्टी मिलौलऽ राजा ।

पटना तू जइहँऽ राजा, सिकरी लइहँऽ राजा ,
सिकड़ी के लिखा-पढ़ी पूर्जा लेले अइहँऽ राजा ।

हांथ में किताब लेले घइला अलगइहँऽ राजा ।

अर्थ

संदर्भ—बेकारी और अविश्वास ।

पत्नी कहती है कि हे राजा पटना जाना मांगटीका लाना और उसके खरीद की रसीद भी लेते आना । आई. ए. बी. ए. पास कर मिट्टी में मिला दिया । अत: हाथ में किताब लेकर घड़ा उठाना । पुन: वह कहती है पटना जाकर सिकड़ी खरीदना और उसकी रसीद लेते आना । हाथ में किताब लेकर घड़ा उठाना ।

(१००)

हवड़ा टीसनिया पर जलवा लगावत रहली ,
रही रही जियरा घबड़यले बलमुआ बिनु ।

एक तो बलमुआ बिनु, दोसरे अकेलवा हो ,
तीसरे जोबनवाँ भइले भारी, बलमुआ बिनु ।

हवड़ा टीसनिया पर जेवना लगावत रहली ,
रही-रही जियरा घबड़यले बलमुआ बिनु ।

एक तो बलमुआ बिनु, दोसरे अकेलवा हो ,
तीसरे जोबनवा भइले भारी बलमुआ बिनु ।

अर्थ

संदर्भ—एकाकी पत्नी की घबड़ाहट ।

पत्नी हावड़ा स्टेशन पर जल लगा रही थी परन्तु प्रिय के अभा[illegible]सका जी घबरा रहा था । एक तो वह अकेली थी, प्रिय साथ नहीं था । उस पर वह यौवन के भार से लदी थी । पुन: वह भोजन लगाने लगी तो कभी-कभी जी घबराने लगा क्योंकि वह प्रिय विहीन अकेली थी और यौवन के भार से लदी थी ।

(१०१)

सासु के टीका पेन्ही नइहर झमकवली हे ,
नइहर के टिकुलिया साटी सइयाँ जोरे सोवली हो ।

सेजिया ऊपर गगरी, गगरिया ऊपर गेन्दा हो ,
सइयाँ अइसन लोभी उतारे सिर गगरी हो ।

सासु के सिकरी पेन्ही नइहर झमकवली हो ,
नइहर के टिकुलिया साटी सइयाँ जोरी सोवली हो ।

अर्थ

संदर्भ–मायके का वैशिष्ट्य प्रर्दशन ।

ससुराल का मांगटीका पहनकर नैहर में इठलाती फिरी । नैहर की टिकुली साटकर प्रिय के साथ सोयी । मेरे शरीर के वक्ष पर उरोज है और वे गेन्दा की तरह प्रस्फुटित हैं । मेरे कामुक पति गेन्दे को तोड़ना चाहते हैं । पुनः ससुराल की सिकड़ी पहनकर नैहर में इठलायी और नैहर की टिकुली साटकर प्रिय के साथ सोयी ।

(१०२)

नीच ही नदिया के ऊँची रे अरार, कोइलर जमुना तीरे हो लाल ,
जहाँ देवर करे स्नान, कोइलर जमुना तीरे हो लाल ।
एक डुबकी मारले दोसर डुबकी मारले कोइलर जमुना तीरे हो लाल ,
डूब गेलन देवरवा नन्देलाल कोइलर जमुना तीरे हो लाल ।
मोरो पिछुअरवा मलहवा भइया हितवा कोइलर जमुना तीरे हो लाल ,
येही घाटे डालऽ महाजाल, कोइलर जमुना तीरे हो लाल ।
काई तूँहूँ देबऽ साँवर देवर छनइया, कोइलर जमुना तीरे हो लाल ,
येही घाटे डालब महाजाल, कोइलर जमुना तीरे हो लाल ।
तोहरो के देबो मलहा कान दूनों सोनवा, कोइलर जमुना तीरे हो लाल ,
मलहिन के देबो गलेहार कोइलर जमुना तीरे हो लाल ।
आगि लगाव साँवर कान दूनों सोनवाँ कोइलर जमुना तीरे हो लाल ,
बजर परावऽ गलेहार, कोइलर जमुना तीरे हो लाल ।

तोहरो के पास साँवर दूगो नवरंगिया, कोइलर जमुना तीरे हो लाल,
दूनो में से करऽ एक दान, कोइलर जमुना तीरे हो लाल।
जिनकर लागल मलहा साठ सौ रूपइया, से हो नहीं कयले नेवान,
कोइलर जमुना तीरे हो लाल।
पहले जे खाले साँवर चिरई चुरगुनियाँ, कोइलर जमुना तीरे हो लाल,
तब खाले खेत रखवार, कोइलर जमुना तीरे हो लाल।

अर्थ

संदर्भ–विवश स्त्री से कामुक प्रयास।

गहरी नदी के ऊँचे किनारे पर स्त्री खड़ी है। नदी में उसका देवर स्नान कर रहा है। वह डुबकी पर डुबकी लगा रहा है। एक बार उसका नन्दलाल पानी में डूब गया। स्त्री अपने पीछे बसने वाले मल्लाह भाई को कहती है कि इस घाट पर महाजाल डालो। इस पर मल्लाह कहता है कि देवर को छानने के बदले तुम क्या दोगी ? मैं इसी घाट पर महाजाल डालूँगा। स्त्री कहती है कि हे मल्लाह भाई तुम्हें दोनों कान में सोना दूँगी और मल्लाहिन को गले का हार दूँगी। इसपर मल्लाह कहती है कि तुम्हारे दोनों कान के सोने में आग लगे और गलेहार बज्र पड़े। हे साँवली तुम्हारे पास दो नारंगियाँ (उरोज) हैं उसमें से एक मुझे दान में दे दो। इस पर स्त्री कहती है कि जिसका साठ हजार रुपया लगा है उसने स्पर्श नहीं किया है। तब मल्लाह कहता है कि पहले फसल को चिड़िया खाती है तब खेत का मालिक खाता है।

(१०३)

नऽ सुने जी मोरा राजा नगीनवाँ,
सोने के थाली में जेवना परोसली, जेवनो नऽ जेवे राजा जाले दखिनवाँ।
सोने के सुराही में गंगाजल पानी, पनियो नऽ पिये राजा जाले दखिनवाँ,
पाँच-पाँच पनवाँ के बिरवा लगवली, बिरवो नऽ चाभे पिया जाले दखिनवाँ।
चुनी-चुनी कलिया के सेजिया लगवली सेजियो नऽ सोवे राजा जाले दखिनवाँ।

अर्थ

संदर्भ–प्रदेश जाते पति से पत्नी की वार्ता।

पत्नी कहती है कि मेरा नगीने की तरह राजा एक बात नहीं सुनता। सोने की थाली में भोजन लगाया, वह बिना खाये दक्षिण देश जाने के लिए प्रस्तुत है। पुनः

उसने सोने की सुराही में गंगाजल रखा लेकिन वह पानी पीने के लिए भी तैयार नहीं है । अंत में उसने फूल की कलियों से सेज सजायी लेकिन उसका पति उस पर सोता नहीं और दक्षिण देश जाने के लिए तैयार है ।

(१०४)

लाल पियर दूनो फूलवा, किनका हाथे सोभे हो लाल ।
राम लखन दूनो भइया, उनके हाथे सोभे हो लाल ।
कोठवा ऊपर के सिपहिया, जलवा हमसे माँगे हो लाल ।
जलवा पेठयबई छोटी ननदी, सामने नहीं होयबई हो लाल ।
बारह बरीस के उमरिया, गरदे उड़ी जयतो हो लाल ।

अर्थ

संदर्भ–लाल-पीले दो फूल किनके हाथ में शोभ रहा है ?

राम लखन नाम के दो भाई हैं । उनके हाथ में शोभ रहा है । नायिका कहती है कि कोठा के ऊपर का सिपाही हमसे पानी माँग रहा है । हम अपनी छोटी ननद के द्वारा भेज दूँगी । सामने नहीं होऊँगी । मेरी उम्र बारह बरस की है । हमारी तो गर्दा उड़ जायगी ।

(१०५)

साम लाल दरोगा जुगा खेले पलंग पर ,
जब रे दरोगवा कागुल बिगाड़े, हमहूँ बिगाड़ब तोरा झुलफी पलंग पर ।
जब रे दरोगवा साड़ी बिगाड़े, हमहूँ विगाड़ब तोरा धोती पलंग पर ,
जब रे दरोगवा चप्पल बिगाड़े, हमहूँ विगाड़ब तोरा जूता पलंग पर ।

अर्थ

संदर्भ–स्त्री और दरोगा में नोक-झोक ।

श्याम लाल नामक एक दरोगा एक स्त्री के साथ पलंग पर बैठकर जुआ खेलता है । इसी बीच दोनों में नोक-झोक हो जाता है । स्त्री कहती है, रे दारोगा यदि तुम हमारे केस को बिगाड़ दोगे तो हम तुम्हारी झुलफी बिगाड़ देंगी । यदि तुम हमारी साड़ी बर्बाद करोगे तो हम तुम्हारी धोती बर्बाद कर देंगी । यदि तुमने हमारी चप्पल बिगाड़ने की कोशिश की तो हम तुम्हारा जूता बिगाड़ देंगी । इस प्रकार स्त्री दारोगा से किसी प्रकार कम नहीं ।

(१०६)

गोरी के मंगिया अजब रंग झलक [illegible] टीका के पहनना छोड़ दे ।
आना भी छोड़ दे, जाना भी छोड़ दे, गोरी दरवाजा के रहना भी छोड़ दे ।

गोरी के हथवा अजब रंग झलके, गोरी बलवा के पहनना छोड़ दे ।
आना भी छोड़ दे जाना भी छोड़ दे, गोरी दरवाजा के रहना छोड़ दे ।

अर्थ

संदर्भ–सुन्दरी के आभूषण का प्रभाव ।

नायक कहता है कि हे गौरवर्णी, तुम्हारा मांग विचित्र रूप से झलक रहा है क्योंकि तुमने मांगटीका पहन रखा है । अत: टीका पहनना छोड़ दो और इधर-उधर आना-जाना भी बंद कर दो तथा दरवाजे पर खड़ा होना भी बन्द कर दो । पुन: वह आगे कहता है कि हाथ में बाला पहनने के कारण विचित्र तरह से उसका हाथ चमक रहा है । अत: वह गोरी से कहता है कि हाथ में बाला पहनना छोड़ दो । इधर-उधर जाना और दरवाजे पर रहना भी छोड़ दो ।

(१०७)

बहे के तो पछेया गोरी बहे पुरवइया आँचर डोले ये गोरी ।
सोने के गेडुआ गंगाजल पानी, अन्तर डालल ये गोरी ।

पनियो नऽ पिया मुँखहूँ नऽ बोले, पिया मोरा रूसल ये गोरी ।
सोने के प्रात में जेवना परोसली, घीया ढरकावल ये गोरी ।

जेवनो नऽ जेवे पिया मुँखहूँ नऽ बोले पिया मोरा रूसल ये गोरी ।
कलिया चुनिये-चुनी सेजिया डँसवली, फूल छितरावल ये गोरी ।

सेजियो नऽ सोवे पिया मुँखहूँ नऽ बोले, पिया मोरा रूसल ये गोरी ।

अर्थ

संदर्भ–नायिका का सखी से वार्तालाप ।

नायिका कहती है कि हे गोरी, कभी पछेया कभी पुरवाई हवा चल रही है जिससे मेरा आँचल डोल रहा है । मैंने अपने प्रिय के लिए सोने के पात्र में गंगाजल रखा और उसमें इत्र डाल दिया लेकिन मेरा प्रिय न पानी पी रहा है न मुख से बोल रहा है । मेरा प्रिय रूठ गया है । सोने की थाली में भोजन लगाकर उसमें घी डाल

दिया परंतु प्रिय भोजन नहीं कर रहा है न मुँह से बोल रहा है । पुनः कहती हैं कि कलियों को चुन-चुनकर मैंने शय्या लगायी, उसपर फूल बिखेर दिया । परंतु मेरा प्रिय उस पर सोता नहीं, न मुख से बोलता है । मेरा प्रिय रूठ गया है ।

(१०८)

लोटा जल पनिया लेले मउनी में चबेनिया, पनियाँ पीलऽ बालमा ,
तोहे मारतो खरइया पनिया पीलऽ बालमा ।
जेठवा बइसखवा के तलफी भूम्हरिया धूप गवाँ लऽ बालमा ,
हमरी टिकवा के छहिया धूप गवाँ लऽ बालमा ।
हमरी बलवा के छहिया धूप गवाँ लऽ बालमा ,
हमरी सिकड़ी के छहिया धूप गवाँ लऽ बालमा ।

अर्थ

संदर्भ–परिश्रमी पति के प्रति पत्नी की संवेदना ।

जेठ की गरमी में काम करते पति के लिए लोटा में पानी और छोटी डलिया में भूँजा लेकर पत्नी खेत में जाती है और कहती है कि पानी पी लें । जेठ-बैसाख की खौलती गर्मी है । इससे थोड़ा विश्राम कर लें, हमारे टीका की छाँह में कुछ क्षण के लिए धूप से विश्राम कर लें । पत्नी भिन्न-भिन्न आभूषणों का नाम लेकर धूप गरमी से बचने का अनुरोध करती है । हमारे बाला की छाँह में धूप गवाँ लें । मेरी सिकड़ी की छाँह में धूप गँवा लें । इसमें पति-प्रेम का चित्रण है ।

(१०९)

कहवाँ से आवे लउँगिया साड़ी हे ?
कहवाँ से आवे पातर पियवा, हाथ में रूमयिा लेले नाऽ ।
पूरब से आवे लउँगिया साड़ी हे ,
अहे पछिम से आवे पातर पियवा, हाथ में रूमलिया लेले नाऽ ।
कहवाँ उतराब लउँगिया साड़ी हे ?
कहवाँ उतारब पातर पियवा, हाथ में रूमलिया लेले नाऽ ।
मड़वा उतारब लउँगिया साड़ी हे ,
कोहबर उतारब पातर पियवा, हाथ में रूमलिया लेले नाऽ ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की लालसा ।

पत्नी कहती है कि लवंग छाप साड़ी कहाँ से आ रही है और कहाँ से पतले पति आ रहे हैं जिनके हाथ में रूमाल सुशोभित हो रहा है । पूरब से लवंग छाप सारी आ रही है, पश्चिम से पतले प्रिय आ रहे हैं । कहाँ लवंग छाप सारी रखी जायगी और कहाँ पतले प्रिय रहेंगे ? पुनः वह कहती है कि मंडप में लवंग छाप सारी रखी जायगी और कोहबर में पतले प्रिय रहेंगे जिनके हाथ में रूमाल सुशोभित हो रहा है ।

(११०)

टीकवा गढ़ा के गेले, डिबिया में मून के गेले ,
ताला लेले चाभी लेले अपने विदेस गेले ,
हमरो अकेले मधुबन बीचे छोड़ गेले ।

अर्थ

संदर्भ–तिरस्कृत पत्नी ।

पत्नी कहती है कि पति ने मांगटीका तो बनाया लेकिन उसे डिब्बा में बन्दकर चला गया । उसका ताला और चाभी भी अपने साथ विदेश में ही लेता गया । मुझे मधुवन के बीच में छोड़ गया ।

(१११)

सुतल में रहली रामा सइयाँ संग सेजिया ,
हमहूँ जनइती रामा सइयाँ जायत चोरिया, रामा रेसम के डोरिया बँधइती ।
रेसम के डोरिया रामा टूटी-फूटी जयते, रामा प्रेम के बंधनवाँ बँधइती ,
रामा जने-जने सइयाँ गेले, बगिया लगावत गेले ।
रामा केरा आउ नरियर के बगिया लगावत गेले ।

अर्थ

सन्दर्भ-पत्नी प्रिय के साथ सो रही थी ।

पत्नी कहती है कि यदि वह जानती कि उसका पति चुरा लिया जायगा तो वह रेशम की डोरी में बाँध कर रखती । रेशम की डोरी के टूटने की संभावना होती तो उन्हें प्रेम के बंधन में बाँध रखती । परंतु प्रिय तो जिधर गए केला और नारियल का बाग लगाते गए ।

(११२)

चहलक हो पिया बाग के बीचे, खड़े झरायव मैं हूँ टिकोरवा।
हमें झरायब राउर देखब, राउर बिना नहीं झरे टिकोरवा।
चलहक हो पिया नदी किनारे, खड़े डुबायव राजा मैं हूँ गगरिया।
हमें डुवायव राउर देखब, राउर बिना नहीं डूबे गगरिया।
चलहक हो पिया दरजी दोकनियाँ, खड़े किनायव राजा मैं हूँ झुलनिया ,
हमें किनायव राउर देखब, राउर बिना नहीं देहई झुलनियाँ।
चहलक हो पिया सोनरा दोकनियाँ, खड़े किनायब राजा मैं हूँ तिलरिया ,
हमें किनायब राउर देखब, राउर बिना नहीं दे हई तिलरिया।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की लालसा ।

पत्नी कहती हैं कि हे प्रिय, बाग के बीच में चलें । मैं स्वयं टिकोला झाड़ूँगी और आप देखेंगे । आप के बिना टिकोला नहीं झड़ता । हे प्रिय, नदी के किनारे चलें, मैं खड़ी होकर गगरी डुबाऊँगी । मैं डुबाऊँगी और आप देखेंगे क्योंकि आपके बिना गगरी डूबती नहीं । हे प्रिय, दर्जी की दूकान पर चलें, मैं खड़ी होकर झूलनी खरीदूँगी । मैं खरीदूँगी और आप देखेंगे, आप के बिना झूलनी नहीं देता । हे प्रिय, सुनार की दूकान पर चलें, मैं सिकड़ी खरीदूँगी और आप देखेंगे । आप के बिना तिलरी, तीन लड़ी की सिकड़ी नहीं देता ।

(११३)

चारु ओर से बदरी घेरत आवे हे, परदेसवा से पियवा लौटी आवे हे।
लौटी आवे हे, लौटी आवे हे, हमरा मांग जोगे टीकवा गढ़ा के आवे हे।
पेन्हऽ काहे नऽ धनियाँ, पेन्हऽ काहे नऽ, हमरा दिलवा के बतिया तू कहऽ काहे नऽ।
पेन्हऽ हीवऽ हे पिया पेन्हऽ हीवऽ हे, तोहरा दिलवा के बतिया कहत हीवऽ हे।

अर्थ

संदर्भ–विदेश से लौटे पति से प्रिया का मान ।

चारों दिशा से बदली घेर रही है । परदेश से प्रिय लौट रहा है, लौट रहा है और हमारे लिए मांगटीका गढ़ाकर ला रहा है । वह पत्नी को कहता है कि टीका क्यों नहीं पहनती और अपने दिल की बात क्यों नहीं बताती ? मानवती पत्नी केवल आश्वासन देती है कि हे प्रिय, मैं टीका पहन रही हूँ और तुमसे अपने दिल की बात कह रही हूँ ।

(११४)

सोने के प्रात में जेवना लगवली, जेवो मोरे राजा गले में हथवा डालके,
सोने के झारी गंगाजल पानी, पियो मोरे राजा गले में हथव डाल के।
हरा रंग लाना बसंती मिलाके ।।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी वार्त्ता ।

सोने की थाली में भोजन परोसा और पत्नी ने कहा कि हे राजा, गले में हाथ डालकर भोजन करें और हरे रंग में वसंती मिलाकर लाना । सोने की सुराही में गंगाजल लगाया और प्रिय को गले में हाथ में डालकर पीने के लिए कहा । हे राजा हरे रंग में बासंती रंग मिलाकर लाना ।

(११५)

फूल तोड़े गेली हम माली फुलवरिया, ये हो अकेला जियरा ।
माली भइया धैलन अँचरवाँ, ये हो अकेला जियरा ।

छोड़ूँ-छोड़ूँ माली भइया हमरो अँचरवा, ये हो अकेला जियरा ।
घरवा रोवते होइहें गोदी के बलकवा, ये हो अकेला जियरा ।

बारहे बरीस गोरी तोहरी उमरिया, ये हो अकेला जियरा ।
कहाँ पयलऽ गोदी के बलकवा, ये हो अकेला जियरा

छव महीना भइया, पिया संग रहली, ये हो अकेला जियरा ।
उहे देलने गोदी के बलकवा, ये हो अकेला जियरा ।

अर्थ

संदर्भ–नायिका का बाग में फूल तोड़ना ।

मैं अकेली माली के बाग में फूल तोड़ने गई । माली भाई ने अकेला जानकर मेरा आँचल पकड़ लिया । वह कहती हैं कि हे माली भाई, मेरा आंचल छोड़ दो, घर पर गोदी का बालक रो रहा होगा, हम अकेली हैं । माली कहता है कि हे गोरी, तुम्हारी उम्र अभी बारह वर्ष है, बालक कहाँ पा लिया है ? नायिका कहती है हे भाई, मैं छः महीने तक पति के संग रही हूँ, उन्होंने ही गोदी में बालक को दिया है ।

(११६)

कउनी रंग डोलिया, कउनी रंग ओहरवा ,
कउनी रंग हो ननदो तोरा भइया ।

लाली रंग हो डोलिया, सबुजरंग ओहरवा ,
सँवरे रंग हो ननदो तोरा भइया ।

टूटी गइले मुंगवा, बिखरी गेलई मोतिया ,
रुकिये गेलन हो ननदो तोरा भइया ।

चुनी लेबइ, मुंगवा, बटोरी लेबइ मोतिया ,
मनाई लेबई हो ननदो तोहर भइया ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी में मान मनौवल ।

किस रंग की पालकी है और उसमें किस रंग का पर्दा है । पत्नी कहती है कि हे ननद तुम्हारे भाई किस रंग के हैं । पुनः वह स्वयं उत्तर देती है–लाल रंग की पालकी है, सब्ज रंग का पर्दा लगा हुआ है और तुम्हारे भाई साँवला रंग के हैं । नायिका मूंगा-मोती जड़ित आभूषण पहने हुए है जिसके टूट कर बिखर जाने से ननद के भाई (पति) रूठ गये तो नायिका कहती है कि मूँगा चून लूँगी, मोतियों को बटोर लूँगी और हे ननद, तुम्हारे भाई को मना लूँगी ।

(११७)

जिनकर ??रे पर गंगा बहतु हैं, से हो रे कइसे कुइया नेहतई हो लाल ।
जिनकर घरवा में पिया जवनवाँ, कइसे जतइ नइहरवा हो लाल ।

जब तूहूँ धनिया हो जयबऽ नइहरवा से माँग के टिकवा धयले जइहीऽ हो लाल ।
घुरी-फिरी आयब टिकवा निरेखब, से जसइसे लागे धानी अभी घरवा हो लाल ।

आधी राती अगली, पहर राती पछली, से धानी बिनु मनवाँ न लगई हो लाल ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी-वियोग में पति का चिंतन ।

जिसके दरवाजे पर गंगा बहती है, वह कुँएँ पर स्नान कैसे करेगा ? उसी प्रकार जिसका पति जवान हो वह स्त्री नैहर कैसे जायगी ? पति कहता है कि हे धनी,

जब नैहर जायगी तो माँग का टीका रख कर जायगी । घूम-फिर कर घर आऊँगा तो टीका देखने से लगेगा कि प्रिय घर पर ही हैं । परंतु रात्रि के प्रथम प्रहर और अंतिम प्रहर में वह देखता है कि धानी के बिना शय्या सुशोभित नहीं हो रहा है ।

(११८)

धनियाँ चलले नइहरवा, बलमु सुसुकइया से रोवे जी।
घरवा में रोवे अँगनवाँ में रोवे, चउकठ पर सिर धरी रोवे बलमु...
सेजिया पर रोवे सेजरिया पर रोवे, तकेया पर सिर धरी रोवे । बलमु...
बागो में रोवे, बगइचा में रोवे, दरवाजा घुरी घुरी रोवे । बलमु...

अर्थ

संदर्भ–पुरुष का वियोगजन्य भाव ।

जब पत्नी नैहर चलने लगी तो पति सिसक-सिसककर रोने लगा । घर में रोता, आँगन में रोता और चौखट पर सिर धर कर रोने लगा । शय्या पर रोता और तकेया पर सिर धर कर रोते रहता । इतना ही नहीं बल्कि बाग-बगीचा में भी रोते रहता और बाहर से घूमकर आने पर दरवाजे पर रोता ।

(११९)

बाग बगइचा बिनु पीपर नऽ सोभे ,
कोइल बिनु बगिया नऽ सोभे राजा ।
सास ससुर बिना दुअरा न सोभे ,
सइयाँ बिनु सेजिया नऽ सोभे राजा ।
माय-बाप बिनु नइहर नऽ सोभे ,
बालक बिनु गोदिया नऽ सोभे राजा ।
बाग बगइचा बिनु पीपर नऽ सोभे ,
कोइल बिनु बगिया नऽ सोभे राजा ।

अर्थ

संदर्भ–पारिवारिक व्यवहार ।

पीपल वृक्ष के बिना बाग नहीं शोभता और कोयल के बिना भी बाग की शोभा नहीं । उसी प्रकार सास-ससुर के बिना दरवाजा नहीं शोभते और पति के बिना शय्या सुशोभित नहीं होती । माय-बाप के बिना नैहर की शोभा नहीं और पुत्र के बिना गोदी नहीं शोभती वैसे ही जैसे पीपल और कोयल के बिना बाग की शोभा नहीं ।

(१२०)

फूटते-किरिनिया से हरि घरवा अयलन,
माँगे लगलन नऽ ये चबेनी में मिसरिया।
सासु मरी जइहें ननद चली जइहें,
सवेरे देबवऽ नऽ ये चबेनी में मिसिरिया।

अर्थ

संदर्भ–पारिवारिक कलह में पत्नी की विवशता ।

सूर्योदय होते ही पति घर पर आ गए और नास्ता के लिए भूँजा में मिसरी माँगने लगे । इस पर पत्नी ने कहा कि सास मर जायेंगी और ननद श्वसुराल चली जायगी तब वह सवेरे भूँजा में मिसरी मिलाकर देगी ।

(१२१)

पनघटवा पर बालम निबुआ विकाय,
हम लवली दूगो, पिया लवलन एगो, पनघटवा के देली फुसलाय।
ओही निबुआ के रसवा चुअवली, रसवा भइले घइला चार,
ओही जे रसवा के चुनरी रंगवली, चुनरिया पर पियवा लोभाय,
आधी राति अइहँ सेजरिया, लड़िकवा के ठोक के सुता देबो ना।
हम सुतली खटिया, पिया गोड़थरिया, लड़िकवा के भूइयाँ में घोलटा देली ना।

अर्थ

संदर्भ--पति के प्रति प्रौढ़ा का प्रस्ताव ।

पत्नी कहती है कि हे बालम पनघट पर नीबू बीक रहा है । वहाँ से हमने दो नीबू लाया और प्रिय ने एक नीबू लाया । इस प्रकार पनघट के घटवार से ठग लिया । उन नीबूओं का रस निचोड़ा जिससे चार गगरी भर गयी । उसी रस से चुनरी रंगवायी जिसे देखकर प्रिय आकर्षित हो गया मैंने उनसे कहा कि हे प्रिय आधी रात में शय्या पर आ जाना, लड़के को ठोक ठेठा कर सुला दूँगी । रात्रि में प्रिय आया । मैं खाट पर सोयी, प्रिय पायताने में सोया और लड़के को जमीन पर सुला दिया ।

(१२२)

चंदा जे उगले किरिनियाँ, बलमू बिना नीदो नऽ आवे।
कइसे-कइसे कर के सासु के सुतवली, एतने में आ गेल गोतिनिया। बलमु...

कइसे-कइसे कर के गोतिनी के सुतवली, एतने में आ गलन ननदिया । वलमु...
कइसे-कइसे करके ननद के सुतवली, एतने में उठ गल वलकवा । वलमु...
कइसे-कइसे करके वालक के सुतवली, एतने में वोलल कोयलिया । वलमु...

अर्थ

संदर्भ–पत्नी द्वारा एकांत सृजन का प्रयास ।

चाँद की किरणें छिटक गयीं, प्रिय के विना नींद नहीं आ रही है । अभी सास जाग रही है । उसे किसी प्रकार सुलाया इतने में जेठानी आ गई । किसी प्रकार उसे भी सुलायी । इसी समय ननद आ पहुँची । उसे भी किसी तरह सुलाया । तभी बालक उठ गया । प्रिय के बिना नींद नहीं आ रही है, अत: किसी प्रकार वालक को सुलाया तभी कोयल वोलने लगी । अर्थात् सुवह की सूचना मिल गयी ।

(१२३)

दाल कइली भात कइली, पाँचो तरकरिया हो चटनिया विनु नऽ ,
पिअवा जाले इसकुलिय हो चटनिया विनु नऽ ।
कहवा से लइअई अमवाँ के खटइया, कहवाँ से लइअई नऽ ,
उजे हरिअर पुदेनवाँ, कहाँ से लइअइ नऽ ,
मलिया घर से लइहँऽ धानी, हरिअर पुदेनवाँ, हो सहेलिया घर से ना ।
लइहँ अमवाँ के खटइया हो सहेलिया घर से नऽ ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की प्रिय के भोजन की चिन्ता ।

पत्नी ने दाल-भात और पाँच तरह की सब्जियाँ बनायी लेकिन चटनी के बिना ही उसके प्रिय स्कूल जा रहे हैं । वह कहती है कि हे प्रिय, आम की खटाई कहाँ से लाऊँ और हरा पुदिना कहाँ से लाऊँ । इस पर पति कहता है कि हे धानी माली के यहाँ से हरा पुदिना लाना और अपनी सहेली के यहाँ से आम की खटाई ले आना ।

(१२४)

अमवा के लामी-लामी पात टिकोरा कोई तोड़ नऽ पावे जी ।
सोने के प्रात में जेवना लगवली, जेवे ननद जी के भइया, दोसर कोई जेवे नऽ पावे जी ।
सोने सुराही गंगाजल पानी, पीये ननद जी के भइया दोसर कोई पीये नऽ पावेजी ।
लवंग इलाइची के बीरवा लगवली, चाभे ननद जी के भइया, देसर कोई चाभे नऽ पावेजी ।

अमवाँ के लामी-लामी पातर टिकोरा कोई तोड़े नऽ पावेजी, तोड़े ननद जी के भइया।
दोसर कोई तोड़े नऽ पावे जी।

अर्थ

संदर्भ–पति प्रेमाशक्त व्यवहार।

आम के लम्बे-लम्बे पत्ते हैं। उसका टिकोला कोई तोड़ने नहीं पावे। पत्नी ने सोने की थाली में भोजन लगाया जिसे ननद के भाई (पति) ही खायेंगे। दूसरा कोई खाने नहीं पावे। सोने की सुराही में गंगाजल रखा जिसे केवल ननद के भाई ही पीयेंगे। दूसरा कोई पी नहीं सकता। लौंग-इलाइची युक्त पान का बीड़ा लगाया। इसे ननद के भाई खायेंगे। दूसरा कोई खाने नहीं पावे। अन्त में पत्नी कहती है कि आम के लंबे-लंबे पतले टिकोला हैं जिसे कोई तोड़ नहीं सकता है, केवल ननद के भाई ही तोड़ सकते हैं।

(१२५)

छोटी छोटी खजुरी के लामी-लामी पतवा हे,
रसवा चुवेला सारी रात महरजवा हे।

एके खटोलवा पर दूई गो बंकतिया हे,
चोलीबंद भिजले पसेनवाँ महरजवा हे।

भींजे हे दहूँ-भींजे दहूँ एहू चोली बंदवा हे,
धोबी घर देवई धोआई महरजवा हे।

धोबिया के पुतवा बड़ी रंगरसिया हे,
बीचे चोली देले मसकाई पहरजवा हे।

मसके देहूँ-मसके देहूँ येहू चोलीबदवा हे,
दरजी घर देबई सिलाई महरजवा हे।

दरजी के पुतवा बड़ा रंगरसिया हे,
बीचे चोली देले फूल काढ़ महरजवा हे।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी वार्त्तालाप।

छोटा खजूर के लंबे-लंबे पत्ते हैं जिससे सारी रात्रि रस चुते रहता है। एक छोटी खाट पर दो व्यक्ति-पति, पत्नी सोये हैं। गर्मी से पसीना के कारण चोली भींग

गयी । पति कहती है कि चोली भींगने दो । इसे धोबी से धुला दूँगा । पत्नी कहती है कि धोबी-पुत्र बड़ा रंगीला है । उसने चोली के बीच के हिस्से को फाड़ दिया । पति सान्तवना देता है कि चोली फटने दो । इसे दर्जी से सिलवा दूँगा । दर्जी-पुत्र भी रंगीला निकला । उसने चोली के बीच में फूल काढ़ दिया ।

(१२६)

एक मुठी धनवा बुनली पिया के सोहाग, पिया परदेश गेलन हो राम।
नइहरा से विदा भइली बहुत सबेरे, ओही मधुबनवाँ रामा भइले अति बेर।

कटबों में बन के खरई, खरई डसायब से दूनो प्रानी सुतब राम भइले कुबेर ,
तेल आने चलली तेलिया दोकान, तेलवो नऽ मिले रामा हो धानी के अभाग।

खइलूँ में पाकल पनवाँ, वीरवा लगाय दाँते मेरा हीरा रतन हो देवरा लोभाय ,
ई मत तूँ जनिहँ देवर भउजी नादान, बाबा कचहरिया देवर देववऽ बंधवाय।

ई मत तूँ जनिहँऽ भउजो देवर नदान, गड़लो चोरावल भउजो देबवऽ बँटाय।

अर्थ

संदर्भ–देवर की भाभी के प्रति आसक्ति ।

प्रिय के सोहाग-प्रतीक स्वरूप एक मुट्‌ठी धान बुन दिया । प्रभु परदेश चले गए हैं । नैहर से देवर के साथ वहुत सबेर बिदा होकर चली । मधुबन में पहुँचने पर बहुत देर हो गई । अतः उसने सोचा कि बन से खेर-पात बिछाकर दोनो लोग सो जायेंगे । रोशनी के लिए तेल लाने के लिए वह तेली की दुकान पर गयी तो दुर्भाग्य बस तेल नहीं मिला । वहीं पान का बीड़ा लगवाकर खा लिया । मेरे दाँत हीरा जवाहरात की तरह चमकने लगे जिसे देखकर देवर कामुक हो गया । इस पर भाभी कहती है कि हे, देवर यह मत समझना कि मैं अबोध हूँ । बाबा की कचहरी में सजा दिलवा दूँगी । इस पर देवर कहता है कि हे भाभी, देवर को भी नादान मत समझना गड़े हुए चोरी के धन को बटा लूँगा ।

(१२७)

पातर-पातर केसिया में पटना के कंगहिया ,
कंगही छुइहँ मत ये राजा हम नया-पातरी ।

नयका कोठरिया अन्हारी हई रतिया ,
भूलइहँ तम राजा हम नया पातरी ।

पातर-पातर सीनवा में नयका चोलिया ,
छुइहँऽ मत ये राजा हम नया पातरी ।

पातर-पातर गोड़वा में पटना के चप्पलवा ,
चपलवा छुइहँ मत ये राजा हम नया पातरी ।

नयका-कोठरिया अन्हारी हई रतिया ,
भूलइहँऽ मत ये राजा हम नया पातरी ।

अर्थ

संदर्भ– नव विवाहिता का पति-प्रसंग ।

नायिका कहती है कि मेरे पतले केश हैं और पटना की कंघी है । इसे मेरे केश में मत लगाना क्योंकि हम नयी और पतली हैं । यहाँ नयी कोठरी में रात का अन्धकार फैला है । अतः हे राजा, इसमें भूल मत जाना । तन्वंगी नायिका कहती है कि हमारी छाती में नयी चोली है । इस चोली को मत छूना । हमारे पतले पैर में पटना का चप्पल है इसे भी मत छूना । अन्धेरी रात्रि में अन्धकारपूर्ण कोठरी है इसमें भूल मत जाना राजा ।

(१२८)

सलारपुर से हो सलारपुर से, हम नकलस गढ़वली सलारपुर से ,
अपन दिल से हो अपन दिल से, हम तो लौकिट लगवली अपना दिल से ।

बासी भात में सवाद नाहीं हो सवाद नाहीं, परदेशी बलमुआँ के आस नहीं ,
फैसन के सारी बदन झलकें हो बदन झलके, परदेशी बलमुआँ के जीव ललचे ।

सलारपुर से हो सलारपुर से, बलिया हम गढ़वली सलारपुर से ।
अपन दिल से हो अपन दिल से खिलवा लगवली अपन दिल से ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की आभूषण-कामना ।

पत्नी कहती है कि सलारपुर से हमने गले का हार बनवाया और अपने मन के अनुकूल उसपर ताबीज लगवाया । लेकिन मेरा प्रिय परदेश है । उसकी जल्द आने की आशा नहीं है जिस प्रकार बासी भात में स्वाद नहीं मिलता । फैशनेबुल सारी पहनने से शरीर में रौनकता बढ़ जाती है लेकिन परदेशी बालम का जी ललच रहा होगा । सलारपुर से हमने बाला गढ़वाया और अपने मन मुताबिक उसमें खिल लगवाया ।

पेशा और नौकरी सम्बंधी झूमर

(१)

पाँच पचीस कं टिकवा गढ़ायव साठ रूपइया कं मीना जड़ी ।
कउन गली सोनरवा बसे, सोनरवा ढूढ़ा गली-गली ।
पटना भी ढूढ़ा बनारस भी ढूढ़ा, आरे ढूढ़ा गली-गली ।
कउनी गली सोनरवा बसे, सोनरवा ढूढ़ा गली-गली ।

अर्थ

संदर्भ- आभूषण गढ़वाने के लिए सोनार की खोज ।

नायिका कहती हैं कि एक सौ पचीस रुपये की मांगटीका गढ़ाऊँगी । उस पर साठ रुपये की नक्कासी कराऊँगी । इसके लिए सोनार को खोजना पड़ेगा । वह किस गली में बसता है ? मैं गली-गली में ढूँढ़ लूँगी । आरे, बनारस और पटना की गली-गली में ढूँढ़ा । वह किस गली में बसता है ?

(२)

जहाँ लगे छत्तर के मेला, ऊहाँ टिकवा विकाला,
हाँ जी टिकवा खरीदिहँऽ होसियारी से, बचके पाकेटमारी से नऽ ।

जहाँ चले छक-छक गाड़ी, उहाँ गुन्डा बड़ी भारी,
हाँ जी गड़िया पर जइहऽ होसियारी से, बचके पाकेटमारी से नऽ ।

अर्थ

संदर्भ- टीका ख़रीदने की सलाह देना ।

नायिका कहती है कि सोनपुर का मेला जहाँ लगता है, वही माँगटीका बिकता है । अतः हे प्रिय टीका होशियारी से खरीदना, पाकेटमारों से बचे रहना । वहाँ छक्-छक् करती रेलगाड़ी चलती है जिस पर बड़े-बड़े गुण्डे रहते हैं । गाड़ी पर भी होशयारी से जाना और पाकेटमारों से बचे रहना ।

(३)

पटना सहरवा में पिया पलटन भेले, खादी रंग के टोपिया पेन्हावे कंग्रेसिया,
माई रोवे एहरी, वहिन रोवे देहरी, सेजिया सुतल धानी रोवे कंग्रेसिया ।
भोई वहन लागी टिका भेजे, धानी लागी भेजे काली पतिया कंग्रेसिया ।

अर्थ

संदर्भ– स्वतंत्रता पूर्व कांग्रेस में स्वयंसेवक भर्ती होना ।

नायिका कहती है कि प्रिय पटना शहर में कांग्रेस के पलटन बने । उनलोगों ने खादी की टोपी पहना दी है । घर के आंगन में माँ रो रही है, दरवाजे पर वहन रो रही है, शय्या पर पत्नी रो रही है । वह स्वयंसेवक माय और वहन के लिए टीका भेजता है और पत्नी के लिए काली स्याही से लिखा पत्र भेजता है ।

(४)

कने गेलऽ किया भेलऽ धानी हो वड़इतिन,
हमें जयवो आरे के नोकरयिा परदेशी वाले ।

दस-दस मारल जा हई, दस-दस काटल जा हई,
वीस-वीस जा हई, काला-पनिया परदेशी वाले ।

नाऽ जाहू आरे के नोकरिया पदेशी वाले ।
केतनो कहवऽ धानी, केतनो समझयवऽ ।

हम जयवो आरे के नोकरिया परदेशी वाले ।
दस सौ रुपइया भेजवो, तोहरो भेजवो गलेहार परदेशी ।

अगिया लगो पिया दस सौ रुपया में ।
वजर परवऽ गलेहार, परदेशी वाले ।
नाऽ जाहूँ आरे के नोकरिया परदेशी वाले ।

अर्थ

संदर्भ–विश्व-युद्ध में सेना में भर्ती और पत्नी द्वारा बर्जना ।

पति कहता है कि हे माननीय धनी, किधर गई ? मेरी बात सुनो, मैं नौकरी करने के लिए आरे शहर में जाऊँगा । इस पर पत्नी कहती है, वहाँ दस लोग मारे जाने

हैं, दस लोग को हाथ पैर कट जाता है । वीसलोग को कालापानी भेज दिया जाता है । अतः नौकरी करने नहीं जाओ । पति कहता है कि हे धनी तुम कितना भी कहोगी और समझाओगी मैं तो नौकरी करने जाऊँगा ही । वहाँ से एक हजार रुपया भेजूँगा और तुम्हारे लिए गले का हार भेजूँगा । पत्नी कहती है कि एक हजार रुपये में आग लगे और गलेहार पर वज्र पड़े, नौकरी पर मत जाओ ।

(५)

पहिला नोकरिया पिया अइना भेज दिहले, अब नहीं जयवे मधुवनवाँ ।
दोसरा नोकरिया पिया कंगही भेज दिहले, अब नहीं जयबो मधुबनवाँ ।

अर्थ

संदर्भ–मनोवांछित पदार्थ मिलना और पत्नी का रुक जाना ।

पति पहली बार नौकरी पर गया तो उसने ऐनक भेज दिया तव पत्नी ने कहा अब मैं मधुबन (नैहर) नहीं जाऊँगी । दूसरी बार उसने कँगही भेज दी तो पत्नी नैहर जाना बन्द कर दिया ।

(६)

पिया खनयतन पोखरा, हमहूँ खनयबई तलउआ नैना बालमजी ।
पिया के पोखरा ढही गेले, रह गेले हमरो तलइया नैना बालमजी ।
नेहाय के आवे तलैया, नैना बालम जी ।
प्रिया उठवतन कोठवा, हमहूँ उठयबइ कोठरिया नैना बालमजी ।

पिया के कोठवा ढह गेले, रह गेले हमरो कोठिरिया नैना बालमजी ।
सोवे अयतन कोठरिया नैना बालमजी ।

पिया बनयतन खिचड़िया, हमहूँ बनयबई तरकरिया नैना.....
पिया के खिचड़ी जरी गेले, रह गेले हमरो तरकरिया नैना बालमजी ।
चीखने के अयतन तरकरिया नैना बालम जी ।

अर्थ

संदर्भ–पति का किया हुआ कार्य बेकार और पत्नी का सार्थक ।

पत्नी कहती है कि प्रिय पोखरा खनावेंगे और मैं तालाब । प्रिय का पोखरा बर्बाद हो गया और हमारा तालाब बच गया । अब बालम जी स्नान करने तालाब में

आयेंगे। प्रिय कोठा उठावेंगे और मैं कोठरी बनाऊँगी। प्रिय का कोठा ढह गया और हमारी कोठरी बच गयी। कोठरी में ही वे सोने आवेंगे। प्रिय खिचड़ी बनावेंगे और मैं तरकारी बनाऊँगी। प्रिय की खिचड़ी जल गयी और हमारी तरकारी बच गयी। इसे खाने के लिए प्रिय आवेंगे।

(७)

घर पिछुअरवा नदी नाल रे समलिया,
आ गेलई असली सोनार रे समलिया।

गढ़ देलक टीका मजेदार रे समलिया,
ननदो के भइया दगेबाज रे समलिया,
धरे अँचरवा छूवे गाल रे समलिया।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की आभूषण लालसा।

मेरे घर के पीछे नाला और नदी बहती है। किसी तरह पार कर हुनरबाज सोनार आया। उसने मजेदार टीका गढ़ दिया। जिसे देखकर ननद के भाई दगाबाज ने मेरा आँचल पकड़ लिया और गाल छूने लगा।

(८)

ऊपरे सीसा के मकान, नीचे बूट के दोकान,
बूट हो गइले सेल सारी दुनिया, हाय रे समलिया,

जिनकर बाप चौकीदार, उनकर बेटा डफेदार,
उनकर लड़की हथिन गाड़ी के इंजनियाँ, हाय रे समलिया।

ऊपरे लोहा के मकान, नीचे गेहूम के दोकान,
गोहूम हो गइले सेल, सारी दुनिया, हाय रे समलिया।

जिनकर बाप छापे नोट, उनकर बेटा पेन्हे कोट,
जिनकर बेटी हथिन टाटा के मसिनियाँ, हाय रे समलिया।

अर्थ

संदर्भ–पूर्ण आधुनिकता का चित्रण।

सुन्दर मकान है, जिस पर शीशा लगा है। नीचे चने की दूकान है चना बिक गया, हाय री दुनिया। जिनके बाप चौकीद हैं उनका बेटा दफेदार है। उनकी

लड़की गाड़ी की इंजन है । ऊपर में लोहे का मकान है और नीचे गेहूँ की दुकान है । सारी दुनिया में गेहूँ विक गया । जिनका बाप नोट छापता है उनका बेटा कोट पहनता है और उनकी बेटी टाटा की मशीन है । इसमें केवल आधुनिक शब्दों का व्यवहार और व्यंग्य है ।

(९)

टीकवा दिया जी गढ़ाय, बचवा ले गेले चोराय,
नींदिया वैरीन हुआ, तुम तो दिया न जगाय,
तुम तो दिया न जगाय, हम तो गई अनसाय।

अर्थ

संदर्भ– पत्नी का पति के प्रति।

तुमने मांगटीका तो गढ़ा दिया लेकिन उसका घुँघरु चोरी हो गई । इसमें नींद हमारी शत्रु वन गई और तुमने हमें जगाया नहीं, हम भी अन्यमनस्यक वनी रह गई ।

(१०)

पटना सहरवा में घड़ी विकतु हैं, उसमें रोसनी लगा दो ननदो ।
लाले-लाले हमरा ससुर-फुलवड़िया, मेवा तोड़-तोड़ खाय ननदो ।।

पटना सहरवा में टीका बिकतु हैं, उसमें जड़ी लगा दो ननदो ।
लाले-लाले हमरा ससुर-फुलवड़िया, मेवा तोड़-तोड़ खाय ननदो ।।

अर्थ

संदर्भ–ननद-भौजाई वार्त्ता ।

पटना शहर में घड़ी बिकती है । हे ननद, उसमें प्रकाश भर दो । हमारे श्वसुर की फुलवारी है, उसमें से मेवा आदि फल तोड़कर ननद खा रही है । पटना शहर में टीका बिकता है, हे ननद उसमें जड़ी (नग) लगा दो । ससुर की सुन्दर फुलवारी से ननद मेवा खा रही है ।

(११)

पकल लेमुआँ टपकी गयोजी, अचरवा में दाग लगी गयोजी ।
पाँच रूपइया हम धोबिया के देवो, अचरवा के दाग जरा छोड़ा दऽ ।

पाँच रुपइया रंगरेजवा के देबो, अचरवा में जरा रंग चढ़ा दऽ ।
पाँच रुपइया सोनरवा के देबो, अचरवा में जरा गोटा लगादऽ ।
पाँच रुपइया हम ननदी के देबो, अचरवा पर जरा भइया बोला दऽ ।।

अर्थ

संदर्भ– आँचल में नीबू का दाग छुड़ाना एवं पति को लुभाना ।

नायिका कहती है कि पके नीबू के गिर जाने से आँचल में दाग लग गया । वह धोबी को पाँच रुपया देगी और आँचल का दाग छुड़ाने कहेगी । पाँच रुपया रंगरेज को देगी जो रंग चढ़ा देगा । उसी प्रकार वह सोनार को पाँच रुपया देगी जो आँचल पर नक्काशी कर देगा और अंत में वह पाँच रुपया ननद को देगी और कहेगी कि आँचल पर अपने भाई को बुला दो ।

(१२)

लेमोचुस बिकाय अलई, ले देबऽ कि नऽ जी,
सुतले हऽ कि जागल हऽ कि सुनइत हऽ कि नऽ जी ?

सुतल नऽ ही, जागल ही सब सुनइत हिअऽ जी,
लेमोचुस के दाम करऽ जेब-खोलइत हिअऽ जी ।

अर्थ

संदर्भ- लेमनचुस खरीदने कहना ।

नायिका कहती है कि लेमनचुस बिकने आया है, खरीद देंगे कि नहीं ? सोये हुए हैं कि जगे हुए हैं जी ? नायक कहता है कि सोये नहीं हैं, जगे हुए हैं, सब सुन रहे हैं । लेमनचुस का दाम पूछो, जेब से पैसा निकाल रहे हैं ।

(१३)

केरे जइहें हाजीपुर से केरे जइहें पटना से केरे जइहें नऽ कलकतवा नोकरिया ?
ससुर जइहें हाजीपुर से भैंसुर जइहें पटना से सइयाँ जइहें नऽ कलकतवा नोकरिया ।

ससुर लइहें गेंडयो से भैंसुर लइहें ग्रामोफोन से सइयाँ लइहें नऽ सिनेमावाला गनवाँ ।
हुग लगे गेंडया ओसरवा लगे ग्रामोफोन, मंजरिया लगे नऽ सिनेमा वाला गनवाँ ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की लालसा ।

पत्नी कहती है कि हाजीपुर, पटना और कलकत्ता में नौकरी करने कौन जायेंगे ? पुनः वही कहती है कि ससुर हाजीपुर, भैंसुर पटना और स्वामी जी कलकत्ता नौकरी करने जायेंगे। रेडियो कौन लावेंगे और ग्रामोफोन तथा सिनेमा का गाना कौन लावेंगे ? वह कहती है कि ससुर रेडियो और भैंसुर ग्रामोफोन तथा स्वामी सिनेमा का गाना लावेंगे । दरवाजे पर रेडियो, दालान में ग्रामोफोन तथा शय्या पर स्वामीजी का लाया गाना रखा जायगा ।

(१४)

हमरा ससुरजी के झरिया नोकरिया से भेज देलन हो सीसा लागल पलंगिया ,
हमरा ससुइया जलमो बइरिनिया के फोर देलन हो सीसा लागल पलंगिया ।

हमरा भैंसुर जी के झरिया नोकरिया से भेज देलन हो मखमल के चदरिया ,
हमरा गोतनी जी जलमो बैरिनियाँ से फार देलन हो मखमल के चदरिया ।

हमरा बलमु जी के झरिया नोकरिया से भेज देलन हो हीरा लागल अंगुठिया ,
हमरा ननदिया जलमो बइरिनिया से पेन्ह लेलन हो हीरा लागल अंगुठिया ।

अर्थ

संदर्भ–नायिका के लिए भेजे गये सामान का दूसरे द्वारा प्रयोग ।

नायिका कहती है कि हमारे ससुर झरिया में नौकरी करते हैं जहाँ से उन्होंने शीशा लगा हुआ पलंग भेज दिया । हमारी सास जन्म भर की शत्रु है । उसने शीशा लगे पलंग को तोड़ दिया । हमारे भैंसुर भी झरिया में नौकरी करते हैं । उन्होंने मखमल की चादर भेज दी । हमारी जेठानी जन्म भर की शत्रु है उसने मखमल की चादर फाड़ दी । हमारे स्वामी भी झरिया में नौकरी करते हैं । उन्होंने हीरा जड़ित अंगूठी भेज दी । हमारी ननद जन्म भर की शत्रु है । उन्होंने हीरा जड़ित अंगूठी पहन ली ।

(१५)

दिल्ली भी जाना सजनवाँ, साड़ी भी लाना बसंती ,
साड़ी भी लाना जम्फर भी लाना एक चीज लाना सुरमवाँ ।

सड़िया पहिनी हम सड़क पर खड़ी, मिल गेलई सिपाही से नजरिया। साड़ी...
सुरमा लगाई हम स्कूल पर खड़ी, मास्टर से मिल गेल नजरिया ।। साड़ी...

अर्थ

संदर्भ–कुलटा नायिका की करतूत ।

नायिका कहती है कि हे साजन दिल्ली जाना और बासंती रंग की साड़ी लाना। साड़ी के साथ ही जम्फर (चोली) तथा एक और चीज–सुरमा भी लेते आना। साड़ी पहनकर वह सड़क पर खड़ी हुई तो सिपाही से नजर मिल गयी । पुनः वह सुरमा लगाकर स्कूल के नजदीक खड़ी हुई तो मास्टर से नजर भिड़ गयी ।

(१६)

दू–दू हजार के सिकड़ी गढ़वलूँ, लरिया छूट गेल सोनरा गली ।
हमर गली में चम्पा कली, पियवा छूटल कवनी गली ?

गया भी खोजली, बनारस भी खोजली, दिल्ली खोजली गली–गली ।
हमर गली में चम्पा कली, पियवा छूटल कवनी गली ?

दू–दू हजार में बलवा गढ़वली, खिलवा छूटल सोनरा गली ।

अर्थ

संदर्भ–भुलक्कड़ पत्नी ।

पत्नी कहती है कि दो–दो हजार रुपया लगाकर सिकड़ी गढ़वायी और सोनार की गली में ही इसकी लरी छूट गयी । हमारी गली में चम्पा की कलियाँ लगी हुई हैं । ना जाने हमारे प्रिय किस गली में छूट गये हैं । गया, बनारस और दिल्ली की गली–गली में खोज की। पता नहीं वह किस गली में छूट गये । दो–दो हजार रुपये का बाला गढ़वाया लेकिन सोनार की गली में ही उसका पेंच (खिल) छूट गया ।

(१७)

मोर पिया विदेसवा जाले,
आरे में मोर पिया टिकवा गढ़वले, झूमका गढ़वले मोरंगवा,

आरे में मोर पिया नथिया गढ़वले, सिकरिया गढ़वले मोरंगवा,
आरे में मोर पिया हँसुली गढ़वले, गुंजवा गढ़वले मोरंगवा,

आरे में मोर पिया बलवा गढ़वले, खिलवा गढ़वले मोरंगवा ।

(१८)

टिकवा गढ़ादऽ पिया मंगिया के बीच, पिया मन-रखना देवरवा दिलगीर ।
ले चलऽ हो देवर जमुना के तीर, उहई खेलब हो देवर रंग-अबीर ।

बलवा गढ़ा दऽ पिया गटवा के बीच, पिया मन रखना देवरवा दिलगीर ।
ले चलऽ हो देवर जमुना के तीर, उहई खेलब हो देवर रंग-अबीर ।

एक तो लरकोरिया देवर अबर हे सरीर, मत दिहँऽ हो देवर घोरल अबीर ।

अर्थ

संदर्भ–भाभी-देवर-प्रेम ।

पत्नी प्रिय से माँग का टीका गढ़ा देने के लिए कहती है । प्रिय उसके मान की रक्षा करने वाले हैं और उसका देवर दिल जितने वाले हैं । वह देवर से कहती है कि जमुना नदी के किनारे ले चलो, हे देवर, वहीं पर रंग-अबीर खेलेंगे । वह आगे कहती है कि हे स्वामी कलाई के बीच वाला गढ़ा दीजिए । उसका प्रिय मान की रक्षा करनेवाला और देवर दिल को जितनेवाला है । वह देवर से कहती है कि जमुना किनारे चले वहाँ रंग-अबीर खेलेंगे । परन्तु वह छोटे बच्चे की माँ (लरकोरी) है, कमजोर है, अतः घोले हुए रंग पड़ाने से वर्जित करती है ।

(१९)

पटना सहरवा दुपटी बजरिया, से लागे लगल हो राम दोहरे बजरिया ,
एक ओर बिकले अंगूठी मुनरिया, से दोसर ओर हो रामा बीके चुनरिया

अपनी महलिया से निकले सँवरिया, से करे लगल हो रामा अंगूठी के मोलवा ,
तोहरो से साँवरो हो मोल नहीं होतवऽ, से भेज देहू हो रामा अपनी बलमुआ ।

अर्थ

संदर्भ–पटना शहर का बाजार ।

पटना शहर की सड़क पर दोनों तरफ बाजार लगा हुआ है । एक ओर अंगूठी और मुन्दरिका बिकती है तो दूसरी ओर चुन्दरी बिकती है । अपने महल से साँवली सुन्दरी निकलती है और अंगूठी का मोल-जोल करने लगती है । इस पर दुकानदार कहता है कि हे साँवली तुम से मोल नहीं होगा । अपने स्वामी को भेज दो ।

(२०)

निकसी हम घुमन बगिया रे, सखी पहिनब धानी चुनरिया रे।
बेली भी फूले, चमेली भी फूले, बीचे-बीचे फूले गुलबवा रे । निकसी...

बेली भी तोड़ब, चमेली भी तोड़ब, बीचे-बीचे तोड़ब गुलबवा रे। निकसी...
बेली-चमेली में हार गुथायब बीचे-बीचे डालब गुलबवा रे । निकसी...

हार पहिनी हम सुतली ओसरवा, गम-गम गमके भवनवा रे ।।

अर्थ

संदर्भ–बाग-भ्रमण और फूल-चयन ।

नायिका बगीचे में घूमने निकली । वह कहती है कि हे सखि हम धानी रंग की चुनरी पहनेंगी । बगीचा में बेली फूलती है, चमेली भी और बीच-बीच में गुलाब भी फूलता है । वह सखि से कहती है कि बेली तोड़ेंगी और चमेली भी तोड़ेंगी । बीच-बीच में गुलाब को भी तोड़ लेंगी और बेली-चमेली के हार के बीच गुलाब को भी गूथेंगी । अंत में नायिका कहती है कि हार पहनकर वह ओसारे में सोयी तो सारा घर गम-गम धमकने लगा ।

(२१)

बरस गेल पनिया बिना बदरी के, बरस गेल पनिया...
कोठा भी भींजे, कोठरिया भी भींजे, भीजेला सारी दुनियाँ, बिना बदरी के...

आंगन भी भींजे, ओसरवा भी भींजे, भींजेला सारी दुनियाँ, बिना बदरी के...
बाग भी भींजे, बगिचा भी भींजे भींजेला, सारी दुनियाँ, बिना बदरी के...

अर्थ

संदर्भ–सात्विक भाव की अतिशयोक्ति ।

नायिका की सात्विक अनुभूति से सारा वातावरण आंत-प्रोत हो रहा है । आकाश में बादल नहीं है परंतु नायिका के स्वेदन से कोठा भींग गया और नीचे की कोठरी भी भींग गई । सारी दुनिया पर प्रभाव पड़ा । अविरल पसीना के चलने से ओसारे और आंगन भींगने लगे। इतना ही नहीं, पसीना बहकर बाग-बगीचा को भी भींगा दिया । सारी दुनियाँ भींग चली । इस लोक नायिका ने सूरदास की नायिका (उर बीच बहत पनारे) को बहुत पीछे छोड़ दिया है ।

विविध प्रकार के झूमर

(१)

पीलियो में कच्चा दूधवा धरकई बेमारी हे ,
ससुर घर खबर देलिअई डाक्टर बुलवलन हे ।

आगे-आगे ससुर आवथ पाछे डक्टरवा हे ,
अच्छा से तू देखिहँऽ डाक्टर कइसन हई बेमारी हे ?

अँखिया के सरद-गरम अइसन हई बेमारी हे ।
नवें महीनवें गोरी होतई नंदललवा हे ।।

अर्थ

संदर्भ–गर्भवती नारी ।

स्त्री कहती है कि कच्चा दूध पी लिया तो बीमारी हो गई । उसने श्वसुर को खबर दी तो उन्होंने डाक्टर को बुलाया। आगे श्वसुर आ रहे हैं तो पीछे से डाक्टर पहुँचा । श्वसुर ने कहा कि डाक्टर साहेब, अच्छी तरह देखें, बीमारी कैसी है ? डाक्टर ने कहा कि आँख की सर्दी-गरमी लग गई है परंतु गोरी को नवें महीनों के बाद संतान जन्म लेगी ।

(२)

जलवा लिए मैं खाड़, तलाब पर प्यासे खड़ी है जी ,
किनकर हथी बेटी-बहिनिया, किनकर हथी नारी, तलाब पर प्यासे खड़ी है जी ,
जज के बेटी, कलक्टर के बहिनी, डाक्टर के है नारी, प्यासे खड़ी है तलाब पर ।

अर्थ

संदर्भ–प्यासी नायिका के प्रति सहानुभूति ।

मैं जल लेकर खड़ा हूँ और कोई सुन्दरी तालाब पर प्यासी खड़ी है । जल पिलाने वाला पूछता है कि तुम किसकी बेटी है और किसकी बहन हो तथा किसकी नारी (पत्नी) हो ? वह जज की बेटी, कलक्टर की बहन और डाक्टर की नारी (पत्नी) है । वह तालाब पर प्यासी खड़ी है ।

(३)

गली–गली सेनूर बिकतु हैं, लेलो सोहागिन सेनूर हे ।
सेनूर करके सुतली महल में, झर गेल सब सेनूर हे ।

भोर उठतु हैं, सासु पूछतु हैं, क्या किया सब सेनूर हे ।
एक तो सासु चढ़ती जवानी, दूसरे नया सेनूर हे ।

तीसरे तोहर बेटा खेलाया, झर गया सब सेनूर हे ।
गली–गली सेनूर बिकतु हैं, लेलो सोहागिन सेनूर हे ।।

अर्थ

संदर्भ–नायिका और सिन्दूर ।

सिन्दुर बेचने वाला गली–गली में घूमकर सौभाग्यवती से सिन्दुर लेने लिए कह रहा है । नायिका सिन्दुर लगाकर अपने घर में सो गई तो सारा सिंदुर झर गया । सुबह में उठी तो सास ने पूछा कि सिन्दुर क्या किया ? पुत्रबधू ने जवाब दिया कि हे सास, एक तो पूर्ण यौवन है, दूसरे सिन्दुर भी नया है, तीसरी बात कि तुम्हारे बेटा (पति) ने झकझोरा तो सारा सिन्दुर झड़ गया ।

(४)

सती जी, ससुर–भैंसुर साहेब के नोकरिया, पिया हरजोतवा नऽ ।
सती जी, कउन गरिया देवई बाबा- भइया के कउन अगुइया के नऽ ?
सती जी बड़का गरिया देबइन बाबा भइया के, पुतवा–चिबौना अगुइया के नऽ ।

अर्थ

संदर्भ–हल जोतनेवाले पति के कारण बाप-भाई के प्रति क्रोध ।

स्त्री सती माई के पास जा कर कहती है कि श्वसुर और भैंसुर (जेठ) साहब की तरह नौकरी करते हैं और मेरा पति हल जोतता है । हे सती माई, बाबा और भाई

को कौन-सी गाली दूँ और शादी कराने वाले अग्रणी को कैसी गाली दूँ ? हे सती माई, बाबा-भाई को बड़ी गाली दूँगी और अगुआ (अग्रणी) को 'पूतवा चिबौना' अर्थात् पुत्र को चबा डालने वाली गाली दूँगी ।

(५)

आँकड़ चुनीये-चुनी सड़क पिटवली, चलेला डिजल गाड़ी, ये दिलवर जानी ।
ओही डिजल गड़िया पर ससुर के नोकरिया, भेजेला एक साड़ी, ये दिलवर जानी ।

सड़िया पहीरी हम चलली बजरिया, पूछेला मड़वारी, ये दिलवर जानी ।
केकर हहूँ तू आली-दुलारी, केकर घर के रानी, ये दिलवर जानी ?

बाबा के हम आली-दुलारी, सइयाँ घर रानी, ये दिलवर जानी ।

अर्थ

संदर्भ–मुग्धा का वैशिट्य ।

कंकड़ चुन-चुनकर सड़क बनाई गई । उसपर डिजल गाड़ी चलती है । हे दिलवर जान, उसी डिजल गाड़ी पर हमारे श्वसुर नौकरी करते हैं । वहीं से उन्होंने एक साड़ी भेजी । साड़ी पहनकर मैं बाजार चली तो वहाँ माड़वारी ने पूछा-"तुम किसकी अव्वल दुलारी हो किसके घर की रानी हो ? वह कहती है कि हम बाबा की अव्वल दुलारी हैं और अपने स्वामी घर की रानी हैं ।

(६)

सासु के चोरी-चोरी टीकवा गढ़वली, ननद छिनरो घर में लइया लगावे ,
सास मोरा मारे, ननद गरिआवे, देवर बचवा झुलफी तर लुकावे ।

गोतनी के चोरी-चोरी सिकड़ी गढ़वली, ननद छिनरो घर में लइया लगावे ,
सास मोरा मारे, ननद गरिआवे, देवर बचवा झुलफी तर लुकावे ।

अर्थ

संदर्भ–ननद और देवर के कर्म में अंतर ।

स्त्री ने सास से चुपके टीका गढ़वाया, छिनाल ननद ने घर में शिकायत कर दी । सास मारने लगी और ननद गाली देने लगी लेकिन देवर बच्चा अपनी झूलफी (घुँघराले केश) के नीचे छिपाने लगा । पुनः गोतनी से चुपके सिकड़ी बनवाई ।

ननद ने शिकायत कर दी । सास मारने लगी और ननद गाली देने लगी । फिर बच्चा देवर अपनी झूलफी में छिपाने लगा । यहाँ ननद की कुटिलता और देवर का सौहार्द वर्णित है ।

(७)

टीकवा गिरे कलौंदा के बाग में, गिर गयो जी हमारे गली पास में ,
सासु मोरा खोजे, ननद कहे भौजी, सइयाँ खोजे हो बिजुली बती बार-बार ।

सिकड़ी गिरे कलौंदा के बाग में, गिर गयो जी, हमारे गली पास में ,
गोतनी मोरा खोजे, देवर कहे भौजी, सइयाँ खोजे हो बिजुली बती बार-बार ।

अर्थ

संदर्भ–कलौंदे के बाग में आभूषण गिरना ।

नायिका–हमारी गली के पास में ही कलौंदे का बाग है, उसी में मेरे मांग का टीका गिर गया । सास खोज रही है, स्वामी बिजली की बत्ती जलाकर खोज रहे हैं, ननद कहती है कि भाभी ने भुला दिया है । सिकड़ी भी कलौंदे के बाग में गिर गई है जो हमारी गली में ही अवस्थित है । गोतनी खोज रही है, स्वामी बिजली जलाकर खोज रहे हैं । देवर कहता है कि भाभी ने ही भुला दिया है ।

(८)

लागे चतपत्ता के बढ़ना, अगनवाँ कइसे बहारूँ जी ?
ओही रे अंगनवाँ ससुरजी के डेरा, घूँघट तनइते जीया जाय हो ,
अंगनवा कइसे बहारूँ !
ओही रे अंगनवाँ भैंसुर जी के डेरा, छूआछूत मनइते जीया जाय हो ,
अंगनवाँ कइसे बहारूँ ?

अर्थ

संदर्भ–लज्जावती स्त्री ।

आंगन में तेजपत्ता का वृक्ष है जिससे पत्तियाँ गिर जाती हैं । स्त्री को आंगन बुहारने में दिक्कत होती है । वह कहती है कि आंगन को कैसे बहारूँ ? उसी आंगन में ससुरजी पड़े हैं । घूँघट तान कर आंगन बुहारने में जी जलता है, परेशानी होती है । उसी आंगन मे भैंसुर (जेठ) भी पड़े हैं । उनसे स्पर्श कर जाने का भय है । अतः आंगन कैसे बहारूँ ?

(९)

पिसत भांग देखत हरिअर लागे हरिअर लागे ,
पियत भांग सुरस लागे हो, सुरस लागे ,
उजे भंगिया के जोड़ से गरम लागे ।

चढ़त गाड़ी टीकवा डोले, उतरत गाड़ी सरम लागे ,
उजे भंगिया के जोड़ से गरम लागे ।

अर्थ

संदर्भ–भांग और उसका प्रभाव ।

भांग घोटते समय देखने में हरा लगता है । भांग पीने में रसदार लगता है जिसके पी जाने पर शरीर में गर्मी आ जाती है । शरीर काँपने लगता है । गाड़ी पर चढ़ते समय मांग का टीका डोलने लगता है और गाड़ी से उतरते समय, वैसी अवस्था में, शर्म लगती है।

(१०)

देवरा कहे भउजी जलवा लगा दऽ, सइयाँ कहे न लगइहँऽ दुलारी ।
अन्हारी घर देवरा दे गेले गारी ।

देवर के गारी जइसे चले कटारी, सइयाँ के गारी लगे प्रेम प्यारी ।
अन्हारी घर देवरा दे गेले गारी ।

देबरा कहे भउजी जेवना लगा दऽ, सइयाँ कहे न लगइहँऽ दुलारी ।
अन्हारी घर देवरा दे गेले गारी ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी, देवर ।

देवर कहता है कि भाभी, जल लगा दें । स्वामी कहता है कि हे दुलारी, जल मत लगाओ । इसी बीच अंधेरे घर में देवर गाली देकर चला गया । देवर भोजन लगाने कहता है और पति मना करता है तो देवर गाली देता है । पत्नी कहती है कि देवर की गाली कटार की तरह चुभने वाली होती है और स्वामी की गाली भी प्रेम से पूर्ण होती है ।

(११)

धनवा कुटीये-कुटी भुसवा बटोरली,
से भुसवा बरोबर बइगन लेली हो लाल।

बइगन चिरीये-चिरी तियना वनौली,
से मोरो भैंसुर बैठलन जेवनरवा हो लाल।

जेवनो न जेवे भैंसुर मुखहूँ न बोले,
से घूरी-फिरी निरखे जोबनवाँ हो लाल।

खीसिया के मातल हम गेली चुल्हनिया,
से बेलना फेंकिए भैंसुर मारली हो लाल।

दौड़ल-दौड़ल गेलन हरवहिया भइया,
से लुतरी लगवलन हो लाल।

रोज-रोज भवहू मुखहूँ न बोललन,
आज काहे बेलना से मारलन हो लाल।

हथवा में लेले पिया रेड़ के छेकुनियाँ,
धनियाँ से पूछे दिलबतिया हो लाल।

रोज काहे धनियाँ मुखहूँ न बोललऽ,
आज काहे बेलना से मारलऽ हो लाल।

रोज काहे भैंसुर करे जेवनरवा,
आज काहे जोबना निरेखे हो लाल।

कोठिया अलोते धानी होइहँऽ
तू खाड़ा, भइया देखाई तोहरा मारबो हो लाल।

अर्थ

संदर्भ–परिवार में भवह-भैंसुर व्यवहार।

स्त्री कहती है कि धान कूटकर भूसा जमा किया और भूसे से बैगन खरीदा। बैगन काटकर तरकारी बनायी और भैंसुर खाने बैठे। भैंसुर खाना खा रहे हैं और मुँह से बोल नहीं रहे हैं बल्कि घूम-फिरकर मेरा स्तन देख रहे हैं। मुझे क्रोध आया और रसोई घर से बेलन लाकर जेठ को फेंक मारा। वे दौड़ कर हर जोतते छोटे भाई

के पास गए और मेरी झूठी शिकायत की कि भावह कभी मुख से भी नहीं बोलती थी और आज बेलन फेंक कर क्यों मार दिया ? सुनकर छोटा भाई रेड़ की डाली लेकर घर पहूँचा और पत्नी से वास्तविक बात पूछने लगा कि हे धनी, नित्य भैया से मुँह भर भी नहीं बोलती थी और आज बेलन से क्यों मार दिया ? पत्नी ने जवाब दिया कि रोज भैंसुर भोजन कर लेते थे आज मेरा स्तन क्यों देख रहे थे ? इस पर भाई को खुश करने के लिए पति ने पत्नी से कहा कि तुम कोठी की आड़ में खड़ी हो जाना और मैं भाई को दिखाकर तुम्हें पिटने का प्रदर्शन करूँगा ।

(१२)

बालू-रेतिया पर गगरी भरबऽ कइसे, सासुजी के सड़िया पेन्हव कइसे ?
अरज हई छोट, पहिनब कइसे, गोतनी संग मैदान घूमब कइसे ?

मैदान बड़ा छोट, घूमब कइसे, ननदी संग गुड़िया खेलब कइसे ?
गुड़िया है छोट खेलव कइसे, स्वामी संग सेजिया सोअब कइसे ?
सेजिया हई छोट सोअव कइसे ?

अर्थ

संदर्भ–नव विवाहिता की कामना और विवशता ।

ससुराल में बालू की रेती पर गागर कैसे भरूँगी । सास की दी हुई साड़ी में अर्ज कम है, उसे पहनकर गोतनी के साथ मैदान में कैसे घूमूँगी ? मैदान भी छोटा है । ननद के साथ गुड़िया का खेल कैसे खेलूँगी और गुड़िया भी तो बहुत छोटी-छोटी हैं । इतना ही क्यों, शय्या भी छोटी है, उस पर पति के साथ कैसे सोऊँगी ? सर्वत्र विवशता ही विवशता है ।

(१३)

ऊँचही घरवा के नीचे हई दुअरिया ,
से चारो ओर लगले ओसरवा हो लाल ।

निहुरी-निहुरी हम अगना बहरली ,
से टप्-टप् चुवे हई पसेनवाँ हो लाल ।

अपने महलिया से निकले बलमुआँ ,
से झटसिन पोछलन पसेनवाँ हो लाल ।

झर रे झरोखा चढ़ी सासु निरेखले ,
से आज बेटा बनलन नोकरवा हो लाल ।

जाही दिन से सासु जी धयलन अंगुठवा ,
से ताही दिन से बेटा तोर नोकरवा हो लाल ।

अर्थ

संदर्भ–पत्नी-पति सम्बंध और सास की ईर्ष्या ।

ऊँचे घर में दरवाजा नीचा है उसके सटे चारों ओर दालान है । मैं निहुर कर आंगन बहार रही थी तो टप्-टप् पसीना चूने लगा । इसे देखकर अपने घर से मेरे पति निकले और जल्द ही पसीना पोंछ दिया । कोठे की खिड़की से सास देख रही थी । उसने कहा कि आज मेरा बेटा नौकर बन गया । इसपर पत्नी ने कहा कि हे सास जिस दिन से उन्होंने मेरा अंगूठा पकड़ा उसी दिन से आपके पुत्र मेरे नौकर बन गए । (विवाह में पत्नी के पैर का अंगूठा पकड़ना एक रीति है ।)

(१४)

घर से सेजिया सोके अयलन दुअरे पोरा में लुकयलन ,
अब तो गली-गली में पिअवा खोजात हई, जीयरा डेरात हई नऽ ,
अब तो हाजीपुर में लगल हे बाजार, पलटन उतरल हजार ,
अब तो लालफीता से पिअवा नपात हई, जीयरा डेरात हई नऽ ।

अर्थ

संदर्भ–अंग्रेज काल में युद्ध में जबर्दस्ती सेना में भर्ती ।

स्त्री कहती है कि सेना में भर्ती करने के लिए बुलाहट आ गयी है । उसका पति घर से सोकर आया तो दरवाजा के पुआल में छिप गया । उसे सेना में भर्ती करने वाले लोग गली-गली में खोज रहे हैं । इससे पत्नी का जी घबरा रहा है । हाजीपुर में लोगों का बाजार लगा हुआ है । उसमें हजारो सैनिक उतर गये हैं । मेरे पति को भी वहाँ जाना है । अत: उसे लाल फीता से नापकर उसकी जाँच की जा रही है जिसकी वजह से स्त्री का जी घबरा रहा है ।

(१५)

ससुर भेजेला एक साड़ी कागज में भर के ,
सासु बोले बिरही बोली अटारी चढ़के ,

खाना जहर मरी जाना इनरा में डूवके ,
पटना से अयले एक मेमिन साइकल पर चढ़के ,
पूछे-कइसे मरले वृजाभार हो इनरा में डूबके ।

अर्थ

संदर्भ–सास-पुतोह अविश्वास ।

श्वसुर ने पुत्रवधू के लिए कागज में लपेटकर एक साड़ी भेजी । इसे देखकर सास ने व्यंग्य (कुबोली) किया । संदेहात्मक बोली सुनकर पुत्र-वधू जहर खा गई और कुएँ में डूब गई । इस खवर को सुनकर पटने से महिला अधिकारी आई और पूछने लगी कि 'वृजाभार' (वह नारी) कुएँ में डूवकर कैसे मरी ?

(१६)

सासु कहे पुतहू जलवा लगा के रखिहँऽ ,
पिया कहे धानी चलके सिनेमा देखऽ ।

अपने सिनेमा देखे हमरो वगल में रखे ,
लगी गेले चोटिया में दाग, हमरो हरी जी के ।

गोतिनी कहे बहुआ जेवना लगा के रखिहँऽ ,
पिया कहे धानी चलके सिनेमा देखऽ ।

अपने सिनेमा देखे हमरो बगल में रखे ,
लग गेले चोटिया में दाग, हमरो हरी जी के ।

अर्थ

संदर्भ–परिवार की बात नहीं, पति की बात मानना ।

सास, पुतोह को जल लगाने कहती है और पति कहता है कि प्रिये, चलकर सिनेमा देखो । वह पति के साथ बगल में बैठकर सिनेमा देखती है । इसी बीच उसके हरि जी (पति) की चोटी में दाग लग गया । इसी प्रकार गोतनी भी भोजन लगाने कहती है और स्त्री पति के साथ सिनेमा देखने चली जाती है और बगल में बैठे पति की चोटी में दाग लग जाता है ।

(१७)

पूरब पछिमवाँ में झांझर कुइयाँ से पनियाँ भरले ललमनियाँ ।
घोड़वा चढ़ल आवे पतरी सिपहिया से पनिया पिया दे ललनियाँ ।

कइसे में पनिया पिअइअई सिपहिया से जतिया के हियई डोमिनियाँ ।
गलवा में सोभई सँवरो सोने के सिकरिया, तूँ जतिया छिपवले ललमनियाँ ।

अर्थ

संदर्भ–जाति से ऊपर सौन्दर्य का स्थान ।

गाँव से बाहर एक टूटा-फूटा कुआँ है । उस पर लालमनी एक अन्त्यज्य कन्या पानी भर रही है । उधर से घोड़े पर चढ़ा हुआ एक पतला सिपाही आता है और लालमनी से पानी पिलाने कहता है । इस पर वह कहती है कि हम जाति की डोमिन हैं । हम अछूत होकर पानी कैसे पिलायें । इसपर वह सिपाही कहता है कि हे साँवली तुम्हारे गले में सोने की सिकड़ी सुशोभित हो रही है, इससे तुम्हारी वास्तविकता प्रकट होती है । तुमने अपनी जाति छिपा ली है ।

(१८)

पाँच रूपइया के टीका गढ़वली, दस रूपइया के साड़ी हो देहिया भेलई भारी ।
अब नऽ विदेसिया से बोलब हो, देहिया भेलई भारी ।

कोठा ऊँपर पिया सीसा झलकावे, झलके सुदामा के साड़ी हो ,
देहिया भइल भारी, अब नऽ विदेसिया से बोलब हो ।

पाँच रूपइया के हँसुली गढ़वली, दस रूपइया के साड़ी हो देहिया भेलई भारी ,
कोठा ऊपर पिया सीसा झलकावे, झलके सुदामा के साड़ी हो देहिया भेलई भारी ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी आकर्षण और गर्भधान का परिणाम ।

स्त्री ने पाँच रुपये में टीका गढ़वाया । दस रुपये की साड़ी पहन ली । पति आकृष्ट हुआ तो देह भारी हो गई (गर्भाधान) । अब उसे परेशानी उठानी पड़ रही है जिससे वह कहती है कि अब वह अपने विदेशी पति से बातचीत नही करेगी । परन्तु पति कोठे के ऊपर से ही दर्पण दिखाता है जिससे उसकी (सुदामा) साड़ी प्रतिबिम्बित हो उठती है परन्तु उसका भारी देह रहने के कारण पति से नऽ बोलने वाली कसम याद आ जाती है । अब से विदेशी प्रिय के साथ न वोलना चाहती है । इसी प्रकार उसने पाँच रुपये की हँसुली गढ़वा ली और दस रुपये की साड़ी पहन ली । कोठे से उसका पति ने दर्पण दिखाया तो सुदामा की साड़ी झलकने लगी । परन्तु देह तो भारी हैं ।

(१९)

एक भर सोनवा हम गया से मँगवली से ,
हाजीपुर से आ गेलई सोनार छोटी ननदी ।

अंगना बइठी हम टीकवा गढ़वली से ,
तोरो भइया हो गेलन नराज छोटी ननदी ।

केता दिन तोरा भइया रहिहें नरजिया से ,
जेवना बिनु देबइन छछनाय छोटी ननदी ।

अर्थ

संदर्भ–भाभी-ननद-संवाद ।

भाभी छोटी ननद से कहती है कि हमने गया से एक भर सोना मँगवाया और हाजीपुर से एक सोनार आ गया । उससे अपने आँगन में बैठ कर टीका बनवाया । उसे देखकर हे ननद, तुम्हारे भाई बिगड़ गये । पुनः वह आगे कहती है तुम्हारे भाई कितने दिन नाराज रहेंगे उन्हें खाने बिना छछना दूँगी ।

(२०)

पिया परदेस गेलन, भेजे नऽ खबरिया ,
सूनू ननदी मोरी हे, कइसन उनकर जियरा कठोर ।

सावन गरजे, भादो बरसे, भादो बरसे ,
सूनू ननदी मोरी हो मदन सतावे जुलुम जोर ।

सबके बलमुआ घर लवटी अयलन ,
सूनू ननदी मोरी हे, तोरो भइया के जियरा कठोर ।

अर्थ

संदर्भ–वियोगिनी पत्नी का ननद से वार्तालाप ।

पत्नी कहती है कि प्रिय परदेश चले गये हैं और उन्होंने कोई खबर नहीं भेजी है । हे ननद, सुनो, उनका हृदय कितना कठोर है । सावन गरज रहा है, भादो बरस रहा है और कामदेव सता रहा है । उसका अत्याचार बढ़ रहा है । हे ननद, सभी का प्रिय घर लौट रहा है लेकिन तुम्हारे भाई का जी बहुत कठोर है ।

(२१)

बरजोरी करत बनवारी फोरत गगरी,
बनवारी घेरी रहिया फोरत गगरी।

दही बेचे जाले से मथुरा नगरी,
फोरी-फोरी गगरी भिंजावे चुनरी।

नँदबाबा के हइन लमहर पगरी,
अब नऽ बसीहें रउआ नगरी।

अर्थ

संदर्भ–श्री कृष्ण का गोरस लीला।

गोपी कहती हैं कि बनवारी मेरी गगरी जबरदस्ती फोड़ रहे हैं। मार्ग रोककर गगरी फोड़ रहे हैं। गोपी दही बेचने मथुरा जा रही थी। श्री कृष्ण ने मटकी को फोड़कर उसकी चुनरी भींगा दी। वह नन्दबाबा के घर जाकर उलहना देती है कि आप महान हैं (आपकी पगड़ी बड़ी है) लेकिन अब से हम आप के नगर में निवास नहीं करेंगे।

(२२)

पनघटवा नऽ जइबो गगरी भारी।
झाँझर गेड़ुवा गंगाजल पानी, पनियो नऽ पिये मनाय हारी।
साने के थारी में जेवना परोसल, जेवनो नऽ जेवे मनाय हारी।
कलिया चुनीये चुनी सेजिया डँसवलूँ, सेजियो नऽ सोवे मनाय हारी।
पाँचही पान के विरवा लगवलूँ, विरवो नऽ चाभे मनाय हारी।
पनघटवा नऽ जइबो गगरी भारी।

अर्थ

संदर्भ–पति को पत्नी द्वारा मान-मनौवल।

स्त्री कहती है कि गगरी भारी है पनघट से पानी लाने नहीं जाऊँगी। झीने वर्तन में गंगा का जल रखा है उसे वह पति को पिलाना चाहती है। लेकिन वह पीता नहीं है। सोने की थाली में भोजन परोस दिया गया है। पति भोजन नहीं करता। पत्नी प्रिय को मनाकर हार गयी है। कलियों को चुनकर उसने शय्या को सुसज्जित किया

लेकिन उसका पति सोता नहीं है वह मनाकर हार गयी । इसी प्रकार उसने पाँच-पाँच पान का पाँच तरह का वीड़ा लगाया लेकिन वह पान का वीड़ा नहीं चाभता । पत्नी मान-मनौवल कर थक गयी ।

(२३)

टिकवा गढ़ादऽ पिया साठ सत्तर के बचवा गढ़ादऽ पिया कोठा चढ़ी के ,
गाँव घर के मुखिया राजा चुनी बिछी के, कोटवा जे बाँटत रहन मुँह चिन्ही के ।

सास-ननद कहे आटा पीसे के, पियवा जे कहेला सिनेमा देखे के ।
गाँव घर के मुखिया बाबू चुनी-बिछी के, कोटवा जे बाँटत रहे मुँह चिन्ही के ,

सास आउ ननद कहे, रोटी बेले के, पियवा जे कहेला सिनेमा देखे के ।

अर्थ

संदर्भ–पति-पत्नी और परिवार में वैचारिक वैषम्य ।

पत्नी पति से कहती है कि साठ-सत्तर रुपये का टीका गढ़वा दें और थोड़ा ऊँचा बढ़कर बचवा (घुंघरू) लगवा दें । गाँव-घर के मुखिया मुँह देखकर और चुन बीछकर राशन का सामान बाँटता है लेकिन हमलोग ने उसे चुनाव किया है । पत्नी आगे कहती है कि सास और ननद घर पर आँटा पीसने के लिए कहती है परन्तु प्रिय सिनमा देखने कहते हैं । पुनः सास-ननद रोटी बेलने कहती हैं और प्रिय सिनेमा देखने कहते हैं ।

(२४)

सूट कयलन वूट कयलन, हाँके के सइकिलिया हो ,
सायकिल के हैंडिल टूटल, गिरले ललनवाँ हो ।

मइया धयले कमर, धानी सिरहनवाँ हो ,
परेमवाँ में बसल हइन ललन के परनवाँ हो ।

अर्थ

संदर्भ–आधुनिकता और प्रेमावेश ।

सूट और जूता पहनकर नायक सायकिल हाँक रहा था और उसका मन प्रिया पर आसक्त था । सायकिल का हैंडल टूट गया और पति (ललनवाँ) गिर गया । उसकी माँ कमर दबा रही है और पत्नी सर पकड़े हुए हैं । ललन का प्राण प्रेम में बसा हुआ है ।

(२५)

पिपरा के पतवा फुनुगिया झरई हे ननदो ,
से मोर जियरा जरऽ हई हे छोटी ननदो ।

बावा घर के टिकवा रहइते तो पेन्हती ,
से मोर जियरा झरऽ हई हे छोटी ननदो ।

पिपरा के पतवा फुनुगिया झरई हे ननदो ,
से मोर जियरा जरऽ हई हे छोटी ननदो ।

बाबा घर के सिकड़ी रहइते तो पेन्हती ,
से मोर जियरा जरऽ हई हे छोटी ननदो ।

अर्थ

संदर्भ–आभूषण-प्रियता ।

पीपल वृक्ष की फुनगी से पत्ते झर रहे हैं, हे छोटी ननद मेरा जी जल रहा है । यदि पिता घर का टीका रहता तो पहनती । मेरे पास कुछ नहीं रहने से मेरा जी दुखी है । पुनश्च, पिता घर की सिकड़ी रहती तो पहनती, नहीं रहने से मेरा जी जल रहा है ।

(२६)

टिकवा सड़स के मोती बचवा है हवलेदार, गढ़वा के नीचे-नीचे ,
घरवा जायदऽ हो लाल, गढ़वा के नीचे-नीचे ।

एक तो बड़े बाबू के बेटी दूसरे है बदनाम, गढ़वा के नीचें-नीचे ,
घरवा जायदऽ.....

सिकड़ी सड़स के मोती गुंजवा है हवलेदार, गढ़वा के नीचे-नीचे ,
एक तो बड़े बाबू की बेटी दूसरे है बदनाम, गढ़वा के नीचे-नीचे ।
घरवा जायदऽ.....

अर्थ

संदर्भ–नायिका को मार्ग में अवरोध ।

टीका जिसमें हल्का घुँघुरू लगा है जिसे पहनकर नायिका किला के नीचे से होकर घर जा रही है । किसी ने उसे रोकने का प्रयास किया तो नायिका कहती है

कि वह बड़े घर की बेटी है । रोक-टोक करने से उसकी बदनामी बढ़ेगी । अतः उसे घर जाने दें । सिकड़ी भारी है उसमें मोती के हलके गूँज लगे हैं । वह उसे पहनकर गढ़ के नीचे से गुजर रही है तो रोकने वालों को कहती है कि वह बड़े घर की बेटी है, इससे इसकी बदनामी फैलेगी । अतः उसे गढ़ के नीचे से होकर घर जाने दें ।

(२७)

हेरायल मोरा कंगना भइया तोरा अंगना ,
बाबा बोलावे नइहरवा में अइहँ ,
हमहुँ कमाके देबो नइहर में गहना ,
भइया तोरा अंगना, भुलायल मोरा कंगना ।

भइया बोलावे नइहरवा में अइहँ ,
सखिया बोलावे तोरा अंगना ,
भउजी बोवाले नइहरवा में अइहँ ,
हमहुँ देबवऽ तोरा कंगना ।
हेरायल मोरा कंगना भइया तोरा अंगना ।

अर्थ

संदर्भ–मायके में आभूषण भूल जाना ।

नायिका कहती है कि हे भाई तुम्हारे आंगन में मेरे हाथ का कंगन भूल गया है । उसके पिता मायके में बुला रहे हैं और कहते हैं कि मैं कमाकर तुम्हारा कंगन बनवा दूँगा । भाई भी कह रहा है कि तुम्हारी सखी हमारे आँगन में बुला रही है । भाभी भी उसे मायके में बुला रही है । वह भी कंगन देने के लिए तैयार है ।

(२८)

ये जी टिकवा आउ बचवा मोहे दिल में गड़ी ।
ये जी लाली नगीना उछलके पड़ गई ।

ये जी चाँदी के रुपइया भारत-गारत हो गई ।
ये जी जाली नोट के रुपइया चलानी हो गई ।

ये जी नइहर के जवानी मस्तानी हो गई ।
ये जी ससुरा में जवानी पानी-पानी हो गई ।

अर्थ

संदर्भ–आधुनिकता ।

नायिका कहती है कि टीका और उसका घुँघरू मेरे दिल में गड़ गया है । लाल-लाल नगीना गिर गये । चाँदी के रुपये भारत से गायब हो गये और उसकी जगह पर जाली नोट प्रचलित हो गये । उसी प्रकार मायके की अल्हड़ जवानी ससुरार जाते ही बर्वाद हो गयी ।

(२९)

जीरा जवाइन के लगलई बजार हो, बजरिया रउआ चले के पड़ी ।
टिकवा पर चुवले गुलाब, बलमुआ कीने के पड़ी । जीरा जवाइन...
नथिया पर चुवले गुलाब, बलमुआ कीने के पड़ी । जीरा जवाइन...

अर्थ

संदर्भ–पत्नी की आभूषण प्रियता ।

पत्नी प्रिय से कहती है कि जीरा-जवाइन और आभूषण के बाजार लगे हैं । आपको वहाँ चलना पड़ेगा । वहाँ टीका पर गुलाब जल की वर्षा हो रही है । अतः उस टीके को खरीदना पड़ेगा । उसी प्रकार नथिया भी गुलाब जल से सराबोर है । अतः हे प्रिय उसे खरीदना पड़ेगा ।

(३०)

बाबा बारह बरीस के हमरो उमरिया, सादी करेला बरबादी करेला ।
बाबा साठ बरीस के दमाद खोजेला, सादी करेला बरबादी करेला ।

कोठवा ऊपर बुढ़वा जलवा माँगेला, सखि सब पूछे बुढ़वा के लगेला ?
लाजे कहिला बुढ़वा ससुर लगेला, सखि सब पूछे बुढ़वा के लगेला ।

अर्थ

संदर्भ–बेमेल विवाह ।

लड़की पिता से कहती है कि मेरी उम्र बारह वर्ष की है । इस उम्र में सादी कर मुझे बर्बाद किया जा रहा है । वह कहती है कि पिता जी ने साठ बरस का दामाद खोजा है । जिससे शादी कर मुझे बर्बाद कर दिया है । वह बूढ़ा कोठे के ऊपर से ही पानी माँगता है और मेरी सखियाँ पूछती है कि वह बूढ़ा कौन लगता है ? लज्जावश वह किशोरी कहती है कि वह मेरा ससुर लगता है ।

(३१)

टीकवा हई असल सोना, वचवा पर जादू टोना ।

एक दुख बाबा देलन, एक दुख भइया देलन ,
एक दुख देलन भगवान वालक विनु ।

नऽ सांभ सिर के सेनुरवा वलमुआ विनु ,
सिकरी हई असल सोना वचवा पर जादू टोना ।

अर्थ

संदर्भ–विधवा का विलाप ।

विधवा कहती है कि टीका असली सोना का बना हुआ है लेकिन उसके घुँघरू में जादू-टोना किया हुआ है । ऐसा लगता है कि पिता और भाई ने ऐसा किया है । उसपर भगवान ने नि:संतान बना दिया है । पति के बिना सिर सिन्दूर विहीन हो गया है । इस तरह विभिन्न गहनों को याद कर वह नि:संतान विधवा प्रलाप कर रही है ।

(३२)

सोने प्रात में जेवना लगवलूँ, जेवत होइहें नऽ गोरखपुर टिसनियाँ ।
टूट गइले तरवो कटि रे गइले लइनिया, गजब कइले हे कॉलेज के लड़िकवा ।

सोने सुराही गंगाजल पानी, पियत होइहें नऽ गोरखपुर टिसनियाँ ।
पाँच पाँच पनवाँ के विरवा लगवली, चाभत होइहें नऽ गोरखपुर टिसनियाँ ।

टूटी गेले तरवा कटि रे गइले लइनियाँ गजब कइले हे कालेज के लड़िकवा ।

अर्थ

संदर्भ–1942 का जन-आन्दोलन ।

देश में सर्वत्र तार काटे जा रहे हैं, रेल की लाइन उखाड़ी जा रही है । नायिका का पति गोरखपुर स्टेशन पर रूक गया है । वह घर पर सोने की थाली में भोजन परोस रखती है, लेकिन उसका प्रिय गोरखपुर स्टेशन पर कुछ खा रहा होगा । पत्नी सोने की सुराही में गंगाजल भरकर रखी हुई है और उसका पति गोरखपुर स्टेशन पर पानी, पी-रहा होगा । पत्नी पाँच पान का बीड़ा लगाये हुए है लेकिन उसका पति तो गोरखपुर स्टेशन पर है । लड़कों ने गजब कर दिया है । लाइन उखड़ गई है ।

(३३)

राजा जी गोड़वो नऽ धोवे मनवाँ लाइके, टिकस कटाई के नऽ ।
राजा जी का कयलऽ काँचे लेमुआ तोड़के, बहिया झकझोर के ।

राजा जी अपने घूमे हावड़ा बजार में, हमरा छोड़े बिहार में ।
राजा जी जेवनो नऽ करे मनवा लाइके, टिकस कटाई के नऽ ।

अर्थ

संदर्भ–आधुनिक पृष्ठभूमि में प्रेमालाप ।

पत्नी कहती है कि उसका प्रिय टिकट कटाकर आया तो घर पर मन लगाकर पैर भी नहीं धो रहा हैं । वह पूछती है कि हे राजा आपने ऐसा क्यों किया तो राजा ने वाँह पकड़कर झिकझोर दिया और अपने कचे नींबू (स्तन) को तोड़कर क्या किया । आप तो कलकत्ते के बाजार में घूमते हैं और हमें बिहार के गाँव में छोड़ दिया । उसका पति टिकट कटाकर घर आया तो मन लगाकर खाना भी नहीं खा रहा है ।

(३४)

बिन्दिया कहाँ गिर गई, ना जानूँ राम ।
ना जानूँ बिन्दिया बागो में गिर गई, कलिअन से लपट गई, ना जानूँ राम ।

ना जानूँ बिन्दिया पनघट में गिर गई, पनघट से लपट गई, ना जानूँ राम ।
ना जानूँ बिन्दिया चुन्दरी पर गिर गई, चुन्दरी में समा गई, ना जानूँ राम ।

ना जानूँ बिन्दिया अटरिया पर गिर गई, केरे मन में अटक गई, ना जानूँ राम ।

अर्थ

संदर्भ–बिन्दी का भूलना और नायिका की खोज करना ।

नायिका कहती है कि ललाट की बिन्दी कहाँ गिर गई, पता नहीं । वह कहती है कि बिन्दी बगीचे में गिर गई और कलियों में लिपट गयी, पता नहीं । पुनः वह कहती है कि बिन्दी पनघट में गिर गई और उसी में तो लिपट नहीं गई ? क्या बिन्दी चुन्दरी पर गिर कर उसी में समा गयी, नहीं जानती । अंत में कहती है कि बिन्दी कोठे पर गिर गई और किसके मन में अटक गयी, हे राम मैं नहीं जानती ।

●

मगध प्रदेश के विविध गीत

विविध लोकगीतों के अंतर्गत बालगीतों का उल्लेख महत्वपूर्ण है क्योंकि बच्चों में प्रचलित या बच्चों के लिए गाए जानेवाले लोकगीत सभी जनपदों में प्राय: मिलते हैं । मगध की मगही भाषा में भी ऐसे लोकगीत प्रचुर मात्रा में मिलते हैं । वैसे लोकगीत जो बच्चे खेल-खेल में स्वयं गाते हैं और वैसे गीत जिसे दूसरों के द्वारा बच्चों के लिए सुनाए जाते हैं । प्रथम कोटि के गीत शुद्ध मनोरंजन के लिए होते हैं । परन्तु उनमें निहित उपदेशात्मक तत्व और शिक्षा के तत्व भी यत्र-तत्र वर्त्तमान मिलते हैं । ऐसे गीतों में कभी-कभी तो जीवन-जगत की दार्शनिक बातें भी प्रकारांतर से अभिव्यक्त मिल जाती है । दूसरों द्वारा के बच्चों को सुनाए जानेवाले लोकगीतों में माताओं की लोरियाँ प्रमुख हैं । कभी-कभी उपदेशात्मक बाल-चरित्र निर्माणार्थ भजन भी सुनाया जाता है । यहाँ सभी प्रकार के बालगीतों के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं ।

माता द्वारा सुनाई जानेवाली बच्चों की लोरियाँ

(१)

झलर-मलर के पतवा , बाबू खाय दूध-भतवा , बिलइया चाटे पतवा ।
चाटते-चाटते गेले पिछुअरवा, कुकुरा धरकई भरअकबरवा ,
छोड़-छोड़ कुकुरा अब न अयबो तोर पिछुअरवा ।

भावार्थ

माँ बच्चे को लोरी गाकर मनोरंजन करती है, कभी-कभी लोरी गाकर सुलाती भी है । बच्चे मधुर राग को सुनकर माँ की गोदी या खाट पर सो जाते हैं । माँ की गोदी में बच्चों का आनंद अतीन्द्रीय होता है । अति प्राचीन काल से लोरी गाकर सुलाने की लोकरीति प्रचलित है । यशोदा भी श्री कृष्ण को लोरी गाकर सुलाती है ।

यशुमति पालने झुलावे हलरावै, दुलरावे, मल्हावै, जोई-सोई कछु गावे ।
मेरे लाल को आवै निंदरिया, काहे न बेगि सुलावे ।। आदि

भावार्थ

प्रस्तुत लोरी में भी माँ बच्चे को समझा-सुला रही है । झल-मल पत्ते पर मेरा बाबू दूध-भात खाता है और फेंका हुआ पत्ता बिल्ली चाटती है । बिल्ली पत्ते को चाटते-चाटते घर के पिछवाड़े चली गई जहाँ कुत्ते ने उसे धर दबोचा । बिल्ली बार-बार कहती है कि हे कुकुर भाई मुझे छोड़ दो, अब मैं तुम्हारे पिछबाड़े नहीं आऊँगी ।

(२)

बाबू रे बबुरइया रे,
बर्त्तन खेले अढ़इया रे,
सब लइकन के भइया रे।

धान बेच के सोना लेवे,
केकर होवे सइयाँ रे ।।

भावार्थ

हे मेरे बाबू तू बाबुओं में राय है, राजा है, सभी लड़कों के बड़े भाई हो । चतुर है, धान बेचकर सोना खरीदते हो, किसके मालिक बनोगे ? यह भी लोरी गीत है जिसे सुनकर बच्चे संतुष्ट होकर सो जाते हैं ।

(३)

बाबू रे तू काहेला अंगियाला कि टोपिया ला ।
कि फुआ-छिनार के गोदिया ?

भावार्थ

माँ अपने रोते हुए शिशु को बहला रही है और साथ ही अपनी ननद के साथ परिहास भी कर रही है । हे बाबू, तू क्यों रो रहे हो ? अंगा (अंगरखा-अंगरक्षा) या टोपी लोगे ? या छिनाल फुआ की गोद में जाओगे ।

(४)

आव रे गइया, छिपवा में लइया,
मइया घरूअरिया, बप्पा तरूअरिया ।

भावार्थ

शिशु को खेलाने वाली धाय या बहन कहती है कि हेक गाय, तू आ जाओ, बाबू को दूध पिला जाओ, थाल में मिठाई (लाई) लेते आना । बाबू की माँ घर-गृहस्थी में लगी है और इसका पिता रणक्षेत्र में तलवार चला रहा है । (माँय के बाद गाय ही बच्चों को दूध से पालती हैं)

(५)

बाबू रे तू काहेला, रोइत हऽ तू काहेला ?
मइया बप्पा गेलथुन चिचोर कोड़ना ,
साँझ खानी देख लिहँऽ भर अगना ।

भावार्थ

शिशु को खेलानेवाली सुमधुर कंठ से गाती है कि बाबू तुम किस चीज के लिए रो रहे हो ? क्या लोगे ? तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे लिए (चिचोर लाने) फल-कंद कोड़कर लाने गए हैं । शाम में देख लेना कि वह पूरे आंगन में फैला मिलेगा । शाम में आंगन में बैठी खेलाने वाली धाय आकाश में भरे तारेगन को दिखाकर यह गीत गाती है ।

(६)

चान मामू-चान मामू, हँसुआ दऽ ।
से हँसुआ काहेला ? खरई कटावेला ।

से खरई काहेला ? बंगला छवावेला ।
से बंगला काहेला ? गोरूआ ढुकावेला ।

से गोरूआ काहेला ? चोतवा पुरावेला ।
से चोतवा काहेला ? अगना लिपावेला ।

से अंगना काहेला ? गोहुमा सुखावेला ।
से गोहुमा काहेला ? मैदवा पिसावेला ।

से मैदवा काहेला ? पुड़िया पकावेला ।
से पुड़िया काहेला ? भौजी के खिआवेला ।

से भउजी काहेला ? बेटवा बिआयला।
से बेटवा काहेला ? गुल्ली डंडा खेलेला।
गुल्ली डंडा टूट गेल, बबुआ रूस गेल ॥

भावार्थ

शिशु को खेलाने वाली माँ या धाय मधुर कंठ में गाकर शिशु को बहलाने के लिए कथात्मक गीत का सहारा लेती है। हे चाँद मामा ! मुझे एक हँसुआ दो। वह हँसुआ किसलिए ? घास काटने के लिए। वह घास किसलिए ? घर छाने के लिए। और घर किसलिए ? जानवर बाँधने के लिए। वह जानवर किसलिए ? गोबर देने के लिए। गोबर किसलिए ? आंगन लिपने के लिए ? आंगन किसलिए ? गेहूँ सूखाने के लिए। गेहूँ किसलिए ? तो आटा पिसाने के लिए। आटा किसलिए ? पूरी बनाने के लिए। पूरी किसलिए ? भौजी को खाने के लिए। भौजी किसलिए ? पुत्र-जन्म देने के लिए। वह पुत्र किसलिए ? गुल्ली-डंडा खेलने के लिए। परंतु गुल्ली-डंडा ही टूट गया और खेलनेवाला बाबू रूठ गया। उस काल्पनिक बाबू को रूठते ही वास्वतिक रूदन करनेवाला बाबू हँसने लगता है।

(७)

आरे आवऽ पारे आवऽ नदिया किछारे आवऽ ।
सोने के कटोरी में दुधा-भत्ता लेले आवऽ ॥
बबुआ खाय दूध-भतवा, चिरइयाँ चाटे पतवा ॥

भावार्थ

यह गीत रोते शिशु को खेलाते हुए गाया जाता है कि चंदा मामा आल से पार होकर आओ, नदी किनारे से होता आओ और सोने की कटोरी में दूध-भात लेकर आओ। मेरा बाबू दूध-भात खायगा और चिड़िया फेंका हुआ पत्ता चाटेगी।

(८)

आव गे खुदबुदी चिरइयाँ, अंडा पार-पार जो,
तोरे अंडा आग लगउ, बउवा खेलौले जो।
आधा रोटी रोज देबउ, टिकरी महिन्ना।
आव गे खुदबुद चिरइया, अंडा पार-पार जो ॥

भावार्थ

माँ आंगना में फुदकती गौरैया चिड़ियाँ की ओर संकेत कर रोते हुए शिशु को मधुर स्वर में सुनाती है कि ये चंचल चिड़िया दौड़कर आ और अंडा पार कर चली जाओ । तुम्हारे अंडे में आग लगे ताकि तुम निश्चित होकर मेरे बच्चे को खेलाते रहना । इसके लिए तुम्हें नित्य आधी रोटी दूँगी और महीना में एक टिकरी (ठोकुआ) भी दूँगी । अत: तुम आओ और आंगन में अंडा पार कर चली जाओ ।

(८)

वबुआ रे तूँ कत्थी के ? ककरी के टुस्सा के ।
चोआ- चनन के पुरिया के, मइया हउ लवंगिया के ,

बाबू जी जफरवा के, फुआ हउ इलइचिया के ,
दादा-दादी डूम्बर के, पितिया पितम्बर के ,

पत पितिआइन तम्मा के, हम खेलौनिया सोना के ।

भावार्थ

खेलाने वाली धाय कहती है कि बाबू, तुम किस चीज के हो । वह आगे कहती है कि ककरी की कोमल पत्ती की तरह सुकुमार हो, चंदन की तरह सुगंधित हो । तुम्हारी माँ लवंग की तरह है । पिता जी जाफर की तरह हैं । तुम्हारी फुआ इलायची की तरह है और दादी-दादा गूलर की तरह हैं । चाचा पीले वस्त्र की तरह और चाची तम्बा की तरह है परंतु मैं तुम्हें खेलाने वाली सोना की तरह हूँ अर्थात् सर्वाधिक कीमती हूँ ।

(९)

एक तरेगन दू तरेगन, तरेगना मामू हो ,
अपने खैला झिंगा मछरिया, हमारा देलऽ झोर ।
अब न जयबो तोर दुहरिया टपटप झरतो लोर ।।

भावार्थ

एक तारा, दूसरा तारा, हे तारा मामू, आपने तो स्वयं झिंगा मछली बनाकर खा लिया और मुझे थोड़ा झोर देकर त्याग दिया । आज से तुम्हारे दरवाजे पर नहीं आऊँगा तब तुम्हारी आँख से आसूँ टपकेंगे ।

(१०)

चंदा मामू दूर के पुआ पकौलन गूड़ के ,
अपने खयलन थाली में मुन्ना के देलन प्याली में ,
प्याली गेलो फूट, मुन्ना गेलो रूस ।

भावार्थ

दूर देश के चंदा मामू ने गूड़-आटे का पुआ बनाया और स्वयं तो थाली में खा लिया परंतु अपने भांजे मुन्ना को प्याली में दे दिया । संयोगवश प्याली फूट गई तो मुन्ना रूठ गया ।

(११)

आव गे खुदबुदी-चिरइयाँ, अंडा पार-पार जो ,
मइया गेलउ नानी ही, मोटरिया लेके जो ।

मइयाँ के मिललउ, आंगी-टोपी, बाबू के कमीज ,
कउन छिनरियो नजर लगौलकउ, विट्ठल के पुतोह ।

भावार्थ

खेलानेवाली, शिशु को कहती है कि देखो वह चंचल गौरैया चिड़ियाँ अंडा पार-पार कर जा रही है । अपनी माँ नानी के यहाँ गई है, तुम मोटरी लेकर जाओ । वहाँ बच्ची को अंगिया और टोपी मिली तथा बाबू को कमीज मिली है । इसे पहना तो किसी ने नजर लगा दिया । लगता है कि विट्ठल की पुतोह ने लगायी है ।

(१२)

घुघुआ माना उपजे धाना, बाबू के छेदा दऽ दूनो कान सोना ,
नाया भीती उठऽ हे, पुराना भीती गिरऽ हे ,
बरतन-बासन हटाव गे कुम्हनियाँ, बाबू जाइत हउ दिसा फिरे ।

भावार्थ

दोनों पैर के घुटने को सटाकर उसपर शिशु को रख लिया जाता है और सोकर पैर को ऊपर नीचे करते यह गीत गाया जाता है इसे 'घुघुआ माना' कहते हैं, बाबू को दोनों कान छिदवाने का वादा किया जाता है और नयी दीवार उठने तथा पुरानी को गिरने का संकेत कर बच्चे को पैर से नीचे उतार दिया जाता है कि वह पाखाना करने जा रहा है, हे कुम्हारिन अपने बर्तन को ऩम्हालो ।

(१३)

बाबू रे सुग्गा धान खयले हवऽ हाँकऽ बेटी लछमी ,
गोड़ में देबो पैजनी, हाथ में देबो कंगनी ।

बेल-बबूर के चटनी, अरवा चाउर के भोजनी
गंगापार बिआह देववऽ, चाउर दाल देले जयवऽ,

आवे के न जाय के, टुकुर-टुकुर ताके के ।

भावार्थ

माँ बच्चे को सुलाते या खेलाते समय यह लोरी गाती है । बाबू रे, सुग्गा धान को खा रहा है । हे लक्ष्मी बेटी, उसे उड़ा दो । तुम्हें पैर में पहनने के लिए पायल दूँगी और हाथ में पहनने के लिए कंगन दूँगी । खाने के लिए अरवा चावल का भात और बेल-बबूल की चटनी दूँगी । साथ ही गंगा के उस पार विवाह कर दूँगी और घर से चावल-दाल भेजती रहूँगी, आने-जाने की जरूरत नहीं रहेगी, केवल भोज्य सामग्री की प्रतीक्षा करती रहेगी ।

(१४)

बाबू हम्मर कत्थी के ? धनिया समेत्थी के ।
मइया लवंग के, बाबू जी हथी चंदन के ,
दादा-दादी डूम्बर के, टोला-परोसी खजुअत के ।

भावार्थ

रोते हुए शिशु को सुलाने का उपक्रम करती माँ कहती है कि हमारा बाबू किस चीज का है-धनिया-मेथी का है । उसकी माँ लवंग की है, बाबूजी चंदन के हैं, दादा-दादी गूलर के हैं और टोला-पड़ोस के लोग खजवत (एक प्रकार की सब्जी-सीम की तरह) हैं (यह तरकारी मुँह से खुजलाहट पैदा करती है ।)

(१५)

आव रे निनिया निनानपुर से, खटिया आवे बनारस से ।
हाथी देबउ घोड़ा देबउ, देबउ सोना-चानी ,
बाबू के सुता दे, तोरा कहतउ नानी-नानी ।

भावार्थ

माँ बच्चे को सुलाने के लिए लोरी गाती है कि "हे नींद, तुम अपने घर 'निनानपुर' से जल्दी आ जा, बाबू के सोने के लिए बनारस से खाट आ गई है। हे नींद, जल्दी आकर बाबू को सुला जा, तुम्हें-हाथी घोड़ा दूँगी, सोना-चाँदी दूँगी, बाबू को सुला दो, वह तुम्हें नानी-नानी कहेगा।"

(१६)

आव रे निनिया मकइया-बन से,
बाबू गेलो सुते, मिठइया लेले जो।

भावार्थ

हे नींद, मक्का के वन में भ्रमण करना बंद कर मेरे बाबू के पास आओ, वह ।ा रहा है, उसके लिए मिठाई लेकर चले जा।

(१७)

बाबू रे भगलुआ, खीर खयबे कि हलुआ,
फुआ के बिआह हवऽ, के जतवऽ अगुआ ?

भावार्थ

अपने नखरा करने वाला पुत्र से माँ पूछती है कि तू खीर खायगा कि हलवा ? तुम्हारी फुआ का विवाह है, उसकी अगवानी कौन करेगा ?

(१८)

गोर गड़ी बाई गोर गड़ी, मुनिया के सासु गदहा चढ़ी,
गदहा चढ़के करे गुमान, बिल्ली ले गई दूनो कान।

भावार्थ

इस पर राजस्थानी बालगीत का प्रभाव है, वहाँ बच्ची या बहन को 'बाई' से सम्बोधित किया जाता है। गाड़ी, गड़ी बन जाती है। गोल, गोर बन जाता है। ऐसे तो मगही में भी 'ल' का 'र' में परिवर्तन होता है यथा–फल-फर, हल-हर आदि। बहन छोटी बच्ची को खेलाती गीत गा रही है–गोल-गोल गाड़ी है परंतु मुन्नी की सास गदहे पर सवार है और उस पर चढ़कर घमण्ड कर रही है। इसी बीच उसके दोनों कान बिल्ली काटकर ले गई।

(१९)

मुनिया बाई वावली, लड्डू खाय तावली ।
लड्डू में पड़ गयो लट, मुनिया गिर गई पट ।।

भावार्थ

इस बालगीत पर राजस्थानी बालगीत का प्रभाव है क्योंकि ये दोनों गीत मगह में रहनेवाले माड़वारी परिवार से प्राप्त है । मुन्नी बहन बावली हो रही (खाने के लिए) है और उतावली होकर लड्डू खा रही है । लड्डू में लट (गूड़ का चिमड़ा अंश) पड़ गया तो मुन्नी जमीन पर लोटने लगी ।

(२०)

बाबू रे तू खूब मोटा के, हड़िया जइसन तोंद फुलाके ,
खुरपा जइसन दाँत देखा के, सुतजा-सुतजा आँख मून के ।

भावार्थ

बच्चे को प्रोत्साहन और हास्य सृजन करती माँ सुलाने का प्रयास करती है–हे बाबू, तू खूब मोटा हो जा, हाड़ी की तरह तुम्हारा पेट फूल जाय । खुरपे की तरह तुम्हारे बड़े दाँत हो जायें, तुम आँख मूँदकर सो जाओ ।

(२१)

आव गे खुदबुदी चिरइयाँ, बाबू खेलौले जो ,
मइया गेलो भात सिंझावे, बाबू जोते खेत ।

भावार्थ

हे चंचल चिड़ियाँ, आओ और मेरे बाबू को खेलाते जाओ । इसकी माँ रसोई बनाने गई है और पिताजी हल जोतने गए हैं ।



बाल खेल–गीत

इस संवर्ग के गीतों में बालकों के खेलते समय गाए जानेवाले गीतों को रखा जा सकता है । बच्चे खेलते समय खेल से सम्बन्धित कुछ गीत गाये जाते हैं । खेलाने वाले व्यक्ति भी गीतों का प्रयोग करते हैं । माँ-बाप भी बच्चों के लिए कुछ गीत गाते हैं । कुछ बालगीत मनोरंजन के साथ उपदेश और ज्ञान-विवर्द्धन भी करते हैं । ये सारे गीत बालगीत ही के अंतर्गत आते हैं । यहाँ इनके कतिपय उदाहरण दिए जाते हैं ।

(२२)

अटकन चटकन दही चटाकन ,
बर फूले बरइला फूले, सावन में करइला फूले ,

नेउर–नेउर चोरी, बसीला कटोरी ,
बसीला गेल चोरी, धर कान ममोरी ।

भावार्थ और खेल की प्रक्रिया ।

कई बच्चे अपने हाथ के तलवे जमीन पर सटाकर रख देते हैं और गोल मंडली बनाकर बैठ जाते हैं । एक बच्चा अपने हाथ की तर्जनी से सभी के हाथ पर ठप्पा लगाते जाता है और यह गीत गाता है । जिस बच्चे के हाथ पर गीत समाप्त हो जाता है वह दूसरे का कान पकड़ लेता है । इसी तरह दूसरे लड़के भी एक दूसरे का कान पकड़कर यह गीत गाते हैं -

"चूटा हो चूटा, मामू के गगरिया काहे फोरलऽ हो चूटा"।

अर्थ- ये दही चाटने वाले, मेरी अंगुली तुम्हारे हाथों में अँटक नहीं जाय, चटख नहीं जाय ? सावन में बर (वट) फूलता है, बरैल फूलता है, करैला भी इसी माह में फूलता है । चोर नेवले भी भ्रमण करते हैं। बसूला और कटोरे भी हैं । बसूला की चोरी हो गई । अपने कान पकड़ लो । तभी सभी लड़के एक-दूसरे के कान पकड़कर 'चूटा हो चूटा' का गीत गाने लगते हैं । यह बच्चों का सुरीला गीत बड़ा अह्लादपूर्ण और भावप्रवण होता है ।

(२३)

वर-बाबू दस्तर, कनेया बबूर तर,
वर के ले गेल चोर, कनेया करे हरहोर,
भइया के चोरवले चोर, भउजी करऽ न इंजोर।

भाव-सौन्दर्य

कोई दुल्हा अपनी पत्नी को मायके से श्वसुराल ले जा रहा था। वर वट-वृक्ष के नीचे बैठ गया और पत्नी को बबूल पेड़ के नीचे बैठा दिया। तब तक वर को चोर चुरा ले गया। इधर दुल्हन हल्ला करने लगी। चोर वर को चुराये जा रहा था कि उसकी बहन ने देखा तो वह भी चिल्लाने लगी कि हे भाभी, इस रहस्य (चोरी को) प्रकाशित क्यों नहीं करती। यह गीत गाँव में खेलते-कूदते बच्चे वर-दुल्हन को जाते देखकर चिढ़ाने के लिए गाने लगते हैं।

(२४)

कनेया गे दूगो धनिया दे, लाल मिचाई के फोरन दे,
भाई अयलो भेंट कर, मोटरी भीतर कर, ताला कुंजी बंदकर।

भावार्थ

यह गीत भी नई दुल्हन से ही सम्बंध रखता है। भाई बहन से मिलने उसकी श्वसुराल आया है। छोटी ननद या देवर कहता है कि हे नई-नवेली दुल्हन मुझे थोड़ा धनिया दो, मैं मसाला पीस दे रहा /रही हूँ क्योंकि सब्जी बनानी है। लाल मिर्च का फोरन (बघार) देकर बनाओ। उसके पहले भाई से भेंट कर लो और गठरी में लाए पदार्थ को सम्हाल लो और बक्से में रखकर ताला लगा दो।

(२५)

तार काटो तरकुन काटो, काटो रे बर खाजा,
हाथीपर के घुँघरू, चमक चले राजा।

राजा के रजइया हे, भइया के झपट्टा हे,
खीच मारो, हँइच मारो-गुल्ली अइसन बेटा।

खेल एवं भावार्थ

इस खेल में कई बच्चे जमीन से प्रारम्भकर एक-दूसरे की मुट्ठी पर मुट्ठी रखते हैं और ऊपर से मुट्ठी को हाथ की तलहत्थी से काटने का अभिनय करता

यह गीत गाता है और बारी-बारी से सभी की मुट्ठी को अलग करता जाता है। वह गीत में कहता है कि तार काट कर रहे हैं, तार के फल (फंदा) को काट रहे हैं। उसके खाजा (भीतर का पेय या खाद्य) को काट रहे हैं। हाथी पर घुँघरू लटक रहा है, उसपर राजा चमचमाते जा रहे हैं। राजा का आदेश है और भाई तेजी से चला जा रहा है। खींच कर जोर से मारा तो गुल्ली की तरह लड़का फेंका गया। इसी शब्द के साथ खेल खत्म हो जाता है और पुनरुक्तियों से चलते रहता है।

(२६)

चना मुरगी चना चूर, सेकरे परानाचूर,
जेकर हाथ में गोटी जाय, ऊ भागे बड़ी दूर।
ये चाँद ? तो का सूरज ? तोर नइहरवा से बड़ी जीज अयलो हे।
तऽ कउची-कउची–हाथी, घोड़ा, ऊँट-बहेड़ा आदि, खेल बढ़ता जाता है ।।

खेल एवं भावार्थ

इस खेल में लड़के जमीन पर मुट्ठी बाँधकर रखते हैं और एक लड़का छोटी गोटी लेकर सभी की मुट्ठी में स्पर्श करता है और उसी क्रम में किसी के हाथ में डाल देता है तो वह लड़का भागकर दूर चला जाता है। गोटी डालने वाला लड़का दूर खड़े लड़के से पूछता है कि तुम्हारे नैहर से या घर से बहुत चीज आई है। वह पूछता है कि क्या तो वह लड़का हाथी-घोड़ा का नाम लेता है। हाथी या घोड़ा बना लड़का दूर खड़े लड़के को पीठपर बैठाकर हाथ-पैर के बल चलता खेल-स्थान पर ले आता है।

मुर्गी और चने की तरह गोटी जिसके हाथ में गिरे वह बड़ी दूर भाग जाय। ये चाँद की तरह लड़का, तुम्हारे घर से बड़ी चीज आई है। क्या ? तो हाथी, घोड़ा ऊँट, बछेड़ा आदि।

(२७)

अटेन, बटेन, तलातल, बोतल, चम्भो, चीक,
महीको, दीको, पुरइन पात, जमेठी, ठेठी।

(२८)

अटेन के बटेन, गोली मार के ललटेन,
सकसक के बेटी, मखमल के टोपी,
सारी गाँव के मिलाव, मोतीचूर के ढेला।

भावार्थ

उपर्युक्त दोनों गीतों में केवल शब्दों का जाल जोड़ दिया गया है और यह जाल खेल प्रारम्भ करने के पूर्व विछाया जाता है जिसमें चोर पकड़ा जाता है और उसी से खेल प्रारम्भ किया जाता है, अर्थात् ये दोनों गीत खेल प्रारम्भ की भूमिका हैं। आज आभिजात्य खेलों में लाटरी या टॉस से खेल प्रारम्भ किया जाता है। लोकजीवन में भी परम्परा से वच्चों के वीच यह रीति प्रचलित मिलती है, शायद लोकजीवन की परम्परा से ही आभिजात्य टॉस परम्परा विकसित हुई हो।

गीत संख्या २७ और २८ में अंतिम शब्द जिस वच्चा के मुख से उच्चरित होता है, वही खेल का सूत्रधार, चोर या मेट (मुखिया) वनता है।

(२९)

अदल, गदल, नाहर, नद्दी, गोल-पिअउवल,
पाक-पीक, रेसम-जोगी, रंक-राजा-खेले-कूदे चल।

(३०)

डाक-डाक केरी-आम पति मेरी,
सोना कि चाँदी या आम कि अमरुद।

भावार्थ

ये दोनों शब्द-समूहों के द्वारा भी खेल में मण्डली विभाजन की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है। इसी प्रकार निम्न गीत से भी बच्चों को खेल में शामिल करने का विधान किया जाता है।

(३१)

दस, बीस, तीस, चालीस, पच्चास, सौ।
सौ में लगा तारा-चोर निकल के भागा,
अन्हार घर में चिड़िया बोली-चाँय-चुई-चस।

(३२)

एक सलाई, दू सलाई, तीनो मारे जुग सलाई।

भावार्थ

उपर्युक्त सारे गीत आधुनिक टॉस परम्परा के पूर्वज हैं । लोकजीवन में बाल वर्ग में खेल में आकृष्ट करने का उत्प्रेरित करने के लिए भी विचित्र प्रक्रिया अपनाई जाती है । बालमेधा के उत्कृष्ट उदाहरण द्रष्टव्य है ।

गाँव की गली या चौराहे पर एक-दो लड़के जुट गए और खेल की अपेक्षित संख्या नहीं हो पाई है तो दूसरे आने-जाने वाले लड़के को खेल में शामिल होने के लिए वाध्य किया जाता है । पहले आया लड़का वाद में आनेवाला को धोखा से अवाँछित क्रिया में संलग्न कराता है । यदि वह संलग्न हो गया और उसका कड़ा प्रत्युत्तर नहीं दिया तो वह उसके साथ खेलने के लिए विवश हो जायगा । निम्न प्रक्रिया देखी जाय—

(३३)

पूर्व का बच्चा–	"घूर के देख–कुत्ता हाड़ लेले जाय"
या–	"कपरा पर चिल्हिया विआइत हउ ।"

भावार्थ

यदि बच्चा घूम देखकर लिया तो वह धोखे में पड़ गया या अपने सर पर हाथ रखकर चील को देखने लगा तो वह बेवकूफ बना और उसका कड़ा प्रत्युत्तर नहीं दिया तो वह खेलने के लिए विवश है । कोई बच्चा नहीं खेलना चाहता है तो वह कड़ा प्रत्युत्तर देकर भाग जायगा । जैसे–

'ओने-तकवले बड़ा बेस-कयलें
कुत्ता के हाड़ पर दही चूड़ा खयलें । आदि ।

(३४)

तुतरुम तुम भाई तुतरुम तुम, कउन–तुम ?
राजा छोड़ बिसम्भर तुम, का करे अयलूँ ?

खेले खेलावे, कउन खेल ? अटन-बटन के ।
कउन छबड़ा मनुआँ ? रमना छवड़ा मनुआँ ।

भावार्थ और खेल की क्रियान्विति

उपर्युक्त विधि से जब कुछ लड़के एकत्रित हो गए और कोई खेल में चोर (नायक या खलनायक) निश्चित हो गया तो चोर लड़के की आँख गमछे से बाँध

कर बंद कर दी जाती है और वह चतुर्दिक फैले लड़के को पकड़ता चलता है । लड़के उस पर ठोकर मारकर भागते रहते हैं । संयोग से कोई पकड़ा गया तो उपरोक्त गीत को गाया जाता है । हे भाई, तुम कौन हो ? राजा हो या विश्वभर (विष्णु) हो ? यहाँ तुम क्या करने आये हो ? पकड़ने वाला कहता है कि खेल खेलाने आये हैं । कौन खेल ? अटन-वटन का । अच्छा इसमें 'मनुआँ' कौन है ? यानि तुमने किसको पकड़ रखा है । बंद आँख वाला लड़का कहता है कि यह अमुक लड़का है । यदि वह सही निकला तो उसकी आँख की पट्टी खोल दी जायगी और पकड़ाने वाला लड़के की आँख की पट्टी बाँध दी जायगी और पुनः वही प्रक्रिया दुहराई जायगी ।

(इस गीत में संस्कृत और पौराणिक तत्त्वों की अंतर्गभिंता विचारणीय है । यथा–तुतरूम-तुम= ततृत्वम । कउन तुम=कःत्वम् । मनुआँ=चक्रव्यहू में फँसा हुआ अभिमन्यु=पकड़ाया हुआ लड़का ।)

(३५)

गाड़ी तिती ला दऽ, चलनी बजा दऽ ।
चलनी में अंटा, बादर फंटा ।।
ये बादर तूँ घोंघा खाऽ, फाट-फूट निखत्तर जाऽ ।
तनियक नोन, तनियक तेल, चारो कोना वरावर भेल ।।

भावार्थ एवं प्रसंग

इस गीत का सम्बंध वर्षा और कृषि से है लेकिन इसे लड़के गाते हैं और वर्षा को रोकने का उपक्रम करते हैं । लगातार कई दिनों तक वर्षा की झड़ी लगी रहती है तो इस रूकने के लिए लड़के घर से चिथड़ा और मिट्टी का तेल लेकर निकलते हैं । चिथड़े को एक छोटी-सी छड़ी में बाँधकर उसमें तेल देकर आग लगाकर मशाल बना लिया जाता है और रिमझिम वर्षा में ही मशाल को आकाश की ओर दिखाते घर-घर जाकर तेल मांगा जाता है और मशाल पर छिटते रहा जाता है और उपर्युक्त गीत सभी सस्वर गाते हैं ।

मशाल घुमाते लड़के कहते हैं कि बादल को चूतड़ (गाँड़) में चिनगारी लगा दो, और चलनी बजाते भगा दो । चलनी में आटा है और बादल फट गया है । लड़के कहते हैं कि हे बादल, तुम घोंघा खाने चला जा और बिखरकर नक्षत्र को उबार दो फिर लड़के कहते हैं कि थोड़ा नमक और थोड़ा तेल के जलने से आकाश के चारो कोने बराबर (निरभ्र) हो गए । खेल की समाप्ति के बाद लड़के घर-घर से मांगे

हुए अन्न को बेचकर मिठाई लेते हैं और गाँव से बा... कि... पर जाकर ... को घुमाते और फेंक देते हैं तथा मिठाई को आपस में बाँटक... लेते हैं। पुनः घर आकर वस्त्र बदलकर विजय-यात्रा पर गर्व अनुभव करते हैं।

(३६)

लोकजीवन में लड़के विभिन्न प्रकार के खेल खेलते समय उससे सम्बंधित मनोरंजन का गीत गाते रहते हैं, जैसे-कबड्डी, चिक्का, गुल्ली-डंडा, गुलेल, डंगा, घोघो-रानी, आदि खेल में यहाँ कबड्डी के कुछ गीत द्रष्टव्य हैं :-

कबड्डी के गीत

सेल कबड्डी आवे दे, तबला बजावे दे,
तबला में पइसा, लाल बगइचा,
मनुआ धोबी, अहिरा के बच्चा, हम तोर चच्चा... ।

(३७)

सेल कबड्डी आता, तीसी के तेल बबुर के छाता,
छाता ऊपर तीन केवानी, कबड्डी खेले पठा-जवानी।

(३८)

सेल कबड्डी आस लाल, मर गेलो बतास लाल,
मोरा मोछ लाल-लाल, मोरा मोछ लाल-लाल।

(३९)

सेल मार बड्डी, तोड़ देबउ हड्डी,
चूना लगा के, बान्ह देवउ पट्टी।

(४०)

कबडी-कबडी, बाप तोर लगड़ा,
माय तोर लंगड़ी-तोड़ देवउ टंगरी।

(४१)

सेल कबड्डी आता-मारबो चमाचा,
गिरबें बेतहासा-रोयबे हतासा।

भावार्थ

कवड्डी वालगीतों में अपने पक्ष को प्रोत्साहित करने और विपक्ष को हतोत्साहित करने का भाव निहित रहता है। कभी-कभी तो विपक्ष को गाली के शब्द भी सुनने पड़ते हैं। प्रथम कवड्डी गीत में विपक्ष की मण्डली में दौड़ता हुआ लड़का तबला बजाते आने का संकेत करता है। तबला घूँघरू (पैसा) बँधा है। लाल वगीचे में खेल हो रहा है। धोबी, अहीर आदि के बच्चे खेल रहे हैं।

दूसरे गीत में तीसी का तेल और बबूल की डंटी लगे छाता का वर्णन है। छाता में तीन केवानी है और कवड्डी खेलने वाला जवान पट्ठा है।

पुनः तीसरे गीत में कवड्डी खेलनेवाला 'आस लाल' विपक्ष के 'वतास लाल' को मार दिया (पराजित कर दिया) अतः उसकी मूँछ लाल हो गई। वह जीत गया।

चौथे, पाँचवे गीत में हड्डी तोड़कर चूना-पट्टी बाँधने की बात कही गई है, साथ ही विपक्ष के माँ-बाप को विकलांग भी घोषित कर दिया गया है और अंतिम गीत में तमाचा मारने की बात है जिससे गिरा हुआ विपक्ष हताश हो जाय। इस प्रकार कबड्डी गीत में प्रायः दूसरे पक्ष को नीचा दिखाने का प्रयास दीखता है।

(४२)

मगध की बाल मण्डली में प्रचलित कुछ ऐसे मगही लोकगीत हैं जो एक-दूसरे को चिढ़ाने के लिए कहा या गाया जाता है। जाड़ा के दिनों में लड़के चौराहे या गली-कुची में धूप सेंकने के लिए खड़े रहते हैं। किसी की छाया से दूसरे लड़के की धूप रूक जाती है तो वह उसे चिढ़ाने लगता है—

घाम छेके घमरी, ओकर बाप चमरी,
कोठी में कर दाना, सिआर तोहर नाना।

भावार्थ

अर्थात् धूप छेकनेवाला को घमौरी होगी, उसका बाप चमार है। घर की कोठी में दाना भरा है, तुम्हारा नाना सियार है। इसपर दूसरा लड़का प्रत्युत्तर में कह उठता है—

(४३)

गारी देबे बारी पेन्हबउ, जबउ गोलकुंडा,
साहब जी मारतथुन तो हम बजबउ तबला।

भावार्थ

तात्पर्य कि गाली दोगे तो बेड़ी पहनाकर गोलकुंडा ले जाऊँगा। वहाँ साहब जी तुम्हें मारेंगे तो मैं उत्साह में ताली बजाऊँगा।

(४४)

दँतखोड़ा रे खोड़ा, मंगइरला के बीया,
ऊ में हगे चमैनियाँ के धीया।

भावार्थ

किसी बच्चे के दाँत में कोटरा हो गया हो तो उसे देखकर दूसरे लड़के चिढ़ाते हैं। हे "दँतखोड़ा लड़का" तुम्हारा दाँत मंगरैला के बीज की तरह काला है। उस दाँत के कोटरे में चमइन पुत्री पखाना कर देगी।

(४५)

दँखखोड़ा मांगे छिलका, देदे गुहवा-गिलका।

भावार्थ

यह अत्यानुप्रास वाला वाक्य भी दँतखोड़े को चिढ़ाने के लिए प्रयुक्त होता है–'वह छिलका मांगता है तो उसे गीला मैला (पाखाना) देने को कहा जाता है।

(४६)

लंगड़ा-त्रिलंगड़ा, साग-रोटी खो,
बाप गेलउ नोकरी, बनूक लेके जो।

भावार्थ

इस बालगीत में लंगड़े व्यक्ति को चिढ़ाने का उपक्रम है। हे लंगड़े (विकलांग व्यक्ति) साग-रोटी खाते रहो। तुम्हारा बाप नौकरी करने बाहर चला गया है। यदि साहस हो तो बंदूक लेकर जाओ (चलो) तो भला।

(४७)

बदरी हे कि घाम ? बदरी, तो खा घोड़ा के लदरी।
बदरी हे कि घाम ? तो खा घोड़ा के चाम।

भावार्थ

धूप-छाँह में लड़के खेल रहे हैं और प्रश्न पूछ रहे हैं । बदली है या धूप ? यदि बदली उत्तर मिलता है तो उसे घोड़े की आँत खाने को कहा जाता है और यदि धूप उत्तर मिलता है तो उसे घोड़े का चमड़ा खाने के लिए कहा जाता है ।

(४८)

हाल कउवा हाल, मकई के बाल ।
एक बाल ले जो पच्चीस बाल दे जो ।।

भावार्थ

मक्के के खेत में मचान पर बैठे लड़के कौवे उड़ा रहे हैं । उसे मक्के के पौधे पर बैठने से मना कर रहे हैं । यदि वह बैठकर एक मक्का का बाल ले ही जाता है तो उसे पच्चीस बाल देना पड़ेगा अर्थात् देकर जाओ ।

(४९)

क, ख, न आयल मइया पोथिया दे ,
गँड़िया मोटायल मइया धोतिया दे ।

भावार्थ

तात्पर्य कि बालक अभी स्कूल जाना प्रारम्भ कर ही रहा है, क, ख भी नहीं लिखने आता और मोटी किताब मांगने लगा । अभी वस्त्र पहनने लायक भी नहीं हुआ और धोती की मांग कर रहा है । यह प्राय: माँ या बहन की उक्ति होती है ।

(५०)

आँधी अयलो, पानी अयलो, फूट गेलो लबनियाँ ,
तरवा क जरिया धर के रोबऽ हई पसिनियाँ ।

भावार्थ

जोरों से आँधी आई और वर्षा भी होने लगी । इसी कारण ताड़ वृक्ष पर टंगा ताड़ी-पात्र फूटकर गिर गया । इस अफसोस में ताड़ की जड़ पकड़ कर पासिन रो रही है । यह भी लड़के द्वारा चिढ़ानेवाला ही गीत है ।

(५१)

कउन चिरइयाँ के लामी-लामी टंगरी ?
कउन चिरइयाँ के बग-बग पाँख ?

कउन पिलुइयाँ चले पेटकुनिये ?
जेकर करेजवा में आँख।

सारस चिरइया के लामी-लामी टंगरी–
बगुला चिरइयाँ के बग-बग पाँख।

कछुआ पिलुइया चले पेटकुनिये–
जेकर करेजवा में आँख।

भावार्थ

तालाब पर खेलते लड़के पानी में खड़े बगुले को देखकर प्रायः यह बालगीत गा उठते हैं। किस चिड़िया की लम्बी टांग है ? किस चिड़िया के सफेद पंख है ? कौन पिल्लू पेट के बल रेंगता, जिसके हृदय में आँख होती है। दूसरा लड़का उत्तर देता है–सारस पक्षी के लम्बी टांग होती है। बगुला का पाँख उजला होता है, कछुआ पेट के बल चलता है। उसी के हृदय में आँख भी रहती है और अंत में मंडली का मुखिया सभी को घर जाकर सोने कहता है-

बावली बूंच, खटिया पर सूत

अर्थात्-बावली वूच (कानविहीन) अर्थात् जलबिहीन है, अब जाकर खाट पर सो जाओ।

चकचंदा

मगध क्षेत्र में अब चकचंदा प्राय: लुप्त होते जा है । पहले प्रारम्भिक पाठशाला के गुरुजी छात्रों के साथ घर-घर जाते थे और छात्र चकचंदा गाते और गुल्ली-डंटा बजाते थे । गुरुजी को छात्र के अभिभावक से दान-दक्षिणा में रुपया, वस्त्र, वर्त्तन आदि मिल जाता था । यह कार्य भादो शुक्ल चौथ से प्रारम्भ होता था । उसी दिन प्रथमत: गुल्ली-डंटा की पूजा होती थी और फिर शिक्षक-छात्र घर-घर चकचंदा गाते भ्रमण करते थे । यह सोद्देशय वालगीत है । यहाँ लुप्त होते चकचंदा का कतिपय उदाहरण देखा जा सकता है । उसके वर्ण्य-विषयों में गणेश-वंदना, सरस्वती-वंदन । मौसमी फसलों एवं परिवेशों का वर्णन आता है ।

(१)

सोना के कटोरी में लड्डू भरी, भाई लड्डू भरी, उठऽ गनेस जी भोजन करी ।
भोजन करके दीहँऽ असीस । जीओ रे चटियन लाख बरीस ।

लाख-लुख से दाख मंगौली दिल्ली से गजमोट मंगौली ।
तू रे दिलिया आली कोस, मार बहादुर पहिला-चोट ।

पहिला चोट के आजम साँ, आजम साव चलावे तीर, नौ सौ डंटा छव सौ तीर ।

भवार्थ

भादो चौथ के दिन विद्यालय में सभी छात्र गुल्ली-डंटा के साथ सोने की कटोरी में लड्डू भरकर गणेश-पूजा के लिए लाए हैं । वे सब पूजा कर गणेश जी की आराधना करते कटोरी से लड्डू लेकर खाने का आग्रह करते हैं । साथ ही मनोकामना करते हैं कि भोजन करने के बाद उन्हें आशीर्वाद दें कि उनके शिष्य लाखो वर्ष तक जीवित रहें । लाख का दाख और दालमोट मंगाया है । मंगाया गया पदार्थ दूर के देश दिल्ली से लाया गया है । गुल्ली-डंटा बजाने वाला पहला लड़का बहादुर है, वह जोर से पहले गुल्ली बजाना प्रारम्भ करता है । आजम [illegible] पहली चोट मारी । वह तीर भी चलाता है । छात्रों के बीच नौ सौ गुल्ली-डंटा और छ: सौ तीर हैं ।

(२)

सीरी सरसती-सीरी सरसती, माथे चढ़ावे तुलसी पत्ती ,
तुलसी है सिरमौला, माय-बाप के औला ,
माय-बाप ने दिया असीस, जीओ रे बबुअन लाख बरीस ।

भावार्थ

विद्या की अधिष्ठात्री सरस्वती के सिर पर तुलसी की पत्ती चढ़ाई गई है । तुलसी की पत्ती सिरमौर होती है । छात्र माता-पिता के लिए प्रिय (औला-अवल-अव्वल) हैं । उन्होंने बच्चों को आशीर्वाद दिया कि वे सब लाख वर्ष तक जीवित रहें ।

(३)

भादों चौथ गनेस जी आए, लइकन सब के गुल्ली पुजाए ।
गुल्ली डंटा सिरमौला, माय-बाप के औला ।

सुन-सुन, सुन सुन बबुआ के माय, तोर दुआर पर गुरुजी आए ।
संगे साथे चटियन आए, गुरुजी मिलके गुल्ली पुजाए ।।

भावार्थ

भाद्र पक्ष की चतुर्थी को गणेश जी का आगमन होता है । उसी तिथि को गुल्ली-डंटा की पूजा की जाती है । पढ़ने-लिखने में गुल्ली-डंटा का महत्वपूर्ण स्थान है । माँ, बाप के लिए भी श्रेष्ठ है । चकचंदा गाते सभी छात्रों के यहाँ गुरुजी के साथ बारी-बारी से जाते हैं । वहाँ छात्र की माँ को कहते हैं कि तुम्हारे दरवाजे पर गुरुजी आए हैं, उनके साथ चेला-चाटी भी हैं । उन्होंने गुल्ली-डंटा की पूजा करवाई है । (अत: दक्षिणा दीजिए) ।

(४)

बबुआ आँख मुनानी माई, बिन कुछ लिए खोला नहीं जाई ।
बबुआ मइया बड़ी कठोर, गोड़-दुखाय दरद बड़ी जोर ।
ढेबुआ- ठाकर मै ना लिन्हा, बरीस दिन पर फिर कब अयबई ।
लइकन आके गीत न गयबई ।।

भावार्थ

जिस घर में छात्र और शिक्षक जाते हैं उस घर के छात्र की आँख पर पट्टी बाँध दी जाती है और हाथ में सिरनी (मिठाई) रख दी जाती है । उसे उसकी माँ या बाप

के सामने खड़ाकर छात्र गुल्ली-डंटा वजाते गाते हैं कि आप के वात्र् की आँख बंदकर दी गई है । बिना कुछ लिए आँख खोली नहीं जा सकती । लड़के कहते हैं कि तुम्हारी माँ बड़ी कठोर है, पैर में दर्द कर रहा है और गुरुजी को पर्याप्त दक्षिणा नहीं दे रही है । लेकिन, विना लिए तो आँख की पट्टी खोली नहीं जायगी । हम लोग ढेला-ढुकुर तो लेनेवाले नहीं हैं क्योंकि वर्ष के पहले तो कभी आवेंगे नहीं और लड़के आकर गीत नहीं गावेंगे ।

(५)

सुनसुन-सुनसुन बवुआ के माई, तोरे दुआर पर गुरुजी आई ।
गुरुजी के दोसाला ओढ़ाई, सव चटियन के धोती पेन्हाई ।

घर में रखबऽ चोर ले जयतो, गाड़ के रखबऽ चूहा खयतो ।
छप्पर पर रखबऽ चील खयतो, गुरुजी के देबऽ सव रथ होयतो ।

भावार्थ

आँख मूँदे वच्चों के सामने उसके अभिभावक से बच्चे गाते हुए कहते हैं कि हे बाबू ही माँ सुनो, तुम्हारे दरवाजे पर गुरुजी आए हैं । अतः गुरुजी को दुशाला ओढ़ाकर स्वागत करें । चेलों को धोती पहनावें । धन को घर में रखेंगे तो चोर ले जायगा । जमीन में गाड़ देंगे तो चूहा खा जायगा । छत पर रखेंगे तो चील (पक्षीगण) खा जायेंगे और गुरुजी को देंगे तो धन सार्थक हो जायगा । (अतः दक्षिणा खूब दें ।)

(६)

खेल-खेल में लोहा पवली, ऊ लोहा लोहार के देली ।
लोहार बनौलक पाँच हँसुआ, मीर लेलक मीर हँसुआ ।।

इयार लेलन तीन हँसुआ, हम लेली फसुलिये ।
मीर के मारलक पहिला लाठी, इयार के मारल तीन लाठी ।।

हमरा मारलक छेकुनिये, गिर गेली पेटकुनिये ।
भाग गेली ठेहुनिये, घुस गेली चुल्हनिये ।।

भावार्थ

इस चकचंदे में ग्राम्य परिवेश के चित्रों का उल्लेख किया गया है । लड़कों को खेल-खेल में ही लोहे का एक टुकड़ा मिल जाता है । उसे लोहार को दिया जाता

है । लोहार उससे पाँच हँसुआ बनाता है । प्रधान ने पहला हँसुआ लिया और साथियों ने तीन हँसुए लिए । शेष बची पसुली (छोटा हँसुआ) मुझे मिली । घास गढ़ते समय प्रधान को पहली लाठी खानी पड़ी और तीन दोस्तों को भी तीन लाठियाँ खानी पड़ी । लेकिन मुझे एक छंकुनी खानी पड़ी जिससे मैं पेट के बल गिर गया और ठेहुने के बल घसकता गया तथा अंततः रसोईघर में प्रवेशकर छिप गया । इस चकचंदे में ग्राम्य परिवेश के साथ ही हास्य-सृजन का भी प्रयास परिलक्षित होता है ।

(६)

नगर कोस देवी स्थाना, चढ़े नारियल डटहर पाना ।
सोभा चनन अगर छिटाये, मन-मन भाँति घरमें छिटाये ।

लाल चाननी सबहि सोहाय, दूनो हाथे गुल्ली सोहाय ।
चनन सोभे गौरी माथे, नाचे बरहमा, नाचे ईस ।

छत्रपति उठि आये राजा, राजा देख के रानी खुस ।
रानी देख के राजा खुस, गनपत लड़का कहाँ भुलाया ?

बीच आंगन बिच कुआँ खोदाय, कुआँ ऊपर दो चम्प लगाया ।
जो-जो चम्पा लहर करे, सोई-सोई गुरु पूजा ले ।

पूजा लेले देहूँ दान, सेकर होत सफल कलेयान ।
एक पूज सौ-बासो-वरना, हाथ पसारे पंडित राना ।

पंडित राना क्या-क्या ले, पंडित राना पूजा ले ।
पूजा ले-ले देहू दान, सेकर होत सफल कलेयान ।

भावार्थ

इस चंकचंदे में विविध भावों एवं अनुष्ठानों का समन्वित रूप दृष्टिगोचर होता है । नगर से कोसभर की दूरी पर देवीजी का स्थान है जहाँ पर नारियल और डंटीदार पान की पतियाँ चढ़ाई जाती हैं । वहाँ सर्वत्र चंदन और अगर छिटा जाता है । उस मंडप में भाँति-भाँति के सुगंधित पदार्थ छिड़के जाते हैं । देवी की चौरी के ऊपर लाल चांदनी सुन्दर लग रही है । लड़कों के हाथ में गुल्ली-डंटा शोभता है । गौरी के माथे पर चंदन शोभता है । ब्रह्मा और ईश्वर नाच रहे हैं । छत्रपति राजा उठ कर दौड़ आए । राजा को देखकर रानी खुश हो गई और रानी को देखकर राजा खुश हो गए । गणपत नाम का लड़का कहाँ भूल गया ?

आंगन के बीच कुआँ खोदा गया । उसपर चम्पा के दो पौधे लगाए गए । जैसे-जैसे चम्पा लहराता गया वैसे-वैसे गुरुजी पूजा लेने लगे । पूजा के बाद गुरु को दक्षिणा देना चाहिए, उसका सभी प्रकार से कल्याण होता है । एक प्रकार की पूजा को अनेक प्रकार से कराते हैं और राना-पंडित दक्षिणा के लिए हाथ फैलाते हैं । राना पंडित क्या लेते हैं ? वह पूजाई लेते हैं । पूजा के बदले दान दीजिए जिसके लिए कल्याण होता है ।

(७)

बबुआ आँख मुंदायो माई, गुरुजी के देहूँ लाख रुपाई ।
बबुआ रोवे मइया-मइया, गुरुजी के देहूँ लाख रुपइया ।
गली मेकर झिटकी चुनैतो मइया, सब लइकन कुड़कयतो मइया ।।
रहता में ठोकरयतो मइया, जल्दी दे दऽ बीस रोपइया ।।

भावार्थ

आँख मूँदा बच्चा अपनी माँ से कहता है कि गुरुजी को लाख रुपया दे दो । देर होने पर वह माँ-माँ कहकर रोने लगा और पुनः लाख रुपये देने का अनुरोध करने लगा और कहने लगा कि रुपया नहीं देने पर सभी लड़के गली के ठिकरे चुनने कहेंगे और चिढ़ावेंगे । रास्ते चलते ठोकर मारेंगे । अतः जल्दी से बीस रुपया ही दे दो ।



बिरहा

मगह में वहुप्रचलित लोकगीतों में बिरहा का महत्वपूर्ण स्थान है। बिरहा वस्तुत: मगध का अपना विशिष्ट लोकगीत है जो निम्नवर्गीय जातियों में काफी लोकप्रिय है। यह चार कड़ी का लोकगीत सभी वर्गों एवं समस्त मगध प्रदेश में समान राग और लय में गाया जाता है। स्थान भेद से इसकी लय में कोई परिवर्त्तन नहीं दीखता। मगध के एकमात्र इस गीत में मात्राओं एवं लयों की समानता पायी जाती है। इसकी व्यापकता एवं ग्राह्यता समझकर **डॉ. राम प्रसाद सिंह** ने अपने **'लोहा मरद'** महाकाव्य में इसका प्रचुर प्रयोग किया है।

'बिरहा' में केवल विरहजन्य वेदना का ही प्राधान्य नहीं होता वल्कि भावों एवं सम्वेदनाओं की लघु लहरियाँ इससे छूटती रहती हैं जो गायक और श्रोताओं को उद्वेलित करती हैं। वस्तुत: विरहा लोकगीत की एक शैली है जो प्राय: पुरूषों के द्वारा ही गाया जाता है। यहाँ **डॉ. राम प्रसाद सिंह** द्वारा रचित विरहा का एक दो उदाहरण द्रष्टव्य है।

(१)

लइकवन के गोल से
बुढ़वन अलग होके
ढोंय-ढोंय करे खिसिआय।
बुढ़वन के बात सुन
कउड़िया पटक के
लइकवन मने मुसकाय॥

अर्थ

भीड़ लगी है। लड़कों की जमायत से बूढ़े अलग हो गए और क्रोधित होने लगे जिससे उन्हें खाँसी होनी लगी या ठाँय-ठाँय आवाज कर क्रोधित हुए।

बूढ़ों की बात सुनकर लड़के कौड़ी खेलना बंदकर मन ही मन मुस्कुराने लगे।

(२)

झोपड़ी उजार के
रेड़िया बुनाई देवो
मेहरी के देवो निकाल ।
आँई-वाँई करवें तो
कसके धुरमुसवउ
भूई टोल देवउ उजार ।।

अर्थ

सामंत कहता है कि तुम्हारी झोपड़ी उजाड़कर उसमें रेंड़ी (एरंऽ) बुनवा दूँगा और तुम्हारी औरत को घर से निकाल दूँगा । यदि काम करने में आना-कानी की तो कसकर पीट दूँगा और सम्पूर्ण भूईटोले को उजाड़ दूँगा ।

परम्परित बिरहा

(३)

मिट्टी पुजला से भाई
देवता न मिलिहे
पत्थल पूजे से न भगवान ।
मक्का जाय से खोदा.
नहि मिलिहे
पक्का रखऽ इमान ।

अर्थ

हे भाई मिट्टी की पूजा करने से देवता नहीं मिलते, न पत्थर की पूजा करने से भगवान मिलते हैं । मक्का-मदीना जाने से खुदा से भेंट नहीं होती । अतः ईमान को ठीक रखो, सबकुछ मिल जायगा ।

(४)

आज पवन सुत
आंगन न बहारे
इंदर न भरे जल जाय ।

लछमी-सरसती
धान न कूटे
रानी मदोदर रोय ।

अर्थ

रावण की पत्नी मंदोदरी रोकर कह रही है कि आज पति का प्रभाव घट गया है–पवनपुत्र आंगन बहार नहीं रहे हैं और इन्द्र भी पानी भरने नहीं आए । लक्ष्मी-सरस्वती धान नहीं कूट रही है । यह समय का फेर है ।

(५)

बिन वदरा के भाई
वरखा न परई
सूरुज के बिना नहि घाम ।
बिना पुरूखवा के
लइका न भेलई
केतनो रटे भगवान ।

अर्थ

हे भाई, बिना बादल की वर्षा नहीं होती और सूर्य के बिना धूप नहीं दीखती। इसी तरह बिना मर्द के बच्चा जन्म नहीं ले सकता, कितना भी न कुछ किया जाय।

(६)

पिया-पिया रटिके
पियर भेलई देहिया
लोग कहे पांडु रोग ।
गाँवा के लोगवा
मरमियो न जाने
गवना भेल न मोर ।

अर्थ

प्रिय के वियोग में शरीर पीला हो गया है परंतु लोग पीलिया रोग से ग्रसित बता रहे हैं । गाँव के लोग तो मर्म की बात नहीं जानते कि मेरा द्विरागमन नहीं हुआ है। अतः प्रिय वियोग में पीला शरीर पांडुरोग सूचक दीखता है ।

मगही के उपर्युक्त विविध लोकगीतों के अतिरिक्त निर्गुण, प्रातकाली, साँझ और भक्ति के गीत प्रचुर मात्रा में मिलते हैं । इसे मैंने यथा सम्भव धर्म-देव विषयक गीतों या संस्कार-गीतों के अंतर्गत सन्निहित कर देने का प्रयास किया है फिर भी यहाँ कुछ निर्गुण और प्रातकाली तथा अन्य वर्गीय विचित्र गीतों का भी संचयन कर रहा हूँ । अलचारी और खेलड़िन का ऐसा ही गीत है । अलचारी जिसे नचारी या शिवगीत भी कह सकते हैं विद्यापति परम्परा में यह नचारी नाम से अभिहित है । मगध में यत्र-तत्र सुनने को मिल जाता है । खेलड़िन के गीत नवादा जिले के कुछ गाँव में प्रचलित हैं जो अब समाप्ति के कगार पर है । इसी प्रकार के गीत बखो-बखाइन या नटिने भी गाती हैं । इसी तर्ज में हमारे गाँव के महाकवि, भारतेन्दुशखा **कमलेशजी** ने अपने संस्कृत के गीतियों का **'कमलेश विलास'** में प्रयुक्त किया है। इस ग्रंथ में उन्होंने मगध में प्रचलित लोकधुनों पर आधारित संस्कृत गीतियों (lyrics) का बड़ा सुमधुर प्रयोग किया है । अंत में उनके मगही लोकगीत के धुनों पर आधारित संस्कृत लोकगीतों से अपना यह संचयन समाप्त करूँगा ।

मगध में बूढ़े या धर्मपरायण लोग सबेरे–सूर्योदय के पूर्व उठकर खाट पर पड़े-पड़े या बैठकर धार्मिक गीत या निर्गुण के पद मगही में गाते हैं । प्रात:काल में गाये जाने के कारण इस **प्रातकाली** कहते हैं । इस प्रकार सोने से पूर्व भी धर्म या नीति-सम्बंधी लोकगीत गाए जाते हैं जो **साँझ** या **संध्या** कहलाते हैं । निर्गुण में ईश्वर के रहस्यमय स्वरूप को उक्तिवैचित्र्य के द्वारा व्यक्त किया जाता है ।

●

प्रातकाली

(१)

हमें लागल लगन गुरु चरनन के, हमें लागल लगन गुरुचरनन के।
चरनन के बिनु कुछो न सोहाय, आयो सनेसा घर चललन के।

भव-सागर सब सूख गयो है, फिकिर नहीं मोहं तरनन के।
हमें आस वही गुरु चरनन के, गुरुचरनन के हो गुरुचरनन के। हमें...

भावार्थ

इस प्रातकाली-भजन में गायक कहता है कि मेरी श्रद्धा गुरू के चरणों में समर्पित है। मुझे गुरू चरण के अतिरिक्त कुछ भी अन्य वस्तु अच्छी नहीं लगती। अब इस संसार को त्याग कर अपने वास्तविक घर (ईश्वर) चलने का संदेश आ गया है। यह संसार रूपी समुद्र सूख गया है। मुझे इससे पार उतरने की चिंता नहीं है। मझे तो एक मात्र गुरू के चरण की आशा है, वही मेरे लिए उद्धारक और सर्वस्य है। गुरूमहिमा का वर्णन है।

(२)

राखहूँ हो ब्रजराज लाज मोही, राखहूँ हो ब्रजराज।
भारत में टिटिहा के अंडा, आवा में मरजार।

ग्राह-ग्रसित-गजराज उबारे, ओही अवसर है आज।
लाज मोही राखहूँ हो ब्रजराज।

अंधा के पुत कहल न माने, नगन करत है आज ,
दुसासन मेरो चीर हरत है, दुरजोधन मुसकात।

लाज मोही राखहूँ हो ब्रजराज।
द्रुपद-सुता के टेर सुनिके, दौड़े जदुनंदन प्याद।

सूर स्याम प्रभु तुम्हारे दरस के, संतन के हित काज।
लाज मोही राखहूँ हो ब्रजराज।

भावार्थ

इसमें द्रौपदी चीर-हरण प्रसंग का उल्लेख है । दु:शासन द्रौपदी का चीर खींच रहा है । वह नग्न होने की स्थिति में है । अत: विह्वल होकर भगवान श्री कृष्ण को पुकार रही है । हे व्रजराज, आज मेरी लज्जा बचावें । जिस प्रकार महाभारत की लड़ाई में टिटिहा का अंडा बच गया था और कुम्हार के आवे में बिलार बच गया था तथा ग्राह द्वारा ग्रसित हाथी की रक्षा आपने की थी वैसा ही समय आज मेरे ऊपर आ गया है । मेरी लज्जा की रक्षा ही आप करें । अंधे धृतराष्ट्र का पुत्र कुछ नहीं सुनता-मानता । आज मुझे नंगा कर रहा है । वह दु:शासन मेरा वस्त्र हरण कर रहा है और दुर्योधन बैठा मुस्करा रहा है । भगवान श्री कृष्ण द्रुपद-पुत्री द्रौपदी की पुकार सुनकर खाली पैर दौड़े आ गए । भगवान संतों और भक्तों के कार्य के लिए ही तो जन्म-ग्रहण करते हैं ।

(३)

चरन गहो सियाराम के पिया हो, चरन गहो सियाराम के,
आज पवन नहिं आंगन बहारे, इंदर भरे नहि पानी,
लक्ष्मी-सरसती धानो न कूटे, झँखत मदोदर-रानी,
पिया हो चरन गहो सियाराम के ।

लंका जैसे कोट, समुंदर जैसे खाई, कुंभकरन जैसे भाई ,
मेघनाथ जइसन बेटा जिनकर, से तिरिया काहे डेराई ?
पिया हो चरन गहो सियाराम के ।

चनन काटि-काटि डोलिया बनावहूँ, सबुज-ओहार लगाई ,
बाप-पुत मिलि करहूँ कहँरिया, मैं लोकदीन बनी जाऊँ ,
पिया हो, चरन गहो सियाराम के ।।

भावार्थ

सीता-हरण के पश्चात् रावण-पत्नी मंदोदरी अपने पति को समझाती है कि राम से शत्रुता करना उचित नहीं । अत: सीताराम के चरण में शरण पा जाओ । उनके चरण स्पर्श करो । सीता के यहाँ लाने से सारी व्यवस्था ही बिगड़ गई है । आज हवा आंगन नहीं बुहारती और इन्द्र पानी नहीं भर रहा है । लक्ष्मी और सरस्वती धान नहीं कूटती । यह विपरीत स्थिति देखकर रानी मंदोदरी उदास है । खिन्न चित्त है । वह अपने पति लंकेश से कहती है कि सीताराम का चरण ग्रहण कर लें । जरा सोचें-लंका जैसा परकोटा, समुद्र जैसी खाई और कुम्भकर्ण जैसा महाबली भाई तथा

मेघनाथ जैसा जिसका पुत्र है, वह औरत क्यों आशंकित है ? विपरीत परिस्थिति देखकर ही उसे चिंता हो रही है । (कुछ भक्त अर्थ लगाते हैं कि रावण अपने परिवार की स्थिति और बल-पराक्रम को बता कर अपनी पत्नी को भयमुक्त करना चाहता है) अतः वह अपने पति को परामर्श देती है—चंदन की लकड़ी काट कर डोली बनावें । उसपर सब्ज रंग का पर्दा लगा लें और उसपर सीता को बैठाकर पिता-पुत्र मिलकर उन्हें ढोते हुए राम के पास ले जायें । मैं लोकदीन के रूप में साथ चलूँगी । इस प्रकार सीता-राम की शरण में चलें, हमारा कल्याण हो जायगा ।

(४)

एक समय लंकापति रावन, आनी हरी सियाराम के रानी ,
कोपी चढ़े दसरथ के नंदन, अंजनी पुत्र भयो आगवनी ।

बाँधी लंगोट लंगूर चढायो, लंका जरे धरती अकुलानी ,
कूदि समुद्र में पोछ बुझायो, ये ही कारन प्रातः बफात हे पानी ।

भावार्थ

यह गीत प्रातःकाल से अधिक संध्या के चौपाल में गाया जाता है । बूढ़े-बुजुर्ग आपस में अनेक प्रकार के प्रश्नोत्तर करते हैं । ऐसे प्रश्नोत्तर में समस्यापूर्ति की शैली दीखती है और पौराणिक कथा की झाँकी भी मिलती है । यह प्रसंग रामकथा से संबंध रखता है ।

एक समय लंकापति रावण राम की पत्नी सीता का हरण कर ले आता है । राजा दशरथ के पुत्र क्रोधित होकर लंका पर चढ़ आते हैं । अंजनी-पुत्र हनुमान ने भी लंका पर चढ़ाई में अग्रणी भूमिका निभाई । उन्होंने लंगोटा कसा और पूँछ को सम्हाल लिया । लोगों ने उनकी पूँछ में आग लाग दी तो हनुमान ने लंका को जला दिया और पूँछ बुझाने के लिए समुद्र में कूद गये । गर्मी से पानी खौलने लगा तो आज तक सबेरे खौलता है ।

(५)

काया से काम-जात, गाँठहू से दाम जात ,
सुजस के नाम जात, रूप जात अंग से ।

उतम करम जात, कुल के सब धरम जात ,
गुरुजन के श्रम जात, अपने चित्र भंग से ।

राग-रंग रीत-नीति भगवत से प्रीतजात ,
काम के तरंग से सुरपुर के वास जात।

भक्ति के वास जात, पुन्य के प्रकास जात ,
लोक के कीर्ति जात, वेसवा के संग से।

भावार्थ

इस गीत में वेश्यागामी पुरुष की अधोगति का वर्णन है । वेश्यागामी पुरुष का शरीर निस्तेज हो जाता है और भण्डार से सम्पत्ति भी चली जाती है । अर्जित यश समाप्त हो जाता है और शरीर का सौन्दर्य समाप्त हो जाता है। उत्तम कर्मों का फल क्षरित हो जाता है और कुलधर्म का भी नाश हो जाता है । गुरुजनों के परिश्रम भी बेकार हो जाता है और चित्त में संशय की स्थिति बनी रहती है । जीवन का राग, नीति, रीति और भगवत-प्रीति भी समाप्त हो जाती है । इस प्रकार कामुकता की तरंग से स्वर्गवास की स्थिति समाप्त हो जाती है । हृदय में भक्ति का निवास खत्म हो जाता है । सारे पुण्यफल समाप्त हो जाते हैं और लोक में फैली कीर्ति नष्ट हो जाती है । वेश्या की संगति जीवन को पूर्णतः नष्ट कर देती है ।

(६)

लाज मोरे राखो हे गिरधारी ।
गली-गली में घूमे सुदामा, छुधा पीर से भारी।
कृपा भेल जब जदुनंदन के, बन गेल कनक-अटारी।

भरल सभा में खड़ी द्रौपदी, बार-बार पुकारे,
खीचत हाथ थकल दुसमन के, बढ़ल पटम्बर भारी।

भारत में टिटिहा के अंडा, पंछी करे पुकारी,
ऊपर डार दिया गज-घंटा, कटल बिपदा भारी ।

हमहूँ दास किरपा करूँ गिरधर, निसदिन आस तुम्हारी।
लाज मोरे राखो हे गिरधारी ।

भावार्थ

यह प्रातकाली बड़े ही करुण स्वर में गायी जाती है। गायक और श्रोता का मन बरबस द्रवित हो जाता है । हे गिरधारी अब मेरी लज्जा बचाओ । मैं निर्लज्ज होकर संसार में आसक्त हो गया हूँ । जिस प्रकार भूख की पीड़ा से सुदामा गली-गली भ्रमण कर रहे थे और उन पर यदुनंदन श्री कृष्ण की कृपा हुई तो उन की झोपड़ी

सोने का महल वन गई उसी प्रकार मेरी लज्जा भी रखो । द्रौपदी भरी सभा में निर्वस्त्र की जा रही थी और उसने तुम्हें पुकारा था तो उसका वस्त्र इतना बढ़ गया कि दुःशासन खींचते-खींचते थक गया और वह नंगी नहीं हो सकी । इतना ही क्यों ? महाभारत के रणक्षेत्र में एक टिटिहा पक्षी का अंडा पड़ा था और उसकी माँ भगवान का स्मरण करने लगी । ईश्वर-कृपा से उस अंडे पर हाथी का घंटा टूटकर गिरा और उसे सुरक्षित ढंक लिया । इस प्रकार उसकी सुरक्षा हो गई, उसकी विपत्ति टल गई । भक्त कहता है कि मैं भी आपका दास हूँ, मुझे रात-दिन आपकी ही आशा है, मेरी लज्जा भी बचायें ।

(७)

भजुमन राम चरन सुखदाये ।
जे चरनन से सुरसरी निकले, संकर जटा समाये ।

जो चरनन के चरन पादुका, भरत रखले लव लाये ।
सोई चरन केवट धो लीन्हा, तब प्रभु नाव चढ़ाये ।

तुलसीदास प्रभु आस चरन के, रामचरन चित लाये ।
भजुमन राम .... ।

भावार्थ

हे मन, सुख देनेवाले राम के चरण का भजन करो । उसी चरण से गंगा नदी निकली है और शिव की जटा में समाहित हुई है । जिस चरण के खड़ाऊँ को भरत ने हृदय से लगाकर रखा था, उसी चरण को निषादराज ने प्रक्षालन कर भगवान को नाव पर चढ़ाया था । उसी चरण की आशा में भक्त हैं और उनके चरणों में मन लगाए हैं । हे मन राम के चरण में रमण किया करो ।

(८)

का देख के मन भेलो हे दिवाना, का देख के ?
मानुस देह देख मत भूलऽ, एक दिन माटी में मिल जाना,

ई देहिया कागज के पुड़िया, बूनी में बिल जाना ,
काहेला एकरा मलि-मलि धोओ, चोवा चनन लगाना ,

एक दिन ऐसो आयगो, कउवा-कुकुर मिलि खाना ,
कहे कबीर सुनो भाई संतों गुरु से नेह लगाना । का देख के मन..।।

भावार्थ

इस प्रातकाली में शरीर की क्षणभंगुरता और उसकी नि:सारता पर प्रकाश डाला गया है । क्या देखकर मनुष्य का मन दीवाना हो जाता है ? परंतु शरीर देखकर भ्रम में नहीं पड़ जाना चाहिए क्योंकि यह शरीर एक दिन मिट्टी में मिल जाता है । यह शरीर तो कागज की पुड़िया की तरह है जो पानी पड़ते ही गल जाता है । अत: इस नश्वर शरीर में धो-मलकर चंदन का लेप करने से क्या लाभ ? एक दिन मरणोपरांत इस शरीर को कौवे-कुत्ते खा जायेंगे । अत: सत् गुरु से प्रेमकर जीवन का रहस्य जानना चाहिए ।

(९)

कुछ लेना न देना मगन रहना ।
गहड़ी नदिया नाव पुराना, केवटिया से मिलल रहना ।
कुछ लेना न देना मगन रहना ।
यही केबटिया पार लगइहें, बाहर नहीं भीतर जाना । कुछ लेना.....।
सून महल में पिया बसतु हैं, दौड़ि गले में लिपट जाना ।
फिन आना न जाना—मगन रहना । कुछ लेना न देना मगन रहना ।

भावार्थ

इस निर्गुण गीत में भक्त ज्ञानी अपने आप में मस्त रहता है । किसी से कुछ लेना-देना नहीं है । वह अंतरतम में निमग्न है । संसार रूपी नदी गहरी है और शरीर रूपी नाव पुरानी है परंतु इसका केवट (नाविक) चतुर है । अत: गुरु उपदेश देता है कि केवट, खेवनहारा अंतरात्मा (परमात्मा) के साथ सदा साहचर्य में रहना । भीतर की आत्मा ही मार्गदर्शक होगी । कुछ लोग केवट का अर्थ गुरु से लेते हैं जो शरीर घट के भीतर निवास करता है । वस्तुत: वही अंतरात्मा है जो उचित मार्गदर्शन करती है । शरीर के भीतर शहस्त्रार में प्रिय (परमात्मा) का निवास है, साधना से जाकर मिल जाओ, फिर सदा अपने आप में मस्त रहो, अंत में आवागमन से मुक्त हो जाओगे-मुक्ति मिल जायेगी ।

(१०)

आज सुनिये भूतनाथ अरज एक मेरो जी,
तुहूँ सिव धरऽ नटभेस हम डमरू बजायब जी ,

तुहूँ तो कहत गउरा नाँचे, नाँच कइसे नाचियो हे ,
चार बात केरा सोच, नाँच कइसे नाचियो हे ।

गला में से ससरत साँप, चारो दिसि धावत हे ,
गउरा कातिक पोसले मयूर, सरप धरि खायत हे ।

अमिय चूई भूइयाँ पइसत चहुदिसि फैलत हे ,
गउरा बाघम्बर होयत बाघ बसहा धरी खायत हे ।

जटा से छूटत गंगाधार चहुदिसि धावत हे ,
गउरा होयत सहस्त्र मुखधार समेटलो न जायत हे ।

टूटल खसैत मुण्डमाल मसान-जगायज हे ,
तु हूँ गउरा जयब डेराय नाँच कईसे देखब हे ?

विद्यापति गीत गावल, गाइके सुनावल हे ,
सिवजी रखलन गउरा के मान नाँच नहि नाचियो हे ।

भावार्थ

विद्यापति के नाम से जुड़ा यह गीत बिहार की सभी लोक-भाषाओं एवं बोलियों में प्रचलित मिलता है जिसपर स्थानीयता एवं वहाँ की भाषा-शैली का प्रभाव दीखता है । यह गीत मुझे गया जिला के कमालपुर गाँव निवासी वयोवृद्ध गुरु 'गिरीजी- से प्राप्त हुआ है जो मेरी पत्नी को संगीत-विद्या सिखाया करते थे । थोड़े भाषांतर से **डॉ. सम्पत्ति आर्याणी** ने भी इसे अपने **'मगही भाषा और साहित्य'** में संग्रहीत किया है । यह गीत अलचारी या नचारी के अंतर्गत आता है । आज भी विद्यापति की नचारियाँ मैथिली क्षेत्र में शिवभक्तों के बीच प्रचुर मात्रा में प्रचलित है ।

पार्वती अपने पति भूतनाथ से प्रार्थना करती है कि आज मेरी एक प्रार्थना सुनें—आप नटवर वेश धारण करें और नाचें तथा मैं डमरू बजाऊँगी । शिवजी कहते हैं कि गौरी, मैं कैसे नाचूँ ? मुझे चार बातों की चिंता है, कैसे नाँचने कहती है ? नाचते समय मेरे गले का साँप खिसक कर चारो ओर दौड़ने लगेगा । तुम्हारा पुत्र कार्तिकेय ने मोर पास रखा है, वह साँप को पकड़ कर खा जायगा । ललाट के चन्द्रमा से अमृत गिरने लगेगा और जमीन पर फैल जायगा तो मेरा बाघम्बर जीवित बाघ में परिणत हो जायगा और मेरी [illegible] बसहा बैल को खा जायेगा । नाचते समय

जटा से गंगा की धारा वह निकलेगी और सहस्त्रों रूप में प्रवाहित होने लगेगी जिसे समेट पाना मुश्किल हो जायगा । मेरी गर्दन से नरमुण्डों की माला टूटकर गिर जायगी और वे सब श्मशान का दृश्य उत्पन्न हो जायेगा । यह सब देखकर, हे गौरी, तुम डर जायगी । भयभीत अवस्था में नाच कैसे देख पाओगी ? इस प्रकार शिवजी ने तथ्य की यथार्थता उपस्थित कर नाचने से अपनी असमर्थता, लाचारी प्रकट कर दी और गौरी की मान-रक्षा भी हो गई ।

●

आधुनिक लोकगीत

लोकमानस और लोकजीवन में लोकगीतों का निर्माण अनवरत होते रहता है । यह परम्परा अनादि काल से अत्याधुनिक काल तक चलती आ रही है । जब तब परम्परागत दाय के रूप में लोकमानस की अवस्थिति रहेगी, लोकगीतों का निर्माण हाता रहेगा, इसे वैज्ञानिकता एवं तार्किकता समाप्त नहीं कर सकती क्योंकि यह सहज-स्वभाविक मानवीय प्रवृति की सहजात भावनाएँ एवं कल्पनाएँ हैं । मुझे अटूट विश्वास है कि लोकसंस्कृति तदज्जन लोकविश्वास और आस्थाएँ समाप्त नहीं हो सकती, भले ही इसका स्वरूप और अभिव्यक्ति की शैलियाँ बदल जायँ । जैसे पहले प्रेम, वन्य या ग्राम्य जीवन के झाड़ी-झुरमुटों में अभिव्यक्त या क्रियान्वित होता था तो आज नगरीय जीवन के पार्क या पंचसितारा होटलों या अंतरिक्ष में उड़ान भरने वाले वायुयान में, परंतु भावानुभूति या राग के सहज तत्त्व में कोई अंतर नहीं हो सकता है । अतः देश काल और परिस्थिति की पृष्ठभूमि में नये-नये लोकगीतों का निर्माण और पुराने गीतों का कायाकल्प होता रहेगा । यहाँ कुछ आधुनिक लोकगीतों का भी उदहारण प्रस्तुत किया जाता है ।

(१)

छोटी चवन्नी चानी के, जय बोलो महतमा गान्ही के ।
गाँधी लेले अवतार, हमर दुख हरने के । छोटी चवनी.....।

तकली चरखा काटे, भगावे फिरंगिन के। छोटी......।
रहे उघारे देह समूचे, धोती ठेहुना खादी के। छोटी ....।

भावार्थ

यह गीत भारतीय स्वतंत्रता संग्रामकालीन निर्मित है । अंगरेज सरकार ने चाँदी की छोटी-छोटी चवन्नी के सिक्के चलाए थे । स्त्रियाँ गाती हैं कि महात्मा गाँधी की जय बोलो । उन्होंने हमारे दुःख को ...ग करने के लिए जन्म लिया है । वे तकली और चरखा चलाकर सूत कातते हैं और अंगरेजों को भगाने का भी काम करते हैं । वे शरीर पर कुछ नहीं पहनते । केवल टेहुना तक खादी की धोती पहनते हैं । इस लोकगीत में परम्परागत भारतीय वीर-पूजा की भावना सन्निहित है । (लोकगीत का यह एक परम तत्त्व है ।)

(२)

हम टिकवा गढ़ायब, ऊपर जयहिन्द लिखायब ,
बजड़ परो पिया तोर ताड़ी-पियनवाँ में ।

हम कंगना गढ़ायब, ऊपर जय हिन्द लिखायब ,
बजड़ परो पिया तोर गाँजा के पियनवाँ में ।

भावार्थ

भारतीय देशभक्त महिला अपने पियक्कड़ पति को कोसती हुई अपने को जयहिन्द के नारे से ओत-प्रोत कर लेना चाहती है । वह अपने टीका, कंगन आदि आभूषणों पर जय हिन्द का नारा टँकवा लेना चाहती । और ताड़ी, गाँजा पीनेवाले अपने पति को तिरष्कृत कर देती है । यह लोकगीत भी स्वतंत्रता-संग्राम के क्रम में ही सृजित है जब सुभाष चन्द्र बोस का 'जय हिन्द' नारा प्रणाम, नमस्ते, राम-राम की तरह लोगों में प्रचलित हो रहा था ।

(३)

ऊपरे कोठा के मकान नीचे कोइला के दोकान ,
कोइला हो गेलो सेल सारी दुनिया में ।

ऊपरे कोठा के मकान नीचे चीनी के दोकान ,
चीनी हो गेलो सेल बजरियन में ।

ऊपरे कोठा के मकान नीचे दारू के दोकान ,
दारू हो गेलो सेल, पीके गिरल हको नलिया में ।

भावार्थ

इस झूमर लोकगीत में आधुनिक जनवितरण प्रणाली के खोखलेपन को उजागर किया गया है। ऊपर छत पर सुन्दर घर बना है और उसके नीचे कोयला की दुकान है। परंतु कोयला दुनिया में कहाँ बिक गया, पता नहीं। उसी पर कोठे के नीचे चीनी की दुकान है परंतु चीनी यहाँ से बाजार में चली गई। कोठे के नीचे शराब की भी दुकान है। शराब यहाँ खूब बिकती है और लोग पी-पीकर नालियों में गिरे रहते हैं।

(४)

कपड़ा न मिले, चीनी न मिले, आ गेल हे कंटोल के जमाना।
भातो न मिले तीना न मिले, कइसन आयल हे अकाल के जमाना।

घरवा में बइठल मेहरी रोवे, दुअरा पर बुतरू-रोलाना, कंटोल के जमाना।
सारी घर में ढोर ढँकरे, दुरा पर बकरी मेमियाना, कंटोल के जमाना।

कपड़ा न मिले, चीनी न मिले, आगेल हे कंटोल के जमाना।

भावार्थ

स्वतंत्रता-संग्राम के अंतिम वर्षों में सामानों की कमी के कारण कंट्रोल की दूकान से सामान वितरित किया जाता था। उस काल में लोगों की परेशानियों एवं कमियों का वर्णन इस गीत में मिलता है। कंट्रोल का जमाना आ गया है फिर भी कपड़ा, चीनी आदि पदार्थ नहीं मिल रहे हैं। भात-तरकारी के भी लाले पड़ गए हैं। ऐसा लगता है मानो अकाल पड़ गया हो। घर में बैठी औरतें रो रही हैं और दरवाजे पर बच्चे रो रहे हैं। गोशाला में जानवर भूखे ढकर रहे हैं और दरवाजे पर बकरी मेमिया रही है। यह कंट्रोल का जमाना है।

(५)

मेहरी रोवे देहरी बइठल, छोवा पीयऽ हे पटनवाँ, हाय रे गोरिया।
अंगना सुतल बुतरू काने, तेल पीयऽ हे पटनवाँ, हाय रे गोरिया।

निमक लागि बुढ़वा तरसे, चीनी चाटऽ हे पटनवाँ, हाय रे गोरिया।
पसु बकरी के घास न मिले, मलाई चाभऽ हे पटनवाँ, हाय रे गोरिया।

कब ओकरा पर बज्जड़ गिरंत, कइसन हे दुसमनवाँ, हाय रे गोरिया।

भावार्थ

यह लोकगीत स्वतंत्रता-प्राप्ति के वर्षों बाद की घटनाओं से पूरित है । इसमें लोगों की गरीबी और पटनावासी तथा सरकार के कारनामें उजागर होते हैं । दरवाजे पर बैठी औरत रो रही है और पटना में लोग छोवा गूड़ पी रहे हैं । इस प्रकार घर पर बच्चे खाये बिना रो रहे हैं, बूढ़े को नमक-रोटी नहीं मिल रही है, पशु-बकरी को चारा नहीं मिल रहा है और पटना के सरकारी लोग चीनी-मलाई चाभ रहे हैं । अतः लोकजीवन में आक्रोश है कि सरकार पर बज्र क्यों नहीं गिरता, यह कैसा दुश्मन है ?

●

खंड-तीन

सोहर गीतों में आए ठेठ मगही शब्दों के हिन्दी अर्थ

सोहर गीतों में आए ठेठ मगही शब्दों के हिन्दी अर्थ

शब्द	अर्थ
गह गह	= गहमागहमी, हलचल, उमंग, उत्साह
उतारब	= उतारेंगे, रखेंगे
कोहबर	= शिशुजन्म के समय चित्र उकेरा गृह, विवाह के समय चित्रोल्लिखित घर
पिछुअरवा	= पिछुती-घर के पीछे का भाग
निरेखले	= देखना, आँख गड़ा-गड़ाकर विचार करना
केरा	= का, के (स्त्रीलिंग = केरी = की)
अलगत	= उठेगा (पात्र सिर पर उठाना)
दिहले	= दिया
चेरिया	= दासी
गजोवर	= प्रसूति गृह = जच्चा का घर
ओटिया	= पेट के नीचे का हिस्सा
चिल्हक	= मड़ोरना (चिल्हक मारे = मड़ोरने लगना)
निहुरी	= झुककर
सेजरिया	= शयन-शैया
मोटरिया	= मोटरी, गाँठ, संभोग-क्रिया
असगर	= अकेला या अकेली
घुघवा	= घूँघट
उघार	= नग्न, हटाना या हटाकर
कतेक	= कितना या कितनी
घर से अंगनवाँ	= घर-आंगन का काम करना
बरतन करहँऽ	= बर्त्तन-वासन साफ करना
बदलिया	= बराबरी का काम, विनिमय
सउरिया	= सौरी गृह, प्रसूति-गृह
पइसल	= प्रवेश, भीतर बैठा हुआ
बहुआ	= बहू, पुत्र-बधू
धिया	= पुत्री
देस दूर बसे	= दूर देश में रहना
अउरो,आउर,आउ	= और
फटसिन	= शीघ्र, तुरत
छिनरियो	= छिनाल, पुंश्चली
पियरिया	= पीली सारी
झालर	= बेल-बूटा
सिन्होरवा	= सिन्दुरदानी
झाँपी-पौती	= कुशघास की बनी पिटारी, बक्सा
कोठी-कान्हा	= मिट्टी के बनी कोठी के ऊपरी भाग
कमल फूलो से निकला	= ब्रह्मा की नाभि से निकला कमलनाल जिससे ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई है=विष्णु की तरह पुत्र
झुलावे	= झुलाना
झूल	= झूलो
नेग	= रीति-रिवाज,अनुष्ठान
देवता-मनाने	= देवता पूजने
काजर-पारन	= काजल पारने के लिए
सुपलिया	= सूप से छोटी सुपली
मानिक दीप जरे	= माणिक्य की तरह प्रज्जवलित
अखिया-अंजइया	= आँख में काजल लगाना

शब्द	अर्थ
सरवगुन आगर	= सर्वगुण सम्पन्न
होरिलवा	= बच्चा, नवजात शिशु
रिसाय	= क्रोधित
हँसिहे	= हँसेंगे, व्यंग्य करेंगे ।
मेघवा	= मेघ, बादल
अरज	= प्रार्थना
केदली	= केला (केदली के वनवाँ = केदलीवन)
गउरा देई	= गौरी देवी, सामान्य नारी के रूप में प्रयुक्त
साध	= इच्छा
पारथी	= विशेष तरह का पात्र
परदोस	= प्रदोष
मनभावे	= मन को अच्छा लगाना है
गेलूँ	= गई, गया
दशरथ	= सामान्य नर के रूप में प्रयुक्त
डगरिन	= चमइन या नवजात शिशु के कर्म सम्पादित करने वाली
बुलइत	= पैदल चलना
फनावल	= लाना,पार होना
तमकि	= रूठना,जोर से बोलना
सहन	= भरापूरा (गहन भंडार=पूर्ण खजाना)
बोलावथू	= बुलाना
असवार	= सवार,सवारी
सउरी	= सौरी, प्रसुतिगृह
पीर	= पीड़ा, दु:ख
दिगम्बर	= वस्त्रविहीन शिव
बाट	= मार्ग
कुइयाँ पनिहारिन	= कुआँ पर पानी भरने वाली स्त्रियाँ
प्रसंग	= संग या सम्भोग
अकारथ	= व्यर्थ, बेकार
नद कोरवे	= नया मटका,अँखरा वर्त्तन
ओसरवा	= दालान
सोहावन	= सुन्दर, अच्छा
कुँहकई	= धीरे-धीरे रोना
सुलगई	= धीरे-धीरे लहरना
ठाढ़	= खड़ा या खड़ी (विशेषतः दरवाजे पर)
गलबात	= दिल की बात, गुप्त बातचीत
सेनुरवा बिनु	= विधवा (सिन्दूर के बिना)
तिरिअवा	= स्त्री,पत्नी
समायब	= प्रवेश करूँगी, करूँगा
खस्सी-पाठी देवब	= बकरी का बलि देना
अस पूत	= ऐसा पुत्र
सूरसत-गनपत	= सरस्वती और गणेश
पखारब	= धोऊँगा, प्रक्षालन करना
जोगे	= योग्य
मनभावत	= मन को अच्छा लगना
अमरस	= आम का रस, अमावट
तेजले	= त्याग देना
इयरी-पियरी	= नया पीला वस्त्र
फिरिआयल	= मिचली आना
सत बाजन बाजे	= सात प्रकार की बोली (प्रसंग चैत्र- घमास में कोयल आदि की बोली
निमरायल	= नजदीक आया
दरपनियाँ	= दर्पण, ऐनक
झरक	= लू, वैशाख की लहर
चितयै	= सोचती है

शब्द	अर्थ
विसरही	= त्याग कर
सहनइया	= पक्षी और कीड़े की आवाज, शहनाई
पउतिया	= पौती, झाँपी, पेटारी
धयलन	= थामना, पकड़ लेना
सवैया	= रखने के लिए
विगन	= फेंकने के लिए
उगलदान	= पिलकी फेंकने का पात्र

मुण्डन या चूड़ाकरण

शब्द	अर्थ
चकरी	= चक्की
अझुरी	= उलझना हठ
मोल	= कीमत
भनन	= पढ़ना
हंकार	= पुकारना, पुकार, बुलाहट
बरूअवा	= बालक (मुण्डन कराने वाला बालक)
बीरा	= पान का बीड़ा
बुलकी	= बुलाकी, नकबेसर
सतरंगिया	= सात रंग का कालीन
छिहुलाय	= घबरा जाना
लुलुहा	= हाथ का अग्रभाग
गंठी	= गाँठ
रिसिआय	= क्रोधित
लूटन	= घर लूटने वाली
खखुआय	= क्रोध में बोलना
लरवर	= बड़े-बड़े केश
अलबेला	= प्रिय तथा सुदर्शी

जनेऊ या यज्ञोपवीत

शब्द	अर्थ
कवने	= कौन
अरार	= किनारे
निरेखे	= देखे, अवलोकन करना
वजाय	= बाजे-गाजे के साथ
ससरी	= रेंगना, सरकना
पारस डंटा	= पलाश-दण्ड
मुंजियेडोरी	= मुंज की रस्सी
सहिते	= साथ
पीढ़िया	= पीढ़ा, बैठने की छोटी तख्ती
पखारी	= धोकर
वेदअही	= वेदी में
इंजोर	= प्रकाश
साही	= शाह (सिंह)
देई	= देवी
मांगीला	= मांगता है, मांगता हूँ
धोती-पोथी	= धोती और पुस्तक
थारी भराई	= थाली में भरकर
कसमिरिया	= कश्मीर
असथान	= स्थान
थलवा	= थाला
मुंज	= सरकंडे के ऊपरी भाग का छिलका
लं[illegible]ी-पोंटी	= लोट-पोटकर
झरलन-झुरलन	= झार सम्हालकर
वेदियनी	= मांगलिक अनुष्ठानों में रंग-विरंगी चावलों से वेदियाँ भरी जाती हैं और उन्हीं पर क्रियाएँ होती हैं ।
भरावत	= वेदी भरावेंगे
सुहावे	= सुहागिन
बोली भीतरायल	= [illegible]त्रातिरेक में मूक बन जाना
[illegible] जोत	= रत्न की ज्योती

शब्द	अर्थ

विवाह के गीत-मटकोरा

शब्द	अर्थ
बधावा	= बधाई
मंगलचार	= मंगलगीत
सोचावाऽ	= विचार करें
पट	= वस्त्र
जाजिम	= सफेदी
जनहया रीखी	= जनक ऋषि
उताहुल	= बीतना, सवार होना
रउवा	= आप
दमड़ी-दोकड़ी	= अत्यंत कम कीमत
भड़ुवा	= वेश्या के साथ रहने वाला
पैरो	= पैर
गढ़	= दुर्ग, किला
पइसब	= प्रवेश
मढ़ैबो	= मढ़ाना, लगाना
दुअर मनिया	= मणियों का बंदनवार
कोटवाल	= कोटा-परकोटा
बेइलियागढ़	= बेइली दुर्ग,
कोइलर	= क्रोयल
उछहल	= उछलना, उमंगित
जर्लानिया	= जन्म
कुर खेत	= बिना जोते हुए खेत
नकबुलकी	= नकबेसर या नाक की नथुनी
चोरवले	= चुराकर,छिपाकर
गझनौटा	= स्त्री के अधोभाग का वस्त्र
भतार	= पति,अवैध सम्बंध वाला दोस्त के अर्थ में
मूसर	= भूइयाँ
मजगूत	= बहादुर, बलवान

मंडपाच्छादन के गीत

शब्द	अर्थ
गहागही	= अच्छी तरह,चहचह
बहुआरो देई	= बहूदेवी, पत्नी
गरभ	= दर्प, घमण्ड
लहसी	= प्रसन्न होकर
हँसुली	= गला का आभूषण
प्रभुजी	= पति के अर्थ में
ननदोसिया	= ननद का पति
दरव	= द्रव्य, अर्थ, सम्पत्ति
विसराव	= त्याग दो
उरूव	= उत्तर
कखवा	= काँख, बगल में
डड़िया	= डोली, पालकी
ठोर	= चोंच
अनजानो	= अज्ञात, अमुख
बहुआरो	= बहूदेवी
होमवा	= धूप (देते हुए)
थुम्हिया	= थम्भ
ठकुराइन	= नाइन
सवासिन	= बहन, भाँजी, बेटी आदि
परोसन	= पड़ोस की स्त्रियाँ
अम्मा	= आमवृक्ष
चेरिया	= सेविका
ममोरले	= मरोड़ना, तोड़ना
पइसी	= प्रवेश कर
खम्भा	= थम्भ
दियरा	= दीपक
छवइहँऽ	= छा दें
गलइचा	= गद्देदार बिछावन
रखिहँ	= गड़ना, लगाना
पसरलडाढ़	= फैली हुई डाली

शब्द	अर्थ
लहुरी	= छोटी और चंचल
गोतियन	= गोत्रादि
बिजुवन	= वृंदावन
अजवार	= खाली कर
हिनिआयल	= हिनहिनाना
धमसायल	= अचानक आ पहुँचना
डड़िया	= पालकी
परे	= किनारे
सान	= गुमान
पिअरिया	= पीला वस्त्र
पुरहत	= पूर्ण पात्र
घरूअरिया	= रसोई बनानेवाली, घर में
हुलसल	= प्रसन्न होकर
अरब-दरब	= दव्य का अभिमान
गुरू दूज	= ब्राह्मण
नेवले	= झुकना
दूधवे	= दूध से
अधेछहँऽ	= संतुष्ठ होना

हल्दी के गीत

शब्द	अर्थ
जनक दुलारी	= बेटी का अर्थ में
सकल	= सारा, सम्पूण
जीरवा-पातर	= जीरे की तरह पतला
अबटन	= यव-गेहूँ का मिला हुआ उबटन
रचियक	= थोड़ा
लाई	= लगाना, तेल लगाना
सुहाग के तेल	= सौभाग्य का तैल
मसीहान	= मसी रखने का पात्र= दावात
घरवा दीहे	
बनवास	= घर में ही बनवास देना
वास	= निवास

शब्द	अर्थ
कथी कटोरी	= किस चीज की कटोरी
करूआ तेल	= सरसो का तेल
कस्तूर	= कस्तुरी
थारीभर	= थारी भरकर
एते आवऽ	= इधर या नजदीक आवें
हरियर पट	= हरे वस्त्र
संगे	= साथ में
सुहावे	= सुहागिन, सौभाग्वती
ताही पाछे	= उनके बाद
परोसल	= रखना, देना
बसेर	= निवास
कुरखेत	= साफ खेत
बेसाहले	= खरीदना
तेल-फुलेल	= फूल का तेल
चुमावन	= वर की अंजुली में रखा चावल
मोतिआही	= मोती से
शिव-संकर हरी	= महादेव भगवान
भुगतऽ	= भोगो
जिअहूँ	= जीवित रहो
पत्र	= पात्र
अपन्न	= अपनी, अपना
हिरदा	= हृदय
बरवा-कनइया	= वर-बधू
ललना	= वर-पुत्र के अर्थ में
सुहागिन	= सौभाग्यवती
चनन	= चंदन
साज	= सुसज्जित
लेलन	= ले लेना
[illegible]या	= [illegible]ंसी
[illegible]	= चुमावन-पात्र, डाली

शब्द	अर्थ
माहिलोग	= माताएँ (कौशल्य, कैकेयी, सुमित्रा)
तबरं	= बाद में
टीका	= तिलक, मांग टीका (द्वैयार्थक)
पराया	= दूसरे की
धिअवा	= पुत्री
लाल बूटी अँचरा	= लाल बूटीदार (आँचल)
छतवा	= छाता, छत्र
केई	= कौन
लुटावले	= लुटाना
सिव-संकर-हरी	= शिव-शंकर और विष्णु
ललन	= यहाँ पुत्र के अर्थ में
केकरा	= किसके
अपन	= अपने
झीलगंज	= स्थान विशेष (झील के नजदीक)
डलर	= डाली, पात्र
खरई	= घास

कलसा और नहछू

शब्द	अर्थ
करवा	= केला
खरही	= खरई घास
चउमक	= चतु मुर्ख दीपक
दियरा	= दीपक
जरेला	= जलना
सारी	= सम्पूर्ण
तीनगुन	= उजला, लाल, हरा (सतो गुणात मोगुण, रजोगुण से युक्त)
नौगुण	= धागे में तीन गुण में नौ लपेटा रहता है जिससे जनेऊ की तैयारी की जाती है। कलसा तीन गुण और नौ प्रकार के सांसारिक भारों को वहन करने की प्रारम्भिक भूमिका है।
धन धन	= धन्य-धान्य
पुरध्य	= पूर्ण पात्र
सुगई	= कन्या

नहछू

शब्द	अर्थ
भांगहूँ	= काटना
सवासिन	= बहन आदि नेगदारिन
छोलले	= काटना
टुकटुक	= एक टक, टुकुर-टुकुर
हंकार	= पुकार
मुनरिका	= मुंद्रिका, अँगूठी
केरं	= कौन
रूप	= रुपया, चाँदी
रतन-पदारथ	= रत्न-पदार्थ
अमुक रइया	= अमुक राय
वेसाहले	= खरीदना, घाट सुसज्जित करने के अर्थ में
सुगई	= सुहागिन
घूरब	= लौटना
जनु	= मत, नहीं
कसइलिया	= कसैली, सुपारी
अरव	= अरव (संख्या वाचक)
दरब	= द्रव्य
बिलमाय	= विलम्ब
लाल-पियर	= लाल-पीले वस्त्र
भँवरवा	= भौंरा (दूत)
महरिया	= मिष्टान्न भरा घड़ा

शब्द	अर्थ
विरन	= वीर, भाई के अर्थ में
कांठी-कान्हा	= कोंटी के कंधे पर
वंकार	= विकार
मिलान	= भेंट

वर सम्बंधित लोकगीत

शब्द	अर्थ
मलहोरिया	= माली
मउर	= मौर
मजेदार	= सुन्दर
गजरा	= माला
दरजिया	= दर्जी
जोड़ा	= जोड़ा-जामा
पेन्ह-पेन्ह	= पहनना
वसु-वसु	= बसता है
पहिरावे	= पहनाना
समझे	= विचार करना
जलमल	= जनम
लाजे	= लज्जावश
कोठरिया	= छोटा कमरा
ऊपर	= उसके ऊपर, उसपर
हजरिया	= हजारों का मालिक
किन-किन	= खरीद-खरीदकर
मनावे	= मनौती मानना
अँउटल	= गर्म किया हुआ
खइयों	= खाऊँ, खाना
पीअई	= पीऊँ, पीना
कोर सूपवा	= कोरा सूप
जोहले	= प्रतीक्षारत
बटिया	= मार्ग
खइअई	= खाऊँ
दोहरे वीरा	= दो वीड़ा
वसीसे	= वर्षा हो रही है
रखिहँऽ	= रख देना
झुकि-झुकि	= विनम्र होकर
मोंचिया	= मोंची
मोजवा	= मोजा
कलिया	= कली
गुलाब झुरिया	= गुलाब की पंखुड़ियाँ
गते-गते	= धीरे-धीरे
ससुर-गलिया	= श्वसुराल की गली में
अमीर बोलिया	= शिष्ट बातें
कोरे नदिअवा	= नयी मटुकी
तलगूला	= तबतक
सजले	= सज लिया
कसइलिया	= कसैली
बने-बने	= वन-वन में, जंगलों में
अनजानो	= अज्ञात,अमुक
चतुरिया	= चालाक
बसौंथी	= बसा दिया है ।
डेरे-डेरे	= घर-घर में
पहुँचावथी	= पहुँचा देना
चान के जोतिया	= चन्द्र ज्योति
ओठ	= होठ,बोली
चूअत	= टपकना
सिनेह	= स्नेह, प्रेम
बटिये	= मार्ग में
कवन विधि	= किस प्रकार
देवनिया	= दीवान
कुर खेत	= कोरा खेत=खेती
जिरवा लदनिया	= जीरे का व्यापारी
सजल	= सजना, होना
पतरे अनजानो	= पतले अमुख

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
गुलेल	= दोकानी डाली में रवड़ बंधा हुआ एक प्रकार का शिकारी खिलौना	भूम्हरिया	= धूली
		जइहें	= जायेंगे
		ताहि तर	= उसके नजदीक
फुलवाड़	= फुलवारी	लोर	= आँसू
कसुरवा	= दोष, गलती	बिअहलऽ	= विवाह किया
झिलमिल	= झलमलाता, स्वच्छ	देसे दूरवा	= दूर देश
सेवार	= शैवाल	जओरे	= साथ
पोठिया	= छोटी-छोटी मछलियाँ	वावे	= वाये
सितुहा	= घोंघा की एक जाति	बहनोइया	= बहनोई, जीजा
कनेया कुँआर	= क्वाँरी कन्या	चिहुँकि	= घबराकर
रिखी	= ऋषि	धधाय	= फड़फड़ाकर
पुत	= पुत्र, लड़का	रइया	= राय
कउन भरोसे	= किसके बलपर	कचरले	= चबाना
वेख	= घर, निवास	विरवा	= बीड़ा
मघवा	= माघ	केकरा	= किसके
मघेड़	= वासंती	भरोसे	= भरोसे पर, बल पर
समेअनवा	= तम्बू	गुमान	= घमंड
लहुरा	= दुलारा	छेकलन	= रोका,रोक देना
लहेलन	= लिया, लगा लिया	गढ़ाय	= गढ़ाकर, बनाकर
अंगिया	= कुर्त्ता	किनाय	= खरीदकर
रोदना	= रोना	गछ तर	= पेड़ के नीचे
पसार	= प्रारम्भ किया	सँवारे	= सवारना, पहनना
पर-पकवनवाँ	= पुआ-पकवान	जइहें	= जायेंगे
झंगरिया	= झंगरी	लोकदीन	= वर की पालकी के साथ जानेवाली दासी
निरखे	= देखे		
लाढ़ो	= दुलारा	हँसमुखिया	= हँसमुख, वाचाल
अइया	= माँ	जवबिया	= प्रश्नोत्तर
लाओ	= लगाओ	समतुलवा	= बराबर (देकर बराबर करें)
केरा	= का	करवई	= करूँगा
वेर ही वेर	= वार-वार	धिया	= बेटी
बरजो	= मना किया	जउवा	= यव, जौ
तलफी	= तलफती हुई=अत्यंत गर्मी	वेच	= वेचना

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
गववलऽ	= व्यतीत किया	कंने गेले	= किधर गए
पेन्हं	= पहनता है	किया भेले	= क्या हो गए
लरिया	= लड़ी	रूसल	= रूठी
लगइहँऽ	= लगाना	दवार	= दौरा
जोंगे	= लायक	आँख	= काजल करने के अर्थ में
सेंतिहे	= मुफ्त में	लिहले	= लेकर
ठग कं	= ठगकर, भुलाकर	महावर	= लाल रंग का तरल पदार्थ
डरवा	= डाली	निहछू	= टोना उतारना
लचकि	= झुककर	ठाढ़	= खड़ा
पसरायल	= फैला हुआ	ओलारई	= फैला रहा है
लोरवा	= आँसू	भुखासल	= भूखा
झरत	= अविरल अश्रु प्रवाह	चिबावई	= चबाने लगा
केई	= कौन	घमायल	= धूप से गर्म
बेइलिया	= बेलवृक्ष	गोड़वो	= पैर भी
अचवे	= आचमन करना	नदान	= अज्ञानी
सीरीसिया	= सीरीष वृक्ष	हाथ न उठाना	= प्रणाम नहीं करना
मलहोरिया	= माली	पोखरा	= तालाब
जार-बेजार	= जोर-जोर से	सम्हारई	= सम्हालना
देवबऽ	= चुकता कर देंगे	पटम्बर	= रेशमी वस्त्र
ओही	= उसी	लाड़ो	= प्यारी कन्या
सुतथी	= सोया	दर रे दलान	
जवरे	= साथ में	कयले	= लाव-लश्कर के साथ
बहुआरो देई	= बहु देवी	छेकले	= घेर लिया
बढ़ैतिन	= माननीया	सहरिया छेकले	= शहर घेर लिया
गलवात	= मन की बात	रचियक	= थोड़ा
उड़ेहले	= उकेरा है	बिलमइहँऽ	= ठहरा दो
केरे	= किसने	धिअवा-समधी	= बेटी व्याह कर
विनले	= वीना बुना है	मनमार	= उदास
[illegible]हाट	= खाट, पलंग	हारली	= हार गया
ओते चलू	= उधर चलो	डड़िया-सवरिया	= पालकी की सवारी
धिअवा	= पुत्री	अरजिया	= अर्ज, प्रार्थना
भूइयालोट	= जमीन पर लेट गई	धैले	= पकड़कर

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सिलिया	= शिला	सेंजिया	= शैया
ओंगठाय	= सहारा लेकर	चारो-पहर-रतिया	= रात्रि भर
गरभ से	= आदेश सूचक बोली	सोने-मुठी	= सोने के मूठ
रचि	= थोड़ा	अलोते	= आड़, छाह
धूपवा-गँवाय	= धूप से राहत पाना	रंगल	= रंगीन
कोइलर	= कोयल	भेडुवा	= गाली, वेश्या के साथ रहने वाला
पतरा सोचइहँ	= पंचांग से विचरवाना		
सोने-मौरी-होइहें	= सुवर्ण का मौर होगा	जोड़उवा	= जोड़ा
ओने से	= उधर से	गूथई	= गूँथ रहा है
घुरवो	= लौटूँगा या लौटकर	उहवाँ	= वहाँ
चिर	= वस्त्र	कते	= कितना
ठोर	= चोंच	मोर	= मेरा
अलारी	= लाड़-प्यार से	संचल	= संग्रह (संचित)
किया किया	= क्या-क्या	चुनवे	= चूना से
जोखी	= तौलकर	चुनेटल	= पोता हुआ
वरध	= बैल	दुआर	= दरवाजा
धेनु गाय	= लगहर गाय	गड़ल निसान	= गड़ा हुआ झंडा
लवली	= लाना	चारू दने	= चारो ओर
डड़िया	= डोली, पालकी	जतन	= प्रयास, सुरक्षा पूर्वक
लाड़ो	= लाड़ला	कुआँ-पनिहारिन	= पनघट की स्त्रियाँ
अजवी	= विचित्र	बटिये	= मार्ग में
सुहाय	= सुहाना	सेरे-जोखी-	
नजरका बान	= कुदृष्टि	सोनवा	= सेर से सोना को तौलकर
जोग	= योग्य	रूपवा	= चाँदी
राहे-बाटे	= मार्ग में	अनमोल	= अमूल्य
तोड़लन	= तोड़लिया	कोखिया	= गर्भ
ओरहन	= उलहना	पोसली	= पालन किया (गर्भ में रखा)
बरजहूँ	= मना करें	कतहूँ	= कभी भी
दाम	= कीमत	मुरझाई	= मूर्छित होकर
चँदवा	= चाँद	मंगवली	= मंगाया
छपीत	= छिप जाना	ऊ पार	= उस पार
केरा	= का	मउरिया	= मौर

शब्द	अर्थ
सरवा	= साला
हैंट	= टोप
लरीया	= लड़ियाँ
सीतार	= सितार
लाड़ो	= प्यारी पत्नी
घुमाया करो	= भ्रमण कराओ
किन-किन	= खरीद कर
दोअतिया	= दावात
अजब	= विचित्र
झिमिक	= रिमझिम
नजरियों	= नजर, कुदृष्टि
लहराय	= लहराना
कान्हे	= कंधे पर
काने	= कान में
सोहाय	= शोभ रहा है
सोना	= यहाँ, स्वर्णा भूषण
मोतिया	= मोती
वसतु है	= रहता है
मलिअवा	= माली, तेल रखने का पात्र
मोल	= दाम
सिरमन	= जरीदार
रतन [illegible]ड़ी	= रत्नजडित
अंगिया	= अंग पर
चदरा	= चादर
मउलाई	= मुर्झा जाना
गयले	= गया
अहरी-पहरी	= प्रहर-दर-प्रहर
छउरी	= मालिन-बेटी
छवायो	= छाया गया
खेलावे	= खेलाना,मजाक करना
सोई लाड़ो	= सोई पत्नी
लाल	= लड़ी, लरी

शब्द	अर्थ
सजनि	= सजनी, पत्नी
कुरुम	= चमकदार चमड़ा
बना	= दुलहा
सेहरा	= सिर की विशेष टोपी
कलगी	= पक्षी का रंगीन पंख
पटुकी	= वस्त्र
पाव	= पैर
सोने चिरइयाँ	= सोन चिड़िया
ओटे-ओटे	= ओट में
बाट	= मार्ग, राह
जोहवा	= देखना
ददिया सास	= सास की सास
जोत	= ज्योति
सोरह रंग	= सोलह प्रकार
जनि	= नहीं
कुचकुच	= अत्यंत काला के लिए
रूसे है	= रूठ गए हैं
बहार	= सौन्दर्य
सम्हार देहूँ	= सुसज्जित कर दें
सेहरा	= सेल्हा

बेटी या बधू के वैवाहिक गीत

शब्द	अर्थ
अवतन	= आवेंगे
सवरे वरन	= श्याम वर्ण
गढ़वा	= किला
तरे-तरे	= भीतर से
डेरयलन	= डर गए
लुका गेलन	= छिप गए
धानी	= पत्नी
रोवथिन	= रो रहें हैं
धिअवा	= पुत्र
पाउन	= अतिथि

शब्द	अर्थ
धीरजा	= धैर्य
प्राभु	= प्रिय
धिअवा	= कन्या (दुलारी)
जल-कुश	= कुश से जल छिड़कना
मांग सेनूर	= मांग में सिन्दूर लगाना
जोगिया	= सिन्दूर बेचनेवाला एक जाति विशेष
संट के सिन्दुर	= खुशबूदार सिन्दूर
जलमिया	= जन्म लिया
पयवऽ	= पावेगी
ऊँच ही घरवा	= बड़े घर में
विअहवा	= व्याह
अइसन	= तरह
कहिवऽ	= कहूँ
दिवऽ	= दूँ
वीरान	= पराया
जफरवा	= जाफर
झवदा	= पैना
थपड़िया	= थप्पड़
खनाय	= खुदवा कर
भुखायल	= भूखे
खोइछें	= खोइछा, आँचल का अग्र भाग जिसे कमर में लपेट लिया जाता है।
चेहाय	= आश्चर्य चकित होकर
खरबा दूई चार	= दो चार खरब
[illegible]	= लट, केशराशि
[illegible]-झुरी	= झड़ जाना
आहिवात	= सौभाग्यवती
पसरले	= फैल जाना
झझाय	= अश्रुपूरित
चनन	= चंदन

शब्द	अर्थ
चौकिया	= तख्ती
बनौवली	= बनाया
देहली	= दिया
सेही	= वही
बैठथी	= बैठें
कुम्हिलाय	= वेदी के धुआँ से मलीन हो गया
बेनिया	= पंखा
प्राभु	= पतिदेव
जोगिनिया	= योगिनी
का करिहें	= क्या करेंगे
जोग	= एक प्रकार का टोटका
बेसाहना	= खरीदना
घुरूमी	= घूमना
जागी-सोइहँऽ	= जाग-जागकर सोना
पइसी	= प्रवेश कर
लड़ी अयली	= संघर्ष कर आया
भोरउआ	= भोरे, सवेरे
सींक	= नारियल या झार की पतली डंटी
अनमुनाहे	= सबेरे, अंधकार के रहते ही
बढ़नवा-बाढ़न	= कूड़ा-करकट
बिगिहँऽ	= फेंक देना
जुड़ी	= शीतल
सतभतरा	= सात मर्द से
लंगटवा	= लंगटा, अतिदीन
डड़िया	= पालकी
बुरबकवा	= बेवकूफ
किनलन	= खरीद किया
समेते	= साथ
बहुरैतन	= पुनः ले आना
बटिया-बाट	= मार्ग

शब्द	अर्थ
सेजिया-डसावन	= शय्या-बीछावन
असवार	= सवार
लपकी-झपकी	= लपककर और झपटकर
संखा-चुड़िया	= शंखकी चूड़ियाँ
मुरुकी जतई	= मुरक जाना
गरज	= स्वार्थ
झंझवा	= झाँझ
पयलऽ	= प्राप्त किया
कइंसन	= कैसा
अछत	= स्वच्छ चावल
अइसन	= जैसा
दुलरइतिन	= दुलारी
मामा	= दादी
बेनिया	= पंखा
पुछार	= पूछना
किया-किया	= क्या-क्या
धेनु गइया	सरल सीधी लगहर गाय
गुलेहार	= फूल
हजरिया	= हजार तरह के
छितराय	= विखर गया
हारे-हार	= एक-एक कर
सम्पत	= सम्पति
डढ़िया	= डाल
दलमत	= डगमगा दिया
मोफिल	= महफिल
तालाभर	= ताला लगाकर
गेलथू	= गए
कामरू	= कामरूप-कामक्ष्या
रिझौना	= रिझाने वाला
महौना	= बडा, महान
पैलथू	= पाया

शब्द	अर्थ
जोंग केरा जड़ियो	= जोंग ही जड़ी
महौनिया	= एक प्रकार की जड़ी
चारू खंड	= चार किता
चारू ओर	= चारो बगल
ओठगल	= सहारा लेकर
बरजन	= बाज
गजमोती	= गजमुक्ता
डटहर	= डाँटी युक्त
पंसारी	= व्यापारी
गढ़	= किला
चिन्हब	= पहचानना
खरह	= बड़ा
ऊरूब	= पूरूब की वजन पर ऊरूब का प्रयोग हैं ।
बेर ही बेटी	= बार-बार
बरजो	= मना किया
अहेर	= शिकार
अहेरिया	= शिकारी
सुन्ना	= शून्य
लिलरा	= ललाट
मनि बरे जोत	= मणि की तरह ज्योति निकलना
मयभा	= सौतेली
झिटकी	= छोटा ठिकरा
नार	= नाल
लोढ़िया	= लोढ़ा
सिलौटिया	= सिलौट-शिल
पिराय	= दुखने लगा
घुरूमी	= घूमना
सिन्होरवा	= सिन्दुरदानी
घूरि-फिरि	= घूम फिर कर

शब्द	अर्थ
दूनो लोर	= दोनों आँखों से अश्रुपात
घुर में	= घूम रहा है
हरमियाँ	= हरामी
कन्हवाँ-कुदरिया	= कंधे पर कुदाल
मोटरिया	= गठरी
घोसहूँ	= बोलना
छिनारी-पुत्ता	= कुलटा का पुत्र
लपकी-झपकी	= लपक कर-झपट कर
हजारी-पुत्ता	= धनी का पुत्र
मेड़वा	= मेढ़, गांछ = वृक्ष
मँइयाँ ला	= पुत्री के लिए
नैना जोगिन	= नजर से जोग करने वाली
जोग-भला	= भले जोग
चकमक	= चौमुखी दीप
गुजराती	= अभिमंत्रित
सजना-हंकार	= सज्जनों को बुलाकर
होमओ	= होम, यज्ञ
गढ़	= किला, (कहीं-कहीं कन्या के अर्थ में भी)
पवन अइसन नैना बहले	= हवा की तरह आँख से अश्रुपात (नया, अछूता उपमान)
मदोदर	= मदयुक्त बड़ा हाथी
घड़ी-घंट	= घड़ी-घंटा
उतरत	= उतरेगा
किया-किया	= क्या-क्या
तिल-पोरा	= तिल और पुआल
अउटल	= गर्म
समधब	= बिदा करूँगा
कउनी	= किस
जुगवा	= जुआ

शब्द	अर्थ
तोहरो	= तुम्हारी
अइसनया ऐसन	= ऐसा या तरह
उतरत	= उतरना
उतारव	= उतारूँगा
झारू बहारई	= झाड़ू देना
धरली	= रख दिया
चउका	= रसोई करना
नेवता पंठवलन	= निमंत्रण दिया
हारी बैठल	= हार कर बैठ जाना
प्रताप	= शक्ति, घमंड
हर	= हरण करो
पैर लागल	= चरण स्पर्श किया
झझकाल या झंझकाल	= जोर की आवाज
समुदफल पावे	= समुद्र-मंथन का फल
विना पूछले	= बिना प्रयास के
कातिकमास	= कार्तिक स्नान
सगुन चुमइहँऽ	= विवाह का सगुन निश्चित करना
पुरहथ धनवा	= पूरा धान
प्रहलाद	= अह्लादित
काँची अम्मा	= कच्चा आम
काँच ही	= कच्चा
पीढ़िया	= पीढ़ा
भरमुख	= पूर्ण रूपेण
येहू	= ये
ओठगाई	= खड़ा कर दिया
इंजोर	= प्रकाश
राजबंसी	= राजपुत्र
छेकले	= घेर लिया, रोक देना
पलकिया	= पालकी
निसान	= प्रतीक

शब्द	अर्थ
लछमिनिया धिया	- लक्ष्मी की तरह पुत्री
सिलौटिया	= शिल जिसपर मसाला पीसा जाय
हरवा	= हल
परलन	= चली गइं
उठथिन	= खड़ा हुए
मंगइबई	= बुलाऊँगा
काज-परोजन	= कार्य-प्रयोजन
दल रतने के	
बेरिया	= बारात का समय
काहे मुख	= किस मुख से
जाँघ सुख	= जाँघ पर कन्यादान करने के लिए
मुँख सुख	= मुँह की शोभा के लिए
बिलमायो	= रोक लिया
आगर-चानन	= अगर-चंदन
छीपा	= थाली
देलथुन	= दिया
जुगवा-सार	= पूर्ण जुआ
लजाय	= लज्जित होकर
ढढाय	= अटहास करना
रसरी	= रस्सी
जबाब	= प्रश्नोत्तर
चूरी	= चूना, बुकनी कर
जाही महले	= जिस महल में
जवरे	= साथ में
बेनिया	= पंखा
डोलाय	= हाँकना
दिलबात	= गुप्त बात, मन की बात
सिन्होरवा	= सिन्दुरदानी
सौदागर	= व्यापारी, दुलहा
हिरदाफार	= हृदय विदारक

शब्द	अर्थ
गउरी	= गौरी, पुत्री
तपसिया	= तपस्वी, पुरोहित
जग	= संसार
आयल	= आए हैं
भावे	= सुहाता
तोरत	= तोड़ेगा
हँसथी	= हँस रहे हैं
कोटि दल	= करोड़ तरह के दल-रण
साजल	= सज्जित किया
उछाह	= उमंग
बहुआरिन	= घर-गाँव की बेटियाँ
निसान	= पताखे
उमगई	= उमंगित
कलकल गान	= सुन्दर गीत
विधभरी	= विधि-विधान से युक्त
हुनकर	= उनका
अंगना जुठावे	= आंगन में जूठा गिराया
चननवा केरा गाछ	= चंदन का वृक्ष
झराझर	= खरी-खोटी
अइसा	= ऐसा
रूनकी-झुनकी	= चंचल
दुलारू	= दुलारे
जुड़ाई	= तृप्त हो गया
हुलसि	= उमंगित
रिखियनि	= ऋषियों को
जनावहूँ	= खबर देना
दल	= बारात के सारे लोग
साम-बरन	= श्याम वर्ण
गोर	= गौर
मकुनी हथिनियाँ	= छोटी हथिनी
जरदी	= पीला
अमरिया	= हौदा

शब्द	अर्थ
खोंवे	= भूल गई
कोरा कोल-सुपवा	= कोरा सूप
ढमाढम	= ढब ढब
वजना	= बाज
कसविन	= पतुरिया
लेसी लेहू	= जला लो
मन वेदील	= मन से उदास
धाँगलक	= चलना
छूवलक	= स्पर्श किया
चाटलक	= चाट गया
जतन	= प्रयास
पंटारी	= पंटी, सन्दूकची
से ही पर	= उसी पर
रीझ	= मोहित हो गई
हाड़ी	= मटका
मंगनी	= दूसरे से मांगा हुआ
सतभतरा	= सात पतियों से
जिमदार	= जमींदार-पुत्री
वीछिया	= पैर का गहना
मुन के	= बंदकर
किया दल उतरत	= क्या बाराती उतरेंगी
बरनेती	= आभूषण चढ़ाने वाला भैंसुर
बन्ना	= दुल्हा
खरई	= तिनका
चुनवलऽ	= चुनवाया गया
गेयान	= ज्ञान
सव जोग	= सभी तरह के टोटके
दुलर बर	= दुलारा वर
हइन	= है
डाली-डुली	= डलिया आदि
गेड़ुवा	= जलपात्र
चेरिया	= दासी

शब्द	अर्थ
डलवा	= चंगेली
बहुआ	= पुत्रबधू
कोरे नदिया	= कोरा मटका
पोलवा	= धागा का पुलिंदा
झट सिना	= तुरंत, शीघ्र
निहुछे	= नजर उतारना

सिंदुरदान या कन्यादान के गीत

शब्द	अर्थ
चउमक मानिक दीप	= चतुर्मुखी मणि का दीपक
हँकार	= पुकार
झापि	= वस्त्र से ढँककर
लवलन	= लाया
उघारलन	= मुँह से वस्त्र हटाया
कनिया	= कन्या, पुत्री
काँपले	= काँपने लगा
छत्री-पत्री	= पुअले-पत्ते
विरवा	= बीड़ा
गुमाने	= घमण्ड
जनमो-सिनेह	= जन्म-जन्म का स्नेह
सुखनीन	= निश्चिंत होकर सोना
उरूब	= उत्तर दिशा
मनेर	= पटना के नजदीक एक ऐतिहासिक शहर
घुट्ठी-धोती	= पैर तक लटकती धोती
कोइली	= कोयल = पुत्री
पट-चुनरी	= रेशमी चुनरी
रसे-रसे	= धीरे-धीरे, पुनश्च
गजोमति	= गजमुक्ता
रीखी	= ऋषि, यहाँ जनक
झारीय-झुरीय	= झार-झार कर
पंडवा पच्चास	= पच्चास पाड़े या लोग

शब्द	अर्थ
कचरले	= चबाना
अलोते	= ओट से
मन-परल	= मन में चिंता
तेजलो	= त्यागना
छेकलन	= रोकना
सेनूरा-हाट	= सिन्दुर का बाजार
गजओवर	= कोहबर
मांग भरना	= सिन्दुर लगाना
बाँस वाधयले	= मड़वा का खम्भ पकड़े
पर हाथे	= दूसरे के अधिकार में
भे गेल	= हो गया
सोहावन	= सुन्दर
पसारि	= फैलाकर
लोढ़ब	= चुनना
धीर धरूँ	= धैर्य धारण करो
कचनार	= एक प्रकार का फूल, हरा भरा
नेटुआ	= नर्त्तक, एक जाति विशेष
बेयार	= समय, बारी, हवा
नित उठि	= रोज उठकर
अवसरे	= समय आने पर
केहूँ	= कोई
दिहले	= दिया
ताही तर	= उसी के नीचे
पनिहारिन	= पानी भरने वाली
उचकुनिया	= ठिकरा जिसे चूल्हा पर रखकर वर्त्तन को हिलने डुलने से बचाया जाता है।
ओरहाना	= उलहना
बेसाहले	= खरीद रही है
अहिबात	= सौभाग्य, सुहाग
विरान	= पराया, दूसरे का

कोहबर के गीत

शब्द	अर्थ
महरजवा	= महाराज
लपि-लपि जाय	= नब जाना
जीरा छावल कोहबर	= जीरा से छाया हुआ सुगंधित कोहवर
सजनवाँ	= सज्जन
ओते	= उधर, थोड़ा हटकर
दुलरइतिन	= दुलारी
मइल	= गंदा
भुइया-लोटे	= जमीन पर पड़ गई
छौड़ा पुत्ता	= छोकड़ा-पुत्र, एक प्रकार की गाली
कुबोल	= कुबोली, खराब बात
मइला	= गंदा
सुबरन	= सोना
सामी	= स्वामी
जबाब	= प्रश्नोत्तर
लेखो	= हिसाब भी
सहना	= घना, ज्यादा
सौपि	= जमा कर देंगे, दे देना
चकमक	= प्रकाश से चमकना
लेसिदहू	= जला देना
दिअरा	= दीपक
अँगिया	= चोली
कोर	= किनारा
चोलिया के चोरवा	= चोली चोर
घमायल	= गर्म
लोभायल	= मोहित
खूँट-बरधा	= खूँटा में बँधा बैल

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सरियाल	= सीधा रहना, सजा रहना	जलवाय	= वायु हो जाना, छिपजाना
मंजुरवा	= मोरकनिंका, मोरपंख	छपि-छाह	= छिपकर शीतल हो जाना
गंगी-जमुनी	= सुवर्ण से जटित	जरि-छाय	= जलकर राख हो जाना
घामे मइल	= धूप से गंदा	अकलंक	= दोष
जमुनवा-दह	= यमना नदी	तोहार	= तुम्हारा, पुरुषों का
सुखवे	= सूखा रहा है	रचियक	= रचकर
वाट	= मार्ग	मन चितलाय	= मनोयोगपूर्वक
कंकर	= किसका	वेनिया	= झालरदार पंखा
समानो	= सम्मानित	तनियक	= थोड़ा
जाहीतर	= उसके नीचे	अइपन	= चावल आँटे का घोल
जुगवासार	= जुए की गोटी	फरिछ	= विहान-स्वच्छ भोर
पटुआ	= पाट	तेयागव	= छोड़ देना
साटी	= पैना में बँधी रस्सी	किरन	
निरमोहिया	= निर्मोही	छिटकायल	= किरण छिटक गई
परान से पियार	= प्राण से प्यारा	जगवथी	= जगा रही है
मनचितलाई	= मनोयोग पूर्वक	वदरंग	= फीका, मलीन
दिलजान	= दिलोजान से	भिंगनिया	= झींगी
मनमोहन	= मन को मोहित करने वाला	अइयो	= आऊँ
छुटय	= छूटता है	बैरिनिया	= वैरी
पसेन	= पसीना	कोरवा	= कौर
रूसिके	= रूठकर	भरि नरिअरवा	= हुक्का भर कर
अकेले	= अकेली	सूपली-मौनी	= सूप और दौरी
पर-प्रत्ता	= दूसरे का पुत्र	हुआँ	= वहाँ
कुबोल	= दुर्बचन	महमह बेयरिया	= गंध से भरी हवा
पियारो गले हाथ	= प्रिया के गले में हाथ	हेरा गेलो	= भूल जाना
मसकाय	= फोड़ देना	चिपरी	= उपला, गोइठा
डासले	= विछा हुआ	उहईं पर	= वहीं पर
रूपे	= चाँदी	खउकी	= खाने वाली
पाट	= पावा	बेसाह देवो	= खरीद दूँगी । दूँगा
सिरहनवाँ	= सिरहाने	बबुरी	= बबूल
ठाढ़	= खड़ा	कचनार	= फूल से लद जाना
किरिया	= कसम	सेई	= वही

शब्द	अर्थ
पेन्ही	= पहनकर
चुनथुन	= चुनेगी
अउरो	= और
घर-घअरिया	= रसोई बनाना
कानऽ	= रोना
जंगली छिनार	= कुलटा
दूसी देलन	= शिकायत कर देना
घवदी	= घौंद
सिरोकी	= सिर होर लेना
पगिया	= पगड़ी
अमोघ	= सुगंध
डड़िया	= डोली
खोइछा अमोघ करे	= खोइछा सुगंधित हो जाना
दौना	= एक सुगंधित पौधा
अभरन	= आभूषण
धाई-धुई	= दौड़कर
पइसल	= प्रवेश किया
खेम	= क्षेम = कुशल
कलपि	= कलप कर
संघवा	= साथ
सुप..ो-मौनी	= मूप-दौरी का खेल
चुवले	= टपकता है
चनियें-चुनि	= चुन-बीनकर
डसवलूँ	= बिछाया
डोर	= धागा
जउरे	= साथ में
रोअत	= रोती हुई
मोंही	= मुझे
पार उतारऽ	= नदी पारकर दो
जनि	= नहीं, औरत
तेजलो	= त्याग दिया

शब्द	अर्थ
पनखउक्का	= पान खाने वाला
धमसे	= सुगुधित हो गया
चउकठिया	= चौखट
मचके	= लपने लगा
संजरिया-देह	= शय्या पर शरीर
चेरिया	= दासी
लेस देहूँ	= जला दो
दियरा	= दीपक
बसहर	= बाँस का
बराय	= जला दो
सुतलन	= सो गया
इनती-विनती	= अनुनय-विनय
सिन्होरवा	= सिन्दुरदानी
पहफाटल	= पौ फटना, उषा की लाली दीखना
सिनेह	= स्नेह, प्रेम
कागा-वैरिन	= कौवा-शत्रु
खवास	= घोड़ा की सेवा करने वाला
रूसल	= रुठा हुआ
बिगड़लई	= खराब हो गया मलोलवर, अफसोस
वुध	= बुद्धि
लड़कइया	= लड़कपन
लीली घोड़िया	= तेज और छोटी घोड़ी
सोवरन केरा साटी	= सोने का चाबुक
मदाइन	= श्रेष्ठ
सत पचुआ	= सात-पाँच व्यक्ति
मलोहिया	= माली
रउरे	= अपने के
[illegible]	= दोस्त

शब्द	अर्थ
पारे	= देवे (गाली देने के अर्थ में)
भूइयाँ	= जमीन तक
लचके	= काँपना
दिल-बतिया	= मन की गुप्त बात
गँववलऽ	= बीताया
कुदनवाँ	= कूदने में
इयारन के संगवा	= मित्र के साथ
चउरवा	= चावल, चौरी
किरिया	= कसम
तेजवई	= त्याग दूँगी

जेवनार और गाली लोकगीत

शब्द	अर्थ
मधुवन	= श्वसुराल के अर्थ में,
नग्र	= नगर
गेडुवा	= पात्र, झारी
साजन	= सज्जन
पखारूँ	= धोना
तिहू-लोक	= त्रिलोक
ठाकुर	= मालिक
जाँघजोरी	= जाँघ जोड़कर =सटकर
ओरीयनी	= ओरी के नीचे
बींडी	= पुआल का बना छोटा लम्बा बीड़ा, आसनी
जाजिम	= सफेदी
जेवनार	= भोजन
रूचगर	= स्वादिष्ट
कइता	= बेल की तरह खट्टा फल
जनमास	= बारात का ठहराव स्थान
गमकल	= सुगंध
फुल झार	= फूलों का समूह
उताहुल	= उतावला, आतुर
ओदन-दाल	= भात-दाल
आन	= लाकर, (घमंड भी)
दरवारी	= दरवारियां
सराही	= प्रशंसा
तीना	= तरकारी
तोरई	= भिन्डी
गोरे-नारे	= गोरा मनुष्य
कारे	= काला
छिनारो	= छिनाल, पुश्चली
छाटल	= छटा छिनाल
भरमें	= विचरण करना
पुत्ता	= पुत्र
अचमन	= हाथ धोना
खरिका	= खर, तिनका
बीरा चाभे	= पान चबाया
कोखिया	= गर्भ
सँचली	= संचित रखा
बतीसो	= बत्तीस धार
देव-मनौली	= देवता की मनौती की
दोहइया	= कसम
परोजन	= प्रयोजन
मातल	= व्याकुल
घुनिये गेले	= घून गया, सड़ गया
विआयो	= जन्म दिया
छवड़ो-चांतनो	= पुत्र लगाकर गाली देना
लोकेला	= दीखता है
फेंदा	= फल (ताड़ के फल के लिए)
जइसन	= जैसा (दूसरा रूप-जैसन)
वइसन	= वैसा (दूसरा रूप - वैसन, ओइसन)
कइसन	= कैसा (दूसरा रूप - कैसन)
आरिया	= ओरी
टंगरी	= टांग
मनचितलाय	= दत्तचित होकर
मातल	= मदहोश, मत्त
छैला-भतार	= छैल-छबीला मर्द

शब्द	अर्थ
अमझर	= दाउद नगर से १६ किलोमीटर पूरब-उत्तर में बसा एक मुस्लिम बस्ती
बेलखरा	= स्वयं लेखक का गाँव
कलौंदा	= एक प्रकार का खट्टा छोटा फल
फहरावइत	= फैलाते
पिअइतें	= पीता
बेस	= अच्छा
पेट	= गर्भ रह जाना
ढिढवा	= गर्भ
उतजोग	= उधोग (बचने का)
जतीहँऽ	= लगा लेना
भथिहान	= गर्भोदर
ताहीं तर	= वहीं पर
पास	= नजदीक
धूपल	= धूप में दौड़े आना
मुरछाई	= मूर्छित होकर
अन्नी-दुअन्नी	= आना-दू-आना
तितान	= चित्त
अतरस	= अंदर पहनेवाला वस्त्र, आलते की तरह लाल
अतरही	= अंतर से, तदंतर, अंतराल से
मन कइसे डोले	= मन डगमगा गया
तरे	= नीचे, भीतर
बेसर्मी	= बेशर्म, निर्लज्ज
लायब	= लगाना
अरसी	= नग, शीशा, ऐनक=आरसी
झलक मारे	= चमचमाना
मरउनी	= सम्भोग के लिए
उरीदिया	= उड़द
दोस्ती	= दो रोटी को सटा कर बनाया हुआ
बजकवा	= पकौड़ी
बड़ा नीक	= बड़ा अच्छा

शब्द	अर्थ
लतारी	= लताड़
मंडपवा	= मंडप, कुटी
बसऽ	= निवास करो
टुका	= टुकड़ा
घूसा	= कुटी मुं प्रवेश करा लो, घुसा लो
कचरना	= चबाना (पाने के अर्थ में)
दान	= दे देना (सम्भोग के लिए)
बीस	= यहाँ बीस रुपया से तात्पर्य है
बीछवा रेंगल	= बीछा रेंगता हुआ
बीन्हा, बीन्हे	= डंक मार देना
गुनी	= बीछा झारने वाला
धावल	= दौड़ते हुए
समायल	= प्रवेश कर जाना
जड़ल-किनारी	= जरीयुक्त किनारी
महाबजार	= भीड़ भरे बाजार में
बिगड़ी	= बिगड़ैल
ले उड़ली	= ले भागना
कोई राही	= कोई ग्राहक, बटोही
धसोरा	= सम्भोग किया
चूच	= स्तन
बिअयबो	= जन्म दूँगी
हलुआ	= हलवा
सियरा	= यहाँ रसिक मित्र से तात्पर्य
बोलयबो	= बुलाऊँगी
अधरतिया	= आधी रात में
गोहरवा	= गुहार करना, बुलाना
मचमचवा	= आवाज करने वाला
रोयना	= रोने वाला
पचरी	= खपची
झुमुर	= सुन्दर, झलमल
खत	= पत्र, चिट्ठी
[illegible]	= पकड़ना
[illegible]	= भक्त

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पूआ	= पूप	कथी	= किसका
हरदी गंठी	= गाँठ में हल्दी	कठनइया	= लकड़ी की चगरी जिसपर घिरनी लगी रहती है, उसी पर रस्सी लगाकर कुएँ से पानी निकाला जाता है
अगोरबऽ	= बैठकर प्रतीक्षा करना	मोहे	= मोहित हो जाना
भरल बांरसी		भुँजनइया	= अनाज भुँजना
उलुटबऽ	= सम्भोग से तात्पर्य है	पीसनइया	= जाँता में पीसना
उघरबऽ	= बेपर्द करना	सतनइया	= शयनकक्ष
डेरा	= बारात का वास स्थान	अयबो	= आऊँगा
पतुरिया	= वेश्या	ओसरवा	= ओसारा या दालान
बकर चरवा	= बकरी चराने वाला	खिरकी रहिये	= खिड़की के मार्ग से
परोसन	= पड़ोसी (पुनः खाना लेना)	तनियक	= थोड़ा
गड़लऽ	= नीचा कर लिया	दीहँऽ	= सम्भोग की अनुमति देना
मइया पूरा दिहँऽ	= माँ को दे देना	लठवा	= लाठा
करार किया	= वादा किया	गथुन	= गावेंगे
फूल के थारी	= अच्छा द्रव्य की थाली	ओखरी	= ऊखल
हजरिया	= धनी	सररिया	= सरकुंडा
देउवन	= देने वाला, देवता गण	धयलन-धैलन	= पकड़ लिया
धरे	= पकड़ना	झिमिर-झिमिर	= रिमझिम
चोटा	= चोर, बदमाश	कइया	= काई
बनिया	= वणिक (धनिया का व्यापारी)	पिघुलइया	= फिसल गया
पितर	= पीतल	घसों-घुसी	= घसकर-घुस कर
सरवा	= साला, पत्नी का भाई	केकर	= किसके
लजाय	= लज्जित हो जाना	अइरन	= कर्णभूषण
जोड़िया	= जोड़ी, पत्नी	मुँह झलके	= मुँह चमकता है
मतवाली	= मद में उतावली	जरा	= थोड़ा
फारी	= फाड़ देना	एने	= इधर
हहुन	= है	दिया घर करऽ	= दीपक बुझा दो
बुरहानपुर से	= योनिपुर से (स्थान विशेष)	सरम	= शर्म, लज्जा
नमकीन	= चटपटी	कैलास	= यहाँ स्तन से तात्पर्य है
घोड़वा-भतार	= घोड़े को पति बना लिया	खुल-खुल	= खिलखिला कर
भतरो के सार	= पत्नी का भाई		
बनिद चोद	= बहन लगाकर गाली		
मटखान	= मिट्टी खोदने से बना गड्ढा		
धैलक	= सम्भोग किया		
नोखर	= जिस थैले में नाई अस्तूरा, नरहनी आदि सामान रखता है।		

शब्द	अर्थ
बिरनी	= बर्रे
बीन्हे	= डंक मारता है
जोते	= हल जोतना (प्रतीकार्थ)
छिले	= छीलना (प्रतीकार्थ)
पीटे	= हथौड़ चलाना (प्रतीकार्थ) सभी का प्रतीकार्थ सम्भोग करना है।
बबुरी	= बबूल
पचरी ठोंकायब	= खपची ठोंका दूँगा
गोहार	= हल्ला
भथिहान	= भग
भठियां	= लोहार की भाँथी भी
लठवा	= लाठा
उचटल	= उछलकर
बीछिया	= बीछा
दरार	= यहाँ 'भग' से तात्पर्य है
लौंडेबाज	= लौंडे को रखना
भर खोना	= दोना भरकर
फुसलाय	= बहलाकर
गुनआगर	= गुण सम्पन्न
लठवाहीं	= लाठा चलाना
मउगी	= औरत
मोरानी	= पानी मोरना
घुघवा	= घूंघट
पुअवा	= पूआ, पूप
भूर	= भग
काम कैलक	= सम्भोग किया (व्यंग्यार्थक)
धरा देलक	= पकड़ा दिया
मइया चोदना	= माँ को गाली देना
फूल गेंदा	= फूल को गेंदा की तरह उछालना
सुनर बरऽ	= सुन्दर दुल्हा
धिया जोगे	= पुत्री के योग्य
लेसी लेसी	= जला-जला कर
बकडेर	= काने-कुबड़े
रहरी	= अरहर
दुबाल	= बालियाँ युक्त

शब्द	अर्थ
रखे पर	= सम्भोगार्थ तैयार
बेरिया	= समय
टलीयें गेलो	= व्यतीत हो गया
भुलायल	= भूल गई थी
डोरिया	= डोरीदार वस्त्र
पेन्हब	= पहनूँगी
बीनियां	= बुनना
मारे आवे हे	= सम्भोग करने आता है
कटाप	= कलित
छमक	= छमछम
ओही गलिया	= उसी मार्ग में
अतरहीं	= आते ही (थोड़े अंतराल से)
खरची	= खाद्य पदार्थ
घटीयें गेलो	= समाप्त हो गया
जोबना रखबो	= योवन को बंधक रख दूँगी
ओरियाल	= रेंगना
छिछियाल	= व्याकुल
झारे	= झाड़ना
उतारे	= लहर उतारना
सोटा चलावे	= (व्यंग्यार्थ-सम्भोग करना)
कोरा कागज	= अक्षत योनि (दोनो शब्द प्रतीकात्मक है)
फोनटन पीनवा	= जनेन्द्रिय
झरगेलइन	= स्खलित हो गया
सिआही	= वीर्य का प्रतीक
अरना-भरना	= तानी-भरनी
सूत-बीनब	= वस्त्र बुनूँगी
खुसब	= प्रसन्न होऊँगी
रूसब	= रूठ जाऊँगी
खापड़-खुपड़	= खपड़ा से घर छाना
बिआय	= बच्चा जन्म देना
बइरिया	= वैर
डढ़िया नेबावे	= डाल झुकाता है
पेट	= गर्भ
डड़वा	= कमर
पातरी	= पतली

शब्द	अर्थ
सढ़वा-जुआन	= साढ़ की तरह पट्ठा
खदरले	= पीछा करना
चढ़ गेलई	= ऊपर चढ़ जाना (सम्भोग रत होना)
तरसे	= लालच
रोथी, रोवथी	= रोता है
नन्हींगो	= छोटा
करहिया	= कड़ाही, प्रतीकार्थ-भग
धरेला	= रखने पर
कइया	= काई, गंदगी
धरऽ	= पकड़ना, सम्भोग करना
डरइभरवा	= चालक
पइचा	= उधार
जूज	= लिंग
लदयदा	= लथर जाना, बहुत ज्यादा
चार मारे	= चार व्यक्ति सम्भोग कर रहा है।
बीया	= बीज
बटखरा	= तौल का मापक
ढकनिया	= ढगनी, भग का प्रतीक
ओही	= उसी
नौमन के घानी	= बड़ा भारी लिंग
ठोपे-ठोपे	= बूँद-बूँद
तेलचुवे	= वीर्य स्खलन
पानी ला ठंढा तेल	= संकेत से वीभत्स चित्रण
धैलक	= धर दबोचा

विविध प्रकार के संस्कार लोकगीत

शब्द	अर्थ
कोरे	= सादा, अँखरा
नदवा	= मटका, मिट्टी का पात्र
वहुआरो देई	= बहू देवी
माथे धरायो	= माथे पर रख दिया
पैर सुलछन	= चरण शुभ दायक है
दउरा में पैर धरायो	= खचिये में पैर रखना
डटहर पान	= डंटी लगे पान
रइया	= राय
साही	= शाह
सरिआवे	= सम्हालना
साजे	= सुसज्जित करना
चीर पटम्बर	= रेशमी वस्त्र (साड़ी)
बात बुझावे	= रीति-नीति की बात बताना
गंगादह	= गंगा नदी
जमुनादह	= यमुना नदी
लोर	= आँसू
दूर जाह	= दूर चली जा
प्रानहरी	= प्राण के अपहरण कर
देहरी	= दरवाजा पर
बाबू हरी	= हरितुल्य पिता
खूँटे के गाय	= खूँटे में बँधी गाय (नारीजन्य विवशता)
सुपली-मउनी	= बाल खेल (सूप-मौनी से)
दिहले	= दिया
बिरना	= भाई
पछार	= पछाड़ खाकर
बेजार	= जार-बेजार

देवी-देवता सम्बंधित लोकगीत

शब्द	अर्थ
पोखरा, तलइया	= तालाब
दूध उमड़ल जाय	= दूध की तरह स्वच्छ जल
अरग	= अर्घ्य
दउरिया	= दौरा, टोकरी
बहंगी	= लचका बाँस के दोनों छोर पर लटकता हुआ बँधा सामान जिसे व्यक्ति कंधे पर रखकर ढोता है
घाट	= सूर्य को अर्घ्य देने का स्थान
पिअरिया	= पीला वस्त्र
नेटुआ	= नर्तक, एक जाति विशेष लड़का जो लड़की की पोशाक पहनकर नाचता है
सुरूज कुंड	= तालाब पर सूर्य-मंदिर
दीनानाथ	= दीनों के मालिक, दिनमान
सोबरन	= स्वर्ण, सोना
तमाय	= उपेक्षित, तिरष्कृत
धरे तरुवार	= तलवार उठा लेगा
पटोरवा	= रेशमी साड़ी
सौदागर	= व्यापारी, सेठ
सरग	= स्वर्ग

शब्द	अर्थ
कड़के	= कड़ककर
विनती	= विनम्रता पूर्वक
गँधियाँ	= घौंद
झमाय	= घूमिल, मलीन
घुराय	= लौटाया
केरा	= का, केला
मनाय	= ग्रहण कर लिया
पीराय	= दुखना
तइयो	= तौभी
पारे	= देना (गाली देने के अर्थ में)
लुलुआया	= लज्जित करना
खरधुत	= दोष
परीछवे	= परीछा, कारण
धड़की	= धड़कन, धुकधकी
सूपवा के गछिया	= सूप का गाछ अर्थात्--बाँस
आदित	= आदित्य, सूर्य
बांझली	= लादा हुआ
बनिजारिन	= सौदागरनी, व्यापार करने वाली (राम का व्यापार करने वाली)
तनबई	= ओढ़ना
सेविला	= सेवन करना
जगतारण	= संसार को उद्धार करने वाली
अपान	= अपना
सहन	= छमा (भरा हुआ)
बैना-घुरन	= बैना बाँटने के लिए
चेटी-बेटी	= धाय--पुत्री
सँवरी	= श्यामली, साँवली औरत
कथी	= किस चीज
नीके	= सुन्दर
गजोबर	= कोहवर

शब्द	अर्थ
कथी छाने	= किस छंद-बंद से
उजे	= वह
पलटहहँऽ	= भर देना
मुरूछाय	= मुर्छित होकर
विरोग, विजोग	= वियोग, बुछड़न से
नेहाय	= स्नान करने
धमार	= मजाक, हास, परिहास

महादेव लोकगीत

शब्द	अर्थ
कथी नीके	= किस चीज का भला
मंठ	= मठ, मंदिर
छाने	= छानी, छंद-बंद से
इश्र	= ईश्वर, महादेव
अतरही	= अंतराल में, बीच में
झुरयवऽ	- [illegible] हो जाओगी, सुखजाना
अजगूत	= विचित्र
विहुन	= विहीन, शुन्य
पहिरऽ	= पहन लो
सार	= गोशाला
रचियक	= थोड़ा
निहुरऽ	= झुक जायें
संपूरन	= समाप्त हो जाना
अनसाई	= अन्य मनस्क
मउराय	= आँख झप जाने के अर्थ में
आजन-बाजन	= आजे-बाजे
खिलायब	= खिलाऊँगा
सुतायब	= सुलाऊँगा
समधब	= बिदा करना
पाचोटुक	= पाँचो प्रकार के पोशाक

शब्द	अर्थ
कुचकुच	अत्यंत काले के अर्थ में
डाड़ी डुड़ी	डालो आदि
गेरुइया	कोप
चारु देवा	पवित्र देवता, चारु देवता
डिमिर डिमर	डिम डिम
पुरव जलम	पूर्व जन्म, भाग्य
घुरमी-घुरमी	घूमकर
लाट धुनि	लटया केश फैलाकर
अदहन	भात बनाने के लिए गरमाया पानी
ढरकाई	गिरा दिया
बघछल	बाघम्बर
रींध	सिंझा दिया
छतीसो प्रकार	छत्तीस व्यंजन
[illegible]	[illegible]
घारघंट	घड़ियाल और घंटी
औघर दानी	औघड़दानी, सर्वस्व देने वाला

राम के गीत

शब्द	अर्थ
ओरे-छोरे	एक ओर से दूसरे किनार तक
चुवे गुलाव	गुला बिखर गया
बंधु परे हैं	बंधन लगा है
बिलमाई	रोक रखा
कमइया	कमाई हुई सम्पत्ति
घनघोर	सघन
फूफकार	यहाँ धमकी देने के अर्थ में
पंडवा पच्चास	पचास पंडा, पांडे, जन
अलोते	ओट
मन परलो या	
मन परलई	मन पर प्रभाव पड़ा
बाला	हाथ का गहना
खोंपचाल	खापची
हँकार	पुकार
चतुर्गन	शत्रुघ्न
धाई-धाई	दौड़-दौड़कर
चोकन-चाकन	साफ सुथरा
पैंतर	पारी
दल	बारात, समूह
झाँझर	छतनार
मधुर	शीतल
बेइलिया	फूदना, बेली फूल
बारी	कम उम्र की
पदुक देके	वस्त्र से ढँककर
अटकी	इशारा
छुछुराइन	छुछून्दर की तरह दुर्गंध
नीनिया बाउर	नींद से व्याकुल
अभरन	आभरन, उबटन
कोठी-कान्हा	कोठी का ऊपरी भाग
ओरचन	खाट का पायदान बिना अंश
हेलल्न	प्रवेश किया।
पझाय	बुत जाना, दाहिका शक्ति समाप्त हो जाना
छोड़ले अरार	तरंग निवारण कर लिया
छिपाय	छिप गया
पहचारो	उत्तीर्ण हो जाना
कने मुँह	किस ओर से
तुड़वलूँ	तोड़वा दिया
घुनलो	सड़ा हुआ

देवी गीत

शब्द	अर्थ
साल	कंघी का दाँत
मातल	क्रोधित
वकस्	माफ कर दें
वसनवाँ	वसना, पात्र
जउरिया	खीर
धमसिया	गंध
चिपरिया	उपला गोइठा
घरप से	घमंड से, दर्प से
खखोरी	बटोर कर
सरूपवा	स्वरूप
ठेकुआ कसरवा	ठोंकुआ और कचवनियाँ जो कच्चे चावल के आटा से बनता है
हरियर विरवा	हरा पौधा
रउरू	आपका
विन्ध्यवसिया	विन्ध्यवासिनी देवी
वासन	निवास, वास स्थान, (वस्त्र भी)
अरमनियाँ	अरमान
रछवार	रक्षा करना
वरुआ	पतला
डलवा	डीली, चंगेली
पटोरवा	पटोर, रेशमी वस्त्र
लहरा	लहंगा
वाँस वसवरिया	वाँस की कोठी
ढारल	साँच में बनाया हुआ
झीली-मीली	झलमलाते
सोभा चनरहरवा	सुन्दर चन्द्रहार
लहसी	प्रसन्न होकर

शब्द	अर्थ
वाँझी	वन्ध्या औरत
गुमान	घमण्ड
भाते-पुत	अन्न और पुत्र
गरद	धूल
आलर-झालर	झालर-युक्त पोशाक
पटिया	मांग
अहुरी वहुरी	आना जाना
धावल-धुपल	दौड़कर
वकस्	माफ कर दें
हुनरी	हुनर देश (कला के देश से)
जुड़	शीतल
पतझर	पत्ते झड़ गए
टंगवा, वेसाहम	टांगी खरीदना
डाढ़	लत्ती
मेरइहँऽ	फेंक देना, डाल देना
निपीला	पड़ोर देना
पटोरवा	पटोरी से, वस्त्र से
अंगेजत	सहन करना

कुल-देवता के गीत

शब्द	अर्थ
तरे	नीचे
सोखा	देवता काना
परमेसरी	देवता का नाम (परमेश्वर)
सतीसो देवा	छतीस करोड़ देवता की परिकल्पना है
साँझ मनावत	सन्ध्या का स्वागत करना
पराते	सुबह
वढ़नी	बुहार देने के अर्थ में
अनसयले	उदास हो जाना

शब्द		अर्थ
काई	=	क्यार, कंई=कौन, केरा=का
छंदे-बंदे	=	छंद-बंद से युक्त
घनेहर	=	घना, सघन
बधवा	=	बाध जहाँ फसल होती है
सोवरन केरा सारी	=	सुवर्ण की साड़ी
पहुरवा	=	पूजाई
करमी के लरेजरे	=	करमी की लत्ती की तरह
साती असवार	=	सात लोग सवार हैं
पूछार	=	पूछ-ताछ
कवनी	=	किस, कौन
अवासे	=	निवास-स्थाने
वासे	=	रहता है
संकर लाडू	=	शक्कर का लड्डू या मिश्रित लड्डू
लील बछेड़िया	=	तेज चलने वाली छोटी घोड़ी
कुरीयवा	=	महल
झंझकाल	=	झंकार
कोपी-कोपी	=	क्रोधित होकर
नउवा न नर	=	नाई या सेवक
गोरइया बाबा	=	गोरया बाबा, ग्राम-देवता

विविध पर्व त्योहार-सम्बंधित गीत

कुम्हिला गेलो	=	मुरझा गया
ओरवे	=	किनारे
ओरे-ओरे	=	किनारे-किनारे
होखत	=	होते ही
रुनकी-झुनकी	=	चंचल, तेज
संजोहू	=	समेट लें
मचान	=	खम्भे पर बनी कुटी
अनूप	=	विचित्र

जाति एवं कर्म-सम्बंधी लोकगीत

शब्द		अर्थ
बेर ही बेर	=	बार-बार
बरजूँ	=	मना करना
अंगेरिया	=	ईख का ऊपरी पत्तादार हिस्सा
छियो राम छियो	=	वस्त्र-प्रक्षालन के समय की विशिष्ट ध्वनियाँ
बड़ा नीक	=	बहुत अच्छा
नीम कौड़िया	=	नीमौरियाँ
सकारे	=	शीघ्र
धोबीघाट	=	जहाँ धोबी वस्त्र धोता है
खोचड़िया	=	डलिया, दौरी
नर बोचवा	=	तम्बाकू पीने का पात्र
धोबी मोट	=	धोबी का गठ्ठर
चुल्हवा झौकना	=	चुल्हे में झोक देना
रहुदी	=	लड़की का नाम
खरोटउ	=	खरोंचना
चेहाई	=	अचम्भित होकर
ठेघउलई	=	चरने के लिए हाँक देना
ओन सेती	=	उधर से
ठेंगलो	=	स्थिर से चरता हुआ
छौड़ा पुत्ता	=	पुत्र का पुत्र, गाली
बढ़ैतिन	=	बड़ी
भंखरा	=	मोटा
मुक्कल	=	राह पूजा के गीत
अन्हाधुन	=	बिना सोचे तेजी से
झीकरी पुर	=	शहर का नाम
सेविहँऽ	=	सेवन करना
सगरी	=	सारी
कगवा	=	कौवे

शब्द		अर्थ
खउकी	=	खानेवाली
हँसवलऽ	=	हँसी कराई
चइलियो	=	चैली, लकड़ी
धंधकलवा	=	धधक उठना
अगिया दहन	=	अग्निदहन
सत	=	सत्यवंती
उबरिया	=	उद्धार
जरी छाई	=	जलकर राख हो जाना
अरतवा	=	लाल रंग की रेखाएँ
धूमइलो	=	मलीन
अचकं	=	अचानक
इरखे	=	ईर्ष्या से
डड़िया	=	डोली
सबुजी ओहरवा	=	नीला परदा
वहुरिया	=	बहू
वामी	=	एक प्रकार की लम्बी मछली
मनवाँ मार	=	मन मलीन कर
घरुअरिया	=	रसोई घर में
तिरिअवा	=	पत्नी
गुमनियाँ	=	घमंडी
सोंवलो	=	सोई हुई
काई	=	क्या
करवो	=	करवट
घमायल	=	धूप से गरमाया हुआ
ओसरवा	-	सायबान
समतुलवा	=	सुता कर स्थिर हो जाना बराबर हो जाना
भेदवा	=	रहस्य
सामियाँ	=	स्वामी

शब्द		अर्थ
झाँकू	=	देखना
गोइठा	=	उपला
सबद	=	ध्वनि, शब्द
छेरलऽ	=	बुद्धिमता दिखाना
लटिआई	=	केश जटा की तरह सट जाना
कोरा	=	सादा
मसिहनवा	=	स्याही
झिरहीसतुआ	=	मिश्रित अन्न मिलाकर पिसा हुआ सत्तु
मातल	=	कामुक
नेटुआ	=	नचनियाँ
मइसे	=	धोना, मलना
सोवरन	=	सुवर्ण
बेनिया	=	पंखा
उपासल	=	भूखा, भूखी
खोइछवा	=	नैहर का मिला खोइछे का अन्न
ओरहनवाँ	=	उल्हना
सिरहनवाँ	=	सिरोधार्य
बदेलिया	=	बदले [illegible], प्रत्युतर
बनिजिया	=	व्यापार
गछिया	=	पौधा
लवटी	=	लौटकर
बुधिया	=	बुद्धिमत्तापूर्ण
अचरवा	=	आँचल बाँधन, यौवन को समेट कर रखना
अरिया	=	आली, मेढ़
खिलले पताल	=	पाताल में डूब गई

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
ईरिखयें	=	इर्ष्या से	बनिजरवा	=	सौदागर, व्यापार कर
जुदागी	=	अलग	तेरही	=	तेरह
रंग हो रंज	=	रंगसाज	घबराहट	=	घबड़ाहट
करेज	=	छाती, कलेजा	धूम	=	उत्सव
नन्हं से	=	बचपन से	धराहर	=	पकड़ाहट
गरभवा	=	गर्भ	पिलरवन	=	पिलाया था
खीरवा	=	खीर, या खीरा	बोरसी	=	आग रखा मटका
सरधवा	=	इच्छा या श्रद्धा	घोंटवा	=	दबा देना
निरखेइ	=	देखता है	मंजइया	=	पेट मलकर गर्भपात
कांइरिन	=	कायरों की औरत	ललथुन	=	लाई थी
घुनवाँ	=	सड़ा हुआ, कीड़ा लगा हुआ	लरकोरिया	=	प्रसूति
जोड़ो	=	योग्य, लायक	चंगेरिया	=	डाली, दौरी
बिलमावहु	=	रोक रखना	जँतसरिया	=	पिसने का आदेश
बिजूबन	=	बियरवान, एकांत	उदवसवा	=	तकलीफ देना
देहरी बइठवले	=	घर पर बैठा, रखा	परसनवाँ	=	परोसन
नगियर देश	=	पूर्व देश, बंगाल	टेंगरा-पोठिया	=	छोटी मछली की त
काली चिठिया	=	दुःख भरा पत्र	रेघिया-भिंजइते	=	मूँछ जमते
सनेसवा	=	कुशल-क्षेम	बिअहुता	=	ब्याहा पति
अउठी-पउठी	=	अगल-बगल	चैतियां	=	चिता, श्मशान
लफाई	=	बढ़ाकर	धधिया	=	बाढ़
केता धानी	=	कितना, पत्नी	अकलंकिया	=	दोष
बसनवाँ	=	छोटा घड़ा	छतिर छीप	=	छिप जाना
जुड़पनिया	=	ठंढा पानी	जरिछाई	=	राख में बदल जा
बरीसिया	=	गिरकर	गोदहरनी	=	गोदना गोदने वाली
अंगोछवा	=	गमछी, तौलिया	समवाँ	=	एक प्रकार का अन्न, सामाँ
पलटवा	=	पलट लेना, बदलना			
अछरंगिया	=	कलंक, दोष	चल्हकी	=	चंचला
लउड़िया	=	दासी	दनवा	=	दान में
परोसन	=	खाने का पदार्थ दोबारे देना	जुवा सरिया	=	जुआ सार
			डालभर	=	टोकरी भर

शब्द	अर्थ
झीसियें-फुहियें	= झीसी-फूही
भावह	= छोटे भाई की पत्नी
पहिरी	= पहन कर
अगिया से गांतल	= कामाग्नि से युक्त
बेसाहल	= खरीदा
घमायल	= धूप से गर्म
औंचक	= अचानक
जियरा बुझयबइ	= जी का तपन बुझाना
घानी	= सघन
सबदिया	= शब्द, ध्वनि
रेंह	= कपड़ा धोने की मिट्टी
अतर	= इत्र
गोरथोरी	= पैर की ओर
सनेसवे	= संदेश, उपहार
धनु-तलवरवे	= धनुष और तलवार
सालई	= दुःख देना
झिलमिल	= पतला, पारदर्शी
उदेसवे	= उद्देश्य से, उस देश में

मौसमी लोकगीत

शब्द	अर्थ
घूरें	= घूमना, गनौरा
काख जाती	= बगल में दबा लेना
मटकिया	= इशारे से काम प्रस्ताव
कुदारी फारी	= कुदाल चलाकर
घरुअरिया	= रसोइ-घर में
जंगली छिनार	= जंगली, छिनार
लिआवन	= ले आना
पटयबई	= सीचूँगी
मेहर	= घर, महल
देहर	= दरवाजा
जीरें छंदें	= जीरे का छंद-बंद

शब्द	अर्थ
बरजोरिया	= जबर्दस्ती, ऐशो-आराम
जतइते	= लगाते
घँघोटलऽ	= गुर्राना, डाटना
खेवा	= बार (बार-बार के अर्थ में)
डड़िया फनौलन	= प्रज्जवलित अग्नि-प्रवेश, डोली पार करना
महावर	= शुभ सूचक पैर का लाल रंग
अहेरिया	= शिकारी
धियवा	= बेटी
झर	= महला
झरोखा	= खिड़की
रीची-रीची	= मनोयोग पूर्वक काम करना
खोरवा	= खोआ
तेजली	= त्याग दिया
सतरंगिया	= सात रंग का बना आसन
सैरो-सरोवर	= तालाब
जीरहुल	= सुगंधित
असगर	= अकेले
मुसुक चढ़ावऽ	= बांध देना
घरुअरवा	= रसोईघर
पटुक	= वस्त्र
लोभयलऽ	= मोहित हो गया
डड़िया	= डोली
अचके	= अचानक
झट सीन	= जल्द
धपलऽ	= निश्चित कर दिया
अकवरिया	= बिदाई-मिलन
झाँझर	= पत्र विहीन
पझरिया	= दाब, पारी

शब्द	अर्थ
बनिजरवा	= व्यापारी पति
चुरवा-पइरिया	= पैर का मोटा गहना
दुरवो घुरवा	= दरवाजा का घूरा
लदभूद	= खूब फला हुआ
बरधी लदवयतन	= बैल पर लाद कर भेज देना
नौरंगिया	= नाव की तरह चचरी जिस पर नदी पार किया जा सकता है ।
जउरिया	= खीर
बटखरवा	= पत्थर का तौल मापक
छपित	= छिप जाना
झालर धनवाँ	= झालरदार धान
जीठा देलन	= बीछा दिया
कुलिया करैलन	= विदाई समय की एक प्रक्रिया जिसे नाइन कुल्ली कराती है
झलरियो	= झलमल
बेंगुचिया	= मेढ़की
कोरवा	= गोदी
मयगर	= मस्त
पूछरवा	= खोज-बीन करना
ढुलढुल	= ढरकने लायक चिकना
बधार	= खेत, गाँव से दूर
अरार	= किनारा
चौरिया	= देवस्थल
जोरुआ	= पत्नी
रखवार	= रखवाला
पपरी	= मिट्टी के ऊपर पतली परत

शब्द	अर्थ
अँवर-चँवर	= गड्ढा-सोता
मोहनिया	= टूटी हुई आली
धराहर	= धड़ाधड़
छछने	= व्याकुल
कोरा	= गोदी
भूइयाँ लोरि भरब	= खेत में कादो करना (लेई-लोई लोटी) करना

कजरी पूर्वी

शब्द	अर्थ
घनी	= घना, सघन
कोरदार	= किनारी
अन्हकर देलऽ	= त्याग देना
लौका-लौवे	= वज्रपात के अर्थ में (बिजली चमकने के अर्थ में भी)
सुगना	= सुग्गा
दही के दान	= दही बेचने का कर
रार	= झगड़ा
पतवारी	= मस्त
बाट	= राह, (तौल भी)
डगरिया	= मार्ग, पगडंडी
अरिया धरी	= आल किनारे
तितिरिया	= तीतर, पक्षी
एसों	= इस वर्ष
बालूरेत	= बालू की रेती पर
बंगवा	= कपास
लोढ़ं	= बीनना-चुनना
हरउआ	= हार
ठिलुआ	= झूला
पलरा	= पटरा
लहरा	= लहर

शब्द		अर्थ
रमती	=	रमण करने वाली
सरब	=	सर्वत्र, सभी तरह से
झनके	=	झंकार
माहुर	=	विष
ताही	=	उसी में
बेधे	=	विदग्ध करन
अँउठी पँउठी	=	किनारे-किनारे
असगर	=	अकेला
दवनवाँ	=	दौना-मडुआ
अग्र	=	अगला प्रथम
बाया	=	एक चिड़िया जो बड़े ही कल्पित ढंग से अपना घोंसला बनाती है।
कोर	=	गोदी
मधुपुर	=	मथुरा
साजी चलले	=	सजकर
सेत	=	सेतु, पुल
उदेसे	=	उद्देश्य से
कुबरी	=	कुबड़, कुब्जा
दियना	=	दीपक
झुराय	=	मुर्झा जाना
करेज	=	छाती, हृदय
लिपवायम	=	पड़ोरना
तलफे	=	जल रही है
लोह लागल	=	जंग लगा है
चौरंग	=	चार रंगों से
सोहाय	=	अच्छा लगना
केकरा के बदब	=	किसको बनाऊँगी
चुवेला	=	पानी चुता है
केता	=	कितना

शब्द		अर्थ
भुंजरी	=	भुँजिया
घर बाँच	=	कजरी घर जाकर संदेश पढ़ जाती है।
मद मातल	=	विरह के दुःख से उन्मत्त
सगरो	=	सर्वत्र
भोरावे	=	भ्रमित करना
खिसिया बरावे	=	क्रोधित करना
मेहा	=	मेघ, बादल
तरसई	=	तड़पना
डरपई	=	डराना, डरना
रसे-रसे	=	धीरे-धीरे
खन	=	कभी
हलफा	=	तरंग
छिटकवा	=	छीटा, बूँद
कुहके	=	कसक
झिरी-झिरी	=	धीरे-धीरे
चानन	=	चंदन
पेंगवा	=	पेंग मारना, झूलना
ललक	=	उमंगित
पलक	=	मटकी
सतरंग कोरवा	=	बादल पर किरण पड़ने से सप्त रंगी किनारी की तरह
पुअरा	=	पुआल
पलान	=	छप्पर
पकवा	=	पक्का
बंदवा	=	चोलीबंद
संघवा	=	साथ
बगनवाँ	=	बगीचा
बुनिया	=	वर्षा

फागु और चैता

शब्द		अर्थ
सुलतान	=	समन्वय वाद की प्रतीक सुलतान

शब्द	अर्थ
असवार	सवार
बटिया जोहत	राह देखते
गेडुली	= रस्सी का बना गोलाकार नेठा
मंगलचारी	मंगलाचार
हेंठ, हेंठवा	= मलीन, बुझ जाना
चीरा	= चीर वस्त्र
सीसीयन	= सीसी
धुंधकार	= धूम मचा है
चार घटवा	= चारो ओर घाट
अँगिया	= चोली
बेइमान	= रूप लोभी के अर्थ में
रूप-रासी	= रूपवती
आग	= विरहाग्नि के अर्थ में
सुकरवा	= शुक्र नक्षत्र
बिरज	= ब्रज, धूलरहित, स्वच्छ
पातरी	= पतली, तन्वंगी
लपई, लपहई	= झुकती है
जटाधारी	= जटा-जूट धारण करने वाले, उदासीन
फेर	= फिर, घूमना
सगुन	= सूचना, शुभ दिन
ऊधम	= उपद्रव
पटवा	= पाटम्बर, एक जाति विशेष
मरोड़ले	= ममोड़ना, खींच लेना
लर	= लड़ी, धार
होरी मचाई	= धूम मचाना
इतते	= इधर से
उतते	= उधर से
मेघवा	= बादल

शब्द	अर्थ
दाउ	= दो उरोज
सैन	= इशारा, संकेत
कसर	= बदला
धँसे	= प्रवेश किया
झकझोरी	= जल विहार
वाही	= उसी, उसी घाट पर
पुरइनपात	= कमल पत्र
बकसऽ	= दे दीजिए
तिहारी	= तुम्हारी
ऐलन	= आए
छने-छने	= पल-पल पर, बार-बार
बीरा	= पान का बीड़ा
टिहुकारी	= टिटिहा की बोली
टिहुरी	= टिटिभ
पुरइनपात	= माया
पसारा	= फैल गया है
कर-सर	= हाथ में तीर
मनोहारी	= सुन्दर
चिहुँची	= अचकचाकर
चाहूँ	= चारों
लहरी	= चुगली
ठाकुर धाम	= ठाकुरबाड़ी
कथिन	= किस चीज का
लावऽन	= ले आओ
कुहकले	= कुहू-कुहू करना
कोरे-कोरे	= सादा
गोइया	= मित्र
बिछुरइहे	= छोड़ दिया
बितवलन	= बीताया
उलटी बानी	= उलट वासियाँ

देव विषयक झूमर

शब्द	अर्थ
प्रात परात	= बड़ी थाली
जेवेला, जेवऽ	= खा लें

शब्द		अर्थ
जेवना	=	भोजन
जेवना	=	भोजन
दागा	=	धोखा
लिलरा	=	ललाट
चोटिया	=	चोटी
चकितवा	=	आश्चर्य चकिता
बधइया	=	बधावा
अँटारी	=	कोठा
मित	=	मित्र (हम नाम के लिए भी)
बरन	=	वर्ण, रंग
झर	=	कोठा
झरोखा	=	खिड़की
निरेखथी	=	देखती है
नवखंड	=	नौ टुकड़े
खगवा	=	पक्षी, यहाँ रावणरूपी पक्षी
वन पइसी	=	वन में प्रवेश करने पर
सीतिया	=	ओस
मोहाले	=	दुर्लभ
नहइहन	=	स्नान करेंगे
फुटहा	=	भुना चना
विरवा	=	बीड़ा (पान का)
खरई	=	खर-पुआल
अइसन	=	ऐसा
कतहीं न	=	कहीं नहीं
एकबर	=	एक बार
बेरिया, बेरा	=	समय
बैरीन	=	वैरी
मतु रे	=	नहीं
समझावे	=	सांत्वना

शब्द		अर्थ
सेजिया सेज	=	शय्या
सेजिअवा	=	शय्या
चटइया	=	चटाई
चंगेलिया	=	छोटी डाली या टोकरी
सरब	=	सब
गोतनी	=	जेठानी या देवरानी
गलेहार	=	गले के हार की तरह
सलेहर	=	सहेली
पुरुष	=	पति
कउन	=	कौन
बन्हौलऽ	=	बंधवाया
रने-बने	=	रणक्षेत्र और वन में
अछरंगिया	=	दोष
ठढ़ी	=	खड़ी
रसिया	=	रसिक, कृष्ण
खनवाँ	=	भोजन
इनरवा	=	कुआँ
उबनी	=	रस्सी
रसोइया	=	भोजन गृह
सोवावहूँ	=	सुलाना
जुड़वा	=	जुड़ा पदार्थ-पूजा सामग्री
गेडुवा-गेडुरिया	=	जलपात्र
गमछा	=	गले का, दुपट्टा
खाटी	=	पलंग
डासब	=	बीछाऊँगी
काइ	=	क्या
समधब	=	बिदा करना
गुलेल	=	दोकानी लकड़ी में रबड़ बाँध कर मिट्टी की गोली से मारने वाला यंत्र

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
लालबुकवा	= लाल बुकनी = लाल रंग	चनाचूर	= चना का चूर्ण
तेज के	= त्याग कर	उतरीला	= नदी पार होना
जीयरा	= जी	दू अनार	= दो अनार = उरोज का प्रतीक
सुमरी	= स्मरण कर	तकिहँऽ	= देखना
साम सुनर	= श्याम सुन्दर	जमीदानी	= सब्ज रंग
चुभी गेलो	= गया	गुंजवा	= नक्कासी
झगरवा	= झगड़ा	जोहत	= इन्तजार करना
करार	= मुकर्रर	बजर हो केवार	= वज्र कोवाड़
बलवा	= बाला, हाथ में पहनने के लिए	खोना	= दोना, पात्र
झंडी खनवाँ	= स्थल जहाँ झंडे गड़े हों	बिसरई	= विस्मृत होना
कोरे नदिअवा	= सादा मटुकी	लगैती	= दोष मढ़ना
जोरनिया	= जामन	पियासल	= प्यासा
गोयड़वा	= नजदीक	भूखासल	= भूखा
घटवरवा	= घाट का रखवाला	नीनासल	= तंदील
बिहरेला	= फाटना	दू पट्टी	= दोनों तरफ
सीरीजमुना	= श्री कृष्ण क सखा	लोभयलऽ	= प्रेमा शक्त
दुआरा	= दरवाजा	बेस	= अच्छा
श्रृंगार प्रधान झूमर		तरसवलऽ	= ललचाया
		जल्फी	= करीने से कटा केश
बइरिनियाँ	= वैरी, शत्रु	पताल बसे	= काफी नीचे
कोई-कोई हाल से	= किसी तरह	बसरी	= जलपात्र
बेइलिया	= बेल	कसुरवा	= गल्ती
कोइलर	= कोयल	सुदिनवाँ	= लग्न
घुरी-घुरी	= घूमकर	डूमरी	= गुलर
सामइली	= प्रवेश किया	तलबीया	= वेतन
ठुनके	= हठ करने, रोने की आवाज	जहरवा	= विष
बरजहूँ	= मना करें	सोहाहई	= अच्छा लगता है
झटकार के	= शीघ्र, जल्दी-जल्दी	सांकर	= संकीर्ण
मरूकै	= मोच आना	कुँआ खाद	= कुआँ और गढ़ा

शब्द	अर्थ
इन्द्रा	= कुआँ
नगिनियाँ	= काले केश का प्रतीक
गोड़थारी	= पायदान
डारी	= डाल, गिरा देना
करवटिया	= एक हाथ के बल सोना
फेरे	= घूमाना
सटी जाय	= सट जाना
पटिया	= पलंग की पाटी
जोहब	= आशा से देखना
बटिया	= रास्ता
भवनवा	= भावना
जलवा	= पानी
सीया	= वहन के अर्थ में
कररिया	= वादा
३४ तहिया	= तब
कुंज के गलिया	= विदेश के अर्थ में
अनेसा	= चिन्ता
किलिया	= गहना की कील
३५ दिलबतिया	= मन की बात
बंसीवाला	= बंसीधारी, श्रीकृष्ण
३८ सेनूरिया	= सिन्दूर बेचने वाला, एक जाति विशेष
सवख लागेला	= सौख लगता है
मंदिलिया	= घर के अर्थ में
चबेनिया	= भूंजा
३९ ठिलुआ	= झूला
कथी	= किस चीज
पटरा	= तख्ती
केहू दूले	= **कौन दूलता है**
४१ कसमस	= **संकीर्ण**

शब्द	अर्थ
बचवा	= घुघरू, छोटा बच्चा
४२ झोंटा	= बाल
मछरमरवा	= मछली मारने वाला या मच्छर
सोंटा	= मुद्गर
हनहन	= जोर-जोर से
४३ भंसा	= रसोई घर
माया	= दया
गोसा	= क्रोध
सेल	= बिक गया
हरे	= प्रत्येक, हरा
किसीम	= तरह, प्रकार
सिंगरवा	= श्रृंगार
पेठावऽ	= भेज दें
कसबिनिया	= नचनियाँ
नम्बरी	= सौ रुपये का नोट
गुंडाबाज	= पर स्त्री गमन करने वाला
४९ मजा	= स्वाद, सौख-मौज
छोकड़ियन	= किशोरियाँ
५० लौंडन	= लड़के
करेजवा	= कलेजा, छाती
५१ जड़इया	= शीत ज्वर
रतउंधी	= रात्रि अंधता
इयार	= दोस्त, प्रेमी
झारब	= झाडूँगा
बालो	= केश
झाड़ब	= झाड़-फूँक करूँगी
खालो	= चमड़ा
५२ नजर	= दृष्टि
सखि के बुध लायबऽ	= सखि द्वारा सिखाई बुद्धि

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
मइल	= गंदा	भगवनवाँ	= श्री कृष्ण
अगरिया	= चंदन	७० कीन	= खरीदा
५३ भयार	= भर जाना	उरोज	= स्तन
सुग्गा साड़ी	= सुग्गे रंग की साड़ी	७२ मटकी	= नजर
५५ कुवोलिया	= रहस्यमय आक्षेप	घुरबऽ	= घूमेंगी
मेमिन	= महिला पदाधिकारी	७८ रगरी	= रगड़ लगाने वाली
खोज-वीन के	= पता लगाकर	झगरी	= झगड़ालू
५७ तलवा	= ताला (पैर का नीचला भाग)	हरमजदवा	= बदमास
		ममोरे	= ऐंठना
रचहई	= करना	७९ झलक	= चमक
धमार	= चूहल	सूरूज	= सूर्य मंदिर
सँचलो	= संचित	धाजा	= ध्वजा, पताका
५९ लउँगिया के		८० तर	= नीचे
चपिया	= लवंग का फूल	लोकि लेंगे	= पकड़ लेना
फोरिये फोरी	= तोड़कर	वुझी लेंगे	= समझ जायेंगे
अजबी	= विचित्र	८१ झरेली	= शौकीन, भ्रमणशील
हंलली	= गई, प्रवेश किया	छोकड़वा	= किशोर
आले	= श्रेष्ठ, अच्छा	८३ लचकई, लचकऽ	= हिलना
झूलूफिया	= सजा-सवारा केश	रंडीवजवा	= वेश्यागामी
६० डढ़िया	= डाली	८४ झुलनिया	= चोली या घाघरा
तरसतो	= व्याकुल होना, ललचाना	तिरियवा	= औरत
६२ थरिया	= थाली	वेसरिया	= नकबेसर
ताके	= देखे	धानी चदरिया	= पीली चादर
६३ सेन्ट	= सुगंधित पदार्थ	८५ विहरे	= फटना, विदीर्ण हो जाना
धम-धम	= सुगंधित	डगमग	= डोलना
६४ बुलई	= चलता है	८७ गलियानी	= गली-गली
पहिरा दऽ	= पहना देना	सगरी	= सम्पूर्ण
६७ पउआ	= पैर	भंग खयना	= भाँग खाने वाला
पिरायल	= दुखने लगा	८८ ताहीतर	= उसके नीचे
मजवा	= मौज-मस्ती	सुन्नर	= सुन्दरी
६९ गढ़निया	= बनावट	कुवरूआ	= राजकुमार

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
जांहत	= आशा देखना	रखवार	= रखवाला, मालिक
८९ जनइती	= जानती	१०३ नगिनवा	= नगीने की तरह
अवइया	= आनेवाला या आनेवाली	दखिनवाँ	= दक्षिण देश
लगवइती	= लगवाना	१०४ पेठयवई	= भेजना
ढरवइती	= ढरवाना	१०५ काकुल	= सम्हाली हुई केश राशि
सोवती	= सोती	बिगाड़ब	= बिगाड़ दूँगा, दूँगी
सोववती	= सुलाती	अतर	= इत्र
९० किनब	= खरीदूँगी	रूसल	= रूठा हुआ
९१ झंझरी	= खिड़की	ढरकावल	= ढाला हुआ
जोगे	= लिये, लायक	छितरावल	= छिटा हुआ
९२ बेर	= बार-बार	१०८ मउनी	= छोटी डलिया
बरजू	= मना करना	चबेनिया	= भूँजा
९४ नगीना	= नग	खरइया	= भूख-प्यास-गर्मी का प्रभाव
लाल	= अच्छा		
९७ धेनु गइया	= दुधारू गाय	तलफी	= तलफता, अत्यंत गर्मी
जोड़ीदरवा	= हम उम्र, जोड़े	भूम्हरिया	= गर्म धूली
९९ पूर्जा	= रसीद	लउंगिया	= लवंग छाप
अलगइहऽ	= उठाना	११० मून के	= बन्द करके
१०० जियरा	= जी, जान	१११ चाटिया	= विचरण करने जाना
जोननवा	= स्तन	केरा	= केला
रही-रही	कभी-कभी	११२ चलहक	= चलिये
१०१ झमकवली	= इठलाना, झंकार पैदा करना	झरायब	= झाड़ना
		टिकोला	= टिकोरा
साटी	= साटकर	किनायब	= खरीदवाऊँगी
गगरी	= उरोज	झुलनियाँ	= ढीला ढाल पहनावा
गेन्दा	= घुंडी	तिलरिया	= तीन लड़ी सिकड़ी
लोभी	= कामुक	११५ धयलन	= पकड़ लिया
१०२ अरार	= किनारा	अँचरवा	= आँचल
हितवा	= शुभेक्षु	उहे	= वही, उन्होंने ही
नवरंगिया	= उरोज	११६ ओहरवा	= डोली का पर्दा
नेवान	= प्रथम स्पर्श, चखना	११७ जवनवा	= जवान

शब्द	अर्थ
धयलं	= रखकर, पकड़ना
निरखब	= देखूँगा
११८ सुसकइया	= सिसक कर रोना
१२० फूटतं	
किरिंगिया	= पौ फटतं
चली जइहं	= ससुराल चल जाना
पनघटवा	= घटवार, पनघट
फुसलाय	= ठग लेना
लोभाय	= मोहित हो जाना
गोड़थरिया	= पयताने में
घोलटा देली	= लोघड़ा देना, सुला देना
१२२ कइसे-कइसे	= किसी तरह
एतने में	= इसी समय
१२३ दाल कइली	= दाल बनाई
खजुरी	= खजूर का पेड़
चोलीबंद	= कसी हुई चोली
पुतवा	= बेटा
मसकाई	= फाड़ देना
रंग रसिया	= रंगीला
अतिबेर	= देर, कुबेर
खरई	= एक प्रकार की घास
चोरावल	= चुपके, चोराया हुआ
१२७ नया पातरी	= तन्वंगी
सिनवा	= छाती
१२८ सलारपुर	= स्थान का नाम
नकलस	= गलेहार
लोकिट	= तावीज
खिलवा	= आभूषण के पेंच

पेशा और नौकरी संबंधी झूमर

शब्द	अर्थ
१ पाँच-पच्चीस	= एक सौ पचीस
गढ़ायब	= गढ़ाऊँगा
मीनाजड़ी	= नक्कासी
छत्तर	= सोनपुर का मेला
३ पलटन	= यहाँ स्वयं सेवक के अर्थ में
अंगना	= आँगन में
देहरी	= दरवाजा पर
४ बड़इतिन	= सम्मानित
कालापनिया	= आजीवन कारावास
बजर परवऽ	= वज्र पड़ जाना
५ मधुबनवा	= विदेश (यहाँ पर)
६ तलउआ	= तालाब
असली सोनार	= हुनरबाज
दगेबाज	= फुसलाने वाला, दगा देनेवाला
९ बैरिन	= शत्रु
अनसाय	= अनमना, अन्यनश्यक
लाले, लाल	= सुन्दर
११ जरा गोटा	= नक्कासी
जेब खोलइत	= पैसा निकालना
१५ जम्फर	= चोली
लरिया	= कड़ी
मुनरिया	= मुन्द्रिका, अँगूठी
२० निकसी	= निकली
गुथायब	= गुथाऊँगी

विविध प्रकार के झूमर

शब्द	अर्थ
१ पीलियो	= पी लिया
धरकई	= पकड़ लिया
बुलवलन	= बुलाया
२ नारि	= पत्नी
३ चढ़ती	= पूर्ण
खेलाया	= झकझोर दिया

शब्द		अर्थ
हरजोतवा	=	हल जोतने वाला
अगुइया	=	अग्रणी (बीच बीचाव करने वाला
आकड़	=	कंकड़
पिटवली	=	बनवाया
दिलवर जानी	=	जान की तरह प्रिये
आली-दुलारी	=	बहुत प्यारी
६ लइया	=	लुतरी लगाना
बचवा	=	बच्चा, घुंघरू
८ बढ़ना	=	धुरा
९ सुरस	=	रसदार
जोड़	=	प्रभाव
११ तिअना	=	तरकारी
अलोते	=	ओट से
१३ लगले	=	सटे दालान
झटसिन	=	जल्दी से
झारो झरोखा	=	कोठे की खिड़की
१४ पोरा	=	पुआल
लाल फीता	=	लम्बाई नापने का यंत्र
१७ झाझर	=	टूटा-फूटा
१८ देहिया भारी	=	गर्भवती
२० मदन	=	कामदेव
जुलुम जोर	=	अत्याचार
२१ लमहर	=	बड़ा
झालर गेडुआ	=	झीना पात्र
मुहँ चिन्ही के	=	मुँह देखकर
हेरायल	=	भूल गया
गारत	=	बेकार (बरबाद)
चलनी	=	प्रचलन
मस्तानी	=	अल्हड़

मगध प्रदेश के विविध गीत
बच्चों की लोरियाँ

शब्द		अर्थ
झलर-मलर	=	झल-मल
पतवा	=	पत्ता
पिछुअरवा	=	पिछवाड़ा
कुकुरा	=	कुत्ता
भर अकवरवा	=	पंजों से पकड़ लेना
बबुरइया	=	बाबू का राय राजा
केकर	=	किसका
सइयाँ	=	मालिक
काहे ला	=	क्यों, किसलिए
अंगिया	=	अंग रखा, अंग रक्षा
छिपवा	=	थाल
लइया	=	लाई, (मिठाई)
घरूअरिया	=	घर-गृहस्थी करना
तरूअरिया	=	तलवार चलना (रण क्षेत्र में)
गेलथुन	=	गए
चिचोर	=	एक प्रकार का कंद जो पानी में बैठता है
गोरूआ	=	जानवर
ढुकावेला	=	प्रवेश कराना (बाँधना)
चोतवा	=	गोबर
पुरावेला	=	देने के लिए
बिआयला	=	जन्म देने के लिए
रूस गेल	=	रूठ गया
आरे	=	आल
पारे	=	पार होकर
खुदबुदी	=	गौरैया और चंचल पक्षी
अंडा पार	=	अंडा देना

शब्द	अर्थ
बउवा	= बाबू
टिकरी	= एक प्रकार का पकवान
महिना	= महीना भर में
कत्थी के	= किस चीज का
टुस्सा	= कोमल पत्ती
चोआ चंनन के पुरिया	= अगर-चंदन निर्मित अंगराग
डूम्बर	= गूलर
पितिया	= चाचा
पितम्बर के	= पीले वस्त्र का
पत पितिआइन	= प्रतिष्ठित चाची
खेलौनिया	= शिशु को खेलाने वाली
झिंगा	= एक प्रकार की मछली
लोर	= आँसू
आंगी-टोपी	= अंगिया-टोपी, अंग वस्त्र और टोपी
लगौलकउ	= टोटका लगा देना
घुघुआ माना	= बच्चे को अपने पैर के घुटने पर घुमाना
भीती	= दिवाल
बरतन-बासन	= बर्त्तन-वस्त्र
हाँकऽ	= उड़ा दो
पैजनी	= पायल
भोजनी	= भात
समेत्थी	= मेथी
हथी	= हैं
खजुअत	= एक प्रकार की सीमनुमा सब्जी
निनानपुर	= नींद ग्राम

शब्द	अर्थ
देबउ	= दूँगा, दूँगी
मकइया-बन	= भुट्टे के खेत
भगलुआ	= नखरा करने वाला
गोर गड़ी	= गोल-गोल गाड़ी
गुमान	= घमंड
बावली-तावली	= उतावली
लट	= गुड़ का चिमड़ा अंश
पट	= जमीन पर लोटने के अर्थ में

बाल खेल गीत

शब्द	अर्थ
अटकन	= अँटकना, उलझ जाना
चटकन	= चटाक का शब्द
चटाकन	= चाटने वाला
बर	= बड़ा वट वृक्ष
बरइला	= बैरल, एक प्रकार का छोटा पौधा जिसके बीज से तेल निकलता है ।
करइला	= करैली
बसीला	= बसूला
नेउर	= नेवला
ममोरी	= ममोड़ना, यहाँ पकड़ना
बरतक	= वट वृक्ष के नीचे
कनेया	= दुलहन
हरहोर	= हल्ला
इंजोर	= प्रकाश, रहस्योद्घाटन
फोरन	= बघार
मोटरी	= गठरी जिसमें समान बँधा हो
तरकुन	= ताड़ का छोटा फल
बरखाजा	= ताड़ फल का भीतरी पेय या खाद्य पदार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
रजइया	= आदेश	पट्टी	= पक्ष. (दूसरे पक्ष को हतोत्साहित करना)
झपट्टा	= झपटकर (तेज) चलना		
हँड़चमारो	= जोर से	चमाचा	= तमाचा
अइसन	= तरह, ऐसा, जैसा	हतास	= हताश, निरुत्साहित
चनामुरगी	= चने का बना खाद्य	घमरी	= घमौरी
बछेड़ा	= छोटा	चमरी	= चमार
चिल्हिया	= चील	मंकर	= में
वि आइत	= जन्म देना	बारी	= बेड़ी
तुतुम्मतुम	= तत् त्वम् का रूपान्तर	गोलकुण्डा	= गोलकुंडा (राजा के पास)
कउनतुत	= 'क' त्वम् का रूपांतर		
विसम्भर	= विश्वभर, विश्व को पालन करने वाला विष्णु	साहब जी	= राजा जी
		तबला	= प्रसन्न चित ताली पिटना
अयलूँ	= आया	दँखखोड़ा	= जिसके दाँत में खोड़र हो गया है
अभिमन्यु	= चक्रव्यूह में फँसा = पकड़ाया लड़का		
		हगे	= पखाना करना
तिती लादऽ	= तितकी, चिनगारी लगा दो	धीया	= पुत्री
		छिलका	= पतले आटा से बनाया गया पदार्थ
अंटा	= आटा		
फंटा	= फाट गया	गुहवा गिलका	= गीला मैला
निखतर	= नक्षत्र	विलंगड़ा	= विकलांग
तनियक नोन	= थोड़ा नमक	बनूक	= बंदूक
बराबर भेल	= बादल विलीन हो गया, निरभ्र गगन	लदरी	= आँत
		चाम	= चमड़ा
संल	= प्रारंभ बोधक शब्द	हाल	= कौवा उड़ाने का शब्द
मनुआ	= नाम वाचक शब्द	पोथिया	= मोटी पुस्तक
पठा जवानी	= पट्ठा जवान	लबनियाँ	= ताड़ पर टंगे ताड़ी-पात्र
आस लाल	= विशेषार्थ-आशा लगाकर खेलने वाला	जरिया धरके	= जड़ पकड़ कर
		पसिनिया	= पासी की पत्नी
बतासलाल	= हवा का चलना बंद हो गया	बग-बग पाँख	= काफी सफेद पंख
		पिलुइया	= कीड़ा
मोंछ लाल	= मूँछ लाल होना, विजयी	पेटकुनिये	= पेट के बल

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
करेजवा	= हृदय में	चम्प	= चम्पा पुष्प
चटियन	= चेला चट्टी, शिष्य	लहर करे	= लहराता है
लुख	= लाख का ध्वनि साम्य	संकर	= उसका
दाख	= मुनक्का	सौ-वासो-वरना	= सौ तरह से किया जाता है
गजमोट	= दालमोट, गजमुक्ता	गोल	= जमात
आली कोस	= बहुत दूर	खिसिआय	= क्रोधित होना
पहिला चोट	= गुल्ली बजाने का प्रारंभ	ढोंय-ढोंय	= खाँसने की आवाज
आजम सॉ	= आजम साह	कउड़िया	= कौड़ी
डंटा	= गुल्ली-डंटा	मेहरी	= औरत
सीरी सरसती	= श्री सरस्वती	आँई-बाँई	= आना-काना
सिरमौला	= सिरमौर	धुरमुसवउ	= बुरी तरह से पीटना
औला	= अव्वल=प्रिय	मदोदर	= रावण की पत्नी मंदोदरी
बबुअन	= बच्चे	परई	= बरसता है
मुनानी	= बंद कर दिया	पुरुखवा	= मर्द
गोड़ दुखाय	= पैर में दर्द है	पांडु रोग	= पीलिया
ढंबुआ-ढाकर	= ढेला-ढुकर (तुच्छ)	मरमियो	= मर्म, रहस्य
सवरथ	= सार्थक	मोर	= मेरा
पवली	= पाया		
देली	= दिया	**प्रातःकाल**	
बनौलक	= बनाया, तैयार किया		
मीर	= प्रधान	सनेसा	= संदेश
फसुलिये	= हँसुली	फिकिर	= चिन्ता
छेकुनिये	= छोटी छड़ी	तरनन	= उद्धार
पेटकुनिये	= पेट के बल	टिटिहा	= एक प्रकार की चिड़िया
ठेहुनिये	= ठेहुने के बल	मरजार	= बिलार
चुल्हनिये	= रसोई घर	अंधा	= धृतराष्ट्र
नगर कोस	= गाँव से दो मील	नगन	= नंगा, नग्न
डटहर	= डंटीदार	टेर	= पुकार
लाल चाननी	= लाल चंदोवा	प्याद	= पैदल
सोहाय	= सुन्दर, शोभता है	दरसके	= दर्शनार्थ
ईस	= ईश्वर	हित	= भलाई

शब्द		अर्थ
गहो	=	ग्रहण करो
झँखत	=	उदास, खिन्न चित्त
कोट	=	परकोटा
तिरिया	=	स्त्री
कहरिया	=	डोली ढोना
लोकदीन	=	बेटी विदाई के साथ एक औरत जाती है, उसे लोकदीन कहते हैं
कोपी	=	क्रोध कर
बफात	=	खौलता है
कामजात	=	विषय जन्य भाव समाप्त हो जाता है
गाँठहू	=	गाँठ, खजाना से
दाम जात	-	सम्पत्ति समाप्त हो जाती है
चित्तभंग	=	चित्त की चंचलता
राग-रंग	=	प्रेम की उमंग
सुरपुर के वास	=	स्वर्ग-निवास
वेसवा	=	वेश्या
संग	=	साहचर्य
छुध-पीर	=	भूख की पीड़ा
दुसमन	=	दुःशासन
गजघंटा	=	हाथी पर लटकने वाला घंटा
कटल	=	समाप्त
लवलाये	=	प्रेम पूर्वक
नदिया	=	संसार का प्रतीक
नाव	=	शरीर का प्रतीक
केवटिया	=	गुरू, खेवनहार
भीतर जाना	=	अंतर में प्रवेश करना
सूनमहल	=	सहस्त्रार
भूतनाथ	=	शिव
अरज	=	प्रार्थना
नटभेस	=	नटवर का रूप
ससरत	=	खिसकना
धावत	=	दौड़ता है
पइसत	=	प्रवेश कर जायगा
बसहा	=	शिव की सवारी बैल
समेटलो	=	सम्हालना
खसत	=	खसक जायगा
जगायत	=	श्मशान का दृश्य हो जायगा
डेराय	=	डर जायगी
वजड़	=	वज्र
ताड़ी पियनवा	=	ताड़ी पीने में
सेल	=	बिक गया, समाप्त हो गया
कंटोल	=	कंट्रोल
सारीघर	=	जानवर बाँधने का घर
छोवा	=	गुड़ का पतला भाग
पटनवाँ	=	पटना वासी
दुसमनवा	=	दुश्मन
हाय रे गोरिया	=	लयात्मक अभिव्यक्ति के लिए



डॉ० राम प्रसाद सिंह : एक जीवन्त रचनात्मक संस्थान के प्रतिमान

हिन्दी भाषा और साहित्य एवं भारतीय लोक-साहित्य के सुधी विद्वान्, मगही भाषा और साहित्य के मर्मज्ञ शोधित्सु, हिन्दी और मगही भाषाओं में दर्जनों रचनाओं के यशस्वी प्रणेता, सुकवि और पत्रकार डॉ० राम प्रसाद सिंह अपने आप में एक जीवन्त रचनात्मक संस्थान हैं। हिन्दी भाषा एवं विशेषकर मगही भाषा के क्षेत्र में अपनी गहन शोध-साधना तथा रचनाधर्मिता के कारण आपने प्रभूत यश और लोकानुराग प्राप्त किया है।

लगभग १४ वर्ष की उम्र में काव्य-सृजन से अपनी साहित्य-सेवा का प्रारंभ करनेवाले **डॉ० राम प्रसाद सिंह** सन् १९७० ई० से ही मगही भाषा के सृजनात्मक विकास, प्रचार-प्रसार एवं इसको केन्द्र में रखकर चलाये जानेवाले रचनात्मक आन्दोलनों को पूरी तरह से समर्पित हो गये हैं, जो अद्यावधि जारी है। १९७७ ई० में आपने गया में **'मगही अकादमी'** की स्थापना की और अपने आवास को **'मगही लोक'** बना लिया।

आपकी चर्चित मगही रचनाएँ हैं–**१. 'लोहा मरद'** (महाकाव्य), **२. सरहदपाद'** (खंडकाव्य), **३. 'परस पल्लव'** (गीतिकाव्य), **४. 'नरक सरग धरती'** (उपन्यास), **५. 'परेम आउ इरिखा'** (लघुकथा), **६. ललित निबंध आउ लोक साहित्य ७. अकबर के कसमसाहट ८. मगही साहित्य का इतिहास** आदि।

'मगध की लोक-कथाएँ : अनुशीलन एवं संचयन' मगध क्षेत्र के व्यापक दौरे एवं जन-सम्पर्क के आधार पर प्रस्तुत मगही लोक-कथाओं के गंभीर शोधपरक अनुशीलन एवं मूल मगही लोक-कथाओं के संचयन पर किया गया एक स्तरीय कार्य है, जो सहृदय भावकों की प्रशंसा और साधुवाद, दोनों ही अर्जित करेगा।

मैं **डॉ० राम प्रसाद सिंह** की सारस्वत साधना को सश्रद्ध भाव से नमन करता हूँ और उनके दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ।

–प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री 'हंसराज'
प्रधान संपादक : 'प्रगतिशील समाज' मासिक
विश्वविद्यालय-प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
(पटना कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय)